

वीर सेवा मन्दिर दिल्ली



क्रम संख्या

काल नं०

वर्ष

Vi Jawa mander

2. Jaryagany. JCh

माणिकचन्द्र-दिगम्बर-जैनग्रन्थमाला, पुष्प ४५

जैनशिलालेखसंग्रहः

(द्वितीयो भागः २)

संग्रहकर्ता

पं० विजयमूर्ति एम० ए० शास्त्राचार्यः

प्रकाशिका

माणिकचन्द्र-दिगम्बर-जैनग्रन्थमालासमितिः

विक्रम संवत् २००९

मूल्यं ~~रु०~~रुप्यकम्

— प्रकाशक —

नाथूराम प्रेमी,
मंत्री, माणिकचन्द्र-जैनग्रन्थमाला
हीराबाग, बम्बई ४

सितम्बर १९५२

— मुद्रक —

लक्ष्मीबाई नारायण चौधरी
निर्णयसागर प्रेस,
२६-२८ कोलभाट स्ट्रीट, बम्बई २

स्वागत

जैनशिलालेखसंग्रहका प्रथम भाग आजसे चौबीस वर्ष पूर्व सन् १९२८ ईस्वीमें प्रकाशित हुआ था। उसके प्राथमिक वक्तव्यमें मैंने यह आशा प्रकट की थी कि यदि पाठकोंने चाहा, और भविष्य अनुकूल रहा तो अन्य शिलालेखोंका दूसरा संग्रह शीघ्र ही पाठकोंको भेंट किया जायगा। पाठकोंने चाहा तो खूब, और माणिकचन्द्र-दिगम्बर-जैनग्रंथमालाके परम उत्साही मंत्री पं० नाथूरामजी प्रेमीकी प्रेरणा भी रही, किन्तु मैं अपनी अन्य साहित्यिक प्रवृत्तियोंके कारण इस कार्यको हाथमें न ले सका। तथापि चित्तमें इस कार्यकी आवश्यकता निरन्तर खटकती रही। अपने साहित्यिक सहयोगी डॉ० आदिनाथजी उपाध्येसे भी इस सम्बन्धमें अनेक बार परामर्श किया किन्तु शिलालेखोंका संग्रह करने करानेकी कोई सुविधा न निकल सकी। अतएव, जब कोई दो वर्ष पूर्व श्रद्धेय प्रेमीजीने मुझसे पूछा कि क्या पं० विजयमूर्तिजी एम० ए० (दर्शन, संस्कृत) शास्त्राचार्यद्वारा शिलालेखसंग्रहका कार्य प्रारम्भ कराया जावे, तब मैंने सहर्ष अपनी सम्मति दे दी। आनन्दकी बात है कि उक्त योजनानुसार जैनशिलालेखसंग्रहका यह द्वितीय भाग छपकर तैयार हो गया और अब पाठकोंके हाथोंमें पहुँच रहा है।

यह बतलानेकी तो अब आवश्यकता नहीं है कि प्राचीन शिलालेखोंका इतिहास-निर्माणके कार्यमें कितना महत्त्वपूर्ण स्थान है। जबसे जैन शिलालेखोंका प्रथम भाग प्रकाशित हुआ, तबसे गत चौबीस वर्षोंमें जैनधर्म और साहित्यके इतिहाससम्बन्धी लेखोंमें एक विशेष प्रौढता और प्रामाणिकता दृष्टिगोचर होने लगी। यद्यपि वे शिलालेख उससे पूर्व ही प्रकाशित हो चुके थे, किन्तु वह सामग्री अंग्रेजीमें, पुरातत्त्वविभागके बहुमूल्य और बहुधा अप्राप्य प्रकाशनोंमें निहित होनेके कारण साधारण लेखकों तथा पाठकोंको सुलभ नहीं थी। इसीलिये समस्त प्रकाशित शिलालेखोंका सुलभ संग्रह नितान्त आवश्यक है।

जैनशिलालेखसंग्रह प्रथम भागमें पाँच सौ शिलालेख प्रकाशित किये गये थे। वे सब लेख श्रवणबेलगुल और उसके आसपासके कुछ स्थानोंके ही थे।

जैन-शिलालेख-संग्रह

द्वितीय भाग

१

दिल्ली (टोपरा) — प्राकृत ।

अशोकके सातवें धर्मशासन-लेखका अन्तिम भाग

[लगभग २४२ ईसवी पूर्व]

[१] धंमवट्ठिया च बाढं वट्ठिसत्ति [१] एताये मे अठाये धंमसा-
वनानि सावापितानि धंमानुसाथिनि विविधानि आनपितानि [यथा मे
पुलि] सापि वहुने जनसि आयता एते पलियोवदिसंति पि पवियलि-
संतिपि [१] लज्जाका पि वहुकेसु पानसतसहसेसु आयता ते पि मे आन-
पिता[;] हेवं च हेवं च पलियोवदाथ

[२] जनं धंमयुतं [१] देवानं पिये पियदसि हेवं आहा[;] एतमेव
मे अनुवेखमाने धंमयंभानि कटानि[;] धंममहामाता कटा[;] धंम-
[सावने] कटे [१] देवानं पिये पियदसि लाजा हेवं आहा[;] मगेसु पि मे
निगोहानि लोपापितानि[;] छायोपगानि होसंति पसुमुनिसानं[;] अंबा-
वडिक्या लोपापिता[;] अढकोसिक्यानि पि मे उदुपानानि

[३] खानापितानि[;] निसिधिया च कालापिता[;] आपानानि मे
बहुकानि तत तत कालापितानि पटीभोगाये पसुमुनिसानं [१] ल[हुके
चु] एस पटीभोगे नाम [१] विविधायाहि सुखायनाया पुलिमेहिपि लाजी

जैन-शिलालेख-संग्रह

द्वितीय भाग

१

दिल्ली (टोपरा) — प्राकृत ।

अशोकके सातवें धर्मशासन-लेखका अन्तिम भाग

[लगभग २४२ ईसवी पूर्व]

[१] धमवड्डिया च ब्राह्मं वड्डिसति [1] एताये मे अठाये धमसा-
वनानि सावापितानि धमानुसार्थिनि विविधानि आनपितानि [यथा मे
पुलि] मापि वहुने जनसि आयता एते पल्लियोवदिमंति पि पविथलि-
मंतिपि [1] उज्झा पि वहुकेसु पानमतमहसेसु आयता ते पि मे आन-
पिता[:] हेवं च हेवं च पल्लियोवदाथ

[२] जनं धमयुतं [1] देवानं पिये पियदसि हेवं आहा[:] एतमेव
मे अनुनेग्यमानं धमयंभानि कटानि[:] धममहामाना कटा[:] धम-
[सावने] कटे [1] देवानं पिये पियदसि लाजा हेवं आहा[:] मगेसु पि मे
निगोहानि लोपापितानि[:] ह्यायोपगानि होसंति पसुमुनिसानं[:] अंबा-
वड्डिक्या लोपापिता[:] अट्ठकोसिक्यानि पि मे उट्ठुपानानि

[३] खानापितानि[:] निंसिधिया च कालापिता[:] आपानानि मे
वहुकानि तत तत कालापितानि पटीभोगाये पसुमुनिसानं [1] उ[ट्ठुके
चु] एस पटीभोगे नाम [1] विविधायाहि सुग्वायनाया पुल्लिमेहिपि लाजी

१. ए कर्निषम, Corpus inscriptionum indicarum, Vol. I, Inscriptions of Asoka, p. 115, t.

हि ममया च सुखयिते^१ लोके [॥] इमं च धंमानुपटीपतीअनुपटी-
पजंतुति[.] एतदथा मे

[४] एस कटे [॥] देवानं पिये पियदसि हेवं आहा[:.] धंममहा-
मातापि मे ते बहुविधेसु अठेसु अनुगहिकेसु वियापटा से पवजीतानं चेव
गिहियानं च [.] सव[पासं]डेसु पि च वियापटा से [॥] संघठसि पि मे
कटे इमे वियापटा होहंतिति[.] हेमेव बाभनेसु आजीविकेसु पि मे कटे

[५] इमे वियापटा होहंतिति [॥] निगंठेसु पि मे कटे इमे
वियापटा होहंतिति[.] नानापासंडेसु पि मे कटे इमे वियापटा होहं-
तिति [॥] पटिविसठं पटीविसठं तेसु तेसु ते ते महामाता [॥] धंममहा-
माता च मे एतेसु चेव वियापटा सवेसु च अनेसु पासंडेसु [॥] देवानं
पिये पियदसि लाजा हेवं आहा[:.]

[६] एते च अने च बहुका मुखा दानविसगसि वियापटा से मम
चेव देविनं च[.] सवसि च मे आलोधनसि ते बहुविधेन आ[का]
लेन तानि तानि ठुठायतनानि पटी [पाडयंति] हिद चेव दिसासु च [॥]
दालकानं पि च मे कटे अनानं च देविकुमालानं इमे दानविसगोसु
वियापटा होहंति ति

[७] धंमपदानठाये धंमानुपटिपतिये [॥] एस हि धंमापदाने धंम-
पटीपति च या इयं दया दाने सचे सोचवे मदवे साधवे च लोकस हेवं
वढिसतिति [॥] देवानं पिये [पियद] सि लाजा हेवं आहा[:.] यानि हि
कानि चि ममिया साधयानि कटानि तं लोके अनुपटीपने तं च
अनुविधियंति[.] तेन वढिता च

[८] वढिसंति च मातापितुसु सुसुसाया गुहसु सुसुसाया वयोम-
हालकानं अनुपटीपतिया वामनसमनेसु कपनवलाकेसु आव दासभट-
केसु संपटीपतिया [१] देवानंपिये [पि]यदसि लाजा हेवं आहा[:]
मुनिसानं चु या इयं धंमवढि वढिता दुवेहि येव आकालेहि धंमनियमेन
च निज्जतिया च

[९] तत च लहु से धंमनियमे[.] निज्जतिया व भुये[१] धंमनियमे च
खो एस ये मे इयं कटे इमानि च इमानि जातानि अवधियानि[.] अनानि
पि चु बहु [कानि] धंमनियमानि यानि मे कटानि[१] निज्जतिया व चु
भुये मुनिसानं धंमवढि वढिता अविहिंसाये भुतानं

[१०] अनालंभाये पानानं[१] से एताये अथाये इयं कटे[.] पुता-
पपोतिके चंदमसुलियिके होतु ति[.] तथा च अनुपटीपजंतु ति[१] हेवं हि
अनुपटीपजंतं ह्रिदतपालते आलघे होति[१] सत्तुविसत्तिवसाभिसितेन
मे इयं धंमलिबि लिखापापिताति[१] एतं देवानंपिये आहा[:] इयं

[११] धमलिबि अत अथि सिलायंभानि वा सिलाफलकानि वा
तत कटविया एन एस चिलठितिके सिया ।

[यह धर्मशासन-लेख अशोकके द्वारा महासम्मोंपर लिखाये गये लेखों-
मेंसे अन्तिम है । इसको कोई-कोई आठवां धर्मशासन-लेख (Edict)
मानते हैं, तो कोई मात्र सातवें धर्मशासन-लेखका ही अन्तिम
भाग मानते हैं ।

इसमें बताया है कि सम्राट् अशोकने अपने राज्याभिषेकसे २७ वें
वर्षमें यह धर्मशासन-लेख लिखाया था । इसमें उसने अपने द्वारा
नियोजित धर्ममहामात्रोंका उल्लेख किया है । ये धर्ममहामात्र 'संव'
(बौद्धसंघ), आजीबक, ब्राह्मण और निर्धन्योंकी देखरेख रखनेके लिये

नियुक्त किये गये थे । यहां 'निर्ग्रन्थ' शब्दसे जैनोंका तात्पर्य है । इसपरसे मालूम पड़ता है कि उस समयके अनेक अग्रेसर धर्मोंमें जैनधर्म भी एक था ।]

२

हाथीगुफाका शिलालेख—प्राकृत ।

जैन-सम्प्रदाय खारवेलका इतिहास ।

[मौर्यकाल १६५ वाँ वर्ष]^१

[१] नमो अरहंतानं [१] नमो सवसिधानं [१] ऐरेन महाराजेन
महामेघवाहनेन चेताराजवस-वधनेन पसथसुभलखनेन चतुरंतल
थुन-गुनोपहितेन कलिंगाधिपतिना सिरि खारवेलेन ।

[२] पन्दरसवसानि सिरि-कडार-सरीर-वता कीडिता कुमारकी-
डिका [१] ततो लेखरूपगणना-व्यवहार-विधिविसारदेन सवविजावदातेन
नववसानि योवरजं पसासितुं [१] संपुण-चतुर्वीसति-वसो तदानि वधमा-
नसेसयोवे(=व) नाभिविजयो ततिये

(३) कलिंगराजवसे पुरिमयुगे महाराजाभिसेचनं पापुनाति [१]
अभिसिनमतो च पधमे वसे वान-विहत-गोपुर-पाकार-निवेसनं पठिसंग्वा-
रयति [१] कलिनगरि [१] ख-वीरं इसि-नालं तडाग-पाडियो च बन्धा-
पयति [१] सुवुयान-पतिसंठपनं च

[४] कारयति [१] पनतीसाहि सनसहसेहि पकतियो च रंजयति [१]
दुतिये च वसे अचितयिता सातकणि पछिमदिसं हय-गज-नर-रध-बहुलं
दंडं पथापयति [१] कण्हबेनां गताय च सेनाय वितापति^२ मुसिक-
नगरं [१] ततिये पुन वसे

१ जैनहितैषी, भाग १५, अंक ५, मार्च १९२१, पृष्ठ १३९-१४५ से
उद्धृत । २ वितापितं इति वा ।

[५] गंधर्व-वेदबुधो दंत-नत-गीत-वादितसंदसनाहि उसव-समाज-
कारापनाहि च कीडापयति नगरिं [१] तथा चबुधे वसे विजाधराध्रिवासं
अहत-पुवं कालिंगपुवराजनिवेशितं.....वितध-मकूटे सबिलमदिते
च निखित-छत-

[६] भिंगारे हित-रतन-सापतेये **सव-रठिक भोजके** पादे वंदाप-
यति [१] पंचमे च दानी वसे **नंदराज** ति-वससत-ओघाटितं तनसुलिय-
वाटा पनाडिं नगरं पवेस[य]ति [१] सो [पि च वसे] छडम
‘भिसितो च राजसुय [’] सन्दसयंतो सवकर-वणं

[७] अनुगह-अनेकानि सतसहसानि विसजति पोरं जानपदं[१]
सतमं च वसं पसासतो वजिरघरवि **धुसि** ति धरिनी समतुक-पद-पुंना-
सकुमार[१].....[१] अठमे च वसे महतिसेनाय मह[तभित्ति] गोर-
धगिरिं

[८] घातापयिता **राजगहं** उपपीडापयति[१] एतिना च कम
पदान-पनादेन संवितसेन-वाहिनीं विपमुंचितुं मधुरां अपयातो येव
नरिदो [नाम].....[मोः] यछति [विछ].....पलवभरे

[९] कल्परुखे हय-गज-रध-सह-यंते सव-धरावास-परिवसने
स अगिणठिये[१] सवगहनं च कारयितुं बम्हणानं जाति-पंति परिहारं
ददाति[१] अरहत.....व.....न.....गिय

[१०].....[क] [ि] मानेहि रा[ज] संनिवासं महाविजयं पासादं
कारापयति अठनिसाय सत-सहसेहि[१] दसमे च वसे महधीत’ भिसमयो
भरधवस-पथानं महिजयनं.....ति कारापयति.....[निरितय]
उया तानं च मणि-रतना[नि] उपलभते ।

[११].....मंडे च पुव-राजनिवेसित-पीथुडग-द[ल]भ-नंगले
नेकासयति जनपदभावनं च तेरस-वस-सत-केतुभद-तित' मरदेह-
संघातं[१] वारसमे च वसे.....सेहि वितासयति उतरापथराजानो

[१२].....मगधानं च विपुलं भयं जनेतो हथिसु गंगाय
पाययति[१] मागधं च राजानं बहसतिमितं^१ पादे वंदापति[१] नंदराज-
नीतं च कालिंग-जिन-संनिवेशं.....गहरतनान पडिहारेहि
अंगमागध-वसुं च नेयाति [१]

[१३].....त जठर-लिखिल-बरानि सिहिरानि नीवेसयति
सत-विसिकनं परिहारेन[१] अभुतमछरियं च हथि-नावन परीपुरं उ
[प-]देणह हयहथी-रतना-[मा]निकं पंडराजा एदानि अनेकानि सुत-
मणिरतनानि अहरापयति इध सत-[स] [१]

[१४].....सिनो वसीकरोति [१] तेरसमे च वसे सुपवत-विज-
यिचके कुमारीपवते अरहिते य[१] प-खिम-व्यसंताहि काय्यनिसीदीयाय
यापआवकेहि राजभित्तिनि चिनवतानि वोसासितानि [१] पूजानि कत-उ-
वासा खारवेल-सिरिना जीवदेव-सिरि-कल्पं राखिता [१]

[१५].....[ता] सु कतं समण-सुविहितानं (नुं ?) च
सातदिसानं (नुं ?) आतानं तपसइसिनं सघायनं (नुं ?) [;]
अरहतनिर्सीदिया समीपे पभारे वराकर-समुयापिताहि अनेक-योजना-
हिताहि.....सिळाहि सिंहपथ-राजियं धुसिय निसयानि

[१६].....पटालिकोचतरे च वेडूरियगमे थंमे पतिटापयति [१]
पानतरिया सतसहसेहि [१] मुरिय-कालं वोछिनं (नें ?) च चोयठि-

अगस-निकंतरियं उपादायति [i] खेमराजा स वडराजा स भिखुराजा
धमराजा पसंतो सुनंतो अनुभवंतो कलाणानि

[१७].....गुण-विसेस-कुसलो सवपासंडपूजको सव-देवायत-
नसंकारकारको [अ]पति-हत-चकि-वाहिनि-बलो चकधुर-गुतचको पवत-
चको राजसि-वस-कुल-विनिश्रितो महा-विजयो राजा खारवेल-सिरि

अनुवाद—[१] अर्हतोंको नमस्कार । सर्व सिद्धोंको नमस्कार । ऐल-
महाराज महामेघवाहन, चैत्रराजवंशवर्धन, प्रशस्तशुभलक्षणसम्पन्न,
अखिल-देशस्तम्भ, कलिङ्गाधिपति श्री खारवेलने

[२] पन्द्रह वर्षतक श्रीसम्पन्न और कठार (गन्दुमी) रंगवाले शरी-
रसे कुमार-क्रीड़ाएँ कीं । बादमें लेख, रूपगणना, व्यवहार-विधिमें उत्तम
योग्यता प्राप्त करके और समस्त विद्याओंमें प्रवीण होकर उसने नौ वर्षोंतक
युवराजकी भौति शासन किया ।

जब वह पूरा चौबीस वर्षका हो चुका तब उसने, जिसका शेष जीवन
विजयोंसे उत्तरोत्तर वृद्धिगत हुआ,—तृतीय

[३] कलिङ्गराजवंशमें, एक पुरुषयुगके लिये महाराज्याभिषेक पाया ।
अपने अभियेकके पहले ही वर्षमें उसने वातबिहत (तूफानके बिगाड़े हुए)
गोपुर (फाटक), प्राकार (चहारदीवारी) और भवनोंका जीर्णोद्धार
कराया; कलिङ्ग नगरीके फव्वारेके कुण्ड, इषितल्ल (?) और तड़ागोंके
बाँधोंको बँधवाया; समस्त उद्यानोंका प्रतिसंस्थापन कराया और पैंतीस
लक्ष प्रजाको सन्तुष्ट किया ।

[४] दूसरे वर्षमें, सातकर्णिकी चिन्ता न करके उसने पश्चिम देशको
बहुत-से हाथी, घोड़ों, मनुष्यों और रथोंकी एक बड़ी सेना भेजी । कृष्ण-
वेण नदीपर सेना पहुँचते ही, उसने उसके द्वारा मूर्खिक-नगरको सन्तापित
किया । तीसरे वर्षमें फिर

[५] उस गन्धर्व-वेदमें निपुणमतिने दंप, नृत्य, गीत, वाद्य, सन्दर्शन,
उत्सव और समाजके द्वारा नगरीका मनोरञ्जन किया ।

और चौथे वर्षमें, विद्याधर-निवासोंको, जो पहले कभी नष्ट नहीं हुए थे और जो कलङ्कके पूर्व राजाओंके निर्माण किये हुए थे.....उनके मुकुटोंको व्यर्थ करके और उनके लोहेके टोपोंके दो खण्ड करके और उनके छत्र,

[६] और भृंगारों (सुवर्णकलशों) को नष्ट करके तथा गिराकर, और उनके समस्त बहुमूल्य पदार्थों तथा रत्नोंका हरण करके, उसने समस्त राष्ट्रिकों और भोजकोंसे अपने घरणोंकी बन्दना कराई ।

इसके बाद पाँचवें वर्षमें उसने तनसुलिय मार्गसे नगरीमें डस प्रणाली (नहर) का प्रवेश किया जिसको नन्दराजने तीन सौ वर्ष पहले खुदवाया था ।

छठे वर्षमें उसने राजसूय-यज्ञ करके सब करोंको क्षमा कर दिया,

[७] पौर और जानपद (संस्थाओं) पर अनेक क्षातसहज अनुग्रह वितरण किये ।

सातवें वर्ष राज्य करते हुए, वज्र धरानेकी धृष्टि (प्राकृत=धिसि) नाम्नी गृहिणीने मानक पदको पूर्ण करके सुकुमार [१]... (१)

आठवें वर्षमें उसने (खारबेलने) बड़ी दीवारवाले गोरयगिरिपर एक बड़ी सेनाके द्वारा

[८] आक्रमण करके राजगृहको घेर लिया । पराक्रमके कार्योंके इस समाचारके कारण नरेन्द्र [नाम]...अपनी धिरी हुई सेनाको छुड़ानेके लिये मथुराको चला गया ।

(नवें वर्षमें) उसने दिये.....पल्लवयुक्त

[९] कल्पवृक्ष, सारथीसहित हय-गज-रथ और सबको अग्निवेदिका-सहित गृह, आवास और परिवसन । सब दानको ग्रहण कराये जानेके लिये उसने ब्राह्मणोंकी जातिपंक्ति (जातीय संस्थाओं) को भूमि प्रदान की । अर्हत्.....व.....न.....गिया (?)

१ राजधानीकी संस्थाको 'पौर' और ग्रामोंकी संस्थाको 'जानपद' कहते थे । वर्तमान समयमें हम इन्हें 'म्युनिसिपल' और 'डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड'के नामसे पुकार सकते हैं ।

[१०] [क] [f] मानै: (?) उसने महाविजय-प्रासाद नामक राजस-
चिन्हास, अष्टादश सहस्रकी लागतका बनवाया ।

दसवें वर्षमें उसने पवित्र विधानोंद्वारा युद्धकी तैयारी करके देश
जीतनेकी इच्छासे, भारतवर्ष (उत्तरी भारत) को प्रस्थान किया ।...
केश (?) से रहित.....उसने आक्रमण किये गये लोगोंके मणि और
रत्नोंको पाया ।

[११] (ग्यारहवें वर्षमें) पूर्व राजाओंके बनवाये हुए मण्डपमें,
जिसेके पहिये और जिसकी लकड़ी मोटी, ऊंची और विशाल थी, जनपदसे
प्रतिष्ठित तेरहवें वर्ष पूर्वमें विद्यमान कंतुभद्रकी तिल्ल (नीम) काष्ठकी
अमर मूर्तिको उसने उत्सवसे निकाला ।

बारहवें वर्षमें.....उसने उत्तरापथ (उत्तरी पञ्जाब और सीमान्त
प्रदेश) के राजाओंमें त्रास उत्पन्न किया ।

[१२]और मगधके निवासियोंमें विपुल भय उत्पन्न करते
हुए उसने अपने हाथियोंको गंगा पार कराया और मगधके राजा बृह-
स्पतिमित्रसे अपने चरणोंकी बन्दना कराई.....(वह) कर्किग-
जिनकी मूर्तिको जिसे नन्दराज ले गया था, घर लौटा लाया और अंग
और मगधकी अमूल्य वस्तुओंको भी ले आया ।

[१३] उसने.....जठरोल्लिखित (जिनके भीतर लेख खुदे हैं)
उत्तम शिखर, सौ कारीगरोंको भूमि प्रदान करके, बनवाये और यह बड़े
आश्चर्यकी बात है कि वह पाण्डवराजसे हस्ति नावोंमें भरा कर श्रेष्ठ हय,
हस्ति, माणिक और बहुतसे मुक्ता और रत्न नजरानेमें लाया ।

[१४] उसने.....वशमें किया ।

फिर तेरहवें वर्षमें व्रत पूरा होनेपर (खारवेलने) उन याप-ज्ञापकोंको
जो पूज्य कुमारी पर्वतपर, जहाँ जिनका चक्र पूर्णरूपसे स्थापित है, समाधियों-
पर याप और क्षेमकी क्रियाओंमें प्रवृत्त थे; राजभृतियोंको वितरण किया ।
पूजा और अन्य उपासक कृत्योंके क्रमको श्रीजीवदेवकी भाँति खारवेलने
प्रचलित रखा ।

[१५] सुविहित भ्रमणोंके निमित्त शास्त्र-नेत्रके धारकों, ज्ञानियों और तपोबलसे पूर्ण ऋषियोंके लिये (उसके द्वारा) एक संघायन (एकत्र होनेका भवन) बनाया गया । अर्हतकी समाधि (निषद्या) के निकट, पहाड़की ढालपर, बहुत बोजनोंसे लाये हुए, और सुन्दर खानोंसे निकाले हुए पत्थरोंसे, अपनी सिंहप्रस्थी रानी 'एष्टी' के निमित्त विश्रामागार—

[१६] और उसने पाटालिकाओंमें रत्न-जटित स्तम्भोंको पचहत्तर लाख पणों (मुद्राओं) के व्ययसे प्रतिष्ठापित किया । वही (इस समय) मुरिय कालके १६४ वें वर्षको पूर्ण करता है ।

वह क्षेमराज, वर्द्धराज, भिक्षुराज और धर्मराज है और कल्याणको देखता रहा है, सुनता रहा है और अनुभव करता रहा है ।

[१७] गुणविशेष-कुशल, सर्व मतोंकी पूजा (सन्मान) करनेवाला, सर्व देवाल्योंका संस्कार करानेवाला, जिसके रथ और जिसकी सेनाको कभी कोई रोक न सका, जिसका चक्र (सेना) चक्रधुर (सेना-पति) के द्वारा सुरक्षित रहता है, जिसका चक्र प्रवृत्त है और जो राजर्षिवंश-कुलमें उत्पन्न हुआ है, ऐसा महाविजयी राजा श्रीखारवेल है ।

इस शिलालेखकी प्रसिद्ध घटनाओंका तिथिपत्र—

बी. सी. (ईसाके पूर्व)

- | | |
|--------------------|---|
| „ १४६० (लगभग) | ... केतुभद्र |
| „ ... ४६० (लगभग) | ... कलिंगमें नन्दशासन |
| „ [२३० | ... अशोककी मृत्यु] |
| „ [२२० (लगभग) | ... कलिंगके तृतीय-राजवंश-
का स्थापन] |
| „ १९७ ... | ... खारवेलका जन्म |
| „ [१८८ ... | ... मौर्यवंशका अन्त और
पुण्यमित्रका राज्य प्राप्त करना] |
| „ १८२ ... | ... खारवेलका युवराज होना |
| „ [१८० (लगभग | ... सातकर्णिक प्रथमका राज्य-
प्रारम्भ] |

„ १७३ खारबेलका राज्याभिषेक
„ १७२ मूषिक-नगरपर आक्रमण
„ १६९ राष्ट्रिकों और भोजकोंका पराजय
„ १६७ राजसूय-यज्ञ
„ १६५ मगधपर प्रथम बार आक्रमण
„ १६१ उत्तरापथ और मगधपर आक्रमण, पाण्डवराजसे अदेय (नजराने) की प्राप्ति
„ १६० शिलालेखकी तिथि

३

वैकुण्ठ (स्वर्गपुरी) गुफा उदयगिरि—प्राकृत ।

[लगभग १६५ मौर्यकाल]

अरहन्तपसादनं कलिंग.....य.....नानं लेनकाडतं रजिनोलस....
हेथिसहसं पनोतसय.....कलिंग.....वेलस अगमहि पिडकाई

[इस शिलालेखमें अर्हन्तोंकी कृपाको प्राप्त गुहानिर्माण (Excavation) बताया गया है । इस लेखका शेषभाग इतना टूटा हुआ है कि वह पढ़नेमें नहीं आसकता । वैकुण्ठ गुफा, जिसके नामसे यह शिलालेख प्रसिद्ध है, राजा ललाकके द्वारा अर्हन्तों और कलिंगके श्रमणोंके लाभ या उपयोगके लिये बनाई गई थी ।]

[JASB, VI, p. 1074]

४

मथुरा—प्राकृत ।

[बिना कालनिर्देशका] लेकिन करीब १५० ई० पूर्वका [बूस्हर]-

समनस माहरखितास आंतेवासिस वछीपुत्रस सावकास उतर-
दासक[१] स पासादोत्तरनं [॥]

अनुवाद—माहरखित (माघरक्षित) के शिष्य, वछी (वात्सी माता) के पुत्र उतरदासक (उत्तरदासक) श्रावकका (दान) यह मन्दिरका तोरण(ण) है।

[EI, II, p. XIV, n° 1.]

५

मथुरा—प्राकृत ।

[महाक्षत्रप शोडाशके ४२ वें (?) वर्षका]

१. नम अरहतो वर्धमानस ।

२. ख[१]मिस महक्षत्रपस शोडासम सवत्सरे ४० (?) २
हेमंतमासे २ दिवसे ९ हरितिपुत्रस पालस भयाये समसाविकाये^१

३. कोछिये अमोहिनीये सहा पुत्रेहि पालघोषेन पोठघोषेन
धनघोषेन आयवती प्रतिथापिता प्राय—[भ]—

४. आर्यवती अरहतपुजाये [॥]

अनुवाद—अर्हत वर्धमानको नमस्कार हो । स्वामी महाक्षत्रप शोडासके ४२ (?) वें वर्षकी शीतक्रतुके दूसरे महीनेके नौवें दिन, हरिति (हरिती या हारिती माता) के पुत्र पालकी स्त्री, तथा श्रमणोंकी श्राविका, कोछि (कौत्सी) अमोहिनि (अमोहिनी) के द्वारा अपने पुत्रों पालघोष, पोठघोष, (प्रोष्ठघोष) और धनघोषके साथ आयवती (आर्यवती) की स्थापना की गई थी ।

[EI, II, n° XIV, n° 2]

६

पमोसा (अलाहाबादके पास)—संस्कृत ।

[द्वितीय या प्रथम ईसवी पूर्व (फ्यूरर)]

१. राज्ञो गोपालीपुत्रस
२. बहसतिमित्रस
३. मातुलेन गोपालीया
४. वैहिदरीपुत्रेन [आसा]
५. आसादसेनेन लेनं
६. कारितं [उदाकस]^१ दस-
७. मे सवछरे कश्शीयानं अरहं-
८. [ता] न - - - - - [॥]

अनुवाद—गोपालीके पुत्र राजा बहसतिमित्र (बृहस्पतिमित्र) के मामा, तथा गोपाली वैहिदरी (अर्थात् वैहिदर-राजकन्या) के पुत्र आसादसेनने कश्शीय अरहतोंके.....दसवें वर्षमें एक गुफाका निर्माण कराया ।

[El, II, p. 242.]

७

पमोसा (प्रभात)—प्राकृत ।

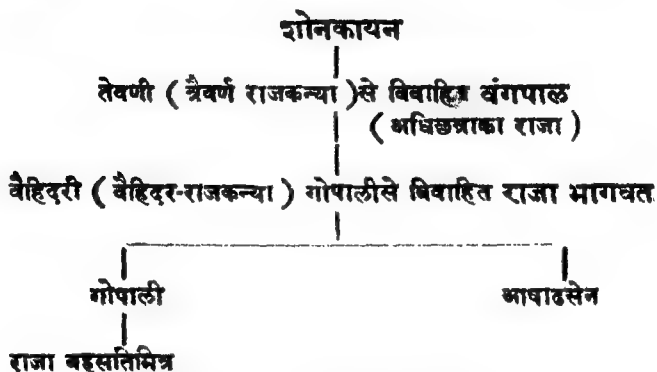
[द्वितीय या प्रथम शताब्दि ई. पू.]

१. अधियछात्रा राज्ञो शोनकायनपुत्रस्य वंगपालस्य
२. पुत्रस्य राज्ञो तेवणीपुत्रस्य भागवतस्य पुत्रेण
३. वैहिदरीपुत्रेण आपादसेनेन कारितं [॥]

अनुवाद—अधिल्लत्राके राजा शोनकायन (शौनकायन) के पुत्र राजा वंगपालके पुत्र (और) तेवणी (अर्थात् त्रैवर्ण-राजकन्या) के पुत्र राजा भागवतके पुत्र (तथा) वैहिदरी (अर्थात् वैहिदर-राजकन्या) के पुत्र आपादसेनने बनवाई ।

[नोट—शुङ्गकालके अक्षरोंसे मिलने-जुलनेके कारण दोनों शिलालेखोंका काल विश्वासके साथ द्वितीय या प्रथम शताब्दि ई० पूर्व निश्चित किया

जा सकता है। कास ऐतिहासिक चीज जो यहां अंकित करनेकी है वह अधिछत्राके प्राचीन राजाओंकी वंशावलि है। अधिछत्रा किसी समय प्रतापी उत्तर पाञ्चालके राजाओंकी राजधानी थी। वंशावली इस प्रकार है:—



बहसतिमित्र कहांका राजा था और उसके पिताका नाम क्या था, यह नहीं बताया गया है। लेकिन, पृ० फ्यूरर की सम्मतिसें हम उसे कौशाम्बीका राजा मान सकते हैं, क्योंकि वह (कौशाम्बी) प्रभास (पभोसा) के निकट है तथा बहुत-से उसके (बहसतिमित्रके) सिक्के कौशाम्बीमें मिले हैं।

[El, II, n° XIX, n° 2 (p. 243.)]

८

मथुरा—प्राकृत ।

[विना कालनिर्देशका]

१. नमो आरहतो वधमानस दण्दाये गणिका—
२. ये लेणशोभिकाये धितु शमणसाविकाये
३. नादाये गणिकाये वासये आरहता देविकुला
४. आयगसभा प्रपा शीलापटा पतिष्ठापितं निगमा—

५. ना अरहतायतने स [ह] मातरे भगिनिये धितरे पुत्रेण

६. सविन च परिजनेन अरहतपुजाये ।

अनुवाद—अर्हत वर्धमानको नमस्कार हो । भ्रमणोंकी उपासिका (भ्रायिका) गणिका नादा, गणिका दम्बाकी बेटी वासा, लेणशोभिकाने अर्हन्तोंकी पूजाके लिये व्यापारियोंके अर्हत्तमन्दिरमें अपनी माँ, अपनी बहिन, अपनी पुत्री, अपने लड़केके साथ और अपने सारे परिजनोंके साथ मिलकर एक वेदी, एक पूजागृह, एक कुण्ड और पाषाणासन बनवाये ।

[I. A., XXXIII, p. 152-153.]

९

मथुरा—प्राकृत ।

(कालनिर्देश नहीं दिया है, किन्तु जे. एफ. फ्लीटके अनुसार लगभग १४-१३ ई० पूर्वका होना चाहिये)

१. [न] मो अरहतो वर्धमानस्य गोतिपुत्रस पोठयश्चक.

२. कालवाळ्स

३. [भार्याये] कोशिकिये शिवमित्राये' अयागपटो प्रि [प्रति-
ष्ठापितो]

अनुवाद—वर्धमान अर्हन्तको नमस्कार हो । गोतिपुत्र (गौतीपुत्र) की स्त्री कौशिककुलोद्भूत शिवमित्राने एक अयागपट स्थापित किया । गोतिपुत्र पोठय और शक लोगोंके लिये काला सर्प (कालवाल) था ।

[EI, I, n° XLIV, n° 33]

१०

मथुरा—प्राकृत ।

[बिना कालनिर्देशका सम्भवतः १४-१३ ई० पूर्व]

१. मा अरहतपूजा[ये]

२. गोतीपुत्रस ईद्रपा[ल]....

१ इसकी जगह 'शिवमित्राये' पढ़ना चाहिये (J. F. Fleet).

अनुवाद—गोती (गौरी माता) के पुत्र इन्द्रपाल (इन्द्रपाल) के...
... अर्हन्तोंकी पूजाके लिये.....प्रतिमा.....

[El, II, n° XIV, n° 9.]

११

गिरनारः—संस्कृत ।

[विक्रमसंवत् ५८]

हुमदके पवित्र स्थानके आङ्गनमें वृक्षके नीचे एक चौकोर खबूतरा है ।
उसके किनारेपर निम्नलिखित लिखा हुआ हैः—

सं० ५८ वर्षे चैत्र वदी २

मोमे धारागङ्गे

पं० नेमिचन्द्रशिष्य

पंचाणचंदमूर्ति

अनुवाद—संवत् ५८ के वर्षमें, सोमवार, चैत्र वदी २ को, धारागङ्गमें
नेमिचन्द्रके शिष्य पंचाणचंदकी मूर्ति ।

[ASI, XVI, p. 357, n° 20]

१२

मथुरा—प्राकृत ।

(बिना कालनिर्देशका)

१. भदंतजयसेनस्य आतिवासिनीये

२. धामघोषायै दानो पासादो [II]

अनुवाद—भदन्त जयसेनकी शिष्या धमघोषा (धर्मघोषा) के
दानस्वरूप यह मन्दिर है ।”

[El, II, n° XIV, n° 4]

१३

मथुरा—प्राकृत ।

भगवा नेमसो भग—

अनुवाद—“भगवान नेमस (नैमेष) ; भगवान...

[El, II, n° XIV, n° 6]

अनुवाद—अर्हन्तोको नमस्कार ! फगुयश (फग्गुयशस्) नर्तककी पत्नी शिवयश (शिवयशस्) के द्वारा अर्हन्तोकी पूजाके लिये एक आयागपट बनवाया गया ।

[El, II, n° XIV, n° 5]

१६

मथुरा—प्राकृत—अम्र ।

[बिना कालनिर्देशका] *

नमो अरहतो महाविरस । माथुरक-लवाडस[सा]-भयाये-व.....ताये
[आयागपटो] [II]

अनुवाद—महावीर अर्हत्को नमस्कार । मथुरानिवासी-लवाड (?) की पत्नी—ताके [दानस्वरूप] यह आयागपट है ।

[El, II, n° XIV, n° 8]

१७

मथुरा—प्राकृत ।

[हुविष्ककाल ?] वर्ष ४

अ. सिद्धं स ४ मि १ दि २० वारणातो गणानो अय्यहाडु-
कियातो कुलतो वज्जणगरित [१ शा] --

ब. पुश्यमित्रस्य शिशिनि सथिसहाये शिशिनि सिंहमित्रस्य
सदचरि -- -- --

स. दानि सहा ग्रहचेटेन ग्रहदासेन -- --

अनुवाद—सिद्धि हो । चतुर्थ वर्षके ग्रीष्म ऋतुकें १ ले महीनेके २० वें दिन, वारणगण, अय्य हाट्टकिय (अय्य हाट्टकीय) कुल, वज्जणगरी (वज्ज-नगरी) शाखाके -- -- पुश्यमित्रकी शिष्या, साथिसिहा (षष्ठिसिहा) की शिष्या, सिंहमित्र (सिंहमित्र) की सदचरी (आदचरी) ...।

[El, II, n° XIV, n° 11]

१८

मथुरा—प्राकृत—भम ।

[हुबिष्ककाल ?] वर्ष ५

.....स्य व ५ गृ ४ दि ५ कोट्टिया.....

त [०] शाखात [०] वाचकस्य अर्थ.....

अनुवाद—...के ५ वें वर्षकी ग्रीष्म ऋतुके चौथे महीनेके ५ वें दिन,
.....कोट्टिय (गण)शाखाके वाचक अर्थ.....(आर्थ)...

[EI, II, n° XIV, n° 12]

१९

मथुरा—प्राकृत ।

[कनिष्क सं० ५]

अ. १. दे [व] पुत्रस्य क [नि] ण्स्य सं ५ हे १ दि १
एतस्य पूर्व [१] यं कोट्टियातो गणातो ब्रह्मदासिका [तो]

२. [कु] ण्यतो [उ] चेनागरितो शाखातो सेधि-ह-स्य ि-
ि- ि- सेनस्य सहचरिगुडाय दे [व]—

ब. १. पालस्य धि [त]

२. वधमानस्य प्रति [मा] ॥

अनुवाद—देवपुत्र कनिष्कके ५ वें वर्षकी हेमन्त ऋतुके १ ले महीनेके
१ ले दिन, कोट्टियगण, ब्रह्मदासिका कुल और उच्चनागरी शाखाकी खुदा
(खुदा) ने वर्षमानकी प्रतिमा समर्पित की । यह खुदा श्रेष्ठी
सेनकी पत्नी और देवपालकी पुत्री थी ।

[EI, I, XLIII, n° 1]

२०

मथुरा—प्राकृत—भग्न ।

[?] वर्ष ५

अ. १. सिद्ध[म] स ५ हे १ दि १० २ अस्य[१] पूर्व[१] ये
कोट्टि[यातो] ।

२. [ग] णातो ब्रह्मदासिकातो उच[१] ना (क) रितो
[शाखातो]

ब. १. श्र[१] गृहातो स[—भोगातो].....।

२.....स निड(?)

स. १.....ि बोधिलामे ए वासुदेवा पुवि.....

२.....सर्व-सत्[त्वा] न[म] ह[ि]त-सुख[१] ये ।

अनुवाद—सिद्धि हो । वर्ष ५, हेमन्तका पहिला महिना, १२ वाँ दिन । इस दिन कोट्टिय गण, ब्रह्मदासिक (कुल), उचेनाकरी (उच्चा-नागरी) शाखा, (श्रीगृह) सम्भोग.....के.....(प्रार्थना पर).....सब जीवोंके हित और सुखके लिये.....।

[IA, XXXIII, p. 36-37, n° 5]

२१

मथुरा—प्राकृत—भग्न ।

[?] वर्ष ५

.....तो पतिव.....ब्रह्मजाति.....स ५ हे १ दि २० अस्य
पूर्वाये कु महिलनस्य शिष्य अर्य्यगरिकतो

[यह शिलालेख अर्य्य गरिकके किसी दानका उल्लेख करता है । गरिक महिलनके शिष्य थे । यह दान सं० ५ के वर्षमें, शीतकृतुके चौथे महीनेके २० वें दिन किया गया ।]

[A Cunningham, Reports III, p. 31 n° 3]

२२

मथुरा—प्राकृत ।

[बिना कालनिर्देशका]

- अ. १. सिद्ध को[हि] यतो गणतो उचेन—
 २. गरितो शखतो ब्रम्हा(ह्मा)दासिअतो
 ३. कुलतो शिरिग्रिहतो संभोक्तो
 ४. अय्य जेष्ठहस्तिस्स शिष्यो अ [र्यमि] [हि] लो]
- ब. १. तस्य शिष्य [ो] अर्यक्षेरे
 २. [को] वाचको तस्य निर्वत—
 ३. न वर [ण] हस्ति [त्य]
- स. १. [च] देवियच धित जय—
 २. देवस्य वधु मोषिनिye
 ३. वधु कुठस्य कसुथस्य
- द. १. धम्मप [ति] ह स्थिरए
 २. दन शवदोभद्रिक
 ३. सर्वसत्त्वन हितसुखये

[EI, II, n° XIV, n° 37]

अनुवाद—कोट्टिय गण, उचेनगरी (उच्चनागरी) शास्त्रा, (और) ब्रह्म-
 दासिअ (ब्रह्मदासिक) कुल, शिरिग्रह संभोगके अय्य जेष्ठहस्ति (ज्येष्ठह-
 स्तिन्) के शिष्य अर्य मिहिल (आर्य मिहिर) थे; उनके शिष्य वाचक
 अर्य क्षेरक (आर्य क्षैरक ?) थे; उनके कहनेसे वरणाहस्ती और देवी,
 दोनोंकी पुत्री, जयदेवकी बहू तथा मोषिनीकी बहू, कुठ कसुथकी
 धर्मपत्नी स्थिराके दानमें, सर्व जीवोंके कल्याण और सुखके लिये, सर्वतो-
 भद्रिका प्रतिमा दी गई ।

२३

मथुरा—प्राकृत ।

[बिना कालनिर्देशका]

अ. १. सिद्धम् ॥ कोट्टियातो गणातो ब्रह्मदासिकात्[१] कुलातो

२. उ[च्चै]नागरितो शाखातो—रिनातो सं[भ]ो[गातो] अ [र्य्य]-

व. १. ज्येष्ठहस्ति[स्य] शि[ष्यो] अर्य्यमहलो^{*} अर्य्यजेष्ट[हस्तिम]

[शिशो] अर्य्य[गा]ढक [१] [त] स्य शिशिनि [अर्य्य-]

२. शामये निर्वतना । उ[स].....प्रतिमा वर्मये वीतु [गुल्हा]

ये जयदासस्य कुटुंबिनिये दानं

अनुवाद—सफलता प्राप्त हो । अर्य्य (आर्य) ज्येष्ठहस्तिके शिष्य अर्य्य महल थे । वे कोट्टिय गण, ब्रह्मदासिक कुल, उच्चनागरी शाखा और... रिन संभोगके थे । ज्येष्ठहस्तिके एक और शिष्य आर्य गाढक थे । उनकी शिष्या शामाके कहनेसे गुल्हाने, जो कि वर्माकी पुत्री और जयदासकी पत्नी थी, एक ऋषभदेवकी प्रतिमा समर्पित की ।

[EL, I, XLIII, n° 14]

२४

मथुरा—प्राकृत ।

[कनिष्क सं० ७]

१. [सिद्धम् ॥] महाराजस्य राजातिरास्य देवपुत्रस्य पाहि-
कणिष्कस्य सं० ७ हे १ दि १० ५ एतस्य पूर्वायां अर्य्यो-
देहिकियातो

२. गणातो अर्य्यनागभुतिकियातो कुलातो गणिस्य अर्य्यबुद्ध-
शिरिस्य शिष्यो वाचको अर्य्यस[न्धि]कस्य भगिनि अर्य्यजया
अर्य्यगोष्ठ.....

अनुवाद—सफलता हो । महाराज, राजाधिराज, देवपुत्र, शाहि कनिष्कके ७ वें वर्षमें, हेमन्तऋतुके पहले महीनेके १५ वें दिन (अमावस्या) (Lunar day) अर्य्योदेहिकीय (आर्य्य उदेहिकीय) गण और अर्य्य-नागभुतिकीय (आर्य्य नागभुतिकीय) कुलके गणी अर्य्य बुद्धिशिरि (आर्य्य-बुद्धधी)के शिष्य वाचक अर्य्य (सन्धि) ककी भगिनी अर्य्य जया (आर्य्य जया) अर्य्य गोष्ठ.....

[El, 1, XLIII, n° 19]

२६

मथुरा—प्राकृत ।

[कनिष्क वर्ष १०००]

१. सिद्धं महाराजस्य कनिष्कस्य संवत्सरे नवमे.....
मासे प्रथ १ दिवसे ५ अस्य पूर्व्यायि कोट्टियातो गणातो

२.धव....दिस.....न बुद्.....भ जिमित.....
विकद.

[यह महत्त्वपूर्ण लेख नववें संवत्, पहले महीने (ऋतुका नाम लुस है) पाँचवें दिनका है । यह महाराज कनिष्कके राज्यकाल (ईस्वी पूर्व ४८) का है ।]

[A Cunningham, Reports, III, p. 31, n° 4.]

२६

मथुरा—प्राकृत ।

[कनिष्कका १५ वाँ वर्ष]

अ. १.^१ सं १० ५ गृ ३ दि १ अस्या पूर्व [I] य

ब. १.हिकातो^२ कुलातो अर्य्यजयभूति....

स. १. स्य शिशीनिनं अर्य्यसङ्गमिकये शिशीनिनं....^३

द. १. अर्य्यवसुलये [निर्वर्त्त] नं

१ 'सिद्धं' की पूर्ति करो । २ 'मेहिकातो' पढ़ो । ३ 'शिशीनिनं' पढ़ो ।

- अ. २.लस्य घी [तु]धु^१ वेणि
 ब. २.श्रेष्ठि [स्य] धर्मपत्निये भट्टि[से]नस्य
 स. २. [मातु] कुमारमितयो^१ दनं भगवतो [प्र]....
 द. २. मा सव्वतोभद्रिका [॥]

अनुवाद—[सफलता हो।] १५ वें वर्षकी ग्रीष्म ऋतुके तीसरे महीनेके पहले दिन, भगवानकी एक सर्वतोभद्रिका प्रतिमाको कुमारमिता (कुमार-मित्रा) ने [मेहिक] कुलके अर्यजयभूतिकी शिष्या, अर्य सङ्गमिकाकी शिष्या अर्य वसुलाके आदेशसे समर्पित की। कुमारमित्रा...लकी पुत्री, ...की बहू (बधू), श्रेष्ठी वेणीकी धर्मपत्नी और भट्टिसेनकी माँ थी।

[El, I, n° XLIII, No 2]

२७

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्क?] वर्ष १८

अ. स १० ८ गृ ४ दि ३ [अस्या पु]—[य] [या] तो
 गण [तो]....

ब. संभोगातो वच्छलियातो कुलातो गणि.....

द. १.वासि जयस्य-तु मासिगिये [?] दानं सर्व्वत[ो]भ-
 [द्र].....

२. — [सर्व्वस] वा [नं] सुखाय भवतु।

अनुवाद—वर्ष १८ ग्रीष्मऋतुका ४ था महीना, तीसरे दिनके अवसर पर, [कोट्टि] य गण, ...संभोग, वच्छलिय (वात्सलीय) कुलके गणि... के आदेशसे जयकी (माता) मासिगिका दान एक सर्व्वतोभद्र [प्रतिमा] के रूपमें किया गया।

[El, II, n° XIV, n° 13]

१ 'बधु' पढ़ो। २ इसे 'कुमारमितये' पढ़ना चाहिये।

२८

मथुरा—प्राकृत-भग्न ।

[हुविष्क ?] वर्ष १८

अ.ष १० [८] व २ दि. १० १

ब. धितु मि [तशि] रिये भगवती अरिष्टणेमिस्य [वेवर्त] ?

अनुवाद—वर्ष १८, वर्षाक्रतुका २ रा महीना, ११ वां दिन,
इस दिन...की पुत्री मितशिरि (? मित्रात्री) के दानके रूपमें
भगवान अरिष्टणेमि (अरिष्टनेमि) की...[की प्रतिष्ठा].....

[El, II, XIV, n° 14]

२९

मथुरा—प्राकृत ।

[कनिष्क सं. १९]

अ. १. मिदम् । सं १० ९ व ४ दि १० अस्यां पु....

२. व्वायं वाचकस्य अर्यबल....

३. दिनस्य शिष्यो [वाच] को अर्यमा....

४. दृदिनः तस्य [नि] वर्त्त [न]।

ब. १. [कोद्वियातो गणातो ठानियातो

२. [कुलातो श्रीगृहातो संभोगातो]

३. [अर्यवेरिशाखातो सु] चि....

स. [ल] स्य धर्म्यपत्निये ले...

द. दानं भगवतो स [न्ति][प्र] तिस्रा

अ. ५. नाश.....तनं

ब. ४.[न] मो अरत्ततानं सर्व्वलोकुत्त [मार्न]

अनुवाद—सिद्धि हो । १९ वें वर्षकी वर्षाकृतके चौथे महीनेमें, वाचक अर्य्य बलदिन (बलदत्त) के शिष्य वाचक अर्य्य मातृदिनके आदेशसे भगवान् शान्तिनाथकी प्रतिमा ले.....की तरफसे अर्पित की गई । यह अर्पण करनेवाली स्त्री सुखिल (शुखिल) की धर्मपत्नी थी और वह कोट्टिय गण, ठानीय कुल, श्रीगृह सम्भोग तथा अर्य्य बेरि (आर्य्य-वज्र) शाखाकी थी । सर्व लोकोमें उत्तम ऐसे अर्हतोंको नमस्कार हो ।

[El, 1, n° XLIII, n° 3]

३०

मथुरा—प्राकृत ।

[कनिष्क वर्ष २०]

अ १. सिद्ध स [२०] गृमा—दि १० ५ कोट्टियातो गणतो
[ठ] णियातो कुलतो बेरितो शखतो शिरिकानो

ब १. [संभो] गातो वाचकस्य अर्य्यसघसिहस्य निर्व्वर्त्तना दाति-
लस्य.....मति—

२. लस्य कुट्टुविणिये जयवालस्य देवदासस्य नागदिनस्य च
नागदिनय च मातु

स. १. श्राविकाये दि—

२. [ना] ये दानं ॥

३. वर्द्धमानप्र—

४. निम ।

अनुवाद—सिद्धि हो । २० वें वर्षकी ग्रीष्मकृतके १ ले महीनेके १५ वें दिन, कोट्टियगण, ठानीय कुल, बेरि (वज्री) शाखा और शिरिक सम्भोगके वाचक अर्य्य सघसिह (आर्य्य सङ्घासिंह) के आदेशसे श्राविका दीना (दिक्षा) की तरफसे वर्द्धमानकी प्रतिमा [अर्पित की गई] । यह

दिक्षा दातिल [की पुत्री], मातिलकी पत्नी और जयपाल, देवदास, नागदिन (नागदत्त) तथा नागदिना (नागदत्ता) की माँ थी ।

[EI, I, n° XLIV, n° 28]

३१

मथुरा—प्राकृत—भग्न ।

[हुषिष्क सं० २०]

अ. १. [सिद्ध सं २० गृ ३] दि [१०] ७ [एत]स्य पूर्व्याय कोट्टिय[१] तो गणानो ब्रह्मदासियातो कुलानो उच्चे [नागरितो शा] खातो [श्री] गृह [१] तो संभोगानो [बृहंतव]चक च गणिन च ज [-मित्र] स्य.....^१

२. अर्थ [ओ] यस्य शिष्यगणिस्य [अ] र्यपालस्य श्र [दत्त] रो [वाच]कस्य अर्थ[दत्त]स्य शिष्यो वाचको अर्थ-सीहा [त]स्य निव्वर्त्तणा [खो] दमि [त]स्य मानिकरस्य [गी]-जयभ[ट्टि] धीतु दास्य—

ब. १. [लो] हवाणियस्स वाधर....वधू [ह] ग्गु [देव]स्य धर्मपत्निये मित्राये [दानं].... [सर्व]स [त्वानं] हि [तसु] खाये काक [तेय].....क्ष—

२.—वाज.....ि.....रज..... ।

अनुवाद—सिद्धि हो । हुषिष्कके २० वें वर्षकी ग्रीष्मऋतुके तीसरे महीनेके १७ वें दिन, वाचक अर्थ सीह (सिंह)—जो वाचक दत्तके शिष्य थे, और जो कोट्टियगण, ब्रह्मदासीय कुल, उच्चनागरी शाखा तथा श्रीगृह

संभोगके थे—की आज्ञासे सब सत्त्वोंके सुख और कल्याणके लिये, मित्रा-
की तरफसे...समर्पित की गईं । यह मित्रा हगु देव (फल्गुदेव)
की धर्मपत्नी, लोहेका व्यापार करनेवाले वाधरकी बहु खोटमित्रके मालि-
कर...जयभट्टिकी पुत्री.....। अर्य्यदत्त गणी अर्य्यपालके आद्वचर थे ।
अर्य्यपाल अर्य्य ओघके शिष्य थे और अर्य्य ओघ महावाचक गणी जय-
मित्रके शिष्य थे ।

[El, 1, n° XLIII, n° 4]

३२

मथुरा—प्राकृत—मग्न ।

[बिना कालनिर्देशका है, पूर्ववर्ती शिलालेखसे ही मिलता-जुलता
होनेसे इसका भी समय इबिष्क सं. २० है]

वाचकस्य दत्तशिष्यस्य सीहस्य नि.....

[El, 1, p. 383, n° 60]

३३

मथुरा—प्राकृत ।

[इबिष्क सं. २२]

१. सिद्ध सव २०.....२ प्रि १ दि स्य पुर्वायं वाचकस्य अर्य्य-
मात्रिदिनस्य नि.....^१

२. सत्तवाट्टिनिये धम्मसोमाये दानं ॥ नमो अरहंतान

अनुवाद—सिद्धि प्राप्त हो । [इबिष्कके] २२ वें वर्षकी ग्रीष्मके पहले
महीनेके २० दिन, वाचक अर्य्य-मात्रिदिन (अर्य्य-मातृदत्त) के आदेशसे यह
धम्मसोमाका दान है । धम्मसोमा एक साधुवाहकी स्त्री थी । अर्हन्तोंको
नमस्कार हो ।

[El, 1, n° XLIV, n° 29]

३४

मथुरा—प्राकृत ।

[हुबिष्क सं. २२]-

[सि] द्व सं २० (९) [२] मि २ दि ७ वर्धमानस्य प्रतिमा
वारणातो गणातो पेटिवामि[क]...

अनुवाद—सिद्धि प्राप्त हो। २२ वें वर्षकी ग्रीष्मके दूसरे महीनेके
७ वें दिन, वारणा गण, पेटिवामिक [कुल] की तरफसे वर्धमानकी
प्रतिमा [प्रतिष्ठापित की गई] ।

[El, 1, n° XLIII, n° 20]

३५

मथुरा—प्राकृत ।

[हुबिष्क वर्ष २५]

अ. १. सवत्सरे पचविशे हेमंतम [से] त्रितिये दिवसे वीशे अस्मि
क्षुणे

व. १. कोट्टियतो गणतो ब्र[ह्म]दासिकतो कुलतो उचेनाग-
रितो शाखातो अयबलव्रतस्य शिपो सधि

२. 'स्य शिपिनि ग्रहा --- - - - वतन [ना] दिअ [रि] त
जभ[क] स्य वधु जयभट्टस्य कुट्टविनीय रयगिनिने [वु] सुय [॥]

अनुवाद—२५ वें वर्षकी शीतऋतुके तीसरे महीनेके १२ वें दिनके
समय रयगिनिने जो नागदिगिरि (?) के जभककी बहू थी, एक वुसुय^१
ग्रहा --- की आज्ञासे समर्पित की । रयगिनि जयभट्टकी पत्नी थी ।
ग्रहा --- सधिकी शिष्या थी । सधि अर्घ्य बलव्रत (बलव्रात) के शिष्य
थे । यह बलव्रात कोट्टिय गण, ब्रह्मदासिक कुल (और) उच्चनागरी
शाखाके थे ।

[El, 1, XLIII, n° 5]

१ यह एक प्रकारकी या तो प्रतिमा है या कोई दान है ।

३६

मथुरा—प्राकृत ।

[विना कालनिर्देशका, संभवतः दृविष्कके २५ वें वर्षका]

१. उचेनगरितो शखतो अर्य्यबलत्रतस्य शिमिणि अर्य्यब्रह्म --

२. अर्य्यबलत्रतस्य शिष्यो अर्य्यसन्धिस्य परिग्रहे नवहस्तिस्व
धिता ग्रहसेनस्य वधु३. गिवसेनस्य देवसेनस्य शिवदेवस्य च भ्रात्रिणं मातु जायये
प्रतीमा प्र.....

४. [मा] नस्य सर्वसत्त्वानं हिनसुखय ॥

अनुवाद—अर्य्य ब्रह्म (आर्य्य ब्रह्म) [और] अर्य्य बलत्रत (आर्य्य बल-
त्रात) के शिष्य अर्य्य सन्धि (आर्य्य सन्धि) के ग्रहणके लिये उचेनगरि
(इच्छनागरी) शास्त्रके अर्य्य बलत्रत (आर्य्य बलत्रात) की शिष्या, जयाने
सब जीवोंके कल्याण और सुखके लिये वर्धमानकी प्रतिमाकी प्रतिष्ठा की ।
यह जया नवहस्तीकी पुत्री, ग्रहसेनकी बहू तथा शिवसेन, देवसेन
और शिवदेव इन तीन भाइयोंकी माँ थी ।

[EI, II, n° XIV, n° 34]

३७

मथुरा—प्राकृत ।

[दृविष्क वर्ष २९]

अ. महाराज.....ष्कस सं. २० ९ हे २ दि ३० अम क्षुणे
भगवतो वर्धमानस प्रति [मा] प्रतिष्ठापिता ग्रहह[थ]स्य धितर
सुखिताये बोधिनदि [ये]

व. कुटुंबिनिये वारणे गणे पुश्यमित्रीये कुले गणिस अर्य्य [दत्तस्य
शिष्यस्य] गह [प्र] कि [व] स निर्व्वर्त [ना] अर[हं] तपुजाये ।

अनुवाद—महाराज...क के २९ वें वर्षकी शीतऋतुके दूसरे महीनेके तीसवें दिन, एक विवाहिता बोधिनदि (बोधिनन्दि ?) की आज्ञासे भगवान् वर्षमानकी प्रतिमाकी प्रतिष्ठा की गई । बोधिनदि ग्रहहन्त्रि (ग्रहहस्त्री) की प्यारी लड़की थी । यह प्रतिष्ठा ग्रहप्रक्रिय (?) की प्रेरणासे हुई । यह ग्रहप्रक्रिय आर्य दत्तके जो वारण गण और पुण्यमित्रिय (पुण्यमित्रिय) कुलके थे, शिष्य थे ।

[El, I, n° XLIII, n° 6]

३८

मथुरा—प्राकृत—भग्न ।

[संभवतः हुविष्क वर्ष २९]

अ. १. एकुनती [श] व. १. अ [र] [ह] तो सं. १.....

२. वा— २. [ह] खल २ प्रतिस—

द. १. स्व मर- स्य देव [पु] त्रस्य [हु] क्षस्य

२. [वा] सि [क] नगदत्तस्य शिषो मि [ग क] स—

[इस खण्ड-लेखका ठीक ठीक अनुवाद नहीं दिया जा सकता । इतना निश्चित है कि द. १. २. पंक्तियाँ हमें महाराज देवपुत्र हुक्ष (हुष्क या हुविष्क) और एक भिक्षु नगदत्त (नागदत्त) का नाम बताती हैं । यह भी हो सकता है कि यह लेख द. १ से शुरू हुआ हो, क्योंकि उस पंक्तिमें 'स्व', 'सिद्ध' का स्थानीय मालूम पड़ता है, तथा उसमें राजाका भी नाम है । इसकी धारा अ. १ हो सकती है । २९ वां वर्ष हुविष्कके राज्यमें आयेगा ।

[El, II, n° XIV, n° 26]

३९

मथुरा—संस्कृत—भग्न ।

[काल लुप्त-संभवतः हुविष्कका २९ वां वर्ष]

..... [व] पुत्रस्य हुविष्कस्य स

१ 'देवपुत्रस्य' और 'संवत्सरे' पढ़ो ।

अनुवाद—... देवपुत्र हुबिष्कके वर्षमें ...

[El 11, n° XIV n° 25]

४०

मथुरा—प्राकृत ।

[वर्ष ३१ हुबिष्ककाल]

अ-स ३० १ व १ दि १० अस्स क्षुणे

व. १.यातो गणतो [अ]र्य्य वेरितो शाखतो [ठा]णियातो
कुलातो वह [तो] । कुटुम्बिणिये [ग्र] ह

२. [अर्य]—दासस्य निवर्तना बुद्धिस्य धितु देविलस्य
शिरिये दाणं ।

[ऊपरके शिलालेखका ठीक क्रम, जी. बृहद्रकी सम्मतिमें, इस
तरह है:—]

[कोट्टि] यातो गण [तो] अर्य्यवेरितो शाखतो [ठा] णियातो
कुलातो वह [तो] (?) [गणिस्य] अर्य्य [गो] दासस्य निवर्तना
बुद्धिस्य धितु देविलस्य कुटुम्बिणिये ग्रहशिरिये दाणं ॥

अनुवाद—३१ वें वर्षकी वर्षाकृतके पहले महीनेके १० वें दिन,
बुद्धिकी पुत्री (तथा) देविलकी पत्नी गृहसिरी (गृहश्री) ने, कोट्टिय
गण, अर्य्य वेरि (आर्य्य वज्री) शाखा, ठाणिय (स्थानीय) कुलके
[गणी] आर्य्य गोदासके आदेशसे दान किया ।

[El, II, n° XIV, n° 15]

४१

मथुरा—प्राकृत ।

[हुविष्क काल] वर्ष ३२

अ. १. मिद्वम् । सव [त्स] रे ३० २ हेमन्तमासे ४ दिवसे २ वारणातो गणा...यातो [कु] ० !^१

२.

ब. १. --णि अर्यनन्दिकस्य निर्व्वर्त्तना जितामित्रय[रितु] नन्दिस्य धीतु बुद्धिस्य कुटुम्बिनिये प्रा—^२

तारिकस्य--ना ि --प्य मातु गन्धिकस्य अरहन्तप्रतिमा सर्व्व-
तोभद्रिका ।

अनुवाद—सिद्धि हो । ३२ वें वर्षकी शीतऋतुके चौथे महीनेके दूसरे दिन, रितुनन्दि (ऋतुनन्दि) की पुत्री, बुद्धिकी पत्नी तथा गंधिककी माँ ...जितामित्राने, वारण गण...य कुल...अर्य-नन्दिक (आर्यनन्दिक) के आदेशसे एक अर्हन्तकी सर्व्वतोभद्रिका प्रतिमाकी प्रतिष्ठापना की ।

[19, II, n° XIV, n° 16]

४२

मथुरा—प्राकृत ।

[हुविष्क वर्ष ३५]

अ. १. [मिद्व] । सं ३० [५] व ३ दि १० अस्य [ि] पूर्व्व्यायां कोट्टियातो गणतो [स्थानि] या [तो] कु—

ब. १. वडरातो श [ि] ख [ि] तो शिरिकातो सं[भो] कातो अर्य्य-
बलदिनस्य शिशिनि कुमारमि[त]

१ संभवतः 'गणातो हट्टियातो' पढ़ो । २ संभवतः 'प्रातारिकस्य' पढ़ना चाहिये ।

शि० ३

२. तस्य पुत्रो कुम[१]रभटि गंधिको तस.....नं प्रतिमा वर्षमा-
नस्य सशितमखित [बो] धित

स. १. अ [व्य]

२. कुमार-

३. मित्रा-

४. ये-

द. १. व्य

२. [त] न [II]

सारांश—आर्य बलदेव (बलदत्त) की शिष्या कुमरमित्रा (कुमार-
मित्रा) थी। वह कोटिय गण, स्थानीय कुल, वहरा शाखा (तथा)
क्षिरिक संभोक (संभोग) की थी। उसका पुत्र कुमारभटि गन्धिक (तेल,
इत्रका व्यापार करनेवाला) था। उसने नीक्षण, उज्ज्वल, प्रबुद्ध कुमार-
मित्राके आदेशसे बर्धमानकी प्रतिमाकी प्रतिष्ठा की।

[El, 1, n° XLIII, n° 7]

४३

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्क संवत् ३९—हस्तिनाम्भ]

१. महाराजस्य देवपुत्रस्य हुविष्कस्य सं० ३९.

२. हे ३ दि० ११ एतय पुर्वये नन्दि विशाल

३. प्रतिष्ठपितो सिवदाम श्रेष्ठिपुत्रेण श्रेष्ठिना

४. अर्थेन रुद्रदासेन अर्हंतनं पुजाये

अनुवाद—देवपुत्र महाराज हुविष्कके राज्यमें, सं० ३९ की शीतऋतुके
नीसरे महीनेके ११ वें दिन, यह विशाल नन्दी शिवदास श्रेष्ठीके पुत्र आर्य
श्रेष्ठी रुद्रदासने अर्हन्तोंकी पूजाके लिये बनवाया (१८ ई० पूर्व)।

[A Cunningham, Reports, III, p. 32-33, n° 9.]

४४

मथुरा—प्राकृत ।

[दृविष्क वर्ष ४०]

अ. १.—४०—हे—दि १०

ब. १. ए [त] स्य पू [वर्वा] य वरणतो ग [ण]-

स. १. तो आर्य्य हटिक्रियतो कुलतो

द. १. वजनगरित[ो] श [I] ख [I] त [ो] शि [रि] यत [ो]

अ. २.— [ग] तो [द] तिस्य शिशिनिये

ब. २. महन [न्दि] स्य सदचरिये

म. २. बल [वर्म] ये [नन्द] ये च शिशिनिये

द. २. अ [कक] ये [निर्व्वर्त्तना].....

अ. ३.—[स्य] धीतु प्रमि [क] जयदेवस्य वधूये

ब. ३....मिको जयनागस्य धर्मपत्निये सिंहदत्ता [ये]

स. ३....[लथंभ]ो^१ दनं =....

अनुवाद—[सिद्धि हो ।] ४० वें [वर्षमें] शीत ऋतुके.....महीनेके दसवें दिन, सिंहदत्ता (सिंहदत्ता) ने एक पाषाण-स्तम्भकी स्थापना की । यह सिंहदत्ता ग्रामिक जयनागकी धर्मपत्नी, जयदेव ग्रामिक (गौवका मुखिया) की बहू (तथा)की पुत्री थी । इस पाषाणस्तम्भकी स्थापना वारण गण, आर्य्य-हाटीकीय कुल, वजनगरी शाखा तथा शिरिय संभोगकी अकका (?) के आदेशसे हुई थी । यह अकका नन्दा और बलवर्माकी शिष्या, महनन्दि (महानन्दि) की आद्वचरी तथा दत्ति (दत्ती) की शिष्या थी ।

[El, I, n° XLIII, n° 1]

४५

मथुरा—प्राकृत—भग्न

[हुविष्क वर्ष ४४]

अ. सू-नमशर [स] तममहरजस्य हुविक्षस्य सव [त्स] रे ४० ४
हनगृ [स्य] मस ३ दिविस २ ण [त]-

व. [स्यां] पूर्वय [i] ... गणे अर्यचेटिये कुले हरीतमालकटिय [श]
ग्ववाचक [स्य] हगिनंदिअ शिसो ग ... नागसेणस्य ति

अनुवाद—स्वस्ति । नमः । प्रतापी (?) महाराज हुविष्ककं ४४ वें वर्षकी ग्रीष्म ऋतुकं तीसरे महीनेके द्वितीय दिवस, [वारण] गण, अर्य्य चेटिय (आर्य्य-चेटिक) कुल, हरीतमालकटि (हरीतमालगढी) शाखाकं वाचक हगिनंदि (भगनन्दि ?) के शिष्य आर्य्य नागसेनके आदेशसे—

[El, I, n° XLIII, n° 9]

४६

मथुरा—प्राकृत—भग्न

[हुविष्क वर्ष ४५]

१. मिद्धम् सं ४० ५ व [३] दि १० [७] एतस्य पूर्व्य[i]य-
..... ये बुद्धिस्य वधुये धम्मवृद्धिस्य—

अनुवाद—सिद्धि हो । ४५ वें वर्षकी वर्षाऋतुकं तीसरे (?) (महीने) के १० वें दिन, धम्मवृद्धिकी बुद्धिकी बहूने.....

[El, I, n° XLIII, n° 10]

४७

मथुरा—प्राकृत ।

[हुविष्क वर्ष ४७]

१. स ४० ७ गृ २ दि २० एतस्य पूर्वय वरणे गणे पेतियमि-
के कुले वाचकस्य ओहनदिस्य शिसस्य सेनस्य निवतना सवकस्य

२. पुषस्य वधुये गिह...[कुटिविनि] ...[पुष] दिन [स्य]
[मातु] य

अनुवाद—४७ वें वर्ष की ग्रीष्मऋतुके २ रे महीनेके २० वें दिन, वरण (वारण) गण, पेतिवर्भिक (प्रैतिवर्भिक) कुलके वाचक और ओहनदि (ओघनन्दि) के शिष्य सेनकी प्रार्थनापर पुष (पुष्य) श्रावककी बहू, गिहकी गृहिणी, पुषदिन (पुष्यदत्त) की माँ, ... की तरफसे [यह समर्पित किया गया] ।

[El, 1, n° XLIV, n° 30]

४८

मथुरा—प्राकृत—मग्न ।

[काल लुप्त, संभवतः वर्ष ४७]

१. मिद्धम् । महाराजस्य राजातिराजस्य.....

२. ओहनन्दिस्य शिष्येण से...न.....^१

अनुवाद—सिद्धि हो । महाराज, राजातिराज.....ओहनन्दि (ओघ-
नन्दि) के शिष्य सेनने.....

[El, II, n. XIV, n° 27]

४९

मथुरा—संस्कृत ।

[द्रुविष्क वर्ष ४७]

दानं देविलस्य दधिकर्णदेविकुलकस्य सं ४० ७ गृ० ४ दिवसे २९

अनुवाद—४७ वें वर्षकी ग्रीष्मऋतुके चौथे महीनेके २९ वें दिन, दधिकर्ण मन्दिर (या चैत्यालय) के पुजारी (या माली) देविलका दान ।

[1A, XXXIII, p. 102-103, n° 13]

५०

मथुरा—प्राकृत—भग्न ।

[हुविष्क वर्ष ४८]

१. महाराजस्य हुविष्कस्य स ४० ८ हे ४ दि ५

२. ब्रह्मदासिये कुल [] उ [च] १ नागरिय शाखाया धर.....

अनुवाद—महाराज हुविष्कके राज्यमें, ४८ वें वर्षकी शीतऋतुके चौथे महीनेके ५ वें दिन, ब्रह्मदासिक कुल, उच्चनगरी शाखाके धर

[1A, XXXIII, p. 103, n° 14]

५१

मथुरा—प्राकृत ।

[हुविष्ककाल वर्ष ५०]

१. पण ५० हेमन्तमासे प.....

२. आर्य्यचेरस्य

३. ये युधदिनस्य

४. धित

५. पूषबुधिस्य.....

[इस खण्ड-शिलालेखका पूरा अनुवाद संभव नहीं है । काल ५० वाँ वर्ष और शीतऋतुका पहला या पाँचवाँ महीना है ।]

[EI, II, n° XIV, n° 17]

५२

मथुरा—प्राकृत—भग्न ।

[हुविष्कका ५० वाँ वर्ष]

१. — — ५० (?) हे २ दि १ अस्य पुर्व्वय वरणतो गणतो.

अय्यभिस्त कुलतो [स] —

२. खतो शिरिग्रहतो सभोगतो ब्रह्मो वचक च गणिनो च समदि [अ].....

३.वस्य दिनरस्य शिशिनि अय्य जिनदसि पणति-धरितय
शिशिनि अ.....

४. घकरबपणतिहरमसोपवसिनि बुबुस्य धित रज्यवसुस्यधर्म...^१

५. [द] विलस्य मतु विष्णु[भ] वस्य पिदमहिक विजय-
शिरिये दन वध.....^२

६.

अनुवाद—५० वां वर्ष, शीतऋतुका दूसरा महीना, पहला दिन, इस दिन, वरण (वारण) गण, अय्यभित्त (?) कुल, सं [कासिया] शाखा, शिरिग्रह (श्रीगृह) संभोगके महावाचक तथा गणि समदि... व दिनर की क्षिप्या अय्य-जिनदसि (आयं जिनदासी) की आज्ञाको माननेवाली... अय्य घकरब (?) की आज्ञाको धारण करनेवाली विजयशिरि [विजयश्रीने] दानमें वध [मान] अर्थात् वर्धमान की प्रतिमा..... । यह विजयश्री बुबुकी पुत्री, रज्यवसु (राज्यवसु) की धर्मपत्नी, देविलकी माँ (और) विष्णुभवकी नानी थी और इसने एक महीनेका उपवास किया था ।

[El. II, n° XIV, n° 36]

५३

रामनगर—प्राकृत ।

[काल ? वर्ष ५०]

वर्ष	राजा	स्थान	कहाँ	विशेषता
५०	—	रामनगर (अहिच्छत्र)	A S N-W-P-O, Annual report 1891-1892, p. 3	दूसरा महीना, शीतऋतु, पहला दिन; ब्राह्मी लिपि

[JRAS, 1903, p. 7-14, n° 40]

१ 'धर्मपत्नी' पढ़ो । २ 'वर्धमान प्रतिमा' या शायद 'प्रतिमा' ।

५४

मथुरा—प्राकृत ।

[हुविष्क वर्ष ५२]

१. सिद्ध संवत्सर द्वापना ५० २ हेमन्त [मा] स प्रथ-दिवस
पंचवीश २० ५ अस्म क्षुणे क[ि]डिया तो गणात[ो]

२. वेरातो शखतो स्थानिकियातो कुलान्[ो] श्रीगृहतो संभो-
गातो वाचकस्यार्थघस्तुहस्तिस्य

३. शिष्यो गणिस्यार्थमंगुहस्तिस्य पदचरो वाचको अर्थदिवि-
तस्य निर्व्वर्तना शूरस्य श्रम-

४. णकपुत्रस्य गोष्टिकस्य लोहिकाकारकस्य दानं सर्व्वमन्वानं
हितमुग्यायास्तु ।

अनुवाद—सिद्धि हो । ५२ वें वर्षके शतक्रतुकें पहले महीनेके २५
वें दिन, कोट्टिय गण, वेरा (वज्रा) शाखा, स्थानिकिय कुल (तथा)
श्रीगृह संभोगके वाचक आर्थ घस्तुहस्तिके शिष्य और गणी आर्थ मङ्गुहस्ति-
के श्राद्धचर ऐसे वाचक अर्थदिवितके आदेशसे श्रमणकके पुत्र, शूर लुहार
गोष्टिकने दान दिया ।

[El. II, n° XIV, n° 18]

५५

मथुरा—प्राकृत ।

[हुविष्क वर्ष ५४]

१.—धम् । मव ५० ४ हेमन्तमासे चतुर्थे ४ दिवसे १० अ—

२. स्य पुर्व्वायां कोट्टियातो [ग] णातो स्थानि [य]तो कुलान्

३. वैरातो शाखातो श्रीगृह [र] तो संभोगातो वाचकस्यार्थ-

४. [ह] स्तहस्तिस्य शिष्यो गणिस्य अर्थमाघहस्तिस्य श्रद्धचरो
वाचकस्य अ-

५. र्यदेवस्य निर्वर्त्तने गोवस्य सीहपुत्रस्य लोहिककारुकस्य दानं
६. सर्व्वसत्त्वानां हितसुखा एकसरस्वती प्रतीष्ठाविता अवतले
रङ्गान[र्त्तन] १

७. मे [॥]

अनुवाद—सिद्धि हो । ५४ वें वर्षकी शीतऋतुके चौथे महीनेके (शुक्ल-
पक्षके) १० वें दिन, वाचक आर्यदेवकी प्रेरणासे सीहके पुत्र गोव लुहारके
दानरूपमें एक सरस्वतीकी (प्रतिमा) प्रतिष्ठापित की गई । आर्य देव
कोट्टियगण, स्थानिय कुल, वैरा शाखा तथा श्रीगृहसंभोगके वाचक आर्य
हस्तहस्तिके शिष्य गणि आर्य माघहस्तिके आद्यचर थे । अवतलमें मेरा
रङ्गशालीय नृत्य (?) ।

[Bl. 1, n° XLIII, n° 21]

५६

मथुरा—प्राकृत ।

[हुविष्क वर्ष ६०]

अ. सिद्धम् । म [हा] रा [ज] स्य र [जा] तिराजस्य देवपुत्रस्य
हुवष्कस्य सं ४० (६० ?) हेमन्तमासे ४ दि० १० एतस्यां पूर्व्यायां
कोट्टिये गणे स्थानिकीये कुले अग्य [वेरि] याण शाखाया वाच-
कस्यार्यवृद्धहस्ति [स्य]

ब. शिष्यस्य गणिस्य आर्यस्व [ण्ण] स्य पुय्यम [न] [स्य]
... [व] तक्रस्य [क]—सक्रस्य कुटुम्बिनीये दत्ताये—नधम्मो महा-
भोगताय प्रीयताम्भगवानृपभश्रीः ।

अनुवाद—सिद्धि हो । महाराज, राजानिराज, देवपुत्र हुविष्कके ६० वें
वर्षकी शीतऋतुके चौथे महीनेके १० वें दिन, कोट्टियगण, स्थानिकीय
कुल (तथा) अर्य वेरियों (आर्य-वज्रके अनुयायियों) की शाखाके वाचक
आर्य वृद्धहस्तिके शिष्य, गणि आर्य स्वर्णके आदेशसे...वतके निवासी

१ 'दानधर्मो' पढ़ो ।

पसककी पत्नी दत्ताने महामोगता (महासुख)के लिये बह दानधर्म किया। भगवान् ऋषभदेव प्रसन्न होवें।

[EI, I, n° XLIII, n° 8]

५७

मथुरा—प्राकृत।

[इ० संवत् ६२]

वाचकस्य अर्य-ककसघस्तस्य शिष्या आतपिको ग्रहबलस्य निर्वर्तन.....

अनुवाद—वाचक आर्य ककसघस्त (कर्कशघर्षित)के शिष्य आतपिक ग्रहबलके आदेशसे।

इस शिलालेखसे मालूम पड़ता है कि किसी मुनिके आदेशसे जैन आविका वैहिकाने एक प्रतिमाका दान किया।

[1A, XXXIII, p. 105-106, n° 19]

५८

मथुरा—प्राकृत।

[इ० वर्ष ६२]

१. सिद्ध। स ६० २ व २ दि ५ एतस्य पुत्र्य वाचकस्य आयकर्कुहस्य [स]

२. वारणगणियस शिषो ग्रहबलो आतपिको तस निर्वर्तना।

अनुवाद—सिद्ध हो। वर्ष ६२, वर्षाश्रतुका २ रा महीना, दिन ५, इस दिन, वारणगणके वाचक आय-कर्कुहस्य (आर्य कर्कशघर्षित) के शिष्य आतपिक ग्रहबल ये। उनकी प्रेरणासे.....

[EI, II, n° XIV, n° 19]

५९

मथुरा—प्राकृत।

[] वर्ष ७९

अ. १. सं. ७० ९-व ४ दि २० एतस्यां पुर्वायं कोट्टिये गणे चइरायां शाखायां.....

२. को अयवृधहस्ति अरहतो गन्दि [आ] वर्तस प्रतिमं निर्वर्तयति ।

ब.भार्य्यये श्राविकाये [दिनाये] दानं प्रतिमा वोद्रे थुपे
देवनिर्मिते प्र.....?

अनुवाद—वर्ष ७९, वर्षाकृतुका चौथा महीना, २० वां दिन, इस दिन, कोट्टियगण (तथा) बहुरा (बज्रा) शाखा के वाचक अय-वृधहस्ति (आर्य वृद्धहस्ति) ने दीना [दत्ता] श्राविकाको, जो.....की भार्या थी, एक अर्हत गन्दिआवर्त्त (नन्द्यावर्त्त)^१ की प्रतिमाके निर्माणके लिए कहा । दीनाकी यह प्रतिमा देवनिर्मित वोद्रे स्तूपपर प्रतिष्ठित हुई ।

[El, II, n° XIV, n° 20]

६०

मथुरा—प्राकृत—अग्र ।

[हुक्क वर्ष ८०]

१. [सिध] महर्जस्य मं ८० हण व १ दि १२ एतस
पूर्वायां.....

२. धितु संघनधि [स्य] वधुये बलस्य.....

अनुवाद—[स्वस्ति ।] महाराज वासुदेवके ८० वें वर्षमें, वर्षाकृतुके १ ले महीनेके १२ वें दिन,की पुत्री, संघनधि (?) की बहू, बलकी (अपूर्ण).

[El, n° XLIII, n° 24]

६१

मथुरा—प्राकृत—अग्र ।

[.....] वर्ष ८१

१. स ८० १ व १ दि ६ एतस्य पुत्राय [अ] यिकाजीवाये अंते-

२. वासिकिनिये दत्ताये निवतना । [ग्र) हशिरिये....

१ 'प्रतिष्ठापिता' । २ नन्द्यावर्त्त जिसका चिह्न है ऐसे १८ वें तीर्थङ्कर अर्हनाथ भगवान्की प्रतिमा ।

अनुवाद—वर्ष ८१, वर्षाऋतुका १ ला महीना, ६ ठा दिन, इस दिन, अधिका-जीवा (आर्यिकाजीवा) की शिष्या दत्ताकी प्रार्थनापर ग्रहशिरि (ग्रहश्री) ... ।

[El, II, n° XIV, n° 21]

६२

मथुरा—प्राकृत ।

[वासुदेव] वर्ष ८३

१. सिद्धं महाराजस्य वासुदेवस्य सं ८० ३ गृ २ दि १० ६ एतस्य पूर्वये सेनस्य

२. [धि] तु दत्तस्य वधुये व्य...च...स्य गन्धिकस्य कुटुम्बिनिये जिनदासिय प्रतिमा ध [मंद] जने

अनुवाद—सिद्धि हो । महाराज वासुदेवके राज्यमें ८३ वें वर्षकी ग्रीष्मऋतुके दूसरे महीनेके १६ वें दिन, सेनकी पुत्री, दत्तकी बहू, गन्धिक (तेल, इत्र बेचनेवाले) व्य-च...की पत्नी जिनदासीके पवित्रदानमें एक प्रतिमा ... ।

[1A, XXXIII, p. 107, n° 21]

६३

मथुरा—प्राकृत ।

[हुबिष्क वर्ष ८६]

१. सं ८० ६ हे १ दि १० २ दसस्य धितु पृथस्य कुटुम्बिनिये

२. ... [क] तो कुलतो अयस [क] मि [क] य शिशिनिये अयवसुल [ये] नि [व] तने [॥]

अनुवाद—८६ वें वर्षकी शीतऋतुके पहले महीनेके १२वें दिन, दस (दास) की पुत्री, पृथ (प्रिय) की पत्नी का दान अर्पित किया गया । यह दान [मेहि] क कुलकी अर्थ सङ्गमिकाकी शिष्या अर्थ वसुलांक कहनेसे हुआ ।

[El, I, n° XLIII, n° 12]

६४

मथुरा—प्राकृत ।

[हुषिष्क वर्ष ८७]

[सं ८० ७ ?] गृ १ दि [२० ?] अ [स्मि] क्षुणे उच्चेनागर-
स्यार्यकुमारनन्दिशिष्यस्य मित्रस्य.....

अनुवाद—८७ (?) वें वर्षमें ग्रीष्मऋतुके १ ले महीनेके २० (?)
वें दिन, उच्चनागरके, कुमारनन्दीके शिष्य, मित्रके....

[El, I, n° XLIII, n° 13]

६५

मथुरा—प्राकृत—भग्न ।

[वासुदेव] वर्ष ८७

१. सिद्ध । महाराजस्य राजातिराजस्य शाहिर्-वासुदेवस्य

२. सं ८० ७ हे २ दि ३० एतस्या पुर्वाया.....

अनुवाद—सिद्धि हो । महाराज राजातिराज शाहि वासुदेवके ८७ वें
वर्षकी शीतऋतुके २ रे महीनेके तीसवें दिन,

[1A, XXXIII, p. 108, n° 22]

६६

मथुरा—प्राकृत—भग्न

[सं० ९०]

१. सव [९० व] टुवनिण दिनस्य वधूय

२. को ... तो ग [णा] तो प-य [ह]-[क] तो कुलातो

मझमातो शाखा [तो]....सनिकय भतिबलाए भिनि

[यह लेख बहुत टूटा हुआ है । इसमें खाल कामकी चीज मझमा
शाखा और प-यह-क कुलका उल्लेख है । प-यहक कुल जैन परम्पराका
भग्नवाहनक या पण्णवाहणय कुल है । वर्ष (सं) ९० है]

[El, 11, n° XIV, n° 22]

६७

मथुरा—प्राकृत—भप्र ।

[वर्ष ९३]

अ. नमो अर्हतो महाविरस्य सं० ९० ३ [व]

ब. १. शिष्यस्य ग [णि] स्य [न] न्दिये [नि] वर्त्तना देवस्य
हैरण्यकस्य धितु.....२. ि- [भ] - वतो वर्द्धमानप्रतिमा प्रति पुजा
[ये] [॥]

अनुवाद—अर्हत महाविर (महावीर) को नमस्कार हो । वर्ष ९३, वर्षाकृतुका ... (महीना), ... के शिष्य गणी नन्दीके आदेशसे [अर्हत की] पूजाके लिये, हैरण्यक (सुनार) देवकी पुत्री...ने भगवान् वर्द्धमानकी प्रतिमाकी प्रतिष्ठा कराई ।

[El, II, n° XIV, n° 23]

६८

मथुरा—प्राकृत ।

[वर्ष ९५]

१. [ि] सद्धं सं. ९० ५ [?] प्रि २ दि १० ८ कोट्टि [य] ।
तो गणातो ठानियातो कुलातो वइर [। तो शा] खातो अर्य्य अरहं.....२. शिशिनि धाम [था] ये निर्वर्तन [।] ग्रहदत्तस्य धि [तु]
धनहथि.....

अनुवाद—सिद्धि हो । ९५ वें (?) वर्षके ग्रीष्मऋतुके दूसरे महीनेके १८ वें दिन, धामथाके आदेशसे ग्रहदत्तकी पुत्री, धनहथि (धनहस्ती) की पत्नी ... का [दान किया गया] । धामथा कोट्टियगण, ठानिय कुल, वइरा शास्त्राके अर्य्य अरह [दिव] की शिष्या थी ।

[El, I, n° XLIII, n° 22]

६९

मथुरा—प्राकृत ।

[वासुदेव सं० ९८]

१. सिद्ध [म] ॥ नमो अरहतो महावीरस्य दे.....रस्य । राज
वासुदेवस्य संवत्सरे ९० ८ वर्ष-मासे ४ दिवसे १०१ एतस्या

२. पुत्रिय अर्य-देहिकियातो ग [णातो] परिधा [१] सिकातो
कुलातो पेतपुत्रिकातो शाखातो गणिस्य अर्य-देवदत्तस्य न

३. र्य-क्षेमस्य

४. प्रकगिरिणं

५. किहदिये प्रज

६.तस्य प्रवरकस्य धितु वरुणस्य गन्धिकस्य वधूये मित्रस.....
.....दत्त गा [?]

७. ये....भगवतो महा [वीर] स्य ।

अनुवाद—सिद्धि हो । महावीर अर्हत्को नमस्कार हो । ... राजा
वासुदेवके ९८ वें वर्षकी वर्षाऋतुके चतुर्थ महीनेके ११ वें दिन, अर्य
देहिकिय (देहिकीय) गण, परिधासिक कुल, पेतपुत्रिका (पैतापुत्रिका ?)
शाखाके गणि आर्य देवदत्तके ... [आदेशसे] प्रवरककी पुत्री, गन्धिक
वरुणकी बहू, मित्रस ... , आर्य-क्षेमाका ... [दान] ...
भगवान् महावीरको नमस्कार हो ।

[1A, XXXIII, p. 108-109, n° 23]

७०

मथुरा—प्राकृत—भग्न ।

[सं.] वर्ष ९८

स. ९० ८ हे १ दि ५ अस्म क्षुणे को [१] द्रियात [१] गणातो
उचनग.....१

अनुवाद—वर्ष ९८ की शीतऋतुके १ ले महीनेके ५ वें दिन, कोट्टिय गण, उच्चनगरी (उच्चानागरी) [शाखा]

[El, II, n° XIV, n° 24]

७१

मथुरा—प्राकृत ।

[विना कालनिर्देशका]

१. नमो अरहंतानं सिंहकस वानिकस पुत्रेण^१ कोशिकिपुत्रेण

२. सिंहनादिकेन आयागपटो प्रतिथापितो अरहंतपुजाये [II]

अनुवाद—अर्हन्तोंको नमस्कार हो । वानिक सिंहक (सिंहक) के पुत्र तथा किसी कोशिकी (कौशिकी माँ) के पुत्र सिंहनादिक (सिंह-नन्दिक ?) के द्वारा एक आयागपटकी प्रतिष्ठा अर्हन्तोंकी पूजाके लिये की गई ।

[El, II, n° XIV, n° 30]

७२

मथुरा—प्राकृत—भग्न ।

[विना कालनिर्देशका]

नमो अरहंताना शिवघो [पक्र] स भरि [या]ना.....ना.....

अनुवाद—अर्हन्तोंको नमस्कार । शिवघोषककी भार्या.....

[El, II, n° XIV, n° 31]

७३

मथुरा—प्राकृत ।

[विना कालनिर्देशका]

पं. १. नमो अरहंतानं [मल]णस धितु भद्रयशस वधुये
भद्रनदिस भयाये

२. अ [चला] ये आ [या] गपटो प्रतिथापितो अरहंतपुजाये ।

अनुवाद—अर्हन्तोको नमस्कार । मल—णकी बेटी, मद्रयश (मद्रय-
शस) की बहु, तथा मद्रनदि (मद्रनन्दिन्) की पत्नी अबलाने अर्हन्तोकी
पूजाके लिये एक आयागपट स्थापित किया ।

[El, II, n° XIV, n° 32]

७४

मथुरा—प्राकृत—भग्न ।

[काल लुप्त]

—शे एत [स्यां] पूर्वायां कौट्टियातो गणातो.....

अनुवाद—उक्त समय पर, कौट्टियगणके.....

[El, I, n° XLIII, n° 15]

७५

मथुरा—प्राकृत—भग्न ।

[काल लुप्त]

पं. १.....अरहंतानं वधमानस्य [क]लस्य धितु सिनविषुस्य
म [स्त्रि] न [१] य

२.....[श] [ति] स्य ि[नव] त्तनं [II]

अनुवाद—शतिके आदेशसे सिनविषु (विष्णुदेण)की बहिन, कलकी
पुत्रीका दान यह अर्हत् वर्धमानकी प्रतिमा है ।

[El, I, n° XLIII, n° 16]

७६

मथुरा—प्राकृत—भग्न ।

[बिना कालनिर्देशका]

वारणातो गणातो आर्यकनियसिकातो कुलातो ओद.....

अनुवाद—वारण गण, पूजनीय कनियसिक कुल, ओद... (शाखा) के

[El, I, n° XLIII, n° 23]

७७

मथुरा—प्राकृत—भग्न ।

[काल लुप्त]

.....वर्षमासे १ दीवसे ३० अस्मि क्षु.....^१

अनुवाद—.....वर्षाकृतके पहले महीरेके ३० वें दिन, उस
 अवसर (या, उत्सव) पर.....

[EI, I, n° XLIII, n° 25]

७८

मथुरा—प्राकृत—भग्न ।

[बिना कालनिर्देशका]

दासस्य पुत्रो चीरि तस्य दत्तिः [॥]

अनुवाद—दासके पुत्र चीरिका दान ।

[EI, I, n° XLIII, n° 26]

७९

मथुरा—प्राकृत—भग्न ।

[बिना कालनिर्देशका]

पं. १. [प्रतिमा] वधमान [स्य] प्रतिष्ठापिता

२.ठानियातो—ल.....त आर्यग].....

अनुवाद—ठानिय (स्थानीय) शास्त्राके.....वधमान (वर्धमान)-
 की प्रतिमा प्रतिष्ठापित की गई ।...

[EI, I, n° XLIII, n° 27]

८०

मथुरा—प्राकृत—भग्न ।

[बिना कालनिर्देशका]

पं. १. [सि] द्व नमो अरहंताण.....द्वने वारणे गणे अयहाडि
[ये]^१

२. कुले वज्रनागरिया शाखाया अर्यशिरिकिये संभो.....^२

अनुवाद—सिद्धि हो । अर्हन्तोंको नमस्कार । [सिद्धोंको नमस्कार] ।
वारण गण, अय हाडिय (अर्य हालीय) कुल, वज्रनागरि (वज्रनागरी)
शाखा, अर्य-शिरिकिय संभोगके.....

[El, I, XLIV, n° 34]

८१

मथुरा—प्राकृत ।

[बिना कालनिर्देशका]

पं. १. [ते]—रुसनंदिकस पुत्रेन नंदिघोषेन [ते] वणिकेन अ....
त.....अले.....

२. णानं मंदिरे [आ] यागपटा प्रतियापित [र].....

अनुवाद—ते-रुस (!)-नंदिकके पुत्र, तेवणिक (त्रैवर्णिक) नंदिघोषके
द्वारा आयागपटके मन्दिरमें स्थापित की गई ।

[El, I, XLIV, n° 35]

८२

मथुरा—प्राकृत ।

[बिना कालनिर्देशका]

अ. ... भगवतो उसभस वारणे गणे नाडिके कुले
खा [यं]

१ पढ़ो 'नमो सिद्धान' । २ संभवतः 'होळिये' । ३ पढ़ो 'संभोगे' ।

ब. दुकस वायकस सिसिनिए सादिताए नि

अनुवाद—भगवान् वृषभ (उसभ) को नमस्कार हो। वारण गण, नाषिक कुल तथा.....के वाचक.....दुककी शिष्या सादिताके आदेशसे.....

[E1, II, n° XIV, n° 28]

८३

मथुरा—प्राकृत ।

[बिना कालनिर्देशका]

स्थ [i]निकिये कुले गनिस्य उग्गाहिनिय शिषो वाचको घोषको आर्हतो पर्थस्य प्रतिमा....

अनुवाद—“स्थानिकिय (कीय) कुलके गणि (गणिन्) उग्गाहिनिके शिष्य वाचक घोषकने एक अर्हत् पार्थकी प्रतिमा....

[E1, II, n° XIV, n° 29]

८४

मथुरा—प्राकृत—अप्र ।

[बिना कालनिर्देशका]

अ. वर्धमानपटिमा वजरनद्यस्य धिता वाधिशिव....

१.-i- स्य- कुटीबिनि दिनाये दाति बडिम [शि] ये....

२.....

अनुवाद—“वजरनद्य (वज्रनन्दिन्) की पुत्री, वाधिशिव (वृद्धिशिव ?) की बहू, i की पत्नी दिना (दत्ता) के दानके रूपमें एक वर्धमानकी प्रतिमा बडिमशिके.....

[E1, II, n° XIV, n° 33]

८५

मथुरा—प्राकृत—भग्न ।
[बिना कालनिर्देशका]

अ. तिये निर्वर्तना

ब. १. तो शय्वतो शिरिकतो संभोक्तो अर्थ

३. लनस्य मनु ह [स्त].....

२. ि-धराये निव्रतना शिवद [त]

[EI, II, n° XIV, n° 35]

[नोट—'निर्वर्तना' और 'निव्रतना' इन दो शब्दोंके एक ही शिलालेखमें आ जानेसे एक ही शिलालेखके दो खण्ड मान्य पड़ते हैं और वे सम्बद्ध अर्थको व्यक्त नहीं करते हैं ।]

८६

मथुरा—प्राकृत ।
(बिना कालनिर्देशका)

१.ये मोगलिपुतस पुफकस भयाये

२. असाये पसादो

अनुवाद—किसी मोगली (माँ मौदलीविशेष) के पुत्र, पुफक (पुष्पक) की पत्नी, असा (अशा ?) का दान ।

[1A, XXXIII, p. 151, n° 28.]

८७

राजगिरि—संस्कृत ।

[]

T. Bloch के आर्कैओलोजिकल सर्वे, बङ्गाल सर्किल, वार्षिक रिपोर्ट १९०२, पृ० १६, विस्लेषणमें इस शिलालेखका उल्लेख है । मूलका पता नहीं है ।

[AS, Bengal circle, Annual report 1902, p. 16. a.]

८८

मथुरा—संस्कृत—भग्न ।

[सं० २९९]

१. नमस्-सर्वसिद्धाना अरहन्ताना । महाराजस्य राजातिराजस्य
संवच्छरशते द [८] [तिये नव (?) -नवत्सधिके ।]

२. २०० ९० ९ (?) हेमन्तमासे २ दिवसे १ आरहातो
महावीरस्य प्रातिमा

३.स्य ओखारिकाये धितु उज्जतिकाये च ओखाये श्राविका
भगिनिय []

४.शरिकस्य शिवदिनास्य च एतैः आराहातायनाने
स्थापित []

५.देवकुलं च ।

अनुवाद—सब सिद्धों और अर्हन्तोंको नमस्कार हो । महाराज और
राजातिराजके (९९ से अधिक) दूसरी शताब्दिमें, २९९ (?), शीतऋ-
तुके दूसरे महीनेके पहले दिन—भगवान महावीरकी प्रतिमा अर्हन्मन्दिरमें
..... के द्वारा तथाकी पुत्री, ...ओखारिकाकी ...उज्जतिका द्वारा,
...श्राविका-भगिनी ओखाके द्वारा, तथा शरिक और शिवदिना इनके द्वारा
स्थापित की गईं...साथमें एक जिनमन्दिर भी ।

[G. Buhler, J R A S, 1896, p. 578-581.]

८९

मथुरा—संस्कृत—भग्न

[गुप्तकाल ? वर्ष ५७]

संवत्सरे सप्तपञ्चाश ५० ७ हेमन्धत्रिती....^१

—से [दि] वसे त्रयोदशे अ-पूर्वायां....

१ 'हेमन्त' और 'तृतीय' या 'तृतीय' पढ़ो ।

अनुवाद-५७ वें वर्ष, शीतकतुकी तीसरे महीनेके १३ वें दिन,
इसदिन.....

[El, II, n° XIV, n° 38]

९०

नोणमङ्गल—संस्कृत

गुप्तकालसे पहिले, संभवतः ३७० ई० का

[नोणमंगलमें ताम्र-पट्टिकाओंपर]

[१ ब] स्वस्ति नमस् सर्वज्ञाय ॥ जितं भगवता गत-घन-गगनाभेन
पद्मनामेन श्रीमज्-जाह्नवेय-कुलामल-व्योमावभासन-भास्करस्य स्व-भुज-
जयज-जय-जनित-सुजन-जनपदस्य दारुणारिगण-विदारण-रणोपलब्ध-
व्रण-विभूषण-भूषितस्य काण्वायनमगोत्रस्य श्रीमत्कोङ्कणिवर्म-धर्म-
महाधिराजस्य पुत्रस्य पितुरन्वागत-गुण-युक्तस्य विद्या-विनय-विहित-
वृत्तस्य

[२ अ] सम्यक्-प्रजा-पालन-मात्राधिगत-राज्य-प्रयोजनस्य विद्वत्कवि-
काञ्चन-निकषोपल-भूतस्य विशेषतोऽप्यनवशेषस्य नीति-शास्त्रस्य वक्तु-
प्रयोक्तृकुशलस्य सुविभक्त-भक्त-भृत्यजनस्य दत्तक-सूत्र-वृत्ति-प्रणेतुः
श्रीमन्माधववर्म-धर्म-महाधिराजस्य पुत्रस्य पितृ-पैतामह-गुणयुक्तस्य
अनेक-चतुर्दन्त-युद्धावाप्त-चतुरुदधि-सलिलास्वादित-यशसः समद-द्विर-
दतुरगारोहणातिशयोपन्न-कर्मणः श्रीमद् हरिवर्म-महाधिराजस्य
पुत्रस्य गुरु-गो-ब्राह्मण-पूजकस्य नारायण-चरणानुध्या

[२ ब] तस्य श्रीमद्विष्णुगोप-महाधिराजस्य पुत्रेण पितुरन्वागत-
गुण-युक्तेन त्र्यम्बकचरणाम्भोरुहराजः(ज)पवित्रीकृतोत्तमाङ्गेन व्यायामो-
द्वृत्त-पीन-कठिनमुजद्वयेन स्व-भुज-बल-पराक्रम-क्रय-क्रीत-राज्येन क्षुत्-

क्षामोष्ठ-पिंसिताशनप्रीतिकर-निसित-धारासिना श्रीमता माधववर्म-
हाधिराजेन आत्मनःश्रेयसे प्रवर्द्धमानविपुलैश्वर्ये त्रयोदशे संवत्सरे
फाल्गुने मासे शुक्ल-पक्षे तिथौ पञ्चम्यां श्रीमद्-वीर-देव-शासनाम्बरावभा-
सन-सहस्रकरस्य आचार्यवीर-देवस्य

• [३ अ] निज-कृतान्तपर-राद्धान्त-प्रवीणस्य उपदेशनात्
मुदुकोत्तूर-विषये पेन्बोलल्-ग्रामे अर्हदायतन्नाय मूलसंघानुष्ठिताय
महा-तटाकस्य अथस्तात् द्वादश-खण्डुकावापमात्र-क्षेत्रं च तोट्ट-क्षेत्रं च
पट्ट-क्षेत्रं च कुमारपुर-ग्रामश्च एतत्सर्वं स-सर्व-परिहार-क्रमेणाद्भिर्दत्तः
योऽस्य लोभात् प्रमादाद्वापि हर्त्ता स पञ्च-महा-पातक-संयुक्तो भवति
अपि चात्र मनुगीता[.] श्लोका[.]

स्व-दत्तां पर-दत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम् ।

षष्ठि-वर्ष-सहस्राणि घोरे तमसि वर्तते ॥

(अन्य हमेशाके अन्तिम श्लोक)

[इस लेखमें गंगकुलके राजाओंकी परम्परा—कोङ्कणिवर्मा, माधववर्मा,
हरिवर्मा, विष्णुगोप और माधववर्मा—देकर यह बताया है कि अन्तिम
राजाने अपने राज्यके १३ वें वर्षमें, कासगुनसुदी पंचमीको, आचार्य वीर-
देवकी सम्मतिसे, मुदुकोत्तूर-देशके पेन्बोल्ल गांवमें मूलसंघद्वारा प्रतिष्ठापित
जिनालयमें (उक्त) भूमि और कुमारपुर गांव दानमें दिये ।]

[EC, X, Malur th., n° 73.]

९१

उदयगिरि (सांची के निकट)—संस्कृत ।

[गुप्तकाल १०६ = ई. सं० ४२६]

Corrected transcript of the facsimile.

[१] नमः सिद्धेभ्यः[III]

श्रीसंयुतानां गुणतोयधीनाम्
गुप्तान्वयानां नृपसत्तमानाम् [I]

[२] राज्ये कुलस्याभिविवर्द्धमाने
षड्भिर्युते वर्षशतेऽथ मासे [II] १.
सुकार्तिके बहुलदिनेऽथ पञ्चमे

[३] गुह्यामुखे स्फुटविकटोत्कटामिमां [I]
जितद्विषो जिनवरपार्श्वमंजिकाम्
जिनाकृतीं शमदमवान

[४] चीकरत् [II] २. आचार्य-भद्रान्वयभूषणस्य
शिष्यो ह्यसाचार्यकुलोद्गतस्य [I]
आचार्य-गोश

[५] र्म्म मुनेस्सुतस्तु पद्मावत [त्या] श्वपतेर्भटस्य [II] ३.
परैरजेयस्य रिपुघ्नमानिनम्
स सङ्ग

[६] लस्येलभिविभ्रुतो भुवि [I] स्वसंज्ञया शंकरनामशद्धितो
विधानयुक्तं यतिमार्गमास्थितः [II] ४.
स उत्तराणां सदृशे गुरूणां
उदग्दिशादेशवरे प्रसूतः [I]

[८] क्षयाय कर्म्मरिगणस्य घीमान्
यदत्र पुण्यं तदपाससज्जे [II] ५.

[इस शिलालेखमें शम-दमचाले किसी व्यक्तिद्वारा पार्श्वनाथ जिनेन्द्रकी प्रतिमाकी कार्त्तिक वदी पंचमीके दिन स्थापनाकी बात है। यह प्रतिमा किसी गुफाके द्वारपर खड़ी की गई थी। इस प्रतिमाकी स्थापना करने वाला या उसकी खड़ा करनेवाला आचार्य गोक्षर्माका शिष्य था। ये गोक्षर्मा आचार्य भद्रके वंशमें हुए थे, इनकी परम्परा आर्यकुलकी थी और अम्बपति योद्धाके लड़के थे। ये अम्बपति सङ्गल (या सिंहल) के नामसे प्रसिद्ध थे और इन्होंने जिनदीक्षा लेनेके बाद अपना नाम शंकर रक्खा था।]

[इण्डियन एण्टीक्वेरी, जिल्द ११, पृ० ३१०]

९२

मथुरा—संस्कृत।

[गुप्तकाल, वर्ष ११३]

१. सिद्धम् । परमभट्टारकमहाराजाधिराज श्रीकुमारगुप्तस्य विजयराज्यसं [१०० १०] ३ क.....न्तमा.....[दि]—स २० अस्यां ५ [पूर्व्यायां] कोट्टिया गणा-

२. द्विधाधरी [तो] शास्त्रातो दतिलाचार्यप्रज्ञपिताये शामाढ्याये भट्टिभवस्य र्थातु ग्रहमित्रपालि [तं] प्रा [ता] रिक्तस्य कुटुम्बिर्नयाये प्रतिमा प्रतिष्ठापिता ।

अनुवाद—सिद्धि हो । परमभट्टारक महाराजाधिराज श्रीकुमारगुप्तके विजयराज्यके ११३ वें वर्षमें, [शीतऋतु ग्रहीने] कार्त्तिकके २० वें दिन, कोट्टियगण (तथा) विधाधरी शास्त्राके दतिलाचार्य (दतिलाचार्य) की आज्ञासे शामाढ्य (श्यामाढ्य) ने एक प्रतिमाकी प्रतिष्ठा करवाई । श्यामाढ्य भट्टिभवकी बेटी (और) ग्रहमित्रपालित प्रातारिक (घाटी या नाविक) की पत्नी थी ।

[EI, II, n° XIV, n° 39]

९३

कहायूँ—संस्कृत

[गुप्तकाल १४१ वां वर्ष=४६१ ई. स.]

सिद्धम् ।

- [१] यस्योपस्थानभूमिर्नृपतिशतशिरःपातवानावधूता
- [२] गुप्तानां वंशजस्य प्रविसृतयशसस्तस्य सर्वोत्तमर्द्धे:
- [३] राज्ये शक्रोपमस्य क्षितिपशतपते: स्कन्दगुप्तस्य शान्ते
- [४] वर्षे त्रिंशद्वैकोत्तरकशनतमे ज्येष्ठमासि प्रपन्ने ॥ १ ॥
- [५] ख्यातेऽस्मिन् ग्रामरत्ने ककुभ इति जनैस्साधुसंसर्गपूते
- [६] पुत्रो यस्सोमिलस्य प्रचुरगुणनिधेर्भट्टिमोमो महात्मा
- [७] तत्सूनुरूद्रसोम[ः] प्रथुलमतिपया व्याघ्र इत्यन्यमंज्ञो
- [८] मद्रस्तस्यात्मजोऽभूद् द्विजगुरुयतिषु प्रायशः प्रीतिमान् यः ॥
- [९] पुण्यस्कन्धं स चक्रे जगदिदमखिलं संसरद्वीक्ष्य भीतो
- [१०] श्रेयोऽयं भूतभूत्यै पथि नियमवतामर्हतामादिकर्तृन्
- [११] पञ्चेन्द्रांस्थापयित्वा धरणिधरमयान् सन्निखातस्ततोऽयम्
- [१२] शैलस्तम्भः सुचारुर्गिरिवरशिखराग्रोपमः कीर्तिकर्ता ॥ ३ ॥

[इस शिलालेखमें, जो कि गुप्तकालके १४१ वें वर्षका है, बताया गया है कि किसी भद्र नामके व्यक्तिने, जिसकी कि वंशावली यहां उसके प्रपितामह सोमिल तक गिनाई है, अहंन्तों (तीर्थंकरों)में मुख्य समझे जाने वाले, अर्थात् आदिनाथ, ज्ञान्तिनाथ, नेमिनाथ, पार्थ, और महावीर, इन पाँचोंकी प्रतिमाओंकी स्थापना करके इस स्तम्भको खड़ा किया । लेखकी ११ वीं पंक्तिके 'पञ्चेन्द्रान्' से इन्हीं पाँच तीर्थंकरोंसे मतलब है ।]

[इण्डियन एण्टिक्वेरी, जिल्द १०, पृ० १२५-१२६]

९४

नोणमंगल—संस्कृत तथा कन्नड ।

[गुप्तकालसे पहिले, संभवतः ४२५ (?) ई० वा]

[नोणमंगल (लक्ष्मर परगना) में, ध्वस्त जैन बस्तिके ताम्र-पत्रों पर]

(१ ब) स्वस्ति जितं भगवता गतध्वज-गगनामेन पद्मनामेन श्रीमज् जाह्नवेय-कुलामल-व्योमावभासन-भास्करस्य स्व-भुज-जव-ज-जय-जनित-सुजन-जनपदस्य दारुणारि-गण-विदारण-रणोपलब्ध-व्रण-विभूषण-भूषितस्य काण्वायनस-गोत्रस्य श्रीमत्कोङ्कणिवर्म्म-धर्म्म-महाधिराजस्य पुत्रस्य पितुरन्वागत-गुण-युक्तस्य विद्या-विनयविहित-वृत्तस्य सम्यक्-प्रजा-पालन-मात्राधिगत-राज्य-प्रयोजनस्य विद्वत्-कवि-काञ्चन-निकषो

[२ अ] पल-भूतस्य विशेष्यतोऽध्यनवशेषस्य नीति-शालस्य वक्तु-प्रयोक्तुकुशलस्य सुविभक्त-भक्त-भृत्य-जनस्य दत्तक-मूत्र-वृत्ति-प्रणेतुः श्रीमन्माधववर्म्म-धर्म्म-महाधिराजस्य पुत्रस्य पितु-पैतामह-गुण-युक्तस्य अनेक-चतुर्दन्त-युद्धावाप्त-चतुरुदधि-सलिलाखादित-यशसः समद-द्विरद-तुरगारोहणानिशयोत्पन्न-कर्मणः धनुरभियोगस-म्पद्-विशेषस्य श्रीमद्-हरिवर्म्म-महाधिराजस्य पुत्रस्य गुरु-गो-ब्राह्मण-पूजकस्य नारायण-चरणानुध्यातस्य श्रीमद्विष्णुगोप-महाधिराजस्य पुत्रस्य पितुरन्वा

[२ ब] गत-गुण-युक्तस्य त्र्यम्बक-चरणाम्भोरुह-रजः-पवि-त्रीकृतोत्तमाङ्गस्य व्यायामोदवृत्त-पीन-कठिन-भुज-द्वयस्य स्वभुजबल-परा-

१ ये ताम्रपत्र जमीनमें मिले हैं ।

क्रम-क्रयक्रीत-राज्यस्य चिर-प्रनष्ट-देव-भोग-ब्रह्मदेय-नैक-सहस्र-विसर्गा-
प्रयण-कारिणः क्षुत्-क्षामोष्ट-पिसिताशन-प्रीतिकर-निशित-धारासेः कलि-
युग-बलावमग्न-धर्मोद्धरण-नित्य-सन्नद्धस्य श्रीमतो माधववर्म-धर्म-महा-
धिराजस्य पुत्रेण जननी-देवताङ्क-पर्यङ्क-तले-समधिगत-राज्य-विभव-
विलासेन निज-प्रभावांशु-चक्रवालाखण्डित-शत्रु-नृपति-मण्डलेनाखण्ड

[३ अ] ल-विडम्बि-शौर्य्य-वीर्य्य-यशो-धाम-भूतेन गज-धुरि-हय-पृष्ठे
कार्मुके चाद्वितीयेन ललना-नयन-भ्रमरावली-नित्यकृतानुयात्रेण प्रजा-
परिपालन-कृत-परिकर-बन्धेन किं बहुना इदङ्कलि-युधिष्ठिरेण-श्रीमता
कोकुणिवर्म-धर्म-महाधिराजेन आत्मनः श्रेयसे प्रवर्द्धमान-विपुलैश्वर्य्यं
प्रथमसंवत्सरे फाल्गुन-मासे शुक्ल-पक्षे तिथौ पञ्चम्यां सो(स्वो)पाध्यायस्य
परमार्हतस्य विजयकीर्तेः सकलदिङ्मण्डलन्यापिकीर्तैरुपदेशतः
चन्द्रनन्द्याचार्य्य-प्रमुखेन मूल-संघेनानुष्ठिताय उरनूरार्हतायत

[३ ब] नाय कोरिकुन्द-विषये वेन्नैल्करनिग्रामः पेरुरेवानि-अडि
गलर्हदायतनाय शुल्क-बहिश्कर्षापणेषु पादश्च देव-भोगक्रमेणाद्विर्दत्तः
योऽस्य लोभाद् प्रमादाद्वापि हर्त्ता स पञ्च-महा-पातक-संयुक्तो भवति
अपि चात्र मनुगीताः श्लोकाः

खदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम् ।
षष्ठि-वर्ष-सहस्राणि घोरे तमसि वर्त्तते
भूमि-दानात् परं दानं न भूतं न भविष्यति ।
तस्यैव

[४ अ] हरणात् पापं न भूतं न भविष्यति ॥

(दो हमेशाके श्लोक) महाराज-मुखाज्ञाप्या मारिषेण त्वद्विकारेण
लिखितेयं ताम्र-पट्टिका

[EC, X, Mälur tl., n° 72.]

अनुवाद—कोङ्कणिवर्म-धर्म-महाधिराज जाह्नवी (या गंग)-
कुलके निर्मल आकाशमें चमकनेवाले सूर्य थे; वे काण्वायनसगोत्रके थे ।

इनके पुत्र माधववर्मधर्ममहाधिराज थे, जो एक 'दत्तकसूत्र-
वृत्ति' के प्रणेता थे ।

इनके पुत्र हरिवर्मा-महाधिराज थे ।

इनके पुत्र विष्णुगोप-महाधिराज थे ।

इनके पुत्र माधववर्म-धर्म-महाधिराज थे, जो कलियुगकी कीचड़में फंसे
हुए धर्मरूपी बैलको निकालनेमें हमेशा सज्ज रहते थे ।

इनके पुत्र कोङ्कणिवर्म-धर्म-महाधिराजने जो कि कलियुगी युधिष्ठिर
कहलाते थे, अपने कल्याणकेलिये, अपने बढ़ते हुए राज्यके प्रथम
वर्षकी फाल्गुन सुदी पञ्चमीको, अपने उपाध्याय परमार्हत (भक्तजैन)
विजयकीर्तिकी सम्प्रतिसे, मूलसंघके चन्द्रनन्दि इत्यादिके द्वारा प्रतिष्ठापित
उरनूर के जैन मन्दिरको कोरिकुन्द-देशमेंका बेकेल्करनि गाँव दिया
था, और पेरूर एवामि-अडिगल्लके जिनमन्दिरमें बाहरकी सुङ्गीके कार्षापण
(या धन) का चतुर्थ भाग दिया था ।

हमेशाके शापात्मक (imprecatory) श्लोक । महाराज अपने
मुँहसे जैसा बोलते जाते थे, मारिषेण त्वद्विकार वैसा ही इन ताम्र-पट्टिकाओं-
पर खोदता जाता था ।

१. ८० रत्तीके तौलके ताम्बेके सिक्के, जो प्राचीनतम देशी मुद्राके थे ।
(डा० बृह्हरकी Grundriss, में रैपसनका 'Indian Coins' नामका लेख
देखो ।)

९५

मर्कटा—संस्कृत तथा कन्नड ।

[शक १८८=४५९ ई.]

अविनीत कोङ्कणिका मर्कटा-पत्र

(मर्कटाके लजानेमेंसे प्राप्त तात्त्विकोंके ऊपर)

(१ ब) स्वस्ति जितं भगवता गतघनगगनाभेन पद्मा(ध)नाभेन श्रीमद्जाह्नवीय[कु]लामलव्योमावभासनभास्करः स्वखड्गैकप्रहारखण्डित-महाशिलास्तम्भलब्धबलपराक्रमो दारणो(रुणा)रिगणविदारणोपलब्धव्र(व)-णविभूषणविभूषित काण्वायनसगोत्रस्य(?) श्रीमान् कोङ्कणिमहाधिराज ॥ तत्पुत्र पितुरन्नागतगुणयुक्तो विद्याविने(न)यविहितवृत्तः सम्या(भ्य)क्प्र-जापालना(न)मात्राधिगतराज्यात्प्र(ज्यप्र)योजन विद्वत्कविकाञ्चननिक-षोपलभूतो नीतिशास्त्रस्यवक्तृप्रयोक्तृकुशलस्य(?) दत्तकसूत्रवृत्तिः(सेः) प्रणेतां(ता) श्रीमान्माधवमहाधिराज ॥ तत्पुत्र पितृपैतामहा(ह)गुणयुक्तो व(ऽ)नेकचातुर्दन्तयुद्ध(द्धा)नासिचतुरुदधिसलिलास्वादितयश श्रीमद् हरि-वर्म्ममहाधिराज ॥ तत्पुत्र ॥ द्विजगुरुदेवताः(ता)पूजनपरो नारायण-चरणानुद्ध(ध्या)न श्रीमद्विष्णुगोपम

(२ अ) हाधिराज ॥ तस्य पुत्र ॥ त्रियम्भ(त्र्यम्भ)कचरणाम्भोरुहरा-जाः(रजः)पवित्रीकृतोत्तमाङ्ग स्वभुजबलपराक्रमक्रियाकृतराज्य कलियुगबल-पङ्कावसनवृषोद्धरणनित्यसनद्ध श्रीमान्माधवमहाधिराज ॥ तस्य पुत्र ॥ श्रीमद्कदम्बकुलगगनगभस्तिमालिन कृष्णवर्म्ममहाधिराजस्य प्रिया(य) भागिनेयो विद्याविनय(या)तिस(श)यपरिपूरितान्तरात्म(त्मा) निरवग्रहप्रथा- (य)नसौम्य विद्वत्सु प्रथमगण्य श्रीमान् कोङ्कणिमहाधिराज अविनीतना-मधेय दत्तस्य देसिग-गणं कोण्डकुन्दान्वयगुणचन्द्र भटारशिष्यस्य अभ-

णन्दि(अभयनन्दि)भटार तस्य शिष्यस्य शीलभद्रभटारशिष्यस्य जयण-
न्दिभटारशिष्यस्य गुणणन्दिभटारशिष्यस्य चन्द्रण्दिभटारगर्गे अष्टा-अ-
सीति-उत्तरस्य त्रयो-स(श)तस्य संवत्सरस्य माघमासं सोमवारं स्वातिनक्षत्र
सुद्ध पञ्चमी अकालवर्ष-पृथुवीवल्लभमघ्नी तलवननगर श्रीविजयजिनालयके
पूनाडुच्छ(च्छट्)सहस्रएडेनाडुसप्तारिमध्ये बदणेगुप्पेनाम अविनीतम-
हाधिराजेन दत्तेन पडिये आरौल्लमूरु ।

(२ व) रोक्क पन्निकण्डुगङ्गेन्दुअम्बलिमण्णुं तलवनपुरदोळ्
तलवित्तियमन् पोगरिगेल्लेयोल् पन्निकण्डुगं पिरिकेरैयोळम् राज-
मानमनुमोदन पन्निकण्डुगं मनोहरं दत्तं बदणेगुप्पेग्रामस्य सीमान्तरं
पूर्वस्यां दिसि केज्जिगेमोरेरिडिण् गजसेलेये करिवल्लिय कोडगरबदणे-
गुप्पेयत्रिसन्धिय सत्ति-कोरिडु आम्रेयदिनन्ते वन्दुकागणि-नटाकं पुन
दक्षिणस्यां दिसि बड्डणुहिये वल्काणिवृक्षमे पुन पश्चिम-मुखदे सन्द
वड्डमूलिकपन्निये पुन बदणेगुप्पेय-कोडगरमुल्लगिय-त्रिसन्धिय कोळे
चण्डिगाले पुन नैरत्यदे सन्दु कयक-वृक्षमे पुन पश्चिमस्यां दिसि
पेल्डुलिदल्-वृक्षमे सान्तेरैतिय वट-वृक्षमे पुन तोरेवल्लमे उत्तरा-मुखदे
सन्द वड्डमूलिक-पन्निये जम्बूपडिय-नटाकमे पुन वायव्यदे गळे-
चिञ्च-वृक्षमे पुन बदणेगुप्पेय-मुल्लगिय-कोळेयनूरदासनूर-त्रिसन्धिय-
नेर्गिल-गुम्बे निडुवेळुङ्गे पुन गजसेलेयग्राम उत्तरदिसि काया-
मोरेरिडिण् इल्लिदु केम्ब रेये पुन पूर्व-मुखदे सन्द वड्डमूलिक-प ।

(३ अ) न्तिये पुन कडपल्लिगाल वट-वृक्षमे पुन ईसानदे
बदणेगुप्पेय-दासनूर-पोल्मद-त्रिसन्धिय तटाकमे कोडिगट्टि चिञ्च-वृक्षमे
केन्तरम्बिन दिगेहं पूर्वदे कूडित्त सीमान्तरं ॥ तस्य साक्षिणा गङ्गराज

कुलसकलास्थयिक-पुरुष पेर्व्वक्त्राण मर्कगरेय सेन्दिक गज्जेनाड
निर्गुण्ड मणियुगरेय नन्वाळ सिम्बालादय मृत्ययां देश-साक्षि तगडूर
कुल्लुगो वरुगणिगनूर तगडरु आल्लोडते नन्दकरं उम्मत्तूर बेळुररुमाळ-
गेयरं बदणेगुप्पेय ज्ञंसन्द बेळुररु पेर्गिगियरं ॥

खदत्तपरदत्तां वा यो हरेय(त) वसुन्धरी(रां) पाष्टं वर्षसहस्राणि
विष्टायां जायते कृमिः[] [III]

वसुभिः[१] वसुधा भुक्ता(क्ता)राजभिस्सक-राजभिः^१ यस्य यस्य यदा
भूमि तस्य तस्य तदा फलम् ॥

देवस्वं तु विषं घोरं न विषं विषमुच्यते । विषमेकाकिनं हन्ति
देवस्व[-] पुत्रपौत्रिकं(कां) ॥

सामान्योयं धर्मं हेतुं(सेतुं) नृपाणाम् काले काले पालनीयो
भवद्भिः[] मर्व्व्वा(र्व्व्या)नेतां भागिन(न् भाविनः) पार्थिवेन्द्रान् भूयो
भूयो याचते रामभद्रः[] ॥ विश्वकर्म लिखितम्

चेर राजाओंकी वंशावली इस दानपत्रमें इस प्रकार दी हुई है:—

१. कोङ्कणि प्रथम । २. माधव प्रथम । ३. हरिबर्म । ४. विष्णु-
गोप । ५. माधव द्वितीय । ६. कोङ्कणि द्वितीय (अभिनीत) ।

ये अभिनीत महाधिराज कदम्बकुलसूर्य कृष्णवर्म-महाधिराजकी प्रिय बहि-
नके पुत्र थे । इनके लिये दानपत्रमें कहा गया है कि—‘इनका अन्तरात्मा विद्या,
विनयकी वृद्धिसे परिपूरित था, अजेय शौर्य इनमें था और विद्वानोंमें प्रथम
गिने जाते थे ।’ इन्हींसे देसिग (देशीय) ‘गण’ कोण्डकुन्द ‘अन्वय’ के
गुणचन्द्र-भटारके शिष्य अभयनन्दि-भटार, उनके शिष्य शीलभद्र-भटार,
उनके शिष्य जयणन्दि-भटार, उनके शिष्य गुणणन्दि-भटार, उनके शिष्य
चन्दणन्दि-भटारको तलवननगरके श्रीविजय जिनालयके मन्दिरके लिये

१ सामान्यतया ‘सगरादिभिः’ ।

शि० ५

बदणेगुप्पे नामका सुन्वर गाँव दानमें प्राप्तकर अकालवर्ष पृथ्वी-वल्लभके मन्त्रीने शकसंवत्सर ३८८ के माघ महीनेकी शुद्ध पञ्चमी, सोमवारको स्वातिनक्षत्रके समय इसे भेंट किया । यह गाँव पूनाहु छः हजारके एडेनाहु सत्तरके मध्यमें अवस्थित है । साथमें १२ 'कण्डुग' प्रत्येक छः भाञ्जित गांवोंमेंसे, तथा पोगरिगेछे और पिरिकेरेंमें से भी दिया ।]

९६

हल्ली (ज़िला बेलगाँव)—संस्कृत ।

[ई० पाँचवीं शताब्दिका (फ्लीट)]

प्रथम पत्र ।

[१] नमः ॥ जयति भगवाञ्जिनेन्द्रो गुणरुन्द्रः प्र[थि]त
[परम] कारुणिकः

[२] त्रैलोक्याश्वासकरी दयापताकोच्छ्रिता यस्य ॥ परम—

[३] श्रीविजयपलाशिकायां प्रजासाधारणा [शा] नाम् ॥

दूसरा पत्र; पहली ओर ।

[४] कदम्बानां युवराजः श्रीकाकुस्थवर्मा स्ववैजयिके अशीतितमे

[५] संवत्सरे भगवतामर्हताम् सर्व्वभूतशरण्यानाम् त्रैलोक्य-
निस्तार-

[६] काणाम् खेटग्रामे बदोवरक्षेत्र [म्] श्रुतकीर्तिसेनापतये ॥

दूसरा पत्र; दूसरी ओर ।

[७] आत्मनस्तारणार्थं दत्तवा [न्] [॥] तद्यो [हि] न (ना)
स्ति स्ववंश्यः [प] रवंश्यो वा

[८] स पञ्चमहापातकसंयुक्तो भवती (ति) [॥] यो भिरक्षती (ति)
तस्य सत्यर्व्व (सर्व्व, या सत्यं सर्व्व) गु-

[९] णपुण्यावाप्तिः- [II] अपि चोक्तम् [I] बहुभिर्व्यसुधा दत्ता ॥^१

[१०] [रा] जमिस्सगरादिमिः यस्य यस्य य[दा]भू[मिः] तस्य तस्य तदा फलम् [II]

[११] खदत्तां परदत्तां वा यो हरेत् वसुन्धरां षष्टिवर्षसहस्र(स्रा) णी (णि)

[१२] नरके पच्यते तु सः ॥ नमो नमः [II] ऋषभाय नमः ॥

[इस लेखमें कदम्ब 'युवराज' काकुस्थ (काकुस्थ) बर्माके द्वारा श्रुतकीर्ति सेनापतिको दिये गये एक क्षेत्र-दानका उल्लेख है । यह दान खेटग्राम नामक गाँवमें किया गया था ।]

[इ० ए०, जिल्द ६, पृ० २२-२४, न० २०]

९७

देवगिरि (जिला धारवाड़)—संस्कृत ।

—[?]—

सिद्धम् जयत्सर्हखिलोकेशः सर्वभूतहिते रतः

रागाद्यरिहरोनन्तो नन्तज्ञानदृग्गीश्वरः

स्वस्ति विजयवैजयन्त्यां स्वामिमहासेनमातृगणानुद्धयाताभिषिक्तानां मानव्यसगोत्राणां हारितीपुत्राणं(णां) अङ्गिरसां प्रतिकृतस्वाध्यायचर्चकानां सद्गर्भसदम्बानां कदम्बानां अनेकजन्मान्तरोपार्जितविपुलपुण्यस्कन्धः आहवार्जितपरमरुचिरदृढसत्त्वः^१ विशुद्धान्वयप्रकृत्यानेकपुरुषपरंपरागते जगत्प्रदीपभूते महत्यदितोदिते काकुस्थान्वये श्रीशान्तिवर्मनयः

१ यह पूर्ण विरामका चिह्न फजूल है । २ इन पत्रोंमें यह खास बात है कि जहाँ द्वित्वाक्षरोंका इतना अधिक प्रयोग किया गया है वहाँ 'सत्त्व' और 'तत्त्व'में 'त' अक्षर द्वित्व नहीं किया गया ।

श्रीमृगेश्वरवर्मा आत्मनः राज्यस्य तृतीये वर्षे पौषसंवत्सरे कार्तिकमासे बहुले पक्षे दशम्यां तिथौ उत्तराभाद्रपदे नक्षत्रे वृहत्परतूरे (१) त्रिदशमुकुटपरिघृष्टचारचरणेभ्यः परमार्हदेवेभ्यः संमार्जनोपलेपनाभ्यर्चनभग्नसंस्कारमहिमार्थं ग्रामापरदिग्विभागसीमाभ्यन्तरे राजमानेन चत्वारिंशन्निवर्त्तनं कृष्णभूमिक्षेत्रं चत्वारि क्षेत्रन्निवर्त्तनं च चैत्यालयस्य बहिः, एकं निवर्त्तनं पुष्पार्थं देवकुलस्याङ्गनञ्च एकनिवर्त्तनमेव सर्वपरिहारयुक्तं दत्तवान् महाराजः । लोभादधर्माद्वा योस्याभिहर्त्ता स पञ्चमहापातकसंयुक्तो भवति योस्याभिरक्षिता स तत्पुण्यफलभागभवति । उक्तञ्च-

बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः ।

यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥

खदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धरां ।

षष्टि वर्षसहस्राणि नरके पच्यते तु सः ॥

अद्विर्दत्तं त्रिभिर्भुक्तं सद्भिश्च परिपालितम् ।

एतानि न निवर्तन्ते पूर्वराजकृतानि च ॥

स्वं दातुं सुमहच्छक्यं दुःस्वमन्यार्थपालनं ।

दानं वा पालनं वेति दानाच्छ्रेयोनुपालनम् ॥

परमधार्मिकेण दामकीर्तिभोजकेन लिखितेयं पट्टिका इति सिद्धिरस्तु ॥

[इ० ए०, जिल्द ७, पृ० ३५-३७, नं. ३६]

[यह पत्र श्रीशान्तिवर्माके पुत्र महाराज श्री 'मृगेश्वरवर्मा' की तरफसे लिखा गया है, जिसे पत्रमें काकुत्था(त्था)न्वयी प्रकट किया है, और इससे ये कदम्बराजा, भारतके सुप्रसिद्ध वंशोंकी दृष्टिसे, सूर्यवंशी अथवा इक्ष्वाकु-

१ व्याकरणकी दृष्टिसे यह वाक्य बिल्कुल शुद्ध नहीं मालूम होता । २ यह पद्य मिस्टर फ्लीटके शिलालेख नं० ५ में मनुका ठहराया गया है । आमतौर-पर यह व्यासका माना जाता है ।

वंशी थे, ऐसा मालूम होता है। यह पत्र उक्त मृगेश्वरवर्माके राज्यके तीसरे वर्ष, पौष (?) नामके संवत्सरमें, कार्तिक कृष्ण दशमीको, जबकि उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र था, लिखा गया है। इसके द्वारा अभिषेक, उपलेपन, पूजन, भग्नसंस्कार (मरम्मत) और महिमा (प्रभावना) इन कामोंके लिये कुछ भूमि, जिसका परिमाण दिया है, अरहन्तदेवके निमित्त दान की गयी है। भूमिकी तफसीलमें एक निवर्तनभूमि खालिस पुष्पोंके लिये निर्दिष्ट की गई है। ग्रामका नाम कुछ स्पष्ट नहीं हुआ, 'बृहत्परल्लरे' ऐसा पाठ पढ़ा जाता है। अन्तमें लिखा है कि जो कोई लोभ या अधर्मसे इस दानका अपहरण करेगा वह पंचमहापापोंसे युक्त होगा और जो इसकी रक्षा करेगा वह इस दानके पुण्य-फलका भागी होगा। साथ ही इसके समर्थनमें चार श्लोक भी 'उक्त' च रूपसे दिये हैं, जिनमेंसे एक श्लोकमें यह बतलाया है कि जो अपनी या दूसरेकी दान की हुई भूमिका अपहरण करता है वह साठ हजार वर्ष तक नरकमें पकाया जाता है, अर्थात् कष्ट भोगता है। और दूसरेमें यह सूचित किया है कि स्वयं दान देना आसान है परंतु अन्यके दानार्थका पालन करना कठिन है, अतः दानकी अपेक्षा दानका अनुपालन श्रेष्ठ है। इन 'उक्त' च श्लोकोंके बाद इस पत्रके लेखकका नाम 'दामकीर्ति भोजक' दिया है और उसे परम धार्मिक प्रकट किया है। इस पत्रके शुरूमें अहन्तकी स्तुतिविषयक एक सुन्दर पद्य भी दिया हुआ है जो दूसरे पत्रोंके शुरूमें नहीं है, परंतु तीसरे पत्रके बिल्कुल अन्तमें जरासे परिवर्तनके साथ जरूर पाया जाता है।]

९८

देवगिरि (जिला-धारवाह) — संस्कृत

—[?]—

सिद्धम् ॥ विजयवैजयन्त्याम् स्वामिमहासेनमातृगणानुद्धयाताभिषि-

१ साठ संवत्सरोंमें इस नामका कोई संवत्सर नहीं है। सम्भव है कि यह किसी संवत्सरका पर्याय नाम हो या उस समय दूसरे नामोंके भी संवत्सर प्रचलित हों। २ यह और आगेके लेख नं० ९८ और १०५ जैनहितैषी, भाग १४, अङ्क ७-८, पृ० २२८-२२९ से उद्धृत किये हैं।

कस्य मानव्यसगोत्रस्य हारितीपुत्रस्य प्रतिकृतचर्चापारस्य विबुधप्रति-
 बिम्बानां कदम्बानां धर्ममहाराजस्य श्रीविजयशिवमृगेशवर्मणः
 विजयायुरोग्यैश्वर्यप्रवर्द्धनकरः संवत्सरः चतुर्थः वर्षापक्षः अष्टमः
 तिथिः पौर्णमासी अनयानुपूर्व्या अनेकाजन्मान्तरोपार्जितविपुलपुण्यस्कंधः
 सुविशुद्धपितृमातृवंशः उभयलोकप्रियहितकरानेकशास्त्रार्थतत्त्वविज्ञानवि-
 वेच्च (?) ने विनिविष्टविशालोदारमतिः हस्त्यश्मारोहणप्रहरणादिषु व्याया-
 मिकीषु भूमिषु यथावत्कृतश्रमः दक्षो दक्षिणः नयविनयकुशलः अनेकाह-
 वार्जितपरमदृढसत्वः उदात्तबुद्धिर्धैर्यवीर्यत्यागसम्पन्नः सुमहति सम-
 रसङ्कटे स्वभुजबलपराक्रमावाप्तविपुलैश्वर्यः सम्यक्प्रजापालनपरः स्वजन-
 कुमुदवनप्रबोधनशशाङ्कः देवद्विजगुरुसाधुजनेभ्यः गोभूमिहिरण्यशयना-
 च्छादनानादिअनेकविधदाननित्यः विद्वत्सुहृत्स्वजनसामान्योपभुज्यमान-
 महाविभयः आदिकालराजवृत्तानुसारी धर्ममहाराजः कदम्बानां श्रीविजय-
 शिवमृगेशवर्मा कालवङ्गप्रामं त्रिधा विभज्य दत्तवान् । अत्र पूर्वमह-
 च्छालापरमपुष्कलस्थाननिवासिभ्यः भगवदर्हन्महाजिनेन्द्रदेवताभ्य एको
 भागः, द्वितीयोर्हतप्रोक्तमद्र्मकरणपरस्य श्वेतपटमहाश्रमणसंघोपभोगाय,
 तृतीयो निर्ग्रन्थमहाश्रमणसंघोपभोगायेति । अत्र देवभाग धान्यदेव-
 पूजावल्लिचरुदेवकर्मकरभग्नक्रियाप्रवर्त्तनाद्यर्थोपभोगाय । एतदेवं न्यायलब्धं
 देवभोगममयेन योभिरक्षति स तत्फलभागभवति, यो विनाशयेत् स पंच-
 महापातकसंयुक्तो भवति । उक्तञ्च ब्रह्मभिर्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरा-
 दिभिः यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलं । नरवरसेनापतिना
 लिखितं ।

[ई० ए०, जिल्द ७, पृ० ३७-३८, नं० ३७]

१ इन प्रतिलिपियोंमें विसर्ग उस चिह्नके स्थानमें लिखा गया है जो कण्ठ्यवर्गों
 (Gutturals) से पहले विसर्गकी जगह प्रयुक्त हुआ है । २ 'देवभाग'
 समयन' शुद्ध पाठ मालूम पड़ता है ।

[यह दानपत्र कदम्बोंके भर्ममहाराज 'श्रीविजयशिवमृगेश वर्मा' की तरफसे लिखा गया है और इसके लेखक हैं 'नरवर' नामके सेनापति । लिखे जानेका समय चतुर्थसंवत्सर, वर्षा (ऋतु) का आठवाँ पक्ष और पौर्णमासी तिथि है । इस पत्रके द्वारा 'कालवङ्ग' नामके ग्रामको तीन भागोंमें विभाजित करके इस तरहपर बाँट दिया है कि पहला एक भाग तो अर्हच्छाला परम-पुष्कल स्थाननिवासी भगवान् अर्हन्महाजिनेन्द्रदेवताके लिये, दूसरा भाग अर्हत्प्रोक्त सद्धर्माचरणमें तत्पर श्वेताम्बरमहाश्रमणसंघके उपभोगके लिये और तीसरा भाग मिश्रन्धमहाश्रमणसंघके उपभोगके लिये । साथ ही, देवभागके सम्बन्धमें यह विधान किया है कि वह धान्य, देवपूजा, बलि, चरु, देवकर्म, कर, भग्नक्रिया-प्रवर्तनादि अर्थोपभोगके लिये है, और यह सब न्यायलब्ध है । अन्तमें इस दानके अभिरक्षकको वही दानके फलका भागी और विनाशकको पंच महापापोंसे युक्त होना बतलाया है, जैसाकि नं० ९७ के दानपत्रमें उल्लेखित है । परंतु यहाँ उन चार 'उक्तं च' श्लोकोंमेंसे सिर्फ पहलेका एक श्लोक दिया है जिसका यह अर्थ होता है कि, इस पृथ्वीको सगरादि बहुतसे राजाओंने भोगा है, जिस समय जिस-जिसकी भूमि होती है उस समय उसी-उसीको फल लगता है ।

इस पत्रमें 'चतुर्थ' संवत्सरके उल्लेखसे यद्यपि ऐसा भ्रम होता है कि यह दानपत्र भी उन्हीं मृगेश्वरवर्माका है जिनका उल्लेख पहले नम्बरके पत्र (शि० ले० नं० ९७) में है अर्थात् जिन्होंने पूर्वका (नं० ९७) दान-पत्र लिखाया था और जो उनके राज्यके तीसरे वर्षमें लिखा गया था, परंतु यह भ्रम ठीक नहीं है । कारण कि एक तो 'श्रीमृगेश्वरवर्मा' और 'श्रीविजयशिवमृगेश्वरवर्मा' इन दोनों नामोंमें परस्पर बहुत बड़ा अन्तर है; दूसरे, पूर्वके पत्रमें 'आत्मनः राज्यस्य तृतीये वर्षे पौष संवत्सरे' इत्यादि पदोंके द्वारा जैसा स्पष्ट उल्लेख किया गया है वैसा इस पत्रमें नहीं है; इस पत्रके समय-निर्देशका ढंग बिल्कुल उससे विलक्षण है । 'संवत्सरः चतुर्थः, वर्षा पक्षः अष्टमः, तिथिः पौर्णमासी,' इस कथनमें 'चतुर्थ' शब्द संभवतः ६० संवत्सरोमेंसे चौथे नम्बरके 'प्रमोद' नामक संवत्सरका द्योतक मालूम होता है; तीसरे, पूर्वपत्रमें दातारने बड़े गौरवके साथ अनेक विशेषणोंसे युक्त जो अपने 'काकुस्थान्वय' का उल्लेख किया है और साथ ही अपने पिताका नाम

भी दिया है, वे दोनों बातें इस पत्रमें नहीं हैं जिनके, एक ही दाता होनेकी हालतमें, छोड़ दिये जानेकी कोई वजह मालूम नहीं होती; चौथे, इस पत्रमें अर्हन्तकी स्तुतिविषयक मंगलाचरण भी नहीं है, जैसाकि प्रथम पत्रमें पाया जाता है; इन सब बातोंसे वे दोनों पत्र एक ही राजाके मालूम नहीं होते ।

इस पत्र नं. ९८ में श्रीविजयशिवसृगेशवर्माके जो विशेषण दिये हैं उनसे यह भी पता चलता है कि, यह राजा उभयकालकी दृष्टिसे प्रिय और हितकर ऐसे अनेक शास्त्रोंके अर्थ तथा तत्त्वविज्ञानके विवेचनमें बड़ा ही उदारमति था, नय-विनयमें कुशल था और ऊँचे दर्जेके बुद्धि, धैर्य, वीर्य, तथा त्यागसे युक्त था । इसने व्यायामकी भूमियोंमें यथावत् परिश्रम किया था और अपने भुजबल तथा पराक्रमसे किसी बड़े भारी संग्राममें विपुल ऐश्वर्यकी प्राप्ति की थी; यह देव, द्विज, गुरु और साधुजनोंको निरत्य ही गौ, भूमि, हिरण्य, शयन (शय्या), आच्छादन (वस्त्र) और अन्नादि अनेक प्रकारका दान दिया करता था; इसका महाविभव विद्वानों, सुहृदों और स्वजनोंके द्वारा सामान्यरूपसे उपभुक्त होता था; और यह आदिकालके राजा (संभवतः भरतचक्रवर्ती) के वृत्तानुसारी धर्मका महाराज था । दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनों ही सम्प्रदायोंके जैनसाधुओंको यह राजा समानदृष्टिसे देखता था, यह बात इस दानपत्रसे बहुत ही स्पष्ट है ।]

९९

हल्ली—संस्कृत ।

—[?]—

स्वस्ति ॥

जयति भगवाञ्जिनेन्द्रो गुणरुन्द्रः प्रथितपरमकारुणिकः

त्रैलोक्याश्वासकरी दयापताक्रोच्छ्रिता यस्य [II]

कदम्बकुलसत्केतोः हेतोः पुण्यैकसम्पदाम्

श्रीकाकुस्थनरेन्द्रस्य सूनुर्भानुरिवापरः [II]

श्रीशान्तिवरवर्मेति राजा राजीवलोचनः

खलेन वनिताकृष्टा येन लक्ष्मीर्द्विपद्गृहात् [II]

तत्प्रियज्येष्ठतनयः श्रीमृगेशनराधिपः ।

लोकैकधर्मविजयी द्विजसामन्तपूजितः [III]

मन्वा दानं दरिद्राणां महाफलमितीव यः

स्वयं भयदरिद्रोऽपि शत्रुभ्योऽदाभ्रहामयम् [II]

तुङ्गगङ्गकुलोत्सादी पल्लवप्रलयानलः

स्वार्थके नृपतौ भक्त्या कारयित्वा जिनालयम् [II]

श्रीविजयपलाशिकायां यापनि(नी)यनिर्ग्रन्थकूर्चकानां स्ववैज-
यिके अष्टमे वैशाखे संवत्सरे कार्तिकपौर्णमास्याम् । मातृसरित् आरभ्य
आ इङ्गिर्णासङ्गमात् राजमानेन त्रयस्त्रिंशन्निवर्त्तनं । श्रीविजयवैजयन्ती-
निवासी दत्तवान् भगवद्भयोर्द्वयः [I] तत्राज्ञाप्तिः । दामकीर्त्तिभोजकः
जियन्तश्चायुक्तकः सर्वस्यानुष्ठाता इति [II]

अपि च—उक्तम् [I]

बहुभिर्वसुधा दत्ता राजभिस्सगरादिभिः

यस्य यस्य यदा भूमिः तस्य तस्य तदा फलम् [II]

स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत् वसुन्धराम्

षष्ठिवर्षसहस्राणि कुम्भीपाके स पच्यते [II]

सिद्धिरस्ते ।

[यह दानपत्र शान्तिवर्मके ज्येष्ठ पुत्र राजा मृगेशवर्माका है । उन्होंने

१ हमारी रायमें यह पाठ 'ऽदान्महाभयम्' ऐसा होना चाहिये । २ यह
आरंभ आगे का १०३ वाँ शिलालेख (ताम्रपत्र) 'अनेकान्त', वर्ष ७, किरण १-२,
पृष्ठ ८-९ से लिया है ।

स्वर्गगत राजा (शान्तिवर्मा) की भक्तिसे पलाशिका नामक नगरमें जिनालय निर्माण कराके अपनी विजयके आठवें वर्षमें चापनीयों, निर्ग्रन्थों और कूर्चकोंके लिये भूमि दान किया है । यहाँ कूर्चक सम्प्रदाय दिगम्बर सम्प्रदायका ही एक भेद मालूम पड़ता है ।

[ई० ए०, जिल्द ६, पृ० २४-२५]

१००

हल्सी—संस्कृत । *

—[?]—

प्रथम पत्र

- [१] जयति भगवाञ्जिनेन्द्रो गुणरुन्द्रः प्रथितपरमकारुणिकः त्रैलोक्या
[२] आसकरी दयापताकोच्छ्रिता यस्य ॥ स्वामिमहासेनमातृगणानु-
[३] ध्यातानां मानव्यसगोत्राणां हारितीपुत्राणां प्रतिवृत्तस्वाध्याय
च [चर्चा]-

दूसरा पत्र; पहिली ओर ।

- [४] पारगणाम् स्वकृतपुण्यफलोपभोक्तृणाम् स्वबाहुवीर्य्योपार्जित-
[५] तैश्चर्यभोगभागिनाम् सद्गर्म्ममदम्बानां कदम्बानाम् ॥ काकुस्थ-
[६] वर्म्मनृपलब्धमहाप्रसादः संमुक्तवाञ्छुतनिधिश्श्रुतकीर्त्तिभोजः

दूसरा पत्र; दूसरी ओर ।

- [७] ग्रामं पुरा नृषु वरः पुरुपुण्यभागी खेटाहकं यजनदानदयो-
[८] पपन्नः ॥ तस्मिन्स्वय्याति शान्तिवर्म्मावर्त्ताशः मात्रे धर्म्मार्थं
दत्तवान् दा-
[९] मकीर्त्तः भूमां विख्यातस्तत्सुतश्श्रीमृगेशः पित्रानुज्ञातं धार्म्मि-
को दान-

१ देखो अनेकान्त, वर्ष ७, किरण १-२, पृष्ठ ७-८, में श्री पं. नाथूरामजी प्रेमीका 'कूर्चकोंका सम्प्रदाय' नामक लेख ।

तीसरा पत्र; पहली ओर ।

[१०] मेघ ॥ श्रीदामकीर्तिरुरुपुण्यकीर्तिः सद्धर्ममार्गस्थितशुद्ध-
बुद्धेः ज्याया-

[११] न्युतो धर्मपरो यशस्वी विशुद्धबुद्ध्या (द्रव्य) ज्ञयुतो गुणाद्यः
आचार्यैर्बन्धु-

[१२] षेणाहैः निमित्तज्ञानपारगैः स्थापितो भुवि यद्वंशः श्रीकीर्ति-

[१३] कुलवृद्धये [॥] तत्प्रसादेन लब्धश्रीः दानपूजाक्रियोद्यतः गुरु-
तीसरा पत्र; दूसरी ओर ।

[१४] भक्तो विर्नातात्मा परात्महितकाम्यया ॥ जयकीर्त्तिप्रतीहारः
प्रसादानृप-

[१५] तेः रवेः पुण्यान्धं स्वपितुर्मन्त्रे दत्तवान् पुरुखेटकं ॥ जिने-
न्द्रमहिमा

[१६] कार्या प्रतिमंवत्सरं क्रमात् अष्टाहकृतमर्यादा कार्त्तिक्या-
न्तद्धना-

[१७] गमात् वार्षिकांश्चतुरो मासान् यापनीयास्तपस्विनः
भुंजीरस्तु]

चतुर्थ पत्र; पहली ओर ।

[१८] यथान्याय्यं महिमाशेषवस्तुकम् [॥] कुमारदत्तप्रमुखा
हि सूरयः

[१९] अनेकशाखागमखिन्नबुद्धयः जगत्पतीनास्सुतपोधनान्विताः
गणो

[२०] स्य तेषां भवति प्रमाणतः ॥ धर्मेऽसुभिर्जानपदैस्सनागरैः

[२१] जिनेन्द्रपूजा सततं प्रणेया इति स्थितिं स्थापितवान् रवीशः
पला [शिका]

चतुर्थ पत्र; दूसरी ओर ।

[२२] यां नगरे विशाले ॥ स्थित्यानया पूर्व्वनृपानुजुष्टया यत्तान्न-
पत्रेषु नि-

[२३] बद्धमादौ धर्माप्रमत्तेन नृपेण रक्ष्यं संसारदोषं प्रविचार्य्य

[२४] बुद्ध्या [॥] बहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः
यस्य यस्य

[२५] यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥ खदत्तां परदत्तां वा
यो हरेत

पञ्चम पत्र

[२६] वसुन्धरां प्राष्टं वर्षसहस्राणि नरके पच्यते भृशम् ॥ अद्धि-
र्दत्तं त्रिभि-

[२७] भुक्तं सङ्गिश्च परिपालितम् एतानि न निवर्त्तन्ते पूर्व्वराज-
कृतानि च [॥]

[२८] यस्मिञ्जिनेन्द्रपूजा प्रवर्त्तते तत्र तत्र देशपरिवृद्धिः

[२९] नगराणां निर्भयता तद्देशस्वामिनाञ्चोर्जा ॥ नमो नमः [॥]

[ई० ए० जिल्द ६, पृ० २५-२७, नं. २२]

[यह लेख जैनधर्मका 'अष्टादिका' नामका उत्सव मनानेके लिये रवि-
वर्मा और अन्य लोगों द्वारा दिये गये दानों और हुक्मोंका उल्लेख करता
है । इसमें कदम्बोंके राजा काकुत्स्थ (काकुत्स्थ) वर्मा का, उसके बाद
शान्तिवर्मा, तत्पश्चात् श्री सृगेश (वर्मा) का और अन्तमें रविवर्माके दान-
का वर्णन है । जिस गांव का दान दिया गया उसका नाम है पुरुषोत्क ।

१ सि० राइस इसको 'षड्भिश्च प्रतिपालितम्' पढ़ते हैं और उसका अर्थ 'छः
पीढ़ियोंतक जानेवाला' दान करते हैं ।

१०१

हल्ली—संस्कृत ।

—[?]—

प्रथम पत्र ।

- [१] जयति भगवान्निनेन्द्रो गुणरुद्रः प्रथितपरमकारु-
[२] णिकः त्रैलोक्याश्वासकरी दयापताकोच्छ्रिता यस्य ॥
[३] श्रीविष्णुवर्म्मप्रभृतीन्नेन्द्रान् निहत्य जित्वा पृथिवीं सम[स्तां]
[४] उत्साद्य काञ्चीश्वरचण्डदण्डम् पलाशिकायां समवस्थितस्सः[॥]

द्वितीय पत्र; पहली ओर ।

- [५] रवि कदम्बोरु कुलाम्बरस्य गुणांशुभिर्व्याप्य जगत्सम[स्तं]
[६] मानेन चत्वारि निवर्त्तनानि ददौ जिनेन्द्राय महीम् महेन्द्रः [॥]
[७] संप्राप्य मातुश्चरणप्रसादं धर्म्मैकमूर्तेरपि दामकीर्तैः
[८] तत्पुण्यवृद्धयर्थमभूजिमित्तम् श्रीकीर्तिनामा तु च तत्कनिष्ठः[॥]

दूसरा पत्र; दूसरी ओर ।

- [९] रागात्प्रमादादथवापि लोभात् यस्तानि हिंस्यादिह भूमि-
[१०] पालः आसप्तमं तस्य कुलं कदाचित् नापैति कृत्स्नाभिरया-
निमग्नम् [॥]
[११] तान्येव यो रक्षति पुण्यकाङ्क्षः स्ववंशजो वा परवंशजो वा
[१२] स मोदमानस्सुसुन्दरीभिः चिरं सदा क्रीडति नाकपृष्ठे [॥]

तीसरा पत्र ।

- [१३] अपि चोक्तं मनुना [१] बहुभिर्व्यसुधा दत्ता राजभिस्सगरा-
दिभिः
[१४] यस्य यस्य यदा भूमिः तस्य तस्य तदा फलम् ॥

[१५] खदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम्

[१६] षष्ठिवर्षसहस्राणि निरये स विपच्यते ॥

[इस लेखमें रविवर्माके द्वारा जिनेन्द्रदेवके लिये दिये गये एक भूमि-दानका उल्लेख है। दान की गई भूमि नापमें ४ निवर्तन थी, दामकीर्ति, जो कि धर्मसूति थे, की माताके चरणोंका प्रसाद पाकरके ही यह राजा दानमें प्रवृत्त हुआ। दामकीर्ति के छोटे भाईका नाम श्रीकीर्ति था। रविवर्मा पलाशिकामें रहते थे। इन्होंने श्रीविष्णुवर्मा (संभवतः 'विष्णुगोत्र' या 'विष्णुगोपवर्मा' नामका पल्लव राजा) और दूसरे अन्य राजाओंका वध किया था, समस्त पृथ्वीको जीता था और काजीश्वरके चण्डदण्डका उत्सादन (निर्मूलन) किया था।]

[ई० ए०, जिल्द ६, पृ० २५-३०, नं० २४]

१०२

हल्ली—संस्कृत ।

—[?]—

प्रथम पत्र ।

स्वस्ति ॥

जयति भगवाञ्जिनेन्द्रो गुणरुन्द्रः प्रथितपरमकारुणिकः

त्रैलोक्याश्वासकरी दयापताकोच्छ्रिता यस्य ॥

श्रीमत्काकुत्थराजप्रियहितनयश्शान्तिवर्मावनीश

तस्यैव ज्येष्ठसूनुः प्रथितपृथुयशः श्रीमृगेशो नरेशः ॥ (१)

दूसरा पत्र; पहली ओर ।

तत्पुत्रो दीप्ततेजा रविनृपतिरभूत्सत्त्वधैर्यार्जितश्रीः

तद्भाता भानुवर्मा स्वपरहितकरो भाति भूपः (:) कर्नायान् ॥

तेनेयं वसुधा दत्ता जिनेभ्यो भूमिमिच्छता ।

पौर्णमासीष्वनुच्छिद्य स्नपनार्थं हि सर्व्वदा ॥

पलाशिकायाम् कईमपट्यां राजमानेन

दूसरा पत्र; दूसरी ओर

पञ्चदशनिवर्तना तांशशासने भूमिर्निबद्धा उज्ज्वरभरादिविवर्जिता
श्रीमद्भानुवर्मराजलब्धपादप्रसादेन पण्डुरभोजकेन परमार्हद्वक्तेन प्रवर्द्ध-
मानराज्यश्रीरविवर्मधर्ममहाराजस्य एकादशे संवत्सरे हेमन्तषष्ठपक्षे

तीसरा पत्र ।

दशम्यां त्रिथौ ॥ तां यो हिनस्ति स्ववंश्यः परवंश्यो वा स पञ्चमहा-
पानकसंयुक्तो भवति ॥ उक्तञ्च ॥

बहुभिर्व्यसुधा दत्ता राजभिः सगरादिभिः

यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलं ॥

स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत् वसुंधरां

पष्टिवर्षसहस्राणि कुम्भीपाके स पच्यते

[इस लेखमें भानुवर्मा और उसके अधीनस्थ कर्मचारी पण्डुर 'भोजक' के दानका उल्लेख है । यह दान भानुवर्माके बड़े भाई रविवर्माके राज्यके ११ वें वर्षमें, हेमन्तऋतुके छठे पक्षमें दसवीं तिथिको दिया गया था । इस भूमिका दान जिनभगवानकी हर पूर्णिमाके दिन पूजन करनेके लिये ही हुआ था । भूमिका नाप १५ निवर्तन था । यह भूमि पलाशिका गाँवके कर्दमपटी की थी । इस लेखसे कदम्बवंशके राजाओंकी रविवर्माके समथतक-की वंशावलीका भी पता चलता है और वह यह है:—

१. काकुत्स्थवर्मा

|

२. शान्तिवर्मा

|

३. श्रीमृगेश

|

४. रविवर्मा (छोटा भाई भानुवर्मा) ।

[ई० ए०, जिल्द ६, पृ० २७-२९]

१०३

हत्ती—संस्कृत ।

—[१]—

सिद्धम् ॥ स्वस्ति स्वामिमहासेनमातृगणानुप्याताभिषिक्तानाम्
'मानव्य'-सगोत्राणाम् हारितीपुत्राणाम् प्रतिकृतस्वाध्यायचर्चिकानाम्
कदम्बा(म्बा)नाम्महाराजः श्रीहरिवर्मा

बहुभवकृतैः पुण्यं राजश्रियं निरुपद्रवाम्

प्रकृतिषु हितः प्राप्तो व्याप्तो जगद्यशसाखिलम्

श्रुतजलनिधिः विद्यावृद्धप्रदिष्टपथि स्थितः

स्वबलकुलिशाघ्रातोच्छिन्नद्विपदसुधाधरः [॥]

स्वराज्यसंवत्सरे चतुर्थे फाल्गुणशुक्लत्रयोदश्याम् उच्चशृङ्गाम्
सर्वजनमनोह्लादवचनकर्मणा सपितृव्येण शिवरथनामधेयेनोपदिष्टः
पलाशिकायाम् भारद्वाज-सगोत्रसिंहसेनापतिसुतेन मृगेशेन
कारितस्यार्हदायतनस्य प्रतिवर्षमाष्टादिकमहामहसततच (?) रूपलेपन-
क्रियार्थं तदवशिष्टं सर्वसंभोजनायेति सुदि (?) छि कुन्दूरविषये
वसुन्तवाटकं सर्वपरिहारसंयुतं कूर्चकानाम् वारिषेणाचार्यसङ्घ-
हस्ते चन्द्रक्षान्तं प्रमुखे कृत्या दत्तवान् [॥] य एवं न्यायतोभिरक्षति
स तत्पुण्यफलभागभवति [॥] यश्चैनं रागद्वेषलोभमोहैरपहरति स निवृ-
ष्टनमां गतिमवाप्नोति [॥] उक्तञ्च—

स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत् वसुन्धराम्

षाष्टं वर्षसहस्राणि नरके पच्यते तु सः [॥]

बहुभिर्व्यसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः

यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् [॥] इति

वर्धतां वर्धमानार्हच्छासनं संयमासनम्

येनाद्यापि जगज्जीवपापपुंजप्रमंजनम् [॥] नमोर्हते वर्धमानाय [॥]

[यह दानपत्र कदम्ब-राजवंशके महाराजा हरिवर्माका है । उन्होंने अपने राज्यके चौथे वर्षमें शिवरथ नामके पितृव्यके उपदेशसे, सिंहसेनापतिके पुत्र मृगेशद्वारा निर्मापित जैनमन्दिरकी अष्टाह्निका-पूजाके लिये और सर्वसंघके भोजनके लिए 'वसुन्तवाटक' नामक गाँव कूर्चकोंके बारिषेणाचार्यसंघके हाथमें चन्द्रक्षान्तको प्रमुख बनाकर प्रदान किया । यह और ९९ बां दान-पत्र दोनों, ताक्षपत्रोंपर हैं । नम्बर ९९ बं के दान-पत्रमें थापनीय, निग्रन्थ और कूर्चक इन तीन सम्प्रदायोंके नाम हैं और इसमें सिर्फ कूर्चक सम्प्रदायका । इससे मालूम होता है कि इस सम्प्रदायमें 'बारिषेणाचार्यसंघ' नामका एक संघ था, जिसके प्रधान चन्द्रक्षान्त (मुनि) थे ।]

[ई० ए०, जिल्द ६, पृ० ३०-३१]

१०४

हस्ती—संस्कृत ।

—[?]—

प्रथमपत्र ।

सिद्धम् ॥ स्वस्ति ॥ स्वामिमहासेनमातृगणानुध्यानभिपिक्तानाम्
मानव्यसगोत्राणा[न्] हारितीपुत्राणाम् प्रतिकृतस्वाध्यायचर्चापा-
राणाम् कदम्बानाम् महाराजश्रीरविवर्मणः स्वभुजबलपराक्रमावाता(?)
निरवद्यविपुलराज्यश्रियः विद्वन्मनिसुवर्णनिकपभूतस्य कामाधरिगण-

दूसरा पत्र; पहली ओर ।

त्यागाभिव्यञ्जितेन्द्रियजयस्य न्यायोपार्जितार्थ [सं] हितसाधुज [न]-
स्य क्षितितलप्रततविमलयशसः प्रियतनयः पूर्वसुचरितोपचितविपुल-
पुण्यसम्पादितशरीरबुद्धिसत्वः सर्वप्रजाहृदयकुमुदचन्द्रमाः महाराज-
श्रीहरिवर्मा स्वराज्यसंवत्सरे पञ्चमे पलाशिकाविष्टाने अहरिष्टि-
समाहृत्य-

शि० ६

दूसरा पत्र; दूसरी ओर ।

श्रमणसङ्घान्वयवस्तुनः धर्मनन्द्याचार्याधिष्ठितप्रामाण्यस्य चैत्या-
लयस्य पूजासंस्कारनिमित्तम् साधुजनोपयोगार्थञ्च सेन्द्रकाणां कुलल-
लामभूतस्य भानुशक्तिराजस्य विज्ञापनया मरदे ग्रामं दत्तवान् [II]
य एतल्लोभाच्चै कदाचिदपहरेत् स पञ्चमहापातकसंयुक्तो भवति यश्चा-
भिरक्षति स तत्पुण्यफलम्

तीसरा पत्र ।

अवाप्नोतीति [III] उक्तञ्च ॥

स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत् वसुन्वराम्
षष्टिवर्षसहस्राणि नरके पच्यते तु सः ॥
बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादि [भिः]
यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥
ये सेतूनभिरक्षन्ति भैरान् संस्थापयन्ति च ।
द्विगुणं पूर्वकर्तृभ्यः तत्फलं समुदाहृतम् [III]

[इस लेखमें अपने राज्यके पाँचवें वर्षमें सेन्द्रकके कुलके भानु-
शक्ति राजाकी प्रार्थनापर हरिवर्म्मने 'मरदे' नामका गाँव दानमें दिया
था, इस बातका उल्लेख है। यह हरिवर्मा रक्षिवर्माका प्रियपुत्र है। यह
दान राजधानी पलायिकामें किया गया। इस दानका निमित्त वह
चैत्यालय था जो कि 'अहरिष्टि' नामके श्रमणसङ्घकी सम्पत्ति थी और
जिसपर आचार्य धर्मनन्दि की आज्ञा चलती थी; उस चैत्यालयके पूजा
इत्यादिके प्रबंधके लिये तथा साधुजनोंके उपयोगके लिये ही यह दान
किया गया।]

[ई० ए०, जिल्द ६, पृ० ३१-३२.]

१०५

देवगिरि—संस्कृत ।

—[?]—

विजयत्रिपर्वते स्वामिमहासेनमातृगणानुद्धातामिषिक्तस्य मानव्य-
सगोत्रस्य प्रतिकृतस्वाध्यायचर्चापारगस्य आदिकालराजर्षिबिम्बानां आश्रि-
तजनाम्बानां कदम्बानां धर्ममहाराजस्य अश्वमेधयाजिनः समराजितविपु-
लैश्वर्यस्य सामन्तराजविशेषरत्नसुनागजिनाकम्पदायानुभूतस्य (?) शरद-
मलनभस्युदितशशिसदृशैकातपत्रस्य धर्ममहाराजस्य श्रीकृष्णवर्मणः
प्रियतनयो देववर्मयुवराजः स्वपुण्यफलाभिकांक्षया त्रिलोकभूतहितदे-
शिनः धर्मप्रवर्तनस्य अर्हतः भगवतः चैत्यालयस्य भग्नसंस्कारार्चनमहि-
मार्थं यापनीय [स] हेभ्यः सिद्धकेदारे राजमानेन (?) द्वादश निवर्त्तनानि
क्षेत्रं दत्तवान् योस्य अपहर्त्ता स पंचमहापातकसंयुक्तो भवति योस्याभिर-
क्षिता स पुण्यफलमश्नुते (१) उक्तं च—ब्रह्मभिर्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरा-
दिभिः । यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तथा (?) फलं ॥ अद्विदत्तं
त्रिभिर्युक्तं सद्भिश्च परिपालितं । एतानि न निवर्त्तन्ते पूर्वराजकृतानि च ॥

स्वं दातुं सुमहच्छक्यं दु (?) : ख (म) न्यार्थपालनं ।

दानं वा पालनं वेति दानाच्छ्रेयोनुपालनम् ॥

स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धरां ।

षष्टिवर्षसहस्राणि नरके पच्यते तु सः ॥

श्रीकृष्णनृपपुत्रेण कदम्बकुलकेतुना ।

रणप्रियेण देवेन दत्ता भूमिष्वपर्वते ॥

दयामृतसुखास्वादपूतपुण्यगुणेषुना ।

देववर्मैकवीरेण दत्ता जैनाय भूरियम् ॥

जयत्यर्हन्निलोकेशः सर्वभूतहितंकरः ।

रागाद्यरिहरोनन्तेनन्तज्ञानदृगीश्वरः ॥

[ई० ए०, जिल्द ७, पृ० ३३-३५, नं. ३५]

[यह दानपत्र कदम्बोंके धर्ममहाराज श्रीकृष्णवर्माके प्रियपुत्र 'देववर्मा' नामके युवराजकी तरफसे लिखा गया है और इसके द्वारा 'त्रिपर्वत' के ऊपरका कुछ क्षेत्र अर्हन्त भगवानके चैत्यालयकी मरम्मत, पूजा और महिमाके लिये 'यापनीय' संघको दान किया गया है ।

पत्रके अन्तमें इस दानको अपहरण करनेवाले और रक्षा करनेवालेके वास्ते वही कसम दिलाई है अथवा वही विधान किया है जैसा कि ९७ नम्बरके दानपत्रके सम्बन्धमें पहले बतलाया गया है। वही चारों 'उक्तं च' पद्य भी कुछ क्रमभंगके साथ दिये हुए हैं और उनके बाद दो पद्योंमें इस दानका फिरसे खुलासा दिया है, जिसमें देववर्माको रणप्रिय, दयामृतसुखास्वादनसे पवित्र, पुण्यगुणोंका इच्छुक और एकवीर प्रकट किया है। अन्तमें अर्हन्तकी स्तुतिविषयक प्रायः वही पद्य है जो ९७ नम्बरके दानपत्रके शुरूमें दिया है। इस पत्रमें श्रीकृष्णवर्माको 'अश्वमेध' यज्ञका कर्ता और शरद् ऋतुके निर्मल आकाशमें उड़ित हुए चंद्रमाके समान एक छत्रका धारक, अर्थात् एकछत्र पृथ्वीका राज्य करनेवाला लिखा है ।]

पूर्वके नं० ९७, ९८ व इस दानपत्रपरसे निम्नलिखित ऐतिहासिक व्यक्ति-योंका पता चलता है:—

- १ स्वामिमहासेन—गुरु ।
- २ हारिती—मुख्य और प्रसिद्ध पुरुष ।
- ३ शान्तिवर्मा—राजा ।
- ४ मृगेश्वरवर्मा—राजा ।
- ५ विजयशिवमृगेशवर्मा—महाराजा ।
- ६ कृष्णवर्मा—महाराजा ।
- ७ देववर्मा—युवराज ।
- ८ दामकीर्ति—भोजक ।
- ९ नरवर—सेनापति ।

१०६

अल्तेम (जिला कोल्हापुर)—संस्कृत ।

[शक ४११=४८८ ई०]

पहला पत्र ।

स्वस्ति ॥ जयत्यनन्तसंसारपारावारैकसेतवः

महावीरार्हतः पूताश्वरणाम्बुजरेणवः ॥

श्रीमतां विश्व-विश्वम्भराभिसंस्तूयमानमानव्यसगोत्राणां हारीति-
पुत्राणां सप्तलोकमातृभिस्सप्तमातृभिरभिवर्द्धितानां कार्तिकेयपरिरक्षणप्राप्त-
कल्याणपरम्पराणां भगवन्नारायणप्रसादसमासादितवराहलाञ्छनेक्षणक्षण-
वशीकृताशेषमहीभृतानां (भृताम्) चालुक्यानां कुलमलंकरिण्योः ॥
स्वभुजोपार्जितवसुन्धरस्य निजयशश्चरित्रमात्रेणैवावनतराजकस्य कीर्त्तिप-
ताकावभासितदिगन्तरालस्य जयसिंहस्य राजसिंहस्य (?) सूनुस्सूत-
वागनवरतदानाद्भीकृतकरस्सुगज इव प्रशमनिधिस्तपोनिधिरिव दृप्तवैशिष्ट्य-
प्राप्तरणरागो रणरागोऽभवत् [॥] तस्य चात्मजे श्वमेधनाव (०मेधाव)
भृत (थ)-ज्ञानपवित्रीकृतगात्रे प्रणतपरनृपतिमकुटतटवर्धितहटन्मणिगण-
किरणवार्द्धाराधौतचारुचरणकमलयुगले चित्रकण्ठाभिधानतुरङ्गमकण्ठीरवे-
णोत्सारितारातिस्तम्भेरममण्डले वर्णाश्रमसर्वधर्मपरिपालनपरे गङ्गासेतु(?)
मध्यवर्तिदेशाधीश्वरे शक्तित्रयप्रवर्द्धितप्राज्यसाम्राज्ये गङ्गायमुनापालि-

दूसरा पत्र; पहली ओर ।

वज्रदण्डकादिपञ्चमहाशब्दचिह्ने करदीकृतचोल-चेर-कैरल-सिंहल-
कलिङ्गभूपाले दण्डितपाण्ड्यादिमण्डि (ण्ड) लिके अप्रतिशासने
'सत्याश्रय'-श्री-पुलकेश्यभिधानपृथिवीवल्लभमहाराजाधिराजे पृथिवीमे-
कातपत्रं शासति सति [॥] राजा रुद्रनीलसैन्द्रकवंशशशांकायमानः

प्रचण्डदोर्दण्डमण्डितमण्डलाग्रो गोण्डनामासीत् ॥ अय-नय-विनयस-
म्पन्नस्तनयोऽस्य समरसरसिकस्सिवाराख्यया ख्यातः ॥ पुत्रोऽस्य
भूता (तो) धात्रीतिलकायमानः पराक्रमाक्रान्तवैरिनिकुरुम्बः अवार्थ्य-
वीर्यसमन्वितः कार्थ्याकार्थ्यनिपुणः हनूमानिव रामस्याभिरामस्य तस्य
भृत्यस्सत्यसन्धो धार्मिकस्सामियारस्समभूत् ॥ स तत्प्रसादसमा-
सादितकुहुण्डीविषयस्तं परिपा[ल] यं (यन्) तदन्तर्भूतालक्तका-
मिधाननगय्याग्रामसप्तशतराजधान्यामशेषविषयविशेषिकायमानायां शालि-
ग्रीहीक्षुवणचणकप्रियङ्गुवरकोदारकस्यामाकगोधूमाद्यनेकधान्यसमृद्धायां
तद्देशविलासिनीमुखकमलमिव विराजमानायां धनधान्यपरिपूर्णाकृषीवल-
प्रायायाम् ॥

ऐन्द्रां दिशि महेन्द्रामः प्रासादं प्रवरम्महत् जिनेन्द्रा—

द्वारा पत्र; दूसरी ओर ।

यतनं भक्त्याकारयत् सुमनोहरम् ॥

प्रोत्तुंग-प्रासादं त्रिभुवनतिलकं जिनालयं प्रवरं

नानास्तम्भसमुद्भुतविराजमानं चिरं जगति ॥

शक्रतृपाब्देष्वेकादशोत्तरेषु चतुष्पष्टेषु व्यतीतेषु विभ्रमं वत्सरे
प्रवर्त्तमाने ॥ कृते च जिनालये ।

वैशाखोदितपूर्णपुण्यदिवसे राहो (हैं) विधौ (धोर) मण्डलं
श्लेष्टेन्दैर्त्यकमज्जनाद्गुहं गृहं भूभुजम्

श्रीसत्वाश्रयमाश्रयं गुणवतां विज्ञापयामास स

तज्जैनालयपूजनोचितनुतक्षेत्राय धर्मप्रियः ॥

आयुर्जन्मवतामिदं ननु तदि (दि) त् सन्ध्येन्द्रा(न्द्र)चापोपमं

ज्ञात्वा धर्मम (ध) नार्जनं बुधजनैर्भार्य (वै): फलं मन्यते

१ संभवतः शुद्ध पाठ 'श्लेष्टेन्दैर्त्यकमज्जनाद्' होना चाहिये ।

इत्येवं प्रविबोध्य सम्यजनतां सत्याश्रयो बल्लभो
भक्त्या तज्जिनमन्दिरोपमक्रिये क्षेत्रे ददौ शासनम् ॥
वैशाखपौर्णमास्यां राहौ विधुमण्डलं प्रविष्टवति

सत्याश्रयनृपतिस्त्रिभुवनतिलकाय दत्तवान् क्षेत्रम् ॥

कनकोपलसम्भूतवृक्षमूलगुण (णा) न्वये
भूतस्समप्रराद्धान्तस्सिद्धनन्दिमुनीश्वरः ॥
तस्यासीत् प्रथमदिशष्यो देवताविनुनक्रमः
शिष्यैः पञ्चशतैर्युक्त—

तीसरा पत्र; पहिली ओर ।

श्रितकचार्य्य-संज्ञितः ॥

श्रीमत्काकोपलान्नाये ख्यातकीर्तिर्बहुश्रुतः
लक्ष्मीवान्नागदेव्याख्यश्रितकचार्य्यदीक्षितः ॥

नागदेवगुरोर्दिशष्यः प्रभूतगुणवारिधिः
समस्तशास्त्रमम्योधि (धी) जिननन्दिः प्रकीर्तितः ॥

श्रीमद्विविधराजेन्द्रप्रस्फुरन्मकुटालिभिः

निघृष्टचरणाब्जाय प्रभवे जननन्दिने ॥

जिननन्दाचार्य्यसूर्याय दुश्चरतपोविशेषनिकषोपलभूताय समधि-
सर्वशास्त्राय नगरांशतलभोगांश्च प्रददौ [॥] तत्र तलभोगसीमान्याह
[१] चैत्यालयाद् वायव्यां दिशि तटाकं तटो ऋजुसूत्रक्रमेण पश्चिमामि-
मुखं गत्वा पथं तस्य मध्ये निखातपाषाणं तस्माद् दक्षिणाभिमुखमनुपथं
गत्वा प्रवाहं तस्यं (स्य) मध्ये निखातपाषाणं पूर्वाभिमुखं गत्वा
तिन्त्रिणीकवृक्षं यावत् तस्मादुत्तराभिमुखं गत्वा पूर्वोक्त-तटाकं । यावत्

१ इस पूर्णविराम की यहाँ कोई जरूरत नहीं है । 'पूर्वोक्त-तटाकं यावत्'
ऐसा सम्बन्ध है ।

स्थितं एतन्नगरनिवेशक्षेत्रम् [॥] तत्र तलभोगक्षेत्रसीमान्याह [॥]
 नगरस्य दक्षिणस्यां दिशि सेतुबन्धात् प्रभृत्यनुजलवाहलं पूर्वाभिमुखं
 गत्वा यावदौच्छिकक्षेत्रं तत्पश्चिमसीमं निखातपाषाणं यावत्तस्मादनुसी-
 मोत्तराभिमुखं गत्वा यावच्छमीवल्मीकं तस्मात्पुनः पूर्वाभिमुखं गत्वा
 यावत् स्थलगिरि तस्मात्पुनरनुगिर्युत्तराभिमुखं गत्वा यावद्गिरेरुच्चप्रदेशं
 तस्मात् पश्चिमाभिमुखं गत्वा यावद्गिरि तस्मात् पश्चिमाभिमुखं गत्वा याव-
 त्स्थलगिरि तस्मादक्षिणाभिमुखं गत्वा यावत्सेतुबन्धन (नं) स्थितं राज-
 मनेन पश्चापट् सदुत्तरनिवर्त्तनशतं तलभोगक्षेत्रं चतुस्तीमाविरुद्धम् ॥
नरिन्दकनामग्रामे नैर्ऋत्यां दिशि नरिन्दक-सामरिवाद (ड) ग्रामपथि
 मध्यवर्त्तिर्निगतेगतटाकादू ऋजुसूत्रक्रमेण नरिन्दकग्रामपथं यावत्तावत्स्थितं
 चत्वारिंशत् नि (सनि) वर्त्तनं क्षेत्रं दक्षिणदिशि राजमानेन ॥ **किण-**
यिगेनामग्रामे पूर्वस्यां दिशि अशीतिनिवर्त्तनं क्षेत्रं राजमानेन पिशाचा-
 रामं नैर्ऋत्यां दिशि यावच्छमीझाटवल्मीकं तस्मात् पूर्वाभिमुखं गत्वा
 यावत्पथं तस्मादक्षिणाभिमुखं गत्वा यावत्स्थलगिरि तस्मात् पश्चिमा-
 भिमुखमनुस्थलगिरि गत्वा यावच्छमीस्थलं तस्मादुत्तराभिमुखं गत्वा
 यावच्छमी-झाटवल्मीकं स्थितं चतुस्तीमाविरुद्धम् ॥ **पन्तिगणगे** नामग्रामे
 चतुर्थं पत्र; पहिली ओर ।

नैर्ऋत्यां दिशि मान्यस्य क्षेत्रे उत्तरस्यां दिशि चत्वारिंशन्निवर्त्तनं
 क्षेत्रं राजमानेन पश्चिमस्यां दिशि स्थलगिरि तस्मादनुसीमं पूर्वाभिमुखं
 गत्वा यावच्छमीवल्मीकं तस्मादक्षिणाभिमुखं गत्वा **कोमरश्चे**-ग्राम-सीम
 तस्मात्पूर्वाभिमुखमनुसीमं गत्वा यावज्जलवाहलं तस्मादुत्तराभिमुखमनु-
 वाहलं गत्वा यावच्छमीझाटवल्मीकं तस्मात्पश्चिमाभिमुखं गत्वा यावत्तटा-
 कोत्तरकोडि (टि) तस्मादक्षिणाभिमुखमनुस्थलगिरि गत्वा यावत्तावत्स्थितं
 चतुस्तीमाविरुद्धम् ॥

मंगलीनामग्रामपश्चिमदिशि राजमानेन चत्वारिंशन्निवर्तनं क्षेत्रं तस्य सीमान्याह स्थलगिरेः पश्चिमाभिमुखमनुपथं गत्वा यावद्भूविक्रामसीम तस्मादुत्तराभिमुखमनुसीम गत्वा यावत्स्थलगिरि तस्मात्पूर्वाभिमुखमनुस्थलगिरि गत्वा यावत्स्थलगिरि तस्मादक्षिणाभिमुखमनुस्थलगिरि गत्वा स्थितं चतुस्सीमाव (वि) रुद्धम् ॥ करण्डिगे नाम ग्रामे प—

चतुर्थ पत्र; दूसरी ओर ।

पश्चिमस्यां दिशि चन्दबुर-पन्दर्बवल्लिनामग्राममार्गमध्ये अश्वत्थतटाकाद् वायव्यां दिशि राजमानेन पञ्चविंशतिनिवर्तनं क्षेत्रम् ॥ दावनवल्लिनामग्रामे पश्चिमस्यां दिशि अलक्तकनगरकुम्भयिजनामग्राममार्गमध्ये बिम्बालयपिशाचारामात्पश्चिमे राजमानेन चत्वारिंशन्निवर्तनं क्षेत्रम् ॥ पुनरपि तस्मिन्नेव ग्रामे दक्षिणस्यां दिशि हिङ्गुटीतटाकादुत्तरसीमपथं राजमानेन शतं नि (शत-नि) वर्तनं क्षेत्रम् ॥ नन्दिणिगेनामग्रामे पूर्वस्यां दिशि बरबुलिकसीम श्रीपुरमार्गमध्ये राजमानेन चत्वारिंशन्निवर्तनं क्षेत्रम् ॥ सिरिपत्तिनामग्रामे पश्चिमस्यां दिशि श्रीपुरमार्गतो दक्षिणतो राजमानेन चत्वारिंशन्निवर्तनं क्षेत्रम् ॥ अर्जुनवाद (ड) नामग्रामे पश्चिमस्यां दिशि श्रीपुरमार्गतो उत्तरतो राजमानेन पञ्चाशन्निवर्तनं क्षेत्रम् ॥ ग्रामनामान्याह ॥ कुम्भयिज-द्वादशस्यो (स्या) न्तः रूविको नाम

पौर्वा पत्र ।

ग्रामः प्रथमः ॥ सामरिवादो (डो) नाम ग्रामः द्वितीयः ॥ बढमाले द्वादशस्यान्तः लहिवादो (डो) नाम ग्रामः तृतीयः ॥ श्रीपुरद्वादशस्य मध्ये पेल्दिदको नाम ग्रामः चतुर्थः ॥ इत्येते चत्वारो ग्रामाः चतुस्सीमाव (वि) रुद्धक्षेत्रः (त्राः) सोदङ्गाः स (सो) परिकराः अचाटभटप्रवेद्याः

[॥] तदागामिभिरस्मद्वैश्वर्यैश्च राजभिरायुरैश्चर्यादीनां विलसितमञ्जि-
रांशुचञ्चलमवगच्छद्विराचन्द्रार्कधराण्यवस्थितिसमकालं यशस्विचीशुभिः
स्वदत्तिनिर्विशेषं परिपालनीयमुक्तं च मन्वादिभिः ॥

बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभि-
र्यस्य यस्य यदा भूमिः तस्य तस्य तदा फलम् ।
स्वं दातुं सुमहच्छ्रवणं दुःखमन्यस्य पालनं
दानं वा पालनं श्रेयो श्रेयो दानस्य पालनम् ॥
स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेन वसुन्धराम् ।
पट्टिं वर्षसहस्राणि विष्टायां जायते कृमिः ॥

[ई. ए., ७, पृ० २०५-२१७, नं. ४४]

[इस दानपत्रमें पुलिकेशीकी वंशावलि उसके पितामह (बाबा) जयसिंह और उसके पिता रणराग से लेकर दी हुई है । ऊपर बिरुदावलिमें यह वाक्चावली आती है, 'जयसिंहस्य राजसिंहस्य सुनुः...रणरागोऽभवत्'— जिससे सर वाल्टर ईलियटने सन्देहास्पदरूपसे यह फलितार्थ निकाला है कि 'राजसिंह' जयसिंहका दूसरा नाम था । पर यदि 'राजसिंह' यह व्यक्तिवाचक नाम हो भी, तो इससे जयसिंहकी उपाधिका ही पता लगेगा, जयसिंहके दूसरे नामका नहीं ।

तत्पश्चात् दानपत्रमें उसके (जयसिंहके) एक सामन्त सामियारका उल्लेख है जो रुद्रनील-सैन्द्रक वंशका है । यह सामियार कुहुण्डी जिलेका शासक था । इसके बाद यह वर्णन है कि सामियारने अलकनगरमें, जो कि उस जिलेके ७०० गावोंके समूहोंमें एक प्रधान नगर था, एक जैनमन्दिर बनवाया, और राजाशा लेकर, विभव संवत्सरमें जब कि शकवर्ष ४११ व्यतीत हो चुका था वैशाख महीने की पूर्णिमाके दिन चन्द्रग्रहणके अवसर-पर कुछ जमीन और गाँव मन्दिरको दिये ।]

१०७

आङ्कुर [जिला धारवाड]; संस्कृत तथा कन्नड-मग्न ।

—[?]—

पूर्ववर्ती चालुक्य कीर्तिधर्मा प्रथमका किलालेख

- [१]जयत्यनेकधा विश्वं विवृण्वन्नंशुमानिव
.....श्री-वर्द्धमानदेवे.....
- [२]न् (?) यप-दुः-प्रबाधनः [II]
प्रभास (?) ति भुवं भूयो.....
- [३]प्रताप-क्षत.....ि.....ि.....दान
.....
- [४]कु (?) र (?) -तेजसा वैजय
.....र.....
- [५]त्पाशभृद्विषमो यमः चित्तं वा मानसं सत्यं स्थितं
.....[II] तेनेप (?).....
- [६]गामुण्ड-निर्म्मापितजिनालयदानशालादिसंवृद्धयै विज्ञप्तेन
यशस्विना [I] पञ्चविं—
- [७] शक्ति-संख्यान-निवर्त्तन-कृत-प्रमं क्षेत्रं राजमानेन दत्तं
त्वहितरक्षणं [I] [वि]—
- [८] श्राव्य साक्षिणः कृत्वा उज्जोरिन्द-प्रधानकानन्यैरपि च
राजन्यै रक्षणीयं स.....[II]
- [९] उक्तं च [I] स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम्
षष्टिं वर्षसहस्राणि विष्टाय(I)म् [जाय]—

- [१०] ते कृमिः [II] खं दातुं सुमहच्छक्यं दुःखमन्यस्य पालनं
दानं वा पालनं वेति दानाच्छ्रे[योऽनु]—
- [११] पालनम् [II] बहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिसगरादिभिः [ः]
यस्य यस्य यदा भूमिम् [तस्य त]—
- [१२] स्य तदा फलम् [III] आसीद् विनयनन्दीति परलूरगणा-
प्रणीरिन्द्रभूतिरिव धरात् चत्.....[सं]—
- [१३] घ-संहतेः [II] तस्यान्ते वसनासीत् वासुदेवो गुरुगुरुः
तस्य शिष्य [ः] प्रभा.....[II]
- [१४] शिष्य [ः] श्रीपालनामास्य धर्मगामुण्ड-पुत्रजः
प्रातिष्ठिपच्छिलापट्टं स्थेयादाचन्द्र [तारकं] [II]
कूसरा लेख ।
- [१५] स्वस्ति श्रीमत् प्रि (पृ) थु (थि) वीवल्लभ राजाधिराज
परमेश्वर कीर्त्तिवर्मरसः पृथु (थि) विद् [ज्यं-नो]—
- [१६] ये सिन्दरसरग (? ग्गा; ? गं) गि (? थि) पाण्डीपुरमा-
नाले परमेश्वरं माधवत्तियरसरगे वि [ज्ञापनं-नो]—
- [१७] यद् दोणगामुण्डरं एळगामुण्डरं मल्लेयरं उञ्छरादा
(? वा) सवेरैयर ह.....
- [१८] करणसहितमागि हविरक्षतगन्धपुष्पादिगन्धे कर्मगल्लए
पडुवण म.....
- [१९] य केळो एण्टु मत्तलगल्दे राजमानं जिनेन्द्र-भवनकितोरि-
दानाराद् सलिणोर [व]—
- [२०] ते धर्ममारारिदा[न] किडिणोरवर्त्तेपाप[म्] [II]
परलूरा चेदियद बळि प्रभाचन्द्र-गुरावर्षडेदा[र] [II]

[इस लेखमें कुल २० पंक्तियाँ हैं । पंक्ति १ से १४ तकमें एक संस्कृत शिलालेख है जिसमें दानशालाके लिये तथा दूसरे और भी कार्योंके लिये एक खेत के, तथा गामुण्ड (गाँव के मुखियों) में से किसी के द्वारा निर्मापित जिनालय के दानकी प्रशस्ति है । वैजयन्ती या बनवासी का वर्णन चौथी पंक्तिमें हुआ-सा मालूम पड़ता है ।

पंक्ति १५ से २० तक प्रायः पूर्ण हैं (खण्डित नहीं हैं) और उनमें एक पुरानी कर्णाटक-भाषाका लेख है जिसमें यह उल्लेख है कि, जिस समय कीर्तिवर्म्मा सार्वभौम-सत्ताके रूपमें शासन कर रहा था, और जब कि सिन्द नामका कोई एक राजा पाण्डीपुर नगरमें शासन कर रहा था दोण-गामुण्ड और एळगामुण्ड आदिने, राजा माधवसिकी सम्मतिसे, जिनेन्द्रके मन्दिरको पूजाके प्रबन्धके लिये अक्षत (अखण्ड चावल), सुगन्ध, पुष्प आदि, और चावलके खेतोंके आठ 'मत्तल' शाही मापसे नाप कर दिये । ये चावलके खेत कर्मेगलूर गाँवकी पश्चिमदिशामें थे ।

इस शिलालेखका काल नहीं दिया है । लेकिन कीर्तिवर्म्माको जो उपाधियाँ दी हुई हैं उनसे, तथा अक्षरोंकी लिखावटसे यह स्पष्ट मालूम पड़ता है कि इस लेखमें उल्लेखित कीर्तिवर्म्मा पूर्ववर्ती चालुक्य राजा कीर्तिवर्म्मा प्रथम हैं, जिसके राज्यका अन्त शक ४८९ में हुआ था । इस लेखसे यह भी मालूम पड़ता है कि कीर्तिवर्म्मा प्रथमने कदम्बोंको जीता था ।]

[ई. ए०, ११, पृ० ६८-७१, नं० १२०]

१०८

पहोले (जिला-कलदगी)-संस्कृत ।

[शक सं० ५५६=६३४ ई०]

चालुक्यवंशोद्भूतश्रीपुलकेशीका शिलालेख ।

जयति भगवाञ्जिनेन्द्रो[वी]नज[रा-म]रणजन्मनो यस्य ।

ज्ञानसमुद्रान्तर्गतमखिलं जगदन्तरीपमिव ॥ १ ॥

तदनु चिरमपरिचेयश्चालुक्यकुलविपुलजलनिधिर्जयति ।

पृथिवीमौलिललाभो यः प्रभवः पुरुषरत्नानाम् ॥ २ ॥

शूरे विदुषि च विभजन्दानं मानं च युगपदेकत्र ।
 अविहितयाथातथ्यो जयति च सत्याश्रयः^१ सुचिरम् ॥ ३ ॥
 पृथिवीवल्लभशब्दो येषामन्वर्थतां चिरं जातः ।
 तद्वंशे (श्ये) षु जिगीषुषु तेषु बहुष्वप्यतीतेषु ॥ ४ ॥
 नानाहेतिशताभिघातपतितभ्रान्ताश्चपत्तिद्विपे
 नृत्यद्वीमकबन्धग्वङ्गकिरणज्वालासहस्रे रणे^१ ।
 लक्ष्मीर्भावितचापलादिव कृता शौर्येण येनात्मसा-
 द्राजासीजयसिंहवल्लभ इति ख्यातश्चलुकयान्वयः ॥ ५ ॥
 तदात्मजोऽभूद्रणरागनामा दिव्यानुभावो जगदेकनाथः ।
 अमानुषत्वं किल यस्य लोकः सुप्तस्य जानाति वपुःप्रकर्षात् ॥ ६ ॥
 तस्याभवत्तनूजः पुलकेशी यः श्रितेन्दुकान्तिरपि ।
 श्रीवल्लभोऽप्ययासीद्वातापिपुरीवधूवरताम् ॥ ७ ॥
 यन्निर्वर्गपदवीमलं क्षितौ नानुगन्तुमधुनापि राजकम् ।
 भूश्च येन हयमेधयाजिना प्रापितावभृथमज्जना बर्भा ॥ ८ ॥
 नलमौर्यकदम्बकालरात्रिस्तनयस्तस्य बभूव कीर्तिवर्मा ।
 परदारविवृत्तचित्तवृत्तेरपि धीर्यस्य रिपुश्रियानुकृष्टा ॥ ९ ॥
 रणपराक्रमलब्धजयश्रिया सपदि येन विरुणमशेषतः ।
 नृपतिगन्धगजेन महौजसा पृथुकदम्बकदम्बकदम्बकम् ॥ १० ॥
 तस्मिन्सुरेश्वरविभूतिगताभिलाषे
 राजाभवत्तदनुजः किल मङ्गलीशः ।
 यः पूर्वपश्चिमसमुद्रतटोषिताश्चः
 सेनारजःपटविनिर्भितदिग्वितानः ॥ ११ ॥

१ 'सत्याश्रय' यह पुलकेशीका नामान्तर है ।

स्फुरन्मयूखैरसिदीपिका शतैर्व्युदस्य मातङ्गतमिस्त्रसंचयम् ।

अवाप्तवान् यो रणरङ्गमन्दिरे कलञ्चुरिश्रीललनापरिग्रहम् ॥ १२ ॥

पुनरपि च जिघृक्षोः सैन्यमाक्रान्तसालं

रुचिरबहुपताकं रेवतीद्वीपमाशु ।

सपदि महदुदन्वत्तोयसंक्रान्तबिम्बं

वरुणबलमिवाभूदागतं यस्य वाचा ॥ १३ ॥

तस्याप्रजस्य तनये नहुषानुभावे

लक्ष्म्या किलाभिलषिते पुलकेशिनाम्नि ।

सासूयमात्मनि भवन्तमतः पितृव्यं

ज्ञात्वापरुद्धचरितव्यवसायबुद्धौ ॥ १४ ॥

स यदुपचितमञ्जोत्साहशक्तिप्रयोग-

क्षपितबलविशेषो मङ्गलीशः समन्तात् ।

खतनयगतराज्यारम्भयत्नेन सार्धं

निजमतनु च राज्यं जीवितं चोज्जति स्म ॥ १५ ॥

तावत्तच्छत्रभङ्गे जगदखिलमरात्यन्धकारोपरुद्धं

यस्यासह्यप्रतापद्युतिततिभिरिवाक्रान्तमासीत्प्रभातम् ।

नृत्यद्विद्युत्पताकैः प्रजविनि मरुति क्षुण्णपर्यन्तभागै-

र्गर्जद्भिर्वारिवाहैरलिक्कुलमलिनं व्योम या(जा)तं कदा वा ॥ १६ ॥

लब्ध्वा कालं भुवमुपगते जेतुमाप्यायिकाख्ये

गोविन्दे च द्विरदनिकरैरुत्तराम्भोधिरध्याः ।

यस्यानीकैर्युधि भयरसङ्गत्वमेकः प्रयात-

स्तत्रावातं फलमुपकृतस्यापरेणापि सबः ॥ १७ ॥

वरदातुङ्गतरङ्गरङ्गविलसद्गमानदीमेखलां

वनवासीमवमृद्रतः सुरपुरप्रस्पर्धिनी संपदा ।

महता यस्य बलार्णवेन परितः संछादितोर्वीतलं

स्थलदुर्गं जलदुर्गतामिव गतं तत्तत्क्षणे पश्यताम् ॥१८॥

गङ्गाम्बु पीत्वा व्यसनानि सप्त हित्वा पुरोपार्जितमंपदोऽपि ।

यस्यानुभावोपनताः सदासन्नासन्नसेवामृतपानशौण्डाः ॥ १९ ॥

कोङ्कणेषु यदादिष्टचण्डदण्डाम्बुवीचिभिः ।

उदस्तास्तरसा **मौर्य**पल्वलाम्बुममृद्रयः ॥ २० ॥

अपरजलधेर्लक्ष्मीं यस्मिन्पुरीं पुरमित्प्रभे

मदगजघटाकारैर्नावां शनैरवमृद्रति ।

जलदपटलानीकाकीर्णं नवोत्पलमेचकं

जलनिधिरिव व्योम व्योम्नः समोऽभवदम्बुधिः ॥ २१ ॥

प्रतापोपनता यस्य **लाटमालवगूर्जराः** ।

दण्डोपनतसामन्तचर्या वर्या इवाभवन् ॥ २२ ॥

अपरमितविभूतिस्फीतसामन्तसेना-

मुकुटमणिमयूखाक्रान्तपादारविन्दः ।

युधि पतितगजेन्द्रानीकवीभत्सभूतो

भयविगलितहर्षो येन चाकारि हर्षः ॥ २३ ॥

मुचमुरुभिरनीकैः शासनो यस्य रेवा

विविधपुलिनशोभावन्ध्यविन्ध्योपकण्ठा ।

अधिकतरगराजत्वेन तेजोमहिम्ना

शिखरिभिरिभवर्ज्या वर्षणां स्पर्धयेव ॥ २४ ॥

विधिवदुपचिताभिः शक्तिभिः शक्रकल्प-

स्तिसुभिरपि गुणैः स्वैश्च माहाकुलाद्यैः ।

अनमदधिपतित्वं यो महाराष्ट्रकाणां

नवनवतिसहस्रप्राप्तभाजां त्रयाणाम् ॥ २५ ॥

गृहिणां स्वगुणैस्त्रिवर्गस्तुङ्गा विहितान्यक्षितिपालमानभङ्गाः ।

अभवन्नुपजातमीतिलिङ्गा यदर्नाकेन सकोसलाः कलिङ्गाः ॥ २६ ॥

पिष्टं पिष्टपुरं येन जातं दुर्गमदुर्गमम् ।

चित्रं यस्य कलेर्वृत्तं जातं दुर्गमदुर्गमम् ॥ २७ ॥

संनद्धवारणघटास्थगितान्तरालं

नानायुधक्षतनरक्षतजाङ्गरागम् ।

आसीज्जलं यदवमर्दितमभ्रगर्भा-

केंणालमम्बरमिवोर्जितसांध्यरागम् ॥ २८ ॥

उद्भूतामलचामरध्वजशतच्छन्नान्धकारैर्बलैः

शौर्योत्साहरसोद्धितारिमथनैर्मौलादिभिः पङ्क्तिभिः ।

आक्रान्तात्मबलोजतिं बलरजःसंलक्षकाञ्चीपुरः

प्राकारान्तरितप्रतापमकरोधः पल्लवानां पतिम् ॥ २९ ॥

कावेरी द्रुतशफरीविलोलनेत्रा चोलानां सपदि जयोद्यतस्तस्य (१) ।

प्रश्नयोतन्मदगजसेतुरुद्धनीरा संस्पर्शं परिहरति स्म रत्नराशेः ॥ ३० ॥

चोलकेरलपाण्ड्यानां योऽभूत्तत्र महर्द्धये ।

पल्लवानीकनीहारतुहिनेतरदीधितिः ॥ ३१ ॥

उत्साहप्रभुमग्नशक्तिसहिते यस्मिन्समन्तादिशो

जित्वा भूमिपतीन्विस्तृत्य महितानाराध्य देवद्विजान् ।

वातापीं नगरीं प्रविश्य नगरीमेकाभिबोर्वोमिमां

चञ्चनीरघिनीरनीलपरिखां सत्याश्रये शासति ॥ ३२ ॥

त्रिंशत्सु त्रिसहस्रेषु भारतादाहवादिनः ।

सप्तान्दशतयुक्तेषु श (ग) तेष्वन्देशेषु पञ्चसु (३७३५) ॥ ३३ ॥

पञ्चाशत्सु कलौ काले षट्सु पञ्चशतासु च (६५६) ।

समासु समतीतासु शकानामपि भूभुजम् ॥ ३४ ॥

तस्याम्बुधित्रयनिवारितशासनस्य

सत्याश्रयस्य परमाप्तवता प्रसादम् ।

शैलं जिनेन्द्रभवनं भवनं महिम्नां

निर्मापितं मतिमता रविकीर्तिनेदम् ॥ ३५ ॥

प्रशस्तेर्वसुतेश्चास्या जिनस्य त्रिजगद्गुरोः ।

कर्ता कारयिता चापि रविकीर्तिः कृती स्वयम् ॥ ३६ ॥

येनायोजि नवेत्रमस्थिरमर्थविधौ विवेकिना जिनवेश्म ।

स विजयनां रविकीर्तिः कविताश्रितकालिदासभारविकीर्तिः ३७

[प्राचीनलेखमाळा, प्रथमभाग, ले० १६, पृ० ६८-७२, से उद्धृत]

[यह शिलालेख बीजापुर (पूर्वका कलाग्री) जिलेके हुड्डण्ड तालुकाके ऐहोळेके मेगुटि नामके प्राचीन मन्दिरकी पूर्वकी तरफकी दीवालपर है। लेखमें कुल १९ पंक्तियाँ हैं, जिनमेंसे १८ वी पंक्ति पूर्ण और १९ वीं छोटी पंक्ति बादमें किसीकी जोड़ी हुई हैं और जिनमें महत्त्वपूर्ण कोई बात नहीं है।

समूचा शिलालेख किसी रविकीर्तिका बनाया हुआ है। वे (रविकीर्ति) चालुक्य पुलकेशी सत्याश्रय (अर्थात् पश्चिमी चालुक्य पुलकेशी द्वितीय) के राज्यमें थे। यह राजा उनका संरक्षक या पोषक था। इन्होंने शिलालेखवाले जिलाख्यमें जिनेन्द्रकी मूर्तिकी प्रतिष्ठा की। प्रतिष्ठाके समय यह लेख उत्कीर्ण करवाया गया था जिसमें सामान्यरूपसे चालुक्य वंशकी, और विशेषतः पुलकेशी द्वितीय (रविकीर्तिके आश्रयदाता) के

पराक्रमोंकी प्रशस्ति है । इस लेखमें आये हुए ऐतिहासिक तथ्योंका पूरा विवरण प्रो० भाण्डारकर और डॉ० फ्लीटने दिया है ।

इस लेख (या काव्य) का मुख्य भाग १७-३२ श्लोकोंका है । इनको रविकीर्ति के आशयानुसार, रघुवंशके (चौथे सर्गके) रघुदिग्विजयके समान, 'पुलकेशी-सत्याश्रय दिग्विजय' कहा जा सकता है । इस काव्य (कविता) की रचनामें रविकीर्तिका कालिदासके रघुवंशका तथा भारवि के किराताजुनीयका गहरा अध्ययन स्पष्ट काम कर रहा है; इसलिए उन्हींके शब्दोंमें उनका यह कथन कि 'स विजयतां रविकीर्तिः कविताश्रित-कालिदासभारविकीर्तिः' सचमुचमें ठीक है ।

श्लोक २२ में बताया गया है कि पुलकेशीका प्रताप इतना तेज था कि लाट, मालव और गुर्जर लोग अपने-आप ही उनकी शरण आते थे, बलपूर्वक नहीं ।]

[ई० ए०, जिल्द ५, पृ० ६७-७१]

१०९

लक्ष्मेश्वर—संस्कृत ।

—[?]—

जयत्यतिशयजिनैर्वासुरस्सुरवन्दितः ।

श्रीमाञ्जिनपतिस्सृष्टेरादेः कर्ता दयोदयः ॥

देहहिमरि (इह हि स्वस्ति) ॥

चालुक्यपृथ्वीवल्लभकुलतिलकेषु बहुध्वतीतेषु रणपराक्रमाङ्गमहाराजो
भवत्तद्वाजतनयः राजितनयो विवर्द्धितैश्वर्यश्चतुस्समुद्रान्तस्नाततुरङ्गेभपदा-
तिसेनासमूहः एरैर्यनामवेयः श्रीमान् ॥

१ देखो प्रो० भाण्डारकरकी Early History of the Dekkan, 2nd ed., especially p. 51; और डॉ० फ्लीटकी Dynasties of the Kanarese Districts, 2nd ed. especially p. 349 ff.

अपि च ॥

शासतीमां समुद्रान्तां वसुधां वसुधाधिपे ।

सत्याश्रयमहाराजे राजत्सत्यसमन्विते ॥

भुजगेन्द्रान्वयसेन्द्रावनीन्द्रसन्ततौ अनेकनृपसन्तिमैश्वरीतेषु तत्कुल-
गगनचन्द्रमाः बहुसमरविजयलब्धपताकावृन्नासितदिगन्तरालबलयः
विजयशक्तिर्नाम नृपतिर्वर्भूव [II] तत्सुनुरुदिततरुणदिवाकरकरसम-
प्रभः सौ (शां) र्य-धैर्य-सत्त्व-गुणोपपन्नः सामन्तवृ (वृ) न्द्रमौलि-
मालवलीढचरणः कुन्दशक्तिर्नाम राजाभूत् तस्य प्रियतनयः ॥ अद्वि-
तीयपुरुषकारसम्पन्नः । धर्मार्थकामप्रधानः अनेकरणविजयवीरपताका-
ग्रहणोद्धतकीर्तिः [III] तेन दुर्गशक्तिनामधेयेन शङ्खजिनेन्द्रचैत्यनित्य-
पूजार्थं पुण्याभिवृद्धये च पुलिगेरे-नामनगरस्योत्तरपार्श्वे पञ्चाशन्नि-
वर्त्तनपरिमाणक्षेत्रं दत्तम् ॥ तस्य सीमा समाख्यायते [I] पूर्वतः किन्न-
रीक्षेत्रम् । पावकदिशि ज्येष्ठलिङ्गभूमिः । दक्षिणतः घटिकाक्षेत्रम् ।
नैर्ऋत्यां दिशि दं (? पं) डीस (श) श्रेष्ठिभूमिः । पश्चिमतः रामे-
श्वरक्षेत्रम् वायव्यां होनेश्वरक्षेत्रम् । उत्तरतः सिन्देश्वरक्षेत्रं ई (ऐ)
शान्यां दिशि भट्टारीक्षेत्रम् । तदक्षिणतः पूर्वोक्तकिन्नरीक्षेत्रम् ॥

देवस्त्वं विषं लोके न विषं नै (?) विषमुच्यते ।

विषमेकाकिनं हन्ति देवस्त्वं पुत्र-पौत्रिकम् ॥

[यह लेख, जिसमें उस बड़े शिलालेख (नं. १४९) का दूसरा भाग
(पंक्तियाँ ५१-६१) लिखित हैं, 'सेन्द्र' कुलका लेख हैं ।

१ यहाँ 'क' की जगह 'म' भी हो सकता है और तब 'मन्दशक्ति' पढ़ा जायगा । २ यह 'न' अतिरिक्त है और भूलसे जुड़ गया है ।

इसका प्रारम्भ 'रणपराक्रमाङ्क' नामके एक चालुक्य राजा और उसके पुत्र एरेंद्रके उल्लेखसे हुआ है। लेकिन ये दोनों नाम पश्चिमी या पूर्वी चालुक्योंमेंसे किसीकी भी वंशावलीमें अभीतक नहीं मिले हैं। रणपराक्रमाङ्क शायद 'रणराग'के लिये उल्लेखित हुआ है, जो जयसिंह प्रथमका पुत्र और पुलिकेशी प्रथमका पिता था। जयसिंह प्रथमका जो दक्षिणके इस वंशके प्रथम पुरुष हैं, वर्णन कभी-कभी आता है।

इसके अनन्तर 'सत्याश्रय' नामके एक राजाका उल्लेख आता है। परन्तु उससे यह पता नहीं चलता कि इस उपाधि (सत्याश्रय) को धारण करनेवाले किस पश्चिमी चालुक्य राजासे मतलब है।

इसके बाद, सत्याश्रयके समकालवर्तीके तौरपर, 'दुर्गशक्ति' राजाका उल्लेख आता है। यह राजा 'भुजगेन्द्र' अर्थात् नागवंशके अन्वयसे सम्बन्ध रखनेवाले सेन्द्र राजाओंके वंशका था। यह विजयशक्तिके पुत्र कुन्दशक्तिका पुत्र था।

इसमें दुर्गशक्तिके द्वारा शङ्खजिनेन्द्र नामके चैत्यके लिये दिये गये भूमिदानका कथन है। यह भूमिदान पुलिगेरे नगरमें किया गया था।

लेखका काल नहीं दिया गया है। यह संभवतः प्राचीनतर कालका मालूम पड़ता है, जो यहाँ सिर्फ पूर्वकालके लेखके निश्चय या सुरक्षाके लिये ही दुहराया गया है।]

[ई० ए०, जिल्द ७, पृ० १०१-१११, नं० ३८ (पंक्तियाँ ५१-६१)]

११०

[यह लेख श्रवण-चेलोलाका संस्कृत और कन्नडमें है। इसे 'जैन शिलालेख-संग्रह प्रथम भाग' में देखना चाहिये।]

[L. Rice, EC, II, sr.-Bel. ins. no. 24.]

१११

लक्ष्मेश्वर—संस्कृत।

[शक ६०८=ई० सन् ६८७]

[यह लेख (मूल) इलियटके हस्तलिखितसंग्रहकी पहली जिल्दमें पृष्ठ २२ पर दिये गये ८७ पंक्तिवाले एक लेखका चौथा भाग है और पंक्ति ६१

वींसे शुरू होता है। उस समस्त लेखका सिर्फ कुछ भाग ही उस पुस्तकमें पाषाण-लेखपरसे लिया गया है, पूरा लेख नहीं। इसलिये उस लेखका यहाँ देना मुश्किल होनेसे सिर्फ उसकी विगत यहाँ दी जाती है।

उस विशाल लेखकी ६९ वीं पंक्तिसे एक दूसरा पश्चिमी चालुक्य शिलालेख शुरू हो जाता है। इस लेखकी ६९ से ८२ तककी पंक्तियाँ यद्यपि अस्पष्ट हैं, फिर भी अति सुरक्षित हैं; उसके नीचेकी पाँच पंक्तियोंका भी कुछ निशानोंसे पता चल जाता है, यद्यपि अक्षर इतने घिसे हुए हैं कि पढ़नेमें नहीं आते। इसमें पो(पु)लिकेशीवल्लभसे लेकर विनया-दित्य-सत्याश्रय तककी वंशावली है और मूलसङ्ग अम्बयकी देवगण शाखाके किसी आचार्यको, उसके द्वारा दिये गये, दानका उल्लेख है। यह दान ६०८ शक वर्षके बीतनेपर जब उसके राज्यका पाँचवाँ या सातवाँ वर्ष चालू था और जब उसकी विजयका कैम्प (विजयस्कन्धा-वार) रक्तपुर नगरमें लगा हुआ था, माघ महीनेकी पूर्णमासीको दिया गया था। यह काल ७७-७८ पंक्तियोंमें यों दिया हुआ है:—अष्टोत्तर-षट्-छत्तेसु शकवर्षेष्वतीतेषु प्रवर्द्धमानविजयराज्यपञ्चम-(१ सप्तम)-संवत्सरे श्री रक्तपुरमधिवसति विजयस्कन्धावारे माघमासे पौर्णमास्याम्। यहाँ वार (दिन) नहीं दिया हुआ है।]

[ई० ए० ७, पृ० ११२, नं० ३९, चतुर्थभाग]

११२

भ्रवणबेलगोला (बिना कालका)-कच्छ ।

(देखो “जैन शिलालेख संग्रह प्रथम भाग” ।)

११३

लक्ष्मेश्वर—संस्कृत ।

[शक ६५१=ई० सन् ७२९]

[यह लेख (मूल) इलियटके हस्तलिखित संग्रह (Elliot's Ms. Collection) की पहली जिल्दमें पृष्ठ २२ पर ८७ पंक्तिके एक बड़े लेखमें दिया हुआ है । उसमेंसे पंक्ति २८ से शुरू होकर पंक्ति ५३ तक

पश्चिमी चालुक्योंका शिलालेख है। इसमें पो (पु) लिकेशीवल्लभ, अर्थात् पुलिकेशी प्रथमसे लेकर विजयादित्य सत्याश्रय तककी वंशावली दी हुई है तथा यह भी उल्लेखित है कि अपने राज्यके चौतीसवें वर्षमें जब कि शक संवत्के ६५१ वर्षं व्यतीत हो चुके थे फाल्गुनकी पूर्णिमाके दिन, जब कि उसका विजय-स्कन्धावार रक्तपुर नगरमें था, पुलिकर नगरकी दक्षिण सीमापर बसे हुए कईम गाँवका दान अपने पिताके पुरोहित उदयदेव पण्डितको, जिन्हें 'निरवद्यपण्डित' भी कहते थे, दिया। ये श्रीपूज्यपादके शिष्य थे तथा मूलसंघ अन्वयकी देवगण शाखाके थे। यह दान पुलिकर नगरमें शङ्ख-जिनेन्द्रके मन्दिरके हितार्थ दिया गया था। कालनिर्देश पंक्ति ४२-४४ में यों दिया हुआ है:—एकपञ्चाशदुत्तरषड्छतेषु शकवर्षे-
व्यतीतेषु प्रवर्त्तमान-विजयराज्यसंवत्सरे चतुर्दिशे वर्त्तमाने श्री-रक्तपुरमधि-
वसति विजयस्कन्धावारे फाल्गुनमासे पौर्णमास्याम्। वार (दिन) इसमें नहीं दिया हुआ है।]

[ई० ए०, ७, पृ० ११२, नं० ३५ (द्वितीय भाग)]

११४

लक्ष्मेश्वर—संस्कृत।

[शक ६५६=७३४ ई०]

स्वस्ति [III]

जयत्याविःकृतं विष्णोर्व्याराहं क्षोभितार्णवं ।

दक्षिणोन्नतदंष्ट्राप्रविश्रान्तभुवनं वपुः ॥

श्रीमतां सकलभुवनसंस्तूयमानमानव्यसगोत्राणां हारीति-पुत्राणां
सप्तलोकमातृभिः सप्तमातृभिरभिवर्द्धितानां कार्तिकेयपरिरक्षणप्राप्त-
कल्याणपरम्पराणां भगवन्नारायणप्रसादसमासादितवराहलज्जनेक्षणव-
शीकृताशेषमहीभृतां चालुक्यानां कुलमलंकरिष्णोरश्वमेधावभृथस्नानप-
वित्रीकृतगात्रस्य श्रीपोलिकेशीवल्लभमहाराजस्य प्रियसूनुः श्रीकी-
र्तिवर्मपृथ्वीवल्लभमहाराजस्तस्यात्मजस्य सत्याश्रयश्रीपृथ्वीवल्लभमहा-

राजाधिराजपरमेश्वरस्य प्रियतनयः (यस्य) प्रभावकुलिशदलितपाण्ड्य-
 चोल-केरल-कदम्बप्रभृतिभूषदुदग्रविभ्रमस्य नित्यावनतकाञ्चीपतिमु-
 कुटचुम्बितपादाभ्युजस्य विक्रमादित्यसत्याश्रयश्रीपृथ्वीवल्लभमहा-
 राजाधिराजपरमेश्वरस्य प्रियसूनुः (नोः) सकलोत्तरापथनाथमथनोपा-
 र्जितपालिध्वजादिसमस्तपारमैश्वर्यचिह्नस्य विनयादित्यसत्याश्रयश्रीपृ-
 थ्वीवल्लभमहाराजाधिराजपरमेश्वरपरमभट्टारकस्य प्रियात्मजः साहसरस-
 रसिकः पराङ्मुखीकृतशत्रुमण्डलस्सकलपारमैश्वर्यव्यक्तिहेतुपालिध्वजाद्युज्य
 (ज्व)लराज्यचिह्नो विजयादित्यसत्याश्रयश्रीपृथ्वीवल्लभमहाराजाधि-
 राजः (जः) [॥] [तत्-]प्रियसूनोः प्रतिदिनप्रवर्द्धमानया(यौ)वनो (नस्य)
 रिपुमण्डलाक्रान्तिराज्याभ्युदयः (यस्य) कस्तूरीकिशोरविक्रमैकरसो
 (सस्य) विक्रमादित्यसत्याश्रयश्रीपृथ्वीवल्लभमहाराजाधिराजपरमेश्वर-
 भट्टारकस्य विजयस्कन्धावारे रक्तपुरमधिवमति पदपञ्चाशदुत्तरषट्छ-
 तेषु शक्रवर्षेष्वतीतेषु प्रवर्द्धमानविजयराज्यसंवत्सरे द्वितीये
 वर्त्तमाने माघपौर्णमास्यां मूलसंधान्वयदेवगणोदितः (नाय)
 परमतपः (पः) श्रुतमूर्त्तिविशे (शो) करामदेवाचार्य्यशिष्यो (प्याय)
 विजितविपक्षवादिजयदेवपण्डितान्तेवासी (सिने) समुपगतैकवादि-
 त्वादिश्रीविजयदेवपण्डिताचार्य्याय जिनपूजाभिवृद्धयर्थं बाहु-
 बलिश्रेष्ठिविज्ञापनेन पुलिकरनगरस्य शङ्खतीर्थवसतेर्मण्डनमण्डितं
 तस्य धवलजिनालयस्य जीर्णोद्धारणं कृत्वा खण्डस्फुटितनवसंस्कार-
 बलिनिमित्तं दानशीलादिप्रवर्त्तनार्थं नगरादुत्तरस्यां दिशि गन्धूतिप्रमाण-
 व्यवस्थितं कर्पटितटाकाइक्षिणस्यां दिशि राजमानेन शतार्द्धनिवर्त्तन-
 प्रमाणक्षेत्रं सर्वबाधापरिहारं दत्तम् [॥] तस्य सीमा समाख्यायते ।
 पूर्वदिशि तत्साधितकिन्नरपाषाणाइक्षिणस्यामाशायां धवलपाषाणपार्श्व-

शम्यः । पश्चिमस्यां दिशि श्वेतपाषाणादेकशमी उत्तरस्यां दिशि आनीलपाषाणात् प्राक्प्रकाशिततटाकात् पूर्वस्यां दिशि अरुणपाषाणात् पूर्वोक्तव्यक्तकिन्नरपाषाणसंगता सीमा ॥

स्वं दातुं सुमहच्छक्यं दुःखमन्यस्य पालनम् ।

दानात्पालनाच्चेति (दानं वा पालनं चेति) दानाच्छ्रेयोऽनुपालनम् ॥

न विषं विषमित्याहुः देवस्वं विषमुच्यते ।

विषमेकाकिनं हन्ति देवस्वं पुत्र-पौत्रिकम् ॥

स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम् ।

पट्टि-वर्षसहस्राणि विष्टायां जायते कृमिः ॥

प्रथ्यताम् जिनशासनम् [II]

[ई० ए०, जिल्द ७, पृ० १०१-१११, नं० ३८ (पंक्तियाँ ६१-८२)]

[यह लेख उस बड़े लेख (नं० १४९) का तीसरा व अन्तिम भाग (पंक्तियाँ ६१-८२ तक) है। यह पश्चिमी चालुक्य विक्रमादित्य द्वितीयका लेख है। यह उसके राज्यके द्वितीय वर्षका है जब कि शक वर्ष ६५६ (७३४-५ ई०) व्यतीत हो चुका था, और फलतः पूर्व किसी लेख (शिला-लेख या ताम्रपत्र) से यहाँ निश्चय या सुरक्षाके लिये दुहराया गया है। यह लेख उसकी छावनी 'रक्तपुर' से निकाला गया है। 'रक्तपुर' आज-कलका कौन-सा स्थान है, यह नहीं कहा जा सकता।

इसमें 'पुलिकर'—पूर्वके दो शिलालेखोंका 'पुलिगेरे'—शहरकी 'शङ्ख-तीर्थवसति' तथा 'धवलजिनालय' नामके एक दूसरे मन्दिरकी सजावट तथा मरम्मतका उल्लेख है और कहा गया है कि 'जिन' की पूजाके प्रबन्धके लिये कुछ भूमिदान किया गया।

यह लेख अपने वंशावली-परिचायक भागमें पश्चिमी चालुक्योंके शिलालेखोंसे मिलता है। इसमें दो आगेकी पीढ़ियोंका—विजयादित्य और विक्रमादित्य द्वितीयका, जो विनयादित्यके क्रमशः पुत्र और पौत्र हैं,—भी उल्लेख है।]

११५

पञ्चपाण्डवमलै—(आर्कटके निकट)—तामिल
—[?]—

१. नन्दिप्पोत्तरश[] कु अय् [म्] बदावदु नाग[ण]न्दि-
गुर [वर]
२. [इरु] क पोञ्जिय [क्] किय[ि]र पडिमं कोट्टुविश्र [त्र]
३. पु[ग]ळलैमंग[ल]तु मरुत्तुवर मगन् नारण-
४. न् [II]

अनुवाद—नन्दिप्पोत्तरशर्के ५ वें (वर्ष) में,—पुगळलैमङ्गल्लके मरुत्तुवरके पुत्र नारणन् (नारायण) ने नागणन्दि (नागनन्दि) गुरुकी मूर्तिके साथ-साथ पोञ्जियकियार्की मूर्ति खुदवाई ।

[EI, IV, no. 14, A.]

११६

अनहिलवाड-पाटन—संस्कृत ।

(संवत् ८०२ = ई० स० ७४५)

यह शिलालेख श्वेताम्बर सम्प्रदायका है ।

“[J. Burgess and H. Cousens, Antiquity of North Gujerat (A SI, XXXII).]

११७

श्रवणबेलगोला (विना कालका)—संस्कृत ।

[देखो “जैन शिलालेख-संग्रह प्रथम भाग” ।]

११८

नन्दी (गोपीनाथ पर्वत)—संस्कृत ।

विना कालनिर्देशका [=संवत्तः ७५० ई० (लु० राहस)

[नन्दीमें, गोपीनाथ पहाड़ीके ऊपर गोपालस्वामी मन्दिरके पासकी चट्टानपर]

स्वस्ति श्रीमत् जितं भगवता जिनवर-वृषमेण वृषमेण पुरा कलि-
अवसर्पिण्यां द्वावरे युगे लोक-स्थितिरक्षार्थं काङ्क्षित-मनुष्य-जन्मना
पुरुषोत्तमेन सूर्य्य-वंश-व्योम-सूर्य्येण महारथेन दाशरथिना राम-स्वामिना
प्रतिष्ठापिताय भगवतोर्हतः परमेष्ठिनः सर्व्वज्ञस्य चैत्य-भवनाय पश्चात्
पाण्डवजनन्या को(कु)न्तिदेव्या पुनर्नवीकृत-संस्काराय भूमिदेव्या-
स्तिलकायमानाय स्वर्गापवर्ग-पदयोस्सोपान-पदवीभूताय धराधर-धर-
णेन्द्रस्य फणा-मणि-लीलानुकारिणे धराधरवराय जिनेन्द्र-चैत्य-सान्निध्यात्
पावनाय परम-तीर्थाय तपश्चरण-परायण-महर्षि-गणाध्यासित-कन्दराय
श्रीकुन्दाख्याय (यहाँ बन्द हो जाता है)

[वृषभ-देवको नमस्कार करनेके बाद,—

प्राचीन समयमें, कलि-अवसर्पिणीके द्वापर-युगमें, सूर्यवंशके गगनमें
सूर्यके समान, दशरथके पुत्र महारथ राम-स्वामी (रामचन्द्रजी)के द्वारा
अर्हन्त-परमेष्ठीका यह चैत्य-भवन प्रतिष्ठापित किया गया । बादमें,
पाण्डवोंकी माता कुन्तीने इसे फिरसे नया बनवा दिया ।

भूमिदेवीको तिलकके समान, स्वर्ग और अपवर्ग दोनोंके लिये सीढ़ी,
सब पर्वतोंमें उत्तम, जिनेन्द्र-चैत्य (बिम्ब)के सान्निध्यसे पवित्रीकृत,
परमतीर्थ, जिसमें जगह-जगह तपश्चरण-परायण महर्षिगणोंके लिये
कन्दराएँ (गुफायें) बनी हुई हैं, ऐसा 'श्रीकुन्द' नाम पर्वत (यहाँ लेख
खतम हो जाता है ।)

[EC, X, Chik-ballapur tl., no. 29.]

११९

बेलवत्ते—कन्नड़ ।

विना काल-निर्देशका (संभवतः लगभग ७५० ई०)

[बेलवत्ते-मैसूर तालुकमें, बसवेश्वर मन्दिरके पश्चिमकी ओर]

नेरैयर्दि एर्दनु मुने.....ळलियु प्रभिन्न-वाग्वि बिल्लोरु गुरि.....

१ प्रारम्भके शब्द 'स्वस्ति' को यहाँ अन्तमें लगा देनेसे यह लेख संभाव्य-
रूपसे पूर्ण समझा जा सकता है, क्योंकि 'स्वस्ति'के योगमें चतुर्थी विभक्ति होती
है, जो यहाँ है ।

हुं एल्लु दवे तम्म क्षेमकिरदल्लि-मेच्चिर ताव्वदु परत्रे यपुदेवदेरू महा-
 प्रभु-गोवपय्यन् इन्त् इव्वदु समाधियोळे मुडिपि ताव्विदन्नितमरेन्द्र-
 भोगम् ॥ पदेदोम् श्री-पुरुषय्यल् आम्मु-मोदलोल् कल्लनाडन् अन्दों
 वळेक् एदेयोल् अकुडु भूतिमूतुगानो दोत धाण वीक्षे सळे पडेदे....
 पितृ-कलत्र-मित्र-जनमं काव्यान्य ताव्वद् अप्पोडी-नुडियल् वेळुमे पेम्पन्
 ओप्प गुणते तोळमिक्किव्वद गोपय्यनम् ॥

[महाप्रभु गोवपय्यको श्रीपुरुषकी सरफसे भूमि-दान मिला था और
 वे (गो. प.) समाधिमरणपूर्वक मरे थे ।]

[EC, III, Mysore tl., no. 6]

१२०

देवलापुर—कन्नड़ ।

विना कालनिर्देशका (संभवतः लगभग ७५० ई०)

[देवलापुर (कूडनहल्लि तालुका), मारीगुडीके पूर्वमें]

स्वस्ति श्रीपुरुष-महा.....पृथुवी-राज्यकेये अरट्टि.....रम्मगन्दिर्
 सिंगं दीक्षे वीळ्ळुदु अरट्टि-तीर् अडल्लरद गोड्डे मडिओडे-यम्बर
 आव्विकय

(पृष्ठभागपर)

नोक्कन्न-ओडे आगदीकड.....कोट्ट नेल तेनेन्धक काळेर्रकु साक्षी
 कुडल्ल पोड्डुलरं एल्लमडियरं एल्लिरियरं मदुगरं कागव्वरं साक्षि आग
 कोट्टदु आळ् आळ् किडिशिदोन वारणासिया शासिर-कविले शासिर-
 पार्वर कोन्द कोले आक्का कोडिशिदोनु.....कडुवेडिळोनुडि तेन्ने...
 त्रिद स्वचोनु....अरट्टिग तळर कुडल्लर आव्वत्ति

[जिस समय इस पृथ्वीपर श्री-पुरुष महाराज राज्य कर रहे थे;—
अरट्टि.....के पुत्र सिंगम् के (जिन्) दीक्षा लेनेके बाद, (उसकी मां)
अरट्टितिने कुडलर् किलेके मडि-ओडेके द्वारा शासित प्रदेशमें भूमिदान
किया ।]

[EC, III, Mysore tl., no. 25.]

१२१

देवरहल्लि—संस्कृत तथा कन्नड ।

शक सं० ६९८=७७६ ई०

[देवरहल्लि (देवलापुर प्रदेश)में, पटेल कृष्णय्यके ताम्रपत्रोंपर]

(Ib) स्वस्ति जितं भगवता गतघनगगनामेन पद्मनामेन श्रीम-
जाह्नवेयकुलामलव्योमावभासनभास्करः स्वखड्गप्रहारखण्डितमहाशिला-
स्तम्भलब्धव्रतपराक्रमो दारुणारिगणविदारणोपलब्धव्रणविभूषणभूषितः
काण्वायन-सगोत्रः श्रीमत्कोङ्गणिवर्मधर्ममहाधिराजः तस्य पुत्रः
पितुर्न्नागतगुणयुक्तो विद्याविनयविहितवृत्तिः सम्यक्प्रजापालनमात्राधि-
गतराज्यप्रयोजनो विद्वत्कविकाञ्चननिकषोपलभूतो नीतिशास्त्रस्य वक्तृ-प्रयो-
क्तृकुशलो दत्तकसूत्रवृत्तेः प्रणेता श्रीमान् माधवमहाधिराजः तत्पुत्रः
पितृपंतामहगुणयुक्तोऽनेकचातुर्दन्तयुद्धावाप्तचतुरुदधिसलिलास्त्रादितयशः
श्रीमद्धरिवर्ममहाधिराजः तस्य पुत्रो द्विजगुरुदेवतापूजनपरो
(IIa) नारायणचरणानुध्यातः श्रीमान् विष्णुगोपमहाधिराजः
तत्पुत्रः त्र्यम्बकचरणाम्भोरुहरजःपवित्रीकृतोत्तमाङ्गः स्वभुजबलपराक्रम-
क्रयक्रीतराज्यः कलियुगबलपङ्कावसन्नधर्मवृषोद्धरणनित्यसन्नद्धः श्रीमान्
माधवमहाधिराजः तत्पुत्रः श्रीमत्कदम्बकुलगगनगभस्तिमालिनः
कृष्णवर्ममहाधिराजस्य प्रियभागिनेयो विद्याविनयातिशयपरिपूरिता-
न्तरात्मा निरखग्रहप्रधानशौर्यो विद्वस्तु ? (विद्वत्सु) प्रथमगण्यः श्रीमान्

कोङ्गणिमहाधिराजः अविनीतनामा तत्पुत्रो विजृम्भमाणशक्तित्रयः
अन्दरि-आलत्तूर-प्पोरुळरै-पेल्लनगराधनेकसमरमुखमखड्डुतप्रहतशूर-
 पुरुषपशूपहारविघ्नसविहस्तीकृतकृतान्ताग्निमुखः किरातार्जुनीयपञ्चदश-
 सर्ग- (IIb) टीकाकारो **दुर्विनीतनामधेयः** तस्य पुत्रो दुर्दा-
 न्तविमर्दविमृदितविश्वम्भराधिपमौलिमालामकरन्दपुञ्जपिञ्जरीक्रियमाणचरण-
 युगलनलिनो **मुष्करनामधेयः** तस्य पुत्रश्चर्तुर्दशविद्यास्थानाधिगत-
 विमलमतिः विशेषतोऽनवशेषस्य नीतिशास्त्रस्य वक्तृप्रयोक्तृकुशलो रिपुति-
 मिरनिकरनिराकरणोदयभास्करः **श्रीविक्रमप्रथितनामधेयः** तस्य पुत्रः
 अनेकसमरसम्पादितविजृम्भितद्विरदरदनकुलिशाघात - व्रणसंरुद्धभास्वद्वि-
 जयलक्षणलक्ष्मीकृतविशालवक्षस्थलः समधिगतसकलशास्त्रार्थतत्त्वसमा-
 राधितत्रिवर्गो निरवद्यचरितर् प्रतिदिनमभिवर्द्धमानप्रभावो **भूविक्रम-**
नामधेयः

अपि च—

नानाहेतिप्रहारप्रविघटितभटोरष्कवाटोन्थितास्त्र-
 धारास्वाद-प्र(IIIa) मत्तद्विपशतचरणक्षोदसम्मर्दभीमे ।
 संग्रामे **पल्लवेन्द्रं** नरपतिमजयद्यो **विळन्दा-भिधाने**
राज-श्रीवल्लभाख्यस्समरशतजयावाप्तलक्ष्मीविलासः ॥
 तस्यानुजो नतनरेन्द्रकिरीटकोटि-
 रत्नार्कदीधितिविराजितपादपद्मः ।
 लक्ष्म्या स्वयम्भृतपतिर्नवकामनामा
 शिष्टप्रियोऽरिगणदारणगीतकीर्तिः ॥

तस्य **कोङ्गणिमहाराजस्य शिवमारा**परनामधेयस्य पौत्रः सम-
 वनतसमस्तसामन्तमुकुटतटघटितबहलरत्नविलसदमरधनुषखण्डमण्डितच-

रणनखमण्डलो नारायण[चरण]निहितभक्तिः शूरपुरुषतुरगनरवारणघटासं-
घट्टदारुणसमरशिरसि निहितात्मकोपो भीमकोपः प्रकटरतिसमयसमनु-
वर्त्तनचतुरयुवतिजनलोकधूर्तोऽलोकधूर्तः सुदुर्द्धरानेकयुद्धमूर्धलब्धविजय-
सम्पद हितगजघ्न (IIIb) टाकेसरी राजकेसरी । अपि च ।

यो गङ्गान्वयनिर्मलाम्बरनलव्याभासनप्रोल्लसन-
मार्त्तण्डोऽरिभयङ्करः शुभकरस्सन्मार्गरक्षाकरः ।
सौराज्यं समुपेत्य राज्यसमितौ राजन् गुणैरुत्तमै-
राज-श्रीपुरुषश्चिरं विजयते राजन्य-चूडामणिः ॥
कामो रामासु चापे दशरथतनयो विक्रमे जामदग्न्यः
प्राज्यैश्वर्ये बलारिर्बहुमहसि रविस्व-प्रभुत्वे धनेशः ।
भूयो विख्यातशक्तिस्फुटतरमखिलं प्राणभाजं विधाता
धात्रा सृष्टः प्रजानां पित(पति)रिति कवयो यं प्रशंसन्ति नित्यं ॥

तेन प्रतिदिनप्रवृत्तमहादानजनितपुण्याहवोपमुखरितमन्दिरोदरेण
श्रीपुरुषप्रथमनामधेयेन पृथुवीकोङ्गणिमहाराजेन अष्टानवत्युत्तरे-
[७] पदच्छलेषु शक्रवर्षेष्वतीतेष्वात्मनः प्रवर्द्धमानविजयैश्वर्ये
संवत्सरे पञ्चाशत्तमे प्रवर्त्तमाने मान्यपुरमधिव-(IVa) सति
विजयस्कन्धावारे श्रीमूल-मूलगणाभिनिन्दितनन्दिसङ्गान्वये एरेगित्तू-
र्नाम्नि गणे पुलिकल्गच्छे स्वच्छतरगुणकिरण[प्रततिप्रह्लादितसकललोकेः
चन्द्र इवापरः चन्द्रनन्दीनाम गुरुरासीत् तस्य शिष्यस्समस्तविबुधलो-
कपरिरक्षणक्षमात्मशक्तिः परमेश्वरलालनीयमहिमा कुमारवद्वितीयः कुमार-
ण(न)न्दी नाम मुनिपतिरभवत् तस्यान्तेवासी समधिगतसकलतत्त्वार्थ-
समर्थितबुधसार्थसम्पत्सम्पादितकीर्तिः कीर्त्त(र्त्ति)नन्दाचार्यो नाम
महामुनिस्समजनि तस्य प्रियशिष्यः शिष्यजनकमलाकरप्रबोधनकः

मिथ्याज्ञानसन्ततसन्तमससन्तानान्तकसद्धर्मव्योभावभासनभास्करः **विम-**
लचन्द्राचार्यस्समुदपादि तस्य (IV b) महर्षेर्द्धम्मोपदेशनया
 श्रीमद्भाणकुलकलः सर्व्वतपमहानन्दीप्रवाहः महादण्डमण्डलाप्रखण्डितारि-
 मण्डलद्रुमपण्डो दुण्डुप्रथमनामधेयो **नीर्गुन्द**युवराजो जज्ञे तस्य प्रियात्मजः
 आत्मजनितनयविशेषनिःशेषीकृतरिपुलोकः लोकहितमधुरमनोहरचरितः
 चरितात्थत्रिकरणप्रवृत्तिः **परमगूळ**प्रथमनामधेयश्रीपृथुवीनीर्गुन्दराजो-
 ऽजायत पल्लवाधिराजप्रियात्मजायां सगरकुलतिलकात् **मरुवर्म**णो
 जाता **कुन्दाक्षि**नामधेया भर्तृभवन आबभूव भार्य्या तया सततप्रवर्तित-
 धर्मकार्य्या निर्मिताय **श्रीपुरो**त्तरदिशमलङ्कुर्वते **लोकतिलक**नाम्ने
जिनभवनाय खण्डस्फुटितनवसंस्कारदेवपूजादानधर्मप्रवर्त्तनात्थं तस्यैव
 पृ (Va) **थिवीनीर्गुन्दराज**स्य विज्ञापनया महाराजाधिराजपरमेश्वरश्री-
 जसहितदेवेन नीर्गुन्दविषयान्तर्पति **पोन्नळ्ळि**नामग्रामस्सर्व्वपरिहारोपेतो
 दत्तः तस्य सीमान्तराणि पूर्व्वस्यां दिशि नोल्लिबेळदा बेळगल्-मोर्गेदि पूर्व्व-
 दक्षिणस्यां दिशि पण्यङ्गेरी दक्षिणस्यां दिशि बेळगल्लिगेर्रेया ओळगेर्रेया
 पल्लदा कूडळ् दक्षिणपश्चिमायान्दिशि जैदरा केय्या बेळगल्-मोर्गेडु पश्चि-
 मायान्दिशि पोङ्गेवि ताल्तुवायराकेरी पश्चिमोत्तरस्यां दिशि पुणुसेया
 गोडेगाला कल्लुकुप्पे उत्तरस्यां दिशि सामगेरेया पोल्लदा पेम्मेरिक्कु उत्तर-
 पूर्व्वस्यां दिशि कळम्बेत्ति-गट्टु इमान्यन्यानि क्षेत्रान्तराणि दत्तानि दण्डुम-
 मुद्रदा वयल्लुर् किर्रदारीमेगे **पदिर्कण्डुगं** मण्णं **पळेया एरेनल्लूरा**
 ऊर्प्पालु ओर्कण्डुगं **श्रीवुरदा दु** (Vb) **ण्डुगामुण्डरा** तोण्डदा पडु-
 वायोन्दुतोण्ट श्रीवुरदा वयल्लुर् कर्ममर्गट्टिनल्लि इर्कण्डुगं कळनि पेर्गेर्रेया
 केळगे आर्हगण्डुगमेरे पुलिगेर्रेया कोयिल्लगोडा एडे इर्पत्तुगण्डुगं ब्बेडे
 आदुवु श्रीवुरदा बडगण पडुवण कोणुळ्ळण् **देवङ्गेरि** मदमने ओन्दं

मूवत्ता-ओन्दु मनेय मनेताणमस्य दानसाक्षिणः अष्टादश प्रकृतयः ॥
(VIa) अस्य दानस्य साक्षिणः षण्णवतिसहस्रविषयप्रकृतयः योऽस्या-
पहर्त्ता लोभात् मोहात् प्रमादेन वा स पञ्चभिर्महद्भिः पातकैस्संयुक्तो
भवति यो रक्षति स पुण्यभाग्भवति अपि चात्र मनु-गीताः श्लोकाः

स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत् वसुन्धराम् ।
षष्टिं वर्षसहस्राणि विष्टायां जायते कृमिः ॥
स्वं दातुं सुमहच्छ्रव्यं दुःखमन्यस्य पालनम् ।
दानं वा पालनं वेति दानाच्छ्रेयोनुपालनम् ॥
बहुभिर्व्यसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः ।
यस्य यस्य यदा भूमिः तस्य तस्य तदा फलम् ॥
देवस्त्वं तु विषं श्वरं न विषं विपमुच्यते ।
विपमेकाकिनं हन्ति देवस्त्वं पुत्र-पौत्रकम् ॥

सर्वकलाधारभूतचित्रकलाभिज्ञेन विश्वकर्म्मचार्य्येणोदं शासनं
लिखितं चतुष्कण्डुकग्रीहिद्वीजावापमात्रं द्विकण्डुककङ्कुक्षेत्रं तदपि ब्रह्म-
देयमिव रक्षणीयम् ॥

[इस लेखमें सर्वप्रथम गङ्गनरेशोंकी राजपरम्परा बताई गई है । वह
मित्र भाँति थीः—

१ काण्वायनसगोत्रीय कोङ्कणिवर्म्म-धर्म्म-महाराजाधिराज ।

इनके पुत्र—

२ माधव-महाधिराज; ये दत्तकसूत्र-वृत्ति (टीका) के प्रणेता थे ।

इनके पुत्र—

३ हरिवर्म्म-महाधिराज ।

इनके पुत्र—

४ बिष्णुगोप-महाधिराज ।

इनके पुत्र—

शि० ८

५ माधव-महाधिराज । इनके पुत्र—

६ कदम्बकुलके सूर्य कृष्णवर्म्म महाधिराजकी बहिनके पुत्र अविनीत नामके कोङ्कणि-महाधिराज थे । इनके पुत्र—

७ दुर्बिनीत थे । इन्होंने अन्दरि, आलत्तूर, पोरुळर्रे, पेल्लनगर तथा और भी अन्य जगहोंके युद्धोंको जीता था । ये किरातार्जुनीय संस्कृत काव्यके १५ सगों तकके टीकाकार भी थे । इनके पुत्र—

८ सुष्कर थे । इनके पुत्र—

९ श्रीविक्रम । इनके पुत्र—

१० भूविक्रम हुए, जिन्होंने विलन्द नामक स्थानमें पल्लवेन्द्र नरपति-को जीता था । सौ युद्धोंमें जीतनेसे प्राप्त लक्ष्मीका विलास (भोग) करनेसे इनको 'राज-श्रीवल्लभ' भी कहते थे । इनके अनुजका नाम नवकाम था ।

इसके पश्चात्— उन कोङ्कणिमहाराजका जिनका दूसरा नाम 'शिव-मार' था पौत्र

११ राज-श्रीपुरुष हुआ । इन्हींका द्वितीय नाम 'पृथिवीकोङ्कणिमहा-राज' था । ये जब, शक सं० के ६९८ वर्ष बीत जाने पर और अपने राज्यका जब ५० वीं वर्ष चालू था, अपने विजयस्कन्धावार मान्यपुरमें निवास कर रहे थे, तबः—

मूल मूलसंघमेंसे निकले हुए नन्दिसंघके परेगिसूर-गणके पुलिकल्-गच्छमें चन्द्रनन्दि गुरु हुए । उनके शिष्य कुमारनन्दि मुनिपति, उनके शिष्य कीर्त्तिनन्दाचार्य, उनके शिष्य विमलचन्द्रा-चार्य हुए ।

१२ इन महर्षिके धर्मोपदेशसे निर्गुन्द युवराज, जिनका पहला नाम 'दुण्डु' था और जो 'बाणकुल' के नाशक प्रतिबुद्ध हुए थे । इनके पुत्र—

१३ पृथिवी-निर्गुन्द-राज हुए । इनका पहला नाम परमगूल था । इनकी पत्नीका नाम कुन्दाग्नि था । यह सगरकुल-तिलक मरुवर्म्माकी पुत्री थीं और इनकी माता पल्लवाधिराजकी प्रियपुत्री थीं जो मरुवर्म्माकी पत्नी थीं । इसने (कुन्दाग्निने) श्रीपुरकी उत्तर दिशामें 'लोकतिलक' नामका

जिनमन्दिर बनवाया था। उसकी मरम्मत, नई वृद्धि, देवपूजा, दानधर्म आदिकी प्रवृत्तिके लिये पृथिवी-निर्गुन्द-राजके कहनेसे महाराजाधिराज परमेश्वर श्री-जसहित-देवने निर्गुन्द देशमें आनेवाले 'पोखलि' ग्रामका दान, सर्व करों और बाधाओंसे मुक्त करके दिया।

इसके बाद इस लेखमें इस गाँवकी आठ दिशाओंकी सीमा दी हुई है। तथा अन्य क्या-क्या क्षेत्र दानमें दिये गये थे उनकी सूची है। दानके साक्षी कौन-कौन थे, इसका उल्लेख है। तत्पश्चात् मनुके वे प्रसिद्ध चार श्लोक हैं जो बहुत-से शिलालेखोंके अन्तमें पाये जाते हैं। सबसे अन्तमें, इस लेख (शासन) को उरकीर्ण करनेवाले शिल्लीने अपना नाम 'बिन्ध-कर्म्मचार्य' दिया है तथा उसी समय उसको भी कुछ भूमिदान किया गया था उसका भी इसमें उल्लेख है।]

[EC, IV, Nagamangala tl. n° 85]

१२२

मण्णे—संस्कृत।

शकवर्ष ७१९=७९७ ई०

[मण्णेमें, शीलवन्त रुद्रव्यके अधिकारके ताम्रपत्रों पर]

(१ ब) स्वस्ति जितं भगवता गत-घन-गगनाभेन पद्मनाभेन श्रीमज्जाह्वेय-कुलामल-व्योमावभासन-भास्करः खखङ्गैकप्रहार-खण्डित-महा-शिला-स्तम्भ-लब्ध-बल-पराक्रमो दारुणारि-गणविदारणोपलब्ध-व्रण-विभूषण-भूषितः काण्वायन-सगोत्रः श्रीमत्-कोङ्कणि-वर्म-धर्म-महा-धिराजः, तस्य पुत्रः पितुर्न्वागत-गुण-युक्तो विद्या-विनय-विहित-वृत्तः (त्तिः) सम्यक्-प्रजा-पालन-मात्राधिगत-राज्य-प्रयोजनो विद्वत्कवि-काञ्चन-निक-षोपल-भूतो नीतिशालस्य वक्तृ-प्रयोक्तृ-कुशलो दत्तक-सूत्र-वृत्तेः प्रणेता श्रीमान् माधव-महाधिराजः, तत्पुत्रः पितृ-पितामह-गुण-युक्तोऽनेकचा-तुर-दन्त-युद्धावाप्त-चतुरुदधि-सलिलाखादितयशःश्रीमद्भरिवर्म-महा-धिराजः, तत्पुत्रो द्विज-गुरु-देवता-पूजन-परो नारायण-चरणानुध्यातः

श्रीमान् विष्णुगोपमहाधिराजः, तत्पुत्रस् त्र्यम्बक-चरणाम्भोरुह-रजः-
 पवित्रीकृतोत्तमाङ्गः ख-भुज-बल-पराक्रम-क्रय-(२ अ)कृ(क्री)तराज्यः कलि-
 युग-बल-पङ्कावसन्न-धर्म-वृषोद्धरण-नित्य-सन्नद्धः श्रीमान् माधव-महाधि-
 राजः, तत्पुत्र [श] श्रीमत्-कदम्ब-कुल-गगन-गभस्तिमालिनः कृष्णव-
 र्म-महाधिराजस्य प्रिय-भागिनियो विद्या-विनयातिशय-परिपूरितान्तरात्मा
 निरवग्रह-प्रधान-शौर्यो विद्वत्सु प्रथम-गण्यः श्रीमान् कोङ्कणि-महाधि-
 राजः अविनीत-नामा, तत्पुत्रो विजृम्भमाणशक्ति-त्रयः अन्दरि-आल-
 च्चूर-प्पोरुळरे-पेल्लनगराद्यनेकसमर-मुख-मख-हुत-प्रहत-शूर-पुरुष-पशूप-
 हार-विघस-विहस्तीकृत-कृतान्ताग्रि-मुखः किरातार्जुनीय-पञ्च-दश-सर्ग-
 टीकाकारो दुर्विनीत-नामधेयः, तस्य पुत्रो दुर्दान्त-विमर्द-विमृदित-
 विश्वम्भराधिप-मौलि-माला-मकरन्द-पुञ्ज-पिञ्जरीक्रियमाण-चरण-युगलन-
 लिनो मुष्कर-नामधेयः, तस्य पुत्रश्चतुर्दश-विद्या-स्थानाधिगत-विमल-मति-
 विशेषतोऽनवशेषस्य नीति-शास्त्रस्य वक्त्र (कृ)-प्रयोक्तृ-कुशलो रिपु-
 तिमिर-निकर-निराक[र]णोदय-भास्करः श्रीविक्रम-प्रथित-ना[म]धेयः,
 तस्य पुत्रः अनेक-समर-सम्पादित-विजृ (२ ब) भिमत-द्विरद-रदन-
 कुलिशाभिघात-वर्ण(व्रण)संरूढ-भास्वद्विजय-लक्षण-लक्ष्मीकृत-विशाल-व-
 क्षस्थलः समधिगत-सकल-शास्त्रार्थ-तत्त्वस्समाराधित-त्रिवर्गो निरवद्य-
 चरितः[]प्रतिदिनमभिवर्द्धमान-प्रभावो भूविक्रमनामधेयः

अपि च

नाना-हेति-प्रहार-प्रविघटित-भटोरःकवाटोत्थितासृग्-
 धारास्वाद-ग्रमत्त-द्विप-शतचरण-क्षोद-सम्मर्द-मीमे ।

सङ्गमे पल्लवेन्द्रं नरपतिमजयद् यो विळ्न्दाभिधाने
 राजा श्रीवल्लभाख्यस्समर-शत-जयावाप्त-लक्ष्मी-विलासः ॥

तस्यानुजो नत-नरेन्द्र-किरीट-कोटि-
रत्नार्क-दीधिति-विराजित-पाद-पद्मः ।
लक्ष्म्या स्वयम्भृत-पतिर्भव-काम-नामा
शिष्ट-प्रियोऽरि-गण-द्वारण-गीत-कीर्त्तिः ॥

तस्य कोङ्कणि-महाराजस्य शिवमारापर-नामधेयस्य पौत्रः समवन-
तसमस्त-सामन्त-मुकुट-तट-घटित-बहल-रत्न-विलसदमर-धनुष-खण्ड-म-
ण्डितचरण-नख-मण्डलो नारायण-चरण-निहित-भक्ति[:]:शूर-पुरुष-तुरग-
नरवारण-घटा-संघट्ट-दारुण-समर-शिरसि भी(निहि)तात्म-कोपो भीम-कोपः
प्रकटरति-समय-समनुवर्तन-चतुर-युवति-जन-लोक-धूर्त्तोऽलोक-धूर्त्तः सुदु-
र्धरानेक-युद्ध-मूर्द्ध-लब्ध-विजय-सम्पदहित-गज-घटा-केसरी राज-केसरी ।

अपि च

यो गङ्गान्वय-निर्मलाम्बर-तल-व्याभासन-प्रोल्लसन्-
मार्त्तण्डोऽरि-भयंकरश्शुभकरस्सन्मार्गी(३ अ) रक्षा-करः ।
सौराज्यं समुपेत्य राजसमितौ राजद(न्)-गुणैरुत्तमै
राजा श्रीपुरुषश्चिरं विजयते राजन्य-चूडामणिः ॥
कामो रामासु चापे दशरथ-तनयो विक्रमे जामदग्न्यः
प्राज्यैश्चर्य्ये बलारिर्वा(व)हु-महसि रविः स्व-प्र[भुत्]वे धनेशः ।
भूयो विख्यात-शक्तिस्सुहृतरमखिलप्राण-भाजं विधाता
धात्रा सृष्टः प्रजानां पतिरिति कवयो यं प्रशंसन्ति नित्यम् ॥

स तु प्रतिदिन-प्रवृत्त-महादान-जनिन-पुण्याह-घोष-मुखरित-मन्दि-
रोदरः श्रीपु[रु]ष-प्रथम-नामधेयः पृथिवी-कोङ्कणि-[म]हाधिराजः,
तत्पुत्रः प्रताप-विनमित-सकल-महीपाल-मौलि-माला-ललित-चरणारविन्द-
युगलो निज-भुज-विराजि-निशित-खड्ग-पट्ट-समाकृष्टानिष्ट धरावल्लभ-

जय-श्री-समालिङ्गितस्समर-मुख-सम्भुखागत-रिपु-नृपति-गज-घटा-कुम्भ-
निर्भेदनोच्चलित-रक्त-च्छटा-पात-पाटलित-निज-भुज-स्तम्भः आ-कर्ण-
समाकृष्ट-चाप-चक्र-विनिर्मुक्त-नाराच-परम्परा-पात-पातिताराति-मण्डलो
बहु-समर-समार्जित-जय-पताका-शत-[श]वलित-नभस्-तलः

यस्मिन् प्रयातवति कोप-वशं महीशे

यान्ति क्षणादहित-भूमिभुजो रणाग्रे ।

अन्त्रावली-वलय-मीषणमन्तक (३ ब) स्य

वक्रान्तरं क्षतज-कर्दम-दुर्निरीक्ष्यम् ॥

स तु शिशिरकर-निर्मल-निज-यशो-राशि-विशदीकृत-दशाशा-चक्र[ः]
समस्त-चक्रवर्ति-लक्षणोपलक्षितो निरपेक्षा-परोपकार-सम्पादनैक-व्यसनः
प्रवर्तित-न्याय-बल-समुन्मूलित-कलि-काल-विलसितो निपुण-नीति-प्रयो-
गापहसित-बृहस्पतिः कु-नृपति-कदम्बक-कपाट-कोटि-विघडित-धर्मावले
.....न.....शिलास्तम्भायमान-चरितः सतत-प्रवृत्त-दान-सन्तर्पित-द्विजा-
ति-लोकः ।

प्रोन्मूलित-विकारेण सर्व-लोकोपकारिणा ।

यस्य दानेन दिङ्-नाग-दान-धाराप्यधःकृता ॥

अपि च

जटानां संवातैरिह भुवि कृतोऽनून-विपदाम्

कलानामाधारो बुध-जन-हितः पालन-परः ।

गुणानां शुद्धानामपि नियतमुत्पत्ति-भवनम्

नृपाणां नेता.....कविरिति मनः काव्य-कुशलः ॥

दुर्व्व(दुरव)गाह-भणिसुत-मत-पारावार-पारदृष्टा प्रमाण-शास्त्र-शाण-
निशातीकृत-धीर-धिषणः सामज-तन्त्र-तत्त्वावबोध-विमदीकृत-भु(बु)धो

हस्तिनी-(व)वक्रोद्भव-यति-प्रवर-मताप्रबोधन-गमीर-मर्तिर्विद्वान्-मति-
वितति-विकल्प.....विचार-विचक्षणोऽङ्गीकृत]-तुरङ्गमागम-प्रयोग-
परिणतो धनु-र्विद्याम्भोरुह-वन-गहन-विकासित-विदग्ध-म(४ अ)रीचि-
माली निज-निर्मित-गज-मत-कल्पनानल्प-चेता विराजित-सेतु-बन्धनो
नन्दित-विपश्चिन्मण्डलस्सकल-नाटक-विषय-सन्धि-सन्ध्यङ्गादि-योजना-
चतुरो निरुपम-निज-रूप-निर्जित-मकरध्वजो मकरध्वज-गुरु-चरण-
सरोज-विनमन-पवित्री-कृतोत्तमाङ्गो मुदुकुन्द-नाम-ग्रामोपविष्ट-राष्ट्रकूट-
चालुक्य-हैहय-प्रमुख-प्रवीर-सनाथ-वल्लभ-सैन्य-विजय-विख्यापित-
प्रभावः ।

अपि च ।

घोराश्वीयं समन्तात् प्रबलमुपगत-व्याप्त-दिक्-चक्रवालम्
निर्जित्यनेक-संख्यैर्निर्जित-निज-भुजोन्मुक्त-नाराच-जालैः ।
देवो यः प्राज्यन्तेजस् तिमिरमिव महत्-तीव्रभानुर्मयूखैर्
हुर्वारोदार-पातैरुदयमभिलपन् खजिवेशं विवेश ॥

स तु हरिरिव सतत-सम्भावित-द्विज-पतिः सहस्रकिरण इव प्रति-
दिवसोचितोदयः भुजङ्गलोक इव विगत-भयो (१) आत्माकर इवास्पृष्ट-
कलङ्को दुर्योधनोऽप्यभिनन्दितार्जुन-गुणो वाहिनी-पतिरप्यजडाशयः
शीतकरोऽप्यनालिङ्गित-मलिन-भावो राष्ट्रकूट-पल्लवान्वय-तिलकाभ्यां मूर्द्धा-
भिषिक्त-गोविन्द-राज-नन्दि-वर्माभिधेयाभ्यां समनुष्ठित-राज्याभिषेका-
भ्यां निज-कर-घटित-पट्ट-विभूषित-ललाट-पट्टो विख्यात]-विमल-गङ्गान्वय-
नभस्-तल-गभस्तिमाली कोङ्कुणि-महाराजाधिराज-परमेश्वर-श्री-शिव-
मार-देवः (४ ब) ॥ तत्पुत्रो निज-भुज-निहित-निशात-हेति-पात-
पातिताराति-वर्गो वर्ग-द्वयोपार्जनार्जितोर्जित-यशस्सन्तान-सन्तर्पित-स-

मस्त-जन-हृदयः प्रैभवत्कलि-काल.....विवर्द्धित-कलङ्कि.....लाय.....कल्प-
कल्याण-चरितः स्ववंश-विशद-वियदंशुमाली समस्त-नीति-शास्त्र-प्रयोग-
प्रवीणाप्रगण्यस्तुरङ्गमारोहण-नैपुण्य-प्रीणित-क्षोणीपति-सुत-सहस्र-लब्ध-सा-
म-ध्वनिरनेक-सङ्गर-रङ्ग-सङ्गमाङ्गीकृत-जय-श्री-समालिङ्गित-भुजङ्ग-भोगाभ-
मीम-भुज-दण्डः

यस्मिन् शासति सत्य-धाम्नि विमले राजन्वती मेदिनी
यस्मि.....र्यमुपेत्य वृंहित-बलो धर्मोऽधिकं जृम्भते ।
यस्यैवाभय-दायिनोऽतिदयिता दोशशालिनश्शाश्वती
लक्ष्मीर्यत्र यशो-निधौ पतिमती जाता जगद्बल्लभा ॥

स तु पितामह इवानेक-राजहंस-संसेवितः पद्मावासश्च मधुमथन इव
त्रिलोकाधिक-विक्रमाक्षित-त्रलि-रिपुरहीन-स्थितिरिवश्च धूर्जटिरिवाविनश्च-
रेश्वर-भावो वीर-भद्रश्च कार्तिकेय इव सकल-जगदुदीरित-स्वामि-शब्दशक्ति-
सम्पन्नश्च महा-मेरुरिव स्व-महिमाधःकृत-महीभृन्मण्डलो महासत्त्वश्च ।

अपि च ।

मन्वादि-(षोड) (५ अ) षोडश-महीश-गुणानुरागो
यं प्राप्य विस्मृति-पदं ज [ग] तो जगाम ।
यस्य प्रतापदहनोऽहित-बुद्धि-वाद्वाय्
और्वायते नरपतेरतिदूरतोऽपि ॥

यश्च समर-शिरसि.....कलत्रे च निज-जने मित्रायते रिपु-तिमिर-नि-
चये च अनेक-प्रकारण-रणकार्दितान्तःकरणानां शरणायते सम्पदां च
अतिप्रभूत-मति-निकेत-तमस्-नति-तिरस्कृतौ प्रबोतायते.....खिल-जगद-
नुल्लंघिताज्ञा-सम्पत्तौ च सकल-कुवलय-लोचनानन्दकरतायां द्विजेशायते
हरि-वाहन-निहित-चित्तत्वे च ।

अपि च ।

यस्यैकस्यापि सर्वं जगदपि स-रूपो नाग्रतस् स्थातुमीष्टे
 दिःसा-सम्भूत-बुद्धेरपि नव निधयो यस्य नालं नृपस्य ।
 जिह्वे तीवाभिमानात् कपट-विजयिनां यद्-धृतेर्नाकधाम्नाम्
 [रा] ज्ञां विज्ञातकीर्ति [स्स] सकल-जगतां नन्दनो **मारसिंहः** ॥
 यश्च सतत-सम्पादित-कमलानन्दोऽप्यप्रचण्डकरः पुण्य-जन-सत्त्व-
 समेतोऽप्यनृशंस-मानसः मत्त-मातङ्ग-स्कन्ध-लालितोऽप्यति-शुचि-स्वभावः
 प्रिय-धनुरप्यमार्गणः समनुष्ठित-दण्ड-नीतिरप्यदण्डक्रम-गतिः ॥

अपि च ।

धूमरीकुरुते यस्य चरणाभोज-जं रजः ।
 प्रणतानन्त-सामन्त-चूडामणि-मधुव्रजम् ॥

तेन **लो** (५ व) **क-त्रिनेत्रा** पर-नामधेयेन समधिगत-यौवराज्य-
 पदेन भगवत्सहस्र-किरण-चरण-नलिन-षट्चरणायमान-मानसेन ॥ त-
 स्मिंश्च प्रसाधिताशेष-सामन्त-.....अखण्डं **गङ्ग-मण्डल**मनुशासति
श्रीमारसिंहाभिधाने आसीत् समस्त-सामन्त-सेनाधिपतिः परमार्हतः परम-
 धार्मिकः मन्त्र-प्रभूत्साह-शक्ति-सम्पन्नः **श्रीविजयो** नाम यश्च सहस्रदी-
 धितिरिव तिरोहिताखिल-पर-तेजः पर-तेजः-प्रसरोऽपि असन्तापित-भूतलः
 सुनाशीर इवाखण्डित-सकल-जनाज्ञोऽपि अगोत्र-भेदन-करः गुह इव
 शक्ति-समुत्सारिता-वर्गोऽपि अकृत-बल-भावः शिशिरगभस्तिरिव प्रह्लादनो-
 द्योतनसमर्थोऽपि अदोषाश्रित-विग्रहः वारिराशिरिव अपरिमित-सत्त्व-
 समाश्रयोऽपि अपङ्क-मल-गृहीतः विनतानन्द [न] इव अतिदूर-द [र्श]
 नोऽपि अपिशिताशनः शतक्रतुरिव बुध-गुरु-मित्र-परिवृतोऽपि न [प]
 र-दार-रति-शप्तः झषकेतन इव स्ववशीकृत-सकल-जनोऽपि अग्र (प)

हृत-बलाबलो-तप....यश्च अमृतमयो भृत्यानां सुखमयो मित्राणां सुधामयो
रामाणामुत्साहमयः प्रजानां विनयमयो गुरुणां नयसुख (६ अ)
लद्-वृत्तीनां अप्रणी रसिकानां खद्या काव्य-रचनानां उपदेश नयानां
द्रष्टा स्वामि-कार्याणां विद्वेष्टा कृत-दोषाणां यद्या महा-मखानां परिमार्ष्टा
पापानां प्रष्टा निर्माण-हेतूनां परिकुष्टा श्रितागसाम् ।

अपि च ।

उदन्वानि च गाम्भीर्ये विवस्वानि च तेजसि ।
शशलक्ष्मे च लावण्ये नमस्त्वानि च यो बले ॥
मनोभूरिव सौरूप्ये मन्वानि च सम्पदि ।
सुरमन्त्री च शास्त्रार्थे उशने च यो नये ॥
ग्रामे पुरे नदी-तीरे गिरौ द्वीपे सरोऽन्तिके ।
प्रावर्त्तयत् स्व-कीर्त्याभां योऽनेकं वसतिं प्रभुः ॥
स मान्यनगरे श्रीमान् श्रीविजयोऽकार [य] च्छुभम् ।
जिनेन्द्र-भवनं तुङ्गं निर्मलं स्व-महम्-समम् ॥

तस्य च प्रसाधिताशेष-सामन्त-चन्द्रस्य श्री-मारसिंहस्यानुज्ञया
श्रीविजयो महानुभावः किषु-वेकूर-ग्राममादाय मान्यपुर-विनिर्मिताय
भगवदहंदायतनाय अदादिति तस्य च ग्रामस्य (यहाँ सीमाओंकी
विस्तृत चर्चा आती है) ।

अपि च ।

आसीद(त्)-तोरणाचार्यः कोण्डकुन्दान्वयोद्वयः
स तै [द] द्विष्ये धीमान् शालमलीग्राममाश्रितः ॥
निराकृततमोऽरातिः स्थापयन् सत्पथे जनान् ।
स्वतेजोदयोति-क्षोणिः चण्डार्चचरिव यो बभौ ॥

तस्याभूत् पुष्पनन्दीति शिष्यो विद्वान् गणाग्रणीः ।

तच्छिष्यश्च प्रभाचन्द्रः तस्येयं वसतिः कृता ॥

(३ पंक्तियोंमें दानकी चर्चा है)

इदम् शक-वर्षं एलनूरा पत्तोम्भत्तु वर्षमुं मूषु तिङ्गलुमाषाढ-
शुक्ल-पक्षदा पञ्चमियुत्तराभाद्रपतेमुं सोमवारमुं शासनं निर्मितं ।
अस्य दानस्य साक्षिणः षण्णवति-सहस्र-विषय-प्रकृतयः योऽस्यापहर्त्ता
लोभान्मोहात् प्रमादेन वा स पञ्चभिर्महद्भिः पातकैस्संयुक्तो भवति
यो रक्षति स पुण्यवान् भवति

अपि चात्र मनु-गीताः श्लोकाः

स्वदत्तां पर-दत्तां वा यो हरेत् वसुंधराम् ।

(७ अ) पट्टि-वर्ष-सहस्राणि विष्टा [यां जा] यते कृमिः ।

स्वं दातुं सुमहच्छक्यं दुःखमन्यस्य पालनम् ।

दानं वा पालनं वेति दानाच्छ्रेयोऽनुपालनम् ॥

बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजमिस्सगरादिभिः ।

यस्य यस्य यदा भूमिः तस्य तस्य तदा फलम् ॥

ब्रह्मस्वं तु विषं घोरं न विषं विषमुच्यते ।

विषमेकाकिनं हन्ति देव-स्वं पुत्र-पौत्रकम् ॥

सर्व-कलाधारभूत-चित्र-कलाभिज्ञेय-विश्वकर्म्मचार्य्येणेदं शासनं
लिखितं चतुष्कण्डुक-त्रीहि-बीजावाप-क्षेत्रं द्वि-कण्डुक-कङ्कु-क्षेत्रं तदपि
देव-भोगमिति रक्षणीयम् ॥

[जाह्नवी (गङ्गा)-कुलके स्वच्छ आकाशमें चमकते हुए सूर्य; काण्वा-
यन-सगोत्रके

(१) श्रीमत्-कोङ्कणिवर्म-वर्म-महाधिराज ये ।

(२) उनके पुत्र श्रीमान् माधव-महाधिराज ये ।

(३) उनके पुत्र श्रीमद् हरिवर्म-महाधिराज थे ।

(४) ,, ,, श्रीमान् विष्णुगोप-महाधिराज थे ।

(५) ,, ,, ,, माधव-महाधिराज थे ।

(६) उनके पुत्र, जो कदम्ब-कुलवंशीय कृष्णवर्म-महाधिराजकी प्रिय बहिनके पुत्र थे, अबिनीत नामके श्रीमान् कोङ्कणि-महाधिराज थे ।

(७) उनके पुत्र दुर्विनीत थे । इन्होंने अन्दरि, आलसूर, पोहलणे, पेल्नगर और दूसरे स्थानोंके युद्धोंको जीता था । इन्होंने किराताज्जुनीय के १५ सर्गोंपर टीका की थी ।

(८) इनके पुत्र मुष्कर थे ।

(९) उनके पुत्र श्रीविक्रम थे, वे चौदहों विद्याओंमें पारङ्गत थे ।

(१०) उनके पुत्र भूविक्रम थे । इन्होंने विलन्दकी भवानक लड़ाईमें राजा पल्लवेन्द्रको जीता था, और सौ लड़ाइयोंमें विजय लाभ करनेसे इनको 'राजश्रीवल्लभ' भी कहते थे ।

(११) उनका छोटा भाई नव-काम था ।

(१२) शिवमार-कोङ्कणि महाराजका नाती श्रीपुरुष था, उन्हें पृथिवी-कोङ्कणि-महाधिराज भी कहते थे ।

(१३) उनके पुत्र, प्रसिद्ध गंगवंशके स्वच्छ आकाशके सूर्य, कोङ्कणि-महाराजाधिराज परमेश्वर श्री-शिवमार-देव थे । इनकी बहुत-सी प्रशंसाका वर्णन है ।

(१४) उनके पुत्र, मारसिंह थे ।

जब वे अखण्ड गङ्ग-मण्डलपर राज्य कर रहे थे;—उनका एक श्रीविजय नामका सेनापति था । उसकी प्रशंसा । उसने मान्य-नगरमें एक शुभ, विशाल जिनमन्दिर बनवाया । उसे श्रीमारसिंहसे किपु-वेकूरु गाँव मिला था, वह उसने इसी अर्हत्-मन्दिरको भेंट कर दिया । इस गाँवकी सीमायें ।

शाहमली गाँवमें रहनेवाले, कोण्डकुन्दान्वयके तोरणाचार्य्य थे । उनके शिष्य पञ्चनन्दि थे । उनके शिष्य प्रभावन्द्र थे, जिन्होंने अपना आवास यहीं बना लिया था । जडियके तालाबोंकी नीचेकी जो जमीनें उनको दी गईं थीं उनकी विगत । यह शासन (लेख) शक वर्ष ७१९ के ३ महीने बाद, आषाढ़ शुक्ला पञ्चमी, उत्तरभाद्रपद, सोमवारको निकला था ।

इस दानके साक्षी-९६००० के विद्यमान भफसर (अधिकारी गण) ।
वे ही श्रापात्मक श्लोक ।

विश्वकर्माचार्यने इस शासनको लिखा था । प्रभाचन्द्र देवको दी गई
भूमिकी विगत ।]

[EC, IX, Nelamangala, tl., n° 60]

१२३

मञ्जे—संस्कृत ।

शक ७२४=८०२ ई०

[मञ्जेमें, शानभोग नरहरियप्पके अधिकारके ताम्रपत्रोंपर]

(१ व) स वोऽव्याद् वेधसां धाम यन्नाभि-कमलं कृतम् ।

हरश्च यस्य कान्तेन्दु-कलया कमलकृतम् ॥

भूयोऽभवद् बृहदुरुस्थल-राजमान-

श्री-कौस्तुभायत-करैरुपगूढ-कण्ठः ।

सत्यान्वितो विपुल-बाहु-त्रिनिर्जितारि-

चक्रोऽप्यकृष्ण-चरितो भुवि कृष्ण-राजः ॥

पक्ष-च्छेद-भयाश्रिताखिल-महा-भूभृत्-कुल-भ्राजितात्

दुर्लङ्घ्यादपरंरनेक-विपुल-भ्राजिष्णु-रत्नान्वितात् ।

यश्चालोक्यकुलादनून-विबुधा[.....]श्रया [द्] वारिधेः

लक्ष्मी मन्दरवत् स-लीलमचिरादाकृष्टवान् बल्लभः ॥

तस्याभूत् तनयः प्रता [प]-विसरैराक्रान्त-दिङ्-मण्डलश्च

चण्डांशोस्सदृशोऽप्य-चण्ड-करतःप्रह्लादित-क्षमाधरो ।

धोरो धैर्य्य-धनो विपक्ष-वनिता-वक्त्राम्बुज-श्री-हरो

हारीकृत्य यशो यदीयमनिशं दिङ्-नायिकाभिर्धृतम् ॥

ज्येष्ठोल्लङ्घन-जातयाप्यमलया लक्ष्म्या समेतोऽपि सन्
 योऽभून्निर्मल-मण्डल-स्थिति-युतो दोषाकरो न क्वचित् ।
 कर्णाधिः-कृत-दान-सन्तति- (२ अ) भृतो यस्यान्य-दानाधिकम्
 दानं वीक्ष्य सु-लज्जिता इव दिशां प्रान्ते स्थिता दिग्-गजाः ॥
 अन्यैर्न जातु विजितं गुरु-शक्ति-सारं
 आक्रान्त-भूतलमनन्य-समान-मानम् ।
 येनेह बद्धमवलोक्य चिराय गङ्गान्
 दूरे स्त्र-निग्रह-भियेव कलिः प्रयातः ॥
 एकत्रात्म-बलेन वारिनिधिनाप्यन्यत्र रुद्धा घनान्
 निष्कृष्टासि-भटोद्धतेन विहरद्-ग्राहातिभीमेन च ।
 मातङ्गान् मद-वारिनिर्झर-मुचः प्राप्यानतात् पल्लवात्
 तच्चित्रं मद-लेशमप्यनुदिनं यस्स्पृष्टवान् न क्वचित् ॥
 हेल-स्त्रीकृत-गौड-राज्य-कमलान् चान्तःप्रविश्याचिराद्
 उन्मार्गे मरु-मध्यम-प्रतिबलैर्यो वत्सराजं बलैः ।
 गौडीयं शरदिन्दु-पाद-धवल-चलत्र-द्वयं केवलम्
 तस्मादाहूत-तद्-यशोऽपि ककुभां प्रान्ते स्थितं तत्-क्षणात् ॥
 लब्ध-प्रतिष्ठमचिराय कलिं सुदूरम्
 उत्सार्य शुद्ध-चरितैर्धरणी-नलस्य ।
 कृत्वा पुनः कृत-युग-श्रियमप्यशेषम्
 चित्रं कथं निरुपमः कलि-वल्लभोऽभूत् ॥
 प्रामू- (२ ब) द् धर्म-परात् ततो निरुपमादिन्दुर्थ्यथा वारिधेः
 शुद्धात्मा परमेश्वरोन्नत-शिरस्-संसक्त-पादस्तथा ।
 पद्मानन्दकरः प्रताप-सहितो नित्योदयस्मोन्नतेः
 पूर्ववद्विरिव भानुमानभिमतो गोविन्दराजः सताम् ॥

यस्मिन् सर्व्व-गुणाश्रये क्षितिपतौ श्री-राष्ट्रकूटान्वयो
जाते यादव-वंशवन्मधुरिपावासीद् अलङ्घ्यः परैः ।
दृष्ट्वा सावधयः कृतास्सु-सदृशाः दानेन येनोद्धताः
युक्ताहार-विभूषिताः स्फुटमिति प्रत्यर्थिनोऽप्यर्थिनः ॥
यस्याकारमनानुषं त्रिभुवन-व्यापत्ति-रक्षोचितम्
कृष्णस्यैव निरीक्ष्य यच्छति पदं यद्याधिपत्य भुवः ।
आस्तां तात तवेयमप्रतिहता दत्ता त्वया कण्ठका
किन्त्वज्ञैव मया धृतेति पितरं युक्तं स तत्राम्यधात् ॥
तस्मिन् स्वर्ग-विभूषणाय जनने याते यशश्शेषताम्
एकीभूय समुद्यतान् वसुमती-संहारमाधित्सया ।
वि-च्छायान् सहसा व्यधत् नृपतीनेकोऽपि यो द्वादश
ह्यातानप्यधिक-प्रताप-विसरैस्संवर्त्त (३ अ) कोल्कानिव ॥
येनात्यन्त-दयालुनोऽग्र-निगल-क्लेशादपास्यानतम्
स्वं देशं गमितोऽपि दर्प-विसरद् यः प्रा [.....] कूल्ये स्थितः ।
लीला-भ्रू-कुटिले ललाट-फलके यावच्च नादक्ष्यते
विक्षेपेण विजित्य तावदचिरादाबद्ध-गङ्गः पुनः ॥
सन्धायासि शिलीमुखान् स्व-समयात् बाणासनस्योपरि
प्राप्तं वर्द्धित-बन्धु-जीव-विभवं पद्माभिवृद्ध्यान्वितम् ।
सर्व्वं क्षेत्रमुदीक्ष्य यं शरद्-क्रतुं पर्जन्यवद् गूर्जरो
नष्टः कापि भयात् तथापि समर्थ स्वप्नेऽप्यपश्यन्.....॥
यत्पादानति-मात्र.....क-शरणानालोक्य लक्ष्मी-धिया
दूरान् मालव-नायको नय-परो यत्रातिबद्धाञ्जलिः ।
यो विद्वान् बलिना सहाल्प-बलवान् स्पृह्यो न धत्ते पराम्
नीतेस्सूतिरसौ यदात्म-परयोराधिक्य-सम्बेदनम् ॥

विन्ध्याद्रेः कटके निविष्ट-कटकः श्रुत्वा चौर्य्यन्त्रिजैः
 स्वं देशं समुपागतः ध्रुवमिव ज्ञात्वा घिया प्रेरितः ।
 माराशर्व्व-महीपतिर्भृतमगादप्राप्त-पूर्व्वा (३ ब) परैरु
 व्यस्येच्छामनुकूल[.....]धनैः पाद-प्रणामैरपि ॥
 नीत्वा श्रीभवने घनाघन-घन-व्याप्तां परं प्रावृषम्
 तस्मादागतवान् समं निज-बलैरा-तुङ्गभद्रा-तटम् ।
 तत्रस्थः स्व-करागतं प्रकृतिमिर्निशेषमावृष्टवान्
 विक्षेपैरपि चित्रमानत-रिपुरं जग्राह तं पल्लवात् ॥
 लेखाहार-मुखोदितार्द्ध-वचसा यत्रा.....वेङ्गीश्वरो
 नित्यं किङ्करवद् व्यधादविरतं.....स्म स्वमात्मेच्छया ।
 बाह्यालि-वृत्तिरस्य येन रचिता व्योमावलम्बा रुचम्
 चित्र मौक्तिक-मालिकामिव धृताम्मूर्द्ध [न्] इ स्व-तारा-गणैः ॥
 सन्त्रासात् पर-चक्र-राजकमगात् तच्छुद्ध-सेवा-विधि-
 व्याबद्धाञ्जलि-शोमितेन शरणं मूर्ध्ना यदङ्गि-द्वयम् ।
 यथादत्त परार्द्ध-भूषण-गणैर्नृालङ्कृतं तत् तथा
 मा भैश्चिरिति सत्य-पालित-यशम्-स्थित्या यथा तद्विरा ॥
 तेनेदमनिल-विद्युच्चञ्चलमवलोक्य जीवितमसारम् ।
 क्षिति-दानमपरपुण्यं प्रवर्त्तितं देव-भोगाय ॥

स (४ अ) च परम-भट्टारक-महाराजाधिराज-परमेश्वर-श्रीमद्-धारा-
 वर्षदेव-पादानुध्यात-परम-भट्टारक-महाराजाधिराज-परमेश्वर-पृथिवी-वल्लभ
 प्रभूतवर्ष-श्रीमत्-गोविन्दराजदेवः ।

भ्राताभूत् तस्य शक्ति-त्रय-नमित-भुवः शौचकम्भाभिधानो
 ज्येष्ठस्यागाभिमान-प्रभृति-गुण-गणाधः-कृतादि-क्षितीशः ।
 राजा राजारि-ल्लोकास्थिर-तिमिर-घटा-पाटने शुद्ध-वृत्तः
 स श्रीमान् दिक्षु कीर्त्तिश्शशिविशद-रुचिस्थापिता येन भूयः ॥

तेन शौच-कम्भ-देवेन रणाबलोकापर-नाम्ना राजाधिराज-परमेश्वर-
श्रीप्रभूतवर्षानुज्ञानुमतेन

कोण्डकुन्दान्वयोदारो गणोऽभूत् भुवन-स्तुतः ।

तदैदत्-विषय-विल्यातं शाल्मली-ग्राममावसत् ॥

आसीत् [....]ता(तो)रणाचार्यस्तपः-फल-परिग्रहः ।

तत्रोपशम-सम्भूत-भावनापास्तकल्मषः ॥

पण्डितः पुष्पणन्दीति बभूव भुवि विश्रुतः ।

अन्तेवासी मुनेस्तस्य स-कलश्चन्द्रमा इव ॥

प्रतिदिवस-भवद्-वृद्धि-निरस्त-दोषो व्यपेत-हृदय-मलः ।

परिभूत-चन्द्र-विम्बम् तच्छिष्योऽभूत् प्रभाचन्द्रः ॥

(४ व) तस्य धर्मोपदेश-परितुष्ट-हृदयतया च सत्येन धर्म-तनयः
स्फुरत्प्रतापेन पद्मिनी-वन्धुं दानेन सुर-द्विरदं जयतितरां यद्विश्रयो भर्ता

विविशुरगुणा रिपूणाम् ।

हृदयान्यपि यस्य सत्य-शौर्याद्याः ॥

तेषामुरस्थल-स्थित-

कमलामाक्रष्टुमि [व] रम्यम् ॥

तस्य विष्णोरिव बलि-प्रताप-निर्वापणोद्यत-पराक्रमस्य पराक्रम-बलो-
क्तस्य प्रताप-निरन्तरतयाक्रान्त (:) समस्त-सुभट-लोकस्य केसरिण इव
विक्रमंकर [स] स्य श्री-बप्पय्य-इति-सु-गृहीत-नाम्नः कुमारस्य वीर-
श्री-लतारोहण-कल्पवृक्षायमानमुजदण्ड-दण्डितारातेः प्रियात्मजस्य विज्ञा-
पना कर्णोपजात-कुतूहलतया च । राजाधिराज-परमेश्वर-श्री-निरुपमदेव
प्रभूतवर्ष-प्रसादोपलब्ध-महा-सामन्ताधिपत्यालङ्कृत-महानुभावेन भगवद्-
हं [द्]-भटारक-चरण-परिचरण-अणत-पवित्रितोत्तमाङ्गेन महा-विजय-विक्षे-
शि० ९

धापति-श्री-श्रीविजयराजेन निर्मापिता-(५ अ) य जिन-भवनाय
मान्यपुरीपश्चिम-दिगङ्गना-ललाम-भूताय चतुर्ग्विंशत्युत्तरेषु सप्त-
शतेषु शक-वर्षेषु समतीतेष्वात्मनः प्रवर्द्धमान-विज [य]-संवत्सरे
मान्यपुरमधिवसति विजयस्कन्धावारे सोम-ग्रहणे पुष्य-नक्षत्रे शु [भ]
लग्ने वार-विलासिनी-विरचित-नृत्त-गीत-वा (वा) ब-बलि-विलेपन-देव-
पूजा-नव-कर्म-प्रवर्त्तनार्थ एदेदिण्डे-विषय-मध्य-वृत्ति-पेर्व्वडियूर-नाम
ग्रामं सर्व्व-बाध-परिहारं उदक-पूर्व्व दत्तः तस्य सीमान्तरं (यहाँ सीमायें
आती हैं) पादरि-ऊरुळ् पत्तु-भागदोलोन्दु-भागं देवर्गे कोट्टु
(इमेशाके बे ही अन्तिम श्लोक) ।

[विष्णुसे रक्षाकी कामना ।

पृथ्वीपर कृष्ण-राज विद्यमान थे । उनके धोर नामका एक पुत्र था ।
उसीके दूसरे नाम कलि-बल्लभ, वत्सराज, निरुपम थे ।

गुणी निरुपमसे गोविन्दराज उत्पन्न हुआ । जब यह राजा हुआ तो राष्ट्र-
कूट-वंश दूसरे लोगों (वंशों) की प्रतियोगितासे ऊपर उठ गया । उसने
गङ्गाको बन्धनसे छुड़ाया था, लेकिन अपने घमण्डी स्वभावके कारण शीघ्र
ही पुनः बँध लिया गया । उसकी बहुत-सी प्रशंसा । उसके पराक्रमोंका
वर्णन । उसने देव-भोग (मन्दिरके लिये दान) रूपसे भूमिदान किया ।
उसके बड़े भाईका नाम शौच-कम्भ था । इसी शौच-कम्भका दूसरा
नाम रणावलोक था ।

हस-विषय (देश) में प्रसिद्ध शास्मली नामक गाँवमें कोण्डकुन्दा-
न्वयके उदारगणमें तोरणाचार्य्य हुए । पुष्पमन्दि-पण्डित उनके शिष्य थे ।
उनके शिष्य प्रभाचन्द्र थे । उनके एक वप्पय्य नामके भक्त श्रावक थे ।
उनका पुत्र शत्रुओंका दण्ड देनेवाला था । अपने प्रिय पुत्रकी प्रार्थना
सुनकर उन्होंने, मान्यपुरके पश्चिममें जो जिनमन्दिर खड़ा हुआ था उसके
लिये, उसके शासक श्रीविजय-राजकी कृपासे शक सं० ७२४ के बीतने पर,
अपने ही विजय-वर्षमें, मान्यपुरमें पड़े हुए अपने विजयी कैम्प (स्कन्धा-

वार) में एदेदिण्डे-विषयका पेर्बडियूर नामका गाँव, सर्व करोंसे मुक्त करके, जलधारापूर्वक दानमें दिया । इस गाँवकी सीमायें । पदरियूरमें ५० भाग दानमें दिया गया । वे ही शापात्मक श्लोक ।]

[NC, IX, Nelamangala tl. n° 61]

१२४

कडव—संस्कृत तथा कडव ।

(सन्देहास्पद)

[शक ७३५=८१२ ई०]

राष्ट्रकूटवंशोद्भव द्वितीय प्रभूतवर्ष महीपतिका दानपत्र ।

- १ ॐ स्वस्ति [II] विस्तृत-विशद-यशो-वितान-विशदीकृताशाचक्र-
वालः करवाल-प्रवालावतंस-विराजित-जयलक्ष्मी-समालि-
- २ गित-दक्ष-दक्षिणा-भूरि-भुजार्गलः गलित-सार-शौर्य-रस-विस-
र-विसखलीकृतोप्रा-
- ३ रि-वर्गः वर्ग-त्रय-वर्गणैक-निपुणोऽचलाभार-चाव्वी-विशेष-
निर्जितोव्वी-मण्डलोत्सवोत्पादनपरः
- ४ पर-भूपाल-मौलि-माला-लीढाङ्घ्रि-द्वन्द्वारविन्दो गोविंदराजः ॥
तस्य-सू-
- ४ नुः सुतरुण-भावोदय-दया-दान-दीनेतर-गुण-गण-समर्पित-बन्धु-
जनः सक-
- ६ ल-कलागम-जलधि-कलशयोनिः मनुदर्शितमार्गानुगामी राष्ट्र-
कूट-कुला-
- ७ मल-गगन-मृगलाञ्छनः बुधजन-मुख-कमलांशुमाली मनोह-
- ८ र-गुण-गणालंकार-भारः कक्कराज-नामधेयः [II] तस्य पुत्रः
स्व-वंशानेक-नृ-
- ९ प-संघात-परम्पराभ्युदय-कारणः परम-ऋषि-ब्राह्मण-भक्ति-

तात्पर्य—

- १० कुशलः समस्त-गुण-गणाधिष्णो^१ विख्यात-सर्व-लोक-निरुपम-
स्थिर-भाव-नि(वि)जिता—
- ११ रि-मण्डलः यस्यैममासीत् ॥ जित्वा भूपारि-वर्गान्नय-कुशल-
तया येन रा—
- १२ ज्यं कृतं यः कष्टे मन्वादिमार्गे स्तुत-धृष्ट-यशा न कचिद्
यागपूर्वः^१ [I] संग्रामे यस्य शेषा
- १३ स्व-भुज-कर-बल-प्रापिता या जयश्रीर्यस्मिन्नाते स्ववंशोभ्युदय-
धवलतां यातवान्कृतेजः [II १] अ—
- १४ साविन्द्राज-नामधेयः [III] तस्य पुत्रः स्व-कुल-ललामायमानो
मानधनो दीनाना—

दूसरा पत्र; पहली बाजू.

- १५ थ-जनाह्लादनकर-दान-निरत-मनोवृत्तिः हिमकर इव सुखकर-
करः कुलाचल-समु—
- १६ दाय इव सुधाधार-गुण-निपुणः हिमशैल-कूट-तट-स्थापित
यशस्तम्भलिखिता—
- १७ नेक-विक्रम-गुणः [I] अध-संघात-विनाशक-सुरापगा यस्य
सद्यशो विशदं [I] गायन्तीव तरङ्ग-प्रभव—
- १८ रवैर्व्यहति जन-महिता ॥ [२] असौ वैरमेघ-नामधेयः [II]
तस्य पितृव्यः हृदय-पद्मा—

१ 'गणाधिष्णो' इति राइसमहोदयः । २ 'यातपूर्व' पाठ ठीक मालूम पड़ता है ।

१९. सनस्थ-परमेश्वर-शिरशिशिरकर- [कर-]निकर-निराकृत-तमो-
वृत्तिः सविशेषस्य जगन्नय-
२० सारोच्चयेनेव विरचितस्य चतुर्थ-लोकोदय-समानस्य कृतयुग-
शतैरिव निर्मि-
२१ तस्य यस्य यशसः पुञ्जमिव विराजमानः^१ ॥ प्रदग्ध-कालागरु-
२२ धूप-धूमैः प्रवर्द्धमानोपचयाः पयोदाः [१] यस्याजिरं स्वच्छ-
सुगन्ध-तोयैः
२३ सिञ्चन्ति सिद्धोदित-कूट-भागाः ॥ [३] न चेदृशं प्राप्यमिति
प्रलोभात् भवोद्भवो भावि- [यु] गा-
२४ वतारे [१] अवैमि यस्य स्थितये स्वयं तत् कल्पान्तरं नैव च
भाव्यतीति ॥ [४] तारा-ग-
२५ णेषून्नत-कूट-कोटि-नटार्पितासूज्ज्वल-दीपिकासु [१] मोमुह्यते
रात्रि-विभेदभा-
२६ वः निशाख्ययः पौरजनैर्निशायां ॥ [५] आधारभूताहमिदं
व्यतीत्य मां वर्द्धते
२७ चायमतिप्रसङ्गः [१] यस्यावकाशार्थमितीव पृथ्वी पृथ्वीव
भूतेति च मे वि-
२८ तर्कः ॥ [६] विचित्र-पताका-सहस्र-सञ्छादितं उपरि परिच-
रण-भयात् लोकै-
२९ क-चूडामणिना मणि-कुट्टिम-संक्रान्त-प्रतिबिम्ब-व्याजेन स्वयमव-
तीर्य

१ 'पुञ्ज इव विराजमानं' ऐसा पढ़ना चाहिये ।

दूसरा पत्र; दूसरी बाजू

- ३० परमेश्वर-भक्ति-युक्तेन नमस्क्रियमाणमिव विराजमानं प्रहृत-पुष्कर-
मन्द्र-निनादा—
- ३१ कर्णनोदितानुरागैः प्रावृडारम्भ-काल-जनितोत्सवारम्भैः मयूरैः
प्रारब्ध-वृत्त-नृ—
- ३२ सान्तं धूम-वेला-लीला-गत-विलासिनी-जनानां कर-तल-किसलय-
रस-भाव-सद्भाव-प्रक—
- ३३ टन-कुशल-शशिवदनाङ्गना-नर्तनाहृत-पौर-युयति-जन-चिन्ता-
न्तरं समस्त-सिद्धान्त-साग—
- ३४ र-पारग-मुनि-शत-सङ्कुलं देवकुलमासीत् कणेश्वरनाम स्व-
नामधेयाङ्कितं असा—
- ३५ वकालवर्ष इति विख्यातः [II] तस्य सूनुः आनत-नृप-मकुट-
मणि-गण-किरण-जाल-रञ्जित—
- ३६ पद-युगल-नख-मयूख-प्रभा-भासित-सिंहासनोपान्तः कान्ताजन-
कटक-खचि—
- ३७ त-पद्मराग-दीधिति-विसर-शुम्भत्-कुसुम्भ-रस-रञ्जित-निज-धवल-
वीज्यमान-चारु-चा—
- ३८ मर-निचय-विख्यात-ग्राज्य-राज्याभिषेकान्तरैकैश्वर्य्य-सुख-समनुभ-
वस्थि—
- ३९ तिः निज-तुरङ्गमैक-विजयानीत-राजलक्ष्मी-सनाथो महीनाथो यः
कल्पाङ्गिपः ससेव'

- ४० चिन्तामणिरिति भुवं यं वदन्त्यर्थिनः । नित्यं प्रीत्या प्राप्तार्थ-
सम्पदसौ प्रभूतवर्ष इति वि-
४१ ख्यातो भूपचक्रचूडामणिः [॥] तस्यानुजः धारावर्ष-श्री-पृथ्वी-
वल्लभ-महाराजाधि-
४२ राजपरमेश्वरः खण्डितारि-मण्डलासि-भासित-दोर्दण्डः पुण्डरीक^१
इव बलिरिपु-मर्दना-
४३ क्रान्त-सकल-भुवनतलः सुकृतानेक-राज्य-भार-भारोद्धहन-समर्थः
हिमशैल-वि-
४४ शालोरःस्थलेन राजलक्ष्मी-विहरण-मणि-कुट्टिमेन चतुराङ्गनालि-
गन-तुङ्ग-कुच-

तीसरा पत्र; पहली बाजू

- ४५ संग-सुखोद्वेकोदित-रोमाञ्च-योजितेन स्व-भुजासि-धारा-दलित-
समस्त^२ गलित-मुक्ताफल-वि-
४६ सर-विराजितारि-बल-हस्ति-हस्तास्फालन-दन्त-कोटि-घटित-घनी-
कृतेन विराजमानः त्रिपुर-
४७ हर-वृषभ-ककुदाकारोन्नत-विकटांस-तट-निकट-दोधूयमान-चारु-
चामर-चयः फेन-पिण्ड-
४८ पाण्डुर-प्रभावोदितच्छविना वृतेनापि चतुराकारेण सितातपत्रे-
णाच्छादित-समस्त-दिग्-वि-
४९ ^१रो रिपुजनहृदयत्रिदारणदारुणेन सकलभूतलाधिपत्यलक्ष्मीली-

१ 'पुण्डरीकाक्ष' पढ़ो । २ 'दलितमस्त' पढ़ो । ३ आगे ४९ वीं पंक्तिसे प्राचीन लेखमाला, प्रथम भाग, लेख ११ परसे लिया है ।

लामुत्पादयता प्रहतपटहृदक्कागम्भीरध्वानेन घनावनगर्जनानुकारिणा
 अस्याचितो विनोदनिर्गमः (?) स्वकीयां साञ्चलतां (?) परनृपचेतोवृत्तिषु
 दातुमिवोच्चैराविलोलप्रकटितराज्यचिह्नः (?) तुरङ्गमखरसुरोत्थितपांशुपट-
 लमसृणितजलदसंचयानेकमत्तद्विपकरटतटगलितदानधाराप्रतानप्रशमिन-
 महीपरागः ।

यस्य श्री चपलोदया खुरतरङ्गालीसमास्फाटना-

निर्मिन्नद्विपयानपात्रगतयो ये मंचलञ्चेतसः । (?)

तस्मिन्नेव समेत्य सारविभवं संत्यज्य राज्यं रणे

भग्ना मोहवशात् स्वयं खलु दिशामन्तं भजन्तेऽरयः ॥

इदं कियद्भूतलमत्र सम्यक् स्थातुं महत्संकटमित्युदग्रम् ।

स्वस्यावकाशं न करोति यस्य यशो दिशां भित्तिविमेदनानि ॥

अनवरतदानधारावर्षागमेन तृप्तजनतायाः धारावर्ष इति जगति
 विख्यातः सर्वलोकवल्लभतया वल्लभ इति । तस्यात्मजो निजभुजबलसमा-
 नीतपरनृपलक्ष्मीकरधृतधवलातपत्रनालप्रतिकूलरिपुकुलचरणनिबद्धखलख-
 लायमानधवलशृङ्खलारवबधिरिकृतपर्यन्तजनो निरुपमगुणगणाकर्णनसमा-
 ह्लादितमनसा साधुजनेन सदा संगीयमानशशिविशदयशोराशिराशावष्टब्ध-
 जनमनःपरिकल्पनत्रिगुणीकृतस्वकीयानुष्ठानो निष्ठितकर्तव्यः प्रभूतवर्ष-
 श्रीपृथ्वीवल्लभराजाधिराजपरमेश्वरस्य प्रवर्धमानश्रीराज्यविजयसंव-
 त्सरेषु वदत्सु । चारुचालुक्यान्यगगनतलहरिणलाञ्छनायमानश्रीव-
 लवर्मनरेन्द्रस्य सूनुः स्वविक्रमावजितसकलरिपुनृपशिरःशेखराचितचरण-
 युगलो यशोवर्मनामधेयो राजा व्यराजत । तस्य पुत्रः 'सुपुत्रः
 कुलदीपक' इति पुराणवचनमवितथमिह कुर्वन्नतितरां धीराजमानो

मनोजात इव मानिनीजनमनस्थलीयः (?) रणचतुरश्वतुरजनाश्रयः
श्रीसमालिङ्गितविशालवक्षस्थलो नितरामशोभत । असौ महात्मा
कमलोचितसद्गुजान्तरश्रीविमलादित्य इति प्रतीतनामा ।
कमनीयवपुर्विलासिनीनां भ्रमदक्षिभ्रमरालिवक्रपद्मः ॥

यः प्रचण्डतरकरवालदलितरिपुनृपकरिघटाकुम्भमुक्तमुक्ताफलविकीर्ण-
तरुचिरक्ताब्धिकान्तिरुचिरपरीतनिजकलत्रकण्ठः शितिकण्ठ इव महितम-
हिमामोद्यमानरुचिरकीर्तिरशेषगङ्गमण्डलाधिराज श्रीचाकिराजस्य भागि-
नेयः भुवि प्रकाशत यस्मिन् कुनुन्गिलनामदेशमयशःपराङ्मुखो मनुमार्गेण
पालयति सति श्रीयापनीयनन्दिसंघपुंनागवृक्षमूलगणे श्रीकित्या-
चार्यान्यये बहुधाचार्येष्वतिक्रान्तेषु व्रतसमितिगुप्तिगुप्तमुनिवृन्दवन्दित-
चरणकूविलाचार्याणामासीत् (?) तस्यान्तेवासी समुपनतजनपरिश्र-
माहारः खदानसंतर्पितसमस्तविद्वज्जनो जनितमहोदयः विजयकीर्तिनाम-
मुनिप्रभुरभूत् ।

अर्ककीर्तिरिति ख्यातिमातन्वन्मुनिसत्तमः ।

तस्य शिष्यत्वमायातो नायातो वशमेनसाम् ॥

तस्मै मुनिवराय तस्य विमलादित्यस्य शणेश्वर (?) पीडापनोदाय
मयूरखण्डिमधिवसति विजयस्कन्धावारे चाकिराजेन विज्ञापितो बल-
मेन्द्रः इडिगूर्विषयमध्यवर्तिनं जालमङ्गलनामधेयग्रामं शकनृपसंवत्सरेषु
शरशिखिमुनिषु (७३५) व्यतीतेषु ज्येष्ठमासशुक्लपक्षदशम्यां
पुष्यनक्षत्रे चन्द्रवारे मान्यपुरवरापरदिग्विभागालंकारभूतशिलाग्रामा-
जनेन्द्रभैरवाय दत्तवान् तस्य पूर्वदक्षिणापरोत्तरदिग्विभागेषु स्वस्तिमङ्गल-

१ 'प्रकाशते यस्मिन्' यह पाठ मालूम पड़ता है । २ 'पराङ्मुखे' यह
अपेक्षित है । ३ 'श्रीकीर्त्याचार्य' जान पड़ता है । ४ 'जिनेन्द्र' ऐसा पाठ मालूम
पड़ता है ।

बेळिन्द-गुडनूरत्तरिपाल इति प्रसिद्धा ग्रामाः एवं चतुर्णां ग्रामाणां मध्ये व्यवस्थितस्य जालमङ्गलस्यायं चतुरावधिकर्मः पुनस्तस्य सीमा-विभागः ईशानतः मुकूडल्दक्षिणदिग्दिग्भागमवलोक्य एतगकोडल-मूडग-केल-बन्दु इर्पेय-ओषदे-पल्लद्-ओलगण उलिअलरिये कोदेयालि-बेलने सयकने-बन्दु पोल पुणसे एव कीले अन्ते पोयिए बिदिरूग्गेरे मुकूडल् ततः पश्चिमतः पुलिपदिय तेङ्कण पेडू ओल्बेये पेडबिलिके एल-गल-करण्डलो मुकूडल् अन्ते सयकने पोगि नायूमणिगेरेय ताय्गण्डि मुकूडल् ततः उत्तरतः बल्लगेरेय पडुव गजगोड पळम्बे पुणुसेये आने-दलो गेरेए पुल्पडिये एलगल्ले पुलिगारद गेरे मुकूडल् ततः पूर्वतः निडु विलिङ्के.....दविन पुल्पडिये कञ्जगार गल्ले पोल एल्ले पुणुसये बडपु-णुसये बेळने बन्दु ईशानद मुकूडलोल् कूडि निन्दत्त । राचमल्लगाम-ण्डनु शीरनु गङ्गगामुण्डनु मारेयनु बेल्गेरेय ओडेयोर्ल मोदबागे-एल्पदि-म्बरं कुनुगिल्-अयसार्वरं साक्षियागे कोइत्त । नमः ।

अद्धिर्दत्तं त्रिभिर्भुक्तं षड्भिश्च परिपालितम् ।

एतानि न निवर्तन्ते पूर्वराजकृतानि च ॥

स्वं दातुं सुमहच्छक्यं दुःखमन्यस्य पालनम् ।

दानं वा पालनं वेति दानाच्छ्रेयोऽनुपालनम् ॥

स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुंधराम् ।

षष्टिं वर्षसहस्राणि विष्टायां जायते कृमिः ॥

देवस्व[हि] विपं घोरं कालकूटसमप्रभम् ।

विषमेकाकिनं हन्ति देवस्वं पुत्रपौत्रकम् ॥

(इण्डियन् एष्टिकेरी १२।१३-१६)

[एपिग्राफिका इण्डिका, ४।३४०-३४५]

[इस शिलालेखमें बताया है कि रामा प्रभूतवर्ष (गोविन्द तृतीय) ने जब कि वे मयूरखण्डीके अपने बिजबी विश्रामस्थलपर ठहरे हुए थे, चाकिराजकी प्रार्थनापर शक सं० ७१५ में जालमङ्गल नामका गाँव जैन मुनि अर्ककीर्तिको भेंट दिया। यह भेंट शिलाग्राममें स्थित जिनेन्द्रभवनके लिये दी गई थी। कारण यह था कि कुनुन्नाक जिलेके शासक बिमलादित्यको उन्होंने (अर्ककीर्ति मुनिने) शनैश्चर (?) की पीड़ासे उन्मुक्त किया था।

इस लेखमें पं० १-६४ तकमें राष्ट्रकूट राजाओंकी प्रशंसामात्र है। इसमें उनकी वंशावली इस प्रकार दी हुई है:—

लेखप्रस्तुत नाम	ऐतिहासिक नाम
(१) गोविन्द	= गोविन्द प्रथम
(२) कर्क	= कर्क प्रथम
(३) इन्द्र	= इन्द्र द्वितीय
(४) वैरमेघ	= दन्तिदुर्ग या दन्तिवर्मन् द्वि०
(५) अकालवर्ष	= कृष्ण प्रथम
[वैरमेघका चाचा (पितृभ्य)]	
(६) प्रभूतवर्ष	= गोविन्द द्वितीय
(७) धारावर्ष श्री पृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर, द्वितीय	
नाम—वल्लभ=ध्रुव (प्रभूत वर्षका छोटा भाई)	
(८) प्रभूतवर्ष श्रीपृथ्वीवल्लभ [महा]-राजाधिराज परमेश्वर,	
द्वितीय नाम वल्लभेन्द्र	= गोविन्द तृतीय

१४ वीं पंक्तिमें कहा गया है कि अकालवर्षने अपने ही नामसे 'कृष्णेश्वर' नामक मन्दिर बनवाया था। पंक्ति २९-३० से ऐसा मालूम पड़ता है कि यह मन्दिर शिवके लिये अर्पण किया गया था। पं० ८१ में बताया

गया है कि दानके समय गोविन्द-तृतीय मयूरखम्बीके अपने विजय-स्कन्धावार (पड़ाव) में ठहरे हुए थे ।

पंक्ति १५-७५ में विमलादित्यकी वंशावलीका उल्लेख हुआ है । उनके पिता राजा यशोवर्मा थे और उनके बाबा नरेन्द्र बलवर्मा थे । चालुक्योंसे इस कुलका संबंध था; लेकिन वर्तमानमें चालुक्यवंशी राजाओंमें इन नामोंके राजा नहीं मिलते हैं, इसलिए प्रो० भाण्डारकरने उन्हें एक स्वतन्त्र शाखाका माना है । विमलादित्य कुनुन्गिल्लू देश (जिले) का राजा था । विमलादित्यको चाकिराजकी बहिनका पुत्र बताया गया है । चाकिराजको गङ्गों (अशेष-गङ्गामण्डलाधिराज) के समूचे प्रान्तका शासक कहा गया है । इसीकी प्रार्थनापर दान किया गया था ।

पंक्ति ७५-८० में दानपात्रका विशेष वर्णन है । उनका नाम अर्ककीर्ति था, ये कूबिल आचार्यके शिष्य विजयकीर्तिके शिष्य थे । यह मुनि श्री यापनीय नन्दिसंघके पुंनागवृक्षमूलगणके श्रीकीर्त्याचार्यके अन्वय (परम्परा) के थे । इनका एक विशेषण 'व्रतसमितिगुसिगुसमुनिवृन्दवन्दितचरणः' है ।

लेखके अन्तिम भागका सार ऊपर दे दिया गया है । लेखके अन्तिम भागमें कुछ साक्षियोंके नाम भी दिये गये हैं जिनके सामने यह दान किया गया था । अन्तके चार वे ही साधारण ज्ञापक श्लोक हैं ।]

१२५

नौसारी—संस्कृत ।

[शक ७४३=८२१ ईस्वी]

यह शिलालेख सम्भवतः श्वेताम्बर सम्प्रदायका है ।

[H. H. Dhruva, Zeitschr. d. deut. morg. Gesell., XI, p. 321, n° VII, a.]

१२६

कांगड़ा—संस्कृत ।

[लौकिक वर्ष ?]=८५४ ई० ? (बुद्धर)

श्वेताम्बर सम्प्रदायका ।

[EI, I, n° XVIII (p. 120), t. & tr.]

१२७

कोशूर (जिह्वा धारवाह)—संस्कृत ।

[शक सं० ७८२=८९० ई०]

श्रियः प्रियस्संगतविश्वरूपस्तुदर्शनच्छिन्नपरावलेपः ।

दिश्यादनन्तः प्रणतामरेन्द्रः श्रियं ममाद्यः परमां जिनेन्द्रः ॥ १ ॥

अनन्तभोगस्थितिरेव पातु वः प्रतापशीलप्रभवोदयाचलः ।

सुराष्ट्रकूटोर्जितवंशपूर्वजस्स वीर-नारायण एव यो विभुः ॥ २ ॥

तदीयभूपायतयादवान्वये क्रमेण वार्द्धीविव रत्नसञ्चयः ।

बभूव गोविन्दमहीपतिर्भुवः प्रसाधनो पृच्छकराज-नन्दनः ॥ ३ ॥

इन्द्रावनीपालसुतेन धारिणी प्रसारिता येन पृथु-प्रभाविना ।

महौजसा वैरितमो निराकृतं प्रतापशीलेन स कर्कर-प्रभुः ॥ ४ ॥

ततोऽभवद्वन्तिघटाभिर्मर्दनो हिमाचलादुर्जित-सेतु-सीमतः ।

ग्वलीकृतोद्धूतमहीपमण्डलः कुलाग्रणीः यो भुवि दन्तिदुर्ग-राट् ॥ ५ ॥

स्वयम्बरीभूतरणाङ्गणे ततस्स निर्व्यपेक्षं शुभतुङ्गचलमः ।

चकर्ष चालुक्यकुलश्रियं बलाद्विलोल-पालिध्वज-माल-भारिणीं ॥ ६ ॥

जयोच्चसिंहासनचामरोर्जितस्सितातपत्रो प्रतिपक्ष राज्य(ज)हा ।

अकालवर्षोर्जितभूपनामको बभूव राजर्षिरशेषपुण्यतः ॥ ७ ॥

ततः प्रभूतवर्षोऽभूद्दारावर्षसुतशरैः ।

धारावर्षायितं येन संप्रामभुवि भूभुजा ॥ ८ ॥ तस्य सुतः—

यजन्मकाले देवेन्द्रैरादिष्टं वृषभो भुवः ।

भोक्तेति हिमवत्सेतु-पर्यन्ताम्बुधिमेखलाम् ॥ ९ ॥

ततः प्रभूतवर्षस्सन् स्वयम्पूर्णमनोरथः ।

जगत्तुङ्गस्तुमेरुर्वा भूमृतामुपरि स्थितः ॥ १० ॥

बन्धूनां बन्धुराणामुचितनिजकुले पूर्वजानां प्रजानां
 जातानां **वल्लभानां** भुवनभरितसत्कीर्तिमूर्ति-स्थितानां ।
 त्रातुं कीर्त्तं स-लोकं कलिकलुषमथो हन्तमन्तो रिपूणां
 श्रीमान् सिंहासनस्थो भवनवनिमतो **ऽमोघवर्षः** प्रशास्ति ॥ ११ ॥
 यस्याज्ञां परचक्रिणः स्रजमिवाजस्रं शिरोभिर्व्वह-
 न्यादिदन्तिघटावलीमुखपटैः कीर्त्तिप्रतानूस्स तैः ।
 यत्रस्थः स्वकरप्रतापमहिमा कस्याप्यदूरस्थितः
 तेजःक्रान्तसमस्तभूभृदिव एवासौ न कस्योपरि ॥ १२ ॥
 चतुस्समुद्रपर्यन्तं (?) स्वमुद्रं यत्प्रसाधितं ।
 भग्ना समस्तभूपालमुद्रा गरुडमुद्रया ॥ १३ ॥
 राजेन्द्रास्ते वन्दनीयास्तु पूर्व्वे, येषां धर्मः पालनीयोऽस्मदीयैः ।
 ध्वस्ता दुष्टा वर्त्तमानास्सधर्माः प्रार्थ्या ये ते भाविनः पार्थिवेन्द्राः ॥ १४ ॥
 भुक्तं कश्चिद्विक्रमेणापरेभ्यो
 दत्तं चान्यैस्त्यक्तमेषापरंर्यत् ।
 कास्थानिल्ये तत्र राज्ये महद्भिः
 कीर्त्त्या (त्र्यै ?) धर्मः केवलं पालनीयः ॥ १५ ॥
 तेनेदमनिलविद्युच्चञ्चलमवलोक्य जीवितमसारं ।
 क्षितिदानपरमपुण्यः प्रवर्त्तितो देवदायोऽयम् ॥ १६ ॥
 स एव परमभट्टारक-महाराजाधिराज-परमेश्वर-श्री-जगत्पुद्गलदेव-पादा-
 नुष्यान् (त) परमभट्टारक-महाराजाधिराज-परमेश्वर-श्री-पृथ्वीवल्लभ-श्रीमद्-
मोघवर्ष-श्रीवल्लभनरेन्द्रदेवः सव्वानिव यथासम्बध्यमानकान्-राष्ट्रविषय-

पति-ग्रामकूटायुक्तक-नियुक्ताधिकारिकमहत्तरादीन् समादिशत्यस्तु वस्संवि-
दितं यथा ॥

विक्रमविलासनिलयो मुकुल-कुले पूर्व्यबन्धुभिर्मन्यैः

एरकोटिनामधेयः प्रविकसितोऽभूत्प्रसूनसमः ॥ १७ ॥

आविरासीत्प्रभुस्तस्मात् प्रसूनात्फलसन्निभः ।

नाम्ना धोरः कुलाधारः कोलनूराधिपस्त्वयम् ॥ १८ ॥

सुतोऽस्य विजयाङ्गायामभूद्भवनमानितः ।

प्रचण्डमण्डलातङ्को बङ्गेशः से(चे)ल्लकेतनः ॥ १९ ॥

मदीयो विततज्योतिर्णिण(नि)शितोऽसिर्वापरैः ॥

उन्मूलितद्विषदृक्षमूलो मौलबलप्रभुः ॥ २० ॥

मत्प्रदेशेन संलब्ध-वनवासी-पुरस्सरान् ।

ग्रामान् त्रिशत्सहस्राणि भुनक्त्यविरतोदयः ॥ २१ ॥

महाप्रतापादुच्छेदमुदयच्छन् मदिच्छया ।

मूलादुच्छेत्तुमुत्तुङ्गं गङ्गवाडी-वटाठवीम् ॥ २२ ॥

तन्त्रान्तरेऽस्मत्सावमन्तैर्मर्त्याहितमानभै-

रुपेक्षितोऽपि कोपोबत्साहसैकसखः स्वयम् ॥ २३ ॥

ध्वस्तरिपुनीतिमार्गो रणविक्रममेकबुद्धिमभिनीय ।

स मदीयहृदयसंगतमवन्ध्यकोपत्वमावहति ॥ २४ ॥ येन-

तत् केदलाभिधानं दुर्गं वप्रार्गलादिदुर्लङ्घ्यं ।

मौल-बलाधिष्ठितमपि सबः प्रोलङ्घय हेलयाप्राहि ॥ २५ ॥

जनपदमदः कृत्वा हस्ते विधूय विरोधिनं

तलवनपुराधीशं कृत्वा श्रुतं रणविक्रमम् ।

मदरिविजयी भर्तुः श्लाघ्यस्समन्वितसंगरः

समरसमये विद्विद्-चक्रैरविकृतविक्रमः ॥ २६ ॥

कावेरीं गुरुपूरदुर्गमतमामुल्लङ्घ्य सिंहक्रमात्

प्रत्यप्र-स्फुरित-प्रताप-दहन-प्रोद्यच्छिखाश्रेणिभिः ।

निर्दह्यैकपदेन सप्तपदकान्विद्विदुनोच्छेदिना

येनाकम्पि जगत्प्रकम्पनपटोर्वैराज्यमप्यूर्जितम् ॥ २७ ॥

तन्त्रान्तरे मदन्तिकमन्तर्भेदेन जातसंक्षोभे ।

प्रत्यागन्तव्यमिति त्वयेति मद्भवनमात्रेण ॥ २८ ॥

अप्राप्ते बल्लभेन्द्रो मयि जयति यदा विद्विषः स्यान्तदाहं

सन्यस्ताशेषसङ्गो मुनिरथ विधिना विद्विषं स्याज्जयश्रीः ।

तत्राप्युदामधूमध्वजविततशिखासूत्पतामि प्रतापा-

दिल्यारूढप्रतिज्ञः कतिपयदिवसैः प्रापदस्मत्समीपम् ॥ २९ ॥

मासत्रयस्य मध्ये यदि भोजयितुं न शक्यते स्वामी ।

क्षीरं विजित्य शत्रुं तथापि बहिं विशाम्येव ॥ ३० ॥

इत्युक्त्वा क्रमविक्रमोच्छिखशिखीज्ज्वालावलीड (दृ)ब्र(व) जे

धूमश्याम [लि] ते तिरोहिततनौ प्रायः परप्रेषिते ।

ये ते मत्तनये स्थितान्यनृपतीनिर्जित्य यो जित्वरो

वन्दीकृत्य रिपूनिहित्य च तदा तीर्णप्रतिज्ञोऽभवत् ॥ ३१ ॥

आविष्कृतकोपशिखानिर्दग्धारीन्धनो त्रिनाप्यनिलात् ।

अज्ज्वालितोऽपि यस्य प्रतापवह्निर्मुहुर्ज्वलति ॥ ३२ ॥

यस्य च कृपाण-[वारिणि]रुधिराकुलिता द्विषां महालक्ष्मीः ।

मज्जत्युन्मज्जति तु स्वाधिपतेः कुङ्कुमा(ः भा)क्त्वेव ॥ ३३ ॥

हुत्वा येन रिपुं विरोधिरुधिरप्राज्याज्यधाराहुति-

व्रात-प्रस्फुरित-प्रताप-दहने विद्विष्टशान्तेश्श्रितं ।

विप्रेणेव रणाध्वरे सुविहित-श्री-मन्त्रशक्त्यार्जितं

कल्पान्तस्थिरवीरशासनमिदं मद्बीरनारायणात् ॥ ३४ ॥

तेनैवभूतेन बङ्केयाभिधानेन मदिष्टभृत्येन प्रार्थितः सन् तत्प्रार्थनया
मान्यखेटराजधान्यामवस्थितेन मया [मा]-त्तापित्रोरात्मनश्चैहिकामुत्रि-
कपुण्ययशोभिवृद्धये कोलनूरे तद्बङ्केयनिर्मापित-जिनायतन-परि-
पालननियुक्ताय

श्रीमूलसङ्घ-देशीयगण-पुस्तकगच्छतः ।

जातसैकालयोगीशः क्षीराब्धेरिव कौस्तुभः ॥ ३५ ॥

तच्चारित्रवधूप(पु)त्रः श्रीदेवेन्द्रमुनीश्वरः ।

सैद्धान्तिकाग्रणीस्तरं बङ्केयो[यामदान्मु]दा ॥ ३६ ॥

तद्वसतिस्मन्विधनवक्त्रमूर्धोत्तरभाविग्वण्डस्फुटित-सम्मार्जनोपलेपनपरि-
पालनादियर्म्मोपयोगिकर्मकरणनिमित्तं मज्जन्तिय-सप्ततिग्राम-मुक्त्यन्त-
र्गतः तलेयूरनामग्रामः तस्य चाघातः (टः) तत्कोलनूरात् पूर्वतः
वेन्दनूरु दक्षिणतः सासवेवादु तत्पश्चिमतः पडिलगेरी उत्तरतः कील-
वाडः एवमयं चतुराघाटनोपलक्षितः सोन्द्रंगस्स-परिकरः मदण्डदशाप-
राधस्सम्भृतोपात्तप्रत्यय^१ः सोपयमानविष्टिति (क)ः सधान्यहिरण्यादेयः
द्वादशपुष्पघाटः पञ्चाशदुत्तरशतहस्तविस्तारः पञ्चशतहस्तप्रमाणायामः
गृहाणामाघाटरुस्समुदितः प्रवेश्यस्सर्व्वराजकीयानामहस्तप्रक्षेपणीयः आच-
न्द्रार्कावर्णव-क्षिति-सरित्-पर्व्वत-समकालीनः पुत्रपौत्रान्वयक्रमेण प्रतिपाल्यः
पूर्व्वप्रदत्त-देवब्रह्मदायरहितोऽह्य (भ्य)न्तरसि [द्] द्वया भूमिच्छि-
द्रन्यायेन शकनृपकालातीतसंवत्सरशतेषु सप्तसु द्वा(द्वय)-
शीत्यधिकेषु तदभ्यधिक-समनन्तर-प्रवर्त्तमानत्रयो^२ शीतितम-
विक्रमसंवत्सरान्तर्गताश्वयुजपौर्णमास्यां सर्व्वग्रासि-सोमग्रहणे

१ 'सम्भृतोपात्तप्रत्यायस्' शब्द है । २ 'त्र्यशीतितम' पढ़ना चाहिये ।

महापर्वणि बलिपक्षवैश्वदेवाग्निहोत्रातिथिमन्तर्पणाद्धारोदकातिमर्गेण प्रतिपादितः ॥ तथात्रैव तत्कोलनूरतद्भुक्तिमध्यवृत्त्यवरवाडि बेण्डनूर मुदुगुण्डि कित्तैवोले मुल्ल मुस दधरे माविनूर मत्तिकट्टे नीलगुन्दगे तालिखेड बेल्लेरु संगम पिरिसिङ्गि मुत्तलगेरी काकेयनूर बेहेरु आल्लुगु [पार्व्व] नगेरी होसंजललु इन्दुगलु नेरिलगे हगनूर उनलगरु इन्दगेरी मुनिवल्ली कोट्टुसे ओड्डिट्टुगे सि [किम-ब्रि ?] गिरि [पि] डलु नामधेयेष्वेतेषु कोलनूरार्तं तद्भुक्तिवर्त्तिषु त्रिशत्स्वपि ग्रामेष्वेकैकग्रामे द्वादश निवर्त्तनानि भूमेः प्रतिपादितानि ॥॥ अतोऽस्योचितया देवदायदायस्थित्या भुञ्जतो भोजयतः कृपतः कर्षयतः प्रतिदिशतो वा न कैश्चिदल्पापि परिपन्थना कार्या तथागामिभद्रनृपतिभिरस्मद्वंशैरन्यैर्वा सामान्यं भूमिदानफलमेवत्य विद्युल्लोलान्यैश्चर्याणि तृणाग्रलग्रजलविन्दृचञ्चलं च जीवितमाकलय्य स्वदायनिर्व्विशेषोऽस्मदायोऽनुमन्तव्यः प्रतिपालयितव्यश्च ।

यस्त्वंज्ञानतिमिरपटलावृतमतिरार्च्छ्यमानकं वानुमोदत म पञ्चभिर्महापातैर्कस्मोपपातकैश्च संयुक्तः स्यादित्युक्तं भगवता वेदव्यासेन ॥

पष्टिवर्षसहस्राणि स्वर्गे तिष्ठति भूमिदः ।

आच्छेत्ता चानुमन्ता च तामेव नरके वसेत् ॥ ३७ ॥

विन्ध्याटवीश्वतोयासु शुष्ककोटग्वासिनः ।

कृष्णमर्षा हि जायन्ते भूमिदानं हगन्ति ये ॥ ३८ ॥

अग्रपत्यं प्रथमं सुवर्णं भूर्वैष्णवी मूर्धसुतश्च गावः ।

लोकत्रयन्तेन भवेद्भिदत्तं यः काञ्चनं गां च महीं च दद्यात् ३९॥

बहुभिर्व्यसुधा मुक्ता राजमिस्सगरादिभिः ।

यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥ ४० ॥

स्वदत्तां परदत्तां वा यन्नाद्रक्ष्ये^१ नराधिपः ।

महीं महीमतां श्रेष्ठ दानाच्छ्रेयोऽनुपालनम् ॥ ४१ ॥

इति कमलदलाम्बुविन्दुलोलं

श्रियमनुचिन्त्य मनुष्यजीवितं च ।

अतिविमलमनोभिरामकै-

र्नहि पुरुषैः परकीर्तयो विलोप्याः ॥ ४२ ॥

‘ लिखितञ्चैतद् वालभकायस्थवंशजातेन धर्माधिकरणस्थेन भोगिकव-
त्सराजेन श्रीहर्षसूनुना ग्रामपट्टलाधिकृतलेखकरणहस्ति-नाग-वर्म-
पृथ्वीराम-भृत्येन ॥

बङ्गेयराजमुख्यो गणपतिनामा महत्तरः प्राज्ञः ।

राज्ञः समीपवर्ती तेनेदमनुष्ठितं सर्व्वम् ॥ ४३ ॥

मिथ्याभावभवातिदर्पपरतद्दुःशासनोच्छेदकं

प्राज्ञाज्ञावशवर्तमानजनतास्तमौख्यसम्पादकम् ।

नानारूपविशिष्टवस्तुपरमस्याद्वादलक्ष्मीपदं

जेजीयाजिनराजशासनमिदं स्वाचारसारप्रदम् ॥ ४४ ॥

सिद्धान्तामृतवाद्धितारकपतिस्तर्काम्बुजाहर्षतिः

शब्दोद्यानवनामृतैकसरणिर्योगीन्द्रचूडामणिः ।

त्रैविद्यापरसार्थनामविभवः प्रोद्धूतचेतोभवः

जीयादन्यमतावनीभृदशनिः श्रीमेघचन्द्रो मुनिः ॥ ४५ ॥

इदे हंसीवृन्दमीटल्वगेदपुडुचकोरीचयं
 चञ्चुविन्दं कर्दुकल् सार्हण्पुडीशं जडेयोल् इरिसलेन्दिहपं
 सेजेगीरल् पदेदणं कृष्णनेम्बन्तेसेदु बिसलसन्कन्दलीकन्दकान्तं
 पुदिदत्ती मेघचन्द्रव्रतितिलकजगद्वर्तिकीर्त्तिप्रकाशं ॥ ४६ ॥

वैदग्ध्यश्रीवधूटीपतिरग्विलगुणालंकृतिर्मेघचन्द्र-

त्रैविद्यस्यान्मजातो मदनमहिभृतो मेदभै वज्रपातः

सिद्धान्तव्यूहचूडामणिरनुपमचिन्तामणिभूजनानां

योऽभून्मौज्यरुन्द्रश्रियमवनि महौ वीरनन्दीमुनीन्द्रः ॥ ४७ ॥

यःशब्दत्त(!)-नभस्थली-दिनमणिः काव्यज्ञचूडामणि-

र्यस्तर्कस्थितिर्कौमुदीहिमकरस्तूर्यत्रयाब्जाकरः ।

यस्सिद्धान्तविचारसारधिपणो रत्नत्रयीभूषणः

स्थेयादुद्धतवादिभूभृदशनिः श्रीवीरनन्दीमुनिः ॥ ४८ ॥

यन्मूर्तिर्जगतां जनस्य नयने कर्पूरपूरायते

यद्वृत्तिर्विदुषां ततेश्रवणयोर्माणिक्वभूपायते ।

यन्कीर्तिः ककुमां श्रियः कचभरे मल्लीलतान्नायते

जेजीयान्नुवि वीरनन्दिमुनिपः गैद्धान्तचक्राधिपः ॥ ४९ ॥

श्रीकोन्दकुन्दान्वयाम्बरद्युमणि विद्वज्जनशिरोमणि समस्तानवद्यविद्या-
 विलासिर्नाविलासमूर्ति श्रीवीरनन्दिभैरवा]न्तिक-चक्रवर्तिगल्लु श्रीमन्महा-
 स्थानं कोलनूर महाप्रसु हुलियमरसनुं मरुपुरपञ्चमठस्थानङ्गल्लु ताम्र-
 शासनमं नोदि वरेयिसिमेनल्का शासननोऽन्तिर्दुदन्ती शीलशासनमं वरे-
 यिसिदरु [II] मङ्गलमहाश्री श्री श्री नमो.....[III]

[जिस पाषाणपर यह लेख है वह कोझरके परमेश्वरके मन्दिरकी दीवालमें लगा हुआ है ।

इस लेखके दो भाग हो जाते हैं। श्लोक १ से लेकर ४३ तक दानकी प्रशस्ति है। यह दान ८६० ई० में राष्ट्रकूट राजा अमोघवर्ष प्रथमने दिया था। श्लोक ४४ से लेकर लेखके अन्तिम गद्य तकका भाग जैनधर्म और दो मुनियों—मेघचन्द्र त्रैविद्य और उनके शिष्य वीरनन्दीकी प्रशंसा करनेके बाद, हमें यह सूचित करता है कि वीरनन्दिके पास एक ब्राह्मणशासन (तांबे के ऊपरका लेख) था, जिसको बादमें कोलनूर (कोन्नर जहाँका यह शिलालेख है) के महाप्रभु हुलियमरस तथा औरोंकी प्रार्थनापर प्रस्तुत शिलालेखके रूपमें उत्कीर्ण किया गया। इस कथनके अनुसार शिलालेखका आदिसे लेकर ४३ श्लोक तकका भाग, जिसमें दान-प्रशस्ति है, ताम्र-शासनके लेखपरसे लिया गया है। वीरनन्दी और उनके गुरु मेघचन्द्र त्रैविद्यके कालसे इस पाषाण-लेखके कालका निर्णय एफ़ कीलहॉर्नने स्थूल रूपसे ईसवीकी १२ वीं सदीका मध्य निश्चित किया है। यह काल शिलालेख-निर्दिष्टकाल ८६० ई० (शक सं० ७८२) से भिन्न पड़ता है।

शिलालेखके मुख्य भागमें (श्लोक १-४३ तक) यह उल्लेख है कि आश्विन महीनेकी पूर्णिमाको सर्वप्राची चन्द्रग्रहणके अवसरपर, जब कि शक सं० ७८२ बीत चुका था, और जगत्सुंगके उत्तराधिकारी राजा अमोघवर्ष (प्रथम) राज्य कर रहे थे, उन्होंने अपने अधीनस्थ राज्यकर्मचारी बङ्केयकी महत्त्वपूर्ण सेवाके उपलक्ष्यमें कोलनूरमें बङ्केयद्वारा स्थापित जिनमन्दिरके लिये देवेन्द्रमुनिको तलेयूर गाँव पूरा तथा और दूसरे गाँवोंकी कुछ जमीन दानमें दी। ये देवेन्द्र पुस्तक गच्छ, देशीय गण, मूलसंघके त्रैकालयोगीशके शिष्य थे। शिलालेखके प्रारम्भिक भाग (श्लोक ३ से ११) में अमोघवर्षकी वंशावली दी हुई है। १७-३४ तकके श्लोकोंमें बंकेय की सेवाओंकी प्रशंसा वर्णित है। इस भागके अन्तिम अंशमें (४२ वें श्लोकके बादके गद्य अंश और ४३ वें श्लोकमें) लेखकका नाम वत्सराज तथा बङ्केयराजके मुख्य सलाहकारका नाम महत्तर गणपति दिया हुआ है।

इस शिलालेखपरसे अमोघवर्षकी जो वंशावली निकलती है तथा दूसरे ताम्र-पत्रोंपर जो उत्कीर्ण है उसमें कुछ अन्तर पड़ता है। पाठकोंके जाननेके लिये हम यहाँ दोनों वंशावलियाँ दे देते हैं।

इस शिलालेखपरसे

दूसरे ताम्रपत्रोंपरसे

१ यादव वंशमें,

पृच्छकराजका पुत्र गोविन्द

गोविन्दराज प्रथम

२ राजा इन्द्रका पुत्र कर्कर

उसका पुत्र ककराज या कर्कराज

उसका पुत्र इन्द्रराज

३ उसका पुत्र दन्तिदुर्ग

उसका पुत्र दन्तिदुर्ग

४ शुभतुंगवल्लभ—अकालवर्ष

शुभतुंग-अकालवर्ष (कृष्णराज

प्रथम, जो कि कर्कराजका पुत्र है)

५ धारावर्षका पुत्र प्रभूतवर्ष

उसका पुत्र प्रभूतवर्ष (गोवि-
न्दराज द्वि०)

६ उसका पुत्र प्रभूतवर्ष जगत्तुंग

उसका पुत्र प्रभूतवर्ष जगत्तुंग
(गोविन्द)

७ अमोघवर्ष

उसका पुत्र अमोघवर्ष]

[EI, VI, n° 4 (1st part)]

१२८

देवगढ (मध्यप्रान्त)—संस्कृत ।

[विक्रम सं० ९१९ तथा शक सं० ७८४=८६२ ई०]

१ [ओं ?] [II] परमभट्टार [क]-मह [I] गजाधिगज-परमेश्वरश्री-भो-

२ जदेव-महीप्रवर्द्धमान-कल्याणविजयराज्ये

३ तत्प्रदत्त-पञ्चमहाशब्द-महामामन्त-श्री-[वि] ण []-

४ [र] म-परिभुज्यमा [क]^१ लुअच्छगिरे श्री-शान्त्यायन [त]-

५ [सं] निधे श्री-कमलदेवाचार्य-शिष्येण श्री-देवेन कारा-

६ [पि] ते इदं स्तम्भं ॥ संवत् ९१९ अस्व (श्व) युज-शुक्र-

७ पक्ष-चतुर्दश्यां वृ (वृ) हस्पति-दिनेन उत्तरभाद्रप-

१ 'माने' या 'मानके' । २ 'कारितोऽयं स्तम्भः' यह शुद्ध रूप पढ़ना चाहिये ।

८ दानक्षत्रे^१ इदं स्तम्भं समाप्तमिति ॥०॥ वाजुआ—

९ गगाकेन गोष्ठिक-भूतेन^२ इदं स्तम्भं घटितमिति ॥०॥

१० [श]ककाल-[ब्द]-सप्तशतानि चतुराशीत्यधिकानि
७८४ [॥]

[इस लेखमें उल्लेख यह है कि परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर श्रीभोजदेवके राज्यमें जब लुअच्छगिरिपर (देवगढ़का ही एक नाम मालूम पड़ता है—[एफ० कीलहॉर्न]) महासामन्त बिष्णुरमका शासन था, तब जिस स्तम्भपर यह लेख खुदा हुआ है वह आचार्य कमलदेवके शिष्य श्रीदेवके द्वारा श्री शान्तिनाथ मन्दिरके पास बनवाया गया था और यह विक्रम सं० ९१९ के आश्विन सुदी १४, बृहस्पतिवारके दिन उत्तर भाद्रपदा नक्षत्रके योगमें बनकर तैयार हुआ था । बनानेवालेका नाम गोष्ठिक वाजुआगगाक था । इसके अतिरिक्त, अन्तिम पंक्ति शक संवत्, अक्षरों और अङ्क दोनोंमें, ७८४ का निर्देश करती है ।]

[EI, IV, n° 44, A]

१२९

वडनगर—संस्कृत ।

[सं० ९३२=८७५ ई०]

१ तर प्रसिद्धम् श्री * * * क राज्ये यदु-कुल म्ल कु * ।

२ कृत्यत्रयिविधनो तत्क्षेत्र भिर्यिभाविता अक्षोदेः श्री *

३ दिग्भागो धनपतेः ककुभि निर्ध मार्गाः अस्य मुदद्गुन् *

४ मिमस्य शशाङ्क तपनस्थितेः उमनेयं नवहृदक ।

१ '०त्रेयं स्तम्भः समाप्त इति' ऐसा पढ़ो । २ 'भूतेनायं स्तम्भो घटित इति' पढ़ो । ३ प्रो० बूल्हर्की रायमें 'गोष्ठिक' लोग धर्मदानोंका प्रबंध करनेवाली समितिके सदस्य थे, जिनको आजकलकी भाषामें 'ट्रस्टी' कह सकते हैं ।

५ स्यम् सं ९३३ वैशाखो सुदि १४ ।†

[पथारिसे दक्षिणकी ओर करीब ३ मीलपर ज्ञाननाथ पर्वतकी तलहटीमें एक झीलके किनारे बारो या बड़नगरके ध्वंसावशेष सुन्दर रीतिसे अवस्थित हैं। वहाँपर एक 'गडर-मर' नामका मन्दिर है, जो कि किसी गड़रि-येका बनवाया हुआ था।

इस गडरमर मन्दिरकी पश्चिम दिशामें छोटे-छोटे जैन मन्दिरोंका एक समूह है। उसके चतुष्कोण प्राङ्गणके बाहर एक चतुष्कोण छोटे पत्थरपर उक्त शिलालेख मिला था।]

[A. Cunningham, Reports, V, p. 74]

१३०

सौंदत्ति—संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक ७९७=४७५ ई०]

लेख

द्वादशग्रामाधिष्ठानस्य सुगन्धवर्तिमम(सम्भ)न्धिनि ॥ ग्रामे मूळ-
गुन्दाख्ये । सीवटे पट्ट निवर्त्तनं । देवस्य (खं) चि(गु)रने दत्तं ।
नमस्य (स्तं) कन्नभूभुजा ॥ तस्य दक्षिणे भागे । तिनित्तिणीवृक्षयो-
र्द्वयोः । मध्ये या स्थिता भूमिद्व (ई) ता श्रीकन्नभूभुजा । सुगन्ध-
वर्त्तिय सीमेयिन्द पट्ट (डु) वल् पिरियकोल्ल मत्तर ६ ॥

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोक्षल्लंछनं [I] जीयार्त्तं (त्रै) लोक्क्यना-
थस्य शासनं जितशासनं ॥ श्रीमन्मैलापतीर्थस्य गणे कारेयनामनि
[II] वभूवोश्रतपोयुक्तः मूळभट्टारको गणी ॥ तच्छिष्यो गुणवान्मूरिः

† दुर्भाग्यसे यह लेख दोनों ओर (प्रारम्भ और अन्तमें) अधूरा ही है। इसलिये कनिष्ठम साहब इधर-उधर कुछ शब्दोंकी पूर्तिके बजाय इसके पूर्णरूपसे समझनेमें असफल रहे हैं। अतएव इसका विशेष सारांश भी नहीं दिया जा सका।

गुणकीर्त्तिमुनीश्वरः [१] तस्याथामी (सीदिं) द्रुकीर्त्तिस्वामी कामम-
दापहः ॥ तच्छात्रः पृथ्वीरामः लक्ष्मीरामविराजितः [१] सत्यरत्नप्ररो-
हाद्रिः (मे) चडस्याग्रनन्दनः ॥ श्रीकृष्णराजदेवस्य लक्ष्मीलक्षितवक्षसः [१]
नम्रभूपालवृन्दस्य पादाम्बुर्ह (रुह) सेवकः ॥ यस्य बालप्रतापा-
ग्निज्वालानिकरशोषितस्ममुद्री (द्र) त्पासुहृद्दर्परसो निःशेषको यथा ।
यस्य राजन्वती भूमिर्जितानन्दकरैः करैः [१] राज्ञो यो धीमतो नीति-
मार्गो दुर्गभयंकरः ॥ यस्य संक्रीडते कीर्तिहंसी लोकसरोवरे [१]
यद्वाख्यं प्रश्र (स्त्र) तं जातं प्रणतारातिभूपतेः ॥ सप्तस (श) त्या
नवत्या च समायुक्त (क्ते) स (पु) सप्तषु [१] स (श)
ककालेश्व (ष्व) तीतेषु मन्मथाह्वयवत्सरे ॥ ग्रामे सुगन्धवर्त्ताख्ये तेन
भूपेन कारितं [१] जिनेन्द्रभवनं दत्तं तस्याष्टदशनिवर्त्तनं ॥ स्वस्ति
ममस्तभुवनाश्रयं श्रीपृथ्वीवल्लभ (भं) महाराजाधिराज (जं) परमे-
श्वरं (र) परमभट्टारकं राष्ट्रकूटकुलतिलकं श्रीमतकृष्णराजदेवविजय-
गज्यमुत्तरोत्तराभिष्टुद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारं वरं मलुत्तमिरे [१] तत्पाद-
पद्मोपजीवि ॥ स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्दमहासामन्तं वीरलक्ष्मीकान्तं
विरोधिमामन्तनगवज्रदण्डं विद्वज्जनकमलमार्त्तण्डं सुभटचूडामणि भृत्य-
चिन्तामणि श्रीमन्महासामन्तेन पृथ्वीरामेण (न) स्वकारितजिनेन्द्र-
भवनाय चतुर्थं स्थलेषु स्थितमष्टादशनिवर्त्तनं सर्व्वनमश्यं (स्यं) दत्तं ॥
पृथ्वीरामेण (न) यदत्तं निवर्त्तनं कार्त्तवीर्य्येण भूयः खगुरवे दत्तं सर्व्ववादा
(धा) विवर्जितं ॥ सूर्योपरागसंक्रान्तो (तौ) कार्त्तवीर्याप्रकान्तया ।
श्रीभागला(लं)त्रिकादेव्या नमश्यं (स्यं) कृतभंजसा ॥

[सौदत्तिमें जिसका पुराना नाम सुगन्धवर्त्ता है, एक छोटे जिनमन्दिर-
की बाईं ओर दीवारमें जड़े हुए पाषाण-शिलापरसे यह लेख लिया गया
है । लेखमें अनेक विशेष दान हैं । यह बहुत-कुछ राजाओंकी वंशावलीका

हाल भी बताता है। हम देखते हैं कि रट्टोंमें प्रथम जिसने कि प्रमुख अधिकारी होनेका पद पाया था मेरडका पुत्र पृथ्वीराम था। उसको यह प्रमुख अधिपति होनेका पद राष्ट्रकूट राजा कृष्णकी अधीनतामें मिला था। इससे पहिले वह पूज्य ऋषि मैलापतीर्थके कारेय गणमें सिर्फ एक धार्मिक विद्यार्थी था। इस शिलालेखमें कृष्णराजदेवकी उपाधियाँ चालुक्य राजाओंके समान ही हैं तथा चक्रवर्तीकी उपाधियाँ हैं, और हम यह भी देखते हैं कि शक ७९८ में, जो मन्मथ संवत्सर था सुगन्धवर्त्तिमें उसने एक जिनमन्दिर बनवाया, और इसके लिये १८ 'निवर्तन' भूमि दी। किन्तु यह लेख किसी उत्तरवर्ती समयमें खोदा गया होगा, क्योंकि प्रथम चार पंक्तियोंमें राजा कन्नके जो कि पृथ्वीरामके ५ या ६ पीढ़ी आगे हुआ है, एक दानका उल्लेख आता है। यह दान सुगन्धवर्त्तिक मुलुगुन्दके 'सीवट' में किया गया था।

लेखका वंशावलीका भाग लेख नं० २३७ की 'रट्टवंशोद्भवः ख्यातो' पंक्तिसे शुरू होता है। प्रथम नाम नन्नका आया है। उसका पुत्र कार्तवीर्य था जो चालुक्य राजा आहवमल्ल या मोमेश्वरदेव प्रथमके अधीन था। सोमेश्वरदेव प्रथमका काल सर डब्ल्यू. इलियट (Sir W. Elliot) ने शक ९६२ (ई० १०४०-१) से लेकर शक ९९१ (ई० १०६९-७०) दिया है और इसी लेखसे यह पता चलता है कि कार्तवीर्यने ही कुण्डडी (जो कि उत्तरवर्ती लेखोंका 'कुण्डी तीन हजार' है) की सीमायें निर्धारित की थीं। इसके बाद तीन पीढ़ी बीतनेपर चौथी पीढ़ीमें कार्तवीर्य द्वितीयका नाम आता है। यह चालुक्यराजा त्रिभुवनमल्लदेव, पेमांडिदेव या विक्रमादित्य द्वितीय था।]

[JB, X, p. 194-198, ins. n° 2, 1st part]

१३१

बिलियूर—कन्नड़।

[शक ८०९=८८७ ई०]

भद्रमस्तु जिनशायनाय (I) शक-नृपातीता (त) काल-संवत्सगच्छे-

१ मूल लेखमें, "शक कालके ७९७ वर्ष व्यतीत होने पर" है।

नूनूरोम्बत्तनेय वर्षं प्रवर्त्तिसुत्तिरे स्वस्ति सत्यवाक्यकोङ्कुणिवर्म-
धर्म-महाराजाधिराज कुवलाल-पुरवरेस्वर नन्दगिरि-नाथ श्रीमत्-
पेर्मनडिय राज्याभिषेकं गेय्द पडि नेण्ठनेय वर्षदन्दु पा (फा) ल्गुण-
मासद श्री-पञ्चमे यन्दु शिवणन्दि-सिद्धान्तद-भटारर शिष्यर स्सर्व्व
(र्व) णन्दि-देवगं पेण्णे-गडङ्गद सत्यवाक्य-जिनालयके पेड्डोरे-
गरेय बिलियूर-प्पन्निर्पक्कियुमं सर्व्व-पाद-परिहार पेर्मनडि कोडो तोम्
भट्टरु-मासिर्व्वरं अय्-मामन्तरं वेड्डोरेगरेय एलपदिम्बरं एन्तोक्कलु इदक्कं
साश्री मले-मासिर्व्वरं अय्मुर्व्वरुमं (अय्-नूर्व्वरं) अय्-दामरिगरं इदक्के
कापु इदनक्कित्तो ब्राणासियुमं सासिर्व्वर्पार्व्वरुमं सासिरं कविले युम-
नक्कित्तोम् पञ्चमहापातकनक्कु सेदोजन लिखित्त (तं) बेळियूर ऐम्बडु-
गद्याण पोन्न एण्डु-नरु-वड्डुम् तेरुवोम् ।

[यह दान शकवर्ष ८०९ के चालू रहते हुए फाल्गुन महीनेके पाँचवें दिन, जिस वर्ष पेर्मनडिके राज्याभिषेकका १८ वां वर्ष चालू था, उन्होंने शिवनन्दि-सिद्धान्त-भट्टारके शिष्य सर्व्वनन्दि-देवको पेड्डोरेगरेके अन्तर्गत बिलियूरके १२ छोटे गाँव, हमेशाके लिये लगान वगैरः से मुक्त करके, दिये । यह दान पेन्ने-कडङ्गके सत्यवाक्य जिनचैत्यालयके लिये दिया गया था । ऐसा दीखता है कि 'सत्यवाक्य-कोङ्कुणिवर्म-धर्म-महाराजाधिराज' पेर्मनडि-की ही उपाधि या विरुद है । ये दोनों एक ही व्यक्ति हैं, अलग-अलग नहीं । ये कुवलाल-पुरके प्रभु तथा नन्दगिरिके नाथ थे ।

आगे लेखमें साक्षियों तथा संरक्षकोंका परिचय है । इस दानको भङ्ग करनेवालेको असुक-असुक पापका भागी बताया है । यह लेख सेदोजका लिखा हुआ है ।

बिलियूर की आमदनी ८० गद्याण सोना और ८०० (नाप) तन्दुल (चावल) की है ।]

१३२

हुम्मच—कन्नड़ ।

शक ८१९=८९७ ई०

[हुम्मचमें गुड्ड बस्तिकी बाहरी दीवालपर]

स्वस्त्यनवद्य-दर्शन महोप्र-कुल-तिलक नय-प्रताप-सम्पन्न पर-चक्र-
गण्डं गोण्डं बल्लानं काम्मुक-राम श्रीमत्-तोलापुरुष-विक्रमादित्यशा-
न्तरं शक-वर्षं येण्टनूर यिप्पत्तनेय वर्षं प्रवर्त्तिमुत्तिरे श्रीमत्-कोण्डकुन्दा-
न्वयद मोनि-सिद्धान्तद-व (भ) टारगें कल वसदिय माडिसियदकें
पोम्बुळ्चद (यहाँ दानकी विशेष चर्चा तथा वे ही अन्तिम वाक्यावयव
आते हैं) ।

इष्टनोर्व्वनधिंद्यतेगेन्दोसेदित्तुदम् ।

दुष्टनोर्व्वनदर फलवं तवे तिम्ववम् ।

मिष्टिमेले परमात्मने वन्दू..... ।

कष्टव्....विदिरन्ते कुल-शय मागुगुम् ॥

[स्वस्ति । जिनका दर्शन (मन) अनवद्य (निर्दोष) है, महोप्र-कुल-
तिलक, न्याय करनेमें प्रसिद्ध, विदेशी राज्योंके शूरवीरोंको पकड़नेमें चतुर,
धनुषको पकड़नेवाले रामकी तरह दिखनेवाले, तोलापुरुष विक्रमादित्य-
शान्तरने, (उक्त मिलिको), कोण्डकुन्दान्वयके मोनि-सिद्धान्त-भट्टारके
लिये एक पाषाणकी वसदि बनवाई, और इसके लिये (उक्त) दान
किये । शापात्मक श्लोक ।]

[EC, VIII, Nagar II, n° 60]

१३३

चल्लीमल्लै (जिला नार्थ आर्कट)—कन्नड़ ।

[बिना काल-निर्देशका]

१ स्वस्ति श्री [:] [II] शिवमार-आत्मजा (ज)-वरना प्रवर-
श्रीपुरुषनाम—

२ नातन तनयं । भुवनीशं रणविक्रमलवन मक (ग) न् रा—
 ३ जमल्लन् अमलिनचरितन् [॥ १] कण्डु गिर [१] वरमना ,
 भूमं—

४ डलपति राजमल्लन् अभयनुदारम् [१] पण्डितजन—

५ प्रियं कैय्-कोण्डान् कोण्डन्ते वसतियम्माडि—

६ सिदान ॥ [२]

अनुवाद—(श्लोक १) शिवमारके पुत्रोंमें सबसे अच्छा पुत्र श्रीपुरुष नामका (राजपुत्र) था । उसका पुत्र लोकप्रभु रणविक्रम हुआ । उसका पुत्र अमलचरित राजमल्ल हुआ ।

(श्लोक २) इसको सबसे अच्छा पर्वत समझकर, भूमण्डलपति, अभय एवं उदार तथा पण्डितजनप्रिय राजमल्लने इसे अपने अधिकारमें कर लिया, और तत्पश्चात् इसपर एक वसति (मन्दिर) बनवाई ।

[El, IV, n° 15, A.]

१३४

वह्नीमल्लै—कन्नड़ ।

[विना काल-निर्देशका]

(यह लेख दाहिनी तरफसे पहली प्रतिमाके नीचेका है)

१ स्वस्तिश्री [II] बालचन्द्र-भट्टार

२ शिष्यर् अञ्जनन्दि-भट्टार

३ माडिसिद् प्रतिमे गोवर्धन्

४ भट्टाररेन्दोडमन्त्रे [III]

अनुवाद—यह प्रतिमा भट्टारक बालचन्द्रके शिष्य भट्टारक अञ्जनन्दि (आर्यनन्दि) के द्वारा बनवाई गई; और प्रतिमा 'गोवर्धन भट्टारक' की है ।

[El, IV, n° 15, D.]

१३५

वल्लीमलै—कन्नड़ ।

[बिना काल-निर्देशका]

ब—यह लेख बाईं तरफसे दूसरी प्रतिमाके नीचेका है ।

श्री [II] अञ्जनन्दि-भट्टार प्र [ति] म [] म [r] ड [i] दा
[r] [II]

अनुवाद—स्वस्ति । भट्टारक या भट्टार अञ्जनन्दि (आर्यनन्दि) ने
(इस) प्रतिमाको बनाया ।

[EI, IV, n° 15, B.]

१३६

वल्लीमलै—कन्नड़ ।

[बिना काल-निर्देशका]

१ स्वस्ति श्री [III] बाणरायर

२ गुरुगच्छ भवणन्दि-भ-

३ टारर शिष्यरप्प देवसेन-

४ भट्टारर प्रतिमा [II]

अनुवाद—स्वस्ति श्री । यह प्रतिमा भट्टारक देवसेनकी है । ये
देवसेन बाणरायके गुरु भट्टारक भवणन्दि (भवनन्दि) के शिष्य हैं ।

[EI, IV, n° 15 C.]

१३७

मूलगुण्ड (जिला धारवाड़); संस्कृत ।

शक ८२४=९०३ ई०

लेख

श्रीमते महते शान्त्ये श्रेयसे विश्ववेदिने [I] नमश्चन्द्रप्रभाख्याय
जैनशासनमृद्वये [II] शकनृपकालेष्टशते चतुरत्तरविंशदु (त्यु)

त्तरे संप्रगते दुन्दुभिनामनि वर्षे प्रवर्त्तमाने [I] जनानुरागोत्कर्षे श्रीकृष्णवल्लभनृपे पाति महीं वितनयशसि सकलां तस्मात् पालयति महाश्रीमति विनयाम्बुधिनाम्नी धवलविषयं सर्वं [I] तस्मिन् मुळगुन्दा-
ग्ये नगरे वरैश्यजातिजात (तः) ख्यातः चन्द्रार्यस्तत्पुत्र-
श्रिकार्यो चीकरं (रत) जिनोन्नतभवनं तत्तनयो नागार्यो
नाम्ना [II] तस्यानुजो नयागमकुशलः अरसार्यो दानादिप्रोद्युक्तस-
म्यक्वसक्तचित्तव्यक्तः [III] तेन दर्शनाभरणभूषितेन पितृकारितजिनाल-
याय चन्द्रिकवाटे शेनान्वयानुगाय नरनरपतियतिपतिपूज्यपादकुमार-
शे(से)नाचार्यमी (मे) खवीरशे (से) नमुनिपतिशिष्यकनकशे
(से) नमुरिमुख्याय कन्दवर्ममालक्षेत्रे ए (ऐ) (छे) कमणिव-
कनकुटार्ये (ः) (य्ये) (र्य्य) क...वम्मानाहस्तात्सहस्रवल्लीमात्रक्षेत्रं
द्रव्यसिन्दु (धु) ना गृहीत्वा नगरमहाजनविदेशे दत्तं [II] तजिना-
लयाय त्रिशतपष्ठिनगरैः चतुर्भिः श्रेष्ठिभिः पिळ्ळग (छे) क्षेत्रे मह-
त्तावल्लीमात्रक्षेत्रं दत्तं [II] तजिनभवनाय विंशतिमहाजनानुमताद्वेळ्ळ-
चिकुलब्राह्मणैश्च तन्कन्दवर्ममालक्षेत्रे सहस्रवल्लीमात्रक्षेत्रं दत्तं [III]
एवं त्रीण्यपि नागवल्लिक्षेत्राणि सर्वावाधा

[यह शिलालेख जिस पत्थरके टुकड़ेपर है वह धारवाड़ जिलेके डम्बळ-
तालुकाके मूलगुण्डकी दीवालमें लगा हुआ है। इस टुकड़ेका शेष अंश
अभीतक नहीं मिला है। मगर सौभाग्यसे इसी बचे हुए टुकड़ेमें लेखका
महत्त्वपूर्ण भाग आ जाता है। लुप्त भागमें सिर्फ थोड़े-से अन्तिम वे ही
श्लोक हैं जिनमें लेखक रक्षण और मिटानेपर क्रमशः अनुग्रह (पुण्य)
और शापका वर्णन मिलता है। लेख पुराने टाहपके प्राचीन कनड़ीके
अक्षरोंमें खुदा हुआ है। ये प्राचीन कनड़ीके अक्षर गुफा-वर्णमाला (Cave-
alphabets) से बहुत-कुछ मिलते-जुलते हैं।

यह लेख धारवाड़ जिलेके मूलगुण्डमें वैश्य जातिके चन्द्ररायके पुत्र चीकार्यके द्वारा एक जैनमन्दिरके निर्माणका तथा उस मन्दिरकी तरफसे कुछ भूमिदानका उल्लेख करता है। यह निर्माण और दान दुन्दुभि संवत्सर शक ८२५ में किया गया था। उस समय राजा कृष्णवल्हभ राज्य कर रहे थे। लेखगत 'धवल' जिलेसे देशके किस भागसे मतलब है, यह स्पष्ट नहीं है। यद्यपि यह लेख लघु है, पर महत्त्वपूर्ण है। इसमें सन्देह नहीं है कि इस लेखका 'राजा कृष्णवल्हभ' वही है जो राष्ट्रकूट या रट कुलके राजा कृष्णराजदेव हैं और जो इसी पुस्तकके शिलालेख नं० १३० के अनुसार शक ७९८में राज्य कर रहे थे। बादके अन्य शिलालेखोंमें इन्हें ही रटवंशका प्रथम राजा कहा गया है।

पूर्ववर्ती चालुक्य राजाओंके उत्तराधिकार और कालके विषयमें बहुतसे सन्देह उत्पन्न होते हैं, लेकिन हम जानते हैं कि उनमेंसे तीन चालुक्य राजा राष्ट्रकूट युवराजोंके साथ बहुत ही सीधे और वातक संघर्षमें आये हैं। वे तीन राजा जयसिंह प्रथम, तैलप प्रथम और तैलप द्वितीय थे। राष्ट्रकूटवंश और चालुक्यवंशके पूर्ववर्ती राजाओंकी वंशावली यदि काल-सहित संग्रह की जाय तो वह इस विषयमें बहुत महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगी।]

[JB, X, p. 190-191, ins. n° 1]

१३८

कयातनहलि—कन्नड़।

[विना काल-निर्देशका (संभवतः लगभग ९०० ई०)]

भद्रमस्तु जिनशामनायानवरत.....दक्खिन्सुरासुरनरपतिमैलि-
माला.....णारविन्द-युगल शरवत्-श्रीराज्य-युवराज [रूप भद्र]
बाहु-चन्द्रगुप्त-मुनिपति-चरण-मुद्राङ्कित-विशालशि.....मान-जगत्त-
ना(या)मायितश्रीकल्बप्पु-तीर्त्त-सनाथ-बेलगोल-निवासि-.....श्रवण-
सङ्घ-स्याद्वादाधारभूतरप्प श्रीमत्स्वस्ति सत्यवाक्यकोङ्गणि-[व]-र्म-

† मूलमें "शक राजाके कालमें ८२४ वर्ष व्यतीत होतैपर" ऐसा पाठ है।

धर्म-महाराजाधिराज कलालपुर-चरेश्वर नंदगिरिनाथ स्वस्ति
समस्तभुवनविनूत-गङ्ग-कुल-गगननिर्मलतारापति जलधिजलविपुलयल-
यमेखलाकलापालङ्कतेलाधिपत्य-लक्ष्मी-स्वयं-वृत-पतित्वाद्यगणित-गुण-गण-
भूषण-भूषित-विभूति श्रीमत्पेर्मनडिगलुं एर्रेयप्पर-रसरुं इल्लु चागि
पेर्मनडिगल कल्लवसद अय्यर्परपिङ्गे कोमारसेन-भटाररु पडेद स्तिति
विलियक्कियुं सोल्लगेयु विडियुन् तुप्पमुमन् एल्ला-कालक्कं सर्व्व-बाधा-
परिहारमाणे विडिसि दरिदन् अल्लिदुण्डोनुं कोण्डोनुं पसुवुं पार्व्वरुं
केरैयुं आरमेयुं वारणासियुमनल्लिदो पञ्चमहापातकं

देवस्वं तु विषं घोरे, न विषं विषमुच्यते ।

विषमेकाकिनं हन्ति, देवस्वं पुत्र-पौत्रिकम् ॥

[इस लेखमें बताया गया है कि सत्यवाक्य कोङ्कणिवर्म धर्म-महारा-
जाधिराजने, जो कि कुवलाल नगरके अधिपति थे, और श्रीमत्पेर्मनडि
एर्रेयप्परसरने निम्नलिखित दान कुमारसेन भटारको पेर्मनडि पाषाण-
बसदिके लिये दिया:—सकेद चावल, मुफ्त भ्रम, धी । और हमेशाके लिये
किसी भी बुझीसे मुक्त कर दिया ।]

[EC, III, Servingapatam tl., n° 147]

१३९

कूलगेरी—कन्नड़ ।

[शकसं० ८३१=९०९ ई०]

[कूलगेरी (कूलगेरी प्रदेश) में तालाबके किनारेके पाषाणपर]

भद्रं भद्रेश्वरस्य स्यात् क्षुद्रवादिमदच्छिदः ।

....श्रीमज्जिनेन्द्रस्य शासनाय भवद्विषे ॥

१ इस लेखमें जो 'कल्वप्पु-तीर्त्त(र्थ)' शब्द है, उसका अर्थ चन्द्रगिरि है । इस
शिलालेखसे यह पता चलता है कि कल्वप्पुशिखर (चन्द्रगिरि) पर महामुनि
भद्रबाहु और चन्द्रगुप्तके चरणचिह्न हैं । यह शिलालेख लगभग शक सं० ८२२
का है ।

शि० ११

शक-नृप-कालातीत-संवत्सर-शतंगल् एन्तु-नूर सुवत्तोन्दनेय वरिष
प्रवत्तिस्सुत्तिरे खस्ति कोङ्कुणि-वम्म धम्म-महाराजाधिराज कुवळालपुर-
परमेश्वर नन्दिगिरि-नाथ श्री-नीतिमार्ग-पेम्मनडिगल् राज्य उत्तरोत्तरं
सल्लुत्तु इरे सान्तरर.....मेच्चे मणलेयारं कनकगिरिय-तीर्थद मीगे
बसिदिप् इम्मडिसि अरसरध्यक्षदोल् कनकसेन-भट्टारगे तिप्पेयूरोळ्द
अट्टदेर्युं कुरू-देर्युं उट्ट-सामन्त-देर्येल्ळवं विट्टन् इदन् आलिदों केर्युं
आरवेयुमन् आलिडु-कोण्डोम् महापातकमक्कुं

स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत् वसुधरां ।

षष्टिवर्षसहस्राणि विष्टायां जायते कृमिः ॥

[जिनशासनकी प्रशंसा । शक-नृपके सैकड़ों वर्ष बीतनेके बाद वर्त्तमान
८३१ वें वर्षमें; जब कि नीतिमार्ग-पेम्मनडि, नन्दगिरिनाथ, कुवलालपुर-
परमेश्वर कोङ्कुणिवम्म धर्ममहाराजाधिराजका राज्य चारों दिशाओंमें बढ़
रहा था—सान्तरर [सु] की सम्मतिसे, मणलेयारने, कनकगिरि-तीर्थकी
बसविको दुगुना करके, राजाके ही सामने, तिप्पेयूरमें कनकसेन-भट्टारको ऊपरके
कमरोंका कर, सेड़ोंका कर, तथा पूर्ण पोशाक पहिने सरदारोंका(?) कर
दिया । जो कोई इस दिये हुए दानको नष्ट करेगा, उसे तालाब या कुँआरे
नष्ट करनेका तथा और भी बड़ा पाप लगेगा, इत्यादि ।]

[EC, III, Malavalli tl., n° 30]

१४०

बन्दलिके—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक ८४०=९१८ ई०]

[बन्दलिकेमें, बल्लिके प्रवेश-द्वारके पाषाणपर]

स्वस्त्यकालवरिष श्री-पृथुवी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परमभ-
ट्टारक श्री-कन्नर-देवरराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिगे सल्लुत्तिरे शकनृप-काला-

बरेदोम् नागवर्म्म देवारके कोट्ट केय् ग अबुतवूर्ग काळान्तरदोळ्
मोह-सन्दोम् पञ्च-महा-पातकनक्कु

यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ।

(बाजूमै) ई-कल्ल सन्दिगर कुलि.....मुहन् निरिसिदोम्.....

बेलेयम्मन मगम्

[जब प्रजापति संवत्सर शक वर्ष ८३४ में, लुहाराजाधिराज परमेश्वर परमभट्टारक कन्नर-देवका राज्य प्रवर्धमान था,—जिस समय कालिक देव-उत्तर-अन्वयके महासामन्त कलिबिट्टरस बनवात्ति १२००० का शासन कर रहे थे,—नागरखण्ड सत्तरके 'नाळ-नाखुण्ड' के पदको धारण करने-वाले सत्तरस नागार्जुनके मर जानेपर राजाने जङ्गियव्वेको आवुतवूर और नागरखण्ड-सत्तर दे दिया । जङ्गियव्वेने भी जङ्गलिमें मन्दिरके लिये ४ मत्तल आवलकी भूमि दी । एक बीमारीके समय उसने शक सं० ८४० में, बहु-धान्य वर्षमें, पूर्ण श्रद्धासे बसदिमें आकर समाधिमरण ले लिया ।]

१४१

गिरनार—संस्कृत-भग्न ।

(काल लुप्त)

[यह लेख नेमिनाथ मन्दिरके दक्षिण तरफके प्रवेशद्वारके पासके प्राङ्गणके पश्चिम दिशाकी तरफके एक छोटे मन्दिरकी दीवालपर है । पाषाण टूटा हुआ है ।]

॥ स्वस्ति श्रीश्रुति

॥ नमः श्रीनेमिनाथाय ज

॥ वर्षे फाल्गुन शुदि ५ गुरौ श्री

॥ तिलकमहाराज श्रीमहीपाल

॥ वयरसिंहभार्या फाउसुतसा

॥ सुतसा० साईआ सा० मेलामेला

॥ जसुतारूडीगांगीप्रभृती
॥ नाथप्रासादा कारिता प्राताष्ट
॥द्रसूरि तत्पट्टे श्रीमुनिसिंह
॥कल्याणत्रय

अनुवादः—स्वस्ति श्री धृति.....श्री नेमिनाथको नमस्कार...
...वर्ष.....फाल्गुन सुदी ५, बृहस्पतिवार, श्री.....श्रीमहीपाल,
महाराज और.....के तिलक.....फाऊ नामकी वयरसिंहकी
भार्या; उसका पुत्र माननीय.....उसके पुत्र माननीय साईंआ और
मेलामेला.....उसकी पुत्रियाँ रूडी, गांगी इत्यादि। इन सबने
एक नेमिनाथका मन्दिर बनवाया —जिसकी प्रतिष्ठा.....द्रसूरिके
पट्टपर विराजमान श्रीमुनिसिंहने की.....कल्याणत्रय...

[ASI, XVI, p. 353-354, n° 11

१४२

सूदी (जिला-धारवाड़)-संस्कृत और कन्नड़ ।

शक सं. ८६०=१३८ ई०

लेख

पहला ताम्रपत्र

१ श्रीर्विभाति सुवि (धी) र्यस्य निरवद्य [I] निरत् (य्) अया
तस्मै नमोऽर्हते

२ लोक-हित-धर्मोपदेशिने ॥ जित [-] भगवता [गत]-घनग-
[ग] नाभे—

३ न पद्मनाभेन [II] श्रीमजाहवीय-कुला[म] ल-व्योनात्रभासन-
भास्करः ॥

- ४ स्व-खड्गैक-प्रहार-खण्डित-महा-शीलास्तम्भ-लब्ध-बल-पराक्रमो
दारुणा-
- ५ रि-गण-विदारणोपलब्ध-त्र (त्र)ण-विभूषण-भूषितः क[१]ण्वा-
- ६ यन-सगोत्र [:] श्रीमत्-कोङ्कुणिवर्म्म-धर्म्म-महाराजाधिराजः [॥]
- ७ तत्पुत्रः । पितुस्त्वागत-गुण-युक्तो । विद्या-विनय-विहित-वृत्तिः
- ८ सम्यक्-प्रजा-पालन-मात्रा-वि(धि)गत-राज्य-प्रयोजनो विद्वत्-क-
वि-का-
- ९ अन्न-निकषोपल-भूतो नीति-शास्त्रस्य वक्तृ-प्रयोक्तृ-कुशलो दत्तक-
- १० सूत्र-वृत्ते(:)-प्रणेता श्रीमन्माधवमहाधिराजः । (॥) ओं तत्पुत्र[:]
पितृ-पैता-
- ११ महगुणयुक्तोऽनेक-चा(च)तु[^१] इन्[त]अ-युद्ध[१]वाप्त-चतु-
- द्वितीय ताम्रपत्र; दूसरी बाजू
- १२ रुदधि-सलीलाश्वादित्यशाह श्रीम[१]न् हरिवर्म्म-महाधिराजः [॥]
- १३ तत्पुत्रः श्रीमान् विष्णुगोप मह[१]धिराजः [॥] ॐ तत्पुत्रः
- १४ स्व-भुज-बल-पराक्रम-क्रय-क्र[^१] त्तराज्यः कलियुग-बल-पङ्काव-
- १५ सन्न-धर्म्म-वृषोद्धरण-निते(त्य)सन्नद्धः श्रीमान् माधव-महाधिराजः ।
(॥) ओं
- १६ तत्पुत्र[:] श्रीमत्-कदम्ब-कुल-गगन-गभस्तिमालिनः ।
कृप(ण)वर्म्म-स(म)-
- १७ हाधिराजस्य प्रिय-भागिनेयो विद्या-विनय-पूरिता-
- १८ न्तरात्मा निरवग्रह-प्रधान-शौच्यो विद्वत्पुं प्रथम-गण्य[:]श्रीमान्

१९ कौञ्जिवर्म-व (ध) र्ममहाराजाधिराज-पु(प) रमेश्वरः श्रीमद्-
अविनीत-प्रथम-

२० नामज (धे) यः [॥] तत्पुत्रो विजृम्भमाण-शक्ति-त्रयः अन्द-
रि-आलत्तूर-पुरुळरे-पेण्ण-

२१ गराधनेक-समर-मुख-मख-ह(यु)त-ग्रहत-शूरपुरुष-पशूप-हार-
विघ-

२२ स-विहस्ति(स्त्री)कृत-कृतान्ताग्निमुखः किरातार्जुनीयस्य पञ्चदश-
सर्ग-टीकाकारः]

दूसरा ताम्रपत्र; दूसरी बाजू

२३ श्रीमद्-[द]ुर्विनीत-प्रथम-नामधेयः [॥] ओं तत्पुत्रो दुर्दान्त-
श(वि)मर्द-मृदिते(त)-विश्व[']भरा-

२४ रि(धि)प-मो(मौ)लि-माल(र)-मकरन्द-पु[']ज-पि[']जरीक्ष (कि)-
यमाण-चरणयुगल-नलिनः श्री [मुष्क]र-

२५ प्रथम-नामधेयः । [॥] ओं तत्पुत्रश्चतुर्दशविद्यास्थानाधिगतेरमल-
मतिर्विशेषतो [नि] र-

२६ वशेषस्य नीति-शास्त्रस्य वक् [तृ]-प्रया (यो) कृ-कुशलो रिपु-
तिमिर-निकर-सरकरुणोदय-भा-

२७ स्करः श्री-विक्रम-[प्र]थम-नामधेयः [॥] ओं तत्पुत्रा(त्रो)ऽनेक-
समर-संप्राप्त-विजय-

२८ लक्ष्मी-लक्षित-वक्षस्थलः समधिगत-सकल-शास्त्रार्थः]श्री-भूवि-
क्रम-प्रथम-

२९ प्रथम-नामधेयः [॥] ओं तत्पुत्रः स्वकीय-रूपातिशय-विजी-
(जि) त-नल-भूपा-

- ३० काराशिवमा[र-प्रथम-ना]मध[े]यः [II] ओं तत्पुत्रः प्रतिदिन-
प्रवर्द्धमान-महादान-जनित-पुण्यो
- ३१ हसुल-मुखरित-मन्दरोदराः श्री कोङ्कुणिवर्म्म-धर्म्ममहाराजाधि-राज-
परमेश्वरः
- ३२ श्रीसु(पु)रुष-प्रथम-नामधेयः।(II) तत्पुत्रो विमल-ग[']गान्वय-
नभ[ः]स्थलः र(ग)भस्तिमाली श्रीकौं-
- ३३ गुणिवर्म्म-दा(ध)र्म्ममहाराजाधिराज-परमेश्वरः श्री श[ि]व-
मारदेव-प्रथम-नामधेयः ।
- ३४ शैगोत्तापरनामा [II] तस्य कनीयान् श्री-विजयादित्यः । (II)
र (त)त्पुत्रस्समधिगत-राज्य-
- ३५ लक्ष्मी-प(स)मालिङ्गित-वक्षः सत्यवाक्य-कोङ्कुणिवर्म्म-धर्म्मम-
हाराजाधिरा-

तृतीय ताम्रपत्र; पहली बाजू.

- ३६ ज-परमेश्वर[ः]श्री-राजमल्ल(ल्ल)-प्र[थ]म-नामधेयस्तत्पुत्रः रामति-
(? दि)-समर-संहा-
- ३७ लिप(रि)तोदार-वैरि-वि(वी)रपुरुषो नीतिमार्ग-कोङ्कुणि-वर्म्म-
धर्म्मराजाधिराज-परमेश्वर[ः]
- ३८ श्रीमद्-एळे(रे)गङ्गदेव-प्रथम-नामधेयः[II]ओं तत्पुत्रः सामिय-
समर-सञ्जनित-विज-
- ३९ [य]श्रीः श्री-सत्यवाक्य-कोङ्कुणिवर्म्म-धर्म्ममहाराजाधिराज-परमे-
श्वर[ः] श्री-राजमल्ल-

- ४० प्रथम-नामधेयः । (॥)ओं तसु(स्य)कनीयान् निछोरि(ठि)सं-पल्लवा-
धिपः श्रीम[द]मोघवर्षदेव
- ४१ पृथ्वीवल्लभ-सुतया^१ श्रीमदब्बलब्बायाब्बह(याः) प्राणेश्वर[:]
श्रीबुदुग-प्रथम-ना-
- ४२ मधेयः गुणदुत्तरङ्गः । (॥) ओं तत्पुत्रः । एळे(रे)यप्प-पट्टबन्ध-
परिष्कृत-लला[मो]ज(? वं)-
- ४३ टेप्पेरुप्पेळेरु-प्रभृति-युद्ध-प्रबन्ध-प्रकवि (टि) त-पल्लर(व)पराजय[:]
श्री-[नी]त[ि म्]।र्ग-
- ४४ रंगिणिवर्म्म-र(ध)र्म्ममहाराजावि(धि)राज-परमेश्वर[:]
(रे)गङ्गदेव-प्रथम-नामधेयः
- ४५ कोमर-वेडेङ्गः । (॥)ओं तत्पुत्र[:]
श्री-सत्यवाक्य-कोङ्गुणिवर्म्म-धर्म्म-
महाराजाधिराज-परमेश्वर[:]
- ४६ श्रीमन्नरसि[]धदेव-प्रथम-नामध[]यः बी(वी)रवेडङ्गः ॥ ओं
तत्पुत्रः कोट्टमरद.....
- ४७ तोण्णिरग-श्री-नीतिमार्गी-कोङ्गुणिवर्म्म-धर्म्ममहाराजाधिराज-परमे-
श्वर[:]
श्री-र[जम]ल्ल-
- ४८ प्रथम-नामधेयः । कच्छेय-गङ्गः । (॥) ॐ त्रि(वृ) [॥]
तस्यानुजो निजभुजार्जित-सम्पदार्थो

तृतीय ताम्रपत्र; दूसरी बाजू

- ४९ भूवल्लभ [] समुपगम्य ल(ड)हाडदेशे श्री-बड़ेगं तदनु त-
- ५० स्य सुतां सहैव वाक्कन्यया व्यवहदुत्तवि (म)-धीस्त्रिपु-

१ 'निर्लुण्ठित' और भी शुद्धरूप होगा । २ 'सुतायाः' पढ़ो ।

- ५१ र्या [॥] अपि च ॥ लक्ष्मीमिन्द्रस्य हर्त्तुं गतवति दिवि यद्
बोदेगाङ्कि (के)
५२ महीशे ह [५]त्वा ल [ल् ?] एय-हस्तात्करि-तुरग-सितच्छात्रनि
(सि)-
५३ हासनानि । प्रा[दा]त् कृष्णाय राज्ञे क्षित [ि]-पति-गणनाम्ब-
५४ प्रणीर्य्य(ः)प्रतापात् राजा श्री-बूदुगाख्यस्समजनि विजि-
५५ नाराति-चक्रः प्रचण्डः ॥ कश्चातः किन्नु नागादळचपुर-पतिः
५६ कङ्कराजोऽन्तकस्य बिज्जाख्यो दन्तिवर्म्मा युनि (धि) निज-
बनवासी त्व-
५७ म राजवर्म्मा शान्नन्वं शान्तदेशो नुल्लु-गिरि-पतिर्दाम-रिर्दण्य-
भङ्ग [ः]

चतुर्थे तान्नपत्रः पहिली बाजू

- ५८ मध्येऽन्तं नागवर्म्मा भयमतिरभसाद् गङ्ग-गाङ्गेय-भू-
५९ पात् ॥ राजादित्य-नरेश्वरं गज-घटाटोपेन संदर्पित (म्)
६० जिह्वा देशत एव गण्डुगमहा निद्रोव्य^१ तज्जापुरीं नाळकोटे-
६१ प्रमुखाद्रि-दुर्ग-निवहान् दग्ध्वा गजेन्द्रान् हयान् कृष्णा-
६२ य प्रथितन्धनं स्वयमदात् श्री-ग[ः]ग-नारायणः [॥]
६३ आर्या ॥ एकान्तमत-मदोद्धत-कुवादि-कुम्भीन्द्र-कुम्भ-सम्मेदं ॥ (।)
६४ नैगम-नयादि-कुलिशैरकरोजयदुत्तरङ्ग-नृपः ॥ गद्यम् ॥
६५ सत्यनीतिवाक्य-कोङ्कुणिवर्म्म-धर्म्ममहाराधिराज-परमेश्वर [ः]

१ 'सितच्छत्र' पदो । २ संभवतः यह पाठ 'किवातः किन्नु' रहा होगा ।
३ 'निर्दाव्य' पदो ।

चतुर्थे ताम्रपत्र; दूसरी भाग

- ६६ श्री-ब्रतुग-प्रथम-नामधेयो नक्षिय-गङ्गः षण्णवति—
 ६७ सहस्रमपि गङ्ग-मण्डल [म्] प्रतिपाळ्या(य)न् पुरिकर-पुरे कृ-
 ६८ तावस्थानं (:) स (श) क-वरि [श] पुं षष्ठ्युत्तराष्ट[श]
 तेषु अतिक्रान्तेषु विका—
 ६९ नि(रि)-संवत्सर-का[^१] त[^१] क-नन्दीख (श्व)र-सु(शु)
 कृ-पक्षः अष्टम्यां आदित्यवारे
 ७० [खक]ीय-प्रियायाः सम्यग्द[^१]शन-विशुद्धतया प्रत्यक्ष-धै-(दै)
 ७१ वत्याः श्रीमदीवलाम्बिकायाः चैत्यालयाय मुल्घाटवी-स—
 ७२ सति-ग्राम-मुख्य-भूतायान्नगर्थ्यां सून्धां विनिर्मापिता—
 ७३ य खण्ड-स्पु(स्फु)टित-नवकर्म्मार्थं पूजाकरणार्थमाहारार्थं
 ७४ च पट् श्रा(श्र)मण्यो जनान् दानसन्मानादिना सन्तर्प्योत्तर-
 दिशायां

पाँचवाँ ताम्रपत्र

- ७५ राजमानेन दण्डेन षष्टि-निवर्त्तनं श्रीमद्वाडि(?)टि)युर्गण-मुख्य—
 ७६ स्य नागदेव-पण्डितायै ख[य]मेव पादो (दौ) प्रक्षाड्य(ल्य)
 सून्धां दत्तवान् [II]
 ७७ तस्याघट^१ पूर्वतः मानसिग-केय्-दक्षिणतः पन्नसिनेभूमिः प—
 ७८ श्विमतः के (को)प्परपोलमुत्तरतः बालुगेरिय बन्द पळं[III]
 अरुवणं गद्या—
 ७९ ण-त्रयं ग्रामो दीयते^२ ऽशेष-कर्म ग्रामो रक्षति ॥

१ 'वर्षेषु' इति शुद्धपाठः । २ 'पण्डितस्य' पढ़ो । ३ 'आघाटाः' पढ़ो ।
 ४ 'ददाल्यशेष' पढ़ो ।

८० सामान्योऽयं धर्म-सेतु^१ नृपानां काले-काले पालनीयो भवद्भि-
स्तवनि—

८१ तान् भाविनः पार्थिवेन्द्रो (न्द्रान्) भूयो-भूयो याचते रामभद्रः ॥
बहुभिर्व्वसु—

८२ धा भुक्ता राजभिस्सगरादिभि [ः] यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य
तस्य तदा फलम् ॥

८३ सुल्धाटवी-सप्तति-मुख्य-सून्धामचीकरं^१ जैन-गृहं प्रसिद्धं पद्-ग्रामणी-

८४ छि-विधान-पूर्व श्री दीवळ(१)म्बा जगदेकरम्भा । (॥)

ॐ । ॐ । ॐ

[J. F. Fleet, EI, III, n° 25, f., 8, t. et tr.]

भावार्थ

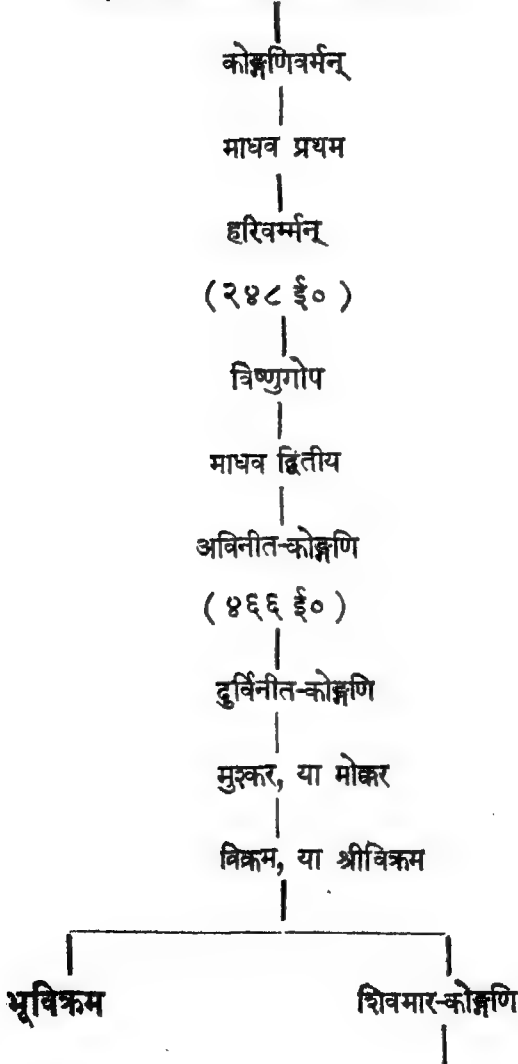
[यह शिलालेख अप्रैल, १९९२ ई० में जे. एफ. फ्लीटके देखनेमें आया । उन्होंने ही इसे, सबसे पहले, एपिग्राफिया इण्डिका, जिल्द ३, में (पृ० १५८-१८४) छपाया । यह उन्हें सूदीके एक निवासीसे ताम्रपत्रों (Plates) पर मिला ।

इस शिलालेखमें उस पच्छिमी गंग युवराज वृत्तगका उल्लेख है जिसने चोलराजा राजादित्य और राष्ट्रकूट राजा कृष्ण तृतीयके बीचमें ९४९-५० ई० में या इससे पहले हुए युद्धमें चोल राजा राजादित्यको मार डाला था । इस अभिलेखका उद्देश्य उस जमीनके दानका लेखन है जो उसने अपनी पत्नीद्वारा सून्दी, यानी सूदीमें निर्माण कराये गये जैनमन्दिरको दी थी । उसकी पत्नी का नाम दीवळाम्बा था । यह लेखन (Record) बनावटी है ।]

इस लेखपरसे फलित पूर्ववर्ती और उत्तरवर्ती पच्छिमी गंगोंकी वंशावली इस प्रकार है:—

१ 'अचीकरजैन' पदो ।

पूर्ववर्ती पश्चिमी गंगोंकी वंशावली



(पुत्र)

श्रीपुरुष-पृथिवी-कोङ्कणि

(७६२ तथा ७६६-६७ ई०)

उत्तरवर्ती पच्छिमी गंगोंकी वंशावली

भूविक्रम

शिवमार

श्रीपुरुष-कोङ्कणिवर्मन्

शिवमार सैगोत्त-कोङ्कणिवर्मन्

विजयादित्य

राजमल्ल-सत्यवाक्य-कोङ्कणिवर्मन्

एरेगङ्ग-नीतिमार्ग-कोङ्कणिवर्मन्

(रामटि, या रामदिके युद्धमें विजयी था)

राजमल्ल-सत्यवाक्य-कोङ्कणिवर्मन्

गुणदुत्तरङ्ग-बूतुग

(सामियके युद्धमें विजयी हुआ था)

(पल्लवराजाको हटकर

अमोघवर्षकी कन्या अम्बलम्बासे विवाह किया)

कोमरवेडङ्ग-एरेगङ्ग-नीतिमार्ग-कोङ्गुणिवर्मन्
(एरेयप्पके, या द्वारा, पट्टबन्धसे उसका ललाट शोभित था;
और उसने जन्तेप्परुपेक्षेरुमें पल्लवोंको हराया था)

वीरवेडङ्ग-नरसिंघ-सत्यवाक्य-कोङ्गुणिवर्मन्

कच्छेयगङ्ग-राजमल्ल-नीतिमार्ग-कोङ्गुणिवर्मन्

जयदुत्तरंग-गंगगांगेय-गंगनारायण-नन्नियगंग-

वूतुग-सत्यनीतिवाक्य-कोङ्गुणिवर्मन्

(९३८ ई०)

(इसने उहाळ देशके त्रिपुरीमें, बहेगकी पुत्रीसे विवाह किया था, बहेग-
की मृत्युपर कृष्णके लिये राज्य प्राप्त किया,—छलेय (?) के पञ्जेसे इसको
निकाला; अळबपुरके कल्लराजको, बनवासीके विज्ज-दन्तिवर्मन्को, राज-
वर्माको, जुळुबुगिरिके दामरिको, तथा नागवर्माको भय उत्पन्न किया;
राजादित्यको जीता, तञ्जापुरीको घेरा, और नाळकोटेके पहाड़ी किलेको
अला डाला । इसकी पत्नी दीवळाम्बा थी ।)

१४३

मदनूर—(जिला—नेल्लोर) संस्कृत ।

शक ८६७=९४५ ई० सन्

अथम पत्र ।

१ भद्रं स्यात्त्रिजगन्नुताय सततं श्रीमज्जिनेन्द्रप्रभोरुद्दामाततशासन[1]-

- २ य विलसद्धर्मावलंबाय च । सामर्थ्यात् खलु यस्य दुष्कलिकृता
दोषाश्च मिथोद्भवा (१) दु-
३ र्वृत्तानि च भूतलेन व्रिता शान्तिश्च निर्व्यंक्षितेः ॥१॥ स्वस्ति
श्रीमतां सकलभुवनसं-
४ स्तूयमानमानव्यसगोत्राणां हारितिपुत्राणां कौशिकिवरप्रसाद-
लब्धरा-
५ ज्यानाम्मातृग[ण]परिपालितानां स्वामिमहासेनपादानुध्यायिनाम्
भगव-
६ न्नारायणप्रसादसमासादितवरवराहलाञ्छनेक्षणक्षणवशिर्कृताराति
मण्ड[ला]-
७ नामश्चमेधावभृत्यस्नानपवित्रीकृतवपुषाम् चालुव्यानां कुलमलं-
करिणोस्सत्या[श्र]-
८ यवल्लभेन्द्रस्य भ्राता कुब्जविष्णुवर्द्धनोष्ट[१]दशवर्षाणि वैगि-
मण्डलमपालयत् । तदात्म-

प्रथम पत्र; दूसरी ओर ।

- ९ जो जयसिंहख्यत्रिंशतम् । तदनुजेन्द्रराजनन्दनो विष्णुवर्द्धनो
नव । तत्सुनुर्मंगियुवराज-
१० × पंचविंशतिन्तत्पुत्रो जयसिंहख्योदश । तदवरज[ः]कोकि-
लिषण्मासान् । तस्य ज्येष्ठो भ्राता
११ विष्णुवर्द्धन[स्त]मुच्चाव्य[स]मत्रिंशतम् वर्षाणि[१]तत्पुत्रो विज-
यादित्यभट्ट[१]रकोष्टदश । तत्सुतो

१२ विष्णुवर्द्धनषट्त्रिंशत्तम् । नरेन्द्रमृगराजाख्यो मृगराजपरा-
क्रमः[॥]विजयादित्य-भूपालश्चत्वारिंशत्समाष्टभिः

१३ [॥२॥]तत्पुत्रः कलिविष्णुवर्द्धनोऽप्यर्द्धवर्षं । त-

१४ त्पुत्रः परचक्ररामापरनामधेयः[॥]हत्वा भूरिनोडंबराष्ट्रवृत्ति-
मंगिमहासंग-

१५ रे गंगानाश्रितगंगकूटशिखरान्निर्जित्य सङ्ग[ह]लाघीशं संकि-
लमुग्रवल्लभयुतं यो भ [॥१॥]-

१६ ययित्वा चतुश्चत्वारिंशत्तमब्दकांश्च विजयादित्यो ररक्ष क्षितिं ।
[३] तदनुजस्य लब्ध-

दूसरा पत्र; दूसरी ओर ।

१७ यौवराज्यस्य विक्रमादित्यस्य सुतश्चालुक्यभीमार्जिंशत्[॥]
तस्याग्रजो विजयादित्यः

१८ षण्मासान् [॥] तदग्रसूनुरम्मराजस्सप्तवर्षाणि । तत्सूनुमाक्रम्य
बालं चालुक्यभीमपि-

१९ तृव्ययुद्धमल्लस्य नन्दनस्तालनृपो मासमेकं । नाना-सामन्तव-
र्गैरधिकबलयुतैर्म-

२० त्तामातंगसेनैर्हत्वा तं तालराजं विषमरणमुखे सार्द्धमत्युग्रते-

२१ जाः [॥] एकाब्दं सम्यगम्भोनिधिवलयवृतामन्वरक्षद्वरित्रीं श्रीमां-
श्चालुक्य-

२२ भीमक्षितिपतितनयो विक्रमादित्यभूपः । [४] पश्चादहमह-
मिकया विक्रमादित्यास्त-

२३ म [य]ने राक्षसा इव प्रजाबाधनपरा दायादराजपुत्रा राज्याभिला-
षिणो युद्धमल्लरा-

२४ जमार्त्तण्डकण्ठिकाविजयादित्यप्रभृतयो विप्रहीभूता आसन् ।।

विप्र—

तीसरा पत्र, पहली ओर ।

२५ हेणैव पंचवर्षाणि गतानि ।। ततः ।। योऽवधीद्र ।। जमा-
र्त्तण्डन्तेष ।। येन रणे कृतौ ।। क—

२६ ण्ठिकाविजयादित्ययुद्धमल्लौ विदेशगौ ।। ५ ।। अन्ये मान्यमही-
भृतोपि बहवो दु—

२७ छप्रवृत्तोद्धता (:) देशोपद्रवकारिणः प्रकटिताः कालालयं प्रापिताः
।। दोईण्डेरि—

२८ तमण्डलाप्रलजया यस्योप्रसंग्रामकावाज्ञा^१ तत्परभूतृपैश्च

२९ शिरसो मालेव सन्धार्यते ।। ६ ।। नादग्ध्वा विनेवर्त्तते रिपुकुलं
कोपाग्निरामूल—

३० तः शुभ्रं य [स्य] यशो न लोकाविवलं सन्तिष्ठते न भ्रमत् ।।
द्रव्यांभोधरराशिरप्यनुदिनं

३१ सन्तप्यमाने भृशं दारिद्र्योपतरातपेन जनतासस्ये न नो वर्षति ।
[७] स चालुक्यभीमनप्ता वि—

३२ जयादित्यनन्दनः ।। द्वादशावसमास्तस्यैव राजमीमो धरा-
तलं ।। ८ ।। तस्य महेश्वरम्—

तीसरा पत्र, दूसरी ओर ।

३३ तैरुमासमानाकृतेः कुमारामः ।। लोकमहादेव्याः खलु यस्तम-
भवदम्भ[रा]—

३४ जालयः ।। ९ ।। जलजातपत्रचामरकलशांकुशलक्षणां [क] करचर-

गतलः [१] लसदाजा—

३५ न्वलंबितमुजयुगपरिवो गिरिन्द्रसानूरस्कः ॥ [१०] विदितधरा-
धिपविद्यो विविधायु—

३६ धक्रोविदो विलीनारिकुलः [१] करितुरगागमकुशलो हरचरणांभोज-
युग—

३७ लमधुपश्रीमान् ॥ [११] कविगायककल्पतरुर्द्विजमुनिदीनान्व-
बन्धुजन—

३८ सुरभिः [१] याचकगणचिन्तामणिरवनीशमणिर्महोप्रमहसा धुमणिः
॥ [१२] गिरिरिर्वसु—

३९ संख्याब्दे शकसमये मार्गशीर्षमासेस्मिन् [१] कृष्णत्रयोदश-
दिने भृगुवारे मैत्रनक्षत्रे [॥ १३]

४० धनुषि रवौ घटलभे द्वादशवर्षे तु जन्मनः पटं [१] योधादुदय-
गिरिन्द्रो रविमिव लोका—

चतुर्थ पत्र, पहली ओर ।

४१ नुरागाय ॥ [१४] स समस्तभुवनाश्रयश्रीविजयादित्यमहाराजा-
धिराजपरमेश्वरः परम[धा]—

४२ म्मिन्मोम्मराजकम्मनाण्डुविषयनिवासिनो राष्ट्रकूटप्रमुखान् कुट्ट-
म्बिनरुसर्व्व[१] नित्यमाज्ञापयति [१]

४३ आर्या[ः] । किरणपुरमधाक्षीत्कृष्णराजास्थितं यत्किपुरमिव महे-
शः पा[ण्डु ?] रंग[ः] प्रतापी [१] तदिह [सु]—

४४ खसहस्रैरन्वितस्याप्यशक्यं गणनममलकीर्तस्तस्य सत्साहसानाम् ॥
[१५] तस्य[१] त्म-

४५ जो निरवद्यधवलः] कटकराजपट्टशोभितललाटः [I] तत्तनयो
विजयादित्यकट-

४६ काधिपतिः] । वृत्तं । तत्पुत्रो दुर्गराजः प्रवरगुणनिधिर्धार्मिक-
स्सत्यवादी त्यागी भो[गी]

४७ महात्मा समितिषु विजयी वीरलक्ष्मीनिवासः [I] चालुक्यानां च
लक्ष्म्या यदसिरपि सदा रक्षणा[यै]-

४८ व वंशः] ख्यातो यस्यापि वेंगीगदितवरमहामण्डलालंबनाय ।
[१६] तेन कृतो धर्मपु[रीद]-

४९ क्षिणदिशि सज्जिनालयश्चारुतरः [I] कटकाभरणशुभांकितनाम
च पुण्यालयो वसति [॥ १७]

चतुर्थे पत्रे; द्वितीय ओर ।

५० [श्री] यापनीयसंघप्रपूज्यकोटिमडुवगणेशमुख्यो यः [I] पुण्या-
हर्नन्दिगच्छो जिननन्दिमुनीश्वरो [य] ग-

५१ [ण] धरसदृशः । [१८] तस्याग्रशिष्यः प्रथितो धरायाम् [I]
दिव[I]कराख्यो मुनिपुंगवोभूत् [I] यत्केवलज्ञाननिधि-

५२ र्महात्मा स्वयं जिनानां सदृशो गुणैः ॥ [१९] श्रीमान्दि-
रदेवमुनिस्तुतपोनिधिरभवदस्य शिष्यो धीम[I]न् [I] य-

५३ म्प्रातिहार्यमहिम्ना संपन्नमिवाभिमन्यते लोकः [॥ २०] तद-
धिष्ठितकटक[I]भरणजिनालय[I]-

५४ य कटकराजविज्ञप्ते खण्डस्तुटनवकृत्याबलिप्रपूजादिसत्रसिद्ध्यर्थमु-

१ इस सम्पूर्ण समाससे 'कटकाभरणशुभनामांकित' अपेक्षित है, जिसके रख-
नेसे छन्दोभङ्ग हो जाता ।

५५ तारायणनिमित्ते मलियपूण्ड्रनामग्रामटिका सर्वकरपरिहार(म्)
मुदक-

५६ पूर्वं कृत्वा दत्ता । अस्य ग्रामस्यावधयः पूर्वतः मुंजुन्यरुं ॥
दक्षिणतः यिनिमिलि ॥ पश्चिम]-

५७ तः कल्वकुरु ॥ उत्तरतः[] धर्मवुरमु ॥ एतद्ग्रामस्य क्षेत्रा-
वधयः पूर्वतः गोळुनि-

५८ गुण्ट ॥ आग्नेयतः[] राविषपेरिय ॐ वु । दक्षिणतः स्थापित-
शिला ॥ नैर्ऋत्यां स्थ[] पितशिलैव []

पञ्चम पत्र ।

५९ पश्चिमतः मल्लक ॐ को ॐ बोयुनट[] कश्च ॥ वायव्यतः
ॐ

स्थापितशिलैव । उत्तरतः दुव[चे] ॐ वु []

६० ऐशान्याम् (१) कल्वकुरि ऐव्वोक्चेनि सीमैत्र सीमा ॥

[चूँकि लेखमें एक जैनमन्दिरके दानका उल्लेख है, अतः इसका प्रारम्भ जैनधर्मके मंगलाचरणसे किया गया है । पंक्ति ३ से लेकर ४१ में पूर्वी चालुक्य वंशकी 'समस्तभुवनाश्रय' विजयादित्य (छठे) या अम्मराज (द्वितीय) तक की वंशावली है । वंशावलीके भागमें ऐतिहासिक महत्त्वके दो स्थल हैं, पहिला (पं० १३-१६) विजयादित्य तृतीयके राज्यका वर्णन करता है और दूसरे (पं० २२-३२) में चालुक्यभीम द्वितीयका अभिषेक अर्थात् राजतिलक है ।

शिलालेखमें वर्णित मङ्गि नोलम्बवाडिका एक पल्लव राजा और सङ्घिक दाहल (या चेदि) का प्राचीन सरदार मालूम पड़ता है । अन्तमें इस शासन (लेख) में विजयादित्य तृतीयका एक नया उपनाम परचक्रराम (पं० १४) आता है । विक्रमादित्य द्वितीयकी मृत्युके बाद बराबर पाँच वर्षतक मुद्दमल्ल, राजमार्तण्ड और कण्ठिका-विजयादित्यमें लड़ाई होती रही । अन्तमें राजभीम (या चालुक्यभीम द्वितीय) राजमार्तण्डका बधकर, कण्ठिका-

१ या सम्भवतः 'मुंजुन्यरु' ।

विजयादित्य और युद्धमल्लको हराकर या देशनिकाला देकर व्यवस्था एवं साम्रिक के स्थापनमें सफल हुआ ।

उल्लिखित दान उत्तरायणमें (पं० ५४) किया गया था । दानपात्र एक विनमन्दिर था, जो धर्मपुरी (श्लोक १०) के दक्षिणमें तथा यापनीयसंघके एक मुनिके अधिकारमें था । इसकी स्थापना 'कटकराज' (पं० ५४) दुर्गराज (श्लो० १६) ने की थी और उन्हींके उपनामसे वह कटकाभरण-विनालय (श्लो० १७ तथा पं० ५३) कहलाया । इसकी प्रार्थना पर (पं० ५४) ही दान किया गया था, और दानके वर्णनका भाग उसके कुटुम्बकी वंशावलीके वर्णनसे शुरू होता है । कहा गया है कि उसके पूर्वज पाण्डुरंगने कृष्णराज (श्लो० १५) के निवासस्थान किरणपुरको जला दिया था, और वदनुसार वह विजयादित्य तृतीयका कोई सैनिक अधिकारी होना चाहिये । उसके पुत्र निरवद्यधवलको 'कटकराज' का पद दिया गया था (पं० ४४) । उसका पुत्र 'कटकाधिपति' विजयादित्य (पं० ४५) था, और उसका पुत्र दुर्गराज (श्लो० १६) था ।

दान की गई चीज मल्लिषपूण्ड (पं० ५५) नामका एक छोटा गौच था; यह कम्मनाण्डु (पं० ४२) जिलेमें था । इसकी सीमाएँ पंक्ति ५६ में दी गई हैं । उत्तरकी सीमा धर्मपुरमु (धर्मपुरी) के दक्षिणमें यह विनालय था ।]

[·EI, IX, n° 6]

१४४

कलुचुम्बरु (जिला जप्तीली)—संस्कृत तथा तेलुगू ।

[विना कालनिर्देशका (ई० सन् ९४५ से ९७० के लगभग)]

ओं स्वस्ति श्रीमतां सकलभुवनसंस्तूयमानमानव्य-सगोत्राणां
हारिति-पुत्राणां कौशिकीवरप्रसादलब्धराज्यानाम्मातृगणपरिपालितानां
स्वामिमहासेनपदानुध्यातानां भगवन्नारायणप्रसादसमासादित-वर-वराह-
लाञ्छनेक्षणक्षणवशीकृतारातिमण्डलानामश्वमेधावभृतज्ञानपवित्रीकृतवपुषं
चालुक्यानां कुलमलंकरिणोस् सत्याश्रयवल्लभेन्द्रस्य भ्राता [I]

श्रीपतिविक्रमेणाद्यो दुर्जयाद्वलितो हतां

अष्टादशसमाः कुब्ज-विष्णुजिष्णुर्महीमपालयत् ॥(११)

तदात्मजो जयसिंहखयस्त्रिंशत् [१] तद-

दूसरा पत्र; प्रथम ओर

रुजेन्द्रराज-नन्दनो विष्णुवर्धनो नव । तत्सुनुर्मङ्गी-युवराजः
पञ्चविंशतिं । तत्पुत्रो जयसिंहखयोदश ॥ तस्य द्वैमातुरानुजः कोकिलिः
षण्मासान् [१] तस्य ज्येष्ठो भ्राता विष्णुवर्द्धनस्तमुच्चाव्य सप्तत्रिंशतम् ।
तत्सुतो विजयादित्यभट्टारकोऽष्टादश । तत्सुतो विष्णुवर्द्धनः षट्-
त्रिंशत् । तत्सुतो नरेन्द्रमृगराजस्साष्टचत्वारिंशत् । तत्पुत्रः बलि-वि-
ष्णुवर्द्धनोऽध्यर्द्ध-वर्ष [१] तत्सुतो गुणग-विजयादित्यश्चतुश्चत्वारिं-
शत् । अथवा ।

सुतस्तस्य ज्येष्ठो गुणग-विजयादित्य-पतिरं-

ककारस्ताक्षाद्वल्लभनृप-समभ्यर्चितभुजः

प्रधानः शूराणामपि सुभट-

दूसरा पत्र; दूसरी तरफ

चूडामणिरसौ

चतस्रश्चत्वारिंशतिमपि समा भूमिममुनक् ॥

तद्विभ्रातुर्युवराजस्य विक्रमादित्यभूपतेः ।

शत्रुवित्रासकृत्पुत्रो दानी कानीनसन्निभः ॥

जित्वा संयति कुष्णावल्लभमहादण्डं सदायादकन् (?)

दत्त्वा देव-मुनि-द्विजातिनयो धर्मार्थमर्थ्यम्मुहुः ।

कृत्वा राज्यमक्रोष्टकनिरुपमं संवृद्धमृदप्रजं

मीमो भूपतिरन्वभुङ्क्त भुवनं न्यायात् समाक्षिंशत् ॥

तदनु विजयादित्यस्तस्य प्रियतनयो महा-
 नधिकधनदस्सत्य-त्याग-प्रताप-समन्वितः ।
 परहृदयनि[२]मेदी नाम्नैव कोल्लविगण्ड-भू-
 पतिरकृत षण्मासान् राज्यन्नयस्थितिसंयुतः ॥

तस्याग्रसूनुरपराजितशक्तिरम्म-

राजः पराजितपरावनिराजराजिः ।

राजाभवद्विदितराजमहेन्द्रनामा

वर्षाणि सप्त सरणिः करुणारसस्य ॥

तस्यात्मजविजयादित्यबालमुच्चाढ्य श्रीयुद्धमल्लात्मज-
 स्तालपराजो मासमेकमरक्षीत् ॥ तमाहवे विनिर्जित्य चालुक्य-
 भीमतनयो विक्रमादित्यो विक्रमेणाक्रमे निक्षिप्य नव मासान-
 पालयत् ॥ ततो युद्धमल्लातालप-राजाग्रजन्मा सप्त वर्षाणि गृही-
 त्वाऽतिष्ठत् ॥

तत्रान्तरे विदितकोल्लविगण्ड-सूतो

द्वैमातुरो विनुत-राजमहेन्द्र-नाम्नः

मीमाधिपो विजितभीमबलप्रतापः

प्राचीं दिशं विमलयन्नुदितो विजेतुम् ॥

श्रीमन्तं राजमय्यन्-धच्छा-मुरुत्त(त)रन् तातविकिं प्रचण्डं
 बिज्जं स[जं च] युद्धे बलिनमतितरामय्यपं भीममुग्रं
 दण्डं गोविन्द-राज-प्रणिहितमधिकं चोळपं लोवविकिं
 विक्रान्तं युद्धमल्लं घटितगजवटान् सन्निहल्यैक एव ॥
 भीतानाश्चासयन् सच्छरणमुपगतान् पालयन् कण्टकानुत्-
 सन्नान् कुर्वन् सुगृहन् करमपरमुवो रक्षयन् स्वं जनौषं ।

तन्त्रन् कीर्त्तिं नरेन्द्रोच्चयमवनमयन्नार्जवन् वस्तुराशी-
नेवं श्रीराजमीमो जगदखिलमसौ द्वादशाब्दान्यरक्षत् ॥

तस्य महेश्वरमूर्तेरुमासमानाकृतेः कुमारसमानः

लोकमहादेव्याः खलु यस्समभवदम्मराज इति विख्यातः ॥

यो रूपेण मनोजं विभवेन महेन्द्रमहिमकरं

उरुमहसा हरमरि-पुरदहनेन न्यक्कुर्यन् भाति विदितनिर्मलकीर्तिः [II]

यद्बाहुदण्डकरवालविदारितारि-

मत्तेभकुम्भगलितानि विभान्ति युद्धे

मुक्ताफलानि सुभट-क्षटजोक्षितानि

बीजानि कीर्त्ति-विततेरिव रोपितानि । (II)

स समस्तभुवनाश्रयश्रीविजयादित्यमहाराजाधिराजपरमेश्वरपरममहा-
रकः परमब्रह्मण्योऽत्तिलिनाण्डुविषयनिवासिनो राष्ट्रकूटप्रमुखान् कुटुम्बि-
नस्समाहूयेत्थमाज्ञापयति ॥ अङ्कलि-गच्छ-नामा । बल-

चतुर्थपत्र; दूसरी बाज्

हारिगणप्रतीतविख्यातयशाः[.] । चातुर्वर्ण्य-श्रमण-विशेषानश्राणना-
भिलषित-मनस्कः ॥ श्रीराजचालुक्यानवपरिवारित पट्टवर्द्धिकान्व-
यतिलका । गणिकाजनमुखकमलद्युमणिद्युतिरिह हि चामेकाम्बामूढ
सा । (II) जिनधर्मजलविवर्धनशशिरुचिरसमानकीर्त्तिलाभविलोला ।
दानदयाशीलयुता चारुश्रीः श्रावकी बुधश्रुतनिरता ॥

यस्याः गुरुपंक्तिरुच्यते—

सिद्धान्तपारदश्चा प्रकटितगुणसकलचन्द्रसिद्धान्तमुनिः ।

तच्छिष्यो गुणवान् प्रभुरमितयशास्सुमतिरय्यपोटिमुनीन्द्रः ॥

तच्छिष्याऽर्हन्वङ्कितवरमुनये चामेकारवा सुभक्त्या ।

श्रीमच्छ्रीसर्व्वलोकाश्रयजिनभवनख्यातसत्त्वार्थमुच्चै ॥

र्व्वेङ्गिनाथाम्मराजे क्षितिभृति बलुचुम्बरुसुग्राममिष्टं ।

सन्तुष्टा दापयित्वा बुधजनविनुतां यत्र जग्राह कीर्त्ति ॥

उत्तरायणनिमित्तेन खण्डरफुटितनवकर्म्मार्थं सर्व्वकरपरिहारं शासनी-
कृत्य दत्तमस्यावधयः [I]

पूर्व्वतः आरुविल्लि । दक्षिणतः कोरुकोलनु । पश्चिमतः यिडि-
युरु । उत्तरतः युल्लिकोडमण्डु । तस्य क्षेत्रावधयः । पूर्व्वतः शर्करा-
कर्क । दक्षिणतः इरुलकोलु । पश्चिमतः इडियूरि पोल्गरुसु ।
उत्तरतः कश्चरिगुण्डु ॥ अस्योपरि न केनचिद्वाधा कर्त्तव्या यः करोति
स पञ्चमहापातकसंयुक्तो भवति । (II)

बहुभिर्व्वसुधा दत्तां (त्ता) बहुभिश्चानुपालिता ।

यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फल्म् ॥

खदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम् ।

षष्टिवर्षसहस्राणि विष्टायां जायते कृमिः ॥

अस्य ग्रामस्य ग्रामकूटत्वं कड्डलाम्बात्मज-कुसुमायुधाय दत्तं शाश्वतं ॥

अस्य ग्रामस्य [क ?] प्याभिधानं करवर्जितं ॥

आज्ञातिः कटकाधीशो भट्टदेवश्च लेखकः ।

कविः कविचक्रवर्त्ती शासनस्साशुक्रत्^१ ॥

पेडु-बलुचुबुवरिति शासनम्बुशेसिन भट्टदेवनिकार्हणन्दिभटारुलु
गुम्सिमिय रेड्डेड्लुगाम्बुलुनुण्डिपनु(पने) ण्डु तूमन नि बुट्लु विट्टु-पड्डु
ब्रसादश्चेसिरि [II]

[यह लेख प्राच्य बालुवचराजा अम्म द्वितीय अपरनाम बिजयादित्य पट्टकी प्रशस्ति है। इसका काल नहीं दिया है। लेकिन दूसरे प्रमाणोंसे पता चलता है कि उसका राज्याभिषेक शुक्रवार, ५ दिसम्बर, ९४५ ई० को हुआ था और उसने २५ वर्षतक राज्य किया था।

अत्तिलिनाण्डु प्रान्त (विषय) के कल्लुगुवर्ह नामके गांवके दानका इसमें उल्लेख है। यह दान बलहारि गण और अडुकलि गच्छके अर्हन्निन्द जैन गुरुको दिया गया था। दानका प्रयोजन सर्व्वलोकाश्रय-जिनभवन नामके जैनमन्दिरके धर्मादिकी भोजनशाला (या भोजनभवन) की मरम्मत वगैरः कराना था। यह दान स्वयं अम्म द्वितीयने किया था, लेकिन पट्टवर्धिक वंशकी और अर्हन्निन्दकी एक शिष्या चामेकाम्बाकी ओरसे दिलवाया गया था। प्रशस्तिके अन्तका तेलुगू भाग स्वयं अर्हन्निन्दके द्वारा प्रशस्तिके लेखकको दिये गये एक इनामका जिक्र करता है।]

[EI, VII, n° 25, f. 5.]

१४५

हुम्मच—संस्कृत।

[काल लुप्त, संभवतः लगभग ९५० ई० (लु० राइस) ।]

[पार्श्वनाथवस्तिके दरवाजेकी पश्चिम ओरकी दीवालपर]।

श्रीमत् स्वस्त्यनवध-दर्शन-महोमरं प्रताप-सम्पन्नं पर-चक्रगण्डं....
य्युत्तिरे शक-वर्षमेण्टु-नू.....नाड नाळगामुण्डं मळते-
 यर म.....सर्गतनू.....नाळगामुण्ड बी...ळिडोळ् किषुकवे
 सर्गतन बाणसिगेयाकेय पिरिय-मगं...ळियकं तोलापुरुष-सान्तरन
 बळेयाके तम्मब्बेय सन्या...लुत्तमी-कळ बसदियुमोन्दु-देवारमुमं माडि-
 सिदळ्...श्रीसामियब्बे सेदेगोड्डे सान्तरन विन्ननप्प भोगमं नोडेनेन्द-
 रसि...पषिट्टु प्रभावति-कन्तियरेन्दु पेसरं कोण्डु सन्यासनं गेळोडे...
 कुक्कस-नाड किषिय-सालेयुरं बसदिगित्तं बलक-नाड सुळ्ळिगोडं देवा-
 रक्के...भटारगे बळियं नदि बसदिगं देवारक्कं कोड्डळ् पाळियकं बोलि-

यकं पुत्तु.....णकेय्यं.....ईर्कण्डुग-बित्तवुदं कोट्ठळ् कुन्दस्यं कोन्दरोळ्.....
 ...येम्बुदु मण्णिर्कण्डुग.....इं पोरवकनुं सेम्बकनुं पाळियकन केळ-
 दिये पुळियण्णवी-धम्मं नडयिसु.....री-नाडरसं रणविक्रमं पाळियकन
 बसदिगे बदरीनाडानन्दु प्पनेरड वण्ण तम्म बाणसिगेय वयलं कोट्ठ
 ईधम्मं श्रीसामियच्चे गेल्लुगनं मुज्जे सालिय्.....र ने डि पाळियकन
 बसदिगित्तळ् गेल्लुगन धम्मं कावोनुं नडयिसुकोनु.....गळ महा श्री ॥
 श्री-माधवचन्द्रत्रैविद्य-देवर शिष्यरप्प नागचन्द्र-देवर पुत्र मादेय-
 सेनबोव.....स.....पुन-प्रतिष्ठेयं माडिदनु मङ्गळ महा श्री श्री-नीतरा[ग] ॥

[स्वस्ति । जिस समय अनवद्यदर्शन, महोग्र, प्रतापमन्त्र, परचक्रगण्ड,
शासन कर रहा था,—(उक्त मितिको), प्रत्यक्षरूपसे
 तोलापुरुष-शान्तरकी पत्नी पालियकने, अपनी माताकी मृत्युपर, पालि-
 यकक बसदि नामकी एक पाषाण-बसदि खड़ी की और बहुतसे दान इसके
 लिये किये गये ।]

[EC, VIII, Nagar th., n° 45]

१४६

कुम्भी—संस्कृत तथा कन्नड़—भ्रम ।

[वर्ष साधारण ९५० ई० (लु० राहत)]

[कुम्भीमें, किलेके भण्डार-गृहके पासके पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

तनगेन्दु.....व.....नन्- ।

द.....पुत्रव्रति-मीतिय.....मतावष्टम्भदि माडि को- ।

डनो जाम.....सोम्युवेत्त पोळलोळ् कुम्भशिकेयोळ माडिदम् ।

जिन-मोहङ्गळवाशेयि पळवु.....॥

.....धिणेन्द्र.....तुङ्गाद्रिय ।

दोरेय.....भक्ति-मनर्दि पुम्बुचुमिपन्नेगम् ।

.....लोकियब्बेयं जिन-गोहमं माडिदम् ।

धरेयेल्लं पोगळ्वन्नेगं बि.....अवनीपाळक्कम् ॥

जिनदत्त-रायं श्रीमन्महा.....धिपति-बोम्मरस-गौडर
मक्कल्लु.....ति-दत्त तन्न अनुज मानिभद्र-गौडर मक्कल्लु रायविभाड
राज.....रेवन्त नडे-गौड सुरितण्ण हिरिय-तम्मगौडर मुख्यवाद आतन
अनुज पम्भयनु आतन तम्म चिक्क-तम्म-गौडर आतन अनुज होन्नण-
गौडर धर्म-शासनवं साधारण-संवत्सरद कार्तिक-सुद्ध-पुन्नमि-सो.....
.....सेट्ठि सोक्कि-सेट्ठि पदुम-सेट्ठि.....वाद आ-
दिव्य-स्थानके.....सन्दायवेन्दु.....देरिगे येन्दु विट्ठि येन्दु केळ-
सल्लदु ईधम्मव नडसिदवरिगे स्वर्गपदव पडेवरु ईधम्मके तप्पिदवरु
एल्लनेय नरक्कके होहरु जिन-रभिषेक-निमित्तं । घन-पूर्णं कुम्बकेन्दु
**कुम्बसे-पुरमम् । जिनदत्त-रायनित्तं । कनक-कुलोद्भवुरु कलस-
राजान्वयरम् ॥** सन्नकोप्पद वस्तियिन्द बडगलु बेळल कोप्पद केरे.....
कल्लु सरुद्ध सह विट्ठरु.....बीजवरि.....कोट्टरु प्रतिपालिसुवदु

[जिनशासनकी प्रशंसा । पोल्लु और कुम्बसिवेमें, पोंम्बुच
बबत्तक जिन्दा रहे तबतक उन्होंने जिनमन्दिर बनवाये; जिनमन्दिरमें लोक-
बब्बेकी स्थापना की । और जिनदत्त-राय [की स्वीकृतिसे], शासक
बोम्मरस और अनेक गौडोंने (जिनके नाम दिये हैं),— तथा कुछ सेट्ठि
लोगोंने उक्त भित्तिको इसके लिये वार्षिक दान दिया । शापात्मक श्लोक ।

जिनदत्तराय, जिसने जिनके अभिषेकके लिये कुम्बसे-पुरका दान किया
था, कलस राजाओंके खानदानके कनककुलमें उत्पन्न हुआ था । उसने कुछ
बसीन भी दी थी ।]

१४७

खजुराहो—संस्कृत

(विक्रम संवत् १०११=९५५ ई०)

- १ ॐ [॥] संवत् १०११ समये ॥ निजकुलधवल्लोय दि-
 २ व्यमूर्ति खसी (शी) ल स (श) मदमगुणयुक्त सर्व-
 ३ सत्वा (त्वा) नुकंपी [॥] स्वजनजनिनतोषे धांगराजेन
 ४ मान्य प्रणमति जिननायोय भव्यपाहिल (ल) -
 ५ नामा । [॥] १ ॥ पाहिलवाटिका १ चन्द्रवाटिका २
 ६ लघुचंद्रवाटिका ३ सं (शं) करवाटिका ४ पंचाइ-
 ७ तलवाटिका ५ आम्रवाटिका ६ ध (धे?) गवाडी ७ [॥]
 ८ पाहिलसे (शे) तु क्षये क्षीगे अपरवंसो (शो) यः कोपि
 ९ तिष्ठति [॥] तस्य दासस्य दासोय मम दतिस्तु पाल-
 १० येत् ॥ महाराजगुरुल्ली (श्री) वासवचंद्र [॥] वैसा (श) व (ख)
 ११ सुदि ७ सोमदिने ॥

[एपिग्राफिया इण्डिका, जि० १, पृ० १३६]

[El. 1, p. 135-136]

[यह शिलालेख खजुराहोमें जिननाथके मन्दिरके बायें दरवाजेपर उत्कीर्ण है। इसमें ११ पंक्तियाँ हैं। इसमें बताया गया है कि राजा धाङ्ग या धाङ्गके राज्यकालमें विक्रम सं० १०११ या ९५४ ई० में भव्य पाहिल या पाहिलने जिननाथके मन्दिरको बहुत तरहकी वाटिकाओं (छोटे उद्यानों या बगीचों) का दान किया। वानोंके निम्नलिखित नाम हैं:—

१. पाहिल-वाटिका, या पाहिल बगीचा
२. चन्द्र-वाटिका, या चन्द्र बगीचा
३. लघु-चन्द्रवाटिका, या छोटा चन्द्र बगीचा
४. शंकर-वाटिका, या शंकर बगीचा

५. पञ्चाङ्ग-वाटिका ?

६. आश्व-वाटिका, या आश्वके पेड़ोंका बगीचा

७. धङ्ग-वाड़ी, या धङ्ग उद्यान-भवन ।

ए० कनिंघमने संवत् १०११ को सुधारकर और युक्तिपूर्वक सिद्ध कर इसको सं० ११११ पड़ा है । शिलालेखका पूरा श्लोक प्रो० एफ् कीलहो-
र्नेने इस तरह सुद्ध किया है:—

निजकुलधवलोर्य दिव्यमूर्तिः सुशीलः

समदमगुणयुक्तः सर्वसत्त्वानुकम्पी ।

सुजनजनितोषो धङ्गराजेन मान्यः

प्रणमति जिननाथं भव्यपाहिल्लनामा ॥ १ ॥]

१४८

सुहानिया [ग्वालियर]—संस्कृत ।

[सं० १०१३=९५६ ई०]

संवत् १०१३ माघवसुतेन महिन्द्रचन्द्रकेनकभा (खो ?) दिता
[सुहानियामें माघवके पुत्र महेन्द्रचन्द्रने एक जैन मूर्ति प्रतिष्ठापित
की । संवत् १०१३ ।]

[JASB, XXXI, p. 399, a; p. 410, t.]

[ई० ए० जिल्द ७, पृ० १०१-१११ नं० ३८ १-५१ की पंक्तियाँ]

१४९

लक्ष्मेश्वर—संस्कृत ।

[शक ८९०=९६८ ई०]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।

जीयान्नैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

१ यह 'प्रतिष्ठिता' का अपभ्रंश मालूम पड़ता है ।

खस्ति जितं भगवता गतघनगगनामेन पद्मनामेन [॥] श्रीमज्जाह-
वीयकुलामलव्योमावभासनभास्करः खखङ्गैकप्रहारखण्डितमहाशिलास्त-
म्भलब्धबलपराक्रमो दारुणारिगणविदारणोपलब्धव्रणविभूषणविभूषितः
कृष्णायनसगोत्रः श्रीमान् कोङ्कणिवर्म्मधर्म्ममहाराजाधिराजपरमेश्वर-
श्रीमाधवप्रथमनामधेयः ॥ तत्पुत्रः पितुरन्वागतगुणयुक्तो विद्याविनय-
विहितवृत्तः सम्यक्प्रजापालनमात्राधिगतराज्यप्रप्नोजनो विद्वत्कविकाञ्चन-
निकषोपलभूतो नीतिशास्त्रस्य वक्तृप्रयोक्तृकुशलो दत्तकसूत्रवृत्तेः प्रणेता
श्रीमन्माधवमहाराजाधिराजः ॥ तत्पुत्रः पितृपितामहगुणयुक्तो(ऽ)नेक-
चतुर्हस्तयुद्धावाप्तचतुरुदधिसलिलास्वादितयशः श्रीमद्भरिवर्म्ममहाराजा-
धिराजः ॥

अपिच ॥ वृत्त ॥

आसीजगद्गहनरक्षणराजसिंहः

क्षमामण्डलाब्जवनमण्डनराजहंसः ।

श्रीमारसिंह इति बृंहितबाहुकीर्ति—

स्तस्यानुजः कृतयुगक्षितिपालकीर्तिः ॥

आदेशादेवचोलान्तकधरणिपतेर्गंगचूडामणिस्त्वां
वेगादभ्येति योद्धुं त्यज गजतुरगव्यूहसन्नाहदर्पम् ।

गङ्गामुत्तीर्य गन्तुं परबलमतुलं कल्पयेत्पाप दूतै—
र्विज्ञप्तं गूर्जराणां पतिरकृति तथा यत्र जैत्रप्रयागे ॥

पद्माम्भोरुहभृङ्गभृत्यभरणव्यापारचिन्तामणिः

संत्रासग्रहविद्वलीकृतरिपुक्षमापालरक्षामणिः

विद्वत्कण्ठविभूषणीकृतगुणप्रोद्भासिमुक्तामणि—

दैवस्सजनवर्णनीयचरितश्रीगङ्गचूडामणिः ॥

मन्दाकिन्या जिनेन्द्रपुनर्विषयस्त्यन्दसम्पादितायाः

कालिन्ध्यामण्डवैरिप्रहतगजमदघेतनिर्व्वर्त्तितायाः ।

सम्पदे श्रीनिकेतनगुणभुवि भवतो गङ्गाकन्दर्पभूष-

व्यातन्यो दिग्वधूना विधुविजयी (यि) यशो हारमाचन्द्रतारम् ॥

अपि च ॥ वृत्त ॥

निर्वादोज्ज्वलबोधपोतबलतस्सिद्धान्तरत्नाकरम्

चारित्रोत्प्लुतयानपात्रबलतस्संसारमीनाकरम् ।

उत्तीर्णस्समुदीर्णभक्तिविनतैर्बन्धाभिधानो बुधै-

रासीद् देवगणाग्रणीर्गुणनिधिर्देवेन्द्रभङ्गारकः ॥

उडामकामकालिनिर्दलनैकवीर-

स्तस्यैकदेव इति योगिषु देव एकः ।

शिष्यो बभूव हृदि यस्य दधाति भव्यो

रत्नत्रयं शिरसि यच्चरणद्वयं च ॥

महितस्य तस्य महितैर्महतां, प्रथमस्य च प्रथमशिष्यतया ।

जयदेवपण्डित इति प्रथितः, प्रथमानशास्त्रमहिमद्रविणः ॥

अपि च ॥ गद्य ॥

तस्मै स भुवनैकमङ्गलजिनेन्द्रनित्याभिषेकरत्नकलशः स तु सत्य-

वाक्य-कोङ्गणिवर्म-धर्ममहाराजधिराजपरमेश्वरश्रीमारसिंहदेवप्रथम-

नामवेयः गङ्गाकन्दर्पः ॥ शुकनृपकालातीतसंवत्सरश्रुतेष्वष्टेसु-

नवत्युत्तरेषु प्रवर्त्तमाने विभवसंवत्सरे शङ्खवसति-तीर्थव-

सत्तिमण्डलमण्डनस्य गङ्गाकन्दर्पजिनेन्द्रमन्दिरस्य दानपूजादेवभोग-

निमित्तं पुलिगेरे-नगरात्पूर्व्वस्यां दिशि तल-वृत्तिं दत्ते स्म [॥] तस्या-

स्तीमा समाख्यायते तथवा ।

१ शुद्धपाठ संभवतः 'भूषणत्वेने' इति वाह्ये ।

कुमारीसरसः पूर्वस्यामाशायामेकनिवर्त्तनान्तरादुपलभ्युक्तदक्षिणस्यां दिशि बेलकनूरग्रामपश्चिमसीमः पावकदिशि कोष्ठितटाकपुरोवर्त्तिन-
 विशालसरसस्समीरणदिकोणे हस्ति-प्रस्तरात् पश्चिमस्यां दिशि बट-तटाक-
 पुरोनिर्गतनिम्नोत्तरदिग्वर्त्तिनः कृष्णपाषाणादुत्तरस्यां दिशि नामपुरग्राम-
 मार्गादक्षिणस्यां दिशायां मळिगमार्चण्डगृहक्षेत्रादैशान्यां दिशायामानी-
 लशिलायाः पुनः पश्चिमस्यां दिशि कृष्णसरसः उत्तरजलप्रवाहनिर्गमा-
 दुत्तरस्यां दिशि नीलिकार-तटाकागतप्रवाहादुत्तरस्यामाशायामेकनिव-
 र्त्तनान्तरे वायव्यदिकोणवर्त्तिरक्तपाषाणपार्श्ववर्त्तिन्याश्चम्याः । पूर्वदि-
 ग्मुखेनागत्योत्कीर्णादरुणपाषाणाश्चामपुरग्राममार्गस्योत्तरपार्श्वे पूर्वदि-
 ग्मुखेन गत्वोत्तरदिशं प्रति निवृत्तात्पश्चिमदिशायामेकनिवर्त्तनान्तरे
 पूर्वोत्तरदिशि कृष्णपाषाणादक्षिणस्यामाशायाम् शमी-कन्थारीगुल्मान्त-
 र्गतानीलशिलायाः पश्चिमतः पुरोक्तव्यक्तपाषाणयुगले सङ्गता सीमा
 [1] प्राक्प्रकाशितकृष्णसरःपुरोभागवर्त्तीनि षण्निवर्त्तनान्यभ्यन्तरी-
 कृत्य सुष्ठि(स्थी)कृतानि षष्टि-शतं निवर्त्तनानि ॥ तस्मादेव नगरा-
 द्दरुणदिग्भागवर्त्तिन्यास्तलवृत्तेस्सीमा समान्नायते तद्यथा । देशग्रामकूट-
 क्षेत्राद्वयव्यां ककुभि त्रिशमीरकोपलाद् वायव्यामाशायामेकशम्या आख-
 ण्डलदिशायामेकदण्डान्तरादरुणपाषाणादग्नेयकोणवर्त्तिनो विशालशमी-
 कन्थारीजालात्पश्चिमस्यां दिशि श्रेष्ठितटाकदक्षिणजलप्रवाहनिर्गमाद् बहु-
 भराजमार्गात् पूर्वस्यामाशायाम् कन्थारीगुल्मात् सवसी-ग्राममार्गादक्षि-
 णतश्चामीकन्थारीकुञ्जात् कुबेरकुम्भो वायव्यायामाशायाम् ज्येष्ठलिङ्ग-
 भूमेर्निर्गत्या हरितकृष्णपाषाणात् पूर्वस्यां दिशि बहुभराजमा-
 र्गात् पश्चिमस्यामाशायामुत्तरदिग्मुखप्रवृत्तमहाप्रवाहान्तर्गतकिबर-
 पाषाणाद् दक्षिणस्यां दिशायामन्वकारक्षेत्रात् पश्चिमसीमि प्राक्प्र-

कटीकृतारेशग्रामकूटक्षेत्राद् वायव्या दिशि त्रिशमीशोणपाषाणे सीमा
समागता । एवं पश्चिमदिग्बर्त्तानि चत्वारिंशच्छतं निवर्त्तनानि ॥ शङ्ख-
वसतेर्व्रासवदिशि निवर्त्तनमात्रः पु५प(पुष्प)वाटः पश्चिमदिशि च
निवर्त्तनद्वयद्वयो (?) पु५प(पुष्प)वाटः ॥ तस्य चैत्यालयस्य पुरप्रमा-
णमाख्यायते [१] पूर्वतः बाळबेश्वरपश्चिमप्राकारः पावकदिशि चम्प-
कारदेवगृहसीमान्तम् [१] तत्पश्चिमतः वारिवारणसीमां कृत्वा दक्षिणस्यां
दिशि पु५प(पु)वाटाङ्ग(?)जचैत्यपुरपुरः श्रीमुक्करवसतेः पश्चिमस्यां दिशि
गोपुरपर्यन्तात् पश्चिमदिग्बर्त्तिदेवगृहद्वयमभ्यन्तरीकृत्य मरुदेवीदेवगृहस्य
पश्चान्नागादुत्तरस्यां दिशि चन्द्रिकाम्बिकादेवगृहाद् पूर्वतः मुक्कर-
वसतिं प्रविष्टीकृत्य रायराचमल्लवसतिं(ति)दक्षिणप्राकारः ततः
पूर्वतः श्रीविजयवसतिदक्षिणप्राकारः ई (?)शान्यां दिशि कम्प-
टेश्वरदेवगृहं तदक्षिणतः पूर्वोक्तबाळबेश्वरपश्चिमसीमा [१] देवनगरा-
त्पश्चिमदिशि पु५प(पु)वाटद्वयनिवर्त्तनक्षेत्रं दत्तम् ॥ तस्य सीमा पृथक्प्र-
यते [१] परवसरसः पूर्वदिशि तपसीग्रामपथादुत्तरतो पु५प(पु)वाटनिव-
र्त्तनमेकं । गङ्गापेर्माडिचैत्यालयपु५प(पु)वाटादुत्तरतो निवर्त्तनमेकं
नागवल्लीवनम् । एवं गङ्गाकन्दर्पभूषाळजिनेन्द्रमन्दिरदेवभोगनिमित्तं
निवर्त्तनशतत्रयमात्रक्षेत्रं पु५प(पु)वाटत्रयमुर्व्वीशदेशग्रामकूटाकारविष्टिप्र-
भृतिबाधापरिहारं मनोहरमिदम् ॥ श्लोक ॥

बहुभिर्व्वसुधा दत्ता राजाभिस्सगरादिभिः ।

यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥

मद्राजाः परमहीपतिवंशजा वा

पापादपेतमनसो मुनि भाविभूपाः ।

ये पाळयन्ति मम धर्ममिमं समस्तं
तेषां मया विरचितोऽञ्जलिरेव भूर्ध्वे ॥

[यह शिलालेख धारवाड़ जिलेके दक्षिण-पूर्व कोनेकी ओर मिरज रिया-
सतके लक्ष्मेश्वर तालुकेके प्रसिद्ध शहर लक्ष्मेश्वरके शङ्खबसति नामके
मन्दिरमें पत्थरकी एक लम्बी शिलापर है। इसमें ८२ पंक्तियाँ हैं। मन्दिर
दक्षिणी उत्तरदिक्की पुरानी कर्णाटक (कन्नड़) लिपिके हैं। इसमें तीन
विभिन्न शिलालेख समाविष्ट हैं।

पहला भाग—१ से लेकर ५१ वीं पंक्ति तक गङ्ग या कोहु वंशका
शिलालेख है। इसमें उल्लिखित दान, ८९० शक वर्षके व्यतीत होनेपर और
जब विजय संवत्सर प्रवर्तमान था, भारसिंहदेव-सखबाक्य-कोङ्कणिवर्मा,
के द्वारा जिन्हें गङ्ग-कन्दर्प भी कहते थे, जयदेव नामके एक जैन पुरोहित
(पण्डित) को किया गया था। विजय संवत्सर शक ८९० ही था और
शक ८९१ शुक्ल संवत्सर था, इसलिये शिलालेखका समय ठीक दिया
हुआ है। यह दान पुलिगेरे (जिसका अर्थ होता है नीलेके तालाबका
नगर) नगरकी कुछ भूमियोंका था। इस 'पुलिगेरे' नगरको मिस्टर फ्ली-
डने लक्ष्मेश्वरका ही पुराना नाम माना है। यह दान एक जैनमन्दिरके
लिये, जिसे इसमें 'गङ्गकन्दर्प जिनैन्द्रमन्दिर' कहा गया है, किया गया
था। इस मन्दिरको स्वयं भारसिंहदेवने बनवाया था उसका जीर्णोद्धार
किया था।]

वंशावली इस तरह दी गई है:—

माधव-कोङ्कणिवर्मा
(या माधव प्रथम)

माधव द्वितीय

हरिवर्मा भारसिंह
भारसिंहदेव-सखबाक्य-कोङ्कणिवर्मा,
या
गङ्ग-कन्दर्प

[ई० ए०, खिन्न ४, पृ० १०१-१११, पं० १८ (१-५१ की प्रतियों)]

१५०

कहूँ—कहूँ

[पृ० ८९३=९०१ ई०]

[कहूँमें, किलेके दरवाजेके एक सम्भार]

(पश्चिममुख) स्वस्ति श्री-कोण्डकुन्दाम्बय देशिय-गण-मुख्यर देवे-
न्द्रसिद्धान्त-भटार-वर पिरियशिष्यर चान्द्रायणदभटारवर-शिष्य-
गुणचंद्र-भटारवर-शिष्यर श्रीमदभयणन्दि-पण्डित-देवर नाण-
ब्बे-कन्तियर शिश्निन्तियर्पण्डियर-धोरपय्यन पिरियरसि पाम्बब्बे
तले-वरिदु मवण-वरिसं तपं गेय्यदं नोन्तुच्छम-ठाणमेरिदवेरेदोन-
वर मगं विडि.....

(उत्तरमुख) परसे महा-प्रसाददोळोरेवकनिम्मडि-धोरनोन्दु-
तन्न् ।

अरसुममौल्य-वस्तुगलुमं कुडे बूतुरानकनेन्दु विसु ।

तरिसे धरित्रि जीय बेसनेनेने सन्दिबु सन्दवळेविन्दु ।

अरसु दलेन्दु पाम्बबेगळन्तु तपो-नियमस्तरादोइ (आदोइ) आइ ॥

स्वस्ति यम-नियम-स्वाध्याय-ध्यान्-मोनानुष्ठान-परायणे(यणे)यरप्प
श्री-पाम्बब्बे-कन्तियरय्दं नोन्तुच्छम-ठाण-मेरिदइ । वरेदोनवर मगनईव-
भक्तम् ।

(दक्षिण मुख) [ऊपरका छोक, जो 'परसे' इत्यादिसे कुछ होता है,
वहाँ दुहराया गया है ।]

शक-काल ८९३ य प्रजापति-संवत्सरदन्तर्गत मगधेशिर-
मासद शुद्ध-त्रयोदशियु गुरुवार[द]न्दु अयं नोन्तुच्छम-द्विण
भेरिदर बरेदोनवर मग बि.....

[पण्डित-दोरपण्यकी ज्येष्ठ रानी पाम्बवने, — जो कोण्डकुन्दान्वयके
पेशिय-गणके मुख्य देवेन्द्र-सिद्धान्त-भट्टारके ज्येष्ठ शिष्य चाम्प्रायणवभटा-
रके शिष्य गुणचन्द्र-भट्टारके शिष्य जमयनम्बि-पण्डित-देवकी (शिष्या)
जाणव्हे-कम्तिकी शिष्या थी, — केसलौच कालके बाद, तपके पूरे १०
साल पूर्ण किये, और पाँच अणुवर्तोंको धारण करके उच्च अवस्थाको
पहुँची । उसके पुत्र बिबि से लिखा हुआ ।

जागेके छोकमें उसके त्याग और तपकी प्रशंसा है । दक्षिण और पूर्व
मुखकी तरफ भी ये ही लेख कुछ मेवके साथ, उसके अन्य दो पुत्रों,
भईत्रकि और बि..... के द्वारा लिखाये गये हैं ।]

[EO. VI, Kadur tl., n° 1]

१५१

अवण बेल्गोला—कन्नड

[बिना काल-निर्देशका]

[देखो, जैन शिलालेखसंग्रह, प्रथम भाग]

१५२

अवण बेल्गोला—संस्कृत तथा कन्नड

[बिना काल-निर्देशका, लगभग ९७५ ई० (फ्लीट)]

[देखो, जैन शि० ले० सं० प्रथम भाग]

१५३

[सुहानिया (ग्वालिअर)—संस्कृत

[सं० १०३४=९७७ ई०]

संवत् : । १०३४ श्री वज्रदाममहाराजाधिराज वज्रसाखवदि
पाचमि * * *

संवत् १०३४ की वैशाख वदी ५ को महाराजाधिराज वज्रदाम (शेष-
लेख स्पष्ट नहीं है ।) ।

[JASB, XXXI, p. 399, a; p. 411, b.]

१५४

पेरगूर—ककड़

[शक ८९९=९७७ ई०]

[पेरगूर (किगद-भाइने) में एक पाषाणपर]

स्वस्ति शक-नृप-कालातीत-संवत्सर-सतङ्ग ८९९ त्तनेय ईश्वर-[सं]
वत्सरं प्रवर्त्तिसे सत्या(त्य)वाक्य-कोङ्गिणिवर्म-धर्म-महाराजाधि-
राज कोळाळ-पुरवरेखर नन्दगिरिनाथ श्रीमत् राचमल्ल-पर्मनडिगळ्
तद्वर्ष[१]म्यन्तर पा(फा)ल्लुण(न)-शुक्ल-पक्षद नन्दीश्वरं तल्प-देवसमागे
स्वस्ति समस्तवैरिगजघटाटोपकुम्भिकुम्भ-स्तळ-स्फुटितानर्घ्य-मुक्ताफल-
ग्रहण-भीकर-करासे-निवासित-दक्षिण-दोर्दण्ड-मण्डित-ग्रचण्डं अण्णन-
बण्ट बडवर-नण्टं श्रीमत् रकस बेहोरेगरेयनाळुत्तिरे भद्रमस्तु
जिनशासनाय श्री-बेळगोळ-निवासिगळण्य श्री-वीरसेनसिद्धान्त-
देवर वर-शिष्यर् श्री-गोणसेन-पण्डित-मद्भारकर वर-शिष्यर्
श्रीमत् अनन्तवीर्यय्यङ्गळ पे[र]र्गदूरं पोस-वादगमुमन् अम्यन्तर-
सिद्धियागे पडेदरदळे साक्षी तोम्भत्तरसासिर्ब्रूमय्-सामन्तरं बेहोरेगरे-
येळपदिम्बरुमेण्टोक्कळुमिदं कावर्जाल्वर् म्मलेपरुमय्-नूर्ब्रूमय्-दामरिगरं
श्रीपुरुष-महाराजरदत्तियनावोनोर्ब्रनळिदोम् बाणरासियुं सासिर्ब्र-भाक्ष-
णरं सासिर-कविल्लियुमनळिद पञ्चमर्हापातकनकुं इदनारोर्ब्रर् कादरवर्गे
पिरिद पुण्यं चन्दशान्दियय्यन लिखितम् ॥ पेरगूर बसदिय शासनम् ।

[शक नृपके सैककों वर्ष बीतने पर जब ईश्वर नामका संवत्सर ८९९
वाँ आका था:—

१ ये-दोनों शब्दसमूह 'देवरवर शिष्यर्' तथा 'मद्भारकरवर शिष्यर्' भी पढ़े
जा सकते हैं ।

और जिस समय सत्यवाक्य-कोटिकिबर्म-धर्म-महाराजाधिराज राधमल्ल
पेर्य्यवधिका, जो कोलाळपुरके ईश्वर तथा मन्दगिरिके नाथ थे, राज्य था,
उस समय श्रीमत्-रक्तस बेहरेगरेपर राज्य कर रहा था। उससे श्री-वे-
ल्लोळके निवासी श्रीमत् अनन्तवीर्य्यवने भे[र]गावूर तथा नवी साई
प्राप्त की। अनन्तवीर्य्यव गोणसेन-पण्डित महारकके शिष्य थे और वे
वीरसेन-सिद्धान्त-देवके शिष्य थे। यह लेख चन्द्रणन्दियकका लिखा
हुआ है।]

[EC, I, Coorg. ins., n° 4.]

१५५

अवण-बेल्लोला—कन्नड़

[बिना काल-निर्देशका]

१५६

अवण-बेल्लोला—कन्नड़ तथा तामिल ।

[बिना काल-निर्देशका]

१५७

अवण-बेल्लोला—कन्नड़

[बिना काल-निर्देशका]

[देखो जैनशिलालेखसंग्रह, भाग १]

१५८

विदरे—कन्नड़

[शक १०१=१७१ ई०]

[विदरे (बेदूर परगना) में, तालाबके ध्यर्थ पड़े हुए बाँध-
परके एक पाषाणपर]

खलि स (श) क—वर्ष ९०१ नेय प्रमातिक-संवत्सरद
कार्तिक-मासदोळ त्रिलोकचन्द्र-भटारर शिष्य रविचन्द्र- भटारर
संन्यसनं गेय्दु मुडिपिदर कोण्डकुन्दान्वयद देसिग- गणद मानुकीर्ति-
भटारर परोक्षविनय माडिसिदर

[संक्षिप्त । (उक्त मिलिके), त्रिकोणमन्त्र-महारके विषय-रश्मिकमन्त्र-महारके 'सम्बन्धन' चरण किया और मन्त्रको प्राप्त हुए । कोष्ठकुन्दान्वय तथा देसिन-गणके भानुकीर्ति-महारने उनकी स्वर्गपात्राका यह चरणक बनवाया ।]

[EC, XII, Gubbi tl n° 57.]

१६९

चरण—कन्नड़-भग्न

...१९... (काक छत्र)=संभवतः लगभग १६० ई०

[चरण गौचमें, वसवगुडीके सामनेके लक्षणपर]

.....१९.....स्य सकळ-सममेन्दु दर्म्म गेयु सम्यसद.....

.....निज-स्तिति.....

[मुनिव्रत चरण करके विरंगत होनेवाले एक जैन वसिका चारक ।]

[EC, III, Mysore tl, n° 40.]

१७०

सांक्षिप्त—कन्नड़

[शक १०२=१८० ई०]

रङ्गकुलान्वयनृपकं पट्टद पतवर्म्म नेगळेनिप गावुण्डुगळु विट्ठर्जि-
नेन्द्रपूजेगे नेट्टने धान्धगळोळगे पो(दिद) कुळम् ॥ रट(इ)र
पट्टजिनालय विट्ठळ्वादय्वतोळलनुमतदिन्द कोट्टर्जिनेन्द्रपूजेगे नेट्टने
.....घ(पं) ॥ दीपावल्लिय (प) र्वेके देवर सोडरिंगे गाणद लोम्मा-
नेणगे ॥ श्रीमत्परमगम्भीरत्वाद्वादात्मोषलाञ्छनं जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य
शासनं जिनशासनं ॥

स्वस्ति समस्तभुवनाश्रयं श्रीप्रि(पृ)थ्वीवल्लभं महाराजाधि-
राज-परमेश्वर-परममहारकं सत्पाश्रयकुळतिळकं चालुक्य(क्या)
भरणं श्रीमत्सैलपदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिहित्विधिं सल्लुत्तमिरे ।

तत्पादपद्योपजीवि । समधिगतपंचमहाशब्दमहासामन्तं समरविजय-
लक्ष्मीकान्तं वै(चै?)सान्वयसरोजवनमार्तण्डं नुडिदंतेगण्डं हयवत्स-
राजं रूपमनोजं परबल-सूरेकारं वैरिबंगारं नरसं(शं)कमीमं
चलदंकारामं गण्डरगण्डं वैरिमेरुण्डं प्रतिपन्नमन्दरं शरणागतव्रजपंजरं
श्रीमत् शान्तिवर्म्मरसर वंशावतरमेन्तेन्दोडे [॥] श्रीमदमरेन्द्रविभवो-
द्दामं संप्रामरामनूजिततेजं भीमपराक्रमनेनिसिद्धी महियोल् पृथ्वीराम-
ननुपरूपं ॥ तत्सुत ॥ आरूढ(ढ)वत्सराजनुदारगुणं विनुतकन्दुका-
दित्यं श्रीनारीकान्तं निर्जितवैरिप्रजनेनसि पिङ्गुं सले नेगर्दं ॥ वृ ॥ अन्त-
कनन्ते बन्दिदिरोळ्यन्तजम(व)र्म्मन नोडिसुत्ते मारान्तोरनेकरं तविसि
वस्तुगळं मदवारणगळं कान्तेयरं तुरंगचयमं पिडिदित्तोडे मेच्चिराभयं
दन्तियनित्तनन्तदुवे पेळदे पिङ्गु निन्न गेल (छ)मं ॥ तदग्रपत्ति ॥
वृ ॥ पोगळल्लुम्बमप्प चरितं मिगे बण्णिसलब्जसंभवंगणितमप्प
रूपविभवं पतिभक्तियोलोन्दि सज्जनीकेगे नेलेयाद मान्तनद पेंपु
समन्तळवट्ट नीजिकब्बरसिगे सन्दरुन्धति पे०० द्वोरेयेन्दे दोस(ष)
वल्लदे ॥ तत्तनूज । कं ॥ श्रीमदुदयाद्रिशिखरोद्दामोदयतपनविभवरूपं कीर्ति-
श्रीमहिमातिशयं जयरामारमणं जितारि शान्तनृपाळं ॥ दयेयिन्दोळ्पिन
तेळ्पिनि गुणगणाळंकारदिं मार्गनिर्णयदिं तत्व(त्त्व)विचारदिं गमक-
दिंदाहारमैषज्यसामयशास्त्रामळदानदिन्दधिकनेन्दन्दोळ्पिनि शान्ति-
वर्म्मन विख्यातियनोन्दे नाळिगेयोळिजे वण्णिपं वण्णिपं ॥ तदग्रपत्ति ॥
श्रीव्रनिते ताने बन्दु महीव्रनितेगे तिळकमेनिसि शान्तन ललितश्रीवनि-
तेयाद विभवमने वोगळवुदो चन्दिकब्बेयरसिय पेंप ।

यतितारकापरीतः कण्डूरगणोरुकन्धिवृद्धिकरः । बाहुबलिदेवचन्द्रो
जिनसमयनभस्त्रले भाति ॥ व्याकरणतीक्ष्णदंष्ट्रस्सिद्धान्तनख(खः)
प्रमाणकेसरभारः । बाहुबलिदेवसिंहं (हः) प्रवादिगजतीव्रमदहरस्सं-

जयते ॥ वृ ॥ अवनीपालानतश्रीपदकमलयुगं तत्व(स्व)निर्णि
(णिण)कराद्धान्तविदं चारित्ररत्नाकरनमलवच(चः)श्रीवधूकान्तन-
गोद्ववदर्षारण्यदावानलनुदितलसद्बोधसंशुद्धनेत्रं रविचन्द्रस्वामी भव्या-
म्बुजदिनपनघो (घौ)धाद्रिसद्वज्रपात ॥ कं ॥ कंहुर्गणाब्धिचन्द्रनख-
ण्डितसुतपोविभासि खण्डितमदनं दिण्डीरपिण्डसुरवेदण्डयशःपिण्डन-
र्हणन्दिमुनीन्द्र ॥ वृ ॥ कन्तुराजगजेन्द्रकेसरि भव्यलोकसुखाकरं
कान्तवाग्बनितामनोरमनुप्रवीरतपोमयं शान्तमूर्ति दिगंतकीर्तिविराजितं
शुभचन्द्रसिद्धान्तदेवनिलेश्वरवदितपादपंकुरुहद्वयं ॥ क ॥ नुतयाप-
नीयसंवप्रतीतकण्डूगणाब्धिचन्द्रमरेन्दी क्षितिवले(ळ)यं पोगळ्पिन
मुन्नतिवेत्तम्मौनिदेवदिव्यमुनीन्द्र ॥ जितकर्म्मरातिभूपाळककुळतिल
काळंकृतांघ्रिद्वयं राजितभव्यव्रातपंकुरुहवनदिनपं चारि(रु)चारित्रमार्गा-
चितसूकं (कं) शब्दविद्यागमकमलभवं श्रीप्रभाचन्द्रध्वे (दे) वव
(व्र) ति षट्कर्ककळंकंगेयेने नेगर्द । जैनमार्गाब्धिचन्द्र [१]

खस्ति स (श)कनृपकाळातीतसंवत्सरशतंगल् ९०२ नेय विक्रम-
संवत्सरद पौषशुद्ध दशमी बृहस्पतिवारदन्दिनुत्तरायण शं(सं)क्रमणदोळ्
बाहुबलिभट्टारकरकालं कच्चि शान्तिवर्म्मरसं सुगन्धवर्त्तियल्
तन्न माडिसिद बसदिगा वूर तन्न सीवट्टद पोलदोळगे सर्वबाधापरिहार-
मागि बिट्ट मत्तर्नूरय्वत्तदर चतुराष्टाट्टद सीमेयाबुदेन्दडे [१] तहर
पोलद बदगिवोळद सन्दिनलीशान्यद गुडे । अळि तेंकळेळेयकेरेय
बिळिय कळु अळि पडुवल् सीवट्टद सन्दिनोळ् नैरि (ऋ) तिय गुडे ।
अळि बडगल् सीवट्टद तहरपोलद संदिनल् वायव्वद गुडे [१] मत्तं नी-
जियव्वरसि तन्न मगं शान्तिवर्म्मरसं माडिसिद पिरिय बसदिगे
तन्न सीवट्ट पिरियपस(सु)ण्डिगे पोद बट्टेयि तेंक काडियूर पोलद.....नू

रव्यत्तुं म(त्त)कैष्य नमस्यमागि विट्ठळा भूमिय चतुस्सी.....र
 कुकुम्बा[ळ] पोल्द सन्दिनलीशान्यद गुडे । अळि तेंक... कुकुम्बाळ
 सुगन्ध[ब]र्त्तिय पोल्द सन्दिनलाप्रेयद [गुडे ।].....गिनकूद.....
 गिनोळ[गे नै]रि[ऋ]तिय गु [डे ।]..... वायव्य [द गु] डे । इन्ति
 [नि] तु भूमियि....[हं]वीर्वहं प्र[तिपाळि]सुवर [II] मा....[य] मुना
 साग[र] दवर्ग पडन् मु.....वन्धरान्ध.....

[यह लेख भी उसी जैनमन्दिरसे लिया गया है जिसमेंसे लेख नं० १३० ।
 यह पृथ्वीरामके पुत्र, प्रपौत्र तथा उनकी पत्नियोंके नाम बताता है । पृथ्वी-
 रामके पुत्र पिट्टगके सम्बन्धमें एक ऐतिहासिक तथ्य वर्णित है, पर मि० जे.
 एफ. फ्लीट इस बातका निश्चय नहीं कर सके कि यह अजवर्मा कौन था
 जिसे पिट्टगने जीता था । लेखमें पिट्टगके प्रपौत्र शान्त या शान्तिवर्माके
 १५० 'मत्तर' भूमिके दानका उल्लेख है, जिसे उसने ९०३ शकमें किया
 था । इतना ही दान शान्तिवर्माकी माता नीजिकम्बे या नीजियम्बेने
 सुगन्धवर्त्तिमें बनवाये हुए जैनमन्दिरको किया ।]

[JB, X, p. 171-172, a; p. 204-207, t.; p. 208-212, tr. (ins. n° 3.)]

१५१

मथुरा,—संस्कृत

[सं० १०३८=९८१ ई०]

[तीर्थंकरोंकी विशाल पद्मासनस्थ मूर्तियाँ]

इसका लेख साफ-साफ पढ़नेमें नहीं आता है । कुछ भाग पढ़ा जाता
 है, कुछ नहीं । परंतु लेख सिर्फ दो पंक्तियोंका है । यह मूर्ति या लेख सिर्फ
 कालकी दृष्टिसे ध्यानगम्य है । डा० फूहररके मतसे यह लेख बताता है
 कि इस मूर्तिका निर्माण मथुराके श्वेताम्बर संप्रदायकी तरफसे हुआ था ।

१ मूलमें "शक राजा कालके ९०२ वर्ष बीतने पर" है । २ "Progress
 Report" for 1890-91, p. 16.

ये दोनों सम्भवत् (बिसाल) मूर्तियाँ (विक्रम सं० १०३८ और ११३४ [शि० ले० नं. २११]) दिसम्बर १८८९ में, श्वेताम्बर संप्रदायके मालूम पड़नेवाले मध्यवर्ती मन्दिरके पास मिली थीं ।

महमूद गजनवी (गजनवीका रहनेवाला) के द्वारा मथुराका विनाश ई० सन् १०१८ में हुआ । उक्त प्रतिमा (सं० १०३८=९८१ ई० की) इस विनाशसे पहिलेकी स्थापित हुई हैं और ख्रि. ले. नं. २११ की इस घटनाके करीब ६० साल बाद । आक्रामकने चाहे-जितना विनाश किया हो, लेकिन यह स्पष्ट है कि जैन लोगोंके पास उनके पवित्र स्थान बिना किसी ज्यादा बाधाके बने रहे ।]

[Antiquities of Mathura (ASI, XX), p. 53, t.]

१३२

श्रवणवे-लोलो—कसड़-भग्न ।

[वर्ष पित्रभानु=९४२ ई० (ल. राइस)]

[जैन शि० ले० सं०, भाग १]

१३३

श्रवणवे-लोलो—संस्कृत तथा कसड़

[शक ९०४=९८२ ई०]

[जैन शि० ले० सं०, भा० १]

१३४

हेमावती—कसड़

[शक ९०४=९८२ ई०]

[हेमावतीमें, पूर्वकी तरफके खेतमें पाषाणपर]

उद्-वल्मेवेरेम्बुदे ।

बिद् मुन्नल्लि कडुपिनोळ् बहु-विधदिन्द ।

उद्-वल्मेवेदु मुरिगुम् ।

बिद्मेनल् बलब्द पोरगनेळेव-वेडङ्गम् ॥

एरकमल्लदे पोल्लागेरगि दोरेकाप्पे कोळ्व तेरनल्लदे ।
 नेरेये बरल् तक्कडियल्लि विसुवल्लिये विस अरिदयिल्ल ।
 परियना दिट्ठि मुरिवल्लि कडुपिनोळ् मुरिदयिल्लिल्लिय विन्नणवन् ।
 नेरेये कल्पदे बीरर बीरनं गिडेगळाभरणनं नेडिकल्ल ॥
 आसुवनुं कूसुवनुम् ।
 बीसुवनुं गडेय नेगळ्द तक्कडियोळ्नुत्त ।
 आसदेयुं कुङ्कदेयुम् ।
 बीसन्देयु विद्द मेळेगुमेळेव-वेडङ्गम् ॥
 एरगळ्ळरियदे मेण्डुकम्भगुळ्दुं वरळणपरियदे तप्पा पिन्दम् ।
 तेरेनरियदे भागमनिकियुं मूरेडेगल्लदे कड्ढाडियुं मुरिये पायिसिद ।
 तुरुय कोन्दु धरेगेडेतेगे गेडेयित्रनेनिसदं ।
 नेरेये कडु-जाणनेनिमल्के बर्कुमे गडेगळाभरणन कल्लदन्नम् ॥
 काल्गळ कय्गळ तुरगद ।
 कोल्गळ तिणिवुगळ्ळेळल्लि बच्चिसुतेळेगुम् ।
 गेल्लुमेने नेगळ्द मार्गदे ।
 गेल्लुमे बणेदल्लि कीर्त्ति-नारायणनम् ॥

वनधि-नभो-निधि-प्रमित-संख्य-स(श)कावनिपाळ-कालमं ।

नेनेयिसे चित्रभानु परिवर्त्तिसे चैत्र-सितेतराष्टमी-

दिन-युत-भौमवारदोळनाकुळ-चित्तदे नोन्तु ताळ्दिदम् ।

जन-नुतनिन्द्र-राजनखिळाभर-राज-महा-विभूतियम् ॥

[एरेव-वेडङ्गम्, कीर्त्ति-नारायणके युद्धमें शौर्यके कार्योंका वर्णन । (उक्त मितिको) अवाकुल चित्तसे बतोंको पालते हुए, प्रसिद्ध

इन्द्रराजने स्वर्गकी विभूति पाई—(अर्थात् मर गये)^१ ।]

[EC, XII, Sira tl., n° 27.]

१६५

श्रवणबेलगोला—संस्कृत

[बिना काल-निर्देशका]

[जै. वि. ले. सं., भा. १.]

१६६

अङ्गिका—संस्कृत तथा कन्नड-भग्न

[काल लुप्त, पर लगभग ९९० ई० का]

[अङ्गिका (गोणीबीडु परगना) में, बसदिके पासके पाषाणपर]

(सामने).....सुद पञ्चमी-बृहस्पति वारदन्दु

स्वस्ति....यम-स्वाध्याय-ध्यान-मौनानुष्ठान-परायणरूप द्रविळ-संघद....

अद श्री-कोण्डकुन्दान्वयद त्रिकालमौनि-भट्टारक शिष्यर् श्रीमदिरिब-

बेडेङ्ग.....ळन गुरुगळ् विमलचन्द्र-पण्डित-देवर् सन्यासन-विधियि

मुडिपि मुक्तियनेयिददर् ॥ (पीछे) श्रुत-विमळदिचन्द्र.....

श्रीमनु.....पण्डिताहयसु-विमळचन्द्र-मुनिः ॥

नमो विमळचन्द्राय कळकळित-मूर्त्ये ।

सत्त्वात् सद्-बुधसेव्याय शान्तामृतमयात्मने ॥

श्री-विमळचन्द्र-पण्डित-देवर् गुड्डी हवुम्बेया तङ्गे शान्तियब्बे
तम्म गुरुगळ् परोक्ष-विनयं गेय्दर् ॥

[(साधु-गुणोंसहित), द्रविळ-संघ, कोण्डकुन्दान्वय तथा पुस्तक-
गळके त्रिकालमौनि-भट्टारकके शिष्य, —श्रीमद् ईरिब-बेडेङ्ग...के गुरु,—

१ उसका काल और अंतिमावस्थाका कथन वही है जो श्रवणबेलगोला नं०
५७ के शिलालेखमें है । इन्द्रराज अन्तिम राष्ट्रकूट राजा था ।

विमलचन्द्र-पण्डितदेवने, संन्यास-विधिसे मरण कर, मुक्ति प्राप्त की ।
पण्डित पदके साथ विमलचन्द्रमुनिकी प्रशंसा ।

विमलचन्द्र-पण्डित-देवकी गृहस्थ दिव्या हवुम्बेकी छोटी बहिन
शान्तियश्वेने अपने गुरुके स्वर्गवासके उपलक्ष्यमें स्मारक खड़ा किया ।]

[EC, VI, Mudgere tl., n° 11]

१६७

पञ्चपाण्डवमलै—ताम्रिल

[काल लगभग ९९२ ई०]

श्री

१ स्वस्ति

[II]

२ [को] विराजराज [क] १ [सर] १व [न] मर्कु याण्डु ८ आ
[व]दुपडुवूर्क [१] इत्तुप्पेरुन्-तिमिरिनाडुत्तिरुप्प[१]नमलैप्पो-

३ गमागिय कूरग[न्प्]डि [इ] रैयिलि प[ल्]ळिच्चन्दत्त की [ल्]-प्-
[प]ग[ळ]ड[इ]लाडर[१]जर्गळ कर्पूर-विलै को [ण्डु इ] द्द[र्]म[१]मङ्क

४ इप्पोगि[न]रडेन् [रु उ]डैयार् इला[ड]राजर् पु[ग]ळ्वि-
प्पवर्-[ग] ण्डर् मग[नार्] [वी]रशोळर् तिरु[प्पान्]मलैदेवर्-
त्तिरुव-

५ [डित्तो]ळु [देळुन्]द[रु]ळि इ [र]उक्क इ[व]र देवियाइ
इलाडमह[१]देवि[य]ार कर्पूर-विलैयुमन्निया[य]वावद[ण्ड]विर् [यु]
म [१] -

६ च्चिन्द[रुळ वे]ण्डुमेन्नु विण्णप्पज्जेय् [य उ]डै[या]र [वी]
र-शोळर् कर्पूर-विलैयुमन्निया[य] वावद[ण्ड]विर्-

७ युमो [ल्] ि ज्जोमेन्नुच्चैय्य अरि[य]ऊर् किळ [वन्] ।
गि[य वी] र-शोळवि-लाड-प्पेर [र] १ य[नु]डैयार् [क] न्मियेया]-

८ णत्तियागविदु^१ कर्पूर-विलैयुमन्नियाय-[वा] वदण्ड[व्]-इरैयुमोळि
ञ्जु शासनाञ्चेय्द-पडि [१] इदु [व]-

९ छ [द] उ कर्पूर-विलैयुमन्नियाय-वावदण्डव्-इरैयुमिप्पळ्ळिच्चन्द-
तैक्कोळ्[व्]।न गङ्गैयि-

१० डै [कुमारिय्] इडैचेय्दार् शे[य्] द पा [व]क्कोळ्वारिदुवल्लिदिप्प-
ळ्ळिच्चन्दतै केडुप्पार वल्लव[रै]

११[न]रु[व] [१] [इ]-द्ध [र्मत्] तै [र]क्षिप्पान् पादधूळिय्
एन्-[रलै] मे[ल]न [१] अर[म]रवर्क अरमल्ल तु[ण]यैयिळै ॥

[यह शिलालेख तमिल गद्यकी ११ पंक्तियोंका है । लेखकी दूसरी पंक्ति-
में राजराज-केशरीवर्मन्के राज्यका ८ वां साल इसका काल बताया गया
है । प्रस्तुत लेख महाराजा राजराज चोलके राज्य-कालका है । यह ९८४-
८५ ई० में गङ्गीपर बैठे थे । इस लेखमें किसी बिजयका वर्णन नहीं है ।
इस शिलालेखके नीचे एक पशु बनाया गया है, वह चीता होना
चाहिये, क्योंकि चोल राजाओंका वह चिह्न रहा है ।

लेखमें (पंक्ति ३) लाटराज वीरचोलका एक शासन है । वह चोल
राजा राजराजका कोई अजीनस्थ राजा होना चाहिये, क्योंकि राज्यकाल
उसीका (राजराजका) दिया हुआ है । लाटराज वीर-चोल पुगळिवप्पवर
गण्डका पुत्र था । वीर-चोल और उनके पूर्वजोंके नामके पहले लाटराज
ऐसा बिरुद लगा रहनेसे मालूम पड़ता है कि ये लोग पहले किसी समय
लाट (गुजरात) से आये थे ।

यह अभिलेख इस बातका उल्लेख करता है कि अपनी रानीकी प्रार्थना
पर वीर-चोलने तिरुप्पान्मलैके देवताके लिये (पं० ४) कूरगम्पाडि
गोंवसे कुछ आमदनी बाँध दी थी ।

यद्यपि चेल्यालयका नाम सिर्फ 'तिरुप्पान्मलैका देवता' दिया गया
है, परंतु 'पल्लिच्चन्दम्' इस शब्दसे मालूम पड़ता है कि यह कोई जैन

बैद्यालय होना चाहिये। शिलालेख नं० ११५ से भी यह निर्णीत होता है। उसमें यक्षिणी और नागनन्दि गुरुकी प्रतिमा है। यद्यपि यक्षिणियोंको बौद्ध और जैन दोनों ही मानते हैं, परन्तु नागनन्दि यह जैन नाम है।]

लेखमें कूरगम्पाडिके 'पल्लिञ्चन्द' की आमदनी दो तरहकी बताई गई है:— एक तो कपूरखिले (कपूरके खर्च) की, दूसरी 'अधियाय वावदण्ड-विरे' की। कपूरखर्चकी बात तो ठीक समझमें आ जाती है, लेकिन उत्तरकी आमदनी 'अधियाय-वावदण्डविरे' का क्या अर्थ है, सो स्पष्ट नहीं है। इसके भी दो अर्थ किये जाते हैं: एक तो अन्याय वावदण्ड (जुलाहोंका करघा) द्वरे (कर)। इसका अर्थ होगा 'अनधिकृत करघोंपरका कर' (The tax on unauthorised looms)। दूसरा अर्थ इसका यह हो सकता है अन्याय + आव + दण्ड + द्वरे। 'आव'का अर्थ होता है वाणोंका दूणीर। इसका तात्पर्य यह है कि बिना अधिकारपत्र पाये जो धनुष-वाणका प्रयोग करते थे उनपर जुर्माना (दण्ड) किया जाता था।

[El, IV. n° 14, B.]

१३८

श्रवण-बेलगोला—कन्नड़

[बिना काल-निर्देशका]

[जै. शि. ले. सं., भा. १.]

१६०.

कुम्बरहल्लि—कन्नड़—भग्न

[बिना काल-निर्देशका, पर सम्भवतः लगभग १००० ई०]

[कुम्बरहल्लि (कूदहल्लि परगना) में, बसवगुडिकी दक्षिणी दीवालपर]

स्वस्ति श्रीमदजितसेनपण्डितदेवर शिष्यण ना...क पुणि-समय

[इसमें अजितसेन-पण्डितके शिष्यका वर्णन है।]

[EC, III, Mysore tl., n° 31.]

१७०

मुत्सन्द्र—कन्नड़

[विना काल-निर्देशका, पर सम्भवतः लगभग सन् १००० ई० का]

[मुत्सन्द्र (देवलापुर परगना) में, गाँवके पूर्वमें एक गोल बटिया
(Boulder) पर]

श्रीमत् कलुकरै-नाड् आळ्वरु चोक-जिनालयके मत्तिकेरैय
नट्ट कळ चतुस्सीमान्तरेषु विट्ट दत्ति इदं किडिसिदवं कविले बाह्मणनुव
कोन्द ब्रह्म.....एन्दुगु

[कलुकरै-नाड्के शासकने चोक जिनालयके लिये मत्तिकेरैका दान दिया ।]

[EC, IV, Nagamangala tl., n° 92.]

१७१

तिरुमलै—(नाथं बर्काट)—तामिल

[१००५ ई०]

- १ स्वस्ति श्री [II] तिरुमगळ् पोलप्पेरु निलच्चे—
- २ लियुन् तनके युरिमै पूण्डमै मनकोळ कान्दळुर चालै कलम-
रुत्तरुळि वेङ्गैनाडुङ् गङ्गपाडियु
- ३ नुळ्बपाडियु न्तिङ्गै पाडियुङ् कुडमलैनाडुङ् कोल्लमुङ् कलिङ्गमुं
एण्डिशै पुगळ्तर विळमण्डलमुं तिण्डिरल् वेन्नि त्त—
- ४ ण्डारकोण्ड[त्ते]ळिल् वळ्ळुळि एल्लायण्डुं तोळुतेळ विळङ्गुयाण्डै
चेळिवारैत्तेचु कोळ् श्रीकोवि—
- ५ राज इराजकेशरिपन्मरान श्रीइराजइराजदेवर्कु याण्डु २१
आवदु अल्लपुरियुं पुनर् पोन्नि आरुडैय चोळन्
- ६ अरुमोळिक्कु याण्डु इरुपत्तोन्नावदेन्ऱुळलै पुरियुमतिनिपुणन् वेण्
किळान्

- ७ गणिशेखरमरुपोरचुरियन्नन् नामत्ताल् वामनिलै निररकुड्—
 ८ कलिञ्चिट्टु नीमिर् वैय्गौमलैकु नीडुळि इरुमरुळुं नेल् विळैय—
 ९ कण्डोन् कुलै पुरियुं पडै औरचर कोण्डाडुं पादन गुणवीरमा-
 मुनिवन्

१० कुळिर् वैय्गौक्कोवेय् [II]

[यह अभिलेख कोविराजाराजकेतरिबर्मेन्, उक्तं राजराज-देवके २१ वें वर्षमें अभिलिखित है, तथा पोन्न, अर्थात्, कावेरी नदीके स्वामी 'शोरन् अरुमोरी' के इक्कीसवें वर्ष में (शब्दोंमें) ।

लेख बताता है कि किसी गुणवीरमामुनिवन्ने एक नहर या मोरी (Sluice) गणिशेखर-मरु-पोचुरियन् नामके उपाध्यायके नामसे बन-
 वाई थी । तिरुमलै चट्टानका उल्लेख "वैय्गौमलै" नामसे है ।]

[South Indian Ins., I, n° 66 (p. 94-95), t. & tr.]

१७२

बेल्लूह—कञ्जद-भग्न

[शक ९४४=१०२२ ई०]

[बेल्लूह (कोत्तत्ति परगने)में, तालाबपर दुर्गा-देवीके पीछेके पाषाणपर]

स्वस्ति समस्त-रिपु-नृप-कुम्भ-कुम्भ-दळन-पञ्चास्य समुदित-श्रीम.....
 ल-बिमुक्त-चोळ-भूपाळ.....लित.....जित-वीर-लक्ष्मी आश्रित-भक्त-मला-
 पकर्षण भूमिसञ्चरण जय-मूल-स्तम्भं श्रीमद् अ.....गङ्गमण्डलेश्वर प्रभु-
 पद्म-युग्माशोक-भोगिकाश्रित-भ्रमद्-भ्रमर जित-रिपु संसित-समर-प्रताप
 राज्य-भार-धुरन्धरं अमात्य-समिति-विराजमानम् सत्यत्व-नाभि-कानीनम्
 समर-जित-भूप-जीव-प्रदनुं अतिपूताचरणम् रिपु-खरकिरणम्.....
 तिगाञ्जनेयं सौच-गाङ्गेयं शरणागत-वज्र-पञ्चरम् रिपु-कञ्ज-कुञ्जरम्
 तच्च-रक्षामणि मञ्जी-चिन्तामणि विनेय-विळासम् श्रीमत्-पेर्गडै-हासम्

विश्व-विस-हासर पतिहिताभरणम् ॥ शक-नृप-कालातीतसंवत्सर-
शतकल् ९४४ नेय दुर्मुखि (दुर्म्भिति) संवत्सरद फाल्गुण-मास-सुद्ध-
पञ्चमी-सोमवार पुनर्वसु-नक्षत्रदन्दु गङ्ग-पेर्मनडिगळु कर्नाटनालुत्त-
मिरे तम्म ख-दोराळदन्दु.....नव जिनालयके पेर्मनडि जीवितम्
.....द बलोर-कड्डुलाळ्वाद केरेंय मेहुकं बोय्सि कड्येय कड्डिसि
तूबनिरसि मुन्नं तव.....कोलग मण्णु बिट्ट दोन्द....केरेंगे.....मुमं
बिट्ट मिदनळिद कोटि-कविलेयं ब्राह्मणरुं काशियुमनलुकिरे

बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः ।

यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥

[इस लेखमें 'पेर्मनडे-हासम्' के द्वारा, उक्त मितिको, बलोर-कड्डे
गहरे तालाबकी सीढ़ियोंके बनवाने, बांधके निर्माण कराने, नहर या
मोरीके बनावे जाने, तथा.....एक 'कोलग' भूमिके देनेका जिक्र
है। उसके समयमें कर्णाट (कर्नाटक) पर गङ्ग पेर्मनडि शासन कर रहे
थे। यह पुण्यकार्य पेर्मनडिके दीर्घजीवनकी कामनाके लिये उसकी
सरकारके स्थानमें एक नये जिनालयके रूपमें किया गया था।]

[EC, III, Mandya II., n° 78]

१७३

मथुरा—संस्कृत

[संवत् १०८०=१०२३ ई० सन्]

१ ओ श्रीजिनदेवः स्वरिस्तदनु श्रीभावदेवनामाभूत् ।

आचार्यविजयसिङ्ग-

२ स्तच्छिष्यस्तेन च प्रोक्तैः ॥ [१ ॥]

मुत्तावकैर्नवग्रामस्थानादिस्यै स्वसक्तितः ।

१ संवत्सर 'दुर्मुखि' दिया हुआ है: यह स्पष्टतः गलतीसे लिखा गया है।
इसकी जगह 'दुर्म्भिति' होना चाहिये जो शक ९४४ से मेल खाता है।

३ वर्द्धमानश्चतुर्विंशः कारितोयं सभक्तिभिः ॥ [॥ २]

संवत्सरे १०८० थंभकप-

४ प्पकाम्यां घटितः ॥ ओं

अनुवादः— ॐ । श्री जिन्देवसूरि हुए; उसके बाद श्री भावदेव हुए । उनके शिष्य आचार्य विजयसिङ्ग (विजयसिंह) हैं । उनके उपदेशसे नवग्राम, स्थान आदि (शहरों) में रहनेवाले भुश्रावकोंने स्वशक्ति और स्वभक्तिके साथ वर्द्धमानकी चतुर्विंश (सर्वतोभद्र) प्रतिमाका निर्माण करवाया । यह प्रतिमा १०८० [विक्रम] संवत्में थंभक और पप्पक शिषियोंके द्वारा बनकर तैयार हुई थी । ओं ॥

[El, II, n° XIV, n° 41]

१७४

तिरुमलै - तामिल

[१०२३ ई०]

१ स्वस्ति श्री [॥] तिरुमन्नि वळरविरु निलमडन्दैयुं पोश्चयप्पायैयुन्
चीरत्तनिच्चेल्वियुन् तन् पेरुन् देवियराकि इन्पुळ नेडु तियल्
ऊळियुळ् ईडैतु-

२ रैनाडुनतुडर् वनवेलिप्पडर् वनवासियुन् चुळ्ळिच्चुळ् मदिर्को-
ळ्ळिप्पाकैयु नण्णरुकरु मुरण् मण्णैकडक्कुं पोरु कडल्
ईळत्तरशर् तमुडियुं आडुग-

३ वरु देवियरोड्केळिन् मुडियुमुन्नवरु पक्कल्त्तेन्नवरु वैत्त सुन्दर-
मुडियुं इन्दिरनारमुन्तेण्डिरै ईळमण्डलमुळुवदुं एरि पडैक्के-
रळर्

- ४ मुरैमैयिरुशुङ्कुलतनमाकिय पलर् पुगळ् मुडियुञ्चेङ्कदिर्
मालैयुञ् चङ्कदिर् वेलैत्तोल् पेरुङ्कावर् पल पळन्तिवुञ्
चेरुविर् चेन-
- ५ विल् इरुपत्तोरु कालरैचुकळै कट्टर् परशुरामन् मेवरुञ् शान्ति-
मत्तिववरण् करुति इरुत्तिय चेम् पोशिरुत्तकु मुडियुं भयङ्कोड्डु
पळि मिग मुशङ्गियिल् मु-
- ६ दुकिट्टोळित्त जयसिङ्गन् अळप्पेरुं पुगळोड्डु पीडियल् इरट्टु-
पाडि एळरै इलक्कमु नवनेदिकुल पेरुमलैकळुं विकिरमवीरर
शकरकोड्डुमु-
- ७ मुदिरपडवळै मदुरमण्डलमुं कामिडैवळैय नामणैकोणमुं
वेङ्गिलैवीरर पञ्चप्पळियुं पाञ्चुडैप्पलनन् माशुणिदेशमुं
अयरुवि-
- ८ ल् वण् किर्त्तियातिनगर वैयिर् चन्दिरन् रोल् कुलत्तिरतरनै
विळैयमर्क्कळुक्किळैयोड्डु पिडित्तुप्पल तनत्तोड्डु निरै कुल
तनक्कुवै-
- ९ युञ् चिट्टरुञ्चेरि मिलैयोड्डविषैयमुं भूशुर चेर नल्कोशलै-
नाडुन्तन्मपालनै वेम् मुनैयळित्तु वण्डुरै चोलैत्तण्डयुत्तियु-
मिरण
- १० शूरनै मूरनूर ताक्कि तिकणै किर्त्तित्तक्कणलाडमुङ् गोविन्द-
चन्दन् माविळिन्तोडत्तङ्गाद चारल् वड्गाल्देशमुन्तोड्डु
कडरशङ्गुकोट्टन् महीपालनै
- ११ वेञ्जम वळाकत्तञ्चुवित्तरुळि ओण्टिरल् यानैयुं पेण्डिर् पण्डार-
मुनित्तिल नेडुङ्कडळुत्तिरलाडमुं वेरि मण्णरिर्त्तत्तेरि पुनरुगंङ्गै
शुमाप्-

१२ प्पोरु तण्डार्कोण्ड कोप्परकेशरिपन्मरान' उडैयार् श्रीरा-
जेन्द्रचोलदेवरकु याण्डु १२ आवदु जयङ्गोण्डचोलम-
ण्डलत्तु पङ्गाळनाट्टु नडुविल्

१३ वगैमुगैनाट्टुप्पळ्ळिच्चन्दं वैगवूर् तिरुमलै श्रीकुन्दवैजिनाल
यत्तु देवरकु प्पेरुवाणपाडिक्कैवळिमल्लियूर् इरुक्कु-
व्या-

१४ पारि नन्नप्पयन् मणवाट्टि चामुण्डप्पै वैत्त तिरुनन्दाविळ-
क्कु [॥] ओन्निकुक्काशु इरुपटुं तिरुवमुदुक्कु वैत्त काशु
पत्तुम् [॥]

[यह अभिलेख कोपरकेशरिवर्मन्, उर्फ उडैयार् राजेन्द्र-चोल-देवके बारहवें वर्षका है। इसके आरम्भमें उन सभी देशोंके नाम दिये हुए हैं जिनको इस राजाने जीता था। उनमें हमें ७॥ लाख भूमिकरवाले 'इरट्ट-पाडि' का पता चलता है जिसे राजेन्द्रचोलने जयसिंहसे लिया था। इस देशको उन्होंने अपने राज्यके ७ वें और १० वें वर्षके मध्यमें जीता होगा। इस अभिलेखका जयसिंह 'पश्चिमी चालुक्य राजा जयसिंह तृतीय' (लग-भग शक ९४० से लगभग ९६४ तक) के सिवाय और कोई नहीं हो सकता। जब कि राजेन्द्र-चोल और जयसिंह तृतीय दोनों एक-दूसरेको जीतनेकी र्डींग मारते हैं, तब हमें यह मान लेना चाहिये कि या तो सफलता दोनोंको क्रमशः मिली होगी, या चिर विजय किसीको भी नहीं मिली होगी।

दूसरे दो देश, जिन्हें राजेन्द्र-चोलका जीता हुआ कहा जाता है, 'इडैतु-रैनाडु' और 'वनवासि' हैं। पहला 'इडैतारे' देश है, जोकि मैसूर जिलेके एक तालुकेका हेड-क्वार्टर है, दूसरा बम्बई प्रान्तके 'नॉर्थ केनारा' जिलेका 'वनवासि' है।

“कोल्लिप्पाक्के” मि० फ्लीटके अनुसार, पन्निमी चालुक्य राजा जयसिंह तृतीयकी राजधानियोंमेंसे एक था ।

‘ईरम्’ या ‘ईर-मण्डलम्’ से मतलब सीलोन (लङ्का) से है । तेन्न-वन्=‘दक्षिणका राजा’ से प्रयोजन पाण्ड्य राजासे है । उसके विषयमें अभिलेख कहता है कि उसने पहिले ‘सुन्दर’ का मुकुट सीलोनके राजाको दे दिया था जिससे राजेन्द्र-चोलने पुनः वह सुन्दरका मुकुट ले लिया । वर्तमान लेखमें ‘सुन्दरका मुकुट’ से मतलब ‘पाण्ड्य राजाका मुकुट’ मालूम पड़ता है । यहाँ ‘सुन्दर’ कोई पाण्ड्य-वंशका राजा मालूम पड़ता है । उसका नाम लेखके कर्त्ताने नहीं दिया और न सीलोनके राजाका नाम जिसे राजेन्द्र-चोलने जीता था । आगे लेख यह भी बताता है कि राजेन्द्र-चोलने ‘केरळ’ अर्थात् मलबारके राजाको जीता था । उसने ‘शङ्कर-कोट्टम्’ के राजा विक्रम-वीरको भी हराया था । लेखका ‘मदुरा-मण्डलम्’ पाण्ड्य देश है, जिसकी राजधानी मदुरा थी । ‘ओडु-विषय’ उड़ीसा है । ‘कोशलैनाडु’ दक्षिण कोसल है, जो जनरल कर्निंघमके अनुसार, महानदी और इसकी सहायक नदियोंकी ऊपरकी घाटी है । ‘तङ्कणलाडम्’ और ‘उत्तिरलाडम्’ से मतलब क्रमशः दक्षिणी और उत्तरी लाट (गुजरात) से है । पहला किसी ‘रणशूर’ से लिया गया था । आगे बताया जाता है कि राजेन्द्र चोलने ‘बङ्गालदेश’ अर्थात् बङ्गाल को किसी गोविन्दचन्द्रसे जीतकर उसका विस्तार गङ्गातक किया था । शेष देश और राजाओंके नाम, ई हुल्ज (E. Hultzsch) कहते हैं कि, वे पहचान नहीं सके ।

लेखमें तिरुमलै, अर्थात् ‘पवित्र पहाड़’ का वर्णन है, और वह इसके ऊपरके मन्दिरको जिसे ‘कुन्दवै-जिनालय’ कहा गया है, दिये गये दानका उल्लेख करता है । यह ‘कुन्दवै’ कौन थी, इसके विषयमें ऐतिहासिकोंके दो मत हैं ।

इस शिलालेखके अनुसार, तिरुमलै पहाड़की तलहटीमें जो गाँव है उसका नाम ‘बैगवुर्’ है । यह ‘मुगैनाडु’ का है, जो ‘जयङ्कोण्ड-चोल मण्डलम्’ के ‘पङ्गलनाडु’ का एक विबीजन (भाग) है ।

१७५

चिक-हनसोगे—संस्कृत

[बिना काल-निर्देशका, पर सम्भवतः लगभग १०२५ ई० का]
 [चिक-हनसोगे (हनसोगे परगना)में, जिन-बस्तिके दरवाजेके ऊपर]
 (ग्रन्थ और तामिल अक्षर)

श्री-राजेन्द्र-चोळन जिनालयं देशिगणं बसदि पुस्तक-गच्छम्
 [राजेन्द्र-चोळ जैनमन्दिर, देशि-गण और पुस्तक-गच्छकी बसदि]
 [EC, IV, Yedatore tl., n° 21]

१७६

खजुराहो—संस्कृत

(सं० १०८५=१०२८ ई०)

संवत् १०८५ । श्रीम्त् आचार्य पुत्र श्री
 ठाकुर श्री देवधर सुत । श्री सिवि
 श्री चन्द्रयदेवः श्री शान्तिनाथस्य प्रतिमा कारी ।

[इस लेखमें स्थापित प्रतिमाका नाम शान्तिनाथ है, सेतनाथ नहीं,
 जैसा कि लोगोंमें प्रसिद्ध है । संवत् (विक्रम) भी साफ १०८५ दिया
 हुआ है ।]

[A. Cunningham, Reports, xx i. p, 61.]

१७७

मुल्लूर—संस्कृत

[बिना काल निर्देशका । लगभग १०३० ई० (छ० राहस) ।]
 [मुल्लूरमें, बस्ति मन्दिरमें शान्तिनाथ बस्तिके सामने पादद कल्लू पर]
 गुणसेन-पण्डितस्य गुरोः पुष्पसेन-सिद्धान्त-देवस्य श्री-पादम् ।
 [गुणसेन-पण्डितके गुरु पुष्पसेन-सिद्धान्त-देवके पवित्र पदचिह्न या पादु-
 काएँ ।]

[EC, IX, Coorge tl., n° 41]

१७८

अङ्गडि—कच्छद-अग्र

[बिना काल-निर्देशका, पर संभवतः लगभग १०४० (?) ई०

(ल० राइस) ।]

[अङ्गडि (गोणीबीडु परगना)में, हरमकि दोडु-उडवेमें पाषाणपर]

.....राज्यं गेये....द्रविणान्वयद मूल-सं.....

....पण्डित.....तु तर्काच्चालितामा....जलधि-यशो...कुत्त-

हल...शय वज्रपाणि पण्डित-चरण ॥ एनिसि सले गङ्गवाडिय ।

मुनि-वररि राजमल्ल-भूपालकनीमनु-नीति-मार्गनभयं । जन-पति-सम्य-

क्व-मार-नृपतिय गुरुगल् ॥ ४ ॥ इरदापनिगलङ्गळि तळ...व्यत्त

हो....। दुरितारण्यमनेयदे सुट्टु सोमवूरोल् विळद कालान्तदोळ् ।

रे सन्यास-विधानादिं मुडिपि पूज्यं वज्रपाणि-व्रतीश्वररत्युत्तम-मुक्तियं

पडेदरेम् पुण्यक्कवर् नो.... ॥

(बायीं ओर).....रविकीर्तिमुनीन्द्रनेन्दु पट्टळिगेये

पेळदेनेळ्व कलनेले-देवर साहसोक्तियम् ॥ श्रीमत्-कलनेले-देवर्त्तम्म

गुरुगळ्णे निपिधिगेय माडिसिदर मङ्गळ

[द्रविणान्वय, मूलसंघके...पण्डितके शिष्य वज्रपाणि-पण्डितके चरणोंमें

जब ..राज्य कर रहा था:- गङ्गवाडिके मुनियोंमें प्रसिद्ध राजा राजमल था ।

इसके गुरु वज्रपाणि-व्रतीश्वरने सोमवूरमें अपना जीवन व्यतीतकर अन्तमें

सन्यास-मरण धारण किया और उन्हींका यह स्मारक है ।]

[EC, VI, Mādgera tl., n° 18]

१७९

ब्या(बया)ना (राजपूताना)—संस्कृत

[सं० ११००=१०४४ ई]

[1A, XIV, p. 8-10 n° 151, t. & a.]

१८०

दोड्ड-कणगालु—कन्नड़ ।

[वर्ष तारण=१०४४ ई० ? (ल० राइस) ।]

[दोड्ड-कणगालुमें, गौडके खेतमें एक दूसरे पाषाणपर]

श्री-मूलसंघ देशिय-गण पुस्तक-गच्छ कोण्डकुन्दान्वय इङ्गलेश्वरद
बल्लिय.....शुभचन्द्र-देवर प्रियाग्र-शिष्यरुम्प प्रभाचन्द्र-देवर
निसिधि तारण-संवत्सर-चैत्र-शुद्ध-पञ्चमी-शुक्रवारदन्दु मुक्तरादरु ।

[श्री-मूलसंघ देशिय-गण पुस्तक-गच्छ कोण्डकुन्दान्वय और इङ्गलेश्वर
बल्लिके...शुभचन्द्र-देवके प्रिय ज्येष्ठ शिष्य प्रभाचन्द्र-देवकी समाधि
(निसिधि) । (उक्त वर्षमें) उन्हें छुटकारा मिला, अर्थात् स्वर्गगत हुए ।]

[EC, IX, Coorg tl., n° 56]

१८१

वेळगामि—कन्नड़

[शक ९७०=१०४८ ई०]

[सोमेश्वर मन्दिरके पासके एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर
परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुळ-तिलकं चालुक्याभरणं श्रीमत्-त्रैलोक्यमल्ल-
देवर विजय-राज्यं प्रवर्त्तिसे तत्पाद-पल्लवोपशोभितोत्तमाङ्गं स्वस्ति सम-
धिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरं वनवासि-पुर-वरेश्वरं महाल-
क्ष्मी-लब्ध-वर-प्रसादं त्याग-विनोदमायदाचार्यनसहाय-शौर्यं गण्डर
गण्डं गण्ड-मेरुण्डं मूरु-रायास्थान-कलि विरुद-मण्डलिक-वृषभ-शंकरं
कलिगळ मोगद कायि विरुदरादित्यम् प्रत्यक्ष-विक्रमादित्य जगदेक-दानि-

नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहितं श्रीमम्महा-मण्डलेश्वरं चामुण्ड-रायरसर
बनवासि-पन्निर-च्छासिरमनालुत्तमिरल् राजधानि-बळिगावेय नेले-
वीडिनोल् शक-वर्ष ९७० नेय सर्व्वधारी-संवत्सरद ज्येष्ठ-शुद्ध-
त्रयोदशी-आदित्यवारदन्दु जजाहुति-श्री-शान्तिनाथ-सम्बन्धियप्प
बळगार-गणद मेघनन्दि-भट्टारकर-शिष्यरप्प केशवनन्दि-अष्टो-
पवासि-भळा(ट्टा)रर बसदिगे पूजा-निमित्तदिं धारा-पूर्व्वकं जिडुळिगे
७० र बळिय राजधानि-बळिगावेय पुल्लेय-त्रयलोल् मेरुण्ड-गळ्योल्
कोट्ट गळ्दे मत्तरय्दु अदर सीमे (सीमाओंकी चर्चा)

धर्मेण शौर्य्य-सत्येन त्यागेन च महीतले ।

गण्ड-मेरुण्ड-सादरयो न भूतो न भविष्यति ॥

(हमेशाके अन्तिम श्लोक)

बनवासे-देसदोळगण ।

जिन-निळयं विष्णु-निळयमीश्वर-निळयम् ।

मुनि-गण-निळयमिवं रा- ।

यन बेसदि नागवर्म्म-विमु माडिसिदम् ॥

[जिस समय, (हमेशाकी चालुक्य उपाधियों सहित), त्रैलोक्यमल्ल
देवका विजयराज्य प्रवर्द्धमान था:—बनवासि-पुरवरका ईश्वर, महालक्ष्मीसे
जिसने वर प्राप्त किया था, 'गण्ड-मेरुण्ड' 'जगदेकदानी' इन और दूसरे पदों
सहित, महामण्डलेश्वर चामुण्डराय रायरस बनवासी १२००० पर शासन
कर रहा था;—बळिगावे राजधानीमें, (उक्त भित्तिको), जजाहुति शान्ति-
नाथके साथ सम्बद्ध बळगार-गणके मेघनन्दि-भट्टारकके शिष्य केशवनन्दि
अष्टोपवासि-भट्टारकी बसदिमें पूजा करनेके लिये, जिडुळिगे-सत्तरमें, राज-
धानी बळिगावेके मृगवनमें, 'मेरुण्ड' दण्ड (माप) अनुसार, ५ मत्त
धान (चावल)-क्षेत्रका दान किया । (भूमिकी सीमाई) ।

गण्ड-मेरुण्ड' की प्रशंसा । हमेशाके अन्तिम श्लोक ।

बनवासे देशमें, जिन-निवास, विष्णु-निवास, ईश्वर-निवास और मुनिगणके लिये निवास । ये, रायकी भाषासे, नागवर्मा-विभुने बनवाये ।]

[EC, VII, Shikarpur tl., n° 120]

१८२

कल्भावी—संस्कृत तथा कर्बड ।

शक २६१ (?)

ॐ (॥) श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं

जीयात्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्त्यमोघवर्षदेव-परमेश्वर-परमभट्टारक-विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-
प्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारंवरं सलुत्तमिरे [।] तत्पादपञ्चोपजीवि समधिग-
तपञ्चमहाशब्द-महामण्डलेश्वरं कुवलालपुरवरेश्वरं पद्मावतीलब्धवरप्रसा-
दिनं कोङ्कणि-पट्टबन्धविराजितं शासनदेवीविजयमेरीनिर्घोषणं भगवदह-
न्मुमुक्षुपिञ्जलध्वजविभूषणं सकलभूपालमौलिमाणिक्यचूडारत्नरञ्जितचरणं
विद्विष्टमनोरमालङ्कारहरणं सारस्वतजनितभाषात्रयकविताललितवाग्ललना-
लीलाललामं गजविद्याधामं श्रीमत्-शिवमाराभिधानसैगोद्वृगङ्ग-पेर्मन-
डिगल् मरदल्लमेतेयागे गङ्गावाडि-तोम्भत्तारु-सासिरमं सुखसङ्कथाविनोददिं
प्रतिपात्रिसुत्तिब्बु कादलवल्लि-मूवत्तरोळगण कुम्मुदवाडदोळ् जिनन्द्रम-
न्दिरमं माडिसिदनदे दोरेयदेन्दोडे ॥ वृ ॥

इदु गङ्गाधीश्वर-श्रीगृहमिदु विलसद्गङ्गभूपालारम्भायद

कीर्तिश्रीविहारस्पदकरमिदु गङ्गावनीनाथरौदार्यद

जन्मस्थानमेम्बन्तिरे विबुधजनानन्दमं भव्यसंपत्पदमं

सैगोद्वृ-पेर्मनडि जिनगृहमं माडिदं भक्तियिन्दम् ॥

आ जिनमन्दिरके । वृ० ।

विमलश्रीगुणकीर्तिदेवरवरतेवासिगळ-

नागचन्द्रमुनीन्द्रतैदपलरुद्धजिनचन्द्राख्य-

सदीयात्मजईमिताघशुभकीर्तिदेवरेसेद-

त्तच्छिष्यरुद्धचोरमणीयस्सले देवकीर्तिगुरुगळ्वादीभक्ठरीव[३॥]

आ परमेश्वरपरवादिबिम्बसिगळुं विदिताशेषशास्त्रं मैलापान्वय
मेनिसिद [क]ारेयगणगगनचूडामणिगळुमप्य देवकीर्तिपण्डित-
देवर कालं कर्चि ॥ ॐ शक्रवर्ष २६१ नेय विभवसंवत्सरद पौष्य
(१)-बहुल-चतुर्दशीसोमवारमुत्तरायण-संक्रान्तियन्दु सैगोडु-गङ्ग
कुम्मुदवाडमेम्बूरं बिट्टनल्लिये मत्तं दानसालेगे पोलनुमं कुम्मुदब्बेय देगुलदि
बडग पोगि मूड मुखं केरिवुमं बसदियि मूडलु दानसालेगे पन्निर्क्किय-
निवेसणमुमं । ऊरिं मूड सपसिं(?)गे-गर्देयुं वयल्लुमं बिट्ट-॥ना ग्रामद
सीमेयेन्तेन्दोडे । आलिगोण्डदि । सिडिलनेरिलि । समेयदातनकेरेयि ।
मलप-बूदनि । तोळप-बळप-बलियळरियि । गङ्गरोळादुव-संकिय-केरेयि ।
हिच्चलगोरेय कोडियि । निन्दबेलि । सिन्दगिरि-बोर्भागदि । सून्दिगेरेय
नीर तट-बोर्भागदि । सिङ्गस-गेरेयि । कदिकोड-बलिवलि-गर्देयिन्दोळ-
गुळ्ळ भूमि कुम्मुदवाडके ॥ मत्तमूरिं तेङ्क दानसालेय पोलके एरप-
केरेय मूडण कोडिय बडगण गुत्तिय तेङ्क मुखदे मूडल्मेरे । तेङ्क [लु]
बलिवलि-गर्देयुं । आलिगोण्डमुं मेरे । बडगलिविन-केरेय मध्य मेरे ।
पडुवल्लु विक्किय-बेट्टद तेङ्कण बागोळगागि मेरे ॥ (१) इल्लिन्दोळगुळ
भूमि दानसालेगे ॥ ओम् [३]

ॐ स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द-महामण्डलेश्वरं कुवलाल-पुरवरेश्वरं
पद्मावतीलब्धवरप्रसादितं कोङ्गुणिपट्टबन्धविराजितं शासनदेवीविजय-

मेरीनिर्घोषणं भगवदहंमुमुक्षुपिच्छध्वजविभूषणनुमप्य श्रीमत्कञ्जरस-
 र्सेगोद्व-गङ्गनि बन्द धर्ममं समुद्धरिसिदिनिदन्तपदे प्रतिपालिसिदातं
 वारणासियोळ् सासिर्वरु ब्राह्मणर्गे सासिर कविलियु[म्] कोट्ट फलम् ।
 इदनळिदातं वाणरासियोळ् सासिर कविलियुमं सासिर्वर्त्तपोधनरुमं
 सासिर्वर्त्तब्राह्मणरुमनळिद पातकमक्कु [II] ओम् [II]

सामान्योऽयं धर्मसितुं नृपाणाम् ५

काले-काले पालनीयो भवद्विस्-

सर्वनितान् भाविनः पार्थिवेन्द्रान्

भूयो-भूयो याचते रामभद्रः । (II)

स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम्

षष्टि-वर्ष-सहस्राणि विष्टायां जायते कृमिः ॥

न विषं विषमित्याहुः देवस्त्वं विषमुच्यते

विषमेकाकिनं हन्ति देवस्त्वं पुत्र-पौत्रिकम् ॥

बहुभिर्वसुधा दत्ता राजभिस्सगरादिभिः ।

यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥

ॐ [II]

[कलभावी बम्बई प्रान्तके बेलगाँव जिलेके सम्पगाँव तालुकेके मुख्य-
 शहर सम्पगाँव (Sampgaum) से दक्षिण-पूर्व करीब ९ मीलदूर एक
 गाँव है । इसका पुराना नाम इसी शिलालेखकी पंक्ति ८, १५, और २१
 में 'कुमुदवाड' दिया हुआ है । लिपिकी लिखावटसे यह लेख ई० ११
 वीं शताब्दिका मालूम पड़ता है ।

लेख प्रकट करता है कि किसी अमोघवर्ष नामके राजाने मैलाप अम्बय
 और कारेय गणके देवकीर्त्ति नामके जैन गुरुके पादों (चरणों) का प्रक्षा-
 लन किया था । उस अमोघवर्षके सामन्त, गङ्ग महामण्डलेश्वर सैगोद-
 पेर्मानडि या सैगोद-गङ्ग-पेर्मानडिने, जिनका दूसरा नाम शिवमार था,

कुम्मुडवाड (कल्भावीका ही पुराना नाम) गाँवमें एक जिनेन्द्रका मन्दिर बनवाया और इसके लिये गाँव दानमें दे दिया । इस दानका काल शक-संवत् २६१, विभव संवत्सर दिया हुआ है । लेकिन, जे० एफ० फ्लीटकी रायमें, यह काल ज़ाली है और वास्तविक उल्लेख लेखके उत्तरार्ध में सन्निहित है (ॐ स्वस्तिसे लेकर), जिससे मालूम होता है कि उपर्युक्त दान बीचमें या तो जड़त कर लिया गया था या असावधानीके कारण बन्द कर दिया गया था और उसे कञ्जरस नामके किसी दूसरे गङ्ग-महामण्डलेश्वरने फिरसे चालू किया । भले ही तमाम लेख बनावटी हो, पर, जे० एफ० फ्लीटकी मान्यतानुसार, इसका उत्तरार्ध तो सच्चा है । मौलिक दानपत्रके खो जानेसे ही स्वयं लेखगत दानकी बनावटी तिथि देनी पड़ी है । लेखमें खाली 'अमोघवर्ष' ऐसा नाम देनेसे यह पता नहीं चलता कि 'अमोघवर्ष' नामके राष्ट्रकूट राजाओंमेंसे कौन-सा अमोघवर्ष इस समय शासन कर रहा था । मौलिक दानका काल मैलाप अन्वय तथा कारेय गणके आचार्य गुणकीर्ति, नागचन्द्र, जिनचन्द्र, शुभकीर्ति और देवकीर्तिके वर्णनसे निकाला जा सकता है । प्रथम दान देनेके समयका काल शक सं० २६१ गलत है, क्योंकि विभव संवत्सर चालू शक सं० २३१ पड़ता है ।]

[Ind. Ant., Vol. XVIII, pp. 309-13.]

१८३

नल्लूर—संस्कृत तथा कन्नड़

[बिना काल-निर्देशका; लगभग १०५० ई० (लूई राइस)]

[नल्लूर (हत्तुगट्टुनाड) में, तीतरमाडके घरके पास सर्वे (Survey) ११७ नं. के तालाबके बाँधपर एक पाषाणपर]

भद्रं भूयाज्जिनेन्द्राणां शासनायाधनाशिने ।

कु-तीर्थ-ध्वान्त-संवात-प्रभिन्न-घन-भानवे ॥

स्वस्ति श्री

प.....धनं परत्र-हित-कारणकं परमोपकारकम् ।

कुडे त.....ताब्दि.....य तिग.....मतिग.....भया.....दन्तम.....।

शि० १५

तडेयदे मुक्तियं पडेवेनेन्दु विचारिसि बन्धु-वर्गव.....।

विडिसि समाधियं पडेदुदेल्लियुमच्चरि जक्कियब्बेय ॥

कस्तूरि-भट्टारगे अवर श्रावकि चन्दियब्बे-गावुण्डि.....यर
मन्नकि जक्कियब्बे सन्यसनं गेय्दु मुडिपिदळ् ॥ अकिय गण्ड परम-
श्रावक एडय्य मङ्गळम्

[जिनशासनके लिये कल्याण-कामना । स्वस्ति । भयके साथ यह सुनकर
कि दाय-तिगमति परलोककी इच्छासे मृत्युको प्राप्त हुई—तथा इस बातको
न सहन कर, अपने सम्बन्धियोंकी सम्मति लेकर जक्कियब्बेने, जो चन्दि-
यब्बे-गावुण्डिकी 'मन्नकि' और कस्तूरी भट्टारकी 'श्राविका' थी, संन्यसन
श्रद्धा की और स्वर्गगत हुई । उसका पति श्रावक एडय्य था ।]

[EC, IX, Coorg II., n° 31]

१८४

नल्लूर — कण्ड

[विना काल-निर्देशका; लगभग १०५० ई० ? (लई राइस)]

[नल्लूर (हत्तुगट्टुनाड) में, तीतरमाडु मादय्यके घरके पश्चिमकी तरफ
हिस्सलमें]

.....कोडङ्गळ.....ए मग.....दिले आळदडे
मेन्दु यति-वरगंल्लं मादरदि बीळि.....पा [द]दोळेरगि ताळिदनी-
सुर-कीर्त्ति भद्रमस्तु जिन-शामनाय श्रीम मदुवङ्गनाड् दोर किविरि-
यय्यङ्गळ् चाङ्गळद बसदियोळ् पनेरडं नोन्तु मुडिपि नवर मक्कळ्
बाकियु बुकिय निरिसिदर

[...जब कोडङ्गळुवका पुत्र शासन कर रहा था, बीळिय-सेट्टिने देवोंके
यशका लाभ किया । जिनशासनका कल्याण हो ।

मदुवङ्गनाडका स्वामी, किविरिके अद्यने १२ दिन तक चाङ्गळ बसदिमें
व्रत रक्खा और स्वर्गगत हुआ । उसके पुत्र बाकि और बुकिने इसकी
स्थापना की ।]

[EC, IX, Coorg II., n° 30]

१८५

अङ्गडि—कञ्चड़

[शक ९२४, वर्ष जय (ठीक शक ९७६=१०५४ ई०) लूई राइस]

[अङ्गडि (गोणीबीडु परगना) में, बसदिके पासके पाषाणपर]

स्वस्ति सक-वर्ष ९२४ नेय जय-संवत्सरद चैत्र-मामद सुद्ध-
दशमी.....वार पुष्य नक्षत्रदन्दु विनयादित्य-पोय्सळन
राज्यं प्रवर्त्तिसे सूरस्त-गणद श्री-वज्रपाणि-पण्डित-देवर.....गन्तियरप्प
जाकियब्बे-गन्तियर (पीछे) सोसवूरोळे नाडे पोपणद दिसेयनरसर्गे
वोक्कल्यं पोन्नरे कोडु मण्णरेकोण्डु सोसवूर-बसदिगे विट्टर निसिदिगे
यडेवळ्ळेय.....ण्ण आरतारगे.....एरडु-हळ्ळद मेगण गण्ण नाल्कु
मकर-जिनालयकं विट्टर (हमेशाका अन्तिम श्लोक)

[(उक्त मितिको) जिस समय विनयादित्य-पोय्सळका राज्य प्रवर्त्तमान
था—सूरस्त-गणकं वज्रपाणि पण्डितकी शिष्या जाकियब्बे-गन्तिने सोस-
वूरमें नाडकी ओर जानेवाली दिशामें निवासस्थानके लिये पूरा रूपया
राजाको देकर और पूरी जमीन लेकर उसे स्मारकरूप सोसवूरकी 'बसदि'
के लिये छोड़ दिया । और यडेवळ्ळे.....ण्णने दो खड्डों (ravines) के
उपर चार गण्ण मकर-जिनालयके लिये दिये ।]

[EC, VI, Mūdgore II, n° 9]

१८६

होन्वाड—संस्कृत तथा कञ्चड़

[शक ९७६=१०५४ ई० सन्]

ॐ [II] भद्रमस्तु जिनशासनाय संभद्रतां प्रतिविधानहेतवे [I]

अन्यवादिमदहस्तिमस्तकस्फाटनाय घटने पटीयसि [II]

१ शक ९२४ जय वर्ष दिया हुआ है । लेकिन शक ९२४ प्लव संवत्सर है;
त्रय शक ९७६ है, और यही ठीक मिति मालूम पड़ती है ।

ओं स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज पर-
 मेश्वर परमभट्टारकं सत्याश्रयकुलतिलकं चालुक्याभरणं श्रीमत्
 त्रैलोक्यमल्लदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्धमानमाचन्द्रार्कतारं
 वरं सलुत्तमिरे [I] तद्विशालोरःस्थलनिवासिनियरप्प श्रीमत्-केतलदेवि-
 यर तर्द्धवाडि-सासिर-दोळ्गणरुनूरुं-बाडद स्वम्पण बागेयय्वत्तर
 वळियमुत्तम-मग्रहारं पोन्नवाडमं त्रिभोगाभ्यन्तरसिद्धियिन्दाळुत्तमिरे [II]
 तत्पादपद्मोपजीवी गणकचूडामणियु [म] वाणसकुलाम्बरभानुवुं अर्ह-
 ष्ठासन-मूलस्तम्भवुं कलिकाल-श्रेयांसनुं सम्यक्त्वरत्नाकरनुमप्प ॥

वानसवंशकूर्मनिभकोम्म जगद्विनुतात्तिकाम्बिका-सूनुरुदात्तकी-
 र्त्तिधवलीकृतदिग्विजययोगिराण्महासेनमुनीन्द्रपादकमलवभ्रमरं

परिपूर्णचारुविद्यानिधिचाङ्किराजविभुराश्रितशिष्टजनेष्टतुष्टिदः ॥

गम्भीरो बहुशङ्खमत्स्यमकरश्रीमत्तलं सात्त्विके

लक्ष्मीजन्मगृहसमस्तवसुधाव्यावेष्टनोद्ययशः

अन्तर्ज्योतितचारुरत्ननिवहो निर्द्वैतकल्पापको

जीवानन्दरमाकरो विजयते सम्यक्त्वरत्नाकरः ॥

आहाराभयभैषज्यशास्त्रदाने तथा परं ।

चाङ्कणार्यस्समो (आर्यममो) नास्ति न भूतो न भविष्यति [II]

ओम् [III] श्रीमूलसंघे जिनधर्ममूले गणाभिधाने वरसेननाम्नि

गच्छेषु तुच्छेऽपि पोगर्यभिल्ये संस्तूयमानो मुनिरार्यसेनः ॥

अनेकभूपालकमौलिरत्नशोणांशुबालातपजालकेन ।

प्रोज्जम्भितश्रीचरणारविन्द-श्रीब्रह्मसेनप्र(व)तिनाथशिष्यः ॥

तस्यार्यसेनस्य मुनीश्वरस्य

शिष्यो महासेनमहामुनीन्द्रः ।

सम्यक्त्वरत्नोज्ज्वलितान्तरङ्गः

संसारनीराकरसेतुभूत[ः] ॥

तज्जैनयोगीन्द्रपदाब्जभृङ्गः

श्रीवानसाम्नायवियत्पतङ्गः ।

श्रीकोम्मराजात्मभवस्सुतेज-

स्सम्यक्त्वरत्नाकरचाङ्किराज[ः] ॥

कलङ्कमुक्तस्सततैकरूपो

दोषेतरश्रीनिलयरसमस्त-

भव्याब्जसंदोहविकासहेतु[ः]

विराजते नूतनचाङ्किराजः ॥

तन्निर्मितं भुवनबुम्भुकमत्युदात्तं

लोकप्रसिद्धविभवोन्नत-पोन्नवाडे

रंरम्यते परमशान्तिजिनेन्द्रगोहं

पार्श्वद्वयानुगतपार्श्वसुपार्श्ववासम् ॥

महासेनमुनेच्छात्रं चाङ्किराजेन निर्मितं

द्रष्टुकामाघसंहारि शान्तिनाथस्य बिम्बकम् ॥

महासेनमुर्नान्द्रस्य च्छात्रेण जिनवर्मणा

छत्रीकृतमहानागं रचितं पार्श्वदैवतम् ॥

जनकस्य कोम्मराजस्य धर्मोद्देशाद्विनिर्मिता

राजते चाङ्किराजेन सुपार्श्वप्रतिमोत्तमा [॥]

ॐ ॐ शकवर्ष ९७६ नेय जयसंवत्सरद वैशाखदमा-
वासे सोमवारदन्दिन सूर्यग्रहणनिमित्तदिं मीमनदिय तडिय

मणियूर-अप्पयणवीडिनोळ पोन्नवाडदोळ चाङ्किमय्यन माडि-
सिद श्रीशान्तिनाथदेवर त्रिभुवनतिलक-चैत्यालयदलिर्ण ऋषियरजिय-
राहारदानके सर्व्वनमस्यवाणि श्रीमन्नैलोक्यमल्लदेवर् श्रीकेतलदेवियर
बिन्नपदि मूवत्तुगेण गळेयोळ विट्ट नेल मत्त [१] ३५ तोण्ट मत्त [२]
१ निवेसणदगलमा गळेयोळ गळे ४ गेणु १७ नीळ गळे ९ बलम्बे-
निवेसण मूडण बेळदोळा गळेयोळगलं गळे ३ नीळ गळे ७ गोपुरद
मूडण अङ्गडिगं गाण १ अल्लि बेस-गेय्व कल्कुटिगर मने १ सावगरिर्ण
पोलेमने १ [II] ॐ अल्लिय सुपार्श्वदेवर बसदिगे आ गळेयोळ मत्तर
सल्लिके अरुवणद लेकदे विट्ट नेलं मत्त[१] ३५५ आ गळेयोळ तोण्ट
मत्त [१] १ गाण १ [III] ओं तम्मं जिनवर्ममय्यन माडिसिद पार्श्वदेवर
बसदिगे करहड-नालछासिरदोळगण कळम्बडि-३००२२ वळिय
कळडिगेय मङ्गरसन मगं मनेयं वज्जरसन गुड्डे-मान्य ५०० मत्तर-
क्रेयोळगे मूवत्तु-गेण गळेयोळसर्व्वनमस्यमाणि चाङ्किमय्यं मारुगेण्डु
विट्ट नेलं मत्त[१] ३५ [III]

[यह लेख पश्चिमी चालुक्य राजा सोमेश्वर प्रथमका, जो वहाँ अपने
विरुद्ध 'त्रैलोक्यमल्लदेव' से वर्णित हुए हैं, उल्लेख करता है और उसकी
रानी केतलदेवीका भी जो पोन्नवाड 'अग्रहार' पर शासन कर रही थी।
यह एक जैन शिलालेख है; इसका उद्देश यह बताना है कि किस तरह
चाङ्किराज, चाङ्कणार्थ, या चाङ्कमय्यने, जो कि वानस या वाणस वंशके
तथा केतलदेवीके भौतीमर थे, शान्तिनाथ, पार्श्व, और सुपार्श्वकी वेदियोंको
पोन्नवाडमें त्रिभुवन-तिलक नामक चैत्यालयमें बनवाया और किस तरह
उन वेदियोंके लिये कुछ जमीन और मकानात दान किये गये ।]

[IA 19, p. 268-275, n° 190]

१ लेखमें वर्णित पोन्नवाड, वास्तवमें, वर्तमान होन्वाड ही है ।

१८७

बंकापुर—कन्नड़

[मन्मथ संवत्सर=शक ९७७=१०५५ ई०]

[इस लेखका परिचयमात्र मिलता है, लेख नहीं । बंकापुर धारवाड़ जिलेके वर्तमान शिगौम या बंकापुर तालुकेसे दक्षिण-पश्चिम छह मील पर है ।

यहाँके सारे लेख किलेमें हैं । यह लेख एक दीवालके सहारे है जो कि पूर्वकी तरफसे किलेमें घुसते समय दाहिने हाथकी तरफ है । एक विशाल चिकने पत्थरपर ५९ पंक्तियोंका यह एक लेख है, हर एक पंक्तिमें करीब ३७ अक्षर पुरानी कनड़ी लिपि और भाषामें हैं । शिलालेखका अधिकांश अच्छी स्थितिमें है; लेकिन चौथी पंक्ति जानबूझकर मिटा दी गई है और उस शिलापर दरारें पड़ी हुई हैं जिनसे ऐसा मालूम पड़ता है कि यदि इस शिलाको किसी सुरक्षित स्थानपर ले जानेका प्रयत्न किया जायगा तो वह टूट जायगी । शिलाके अग्रभागके चिह्न चालाकीसे मिटा दिये गये हैं; लेकिन निम्नलिखित फिर भी कुछ चिह्न मिलते हैं:—मध्यमें लिङ्ग है; इसके दाईं ओर एक बैठी हुई या घुटने टेकी हुई मूर्ति; उसके ऊपर सूर्य है और इसके बाहरकी ओर एक गाय और बछड़ा है; और इसके बाईं ओर एक स्थानापन्न पुरोहित या पुजारी, उसके ऊपर चन्द्रमा और उसके बाहर बसवकी मूर्ति बनी हुई है । लेखका काल शकवर्ष ९७७ (१०५५-६ ई०), मन्मथ 'संवत्सर' दिया हुआ है, जब कि चालुक्य राजा गङ्गपेर्मर्मानन्द-विक्रमादित्यदेव,—जो कि त्रैलोक्यमल्लका पुत्र; कुबलाल-पुरका अधीश्वर; नन्दगिरिका स्वामी, और जिसके मुकुटमें कुँदै हाथीका चिह्न था,—गङ्गावाधि ९६००० और बनवासी १२००० पर शासन कर रहा था, तथा जब कि महाप्रधान हरिकेसरीदेव, जो कादम्ब-सम्राट् मयूरवर्माका कुलतिलक था, उसके अधीन बनवासी १२००० पर शासन कर रहा था । हरिकेसरीदेवकी उपाधियाँ अधिकतर उसी तरहकी हैं जैसी कि अन्य कादम्ब राजाओंकी । लेखमें कुछ भूमिके दानका उल्लेख है । यह भूमि निडगुन्दगे बारह, की थी जो पानुङ्गल ५०० का एक 'कम्पण' था । यह भूमि-दान एक

जैनमन्दिरको हरिकेशरीदेव और उसकी पत्नी लबालदेवी तथा बङ्गापुरके पाँच मतोंको आश्रय देनेवाली जनता, नगरमहाजनोंकी गिरुड (कम्पनी) तथा 'सोलह' वर्गोंने किया था ।^१]

[1A, IV, p. 203, n° 1, a ; ASI, XVI, p. 133, a.]

१८८

मुल्लूर—संस्कृत तथा कन्नड़

[विनाकाल-निर्देशका, पर लगभग १०५८ ई०]

[मुल्लूरमें, पार्श्वनाथ बस्तिकी उत्तरी दीवालपर]

स्वस्ति श्री-राजाधिराज कोङ्गाळवनब्बे पोचब्बरसियर् द्रविळ-गणद नन्दि-संपद अरुङ्गलान्वयद गुणसेन-पण्डितदेवर गुड्डि माडि-सिद बसदि मङ्गळ महा ।

[स्वस्ति । द्रविळ-गण, नन्दिसंघ, तथा इरुङ्गलान्वयके गुणसेन-पण्डित-देवकी गृहस्थ-शिष्या, राजाधिराज-कोङ्गाळवकी माँ पोचब्बरसिने इस बस्तिको बनवाया । महा मङ्गळ ।]

[EC, IX, Coorg, tl., n° 37]

१८९

मुल्लूर—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक ९८०=१०५८ ई०]

[मुल्लूरमें, पार्श्वनाथ बस्तिके पश्चिममें दूसरे पाषाणपर]

धम्म-सेट्ठि बरेदं स्वस्ति शक-वर्ष ९८० तेनेय विलम्बि-संव-त्सरद उत्तरायण-संक्रान्तियन्दु श्री-राजेन्द्र-कोङ्गाळवं तम्मय्य माडिसिद बसदिगे कोट्ट हारुवनहळ्ळि अरकनहळ्ळि निडुतद गोडल खण्डुगम् ३ के (दूसरे गावोंमें ऐसे ही दान) श्रीराजाधिराज-कोङ्गाळवनब्बे पोचब्बरसियर् तम्म गुरुगळु द्रविळ-गणद नन्दि-

१ 'बङ्गापुरद पञ्चमत(ठ)स्थानमुं नगरमहाजनमुं पदिनस्वरुम्' ।

संघदरुङ्गलान्वयद गुणसेन-पण्डित-देवर्गे माडिसि धारा-पूर्वकं कोट्टरु ॥ (वही अन्तिम श्लोक) ।

[धर्म-सेट्टिके द्वारा लिखित ।

स्वस्ति । (उक्त मितिको), राजेन्द्र-कोङ्गाळवने, अपने पिता द्वारा निर्मित बसदिके लिये हेरुवनहळिळ, अरकनहळिळ, तथा निडुत गोडलुमें तीन खण्डु-गका दान दिया, और इसी तरह दूसरे गाँवोंमें (जिनके नाम दिये हैं) ।

और राजाधिराज कोङ्गाळवकी माँ पोचब्बरसिने अपने गुरु द्रविळ-गण, नन्दि-संघ, तथा अरुङ्गलान्वयके गुणसेन-पण्डित-देवकी प्रतिमा बनवाकर जलधारापूर्वक इसे समर्पित की । श्राप ।]

[EC, IX, Coorg tl., n° 35]

१९०

मुल्लूर—संस्कृत तथा कन्नड

[विना काल-निर्देशका, पर लगभग १०५८ ई० का]

[मुल्लूरमें, पार्श्वनाथ बस्तिके नीचे देहलीमें]

स्वस्ति श्री राजेन्द्र-चोळ-कोङ्गाळवन पुत्र श्री-रा...कोङ्गाळव... वास-स्थानमें तम्म गुरुगळ् तिवुळ-गणदरुङ्गलान्वयद नन्दि-संघद गुण-सेन-पण्डित-देवर्गे धारा-पूर्वकं कोट्टं मङ्गळ महा श्री श्री ।

[स्वस्ति । राजेन्द्र-चोळ-कोङ्गाळवके पुत्र रा...कोङ्गाळवने तिवुळ-गण, अरुङ्गलान्वय और नन्दि-संघके अपने गुरु गुणसेन-पण्डित-देवको रहनेके स्थानके रूपमें...दिया ।]

[EC, IX, Coorg tl., n° 38]

१९१

मुल्लूर—कन्नड

[विना काल-निर्देशका, पर लगभग १०५० ई०]

[उसी बस्तिके प्राङ्गणमें एक पाषाणपर]

स्वस्ति श्री गुणसेन-पण्डित-देवर अगळिसिद नागवावि नकरद धर्म

[स्वस्ति । नाग-कुआँ जिसको गुणसेन-पण्डित-देवने नकर याने व्यापारी संघके धर्मके रूपमें खुदवाया ।]

[EC, IX, Coorg tl., n° 42]

१९२

सोमवार—कञ्जड़

[विना काल-निर्देशका; लेकिन संभवतः लगभग १०६० ई०]

[सोमवार (मल्लिपट्टण परगना) में, बसवण्ण मन्दिरकी बाहरी दीवाल के पाषाणपर]

धरेयोळगेचल-देविगे ।

गुरुगळ् गुणसेन-पण्डितर्द्रविळ-गणम् ।

वर- नन्दि-संघमन्वय-।

मरुङ्ग.....नगदेन्दडेम्बणिपुडो ॥

भद्रमस्तु ।

[एचलदेविके गुरु,—द्रविळ-गण, नन्दि-संघ और अरुङ्गल-अन्वयक, गुणसेन-पण्डित, जो इतने प्रसिद्ध हैं, उनका वर्णन इस संसारमें कैसे हो सकता है ? कल्याण हो ।]

[EC, V, Arkalgud tl., n° 98.]

१९३

कडवन्ति—कञ्जड़-भग्न ।

[विना काल-निर्देशका पर संभवतः लगभग १०६० ई०]

[कडवन्तिमें, मेलु-कडवन्तिकी चट्टानपर]

भद्रमस्तु जिनशामनाय श्रीमत्-दान.....खचर-कन्दर्प सेनमार पृथुवी-राज्यं गेय्युत्तमिरे देव-गणद पाषाणान्वयद महेन्द्र-वोळळं पडेद अङ्कदेव-भटारर शिष्यर्महीदेव-भटारर गुडं निरवद्यय्यं मेलसरय मेगे निरवद्य-जिनालयमं माडि खचर-कन्दर्प-सेनमारन दयगेये निरवद्यय्यं मानियं पडेदु जक्कि-मानियेन्दु पेसरनिडु निरवद्य-जिनालयके कोडं

एडेमलेय सासिर्वेरुं गळ्देय मेक्कळ तम्म तम्म गळ्देय मेगे एल्ला-कालमुं
पलं दप्पदे जक्कि-गोळगमेन्दित्तर्कडमन्तियोम् मादेर रचिपन्दूरुगं
एङ्गळिग सिरिपुरसन्मुत्तुवु मूगण्डग-भत्तं पोक्कुळि-मक्किय पलिसिन तार-
नित्तरुज्जेनियोळ नाल्-गण्डग भगमनित्तरद्वाडियोळपिन्दगर-पुडुग
मूगण्डुग मित्तमुळ्ळि-भागदोल्.....मूगण्डुगमित्तं शालादि-
त्यर कप्पिगमिर्क्कण्डुगं.....मुळियर कुन्द कोण्टार्पन्दिद्यो सार.....
.....मेदुकय्यं किरगादण्ण मू-गण्डुगं मण्ण...म् इकुळ-भत्तमुमन....
.....न्ददणिकिग देपण्ण मूगण्डु.....मित्तर...योळ श्री-व....

[जिस समय खचर-कन्दर्प सेनमार पृथ्वीपर राज्य कर रहे थे:—
निरवद्यने, जो देवगण और पाषाणान्वयके अङ्कदेव-भटारके शिष्य मही-
देव भटारका गृहस्थ-शिष्य था और जिसने महेन्द्र-बोळलुको पाया था,—
मेलस चट्टानपर निरवद्य जिनालय खड़ा किया; और खचरकन्दर्प
सेनमारकी कृपा प्राप्तकर निरवद्यको एक 'मान्य' मिला, जिसे उसने जक्कि-
मान्यका नाम देकर निरवद्य-जिनालयको भेंट कर दिया ।

और एडेमले हजारने अपनी हर एक धान्यके खेतोंकी फसलसे कुछ
धान्य (चावल) दानरूपमें हमेशा के लिये दिया ।

और भी जिन लोगोंने अनाजका दान किया उनके नाम दिये हैं ।]

[EC, VI, Chikmagalur tl., n° 75]

१०४

अङ्गडि—कन्नड

[विना काल-निर्देशका, पर संभवतः लगभग १०६० ईसवी]

[अङ्गडि (गोणीबीडु परगना) में, छठे पाषाणपर]

(ऊपरका हिस्सा टूट गया है) सोसवूर सेडिगळ लोकजितनिगे
निषिधिय कळ नखर-समूह नट्टरु

[सोसवूरके व्यापारी लोकजितके इस स्मारकको उस नगरके व्यापारी
लोगोंने खड़ा किया ।]

[EC, VI, Mūdgere tl., n° 16.]

१९५

चिक-हनसोगे—कच्छ

[विना काल-निर्देशका, पर संभवतः लगभग १०६० ई० का]

[चिक-हनसोगे (हनसोगे परगना) में जिन-बस्तिके दरवाजेके ऊपर]

श्री-वीर-राजेन्द्र नन्नि-चङ्गाळव-देवर्म्मण्डिसिद् पुस्तक-गच्छद

बसदि

[वीर-राजेन्द्र नन्नि-चङ्गाळव-देवने पुस्तकगच्छकी बसदि बनवाई]

[EC, IV, Yedatore tl., n° 22.]

१९६

चिक-हनसोगे—कच्छ ।

[विना काल-निर्देशका, पर सम्भवतः लगभग १०६० ई०]

[जिन-बस्तिमें, दरवाजेपर पड़े हुए पथरोंपर]

• दशाशिर-प्रहारियप्प रामस्वामि विद्द परमेश्वर-दत्तियं शकनोड
 विक्रमादित्यं पडिसलिसि-तान.....मुन्निनन्ते बडगण-तूम्बिन
 नीर्व्वरिदनि तु नेलनं ख.....ताम्ब-शासन-पूर्व्वकं कोट्टरदं
 मारसिंह-देव पडिसलिसलेन्ता-परमेश्वर-दत्तिय बडगण तूम्बिन
 नीर्व्वरिदनि तु.....मुन्निनन्ते कादना-रामर दत्तिय ताम्ब-शासन
 पडिय.....मडि ईयक्कर वरेदवदं नन्नि-चङ्गाळव-देवप्पुनर्णवं
 माडिसिद् बसदिय तूम्बिनलक्करवु प्रतिमेयु माडिद तप्पिदग्गे कविल्लेगे
 तप्पिद पाप

[पहलेकी ही तरह, उत्तरीय नहरसे, सींची गई सारी जमीन, -दशाशिर
 (रावण) के वधक रामस्वामीके द्वारा जो छोड़ दी गई थी, परमेश्वरने
 जिसे दिया था, और जिसे इनामके तौर पर शक तथा विक्रमादित्यने भी
 दिया था,—ताम्बेके शासन (लेख) पूर्व्वक.....दी । परमेश्वर-प्रदत्त तथा
 उत्तरीय नहरसे सींची गई सारी जमीनका दान मारसिंह-देवने किया और
 पहलेकी ही तरह उसका रक्षण भी किया ।

...मछिने रामके दिये हुए इस ताम्बेके शासनपर दानके अक्षर लिखे और बसदिके पानीकी राहके फाटकपर मूर्तियाँ और अक्षर खोदे । इस बसदिको नभि-चङ्गाल-देवने फिरसे बनवाया ।]

[EC, IV, Yedotore tl., n° 25.]

१९७

हुम्मच—कछड़

[शक ९८४=१०६२ ई०]

[सूले बस्तिके सामनेके पाषाणपर]

खस्ति समस्त-सुरासुर-

मस्तक-मुक्तांशु-जाल-जल-धौत-पदम् ।

प्रस्तुत-जिनेन्द्र-शासन-

मस्तु चिरं भद्रमखिल-भव्य-जनानाम् ॥

खस्ति श्री पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुल-तिलकं चालुक्याभरणं श्रीमत्-त्रैलोक्यमल्ल-देवरराज्यं सलुत्तमिरे ॥ खस्ति ममधिगत-पञ्च-महाशब्द महामण्डलेश्वरनुत्तर-मधुरा-वीश्वर पट्टि-पोम्बुर्चे-पुर-वरेश्वरं महोप्र-वंश-ललामं पद्मावती-लब्ध-वर-प्रसादासादित-विपुल-तुलापुरुष-महादान-हिरण्यगर्भ-त्रयाधिक-दानं वान-रध्वज-विराजित-राजमानं मृगराज-लाञ्छन-विराजितान्वयोत्पन्नं ब्रह्म-कल्या-कीर्णं शान्तरादित्यं सकल-जन-स्तुत्यं कीर्ति-नारायणं सौख्य-पारायणं जिन-पादाराधकं रिपु-बल-साधकं नीति-शास्त्रज्ञं विरुद-सर्वज्ञं श्रीमत्-त्रैलोक्यमल्ल-वीर-शान्तर-देवं सान्तलिगे-सायिरमुमनेकच्छत्र-च्छा-येयिन्दमालुत्तमिरे ॥ तत्पाद-पद्मोपजीवि स्वस्त्यनेकगुण-गणाभिमण्डनं नखर-मुख-मण्डनं शान्तर-राज्या-भ्युदय-कारणं कलि-युग-दोष(ष)-निवारणं आहाराभय-भैषज्य-शास्त्र-दान-कानीनं विशद-यशो-निधानरूप

श्रीमत्-पट्टण-स्वामि-नोकय-सेट्टि स (श) क-वर्ष ९८४ शुभकृत-
संवत्सरद कार्तिक-सुद्ध ५ आदित्यवारदन्दु तन माडिसिद
पट्टण-स्वामि-जिनालयके वीर-सान्तर-देवङ्गे (यहाँ दानकी विस्तृत
चर्चा आती है) मर्व-बाधा-परिहार-मागि माडि तन सहधर्मिगल् सक-
लचन्द्र-पण्डितदेवर्गे कोट्टम् (यहाँ वे ही हमेशाके अन्तिम वाक्याव-
यव आते हैं) ।

इष्टनोर्वनधिदेवतेगेन्दोसेदित्तुदम् ।

दुष्टनोर्वनदर फलवं सले तिन्दवम् ।

सिट्टि-मेले परमात्मने वन्देडेगोवदम् ।

कट्टिकोण्ड विदिरन्ते कुल-क्षयमागुगुम् ॥

(वे ही अन्तिम श्लोक ।)

अकर ॥ ईवरेन्दत्ति पल्लिरिदेरदप.....तागि बेळदपरु ल्लेज्जेगेट्टु काव-
रेन्दल्.....मरणेन्दु वन्दपरु तावज्जि मरेवकुं बाल्वेमेन्दु साम-वङ्गदा
मरेवकुं वन्.....विडियुं निहे पट्टियदन्दु

जीवम्जीवके तूकके बारदे किळ्वट्टु वरवेके वीर-देव ॥

धुरदोळमि-लतेयनुच्चिदद् ।

अरि-नृप-युवतियर मुगुळ कङ्कणदा-कील् ।

तरतरदिनुळिचदवु निज- ।

कर-ग्वळगमवर्के कीले शान्तर-नृपति ॥

वीरुगन दोरेगे दोरे पे- ।

राहं बन्दवरी-कृत-युगं त्रेते द्वा- ।

परं कलि-युगदोळगण ।

वीरुदारं-प्रतापिगाळ् धर्म-परद् ॥

वृत्त ॥ परम-श्री-जैन-धर्मकृतिशय-विभवं मार्प्य विद्वज्जनका- ।
 दरदिन्दं सन्तोसं (ष) माडुव मुनि-जनकाहार-भैषज्यमं वि- ।
 स्तरदिन्दं चिन्ते-गेयुन्नत-गुण-[.....] युतं पट्टण-स्वामिनोक्कं- ।
 वरमारब्धव्यर्कजन्ता-पुरुष-रतुनदिं बीरदेवं कृतार्थम् ॥
 पुदिद तमम्-तमः-पटलं ओन्दिद चिन्ते तगुब्बु तळ्ळु प- ।
 त्तिद रुजे पेच्चिं सार्चिद दरिद्रते बट्टेयोळाद सेदं बड्-
 गिदपुट्टु कण्ड काण्केयोळे तप्पट्टु पट्टण-सावि नोक्कनि- ।
 छदडे बळ्ळुदु बन्द बुध-मण्डलिगी-मले सू (शू) न्यमागदे ॥
 बल्ललनप्प पेर्बुमिय बय्किगे भाजनमाद दोळ्ळे बी- ।
 लळ् वरिवन्ते नेल्द नरे-गड्डुद दोडुर बेळ्ळवातुगळ् ।
 कोल्लुमवाकें केम्मनेडैयाडदिगेवेले शिष्ट बेडिको- ।
 ल्लोवडे नम्म धर्म्मद तवर्म्मने पट्टण-सामि नोक्कनम् ॥
 जिननं बण्णिप पूजिप ।
 जिनागमोक्तियाडे नेगळ्व जिन-पदमं भा- ।
 वनेयं निच्चं ताळ्ळुवन् ।
 एने पट्ट[ण]-सावि ये जिनागम-निधियो ॥

वचनम् ॥ सम्यक्त्व-चारासियुमेनिमिद पट्टण-स्वामि नोक्कय्यं.....
 हुदोळ्ळु देवर वल्लभरनेरगिमि रत्तळ्ळम् ग्वचियिमि । पोन्न बेळ्ळिय
 पवळ्ळद महा-मणिय पञ्च-लोहदोळं प्रतिमेगळं माडिमिदं । (यहाँ दानकी
 विस्तृत चर्चा है ।) सकळचन्द्र-पण्डितदेवर गुड मल्लिनाथं
 बरेदम् ॥

सुजन-जन-कुमुद-चन्द्रन ।

सुजन-जनानन-विलोक-मणिमुकुरनना- ।

सुजन-जन-वनज-हंसन ।

सुजनजनं पोगळे मल्लिनार्थं नेगळ्दम् ॥

गुडिवयलुमं बिट्ट (सिरेपर) पट्टण-स्वामिय परि नेम-ब्रतवेरेदन्दे
तुरवनिन्तिदु...गेय्यद...येत्तिद य...सा...सन्तोस(ष)-दान-
बिनोद...॥ श्री-पट्टण-सामिय गुरुगळ् श्रीमद्-दिवाकरणन्दि-सि
द्धान्त-रत्नाकर-देवरु श्री-विरुद-सर्वज्ञं बीर-सान्तर-देवम् ॥

पुसियदिरारोळं-नर्दि पर-नारिय तपोगे तप्प् ।

पसगदिराव-जीवदेळमेवडेयेम्बुदनेन्तुमोल्लदिर ।

कुसियदिरायर्दि पोणर्दु तळ्तेडेयोळ् व्रतमेन्दु कोण्डुदम् ।

बिसडदिरैम्बुदी-वरेद...सने सान्तर-बीर-देवनम् ॥

नेगर्दुप्रान्वय-पद्मिनी-दिनकरं श्री-शान्तरोव्वीशानु- ॥

द्व-गुणाम्भोनिधि बीरुगं विरुद-सर्वज्ञं धरा-मण्डळम् ।

पोग[ळ]ळ् कूर्म्मियिनीये निर्म्मळ-यशं धर्म्मधिकं ताळ्दिदम् ।

जगदोल् पट्टण-सामि-वट्टमनिदंम् नोक्कं यशो-भागियो ॥

पट्टणस्वामि-जिनालयद शासनम्

[जिनेन्द्रकी प्रशंसा ।

जब, (उन्हीं चालुक्य-पदों सहित), त्रैलोक्यमल्ल-देवका राज्य प्रवर्त्त-
मान था—जब, (उन्हीं पदों सहित जिनसे अलङ्कृत नक्षि-शान्तर शि०
ले० नं० २१३ में हैं), त्रैलोक्य-मल्ल-वीर-शान्तर-देव शान्तछिगे हजार-
पर एकछत्र राज्य कर रहा था; —

तत्पादपञ्चोपजीवी (उन्हीं पदों सहित जैसे कि पद शि० ले० नं०
२११ में हैं) । पट्टण-स्वामि नोक्कय-सेट्टिको (उक्तमित्तिको) अपने
बनवाये हुए पट्टण-स्वामि जिनालयके लिये वीर-शान्तर-देवको सोने के १००
गद्याण भेंट करने पर, मोलकरेका दान मिला; इस गाँवकी सीमायें । इसने

(नोक्तय्य-सेट्टिने) अपना गौव कुकुडवळिक भी दानमें दे दिया, और इसको (उक्त) सब करोंसे मुक्त कर दिया, और अपने सह-धर्मी सकल-चन्द्र-पण्डितदेवको सौंप दिया ।

शापात्मक और वे ही अन्तिम श्लोक ।

राजा बीर शान्तर और 'सम्यक्त्व वारासि' नामसे प्रसिद्ध पट्टण-स्वामि नोक्तकी प्रशंसामें श्लोक । मादुरमें प्रतिमाको रखोंसे मद दिया और उसके पास सोना, चांदी, मूंगा (Coral), रत्नों और पञ्चाधातुकी प्रतिमायें थीं । शान्तगेरे, मोलकेरे, पट्टण-स्वामिगेरे और कुकुडवळिकके तळेविण्डेगेरे—ये सब तालाब उसने बनवाये थे । और सौ सुवर्ण गद्याण देकरके उसने उगुरे नदीका सौळंगके पाणिमगल तालाबमें प्रवेश कराया ।

सकलचन्द्र-पण्डित-देवके गृहस्थ-शिष्य महिनाथने इसे लिखा, उसने गुडिवयलका दान किया । पट्टण-स्वामिके गुरु दिवाकरनन्दि-सिद्धान्त-रत्नाकर-देव और सर्वज्ञ-पदलाञ्छित बीर-शान्तर-देवकी प्रशंसा]

[EC, VIII, Nagar tl., n° 58]

१९८

हुम्मच;—कच्छड़

शक ९८४=१०६२ ई०

[पार्श्वनाथवस्तिमें मुलमण्डपके स्तम्भोंपर]

(दक्षिण-स्तम्भ)

(पूर्व-मुख) "पृथुवी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारक सत्याश्रय-कुल-तिळक चालुक्याभरण श्रीमत्त्रैलोक्यमल्ल-देवर् चतु-स्समुद्र-पर्यन्तं पृथ्वी-राज्यानुष्ठानदिनिरे ॥ नत्पादपद्मोपजीवि ॥ समधि-गत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरनुत्तर-मधुराधीश्वरं पट्टि-पोम्बुर्च-पुर-वरेश्वर महोप्र-वंश-ललामं पद्मावती-लब्ध-वर-प्रसादासादित-विपुल-तुला-पुरुष-महादान-हिरण्यगर्भ-त्रयाधिक-दान वानर-ध्वज-विराजित-राजमान-मृगराज-लाञ्छन-विराजितान्वयोत्पन्नं बहु-कलाकीर्णं सान्तरादित्य सक-

ल-जन-स्तुत्य कीर्ति-नारायणं सौख्य-पारायणं जिन-पादाराधक रिपु-
बल-साधकं नीति-शास्त्रज्ञं विरुद-सर्वज्ञं नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहित
श्रीमत् त्रैलोक्यमल्ल-वीर-सान्तर-देवं सान्तकल्लिगे-सासिरमं निर-हा-
यादमं निष्कण्टकमं निराकुलमुं माडि निजान्वय-राजधानि-पोम्बुर्चदोळ्
सुख-संकया-विनोददिनरसु-गेय्युत्तिब्दु स(श)क वर्ष ९८४ नेय
शुभकृतसंवत्सरं प्र.....

(उत्तर-मुख) जिनदत्तं तनगन्दु देवतेय कारुण्यं पोदब्धिर्पिनम् ।

दनु-पत्रंगतिभीतियं निज-भुजावष्टम्भदिं माडि कों-।

ड निजान्नायद पेम्पु-न्वेत्त पोळलोळ् पोम्बुर्चदोळ् माडिदम् ।

जिन-गेहङ्गलनर्त्तियिं पलवुमं श्रीवीर-भूपाळकम् ॥

सुरसैलेन्द्रमो मेण् कुबेरगिरियो मेण् तुङ्ग-ताराद्रियो ।

दोरेयेम्बन्तिरे तन्न भक्ति मनादिं पोण्मुत्तमिर्पन्नेगम् ।

परमोत्साहदे नोक्कियब्बेय जिन-श्री-गेहमं माडिदम् ।

धरेयेल्लं पोगळवन्नेगं विरुद-सर्वज्ञावनीपाळकम् ॥

वचन ॥ अन्तु नेगब्द वीर-शान्तरन मनो-

नयन-वल्लमेयेनिसिद चागलदेवि ॥

वृत्त ॥ गुणदोळ् रूपिनोऽरोळ्पिनोळ्

सुबगिनोळ् शृङ्गारदोळ् सौम्यल-।

क्षणदोळ् मैमेयोळोजेयोळ्

विभवदोळ् शीलङ्गळोळ् भृत्य-पो-।

षणदोळ् भोगदोळ्पिणोळ्

विभुतेयोळ् कारुण्यदोळ् पोलिसल्ल्-।

एणेयाय् गेल्ह बेडङ्गिगेन्दनुदिनं

विद्वज्जनं वणिक्कुम् ॥

(उत्तरस्तंभ)

(दक्षिणमुख) कन्द ॥ जयदङ्कुकात्ति दान-।
 प्रिये शान्तर-देवनोपुवर्द्धाङ्गद-ल-।
 द्विप्रयेनिष्प पुण्यवतियम् ।
 जय-देवतेयनदुन्ते पेरतेनेम्बर ॥
 श्री-वनितेगे वीरन वाक्-।
 श्री-वनितेगे कीर्त्ति-वधुगे सान्तर-विजय-।
 श्री-वनितेगधिके चागल-।
 देविये भाविसुवदखिल-विश्वम्भरेयोळ् ॥
 सलुगेगे साम्यक्केकेगे ।
 पलरक्केम सतियरहितरं गेल्वेडेय्.....।
 गेल्व बेडङ्गिये वीरन ।
 बलद भुजा-दण्डदड्डि केलदोळ् निल्वळ् ॥
 पतियं वञ्चिसि सले निज-।
 कृतकदिनर्द्धावलोकनाक्षिगालिं भ्रु-।
 लतेयोळ्मोळपोखी-दुर्-।
 व्रतेयर् प्पोल्लतपरे चागियब्बरसियरम् ॥
 सङ्गत गुणनमळ-लसत्-।
 तुङ्गाखिल-कीर्त्ति-वीर-सान्तर-नृपन-।
 र्द्धाङ्ग-स्थित-लक्ष्मियेनल्क् ।
 एङ्गळ पोल्लतपरे चागियब्बरसियरम् ॥
 नेत्रावळि-दोच्छर्दि-वि-।

चित्राम्बर-कनक-रजत-मणि-मौक्तिकमम् ।

पात्रमरिदीव-गुणकति-।

मात्रेयरेयिदपरे चागियब्बरसियरम् ॥

(पूर्वमुख) वृ ॥ अतिशयमप्य रूपिनोळुदारतेयोळ् विनयोपचारदोळ् ।

पतिगतिभक्तिनोळ् विपुळ-भोगदोळिं पेरतेननेम्बे माण् ।

रतिगनुसारि पाव्वतिगे तोडु कुजासैगे पाटि नोडरुन्-।

धतिगेणे वासवाङ्गनेगे पासटि चागल-देवि धात्रियोळ् ॥

येनिसिद् चागल-देवि निज-बल्लभं वीर-शान्तरन कुल-देवते नोक्कि-
यब्बेय बसदिय मुन्दे मकर-तोरणमं माडिसि ॥ मत्तं बळ्ळिगावेयले
चागेश्वरमेम्ब देगुलमं माडिसि पल्लवरं ब्राह्मणर कन्ने-दानमं माडिसि
महादानङ्गेय्दु वन्दि-वृन्दक्कवाश्रितर्गं पोन्तुं बुड्डिगेयुमं बेर्पन्नेगमित्तु चा-
गमं मेरेदळ् ॥ अन्तु नेगई चागल-देविय तायेनिप अरसिकब्बे प्रसि-
द्धकेसेदळ् सान्तरन मनेय सर्व्व-प्रधानं ब्रह्माधिराज कालिदासव्यं-
बगेदं (पश्चिम मुख) श्री-लोकिय बसदिगे देकरसं जम्बहल्लिय
विडं श्री-माधवसेन-देवङ्गे धारा-पूर्व्वकं माडि कोट्टम् ॥

[जब, (उन्हीं चालुक्य पदों सहित), त्रैलोक्यमल्ल-देव समुद्र-पर्यन्त
दुनियाके राज्यपर शासन करनेमें लगे हुए थे:—

तत्पादपद्मोपजीवी (नं० २१३ वाले लेखमें जो नक्षि-शान्तरके पद हैं
उन्हीं पदों सहित) त्रैलोक्यमल्ल वीर-शान्तर-देव, सान्तलिगे हजारको
मुक्त करके, अपने वंशकी राजधानी पोम्बुर्चमें शासन कर रहा था:—
(उक्त मितिको),— अपने वंशके प्रसिद्ध नगर पोम्बुर्चमें वीर-भूपालकने
बहुतसे जिनमन्दिर बनवाये । इसी पोम्बुर्चमें जिनदत्तने देवी (संभवतः
पद्मावती देवी) के प्रसादको प्राप्त करके एक राक्षसके पुत्रको अपने
मुजबलसे भयभीत कर दिया था । वीर-भूपालने नोक्कियब्बे जिनमन्दिर
बड़ी शोभाके साथ खड़ा किया था ।

वीर-शान्तरकी पत्नी चागल-देवी थी। उसकी प्रशंसामें बहुत-से श्लोक दिये हैं। अपने पति वीर-शान्तरके कुल-देवतारूप नोकियब्बेकी बसदिके सामने उसने 'मकर-तोरण' बनवाया था और बल्लिगावेमें चागेस्वर नामका मन्दिर बनवाया था और बहुत-से ब्राह्मणोंको कुमारिकायें भेंटकर उसने 'महादान' पूर्ण किया था, तथा प्रशंसकों और आश्रितोंकी भीड़को यथेच्छक दान देकर अपनेको दानी प्रसिद्ध किया था। (तथा) चागल-देवी की माँ अरसिकम्बेकी भी बहुत प्रसिद्धि हुई। (और) शान्तरके घरका 'सर्व-प्रधान' ब्रह्माधिराज कालिदास विख्यात हुआ था।

लोकिय बसदिके लिये, देकररसने जम्बहल्लि प्रदान की, इसका दान साधवसेन-देवको किया था।]

[EC, VIII, Nagar, tl., n° 47]

१९९

श्रवण-बेल्लोला;—संस्कृत-भग्न

[सं० १११५=१०६२ ई०]

(जैन शि० ले० सं०, भा० १.)

२००

अङ्गडि—कन्नड़-भग्न

[शक ९८४=१०६२ ई०]

[अङ्गडि (गोणीबीडु परगना) में, ७ वें पाषाणपर]

.....विनयादित्य.....पोयसळ..... भट्टार

गुरुगळं...

सक-कालं गति-नाग-रन्ध्र-शुभकृत-संवत्सराषाढदोळ ।

सुकरं पौर्णमि-भौमवार मोसेदिळ्दा-श्रावण....

....कदिन्द बरे शान्तिदेवरमळ् सन्यासनं गेय्दु भक्- ।

ति करं कैत्रशमागे गेय्दु पडेदर निर्व्वाण-साम्राज्यमम् ॥

(पीछे)शान्ति-देवर् श्रीमत् सो[सेवू]र...नकर-समूह तम्म
गुरुगळ्मे परोक्ष-विनयं गेय्दु निषिदिगे मङ्गळमहा

[.....विनयादिह्य.....पोय्सळके गुरु.....(उक्त मितिको)
शान्तिदेवने, अपने बर्मेके फल-स्वरूप निर्वाणको प्राप्त किया ।

नगर(व्यापारी सेव)के लोगोंने अपने गुरु शान्ति-देवकी मृत्युके
उपलक्ष्यमें यह स्मारक खड़ा किया ।]

[EC, VI, Mūdgere tl., n° 17.]

२०१

अङ्गडि—संस्कृत तथा कन्नड-भग्न

[शक ९८४=१०६३ ई०]

[अङ्गडि (गोणीबीडु परगना)में, बसदिके पासके पाषाणपर]

.....तन्त्र-प.....व्वरसिय

.....साम्पराय..... (७ पंक्तियोंमें

दानकी बर्चा है) पोय्सळन विद्यावन्तं पोय्सळाचारि आतन मगं
माणिक-पोय्सळाचारि आतं माडिद बसदि उलि-बळ्ळि-पिडिवर चड्
(पीछे) इन्तिनितुं भूमीयुमं कोट्टु शक-वर्ष ९८४ नेय शुभकृत-सं-
वत्सरद फाल्गुन-सुद्ध-पञ्चमी-बुधवारं रोहिणी-नक्षत्रदन्दु प्रति-
ष्ठे-गेय्दु पूजेयं माडि तिरु-नन्दीश्वरदन्दु दान-माडेयुं पोय्सळन गुरुगळ्
मुल्लूर श्री-गुणसेन-पण्डित-देवर्गे धारा-पूर्व्वकर्दि स्थानंमं कोट्टु ॥

श्री-वनितेगे धरणिगे वाग्-देविगे रुग्मिणिगे रतिगे रम्भगे सीता- ।
देविगे कोन्तिगे परियल- । देवियिमिळ्ळि गुणके वप्परुमुण्टे ॥
श्रीमदभिमानपिण्डः । पर-गण्ड-प्रलय-काल-यम-दण्डः ।

सद्गुणरत्नकरण्डः । स जयतु सुवि मलेपरोल् गण्डः ॥

रक्स-चोय्सलनेम्बा- । र-अक्करवं बरेदु पटमनेत्तिदडिदिरोल् ।

लक्ष्मिद सव-लेखद मरु- । वक्क निन्दपुवे समर-संघट्टनदोळ ॥

(हमेशाके अन्तिम श्लोक)

[प्रथम भाग बहुत बिसा हुआ है और अन्तिम पंक्तियोंमें दानकी विशेष खर्चा है ।

छेनी और बल्लिको पकड़नेवालोंमें प्रधान, अर्थात् पाषाणशिल्पियोंमें प्रधान विद्यावान पोयसळाचारिके पुत्र माणिक-पोयसळाचारिने यह बसदि बनवाई ।

इतनी भूमि देकरके, उन्होंने (उक्त मितिको) भगवान्की प्रतिष्ठा की, और पूजाकर तिरु-नन्दीश्वरके कालमें दान देकर मन्दिर पोयसळके गुरु मुल्लूरके गुणसेन-पण्डितदेवको सौंप दिया ।

परियल-देवी और मलेपरोळ-गण्डकी प्रशंसा । “रक्षस-होयसळ” इन ६ अक्षरोंको अपने झण्डेपर लिखकर यदि वह उसे उड़ाता है, तो लक्षावधि शत्रु भी क्या उसका युद्धमें सामना कर सकते हैं ? (हमेशाके अन्तिम श्लोक)]

[EC, VI, Mūdgere tL, n° 13.]

२०२

मुल्लूर—संस्कृत तथा कन्नड

[शक ९८६=१०६४ ई०]

मुल्लूर (निडुत परगना) में, बस्ति मन्दिरमें पार्श्वनाथ बस्तिके पश्चिममें प्रथम पाषाणपर]

(पहली ओर) स्वस्ति शक-नृप-कालातीत-संवत्सर-शतङ्गळ ९८६ नेय क्रोधि-संवत्सरं परिवर्त्तिसुत्तिरे तच्-चैत्र-बहुल-नवमी मङ्गलवारं पूर्वाभाद्रपद-नक्षत्रम्मिनोदयदल ॥

स्वस्ति समस्त-सुरासुरेन्द्र-मकुट-तट-घटित-मणि-मयूख-रेखालङ्कृत-चा (दूसरी ओर) रु-चरणारविन्द-युगलं भगवदर्हत्-परमेश्वर-परम-भट्टारक-मुख-कमल-विनिर्गतागमामृत-गम्भीराम्भोराशि-पारगरूप श्रीमद्-गुणसेन-पण्डित-देवस्मोक्ष-लक्ष्मी-निवासके सन्दर् (तीसरी ओर)

गुरुगळ् सिद्धान्त-तत्त्व-प्रवचन-पटुगळ् पुष्पसेन-व्रतीन्द्र ।

वर-सङ्घं नन्दि-सङ्घं द्रविळ-गण-महारुङ्गळाम्नाय-नाथम् ।

परमार्हन्त्यादि-रत्न-त्रय-सकल-महा-शब्द-शाखागमादि- ।

स्थिर-षट्-तर्क-प्रवीणर् व्रति-पति-गुणसेनार्थ्यार्थ्य-प्रणूतर् ॥

[(उक्त मितिको), आगमरूपी अमृतके गहरे समुद्रके पार जाने वाले श्रीमद् गुणसेन-पण्डित-देवने मोक्ष-लक्ष्मीका निवास प्राप्त किया । उनके गुरु पुष्पसेन-व्रतीन्द्र थे । गुणसेन-पण्डित-देव द्रविळ-गणके नन्दिसंघके तथा महा अरुङ्गळाम्नायके नाथ थे । ये सब विद्यार्थी—व्याकरण, आगम, तर्क—में प्रवीण थे ।]

[EC, IX, Coorg tl. n° 34]

२०३

हुम्मच—कन्नड़

[शक ९८७=१०६५ ई०]

[हुम्मचमें, चन्द्रप्रभ बस्तिकी बाहरी दीवालपर]

भद्रमस्तु जिन सा (शा).....स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-
पृथिवी-वल्लभं महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुळति-
ळकं चालुक्याभरणं श्रीमत्-त्रैलोक्यमल्ल-देवर् चतुस्समुद्र-पर्यन्त-
पृथ्वी-राज्यानुष्ठानदिनिरे तत्पादपद्मोपजीवि । स्वस्ति समधिगत-पञ्च-
महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरनुत्तर-मधुराधीश्वर पङ्क्ति-पोम्बुर्च-पुर-वरेश्वरं
महोप्र-वंश-ललामं पद्मावती-लब्ध-वर-प्रसादासादित-विपुळ-तुळापुरुष-म-
हादान-हिरण्यगर्भ-त्रयाधिक-दान वानर-ध्वज- विराजित-राजमानं मृग-
राज-लाञ्छन-विराजितान्वयोत्पन्नं बहु-कलाकीर्णं सान्तरादित्यं सकल-
जन-स्तुत्यं कीर्त्ति-नारायणं सौख्य-परायणं जिन-पदाराधकं रिपु-बल-
साधकं नीति-शास्त्रज्ञं विरुद-सर्वज्ञं नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहितं श्रीमत्
त्रैलोक्यमल्ल-भुजबल-शान्तर-देवं शान्तळिगे-सासिरमं निर्द्दयादबुं निरा-

कुळं माडि राज्यं गेय्युत्तिब्दु स(श)क-वर्ष ९८७ नेय विस्वावसु-
संवत्सरं प्रवर्त्तिसुत्तमिरे निजान्वय-राजधानि-पोम्बुर्बदोळ् भुजबळ-शा-
न्तर-जिनालयके माघ-मासद सुद्ध-पञ्चमी-सोमवारमुमुत्तरायण-संक्रमण-
दन्दु तम्म गुरुगळ् कनकणन्दि-देवर्गे धारा-पूर्वकं माडि हरवरियं बिट्टम् ।
(यहाँ सीमाओंकी विस्तृत चर्चा आती है) ।

जिनशासनके कल्याणकी कामना । स्वस्ति । जब, (उन्हीं चालुक्य पदों
सहित) चतुस्समुद्रपर्यन्त पृथ्वीके राज्यपर त्रैलोक्यमल्लदेव शासन कर
रहे थे:—

तत्पादपद्मोपजीवी,—जिस समय, (उन शान्तरके पदों सहित जो कि
शि० ले० नं० १९७ में दिखाये गये हैं), त्रैलोक्यमल्ल भुजबल-शान्तर-
देव, शान्तलिंगे हजारको उपद्रवों और कठोंसे मुक्तकर शासन कर रहे
थे:—(उक्त मितिको), अपनी राजधानी पोम्बुर्बमें भुजबल-शान्तर जिना-
लयके लिये अपने गुरु कनकनन्दि-देवको हरवरिका दान किया था: इसकी
सीमायें । बसदिका ऐसा शासन (लेख) है ।]

[EC, VIII, Nagar tl., n° 59]

२०४

बलगाम्बे—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक ९९०=१०६८ ई०]

[बलगाम्बेमें, बडगियर-होण्डके पासके भांगनमें पापाण-खण्डोंपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोवलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर
.....भट्टारकं सत्याश्रय-कुल-तिलकं चालुक्याभरणं श्रीमत्त्रैलोक्य-
मल्लनाहवम्.....सुख-संकथा-विनोददि राज्यं गेय्युत्तमिरेयिरे ॥

वृत्त ॥ मलेपद् म्माराम्परिल्लक्रमदि.....तराटर्परिल्लुर्किं दर्कुन्- ।

दले-वाय्दुद्वृत्तरिल्लोड्जि-वेरसु कुरुम्बर्त्तरुम्बिर्परिल्ले- ।

तल्लु.....वर्ष दळ्ळेन्दुरिव रिपुगळिल्लेम्बिनं कुन्तळोर्वी- ।
 तिळकं त्रैलोक्यमल्ल-क्षितिपतिगे धरा-चक्रदो.....क-चक्र ॥
 लाट-कळिग-गंग-करहाट-तुरुष्क-वराळ-चोळ-क- ।
 ण्णाट-सुराष्ट्र-माळव-दशार्ण-सुकोशल-केरळादि-दे- ।
 शाटविकाधिपर म्मलेदु निल्लदे कम्पमनित्तु निर्मिता- ।
 घाटदोळिर्प.....अळवी-दोरेताहवमल्ल-देवन ॥

कन्द ॥ इन्तु चतुरन्त-धात्री- । कान्तेयनळवडिसि चक्रवर्त्ति-श्रियम् ।
 तां तळेदु सुखदे पल-का- । लन्तव तव-निधिगधीशनाहव-मल्लम् ॥
 वृत्त ॥ म ...धावन्ति-वंग-द्रविळ-कुरु-खसाभीर-पाञ्चाळ-लाळा

दिगळं पेसेळे कोन्दुं कवर्दुमसदळं कोट्टजं गोण्डुमाळो- ।
 लिगे दण्डुं तोळ-त्तीनुं मनद तवकसुं पोगदेन्दिन्द्रनं का- ।
 डि गेल्ल कपं गोडळ् वरिसि तळर्दनेकांगदिं सार्वभौमम् ॥
 गगन-नवाङ्क-संख्ये शक-काळदोळागिरे कीळकाब्दकम् ।
 नेगळे तदीय-चित्र-बहुळाष्टमियोळ् रविवारदोळ् जसम् ।
 मिगे कुरुवर्त्तियोळ् परम-योग-नियोगदे तुम्.....द्रेयोळ् ।
 जगदधिपं त्रिविष्टपमनेरिदनाहवमल्ल-वल्लभम् ॥

कन्द ॥ आ-चालुक्य-ललाम-म- । हा-चक्रिय पेर्मगं धरा-तळमं गो-
 त्राचळ-जळवि-परीतमन् । आ-चन्द्र-स्थायि यागळाळ्व महात्मं ॥

....दिन-व्योम-नवाङ्क-संख्ये सक-काळं वर्त्तिमल् कीळका-
 ब्दद वैशाखद सुद्ध-सप्तमियोळ् इज्य-ज्योतियोळ् शुक्रवा- ।
 वृत्तं ॥ रदोळ्यन्त-कुळीर-लग्नदोळिभाश्च-त्रात-रत्नातप- ।

च्छद-सिंहासन-भूज्य-राज्य-पदमं सो[मे]श्वरं ताळिददम् ॥

वृत्तं ॥ जयमं धर्मके धर्मान्वयमनसदलं साधु-वर्गके वर्ग- ।
 त्रयमं तन्न्तरङ्गकोडरिसि धरेयं कूडे सन्मान-दान- ।
 त्रयदि सन्तप्ते कालं कृत-युग-मयमासेम्बिनं तन्न राज्यो- ।
 दयदोळ लोकके रागोदयमोदविदुदेम् धन्यनो सार्वभौमम् ॥
 आ-प्रस्तावदोळ ॥

वृत्तं ॥

नव-राज्यं वीर-भोज्यं पुगलिदवसरं सुत्तुवें गुत्तियं मु- ।
 तुवेनेम्बी-गर्वदि चोलिकनधिक-बळं मुत्ति मार-गुत्तियं प- ।
 ण्णुवुदं केळदेत्तेनुत्तेत्तिद तुरग-धळन् तागे सय्तागदप्रा- ।
 हवदोळ वेङ्गोडु सोमेश्वर-नृपन बळकोडिदं वीर-चोळम् ॥
 पेसरं केळदळ्ळिक बेळ्कुर्त्तुदु पर-धरणी-मण्डलं गण्डु-गोडोळ- ।
 वेसनं पूण्दत्तु शौर्योन्नतिगगिदसुहृन्मण्डलं मेलपनावर- ।
 ज्सिदिनेन्दाज्ञा-विसेपकेळसिदुदु सुहृन्मण्डलं सन्तमिन्ता- ।
 देसकं वैगण्णे सोमेश्वर-नृपति मही-चक्रमं पाळिसुत्तम् ॥
 अन्तःकण्टकरं पडल्वाडिसि दुर्गाधीशरं दुष्ट-सा- ।
 मन्त-द्रोहरनुद्धताटविकरं निर्मूलनं गेय्दु वि- ।
 क्रान्तारातिगळं कळलिच धरेयं निष्कण्टकं माडि नि- ।
 श्विन्तं श्री-भुवनैकमल्ल-महिपं राज्यं गेयुत्तिर्पिनम् ॥

वचन ॥

तत्पादपद्मोपजीवि समधिगत-पञ्च-महा-शब्द-महा-मण्डलेश्वरनुदार-
 महेश्वरं चलके बलगाण्डं शौर्य-मार्त्तण्डं पतिगेक-दाशं संप्राम-गरुडं मनुज-
 मान्धातं कीर्ति-विख्यातं गोत्र-माणिक्यं विवेक-चाणिक्यं पर-नारी-सहोदरं

वीर-वृकोदरं कोदण्डपार्थं सौजन्य-तीर्थं मण्डलिक-कण्ठीरवं परचक्र-
भैरवं राय-दण्ड-गोपालं मलय-मण्डलिक-मृग-शार्दूलं श्रीमत्-त्रैलोक्यमल्ल-
देव-पाद-पङ्कज-भ्रमरं श्री-भुवनैकमल्ल-वल्लभराज्य-समुद्धरणं पति-हिता-
भरणं मण्डलिक-मकरध्वजं विजय-कीर्ति-ध्वजं मण्डलिक-त्रिनेत्रं रिपु-राय-
मण्डलिक-यम-दण्डं जयाङ्गनालिङ्गित-दोर्-दण्डं विसुल्लर-गण्डं गण्ड-भूरि-
श्रवनेश्विव मोदलागे पल्लवुमन्वर्थाङ्क-मालेगळिल्लंकरिसि ॥

कं ॥ त्रैलोक्यमल्ल-वल्लभन्- । आळेनिसिदरोळ्मो मिक्क पसयितनुं मि-
क्काळुं मिक्कण्मिन ब- । छालुं लक्ष्मणने पेरनरिवरुमोळरे ॥

भुवनैकमल्ल-देवन । भवनदोळं ताने मानसं ताने महा- ।
व्यवसायि ताने विजय- । प्रवर्द्धकन् ताने पसयितं लक्ष्म-नृपम् ॥

अन्तेनिसि ॥

वृत्त ॥ अणुगाळ् कार्थ्यद शौर्यदाळ् विजयदाळ् चालुक्य-राज्यके का-
रणमादाळ् तुळिलाळ्त्तनके नरेदाळ् कशायदाळ् मिक्क म- ।
अणेयाळ् मान्तनदाळ् नेगळ्ते-वडेदाळ् विक्रान्तदाळ् मेळदाळ्
रणदाळाळ्दन नच्चुवावेडेयोळं विश्वामदाळ् लक्ष्मणम् ॥
एरडुं राज्यदोळं प्रजा-परिजनं कोण्डाडे चक्रेशरि- ।
व्वरु मोरन्दद कूर्मैयिन्दे बनवासी-देशमं शासनम् ।
बरेदश्व-द्विप-पट्टमाधन-समेतं कोट्ट कारुण्यदिम् ।
पोरेयल्मण्डलिक-त्रिनेत्रनेसेदं भू-भागदोळ् लक्ष्मणम् ॥
किरियं विक्रम-गङ्ग-भूपनेनगा-पेम्माडि-देवङ्गे ने-
गिरियं वीर-नोणम्ब-देवनेनगं पेम्माडिगं सिङ्गिगम् ।
किरियै नीं निनगोळ्ळरुं किरियरेन्दगय्सि कारुण्यदिम् ।
नरे कोट्टं प्रतिपत्ति-वृत्ति-पदमं लक्ष्मङ्गे सोमेश्वरम् ॥

मिगे बनवासे-नाळ्के विभु लक्ष्मणनागे नोळम्ब-सिन्दवा-।
 डिगे विभुवागे विक्रम-नोळम्बनळंपुरमादियाद भू-।
 मिगे विभु गङ्ग-मण्डलिकनागे यमाशेगे नीळद लाङ्-वि-।
 णिङगेयेने कण्डु कोट्टनवर्गा-नेलनं भुवनैक-वल्लभम् ॥
 मदवद्वैरि-नरेन्द्र-मण्डलिक-सेना-भञ्जनं वीर-नी-।
 रद-दुर्वार-समीरणं वितरण-क्रीडा-विनोदं प्रता-।
 प-दिलीपं रिपु-पुञ्ज-कञ्ज-वन-केली-कुञ्जरं लङ्घिका-।
 मदनालं चलदङ्क-राम नृप-लक्ष्मी-लक्ष्मणं लक्ष्मणं ॥
 कं ॥ बलिवलेव मलेव केलेवद-टलेव पलञ्चलेव मलेपरेल्वं मुरिदं ।
 मलेयद केलेयद बलियद । मलेपरनिसुवेसके बेससिदं लक्ष्म-नृपम् ॥
 वृ ॥ धाळियनिट्टु कोङ्कणमनङ्कणियोक्किदपं तगुळ्ळु कोम्ब-।
 एलुमनट्टि मुट्टि मले-येळुमना.....मुर्चि मुक्कि नि-।
 मूर्तिमिदपनेन्दु मलेपत्तिले दोरदे रायदण्ड-गो-।
 पाळ-नृपङ्गे मुन्दुवरिदेन्दुःनेन्दपरेम् प्रतापियो ॥
 आळवलमुळ्ळडश्व-वलमिल्ल भटाश्व-वलङ्गुळ्ळडम् ।
 तोळ्वलमिल्ल भृत्य-हय-दोर्-वलमुळ्ळडमेर्वलङ्गळिळ् ।
 आळ् वेसगेय्यदेके बलिवर् मलेपर् मलेयेम्बुदेनदम् ।
 बेळ्वलमागे मुन्तुळिदनल्लने लक्ष्मणनेम्ब कावणम् ॥
 कवि दुग्गा चातुरङ्गं बवसे दळवुळं धाळि सूळ्ळेरनिप्पा-।
 हवदोळ् चालुक्य-रामं बेससे रिपु-वळ्ळक्केन्ननिन्द्रारियन्नम् ।
 भवनन्नं भद्रनन्नं सिडिल बळ्ळादन्नं ज्वळ-ज्वाळियन्नम् ।
 जवनन्नम्मारियन्नं समर-समयदोळ् लक्ष्मणं रामनन्नम् ॥
 कुदुरेय मेले बिल् परसु शल्लिगे तीरिके भिण्डिवाळ्मे-

स्तिद करवाळमाटिडुव कर्कडे पारुव चक्रमेन्दोडेन्त ।
 ओदरुवरेन्तु पायिसुवरेन्तु तरुम्बुवरेन्तु निल्परेन्तु ।
 ओदवुवरेन्तु लक्ष्मणनोळान्तु बर्दुङ्कुवरन्य-भूमुजर् ॥
 ईयल् बन्दडे कल्प-वृक्षमिदिरं बन्दान्त विद्विष्टरम् ।
 सोयल् बन्दडकाळ-मृत्यु शरणायातावनीपाळरम् ।
 कायल् बन्दडे वज्र-शैल-कृत-दुर्गा लौश्य-भावं पर-
 स्त्रियल् बन्दडे रावणात्मज-चमू-विद्रावणं लक्ष्मणम् ॥
 विसुपळिदकेतुर्कुडिगुमिन्दुव कान्ति कळ्ळुमागसम् ।
 कुसिगुमिळा-तळं तळ्ळुमम्बुधि बत्तुगुमिळि लक्ष्मणम् ।
 पुसिदोडमार्गे टेप्परमनोजिदोडं मनमोल्दु कूडि लि-
 द्रिसिदोडमन्य-नारिगे मरुळदोडमाहवदोळ् मरल्दडम् ॥
 शत्रघ्नं हरि-शौर्यनङ्गद-भुजं सुप्रीवनामेश-सौ-
 मित्रं रामनपामरं नर-वरं दुर्योधनं भीम-गान-
 त्रं भीष्म युधिष्ठिरं गुरु कृपं सत्-कर्णनेन्दन्दे दल् ।
 चित्रं भाविसे लक्ष्म-भूप-चरितं रामायणं भारत ॥
 कलितनमिळ् चागिगे वदान्यते मेय्गलिगिळ् चागि मेय्- ।
 गलियेनिपङ्गे शौच-गुणमिळ् करं कलि-चागि-शौचिगम् ।
 निले-नुडि-वोजे यिळ् कलि चागि महा-शुचि सत्य-वादि मं-
 डलिकरोळीतनेन्दु पोगळ्ळुं बुध-मण्डलि लक्ष्म-भूपन ॥
 कं ॥ मुनियिं किमुकळुवरोसे- । दु नगुवरिन्तिनिते पेरर मुनिसुं मेन्चुं ।
 मुनियिसे मुनिद जवं ह- । र्धनागे हर्षं गवृषभ-लक्ष्मं लक्ष्मम् ॥
 एने नेगळ्द लक्ष्म-भूपं । विनमित-रिपु-वृपति-मकुठ-वद्वितचरणम् ।
 बनवसे-पन्निर्ळासिर- । मनाळुतुं सुखदिनरसु-मेय्युत्तिब्दम् ॥

इरे बनवसे-पनिच्छा- । सिरक्कमर्थाधिकारियुं कार्य्य-धुर- ।
 न्धरनुं तद्-राज्य-समु- । द्धरणनुमेने नेगळ्द मन्नि मन्नि-निधानं ॥
 वृ ॥ कविता-चूताङ्कुर-श्री-मद-कळ-कळकण्ठोपमं काव्य-सौधा- ।
 ण्णव-वेळा-पूर्ण-चन्द्रं सम-विषम-महा-काव्य-वल्ली-तलान्तो-
 त्सव-चञ्चञ्चरीकं वसुधेगेसेदनुर्वी-नुतं दण्डनाथ- ।
 प्रवरं श्री-शान्तिनाथं परम-जिन-मताम्भोजिनी-राजहंसम् ॥
 कुनयङ्गळ् जैन-मार्गामृत दोळिरे जल-क्षीरदन्तलि सद्-या- ।
 क्य-निशानोच्चञ्चुविन्दं कुमत-कलुप-पानीयमं तूळिद जैना- ।
 नन-निर्यत्-तत्त्व-दुग्धामृतमनखिळ-भव्योत्करं मेचलाखा- ।
 दने-गेव्योळ्पिन्दमादं परम-जिन-मताम्भोजिनी-राजहंस ॥
 परमात्मं निष्ठितात्मं जिनपति परम-स्वामि तद्-धर्ममार्म्मम् ।
 गुरु-वन्द्यं वर्धमान-व्रति-पति जनकं सन्द गोविन्द-राजम् ।
 पिरियण्णं कन्नपाय्यं तनगधिपति लक्ष्म-क्षमापालनात्मा- ।
 वरजं वाग्भूषणं रेवणनेने नेगळ्दं धात्रियोळ् शान्तिनाथम् ॥
 कं ॥ सहज-कवि चतुर-कवि निम्- । सहाय-कवि सुकवि सुकर-कवि
 मिथ्यात्वा-
 पह-कवि सुभग-कवि नुत-महा-कवीन्द्रं सरस्वती-मुख-मुकुरम् ॥
 सुकर-रसभावदि व- । ण्णकदि तत्त्वार्थ-निचयदि सूक्तमेनल् ।
 सुकुमार-चरितमं पेळ्- । द कवीन्द्राप्रणि सरस्वती-मुख-मुकुर ॥
 असहायनागियुं सुज- । न-सहायं मद-विहीननागियुमर्थि- ।
 प्रसरोत्कट-दानाधिक- । नसद्गुश-विभवं सरस्वती-मुख-मुकुर ॥
 वृ ॥ हरहासाकाश-गङ्गा-जळ-जळरुह-नीहार-नीहार-धात्री- ।
 धर-नीहारांशु-तारावनीधर-शरदम्मोधर-क्षीर-नीरा- ।

कर-तारा-भारती-दिग्-रदन-पीयूष-डिण्डीर-मुक्ता- ।
 कर-कुन्देन्द्रे-म-हंसोज्ज्वल-विशद-यशो-बल्लभं शान्तिनाथ ॥
 ओडवेयनोळिपानिं पडेदु पुञ्जिसि पूजिसि कोण-ताणदोळ् ।
 मडगदे शिष्टरिड्डेगे बन्धुगळिल्ल मेगप्पुदेन्दुमे- ।

नोडमे शरीरमेन्नदु नियोगद पर्वमिदेन्नदेन्दु मे- ।
 ळपडदिरिमेन्दु गोसने तोळ्ळुदु.....शान्तिनाथन ॥

कं ॥ एने नेगळद शान्तिनाथं । जिन-शासन-सत्-सरोजिनी-कलहंसम् ।
 विनयदे निजाधिपति-ल- । क्षम-नृपङ्गे सु-धर्म-कार्यमं बिन्नविकुं ॥
 चञ्चच्चामीकर-र । तःश्चित-जिन-रुद्र-बुद्ध-हरि-विप्र-कुलो-
ह-सङ्कुळदिं । पञ्चमठ-स्थानमेनिसुगुं बळि-नगर ॥

व ॥ अन्तु समस्त-देवता-निवास-पवित्रीभूतमप्प राजधानियोळाद
 जिनधर्म-प्रभावमं पेळ्वडे ॥

वृ ॥ सले जम्बू-द्वीपमोळ्यं तळेदुदु पलवुं....भारतोर्वी-
 वळ्यं तद्-द्वीपदोळ् रञ्जिसुगुमेसेगुमा-क्षेत्रदोळ् कुन्तळं कु-
 न्तळदोळ् सन्तं वसन्तं वनवसे वनवासोर्वियोळ् भव्य-सेव्यम् ॥
 बळि-नाम-ग्राममा-ग्रामदोळमर-नुतं शान्ति-तीर्थेश-वासम् ॥

कं ॥ अ.....र्म-निर्मित-। मदं शिला-कर्ममागे माडिसु कोळ्यो-।
 दुदु निनगे धर्ममेम्बुदुम् । अदर्के बगेदन्दु धर्म-निर्मळ-चित्तम् ॥

वृ ॥ जिननाथावासमं वासव-कृतमेने मुञ्जं शिला-कर्मदिं शा-
 सनमप्पन्तागिरल् माडिसि बळिके शि.....स्तम्भमं तज्-।
 जिनगेह-द्वारदोळ् निर्मिसि विलिखित-नामाङ्क-मालावळी-शा-
 सनमं चन्द्रार्क-तारं निले निलिसिदनेम् धन्यनो लक्ष्म-भूपम् ॥

कं ॥ मिगे मूल-संघदोळ् दे-। सिग-गणदोळ् सन्द कोण्डकुन्दा-
 न्दान्वयमं ।

जगती-त.....न्तु । इरे नेगळिचदर नेगळद-वर्द्धमानमुनीन्द्र ॥
 वृ ॥ पडेदडे पेम्पनेव्हे वडेयर् श्रुतमं श्रुतदोन्दु मय्येयम् ।
 पडेदडे दिव्यमप्य तपमं पडेयर् तपमं निरन्तरम् ।
 पडेदडे कीर्त्तियं पडेयरी.....गुणङ्गळम् ।
 पडेवडे वर्द्धमान-मुनिपुङ्गवरन्तिरे मुन्ने नोन्तु...॥
 सन्ततमोन्दि निन्द तपदोळ् श्रुतदोळ् गुणदोळ् विशेषरि-
 त्तिन्तिवरेल्लरिं पिरियरिन्तिवर् अगळदग्रगण्यरो-
 अन्तिवरेन्दु कीर्त्तिपुदु कूर्त्तु.....देव-सि-
 द्धान्त-मुनीन्द्रं नत-नरेन्द्ररनन्धि-परीत-भूतळम् ॥
 मुनिमणमागळाग मुनिमं मुनियुं मुनि-वन्ध्यनागना-
 मुनिसु ममत्वदि ममते मायेयिनन्तदु लोभदि प्रव-
 र्द्धनकरमेन्दु.....वीत-कषायराद स-
 न्मुनि मुनिचन्द्र-देवरे धरित्रिगे देव....देवरल्लरे ॥
 मार-कटा-प्रबोधित-सुदारकरुजित-माधु-संव-नि-
 स्तारकर....जात-महीजात-विदारकरुप्र-कर्म-सम्-
 हारकरव्युदार.....सर्व्वणन्दि-भ-
 द्वारकरल्ले भव्य-सुकुमारक-करव....धिपर् ॥
 उरग-पिशाच-भूत-विहगोप्र-नव-ग्रह-शाकिनी-निशान-
 चर-भय....चरदोळ्हुतदि विपरीतमाडदम् ।
 बरेदुदे यन्नमो.....तन्नम्.....
॥

जित-कुसुमाखरुजित-यशो-धनरार्जित-पुण्य-कर्मर-
 न्वित-बहु-शाखराहुत-सुशीलरुःकृत-किल्बिषम् प्रबो-
 शि० १७

धित-बुध.....।

.....॥

.....अभिविनुत् श्री-माघनन्दि-देवर् प्पलवुं जिन-निलयङ्गळम-खिला-
 वनि वणिणसे वळ्ळिगा.....जिन-पूजाभि
र्चना-निरतनाहारादि-दान-प्रवर्द्धन-शीलं नुत्त-भव्य.....हा-
 मण्डलेश्वरं लक्ष्मरसं श्रीमल्लिकामोद शान्तिनाथ-जि.....कीलक-
 संवत्सरद भाद्रपदद पुण्णमे-सोमवारद.....देसिगगणद
 ताळकोलान्वयद माघनन्दि-भट्टार.....गे मुत्तं श्रीमज्जगदे-
 कमल्ल-देवर् वळ्ळिगावेय.....ळदे
 मत्तर् प्पत्तेरडु अल्लिय गोळपय्यन वसदिगे.....
 श्रीमच्चालुक्य-गङ्ग-पेम्मानडि-विक्रमादित्य- देवर्.....
मुमं नन्दन-वनद वसदिगे पूर्वदिनडेव.....भूपं
 समुचित-विनयं विन्नपं गेय्ये.....दर्प-देवम् ॥ अनघ-
 श्री-शान्तितीर्थेश्वर-पद.....विधि-सहितं शासनं माडि कोट्ट
(हमेशाके अन्तिम वाक्यावयव तथा श्लोक).....जिङ्गुळिगे
 गुळिद नाल्कारु पोम्मानिगद्धम्.....एरडकु कृष्ण-भूमकदररे
 किसु.....अदररेयुं नोडि सिद्धायमक्कुम् ॥.....ग दासोजं खण्ड-
 रिसिदं मंगळ महा श्री ॥

[जिन शासनकी प्रशंसा ।

जिस समय (चालुक्य उपाधियों सहित) त्रैलोक्यमल्ल आहवमल्ल-देव
 शान्ति और बुद्धिमानीसे राज्य कर रहे थे:—उन्हें लाट, कलिंग, गंग,
 करहाट, तुरुष्क, वराह, चोळ, कर्णाट, सुराष्ट्र, मालव, दशार्ण, कोशल,
 केरल ये सब राजा भेंट देते थे । मगध, आन्ध्र, अवन्ति, वंग, द्रविड,
 कुरु, खस, आभीर, पाञ्चाळ, लाल और दूसरे देशोंका उन्होंने नाश कर

दिया था । शक सं. ९९० में उक्त मितिको उन्होंने प्रधान योगका उत्सव किया और वे तुंगभद्रामें स्वर्गवासको सिधार गये ।

इनका ज्येष्ठ पुत्र सोमेश्वर था । उसका दूसरा नाम 'भुवनैकमल' था । वह जब राज्य कर रहा था:—

तत्पादपञ्चोपजीवी लक्ष्मण था । उसकी बहुत-सी प्रशंसा । जिस समय यह बनवसे १२००० पर राज्य कर रहा था:—

उसका दण्डनाथ शान्तिनाथ था । उसकी प्रशंसा । बलिनगर, या बलिग्राम (बलगाव्हे)में सभी धर्मोंके मन्दिरोंके होनेकी बात । राजा लक्ष्मणने भी वहाँ मन्दिर (जिन भगवान्का) बनवाया ।

मूल संव, देसिग-गण और कोण्डकुन्दान्वयके वर्द्धमान मुनीन्द्र । मुनि-चन्द्र-देव सिद्धान्त । इन दोनोंकी प्रशंसा । इन्होंने भी जैनमन्दिर बनवाये । महामण्डलेश्वर लक्ष्मणसने, मल्लिकामोद शान्तिनाथ-मन्दिरके लिये, (उक्त मितिकी) देसिग-गण तालकोलान्वयके माघनन्दि-मन्दिरको कुछ जमीन दानमें दी । दासोजने इस लेखको उत्कीर्ण किया ।]

[EC, VII, shikarpur tl., n° 136.]

२०५

सौंदर्यिका—कन्नड-भग्न

[काल लुप्त ?]

भद्रमस्तु जिनशासनाय ॥ श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं [I]
जीयात्रै(त्रै)लोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं [II] स्वस्ति समस्त-
भुवनाश्रयं श्रीपृथ्वीवल्लभमहाराजाधिराज-परमेश्वर-परमभट्टारकं सत्याश्रय-
कुळतिलकं चालुक्याभरणं श्रीमद्भुवनैकमलदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तरा-
भिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारं सलुत्तमिरे [I] तत्पादपञ्चोपजीवि [II]
समधिगतपंच-महा-शब्द-महामण्डलेश्वरं लत्तल्लुप्पुरवरेश्वरं त्रिवलीतूर्य्य
निर्गोषणं वैरिकुळविलयान्तकविभीषणं सिन्दूरलाञ्छनं समस्तविद्या-
विरिचनं सुवर्णगरुडध्वजं विदग्धमुग्धाङ्गनामकरध्वजं रङ्गकुळवनज-

वनमार्त्तण्डं कदनप्रचण्डं रिपुसमरवीरवृकोदरं परनारीसहोदरं साह-
 सोत्तुंग सेननसिग नामादिसमस्तप्रशस्तिसहितं श्रीमन्महामंडलेश्वरं
 कार्त्तवीर्यरसर वंशावतारमेन्तेन्दडे ॥ श्रीरमणनतुळविजयश्रीरमणं विपुळ
 विमळ समुदित कीर्ति श्रीरमणं चतुरवचःश्रीरमणं नन्नभूपननु-
 परूप ॥ आतन तनय । स्थिरनुडिवं कलितनदोळपोरेदाळि
 मुन्नमिरिवनेन्दडे सकळोर्व्वरेयोळ् कत्तन * सत्यद दोरेगं शौर्यद
 पोगळ्केगं समनोरे ॥ अन्तेनिसिद वीरकत्तरसर्नि पिरिय ॥ वृ ॥
 वसुधा चक्रदोळ्नेतु वणिसुवदं तन्न(ना) [ळ्के] तन्नेळ्को
 तन्नेसकं तन्न पोगत्तं तन्न विभवं तन्नोजे तन्नुद्धसाहससंपन्नतेर्यि
 धरावळयमं नानाविध (धं) कूडे मुद्रिसिदं रडर मेरु डायिम महीपाळं
 नृपाळोत्तमं ॥ तदनुज ॥ सुरकुजमं पळंचलवुदी]वगुणं मले संद वज्र
 पंजरमननागतं पळिवुत्तिर्पुदु [का]वगुणं परीक्षिसल् सरधियनेय्दे रेग-
 पुदु तन्न गभीरगुणं समस्तदिक्परिवृड(द)देळ्ळोयं नगुवुद्धगुण(णं)
 कलिकन्नभूपन । तत्सुत ॥ क ॥ निरुपम समस्त कडेयोळरसिज
 भवनेसेव धाद्यविधाधरनोळ्ळरसंकसंकरं कप्परवर्षनेरेगे नेगईनेरेग
 महीश ॥ तदनुज ॥ वृ ॥ कदनदोळान्तरातिगहि[यळ]द राहुवि-
 जाति रूपनल्लद विनतासु [हंगेयु]र्व्व(वी) दळ्ळुरियल्लद देहिकालन-
 ल्लद जवन ॥***म (?) वे गतनल्लद वादव(न)न्त मानविल्लध (द)
 रवियेन्दोडांपदटरा[रु रणा]ग्रदोळंकभूपन ॥ तदग्रजनप्पेरगभूपा-
 त्मज ॥ असुहृद्भूपकिरीटताडितपदं वीरांगनालि(लि)गनोळमि[तां]
 गं हरहासकाशशिवान्ताकाशगंगाजळप्रसरामोघदिगंतकीर्ति तपनप्र-
 द्योतसन्मूर्ति सन्द सु(सा)जद्गुणदीपवर्ति नेग[दै] श्री सेन-
 भूपाळक ॥ तत्तनय ॥ अरिभूपाळ कृशान्तनुद्धतरिपुक्ष्मापाळसंदोह

शीकर काळानळनु (ने).....तदप्प (?) भयंकरवि[द्वि]डमहिपाल
 मेघलयकाळोत्पातवातं क्षितीश्वर-चूडाम[णि].....[॥] श्रीवनि-
 तेशं कीर्तिश्रीवनिताधीशनुदिन संशुद्धवच(चः)श्रीरमणीशं वीर (श्री)
[॥ जिन] नाराधिपदेवनुद्धचरितर्विद्यावन.....
 टासनधर्मा (?) रुगञ्चिरो.....जनकनुर्विजाते प्रत्यक्ष गोमिनि तायि
 मैल्लदेवियेन्दधिक.....नोद्धमतक्किवर्ण (?) री क्षितिपति
 सैन (?) र वधूप्रकर.....दिति.....आतन कुल्लंगने [॥] श्री
 वनिते ताने बन्दु मही वनितेगे तिळकमेनिसि कत्तन वक्ष (क्षः) श्रीव-
 निते नेगई [भाग]लदेवी जगज्जननि सज्जनाप्रणियेनिकु ॥ आ दंपति-
 गळगे गिरिसुतेगं हरंगमनुरागदे षण्मुग्वनेन्तु पुट्टुवंत(वि)रे नेगई रुग्मि-
 णिगमा ह[रिगं] स्मरनेन्तु पुट्टुवन्तिरे सले कान्तिगं रविगमर्कतनूभव नैतु-
 पुट्टुवन्तिरलवग्गोल्लु पुट्टिदनु रगु कलि **सेनभूभुज** ॥ अवनीपालानत
 श्री[पद]कमल्युगं तत्त्वनिर्णिक्तराद्धान्तविदं चारित्ररत्नाकरनमळ-
 वच(चः)श्रीवधूकान्तनं गोद्धवदप्पारण्यदावानळनुदितलसद्बोधसंशुद्धनेत्रं
रविचन्द्रस्वामि भव्याम्बुजदिनपनघौषाद्रिसद्व्रजपात ॥ कं ॥ कङ्क-
 र्गणाब्धिचन्द्रन खण्डितसुतपोविभासिखण्डितमदनं डिंडीरपिंड पुर-
 वेदण (ण्ड)[य]शशःपिण्डन**हर्णदि** मुनीन्द्र ॥ मल्लिकामाले ॥ कन्तु-
 राजगजेन्द्रकेसरि भ[व्यलोकसुखाकरं कान्तवाग्वनितामनोरमनुप्रवी-
 रतपो]मयं शान्तमूर्ति दिगन्तकीर्तिविराजि द्रडा (ढाभिमानि रणभू-
 सेनानि रश्मन्वयश्रीनेत्रं बुधमित्र नुज्व (ज्व) लयशशपात्रं नृपं रंजिपं
 आ सेनावनिपंगमप्रतिमलक्ष्मीदेविगं पुट्टिदं । भूसंरक्षणदक्षदक्षिणभुजं
 विध्वस्तशत्रुत्र (त्र) जं त्रासानम्रनृपालपाळितजयश्रीस(श)स्तान्विता

भासं सूनृतवाग्विळासनवनीनाथोत्तमं कत्तमं ॥ आ विभुविन वधु पञ्चलदेवी
 कळारूपविभवजिनमतदोळ्वाग्देवी रतिदेवी लक्ष्मीदेवी शचीदेवियेनिसि
 मिगे सोगयिसुवळ् ॥ श्रीपति ना विष्णुः पृथुवीपति येने लक्ष्मीदेवनो-
 गेदु वसुदेवोपमकत्तमविभुगं श्रीपञ्चलदेवियेम्ब मुतदेवकिगं ॥ प्रकटि-
 ततेजनन्वयसरोजसमूहविकासि(शि) सज्जनप्रकरथांग सम्मदकर (रं)
 नियताभ्युदयप्रशोभिताधिकनिजमण्डळं जितकळंक पवित्रचरित्रनागि
 चन्द्रिकेगधिनाथनादनिदु विस्मयन्त प्रभुलक्ष्मीभूभुजं ॥ श्रीयुवतीशहेम-
 गरुडध्वजमंडितमण्डलेश्वरनारायणलक्ष्मणंगे तनुजम्भुजदन्ते धरोरु-
 भारधौरेयरनून दानजयधर्मधरर्विभुकार्तवीर्यलक्ष्मीयुतमल्लिकार्जुन
 महीश्वररादरतर्क्यविक्रमद् ॥ परचक्रं निजविक्रमकगिदु तेजःच
 (जशज) क्रमं बिदु कोवर चक्रक्केणे र्याप्पनन्तिरेविनं दिक्चक्रमं
 व्यापिसुत्तिरे

[यह लेख भी एक टुकड़ा है और उस पाषाण-तलसे लिया गया है जो
 सि० फ्लीटको उस मन्दिरके आँगनमें आधा गड़ा हुआ मिला था जिसमें
 कि पूर्वके दो लेख (नं. १३० और १६०) मिले थे । इसमें नक्षसे ले कर
 कार्तवीर्य द्वितीय तककी वंशावली मिलती है । का० द्वि० को चालुक्य
 राजा भुवनैकमल्लदेव या सोमेश्वर द्वितीय बतलाया गया है । इसका काल
 सर डब्ल्यू इलियट (Sir W. Elliot) ने शक ९९१ ? (१०६९-
 ७० ई०) से लेकर शक ९९८ (१०७६-७ ई०) तक बताया है । इसमें
 उसके पुत्र सेन द्वितीयका नाम भी आता है, लेकिन लेखकी वंशावलि के
 भागका मुख्य उद्देश्य स्पष्टतः ७ वी पंक्तिमें है जिसमें कार्तवीर्यकी
 सन्तान-परम्पराका उल्लेख है । यही कार्तवीर्य उस समय अपने कुटुम्बका
 प्रतिनिधि था, उसका पुत्र सेन नहीं, क्योंकि वह उस समय निरा बच्चा
 रहा होगा । दानगत लेखका भाग लुप्त है ।]

[JB, X, p. 172, a; p. 213-216, t.; p. 217-219, tr. (ins. n° 4)]

२०६

मुल्लूर—संस्कृत तथा कन्नड़

[काल लुप्त पर लगभग १०७० ई०]

[मुल्लूर (निडुत परगना)में, पार्श्वनाम बस्तिके पश्चिममें तीसरे पाषाणपर]

.....यानिधि सत्या.....ल-देवि ॥ भूतल
विनिर्गत.....लोक्यविरूपाते.....यण मोक्षदे
वर्ण.....द्यामुलं.....पनिद.....मालि.....
 नुर्वीपाळ-भूत...वरसिद कारुणियोदव.....न वचन काय वडिग
तुळ्ळिन.....यम्बन्तिरे स.....त दिविजलोक ॥ खं
पृथुविकोङ्गाळवनरसि.....

[यह समस्त लेख बहुत बिगड़ा हुआ है । किसी मरे हुएका स्मारक है । और पृथुविकोङ्गाळवकी रानी.....]

[EC, IX, Coorg tl., n° 36]

२०७

बन्दलिके—संस्कृत तथा कन्नड़-भद्र

[शक ९९६=१०७४ ई०]

[बन्दलिकेमें, उसी बस्तिके उत्तरकी ओरके एक दूसरे पाषाणपर]

भद्रं समन्तभद्रस्य पूज्यपादस्य सन्मतेः ।

अकलंक-गुरोर्भूयात् शासनाय जिनेशिनः ॥

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाच्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

खस्ति श्री-प्रमदा-प्रमोद-जनकं यस्योरु-वक्ष-स्थलम्

यद्दोर्दण्ड-कृतान्त-वक्त्र-विवरे मग्नं द्विषट्-पार्थिवैः ।

यस्येयं वसुधा चतुर्जलनिधिव्यविष्टिता प्रेयसी
 जीयाच्छ्री-भुवनैकमल्ल-नृपतिः सोऽयं नतानन्दनः ॥
 तेनेदं नरपाल-मालि-विळसन्माणिक्य-लीटाङ्गिणा
 श्रीमद्-मल्ल-सुतेन शासनमहो दत्तं द्विषणमाथिना ।
 आहारादि-चतुर्विधं मुनिगणे दानं च यस्य प्रियम्
 तेनाप्तं कुलचन्द्र-देव-मुनिना शुभ्रैश्च-सत्-कीर्तिना(म्) ॥

खस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर
 परम-भट्टारक सत्याश्रय-कुळ-निळकं चालुक्याभरणं श्रीमद्-भुवनैकमल्ल-
 देवर विजय-राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कितारं-वरं सल्लुत्त-
 मिरे बङ्गापुरद नेलेवीडिनोल् सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे ॥
 तत्पादपद्मोपजीवि खस्ति समस्त-भुवन-प्रस्तुत-ब्रह्म-क्षत्र-वीरान्वय श्री-
 पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वरं कोळाळ-पुरवरेश्वरं विक्रम-गङ्गं
 जयदुत्तरङ्गं.....मणि मण्डलिक-मकुट-चूडामणि श्रीमच्छा.....
 पेर्माडि भुवनैक-वीरनुदयादित्यनुं चालु.....ल-स्तम्भं नर-वैद्यं
 कुमार-मण्डलिकं बुद्धर.....गेय्यलु श्रीमद्-भुवनैकमल्ल-देवरु भर
कवर्त्ति-नवीकृतमप्प वन्दणिके-य तीर्थ.....शान्ति-
 नाथ-देव.....त-नवीकार.....लाप्रवर्त्तन.....कालान्तरित-पु
नव.....द कम्पणं नागरखण्ड.....बाड.....
 शक-वष ९९६ रनेय आ.....द पुष्य-मासदुत्तरायण-संक्रमण.....
श्री-मूल-संधान्वय-क्राणूर-गण.....च्छद श्रीमदुभय-
 सिद्धान्त-वार्द्धि-चू.....प्प राम(परमा)नन्दि-सिद्धान्त-देवर
 शिष्यरु कुळ.....देवर कालं कर्त्ति सर्व-नमश्यं धारा-पूर्व.....
 ब्रशासनमुं शिला-शासनमुं माडि.....(हमेशाकं अनितम वाक्यावयव

और श्लोक).....तं रितोक्ति-सहित.....खं मुखाब्ज-लसित
.....मनोदयं सद.....मदनेम्बिनं नेगब्द.....(हमेशाका
अन्तिम श्लोक) ।

[जिनशासनके कल्याणकी कामना । श्रीमद् मल्लके पुत्रद्वारा यह शासन (दान) कुलचन्द्र-देव-मुनिको मिला था । जिस समय (चालुक्य पदों सहित) भुवनैकमल्ल-देवका विजय-राज्य प्रवर्द्धमान था और वे बंका-पुरमें रहते थे:—तत्पादपशोपजीवी चालुक्य पेम्माडि भुवनैकवीर उदयादित्य शासन कर रहे थे:—भुवनैकमल्ल-देवने शान्तिनाथ-मन्दिरके लिये, (एक मितिको), मूलसंवान्वय तथा काणूर-गणके परमानन्द-सिद्धान्त-देवके शिष्य कुलचन्द्र-देवको नागरखण्डमें भूमिदान किया ।]

[EC, VII, Shikarpur tl., n° 221.]

२०८

बलगाम्बे—कन्नड़

[विना काल-निर्देशका, पर संभवतः लगभग १०७५ ई० ?]

[बलगाम्बेमें, चङ्ग-बसवप्पके खेतमें भग्न जिन-मूर्तिपर]

(नागरी अक्षर)

स्वस्ति श्री चित्रकूटाम्नायदावलि मालवद शान्तिनाथ-देव-सम्बन्ध श्री-बलात्कार-गण मुनिचन्द्र-सिद्धान्त-देवर शिसिनु अनन्त-कीर्ति-देवरु हेगगडे केशव-देवङ्गे धारा-पूर्वकं माडि कोटेवु प्रथिष्टे पुण्य सान्ति (यहाँ दानकी विगत दी हुई है) ।

[बलात्कार-गणके, मालवके शान्ति-नाथ-देवसे सम्बन्धित चित्रकूटाम्नायके मुनिचन्द्र-सिद्धान्त-देवके शिष्य अनन्तकीर्ति-देवने हेगगडे केशव-देवको दान दिया (यहाँ उसकी विगत है) ।]

[EC, VII, shikarpur tl., n° 134.]

२०९

कुप्पुदूरु—कण्ड

[शक ९९७=१०७५ ई०]

श्रीमज्जयत्यनेकान्त-वाद-सम्पादितोदयम् ।

निष्प्रत्यूह-नमपाकशासनं जिन-शासनम् ॥

पदिनाल्कु.....आस्पदमा- ।

दुदशेष-लोकमल्लिह-प्पुदु मध्यम-.....एक-रज्जु-प्रमितम् ॥

आ-मध्यम-लोकद

.....नडुवण ।

पोम्बेइद तेङ्कलेसेव भरतावनि.....॥

.....बुजवदनेय कुन्तळ्व ।

एम्बन्ते सेदत्तु ललित..... ॥

कुन्तळ-भूतळके तोडवाडुदु तां वनवासि-देशमो- ।

रन्तेसेवग्रहार-पुर-पल्लिगळिन्दुरु-नन्दनालियिन्- ।

दं तुरुगिर्द शाळि-वनदिन्दु.....।

क्रान्त-विरोधियिर्दु वनवासियोळन्वय-राजधानियोळ् ॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वर वनवासि-पुर-
वरावीश्वर.....लब्ध-वर-प्रसादं कादम्ब-कुळ-कमळ-मार्त्तण्डने-
निसिद कीर्त्ति-देवन वंश-वीर्य-प्रभावमेन्तेन्दडे ॥

विनुतानन्द-जिन-व्रतीन्द्र-भगिनी..... ।

वन-जैनाङ्घ्रि-सरोज-भृङ्गनधिकाभ्यस्ताख-शाखं.....।

.....तुतोर्वीज-तळ-ग्रसूति-वर-वानप्रस्थ-तद्-योगि-पू- ।

जन-शीलं वनवासियागि.....इन्द्रोत्तमम् ॥

शासन-देवियि कुडिसि राज्यमना.....तद्-वनम् ।
 देशमदागि निर्मिसि नोसल्लिङ्गे पट्टमिदेन्दु पीलियम् ।
 बास्.....बल्लिक्का-विभुविक्कवे नाममादुवुद्- ।
 भासि मय्.....वर्मनभिवन्द्य-कदम्ब-कुलं त्रिलोचनम् ॥
 नयदा मयूरवर्मा-न्वय.....अलर्च्चिदं कुवलयमम् ।
 जय-लक्ष्मी-रमणं....जय-भुज-बलनमळकीर्त्ति कीर्त्ति-नृपाळ ॥
 असम-वितरण.....स-भीमं कीर्त्ति-देवनेम्बी-पेसरम् ।
 वसुधे कुडे पडेदनेण्डु-देसेयानेगे कीर्त्ति कीर्त्ति-मुख्यवादुदरिम् ॥
 किं कर्णः किं.....विज-पतिष् किं स्मरः किं विधाता
 दानी नूनं प्रतापी पृथु....र-विभवश्चारु-रूपप् कला-वित् ।
 य.....यस्येति नित्यं वितरण-विजय.....न्दर्य-विद्या- ।
 वार्द्धिम् संस्तूयतेऽसौ सकल-रिपु-कुलो.....नः कीर्त्ति-देवः ॥
 चलदिं साधिसि सप्त-कोङ्कणमनाटन्दिक्कि विदिष्ट-मण्-।
उव्वरा-वलयमड् केयूरमं पेतल् ।
 तळे....दक्षिण-बाहु-दण्डदोलुदात्तं कीर्त्ति-देवं यशो-।
 मळ-मुक्ता-फल्.....णोचित-लसद्-दिक्-कामिनी-सङ्कुळम् ॥

आ-कीर्त्ति-देवनग्रमहिषी ॥

परिवार-सुरभि जिनमत-। शरधि-सुधाकिरण-लेखे सुचरि....।
 भरणेयेने नेगळ्द नृप- सौन्-। दरि माळल-देवियेणेगे राणिय-रेणेये ।
 पुरु-जिन-पति कुल-देव्यं । गुरु बेट्टद....मुनि कीर्त्ति-नृपेश्वरम् ।
 आत्म-कान्तनेने बा-। पुरे माळल-देवि-राणियेणेयाद् रसतियर ॥
 सिरि गिरिजाते सीते रति भा.....रुक्मिणि-देवि रूप-सौन्द-
 रतेगे पेम्मेगुद्ध.....कधिकं सुबगिङ्गे सत्कळा-

करतेगणं जिनेन्द्र-पद-भक्तिगे पासटि.....।
 सरि कलि-कीर्त्ति-देवन कुळाङ्गने माळल-देवि-राणियोळ् ॥
 मिळिर्च पताकेगळ् मकर-तोरण-मण्डलि मान-गम्बमग्-।
 गळिसिरे.....चैत्य-गृहावळि लेकिपङ्के सङ्-।
 गलिपडे लक्केगं मिगिलशेष-जनं तणिवन्तु कोळ्व पु-।
 मळेयोळे नोम्प नोम्पि सतकोटिये मळळ.....॥

व ॥ आ-बनवासे नाडोळु ॥

बळेद सुगन्धि-शालि-वनदिन्दोळगोप्पुव नारिकेळ-का-।
 दळन्नव-पूग-नागलतिका-वनदिं परि.....ळदिम् ।
 वळयितमागि विप्र-सुर-चित्र-निकेतन-माळेयिन्दे कण्-।
 गोळिपुद् कुप्पटूर स्मकळ-विद्येगे तानेने जन्म-भूतलम् ॥
 नेगळदखिवळ.....ति-पुराण-कळा-बहु-तर्क-तन्त्र-पा-।
 रगरुचिताध्वरावभृथ-संस्त्रपनाति पवित्र-गात्रर-।
 त्यगणित-मत्य-शौच.....तिथि-पूजन-देव-पूजेयिम् ।
 सोगयिप कुप्पटूर विभु-विप्ररिदेम् भुवन-प्रसिद्धरो ॥
 धरेगे चतुस्समय-समु ।.....शरणागतैक-रक्षाभणिगळ् ।
 निरवद्य-चरितराज्ञा-। धररागी-कुप्पटूर सासिर्वरवोळ् ॥
 ब्रह्मैकश्वतुरा.....थ विबुधा देवाः कविर्भार्गवो
 येवामप्रत एव नान्य इति ये प्रस्तुत्य-विद्यार्णवाः ।
 उत्तङ्गाः कुळशैळवत्तरणिवत्तेजस्विनो वार्द्धिवत्
 गम्भीरा भुवि कुप्पटूर-विविध-वरा विप्रा जयन्ति स्थिरम् ॥
 प्राणुतं बन्दणिका-सु.....कृत-सम्बन्धं जगक्केन्दे भू-।
 षण्मी-ब्रह्म-जिनालयं दलेने पेळ्दी-कुप्पटूरोळ् गुणो-

ळ्वने मुं मा.....दी-स्थलकदेडे-नाडोळ् चल्नु-वेतिर्दि - सिडु ।

डणियं माळल-देवि तां बिडिसिदळ् श्री-कीर्ति-भूपाळनिम् ॥

अन्ता-बन्दणिका-तीर्थादि-सकळ-चैत्यालयक्काचार्य्यरुं मण्डळाचा-
र्य्यरुमेनिसिद पञ्चनन्दि-सिद्धान्त-देवर गुरु-कु.....न्वय-प्रभावमेन्ते-
न्दोडे ॥

दुरित-कुलान्तकं चरम-तीर्थकरं विभु वीरनाथनी- ।

धरे तिळिवन्तु हेयमिद.....समस्त-तत्त्वमम् ॥

परिविडियिन्दे पेळ्दु जनमं वर-मोक्ष-पथके तिर्दि बित्- ।

तरिसिद मुक्ति-कान्तेय लताङ्गमनप्पिदनिन्द्र-वन्दि -॥

आ-नेगळ्दन्त्य-कश्यपनिनादुदु काश्यप-गोत्रमी-जनम् ।

ज्ञान-निधानना-जिनन सद्गण-नायकरप्रिमावधि- ।

ज्ञानिगळप्प गौतम-मुनि.....मु.....रे श्रुतकेवल-प्रभा- ।

भानुगळप्प विष्णु-मुनि-मुख्यरुमा-पथमं निमिर्च्चिदर ॥

यतिगळवरिन्दे पलत्ररुन् । अतीतवा.....बळिक्रमवतरिसि बहु- ।

श्रुतनागियुं वलं वि- । श्रुतनादं भद्रबाहु-यतियिदुचित्रम् ॥

अवरिं बळिके ॥

श्रुत-पारगरनवधर् । चतुरङ्गुळ-चारणर्द्धि-सम्पन्नर् स्सं- ।

हृत-कु-मत-तत्त्वरेनिसिदर । अतर्क्य-गुण-जलधिकुण्डकुन्दाचार्य्यर् ॥

आ-कोण्डकुन्दान्वयदोलु ॥

श्री-कुण्डकुन्दान्वय-मूलसंघे क्राणूर्-गणे गच्छ-सु-तिब्रिणीके (य्)

अम्भोनिधाविन्दुरिवोदपादि सिद्धान्ति-चक्रेश्वर-पञ्चनन्दी ॥

शान्त-रसं पोन्ल्-वरिदु संयमवलि मडल्लु पर्व्वि तो- ।

.....चराचर-व्रजमनात्म-वचोऽमृतदिं विनेयर ।

स्वान्तरजो-मळ तोळेदु पोय्तेने पेळ् बुध-पद्मनन्दि-सि ।

द्धान्तिक-चक्रवर्तियनदार पोगळ् गुण-शील-मूर्त्तियम् ॥

आ-प्रतिष्ठाचार्यरेनिसिद श्री-पद्मनन्दि-सिद्धान्ति-देवरिं सु-प्रति-
ष्ठितमाद कुप्पटूर श्री-पार्श्वदेवर चैत्यालयमं पट्ट-मा-देवि माळल-
देवि नेरेये माडिसि खास्ति यम-नियम-स्वाध्याय-ध्यान-धारण-मौनानुष्ठान-
जप-समाधि-शील-गुण-सम्पन्नरप्प श्रीमदनादियग्रहारं कुप्पटूरशेष-महा-
जनङ्गळं यथोक्त-विधिधिं पूजिसियवरिं ब्रह्म-जिनालयमेन्दु पेसरिदुयल्लिय
कोटी वर-मूलस्थान-प्रमुख-पदिनेण्टु-स्थानदाचार्यरुं बेरसु बनवसेय
मधुकेश्वर-देवराचार्यरं वरिसि पूजेयं कोडु जोग-वडिगेय-निकिसिया-
महाजनङ्गळियेयनूरु-होन कोडु स्त (स्थ) ल-वृत्ति (आगेकी ३ पंक्तियोंमें
दानकी विस्तृत चर्चा है) शक-नृप-वर्षद ९९७ य पिङ्गल-संवत्सर
दक्षय-तदिगेयमावासे-आदित्यवार-संक्रमण-व्यतीपातवोन्दिद
दिनदोळु देवर नित्य-नैमित्त-पूजेगं ऋपियराहार-दानकवेन्दु पद्मनन्दि-
सिद्धान्तिक-चक्रवर्तिगळ् कालं तोळेदु धारा-पूर्वकं माडि कोडुळु (हमेशा
के अन्तिम वाक्यावयव) आरुवणव नमस्यवागि विट्ठरु ॥ (हमेशाके
अन्तिम श्लोक) बम्मरहरियण हेळ्द शासन मङ्गळ महाश्री ॥

[मेरु पर्वत, भरत क्षेत्र, कुन्तल-देश, और वनवासिके उल्लेखपूर्वकः—
कादम्ब-कुल-कमल-मार्त्तण्ड कीर्ति-देव राज्य करते थे, जिनका वंशावतार
निम्न प्रकार हैः—मयूरवर्मा नामके एक राजा या युवराज थे । शासन-
देवीकी कृपासे इनको राज्य मिला था, और एक वनको राज्यके रूपमें
रूपान्तरित किया गया था । एक मयूरके पङ्क्तोंका बनाया हुआ पट्ट उनके
सिरपर रक्खा गया था, इसलिए उनका नाम मयूरवर्मा था । ये कदम्ब-
कुलके अभिवन्ध थे । उन्हींकी साक्षात् सन्तान कीर्ति-देव थे; उनकी

प्रशंसा । उन्होंने सप्त कोंकणोंको, लीलामात्रमें ही वश कर लिया था । उनकी ज्येष्ठ रानी मालल-देवी थी; उसकी प्रशंसा ।

उस बनवासे-नाइमें, (अनेक आकर्षणों सहित) कुप्पटूर था, जिसके हजार ब्राह्मण अपनी विद्या और भक्तिके लिये विख्यात थे । प्रसिद्ध बन्द-गिकेसे सम्बन्ध रखनेवाली चीजोंमेंसे कुप्पटूरका ब्रह्म-जिनालय सबसे आगे था; इसके लिये मालल-देवीने राजा कीर्तिसे सिद्धिणि, जो एडे-नाइमें सर्व-सुन्दर स्थान था, प्राप्त किया था ।

बन्दगिके तीर्थ तथा दूसरे चैत्यालयोंके मुख्य पुरोहित मण्डलाचार्य पञ्चनन्दिसिद्धान्तदेवके आध्यात्मिक वंशका अवतार-वर्णन:—भगवान् वीरनाथ, गणधर गौतम (इन्द्रभूति) मुनि, तथा श्रुत-केवली विष्णुमुनि ये तीन ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने जिन-मार्गका विशेष रूपसे विस्तार किया । उनके बाद कई मुनियोंके गुजर जानेके बाद भद्रबाहु यति हुए । उनके बाद, जैनपरम्परामें परिपूर्णरूपसे निष्णात, चार अङ्गुल ऊपर जमीनसे चलनेवाले (चारणऋद्धिधारक) कुन्दकुन्दाचार्य हुए । उसी कुन्दकुन्दान्वयमें मूल-संघ, काणूर-गण तथा तिस्त्रिणीक-गच्छके सिद्धान्त-चक्रेश्वर पञ्चनन्दि हुए; उनकी प्रशंसा ।

उस पट्ट-महिषी मालल-देवीने कुप्पटूरके पार्श्व-देवचैत्यालयको उन पञ्चनन्दिसिद्धान्त देवसे सुसंस्कृत कराके और उसका नाम वहाँके ब्राह्मणों (जिनमें साधुओं-मुनियोंके गुण थे) से 'ब्रह्म जिनालय' रखवाकर कोटी-श्वर-मूलस्थान तथा वहाँके सभी अन्य १८ मन्दिरोंके पुरोहितोंके साथ, तथा बनवासि-मधुकेश्वरको भी बुलवा कर उनकी पूजा करके और उन्हें ५०० 'होस्तु' देकर, और उनसे (उक्त) भूमियाँ प्राप्त करके,—इन सबको तथा कीर्ति-देवसे प्राप्त सिद्धिणिवल्लिको (उक्त मितिको) प्राप्तकर, पञ्चनन्दि सिद्धान्त-चक्रवर्तिके पाद-प्रक्षाल-पूर्वक दैनिक पूजा और ऋषियोंके आहारके लिये दान कर दिया ।]

२१०

गुडिगेरी—कच्छ-भग्न

[शक सं० ९९८=१०७६ ई०]

१ — — — लवर बसदि [म्] ॥ वृ ॥ सर — — — —
 — — — — — — — — — — — — — — — —
 नय-भूकरनन्तदु माणो
 वाग्न— *

२ याकरनभयाकरं द्विज-दिवाकरन्— — — — —
 भीकरं बुध-निशाकरनुद्धयशं प्रभाकरम् ॥ अन्तेनिसिद
 पेर्गडे

३ प्रभाकरय्यननुभवण्यल्ल ॥ ॐ स्वस्ति समस्त-भुवनवल्लय-
 निलय-निरतिशय-केवलज्ञान-नेत्रतृतीय-विराजमान-
 भगवदर्हत्सर्वज्ञवीतरागपरमेश्वरपरमभट्टारकमुखकमलविनिर्ग-
 तानेक-सदसदादिवस्तुस्वरूपनिरूपणप्रवीणसिद्धा-

५ न्तादि-समस्तशास्त्रामृतपारावारपारगरुमनेकतृपतिमकुटतटघटि-
 तमणिगणकिरणजलवाराधौतावदातपूतचर-

६ णारविन्दरुं बुधजनमनःपुण्डरीकवनमार्त्तण्डरुं पट्टर्कपण्मुखं
 परमतपश्चरणनिरतरुं परवादिशरभभेरुण्डापर-

७ नामधेयरूप श्रीमत् श्रीनन्दिपण्डितदेवराचार्यरागि तपो-
 राज्यं-गेयुत्तमिरे ॥ वृ ॥ जिनसमयागमाम्बुनिधिवारगरु-

८ प्रतपोनिवासिगळ् मनसिज-त्रैरिगळ् शम-दमाम्बुधिगळ् बुध-
 सज्जनस्तुतर्त्विनतनरेन्द्ररुन्दमकुटार्क्षितपादपयोज-

९ युग्मरेम्भिनितु महत्त्वदि सिरियनन्दि-मुनीन्द्ररे देवरुर्वि-
 योळ् ॥ अवर शिर्षितियर् ॥ शम-दम-यम-नियमयुतर्वि-

- १० मल-चरित्रर् जिनेन्द्रधर्म्मोद्धरणक्रमनिरतरेलेले लोकोत्तमरेसेवष्टो-
पवासिगन्तियरेळ्योल् ॥ वृ ॥ अन्तवरेळु
- ११ मत्तरने पण्डितरीये नमस्यमागि कल्पान्तदिनं वरं पडेदु पार्श्व-
जिनेश्वर-पूजेगं श्रुताख्यन्नसदान्नदान-
- १२ विधिगं सले कोइरिदं नितान्तवोरन्तिरे रक्षिप[१] ध्वज-
तटाकद पन्नेरहुं-गवुण्डुगल् ॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥
- १३ ॐ समस्तगुणसम्पन्ननप्प श्रीमत्सेनवोव सिङ्गणङ्गे ॥
अरुहने नम्बिद देव्यं गुरुगळु परवादि-शरभ-मेरुण्ड-
- १४ बुधप्पर-हितमे तनगे चरितं दोरे-वेत्तुदु सिङ्गनेम् कृतात्थनो
जगदोल् ॥ परमश्रीजैनधर्म्मकनवरतविशेषान्नदानके
- १५ मुन्नं भरतं श्रेयांसनीगळु निजकुलतिलकं जैनधर्म्माब्धिचन्द्रं
स्फुरदुद्यत्तेजनत्युन्नतनमलयशं शिष्टरत्नाकरं-
- १६ वाप्पुरे सिङ्गं भव्यसेव्यं शुचि-शुभचरितं धान्नियोळु पुण्य-
पुञ्जम् ॥ कन्द ॥ परहितचरित्रननुपमवरगुणनिल-
- १७ यं प्रियम्बदं धर्मदनक्षरपक्षपाति यतिपति-सिरिणन्दिब्र(व)ति-
पदाब्जभृङ्गं सिङ्गम् ॥ अमलचरित्रं बुधहृत्क-
- १८ मलाकरदिनकरं कृतात्थं जैनक्रमनलिनेष्टं श्रीनन्दिमुनीन्द्रर
सेनवोवसिङ्गं धरेयोल् ॥ अन्तेनिसिद ॥ ॐ ॥
- १९ शकवर्ष ९९८ नेय नल-संवत्सरद श्राहेयोळु खस्ति
श्रीमत् परवादि-शरभमेरुण्डापरनामधेयरप्प
- २० श्रीनन्दिपण्डितदेवर्म्मन्तं श्रीमत् चालुक्य-चक्रवर्त्तिविजया-
दित्यवल्लभानुजेयप्प श्रीमत् कुङ्कुम-महा-
वि० १८

- २१ देवि पुरिगेरेयलु माडिसिदानेसेजेय-वसदिगे ताम्र (ताम्र)
शासन-मर्यादेयिन्दाळव गुडिगेरेय भूमियोळगे प—
- २२ डुवण पोलनोत्तु-त्रोगिळदडे कालदिय-नायिम्मरसंगे शासनमं
तोरि पडेद भूमियोळगे तम्म गुडं सिङ्गयंगे कारु—
- २३ प्यदिं सर्व्वनमस्यमागि पदिनाल्लु मत्तरं दये-गेय्दु कोइदा-
यय्यना पदिनाल्लु मत्तरुमं ऋषियर्गे गुडि-
- २४ गेरेयोळ आहारदानं नडेवन्तागि विठनी केय्योळ पुट्टिदर्थ-
मन्निळियाहारदानकल्लदे पेरतोन्दु धर्मकं
- २५ पेरतोन्देडेगमुण्यलागदिन्ती मय्यदियनरसुं पण्डितरं पन्निर्व्व-
गावुण्डुगळुं धर्मवरिववरेल्ल-
- २६ रुडोडेयरागि परिरक्षे-गेय्दु स्वधर्मदि नडसुवुदु ॥ कन्द ॥
गुडिगेरेयोळ धर्मगळिगोडरिसुववरेल्ल
- २७ वोडेयरी धर्म कावोडेयरेमोव्वरे वेनवेदुडुपति रवि जलधि धात्रि
निलुपन्नेवरं ॥ अन्तु सिङ्गणं विट्
- २८ केय्ये चतुस्सीमेयेन्तेने मूड वन्दि-गावुण्डन केयि तेङ्ग पुल्लुङ्गूर
वट्टे पडुव वसदिय केय्यु [म्]
- २९ नाकय्यन केयि बडग गावुण्डुगळ पसुगेय पोलनन्तु मत्तर्प-
दिनाल्लु ॥ मत्तमष्टोपवासि-कन्तियर
- ३० विट् केय्ये चतुस्सीमेयेन्तेने मूड बङ्गगेरिय केयि तेङ्ग ग्रामचै-
ल्यलयद केयि पडुव पेर्गडे
- ३१ प्रभाकरय्यन केयि बडग पुल्लुङ्गूर वट्टेयन्तु मत्तरेल्लुमनिन्ती
येरडुं पर्यायद मत्तरिर्पत्तो

- ३२ न्दुमं प्रतिपालिसुत्रवर्गे वारणासि कुरुक्षेत्रं प्रयागेयर्घ्यतीर्थं
मोदलागि पुण्यतीर्थङ्गरो-
- ३३ लु सूर्यप्रदण्डोलु मासिर कविलेयनलङ्कारमहितं चतुर्वेदपार-
गरप्प मासिर्वर्वाह-
- ३४ णर्गेयुभयमुखिगोइ प(फ)लमकुवी धर्ममनलियलु मनंद-
दवर्गंयिन्ती पुण्यतीर्थङ्गरोलु सासि-
- ३५ रकविलेयुम [म] सासिर्वर्वाहणरुमनल्लिद पञ्चमहापातकनकु ॥
ॐ स्वस्ति श्रीमत् परवादि-शरभ-मे-
- ३६ रुण्डापरनामधेयरप्प श्रीनन्दिपण्डितदेवर्मत्तमा पडुवबोल-
दोळगे पन्निर्वर्गावुण्डुगळो दये-गेय्दुम्बलियागि
- ३७ कोइ मत्तन्नूर पन्नोन्दु पेर्गडे प्रभाकरय्यन मग रुद्रय्यङ्गे दये-
गेय्दुम्बलियागि कोइ मत्तर्पदि-
- ३८ नाल्लु । सेनबोव हव्वण्णगे दये-गेय्दुम्बलियागि कोइ मत्त-
र्पदिनाल्लु भूकियर-कावण्णगे दये-गेय्दुम्बलि-
- ३९ यागि कोइ मत्तरेल्लु कन्तियर-नाकरय्यङ्गे दये-गेय्दुम्बलियागि
कोइ मत्तर्वाल्लु कम्मवरुनूरु श्रीमद्भुवनै-
- ४० कमल्ल-शान्तिनाथ-देवर्गे सर्व्वनमस्यमागि पडेद मत्तरिर्पत्तु ॥
बहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः य-
- ४१ स्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा प(फ)लम् ॥ खदत्तां
परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम् पट्ठिर्व्वसहस्रा-
- ४२ यां (णि) मि (वि) छायां जायते कृमिः ॥

[प्रभाकर (पंक्ति २) या प्रभाकरय्य (पंक्ति, ३) नामके 'पेर्गडे'
की जगहपर काम करनेवाले एक अधिकारीके वर्णनके साथ यह लेख शुरू
होता है । उसके समयमें श्रीनन्दि पण्डितदेव (पं. ७) सिरियनन्दि

मुनीन्द्र (पं. ९), या सिरिणन्दि (पं. १७) नामके गुरु थे जो सर्व पदार्थोंके व्याख्यान करनेमें चतुर थे, जिनकी पदवी 'परवादि-शरभ-मेरुण्ड' (पं. ६) थी । जब ये आचार्य, श्रीनन्दिपण्डित, तपश्चर्यामें संलग्न थे, उनके शिष्य 'अष्टोपवासिगन्ति' (पं. १०), या अष्टोपवास-कन्ति (पं. २९) थे, जो जिनधर्मके उद्धार करनेमें बहुत प्रसन्न थे । और इनको श्रीनन्दि पण्डितसे सात 'मत्तर' भूमिका 'नमस्य' दान मिला था और इस दानका उपयोग ध्वजतटाक (पं० १२) (गौवके) १२ 'गवुण्ड' सरदारोंकी छत्रछायाके नीचे, पार्श्वजिनेश्वरकी पूजा तथा शाका लिखनेवालोंके भोजनके प्रबंधके लिये किया । इसके बाद लेखमें एक 'सेनबोव' या पटवारी सिङ्गण (पं. १३), सिङ्ग (पं. १४), या सिङ्गय्य (पं. २२) का उल्लेख आता है जो जिनधर्मभक्त था । यह सिङ्ग श्रीनन्दिका पटवारी था ।

इसके बाद कथन है कि अनल संवत्सर, जो इयतीत शक सं. ९९८ था, की आधी या आश्रहीमें श्रीनन्दिपण्डितको गुडिगेरीकी भूमिमें पश्चिम दिशाके खेतोंका अधिकार मिल गया था । ये खेत, एक ताम्रपत्रके अनुसार, उस आनेसेज्येय बसदिके जैनमन्दिरके अधिकारमें थे, जिसको श्रीमत् चालुक्यचक्रवर्ती विजयादित्यवल्हकी छोटी बहिन कुङ्कुममहादेवीने पहले पुरिगेरीमें बनवाया था । श्रीनन्दि पण्डितने इन खेतोंमेंसे अपने शिष्य सिङ्गय्य (पं. २२) को, 'सर्वनमस्य' दानके तौर पर, १५ मत्तर भूमि दी । सिङ्गय्यने यह भूमि गुडिगेरीके मुनियोंके आहारके प्रबंधके लिये दे दी, और इस बातका ध्यान रखते हुए कि इसकी उत्पन्न इसी कार्यमें खर्च होती है, किसी दूसरे धर्म या कार्यमें खर्च नहीं होती, यह काम राजा, पण्डितों, १२ 'गवुण्ड' लोग, और शेष सभी धार्मिक लोगोंको (पं. २५) सौंप दिया । जबतक चन्द्र, सूर्य और समुद्र तथा पृथ्वी हैं तबतक यह दान जारी रहे, यह बात भी निगाहमें रखनेके लिये इन लोगोंको कहा । इसके पश्चात् इस भूमिकी सीमायें दी हुई हैं ।

उन्हीं पश्चिम दिशाके खेतोंमेंसे श्रीनन्दि पण्डितने, लगान-मुक्त जमीनके रूपमें, १२ गवुण्डोंको १११ मत्तर (पं. ३६); 'पेगंडे' प्रभाकरय्यके पुत्र रुद्रय्यको १५ मत्तर; सेनबोव हब्बण्णको १५ मत्तर (पं. ३८);

मूकियर-कावणको ७ मत्तर; कन्तियर-नाकरयको ४ मत्तर और ६०० 'कम्म' (पं. ३९); और 'सर्वनमस्य'-दानके रूपमें श्रीमद्भुवनैकमल्ल शान्तिनाथदेवको २० मत्तर (पं. ४०) दिये । भुवनैकमल्ल शान्तिनाथदेव नामका मन्दिर 'भुवनैकमल्ल' विरुद्धवाले पश्चिमी चालुक्य राजा सोमेश्वर द्वितीयने बनवाया था या उसमें शान्तिनाथकी प्रतिमा प्रतिष्ठित कराई थी ।]

[ई० ए०, १८, पृ० ३५-४०, नं० १७३]

२११

मथुरा—संस्कृत

सं० ११३४=१०७७ ई०

[पद्मासनस्थ तीर्थंकरकी विशाल मूर्तिका लेख]

[इस मूर्तिका लेख साफ-साफपढ़नेमें नहीं आता । कुछ भाग पढ़ा जाता है, कुछ नहीं । परन्तु लेख सिर्फ दो पंक्तियोंका है । इस मूर्तिका लेख सिर्फ कालकी दृष्टिसे ध्यान देने योग्य है । डा० फूहरर (Dr. Führer) के मतसे यह लेख बताता है कि इस मूर्तिका निर्माण मथुराके खेताम्बर सम्प्रदायकी तरफसे हुआ था । शेष लेख नं० १६१ के अनुसार जानना ।]

[Antiquities of Mathura, (ASI, XX), p. 53, t.]

२१२

हुम्मच-कवड

[विना काल-निर्देशका; पर लगभग १०७७ ई० का]

[हुम्मचमें, सूले बस्तिके सामनेके मानस्तम्भपर]

(पश्चिम मुख) श्री-वीर-सान्तरन पिरिय-मंगं तैलह-देवं भुजब-
लशान्तरनेन्दु पट्टमं कट्टिसि कोण्डु पट्टण-स्वामि माडिसिद तीर्थद-
बसदिगे बीजकन-बयलं विट्टन् (वे ही शापरामक वाक्यावयव)
स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-कल्याणाष्ट-महाप्रातिहार्य-चतुर्विंशदतिशय-

विराजमानं भगवदहत्-परमेश्वर-परम-भद्राक्ष-मुख-कमल-त्रिनिर्गत-सद-
 सदादिवस्तु-स्वरूप-निरूपण-प्रवीणरुं सिद्धान्तामृत-वार्द्धि-वारुद्धौत-विशु-
 द्धेद्व-बुद्धि-समृद्धरुभय-सिद्धान्त-रत्नाकररूप श्रीमद्-दिवाकरनन्दि-सि-
 द्धान्त-देवर गुह्य स्वस्त्यनेक-गुण-गणाभिमण्डनं नरवर-मुख-मण्डनं
 शान्तर-राज्याभ्युदय-कारणं कलि-युग-दोष-निवारणं शान्तलि-देश-
 कान्तारान्तर-जङ्गम-तीर्थं कलि-युग-पार्थं बोम्बुर्ष-कुलोद्भव-दिवाकरं
 जिन-पाद-शेखरं आहाराभय-भैषज्य-शास्त्रदान-कानीनं विशद-यशो-
 निधानं सम्यक्त्व-वाराशियुमप्य श्रीमत्पट्टण-स्वामि-नाकय्य-सेट्टियर
 वृत्त ॥ जिन तत्त्व व्याप्त-चित्तं जिन-मन-तिष्ठकं जैन-कल्पावनीजं ।

जिन-धर्माभ्योधि-चन्द्रं जिन-समय-सरोजाकरोत्तम-हंमम् ।

जिन-राज-स्तोत्र-मालाविष्-मुख-कमलोद्भासि सिद्धान्त-रत्ना- ।

कर-देव-श्री-पदाम्भोरुह-मधुपनेनल् पट्टण-स्वामि सन्दम् ॥

(उत्तरमुख) गुणिगल् सिद्धान्त-रत्नाकररमल-चरित्रर्महा-योगि-वृन्दा- ।

प्रणिगल् श्री-शान्तिनाथ-क्रम-कमल-युगाराधकर भारती-भू- ।

पणबुद्धर ज्ञानिगल् देशिग-गण-तिष्ठकर जैन-सिद्धान्तचूडा- ।

मणिगल् श्री-पट्टण-स्वामिगे गुरुगळेनल् नोकनन्तार कृतार्थर ॥

परम-श्री-जैन-धर्मकृतिशय-विभव मार्प विद्वज्जनका- ।

दरदिन्दं सन्तोसं माडुव मुनि-जनकाहार-भैषज्यमं वि- ।

स्तरदिन्दं चिन्ते-गेयुजत-गुण-युतं पट्टण-स्वामि नोकम् ।

बरमारु अव्यक्कल् अन्ता पुरुष-रतुनदि बीर-देवं कृतार्थम् ॥

हरि-संघातदे कट्टु-पेत्त बडव-ज्वाळालिथिं बेन्द मी- ।

कर-पाठीन-तिमिङ्गिल्लालियिनतिशोभके सन्दिब्दग- ।

स्वरिनप्प-प्राशनकेन्दे वारदति-तीक्ष्ण-क्षार-वारि-प्रभं- ।

गुर-वाराशियोळन्तु पोलिपुदो पेळ् सम्यक्त्व-वाराशियम् ॥
 सिरिगावासमनेकरत्न-निचयोत्पत्त्याश्रयं भीरु-र- ।
 क्ष-रतं चन्द्र-कळा-प्रवर्द्धन-मुदं पीयूष-पिण्डास्पदम् ।
 वर-वेळा-वळ्यामृतं समतेयिं वारासि पोलुतुं मनो- ।
 हर-दानत्वदिनेय्दे पोलदे वलं सम्यक्त्व-वाराशियम् ॥

पट्टण-स्वामिय मंगं मल्लं बरेदम् ।

(पूर्वमुख) जडरुं बाळकरुं बुध-प्रकरमुं तत्त्वार्थमं कलतधम् ।
 किडे सम्यक्त्वमनेय्दि सप्त-परम-स्ता(स्था)नाप्तियं निश्चयम् ।
 पडेयल् माडिदरोप्पे.....तत्त्वार्थसूत्रके क- ।
 नडदि वृत्तियनेल्लिगं नेगळ्पिनं सिद्धान्त-रत्नाकरम् ॥
 कन्तु-दर्प-हरं जिने तनगाप्तनाब्दनवार्थ-वि- ।
 क्रान्तनोळ्वालि वीर-शान्तरनम्मणं गुणि तन्दे दिग्- ।
 दन्ति-वर्त्तित-कीर्त्तिगळ् गुरुगळ् दिवाकरणन्दि-सि- ।
द्धान्त-देवरेनल्के पट्टण-सामिनोकने सन्नुतम् ॥
 स्नानं पञ्चामृताख्यं पटु-पटहरणं श्लरी-शब्द-रम्यम्
 पूजां पुष्पाभिरामं मळयज-पयसा लेपनं दिव्य-धूपम् ।
 निव्यं कृत्या जिनानां सकल-जन-दया-जीव-रक्षान्न-दानम्
पोम्बुर्चाहत्-प्रतिष्ठा तव भवति परं लोक-विद्या-विवेकः ॥
 दारिद्र्य-लोभ-मद-भय-नाशकरं एकमेव तत्क्षणतः ।
 पञ्चाक्षरमिदं मन्त्रं **पट्टण-सामि** ते जप-विबुधम् ॥
 पुसि नुडिव चपल-वित्तियोळ् ।
 असदलमेसगुव पराङ्गना-सङ्गतिगा- ।
 टिसुव तवगिल्लदोळ्पम् ।

पसरिप नररणम-नोक्कंन पोत्तपरे ।

(दक्षिण मुख) चारु-चरित्ररी-दोरेयरारेनिपोळ्पिन चन्द्रकीर्ति-भ- ।

द्वारकरप्र-शिष्यरघ-हारिगळाहंत-तत्त्व-वस्तु-वि- ।

स्तारिगळङ्गजारिगळशेष-विशेष-गुणावली-मनो- ।

हारिगळेम्बिनं नेगळ्दरल्ते दिवाकरणन्दि-स्ररिगळ् ॥

वचन ॥ उभयसिद्धान्त-चूडामणिगळुं त्रैविद्य-दैवरुमेनिसिद श्री-दिवाकर-
णन्दि-सिद्धान्त-रत्नाकर-देवर शिष्यर् ॥

सकलचन्द्र-मुनि-नाथरुर्वरा- ।

सकलदोळ परम-योग्यरेम्बुदम् ।

ककुभ-दन्तिगळ दन्तदोळ करम् ।

प्रकटमाणे बरेदं पितामहम् ॥

वचन ॥ सम्यक्त्व-वाराशियुमेनिसिद पट्टण-स्वामिनोक्कय्य-सेट्टियर
मगम् ॥

सुन्दर-रूपदि विनयदिन्दभिमानदिनोळ्पिनि जना- ।

नन्द-परोपकार-गुणदि सुजनत्वदिनोजेयि जगद्- ।

वन्दित-कीर्ति पुण्य-निधि तन्देयोळच्चिनोळोत्तिदन्ननेन्द- ।

अन्देले वैश्य-वंश-तिलकं नेगळ्दिन्दिरनेम् कृतात्यर्थनो ॥

[वीर-शान्तरके ज्येष्ठ पुत्र तैलह देवने, जो भुजबल-शान्तर नामसे मी
ज्ञात था, राजा होकर, पट्टण-स्वामिके द्वारा निर्मित तीर्थद-बसदिके लिये
मन्दिरके दानके रूपमें, बीजकन-बयल्ला, दान किया । (शाप)

भगवदर्हत्कं द्वारा प्रतिपादित सत्य और असत्यकी प्रकृतिके प्रतिपादन
करनेमें निपुण दिवाकरनन्दि सिद्धान्तदेव थे, जिनके गृहस्थ-शिष्य पट्टणा
स्वामी नोक्कय्यसेट्टि थे । उनकी और उनके गुरुकी प्रशंसा । उसके द्वार-

वीरदेव भी सफल हैं । आगेके श्लोकोंमें उनकी समुद्रसे तुलना की गई है । पट्टण-स्वामीके पुत्र मल्लने इसे लिखा ।

सिद्धान्त-रत्नाकरदिवाकरनन्दिने मूर्खों या बच्चों तथा विद्वानोंके सबके अथबोधार्थ कन्नडमें तत्त्वार्थसूत्रकी वृत्ति लिखी । पट्टणस्वामीके इष्ट देव जिन थे; उसके शासक वीर-शान्तर थे, उनके पिता अम्मण, गुरु दिवाकरनन्दि सिद्धान्तदेव थे । (जिनकी पूजाके लिये दैनिक सामग्री तथा लोगोंके कल्याणका वर्णन करनेके बाद),—नोकरकी प्रशंसा ।

चन्द्रकीर्ति-भट्टारकके मुख्य शिष्य दिवाकरनन्दिसूरिकी प्रशंसा । उन्हींका अपर नाम सिद्धान्त-रत्नाकर था । उनके शिष्य सकलचन्द्र-मुनिनाथ थे ।

पट्टण-स्वामीनोकरव्य-सेष्टिके पुत्र वैश्य-वंश-तिलक इन्दरकी प्रशंसा ।]

[EC, VIII, Nagar tl., n° 57]

२१३

हुम्मच;—संस्कृत तथा कन्नड

[शक९९९=१०७७ ई०]

[हुम्मच में, पञ्चवस्तिके आँगनके एक पाषाणपर]

भद्रमस्तु जिन-शासनाय ॥

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥

शक्र-वर्ष ९९९ नेय पिङ्गळ-संवत्सरं प्रवर्तिसुत्तमिरे स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुल-तिलकं चालुक्याभरणं श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल-देवर राज्यमुत्तरोत्तरामिवृद्धि-प्रवर्धमानमा-चन्द्रार्कतारं सलुत्तमिरे । तत्पाद-पद्मोपजीवि ॥ समधिगतपञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरनुत्तर-मधुराधीश्वरं पट्टिपोम्बुर्च-पुर-वरेश्वरं महोन्न-वंश-ललामं पद्मावती-लब्धवर-प्रसादासादित-विपुल-तुलापुरुष-महादान-हिरण्यगर्भ-त्रयाधिक-दान वानरध्वज

मृगराज-लाञ्छन-विराजितान्वयोत्पन्नं बहु-कला-सम्पन्नं सान्तर-कुल-
कुमुदिनीशशांक-मयूखाङ्कुरं रिपु-मण्डलिक-पतङ्ग-दीपाङ्कुरं तोण्ड-मण्ड-
लिक-कुळाचळ-वज्र-दण्डं विरुद-भेरुण्डं कन्दुकाचार्य्यं मन्दर-धैर्य्यं कीर्त्ति-
नारायणं सौर्य्य-पारायणं जिन-पादाराधकं पर-बल-साधकं सान्तरादित्यं
सकलजन-स्तुत्यं नीति-शास्त्रज्ञं विरुद-सर्व्वज्ञं श्रीमन्महा-मण्डलेश्वरं नन्नि-
सान्तरदेव ॥

वृत्त ॥ चरण-विनम्ननागि तोदळेम्बिडि मुन्ने ललाट-पट्टदल् ॥

बरेद दुरक्षरावळिगळं तोळेदप्पुवु तामे निन्न सच्- ।

चरण-रजङ्गणेन्दोडुळिदर्निनगादारे देव मण्डळे- ।

श्वर-कळभैक-केसरि नरेन्द्र-शिखामणि नन्नि-सान्तरा ॥

प्रतिबिम्बं रूपिनोळ् पोल्केम गुणदोळदार पोल्तपर्निन्ननेम्बी- ।

स्तुतियं निश्चयिस् गोविन्दर बेसेयदिरेन्तेम्ब निन्नन्ते नोडु- ।

न्नतियोळ् हेमाचळं क्षान्तियोळवनि-तळं मेरेयोळ् वार्धि शौच- ।

व्रतदोळ् सिन्धूद्रवं सत्यदोळिन-तनेयं सौर्य्यदोळ् भीमसेनम् ॥

अन्तेनिसिद नन्नि-सान्तर-देवरन्वयमदेन्तेने । उत्तर-मधुराधीश्वरनु
मुप्रवंशोद्भवनुमेनिसिद राहनेम्ब मण्डलेश्वरं कुरुक्षेत्रदोळ् भारतदल् कादि
गेल्वडे नारायणं मेच्चि एक-संखमुमं वानर-ध्वजमुमं कोट्ट ॥ आतनि
पलबरुं राज्यं गेष्टु पोगे । सहकारनातं नर-मांस-व्रतनागे आतङ्गं
श्रिया-देविगं पुष्टिद जिनदत्तनातन चरितके पेसि दक्षिणाभि-
मुखनागि बरुत सिंहस्थनेम्बसुरनं कोन्दडे जक्कियब्बे मेच्चि
सिंहलाञ्छतं कोट्टल् ॥ अन्धकासुरनेम्बसुरन कोन्दु अन्धासुरमेन्दु
माडिद । कनकपुरके वन्दल्लि कनकासुरनं कोन्द । कुन्दद कोटि-

योळिई करतुं करदूषणतुमं कादि योडिसिदडे पद्मावती-देवी मेच्चि
 कनकपुरं एनिसिद पोम्बुर्चद लोक्किय मरदल् नेलसि लोक्कियब्बेये-
 म्बेरडनेय पेम्परं ताळिद पोम्बुर्चमातङ्गे राज्यस्थानमेन्दु पोळलं माडिदल् ॥
 अल्लि जिनदत्तनुं पलवरुमरसु-गेय्दु सले श्री-केशियुं जयकेशियुमा-
 दरा-श्रीकेशिगं मुददि महादेविगं रणकेसि पुत्रनादनातनि पलवररसु-
 गेय्ये । हिरण्यगर्भमिर्दु महादानं माडियधियासद पलवररसुगळं
 कोन्दुं ओडिसियुं तेङ्क सूलद-होळे पडुव तवनसि बडगं बन्दगे मेरेयागे
 सान्तलिगे-सायिर-नाडुमुमनेकायत्तं माडि कन्दुकाचार्यनुं दान-
 विनोदनुं विक्रमसान्तरनुमेनिसिदम् । आतङ्गं बनवासियरसं काम-
 देवन मगळु लक्ष्मी-देविगं चागि-सान्तरं तनेयमादनातं चागिस-
 मुद्रमं माडिसिदन् । आतङ्गं (म्) आळवर नज्जयन मगळेज्जल-
 देविगं वीर-सान्तरं सुतनादन् । आतङ्गमदेयूर शान्ति-वर्मन सुते
 जाकल-देविगं कन्नर-सान्तरं तनूभवनादन् । आतनिं किरिय काव-
 देवङ्गं वीर-बयल्लनाथन मगळ् चन्दलदेविगं त्यागि-सान्तरनात्मजना-
 दन् । आतगं कदम्बर हरिवर्मनात्मजे नागल-देविगं नन्नि-सान्तरं
 तनूजनादम् । आतगं पलसिगे-नाडरिकेसरिय नन्दने सिरिया-देविगं
 राय-शान्तरं पुत्रनादन् । आतगमक्का-देविगं चिक्क-वीर-शान्तरं नन्दन
 नादन् । आतगं विज्जल-देविगं मम्मण-देवनात्मजनादन् । आतङ्गं
 होचल-देविगं मगळ् वीरवरसियुं मगं तैल्पदेवतुं पुट्टिदर ॥ आ-वीरल-
 देवि बङ्कियाळवरङ्गे महादेवियादल् । या-बङ्कियाळवरनिं किरिय माङ्ग-
 व्वरसियुं गङ्गवंश-तिलकं पालय-देवन सुते केळेयव्वरसियुं तैल्प-
 देवङ्गे वल्लभेयरादरल्लि मादेवि-केळयव्वरसिगे ।

वृ ॥ वर-लक्ष्मी-लक्ष्मणं सान्तर-कुल-तिळकं सूर्य-तेजःप्रभावं ।
 पर-नारी-दूरमावर्जित-गुण-निळयं वैरि-कालानलं मन्- ।
 दर-धैर्यं नीति-पारायणनमळ-लसत्-कीर्ति-मूर्त्ति-वितानम् ।
 धरेयं कायल् समर्थं सुरपति-विभवं पुष्टिदं वीर-देवम् ॥

क ॥ धुरदोळसि-लतेयनुच्चिदोड् ।
 अरि-नृप-युवतियर मुगुळ कङ्कणदा-कौल् ।
 तरतरदिनुच्चिदवु निज- ।
 कर-खड्गमवर्के कीले शान्तर-नृपति ॥

बीरुगन दोरेगे दोरे पेर ।
 आरुं बन्दपरे कृत-युगं त्रेता-द्वा- ।
 पार-कलि-युगदोळगण बी- ।
 ररुदारर् प्रतापिगळ् धर्म-परर् ॥
 आतननुजर् जगद्धि- ।
 ख्यातर् श्री-सिङ्गि-देवनुं रिपु-बळ-निर्- ।
 ग्घातनेने बर्म-देवनुम् ।
 आतत-कीर्त्ति-वितानरवनी-तळदोळ ॥

व ॥ अन्तेनिसिद वीर-देवङ्गे काडव-मादेवियेनिसिद चट्टल-देवियि
 किरिय वीरल-मादेविथं विवाहोत्सवदिं कूडेया-वीर-मादेवियु नोळम्ब
 नारसिंग-देवन सुते बिजल-देवियुमाळ्वर मगळचलदेवियु कुल-
 वधुगळवरोळगे वीर-महादेवियन्वय-क्रममदेन्तेने ॥ स्वस्ति समस्त-भुव-
 नाधीश्वरेक्ष्वाकु-कुल-गगन-गमस्तिमालिनीपराक्रमाक्रान्त-कन्याकुब्जा-
 धीश्वर-शिरो-विलम्ब-निशित-शिळीमुख पार्थिव-पार्थस् समर-केली-धनञ्जयो
 धनञ्जयः तद्-वल्लभा गान्धारी-देवी तत्सुतो हरिश्चन्द्रस्तदग्र-महिषी

रोहिणी-देवी तत्सुतौ राम-लक्ष्मणौ तौ दडिग-माधवापर-नामवेयौ
तदन्वयो गङ्गान्वयः ॥

कं ॥ माधवन जय-श्री-रा- ।
मा-धवन भुजावलेपमं वणिगसला- ।
माधवनु त्रि-भुवनदोलु- ।
माधवनुं नेरेयरुळिदवर् नेरेदपरे ॥
आ-नृपनप्रजनातन- ।
मानुष-शौर्यावलेप-मत्स्य-महीशृत्- ।
सेनेगे नेट्टने कौरव- ।
सेनेयनाटङ्कु बडिद दडिगं दडिग ॥

व ॥ आतन नन्दनं किरिय-माधवं माधन-पराक्रमनेनिसि नेगळे ॥
क ॥ तत्-तनयं हरिवर्म्मनु- ।
पात्त-नयं विष्णुगोपनातन सुतनु- ।
द्वृत्त-रिपु-नृपति-सैन्यो- ।
न्मत्त-द्विप-सिंहना-नृ-सिंहन तनयम् ॥

व ॥ अन्ततिवळ-पराक्रमं तडङ्गाल-माधवनातनात्मजर् ॥
क ॥ अविनीत-रिपु-बळाटविग् ।
अविनीतरमोधमेनिसि विस्मयमुग्रा- ।
हवदोळ-विनीतरेनिसिदर् ।
अवनियोळविनीत-दुर्व्विनीत-नरेन्द्र ॥

वसुधेगे रावण-प्रतिमनेम्ब नेगर्त्तेय काडुवेड्डियम् ।
विससन-रङ्गदोळ् पिडिदु तन्न तनूजेय पुत्रनं प्रति-
श्रिसि जयसिंह-वल्लभननन्वय-राज्यदोलुर्ब्वियोळ् विगुर-

विसिदनिदेनगुब्बों निज-दोर-बळदुबतिदुर्विनीतन ॥

व ॥ अन्तातनिं मुष्करनति-मुष्करनागि राज्यं गेव्ये तन्-नन्दनम् ॥

क ॥ ताविय तडि-बरेगं धर-

णी-वळयमनाब्दु बाहु-विक्रमदिम् ।

श्रीविक्रम-भूविक्रम-

भूवल्लभरधिक-कीर्ति-वल्लभरादर् ॥

व ॥ अन्तातननुज नृप-कामं गज-दाननं अर्थिगित्तुचागियेम्ब
पेसर पडेदनातन मम्मं श्रीपुरुषं श्रीवल्लभनेनिपन्वर्थ-नाममं ताब्दि
गज-शास्त्र-कर्तृवेनिसि ॥

वृ ॥ शात्रव-सङ्कुळ-प्रळय-भैरवनेम्ब यशं पोदब्दु लो-

क-त्रय-मध्यदोळ परेये बीरद कश्चिय काहुवेट्टियम् ।

चित्रविदं चिळदेयोळसुगोळे कादि तदीय-पल्लव-

च्छत्रमनिर्दुकोण्डु मेरेदं भुज-गर्व्वमना-महीभुज ॥

क ॥ आ-नृप-चूडामणि काञ्-

ची-नाथन कव्योळिर्दुकोण्डं गड पेस्-

म्मनिडियेम्बी-पेतरुमन् ।

एनेम्बुदो गङ्ग-नृपर शौर्योन्नतियम् ॥

व ॥ अन्तु वीरमार्त्तण्ड-देवनेनिसिदातन मगं शिवमार-देवं
सैगोड्डनेम्बेरडनेय पेसरं ताळिऽ सिवमार-मतमेन्दु गज-शास्त्रमं माडि
मत्तम् ॥

कं ॥ एवेळबुदो शिवमार-म-

ही-वळयाधिपन सुभग-कविता-गुणमं ।

भू-वळयदोळ गजाष्टक ।

मोवनिगेयुमोनके-वाडुमादुदे पेळु ॥

वृ ॥ विजयादित्य-नरेन्द्रनातननुजं तमन्दनं चागि भू- ।

भुजरोळ् मिक्केरेगङ्ग-नातन मगं श्री-राजमल्लं तदा- ।

त्मजनाते मरुळं तदीय-तनेयं श्री-बूतुंग तत्-सुतम् ।

विजिगीषुत्वमनाळदु निन्देरेयपं ताना-महेन्द्रान्तकम् ॥

क ॥ एनिप भुवनैकवीरन ।

तनयं नरसिंगनवने बीर-वेडेङ्गम् ।

मनुजपति राजमल्लाड्- ।

कनातर्नि किरियनवने कच्चेय-गङ्गम् ॥

व ॥ अन्तातङ्गनुजनुं सकळ-शास्त्रज्ञानुमेनिप बूदुग-वेम्मानडि
कृष्ण-राजङ्गे भावनेनिसि ॥

वृ ॥ तानिरदन्दु कोन्दपुदु मण्डलमं पेररोळ् समानमेम्ब ।

ई-नुडि वेड कोळकोडेगे बल्लहनातन सञ्चिवारदुद्- ।

दानिगे रायनापेडेगे चोळनिवर् दोरेयेन्दोडिन्न भू ।

तो न भविष्यमेन्नदवरारळवं जगदुत्तरङ्गन ॥

त्रि ॥ जाहवि साक्षी मध्याह्नार्क-सम-कोप- ।

वहि लल्लयन अळरे बूतगं राज्य- ।

चिह्नम-तदन्तुळिगङ्गे ॥

अकर ॥ बलवं पेळवडे धालियोळ् कोण्डना-चित्रकूटमुमेळुमाळवम- ।
तलेयं कोण्डना-रायतम्मनं दहळेयं कोण्डनन्तोन्दे मेय्योळ् पलवुं कलाळ-
नेल्लियुं निरिसिदं गङ्ग-मालवमेन्दु पेसरनिडुकलियपेळेन्दोडेयम्ब कलिय-
निन्तचलित-गङ्गनं पोल्वनावम् ॥

क ॥ रेवक निम्मडिगं वि- ।

व ॥ आतनिं किरिय वासव-महीमुजङ्ग त्रैलोक्यमल्लनेनिसिदाह-
वमल्लदेवन मावनप्यण रेवरसन ताप् सावि निम्मडियिं किरियकञ्चल-
देविगं पुट्टिद गोविन्दरदेव ॥

क ॥ निरवद्य-चरितनन्वय- ।

धुरन्धरं सत्यवाक्य निर्व्वर-गण्डम् ।

परचक्र-कर्कशं ग- ।

ण्डरमूकुति गण्ड-दल्लळं नृप-तिलकम् ॥

वृ ॥ वसुधालंकारनारोहकर मोगद कै बल्कणि ब्रह्मनुग्रा- ।

रि-समूहोत्साह-शक्ति-प्रलय-कर-करामीळ-खळ्ळं यशश्श्री-

प्रसर-प्रच्छन्न-दिङ्मण्डलनधिक-बळं गङ्ग-नारायणं २- ।

कस-गङ्गं गङ्ग-चूडामणि निरूप (नृप)-तिलकं वीर-मार्त्तण्डदेव ॥

क ॥ तळियं दाटुव करियम् ।

घळिलेने पिडिदुगिये निज-शिरं पेचकमम् ।

कळिदुदु करि-सिरमुरमम् ।

पळिलेने तागिदुदु कदन-कण्ठीरवन ॥

आतननुजं जगद्-वि- ।

ख्यातं कोमरङ्क-सीमनरुमुळि-देवम् ।

नीतिज्ञनधिक-तेजन- ।

राति-बळ-प्रलय-काळनाहव-धीरम् ॥

व ॥ अन्तातङ्गे कदम्ब-मयूरवर्मनात्मजे जाकल-देविगं पञ्चल-
देवङ्गम् पुट्टिद सान्तियब्बरसिगं गुडिय-दडिगेगे पट्टं गट्टि राज्यं
गेविसदनन्वयद बलवर्म्म-देवगं पुट्टिद-बल-देविगं सहस्रबाहु-प्रतापतुं

च ॥ आतनि विरिय बासव-महीभुजं मैलोवमलनेमितिहा-
वमल्लदेवन भावनप्यण रेवरसन तां सावि विम्वडिं विरियकाल-
देविगं पुष्टि गोविन्दरदेव ॥

क ॥ निरवच-चरितमन्वय- ।

धुरन्धरं सत्यवाक्य निर्वर-गण्डम् ।

परचक्र-कर्मशं ग- ।

ण्डरमूकति गण्ड-दल्लं नृप-तिलकम् ॥

व ॥ वसुधालंकारनारोहकर मोमद कै बल्कणि ब्रह्मनुग्रा- ।

रि-समूहोत्साह-शक्ति-प्रलय-कर-करामीळ-खळ्वां यशश्री-

प्रसर-प्रच्छन्न-दिङ्मण्डलनविक-बलं गङ्ग-नारायणं २- ।

अस-गङ्गं गङ्ग-चूडामणि विरूप (नृप)-तिलकं वीर-मार्चण्डदेव ॥

क ॥ तंछियं दाटुव करियम् ।

घल्लिलेने छिडिदुगिये निज-शिरं पेचकमम् ।

कळिदुदु करि-सिरमुरमम् ।

पळिलेने तागिदुदु कदन-कण्ठीरवन ॥

आतननुजं जगद्-वि- ।

ख्यातं कोमरङ्क-मीमन्नरुमुक्ति-देवम् ।

नीतिज्ञनविक-सेजन- ।

राति-बळ-प्रलय-काळनाहव-धीरम् ॥

व ॥ अन्तातङ्गे कदम्ब-मयूरवर्मनात्मजे जाकल-देविगं पञ्चल-
देवङ्गम् पुष्टिद सान्तियन्वरसिगं गुडिय-दडिगैर्गे घट्टं गट्टि राज्यं
गेप्सिदनन्वयद बलवर्म-देविगं पुष्टिद-बल-देविगं संहववाहु-अतापनु

मही-हय-वंशोद्भवन् ज्योतिष्मती-पुरवरेष्वरन् - मध्य-देशाधिपतियुं एनिसि-
दय्यण-चन्दरसङ्गं पुट्टिद गावब्बरसिगं अरुमुळि-देवङ्गम् ॥

क ॥ सरसतियुं सिरियुं दिन- ।

करन् पुट्टिद्वेम्बिनं चट्टलेयुम् ।

वर-वधु कञ्चलेयुं सत्- ।

पुरुषोत्तमनेनिप राज-विद्याधरनुम् ॥

पुट्टे तनगन्दु राज्यद ।

पट्टं कै-सार्हुदेन्दु रक्स-गङ्गम् ।

निट्टिसि तन्नरमनेयोळ् ।

नेट्टेने तन्दिरिसिदं महोत्सवदिन्दम् ॥

व ॥ अन्तु सुखदिं बळेयुत्तिर्द कन्या-रत्नङ्गळिर्व्वरिं पिरिय-चट्टल-
देवियं तोण्डे-नाडु नाल्वत्तेण्णसिरक्कधिपतियुं कञ्ची-नाथनुवीश्वर-वर-
प्रसादनुं वृषभ-न्नाञ्जननुमेनिसिद काडुवेट्टिगे रक्स-गङ्ग-पेम्मानडि
विवाहोत्सवमं माडि चट्टल-देविगे काडव-महादेवि-वट्टमं कट्टि सुखदि
निरिसिदन् । आ-वीर-देवङ्गं कञ्चल-देवियेनिसियुं वेरडनेय पेसरं
ताळ्दिद वीर-महादेविगम् ॥

क ॥ दसरथन तनयरन्दमन् ।

एसेदिरे पोळ्तिर्द तैलनुं गोण्णिगनुम् ।

कुसुमाखनेनिसिदोडुग- ।

वसुधेसनुमन्तु बम्मन्तुं तनयरवर् ॥

पुट्टलोडमात्म-गृहदोळ् ।

पुट्टिदुदैश्वर्य्यमोळ्पुमाप्पु कूर्पुम् ।

नेइनरि-नृपर गृहदोळ ।

पुट्टिदुवुत्पात-भीति चेतो-विकळम् ॥

व ॥ अन्ता-कुमार सुखदि बळेयुत्तिरे यवरोळप्रजं तैलप-देव-
नसहायसिंहेनेनिसियुं तन्न बाहा-बळमे चतुरङ्ग-बळभागे दायिगरुमनाट-
विकरुमं राज्य-कष्टकरुमं निःकष्टकं माडि तन्न दोर्वेळ-विक्रमदि सान्तर-
वट्टमनवट्टिस भुजबळ-शान्तरनेनिसि सुखदि राज्यं गेय्द ॥

भुजबळ-शान्तर-नृपतिथ ।

भुजबळदळुं प्रतापमुं शौर्यतेयुम् ।

विजिगीषु-वृत्तियुं निज- ।

विजयमुमी-लोकदोळगे भुम्भुकमेनिकुम् ॥

अन्तातननुज गोविन्दर-देवम् ॥

गोविन्दरन पराक्रमम् ।

आवगमवु तन्नोळेय्दे तोरिरे धरेयं ।

काव पर-नृपरनळकरे ।

सोव महा-गुणमे तनगे निज-गुणमेनिकुम् ॥

वृ ॥ देव समुद्र-मुद्रित-वसुन्धरेयोळ नृपरादरेल्लरम् ।

भाविसि कण्डेनान्त रिपु-सन्ततियं नेलेगोडु पोपिनम् ।

सोव बुधाळिगार्त्तु पिरिदीव शरण्-बुगे काव सद्-गुणक् ।

आवनो निन्नवोल् नेरेद मण्डल्लिकर् कलि-नभि-शान्तर ॥

पिरिदेत्तं मेरुगं सागरमे जगदोळा-मेरुगं सागरक्कम् ।

धरणी-चक्रं करं भाविसुवडे पिरिदा-मेरुगं सागरक्कम् ।

धरणी-चक्रक्कमाशालिये कडुविरिदा-मेरुगं सागरक्कम् ।

धरणी-चक्रक्कमाशालिगमेले पिरियं शान्तरादित्य-देव ॥

ख्यातियनेनं पेळ्बुदो ।
 वृतुग-वेम्माडि पडेद महिमोन्नतियम् ।
 भूतळदोळ् शान्तरनुप- ।
 मातीतं चक्रि कुडल पडेदनमोघ ॥
 अर्द्ध-पथमिदिर्गे वोन्दु तद्
 अर्द्धासनमेनिप लोह-विष्टरदोळ् सम्- ।
 वर्द्धित-शान्तरनेनिप ध- ।
 नुद्धरनं चक्रवर्त्ति निलिसिदनेसेयल् ॥

व ॥ इन्तेनिसिदुन्नतियं ताळ्दि तन्न मण्डळदोळगण राज्य-कण्टकरं
 निष्कण्टकं माडि तनगे नन्निये निज-गुणमण्य कारणदि नन्नि-शान्तरने-
 म्ब पड्डमं ताळ्दि पळ-कालदि परायत्तमाद भूमियं स्वायत्तं माडि जग-
 देक-दानियेनिसि लोकदर्थि-जनके पिरिदन्ति सम्यक्त्व-रत्नाकरनुं
 जिन-पादाराधकनुमेनिसियुमेल्ला-समयगळं स्व-धर्मदि नडयिसुतुं परा-
 ज्ञना-सहोदरनेनिसि वीरदोळं वितरणदोळं धर्मदोळं शौचदोळं लोकदोळ्
 पेरिल्लेनिसि नडेदु बन्धु-जनमुमं स्व-देशमुमं रक्षिसि चङ्गुल-देवियुं
 कुमारर ओद्दमरसनं बर्म-देवनं तामु पोम्बुर्चदोळ् सुखदि राज्यं
 गेय्युत्तमिर्द्ध धर्मं प्रागेव चिन्तेदम्ब वाक्यार्थमुमं भाविसियरुमुळि-देवन्नं
 गावम्बरसिंगं वीरल-देविगं राजादित्य-देवन्नं परोक्ष-विनयमं माडले-
 न्दुर्व्वी-तिलकमेनिसिद पञ्च-वसदियं मार्प्युद्योगमनेतिकोण्डु ॥

कं ॥ 'श्रीविजय-देवरुद्र-त- ।

पो-विभवद् गुरुगळखिळ-शास्त्रागम-सं- ।

भावितरेनिसल् चङ्गुल- ।

देविये कृत-पुण्यवन्ते विश्वम्भरेयोळ् ॥

वृ ॥ जनकं रक्षस-गङ्ग-भूमिपति काञ्चीनाथनात्म-प्रियम्
 विनुतर् श्री-विजयर् सुशिक्षकरेनल् विद्विष्ट-भूपाळ-सं ।
 हण-विक्रान्त-यशो-विलास-भुज-खड्गोह्लासि तां गोमि-
 नन्दनना-चट्टल-देविगेन्दोडे यशश्रीगिन्तु मुन्नोन्तरार् ॥

क ॥ केरे भावि बसदि देगुलम् ।
 अरवण्टगे तीर्थं शत्रुमारवे-मोदलाग् ।
 अरिकेय धर्मादिगळम् ।
 नेरे माडिसि नोन्तलेसेके चट्टल-देवि ॥
 उत्तुंग-प्रासादमन् ।
 उत्तर-मधुरेशनष्प गोमिय ताय् लो- ।
 कोत्तरमेने माडिसिदल् ।
 वित्तरदि पञ्च-कूट-जिन-मन्दिरमम् ॥
 देसेयागसमेम्बेरडुमन् ।
 असदळमेय्दिईवेम्बिनं पोस-गेरेयम् ।

बसदियुमं माडिसि तन् ।
 एसमं शान्तरन ताय् निमिर्चिदळेत्त ॥

वृ ॥ इन्तु समस्त-दान-गुणदुन्नतिगं पेररारो मुन्नमेम् ।
 नोन्तवरेम्बिनं नेगर्द चट्टल-देवि चतुस्-समुद्र-प- ।
 र्थन्तमनेक-विप्र-मुनि-सन्ततिगन्न-हिरण्य-वस्त्रमम् ।
 सन्ततमित्तु शान्तरन ताय् पडेदळ् पिरिदप्प कीर्त्तिय ॥

व ॥ अन्तु पोगर्तेगं नेगर्तेगं नेलेयेनिसि चट्टल-देवियु नन्नि-शान्तरनु
 बोडेय-देवर गुड्डगळप्प-कारणदि श्रीमत-तियङ्गुडिय निडुम्बरे-ती-
 र्थदरुङ्गळान्वयद सम्बन्धद नन्दिगणाधीश्वररेनिसिद श्रीविजय-भ-

झारकर नामोच्चारणदिं शुभ-करण-तिथि-मुहूर्तदलवर शिष्यर श्रेयांस-
पण्डितरुर्वी-तिळकमेनिसिद पञ्च-वसदिगुन्नतमण्डेयल् करुवेनसे केसर्क-
ल्लिकिदरवराचार्यावल्लियदेन्तेने । श्री-वर्द्धमान-स्वामिगळ तीर्थ प्रवर्त्तिसे
गौतमर् गगन(ण)धररेने त्रि-ज्ञानिगळप्प मुनिगळ सले यवरीं चतुरङ्कुळ-
ऋद्धि-प्राप्तेरेनिसिद कोण्डकुन्दाचार्यरिं केलव-कालं पोगे भद्रबाहु-
स्वामिगळिन्दित्त कलिकाल-वर्त्तनेयें गण-मेदै पुट्टिदुदवर अन्वय-क्रमदिं
कलि-कालगणधरं शास्त्र-कर्तुगळुमेनिसिद समन्तभद्र-स्वामिगळवर
शिष्य-सन्तानं शिवकोट्याचार्यरवरिं वरदत्ताचार्यरवरिं तत्त्वार्थ-
सूत्रकर्तुगळेनिसिदाय्य-देवरवरिं गङ्ग-राज्यमं माडिद सिंहनन्दा-
चार्यरवरिन्देकसन्धि-सुमति-भट्टारकरवरिम् ।

वृ ॥ राजन् बुद्धोप्यबुद्धस्सुरगुरुरगुरुः पूरणोऽपूरणेच्छः

स्थाणुः स्थाणुस्त्वजोजोर्विरविरळधुर्माधवो माधवस्तु ।

व्यासोप्यव्यास-युक्तः कणभुगकणभुग् वागवागेव देवी

स्याद्वादामोघ-जिह्वे मयि विशति सति मण्डपं वादिसिंहे ॥

व ॥ एनिसिदकलङ्क-देवरवरिं वज्रणन्दाचार्यरवरिं पूज्यपाद-
स्वामिगळवरिं श्रीपाल-भट्टारकरवरिं अभिनन्दनाचार्यरवरिं कवि-
परमेष्ठिस्वामिगळवरिं त्रैविद्यदेवरवरिनकळङ्क-सूत्रके वृत्तियं बरेदनन्त-
वीर्य भट्टारकरवरिं कुमारसेन-देवरवरिं मौनि-देवरवरिं विमलचन्द्र-
भट्टारकरवरशिष्यर ॥

क ॥ आदित्यन केलदोल् चन्- ।

द्रोदयमेसेयदवोली-धरा-मण्डलदोल् ।

वादिगळेम्बी-रुण्टुक- ।

वाडिगळेसेदपरे वादिराजन केलदोल् ॥

व ॥ अन्तेनिसि राय-राचमल्ल-देवङ्गे गुरुगळेनिसिद कनकसेन-
भट्टारकरवर शिष्यर् शब्दानुशासनके प्रक्रियेयेन्दु रूपसिद्धियं माडिद
दयापालदेवरं पुष्पपेण-सिद्धान्त-देवरुम् ॥

वृ ॥ अल्लवे दिग्-दन्ति-दन्तं वरमेसेदुदु सद्-गद्य-पद्योक्तिविद्या-
बलवे सर्वज्ञ-कल्पं बिरुदनुविबुदिन्नन्य-वादीन्द्रनिं चा-
वळिसल् वेडोहो पन्नं गुडदिरेदळळिर् बेन्द्रपं पेळ्ळोडिन्निन् ।
अळवळं वादिराजं पर-मत-कुम्भत् आभीळ-वाग्-वज्र-पातम् ॥

व ॥ इन्तेनिसिद पट्-तर्क-षण्मुखनुं जंगदेकमल्ल-वादियुमेनिसिद
वादिराज-देवरं ॥ रक्कस-गङ्ग-पेम्मनडिगळ चङ्गल-देविय बीरदेवन
ननि-शान्तरन गुरुगळेनिसिद ॥

व ॥ यद्विद्या-तपसोः प्रशस्तमुभयं श्री-हेमसेने मुनौ
प्रा.....चिराभियोग-विधिना नीतं परामुन्नतिम् ।
प्रायश्चरीविजयेश्च-देव सकलं तत्त्वाधिकायां स्थिते
संक्रान्ते कथमन्यथा.....दृक् तपः ॥
शास्त्रं बुधानामुपसेव्....
यं दातुकामं यत एव दाता ।
ततोपि हि श्रीविजयेति-नाम्ना
पारेण वा पण्डित-पारिजातः ॥

व ॥ एनिसिद श्री-विजय-भट्टारकरुमवर शिष्यर् चोळ्ळ.....
शान्तादेवर गुणसेन-देवर दयापाल-देवर कमलभद्र-देवरजितसे-
नपण्डित-देवर श्रेयांस-पण्डितरन्तवरायुर्ब्बी-तिळकमेनिसिद पञ्चकूट-
वसदिय शक्र-वर्ष ९१९ नेय पिङ्गळ-संवत्सरद जेष्ठ शुद्ध-बिदिगे-
बृहस्पतिवारदन्दु प्रतिष्ठेयं माडिया-वसदिय खण्डस्फुटित-जीर्णोद्धारण-

कमलिर्द्ध ऋषि-समुदायदाहार-दानकं पूजा-विधानकमागे नञ्जि-सान्तर-
देवनुमोहमरसतुं बम्म-देवतुं चट्टल-देवियुमाचार्य्यर कमळ-
मद्र-देवर कालं कर्द्धि धारा-पूर्वकमासम्बन्धिय समुदाय-मुख्यमागे
माडि कोट्ट प्रा..... (यहाँ दान और सीमानोंकी विस्तृत चर्चा है ।)

[जिन-शासनकी प्रशंसा । (उक्त मितिको), जब (हमेशाके चालुक्य पदों सहित) त्रिभुवनमल्लदेवका राज्य सब ओर प्रवर्द्धमान था—
तत्पावपशोपजीवी, महामण्डलेश्वर, उत्तर-मधुराजीश्वर, पट्टिपोम्बुर्च-पुर-
वरेश्वर, महोदय-वंशललाम, जिसने पद्मावती-देवीके प्रसादसे 'तुलापुरुष,'
'महादान,' और 'हिरण्यगर्भ' ये तीन दान पूरे किये थे, सान्तर-कुल-कुमु-
दिनीके लिये प्रदीप्त किरणोंवाला चन्द्रमा, जिनपादाराधक, सान्तरादित्य,
नीतिशास्त्रज्ञ,—महामण्डलेश्वर नञ्जि-सान्तर-देव था । इसकी प्रशंसा ।
नञ्जि-सान्तर-देवकी वंश-परम्परा इसप्रकार थी:—

उत्तर-मधुराका अधीश, उग्र-वंशोत्पन्न राह राजा था, जो [महा]
भारतके युद्धमें कुरुक्षेत्रमें लड़ा था और जीतनेपर जिसे नारायणने प्रसन्न
होकर एक शंख और वानर-ध्वज दिया था । इसके बाद बहुत-से राजा
हुए, उन सबके बाद,—एक सहकार नामका राजा हुआ, जो अन्तमें नर-
मांस-भक्षी हो गया । उससे और श्रियादेवीसे जिनदत्त उत्पन्न हुआ, जो
अपने पिताके आचरणसे ग्लानि-प्राप्त होकर दक्षिणमें आया और जिसके
सिंहस्थ नामके असुरके मारनेसे जङ्कियब्बे (देवी) प्रसन्न हुई और प्रसन्न
होकर उसने उसे सिंहका लाम्छन (मुद्रा) दिया । अन्धकासुर नामके
असुरको मारनेसे उसने अन्धासुर नामका नगर बसाया । कनकपुरमें आकर
उसने कनकासुरका वध किया; तथा कुन्दके किलेमें रहनेवाले कर और
करदूषणके भगा देनेसे पद्मावती देवी प्रसन्न हुई और प्रसन्न होकर उसने
वहाँ कनकपुरमें, जो कि पोम्बुर्च (हुमच) का ही नामान्तर है, एक
'लोक' वृक्षपर वास करना शुरू किया तथा लोकियब्बेका नाम धारणकर
उसके लिये एक राजधानीके रूपमें शहर बसा दिया । जिनदत्त तथा दूसरे
और भी राजाओंके राज्य करनेके बाद श्रीकेसि और जयकेसि हुए । श्रीकेसि

और उसकी रानीसे रणकेशी पुत्र उत्पन्न हुआ। इसके बाद अनेकोंके शासन करनेके बाद हिरण्यगर्भ हुआ, जिसने 'महादान' नामका दान किया और जिसने सान्तलिगे-हजार-नाइका एक सिद्ध राज्य स्थापित किया,—इससे वह कन्दुकाचार्य, दान-विनोद, विक्रम-सान्तर, इन तीन नामोंसे प्रसिद्ध हुआ। उस और लक्ष्मीदेवीसे चागि-सान्तर उत्पन्न हुआ, जिसने चागि-समुद्रका निर्माण कराया। उस और जाकल-देवीसे कञ्जर-सान्तर उत्पन्न हुआ। उसके छोटे भाई काव-देव और चन्दल देवीसे त्यागिसान्तरने जन्म लिया। उस और नागल-देवीसे नखि-सान्तरका जन्म हुआ। उस और सिरिया-देवीसे राय-सान्तरने जन्म धारण किया। उस और अक्का-देवीका पुत्र चिक्क-वीर-सान्तर हुआ। उस और विज्जलदेवीका पुत्र अम्मण-देव हुआ। उस और होचल-देवीसे एक पुत्री वीरवरसि तथा एक पुत्र तैलप-देव हुआ। वह वीरल-देवी बङ्गियाळवकी रानी हो गई। उस बङ्गियाळवकी छोटी बहिन माङ्गळवरसि, और गङ्गवंशललाम पाळय-देवकी पुत्री केलय-वरसि तैलपदेवकी पत्नियाँ हो गईं। इनमेंसे, मादेवि केलयवरसिके वीर-देव उत्पन्न हुआ। उसकी प्रशंसा। उसके छोटे भाई विश्व-विख्यात सिङ्गि-देव और वर्म्म-देव थे। उस वीरदेवसे जब काडवकी रानी चट्टल-देवीकी छोटी बहिन वीरल-मादेवीसे विवाह हो गया, तब उसके वीर-मादेवी, विज्जल-देवी और अचल-देवी ये तीन स्त्रियाँ और थीं। इनमेंसे, वीर-महा-देवीकी उत्पत्तिका वर्णन करते हैं।

इक्ष्वाकु कुलके सूर्य, कान्यकुब्ज (कन्नौज) के अधीश्वर धनञ्जय नामके राजा थे, जिनकी पत्नी गान्धारी-देवी थी। उनका पुत्र हरिश्चन्द्र हुआ, जिनकी ज्येष्ठ रानी रोहिणी देवी थी। उनके दो पुत्र राम और लक्ष्मण थे, जिनके अपर नाम दक्षिण और माधव थे। उनका वंश गङ्ग-वंश था। माधवकी प्रशंसा। उसके बड़े भाई दक्षिणकी प्रशंसा। माधवका पुत्र किरिय-माधव;

उसका	पुत्र	हरिवर्म्म;
"	"	विष्णुगोष;
"	"	तङ्गाळमाधव;

”	”	अविनीत;
”	”	दुर्विनीत;
”	”	मुष्कर
”	”	श्रीविक्रम
”	”	भूविक्रम

उसका छोटा भाई राजा काम (या नृप-कम्म) था जिसने एक अर्थी (याचक) को गजका दान दिया था और इस कारणसे ‘चागि’का नाम प्राप्त किया था ।

उस नृप-कामका प्रपौत्र श्रीपुरुष था, इसका ‘श्रीवल्लभ’ अन्वर्थक नाम प्रसिद्ध था तथा यह गज-शासकका प्रणेता था । इसने विलर्दे (या चिवर्दे) की लड़ाईमें काञ्चीके युद्धप्रिय राजा काडुवेट्टिसे उसका पल्लव-छत्र छीन लिया था तथा उसके हाथसे ‘वेर्मानडि’ का नाम भी छीन लिया था । तब उसका पुत्र शिवमार-देव (सैगोट्ट) हुआ, वह वीरमार्तण्ड-देव नामसे भी प्रसिद्ध था । उसने ‘शिवमारमत’ नामसे एक गज-शासकका भी प्रणयन किया था । राजा विजयादित्य उसका छोटा भाई था । उसका पुत्र एरेयङ्ग था । उसका पुत्र राजमल्ल; उसका पुत्र मरुल्ल; उसका पुत्र बूतुग; उसका पुत्र एरेयप; उसका पुत्र नरसिंग; उसके तीन नाम और भी प्रसिद्ध थे— वीर वेडेग, मनुजपति तथा राजमल्ल । उसका (नरसिंगका) छोटा भाई कञ्जिय-गङ्ग था । उसका छोटा भाई बूतुग-वेर्मानडि था । यह कृष्ण-राजाकी बहिनका पति था । उसके पराक्रमकी प्रशंसा । इसका ज्येष्ठ पुत्र मरुल्ल-देव था । उसका छोटा भाई मारसिंह देव था । इसका छोटा भाई राजमल्ल देव था, जिसे नोलम्बकुलान्तक, पल्लव-मल्ल, और गुत्तिय-गङ्ग भी कहते थे । इसकी प्रशंसा । उसका छोटा भाई नीति-मार्ग था । उसके छोटे भाई राजा वासव और कञ्जल-देवीसे गोविन्दर-देव उत्पन्न हुआ था । उसके पराक्रमकी प्रशंसा । उसका छोटा भाई अरुमुळि-देव था ।

अरुमुळि-देव और गावम्बरसिसे चट्टल, कञ्जल और राजविद्याधर उत्पन्न हुए थे । इनमेंसे चट्टल-देवी की शादी काडुवेट्टिसे,—जो तोण्डे-नाड् ४८००० का शासक तथा काञ्चीका अधिपति था—कर दी थी । कञ्जल

देवी, (जिसका दूसरा नाम वीर-महादेवी था) और वीर-देवसे ये पुत्र उत्पन्न हुए—तैल, गोगिग, राजा ओङ्गुग, और बर्म ।

इनमेंसे ज्येष्ठ पुत्र तैलप-देवने अपने भुज-बलसे शान्तरका मुकुट प्राप्त किया और भुजबल शान्तरके नामसे शान्तिसे राज्य किया । उसका नाम सर्वत्र प्रसिद्ध हो गया था । उसका छोटा भाई गोविन्दर-देव था । इसका अपर-नाम नञ्जि-शान्तर था । नञ्जि-शान्तरके नामसे ही इसने मुकुट धारण किया था । वह जिन-पादाराधक था, तथा चट्टल-देवि और राजकुमार ओङ्गुरस और बर्म देवके साथ शान्तिसे राज्य करता हुआ पोम्बुर्बर्म था ।

चट्टल-देवीने अरुमुलि-देव, गावम्बरसि, वीरल देवी और राजादित्य-देव-की स्वर्गयात्राके स्मारकके उपलक्ष्यमें उर्वी-तिलक नामसे प्रसिद्ध पञ्चवस-दिके बनानेका काम अपने हाथमें लिया ।

सर्व शास्त्रों और आगमोंमें पारङ्गत होनेसे सम्मानित, तपस्वी श्रीवि-जय-देव चट्टल-देवीके गुरु थे । उसका पिता राजा रक्तसंग था । काञ्ची-अधिपति (काडुवेट्टि) उसका पति था । गोगि उसका पुत्र था । तालाब, कुआँ, वसदि, मन्दिर, नाली, पवित्र स्नानागार, श (स) त्र, कुअ इत्यादि प्रसिद्ध धर्म एवं पुण्यके कार्योंको चट्टल-देवीने सम्पन्न किया था ।

उत्तर-मथुराके अधिपति गोगिकी माँने बहुत उत्सुकतासे दुनियामें अग्रगण्य स्थान प्राप्त करनेवाले पञ्चकूट जिनमन्दिरको बनवाया । क्षितिज और आकाश दोनोंसे बात करनेवाले ऐसे एक नये तालाब और मन्दिरका उसने निर्माण किया । इस तरह शान्तरकी माँ प्रसिद्ध चट्टलदेवीने बहुत यश प्राप्त किया ।

श्रीविजय-भट्टारक तियङ्गुचिके निदुम्बरे-तीर्थके अरुङ्गलान्वयके नन्दि-गणके अध्यक्ष थे । इनके गृहस्थ-शिष्य चट्टल-देवी और नञ्जि शान्तर थे । किसी शुभदिन, उनके शिष्य श्रेयान्सपण्डितने पञ्च-वसदिके नींवका पत्थर डाला ।

श्रेयांसके आचार्योंकी परम्पराका वर्णनः—वर्द्धमान-स्वामीके तीर्थमें त्रिकालश गौतम-गणधर हुए । उनके बाद कोण्डकुन्दाचार्य हुए, जो जमीनसे चार इञ्च ऊँचे चलते थे । कुछ समय बाद भद्रबाहु-स्वामी हुए, जिनके

बाद कलि-कालका अवतार (उत्पत्ति) हुआ और विभिन्न गणोंकी उत्पत्ति हुई ।

उनमेंसे कलिकालगणधर, शास्त्र-प्रणेता समन्तभद्र-स्वामी हुए । उनकी शिष्य-परम्परामें शिवकोट्याचार्य हुए; उनके बाद वरदत्ताचार्य; उनके बाद तत्त्वार्थसूत्रके प्रणेता आचार्य-देव; उनके बाद सिंहनन्दाचार्य जो गङ्गा-राज्यके स्थापक थे । उनके बाद एकसन्धि सुमति-भट्टारक हुए । इसके बाद अकलङ्क-देव (वादिसिंह) हुए । पुनः क्रमशः वज्रनन्दाचार्य, पूज्यपाद-स्वामी, श्रीपाल-भट्टारक; पुनः अभिनन्दनाचार्य; कवि परमेश्वर-स्वामी; त्रैविद्य देव; अनन्तवीर्य भट्टारक, जिन्होंने अकलङ्क-सूत्रकी वृत्ति लिखी थी । इनके बाद कुमारसेन-देव; उनके बाद मौनि देव; उनके बाद विमलचन्द्र-भट्टारक; उनके शिष्य कनकसेन-भट्टारक थे जो राजा राजमल्लके गुरु थे । उनके शिष्य थे दयापाल जिन्होंने 'शब्दानुशासन' की 'प्रक्रिया' रूप-सिद्धि लिखी है—तथा पुष्पसेन-सिद्धान्त-देव । वादिराज-देव 'षट्-तर्क-षण्मुख,' 'जगदेकमल्ल-वादी' थे । श्रीविजय-देव रक्तस-गङ्गा-पेरम्वान्ति, चट्टल-देवि, बीर-देव तथा नक्षि-शान्तरके गुरु थे । विद्वानोंको ये शास्त्र देते थे तथा जो शास्त्रका महत्त्व नहीं समझते थे उन्हें उनका महत्त्व समझाते थे, इसी कारणसे उनका नाम श्रीविजय था तथा उन्हें 'पण्डित-पारिजात' भी कहते थे ।

उपर्युक्त श्रीविजय-भट्टारक और उनके शिष्य चोल्लट..., शान्त-देव, गुणसेन-देव, दयापाल-देव, कमलभद्र देव, अजितसेन-पण्डित-देव तथा श्रेयान्स-पण्डित-देव । इनने (उक्त मितिको) उर्वी-तिलक नामसे प्रसिद्ध पञ्चकूट-बसदिकी स्थापना की । बसदिकी मरम्मत, ऋषि-वर्गके आहार तथा पूजाके प्रबन्धके लिये, नक्षि-शान्तरदेव, ओङ्कुरस, बम्म-देव, तथा चट्टल-देवीने,—आचार्य कमलभद्र-देवके पाद-प्रक्षालन-पूर्वक (उक्त) गौं दिये ।

शेष भाग बहुत बिसा हुआ है ।]

२१४

हुम्मच—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक ९९९=१०७७ ई०]

[हुम्मचमें, तोरण-बागिलके दक्षिणी खम्भेपर]

(पूर्वमुख) श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

('झस्ति' से लेकर पाँचवी पंक्तिके 'महा-मण्डलेश्वर' तक का लेख पूर्वके क्षि० ले० नं० २१३ की पंक्ति १ से ६ तक से मिलता है ।)

एलगे चेन्नने बीरुगं वपुविनि भावोद्भवं तक्कनेन्त् ।

एलगे बीरने बीरुगं विरुदिनि मीमोपमं बाप्पु मत्त् ।

एलगे दानिये बीरुगं पिरियना-कर्णाख्यनिन्दक्कुमेन्त् ।

एलगे बीरल-देवि नोन्तळवनोळ् कूडिर्प्प सौभाग्यमम् ॥

अन्तेनिसिद् बीर-शान्तर-देवगं बीरल-महादेविगं ॥

दशरथन तनेयरन्दमन् ।

एशेदिरे पोत्तिर्द तैलुनु गोगिगगनुम् ।

कुसुमाखनेनिसु वोडुग-

वसुघेशनुमन्तु बोम्मनु तनयरदाइ ॥

अवरोळप्रजनराति-सैन्य-शोषण-बाडवानळनुमाश्रित-कल्प-वृक्षनु-
मेनिसि परायत्तमाद देशमं तनगेकायत्तं माडि सान्तर-वट्टमं ताळ्दि ।

निज-भुज-बळदिन्दरि-भू- ।

भुजरं कोन्दोत्तिकोण्डु देशमनन्ता- ।

विजिगीषु तैल-भूपम् ।

भुजबळ-शान्तरनेनिष्प पेसरं पडेदम् ॥

आतननुजं गोविन्दर-देवननेक-राज्य-कण्टकरं निष्कण्टकं माडि

सम्यक्त्व-चूडामणियुं जगदेक-दानियुं एनिसि सान्तळिगे-सायिरमुमनेक-
छत्र-च्छायेयिन्दमाळ्दु नन्नि-सान्तरनेम्बेरडनेय पेसरं पडेदम् ॥

(दक्षिणमुख) ख्यातियनेनं पेळ्बुदो ।

बूतुग-पेम्माडि पडेद महिमोन्नतियम् ।

भूतळदोळ् शान्तरनुप- ।

मातीतं चक्रि कुडल् पडेदनमोत्र ॥

अर्द्ध-पथमिदिर्गे वन्दु त- ।

दर्द्धासनमेनिप लोह-विष्ठरदोळ् सं- ।

वर्द्धित-सान्तरनेनिप ध- ।

नुर्द्धरनं चक्रवर्त्ति निलिसिदनेसेयल् ॥

अन्तातन तम्मनोडुगनशेष-धरा-वळयमं कर-वळयमं ताळ्दुवन्ते
लीलेयिं ताळ्दि विक्रम-सान्तरनेम्ब पेसरं पडेद ॥

खस्ति श्री-लसदुभ्र-वंश-तिलकः श्री-वीर-देवात्मजः

दृष्यद्-वैरि-निकाय-दर्प-दलन-प्रादुर्भवद्-विक्रमः ।

सम्पूर्णैन्दु-करावदात-सु-यशो-व्यालिप्त-दिक्-भित्तिकः

श्रीमान् विक्रम-शान्तरो विजयते लक्ष्मी-वधू-वल्लभः ॥

आतननुज ॥

पर-नरप-शिरः-कुञ्जो- ।

त्कर-करि-कमळा-पयोधर-द्वय-हारम् ।

स्मर-मूर्ति निखिल-दिग्-मुख- ।

परिचुम्बित-कीर्ति बर्म्म-देव कुमार ॥

अन्तेनिसिदवर तायि ॥

जनकं रक्स-गङ्ग-भूमिपति काञ्ची-नाथनात्म-प्रियम् ।

विनुत् श्रीविजय सु-सि (शि) क्षकरेनल् विद्विष्ट-भूपाळसं-
हन-विक्रान्त-यशो-विळास-भुज-खळ्गोळासि तां गोगि नन्- ।
दनना-चट्टल-देविगेन्दोडे यशश्रीगिन्तु मुन्नोन्तरार ॥

अन्तु समस्त-गुण-सन्दोहकं धर्मकं जन्म-भूमियेनिसिद चट्टल-देविं
भुजबळ-शान्तर-देवनं नभि-शान्तर-देवनं विक्रम-शान्तर-देवनं
वर्म-देवनं पोम्बुर्चदोळ सुखदिं राज्यं गेय्युत्तमिहुं धर्मं प्रागेव
चिन्तेदेम्ब वाक्यार्थमं भाविसि तमगे श्रेयो-निबन्धनार्थं उर्वी-तिलक-
मेनिसिद पञ्च-वसदियं मार्षुयोगमनेत्ति कोण्डु तामेळर मोडेयदेवर गुड
गळप्प कारणदिन्द द्रविळ-संधद नन्दि-गणदरुङ्गुळान्वयद श्रीविजय-
देवर नामोच्चारणं गेय्दवर शिष्यर श्रेयान्स-पण्डितरिन्दुर्वी-तिलक-
मेनिसिद पञ्च-वसदिगे सु(शु)भ-मुहूर्तदोळाचन्द्रार्क-स्थायियप्पन्तुन्नत-
मप्येडेयोळ केसर्कल्लिकिसिदर अवराचार्यावल्लियेन्तेने । श्री-वर्द्धमान-
स्वामिगळ तीर्थं प्रवर्त्तिसे सप्तर्द्धिसम्पन्नरप्प गौतमर् गगणधररेने
त्रिज्ञानिगळप्प मुनिगळ पलंबरं सले अवरिं चतुरङ्गुळ-ऋद्धि-प्राप्तरेनिसिद
कोण्डकुन्दाचार्यरं श्रुतकेवळिगळेनिसिद भद्रबाहुस्वामिगळ मोद-
लागि पलम्बराचार्यर् पोदिम्बळियं समन्तभद्र-स्वामिगळुदयिसिदरवर-
न्वयदोळ गङ्ग-राज्यमं माडिद सिंहनन्दाचार्यरवरिं अकलङ्कदेवरवरिं
रायराचमल्लन गुरुगळप्प वादिराज-देवरेनिसिद कनकसेन-देवरुमवर-
शिष्यरोडेय-देवरं रूपसिद्धियं माडिद दयापाळदेवरं पुष्पसेन-
सिद्धान्त-देवरं पट्-तर्क-षण्मुखरं जगदेकमल्ल-वादियुमेनिसिद वादि-
राजदेवरवरिं कमळभद्र-देवरवरिम्

एकात्यः चतुराननो गणपतिर्ब्रह्माननो भारती
न स्त्री सर्व्व-कलाधरोऽशशधरः कामान्तको नेश्वरः ।

विद्यानां परिनिष्ठित-क्षिति-तलं तन्मूळमाळम्बनम्

चित्ते तेऽजितसेन-देव विदुषां वृत्तं विचित्रीयते ॥

अन्तेनिसिद शब्द-चतुर्मुखं तार्किक-चक्रवर्त्तियुं वादीभसिंह-
नुमेनिसिदजितसेन-देवर सह-धर्मिगल्ल

दुरित-कुळ-ग्रध्वंसं ।

स्मर-माद्यत्-कुम्भि-कुम्भदलन-मृगेन्द्रम् ।

वर-वाग्-वनिता-कान्तम् ।

धरेयोळ् नेगर्ही-कुमारसेन-देव-मुनीन्द्रम् ॥

अन्तेनिसिद कुमारसेन-देवरिं वैद्य-गज-केसरियेनिसिद श्रेयान्स-देव-
रन्तवरायुर्वी-तिळकमेनिसिद पञ्च-वसदियना- शक्र-वर्षद१९९नेय
पिङ्गळ-संवत्सरद ज्येष्ठ-शुद्ध-विदिगे-बृहस्पतिवारदन्दु प्रतिष्ठेयं
माडिया-वसदिय खण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धारणकमल्लिह ऋषि-समुदाय-
दाहार-दानकं पूजा-विधानकमागे समस्त-गुण-मणि-गणविराजमाने-
यरप्प श्रीमतु-चट्टल-देवियरुमन्तु तम्मं नाल्वरुमिहुं कमळभद्र-देवर
कालं कर्त्तुं धारा-पूर्वकमासम्बन्धिय समुदाय-मुख्यमागे भुजवळशान्त-
रदेवं कोट्ट ग्रामङ्गळ् (जैसाकि कहा गया है) मत्तमातननुजं नन्नि-
शान्तर-देवं सुखदिं राज्यं गेयुत्तमिहुं पोम्बुर्च-नाडोळगण हादिगारु
अदर कालहल्लि हल्लवनहल्लियुं बिडियुमं कोट्ट अन्तातन तम्मं विक्रम
शान्तर-देवं राज्यं गेयुत्तमिहुं पोम्बुर्च-नाडोळगण हालन्दूरुं कळूरु-नाडोळ-
गण केरेगोड समीपद मडम्बळ्लियुमं कोट्टरिन्ती-वसदिय वृत्ति-एल्लवक्कं
देवि-देरे अडे-गर्बु काणिके सेसे बिहुं बीय-मोदलागे कुमार-गद्याणं किरु-
देरे किरु-कुलायं साम्यं सलगे मोदलागि पेरवुं तेरेगळेम्ब सर्व्व-बाधा-
परिहारवं माडिदर । (यहाँ सीमाएँ तथा हमेशाके अन्तिम वाक्यावयव
आते हैं) ।

[जिनशासनकी प्रशंसा । जिस समय, (उन्हीं चालुक्य पक्षों सहित), त्रिभुवनमल्ल-देवका विजयी राज्य चारों ओर प्रवर्द्धमान था—और तत्प्रादप-ग्रोपजीवी (ऊपरके शिलालेख नं० २१३ में जो उपाधियाँ नक्षिशान्तरकी हैं, उन्हींके सहित) महामण्डलेधर बीरल या वीर शान्तर-देव था । उसकी प्रशंसा । उसकी रानी वीरल-महादेवी थी । उनके चार लड़के—तैल, गोविगक, ओडुग, और बम्म—थे । इनमेंसे तैलका नाम भुजबल-शान्तर, गोविगक या गोविन्दर-देवका नक्षिशान्तर तथा ओडुगका विक्रम-शान्तर प्रसिद्ध हुआ । सबसे छोटे भाईका नाम कुमार बर्म-देव ही रहा । इनकी माँ चट्टल-देवी (वीरल महादेवी) थी । उसके पिता राजा रक्स-गङ्गा, पति काञ्ची-अधिपति, गुरु श्रीविजय, और पुत्र गोविग (नक्षिशान्तर) थे ।

इस प्रकार, जिस समय सब धार्मिक गुणों और पवित्रताकी जन्मभूमि चट्टलदेवी, भुजबल-शान्तर-देव, नक्षिशान्तर-देव, विक्रम-शान्तर-देव और बर्मदेव पोम्बुच्चमें थे और शान्तिसे राज्य कर रहे थे 'धर्म सर्व प्रथम चिन्तनीय है', इसका खयाल करके, धर्म उपाज्जन करनेके लिये, उन्होंने 'उर्वो तिलक' नामकी पञ्च वसतिके निर्माणका कार्य अपने हाथमें लिया । ये सब ओडेय-देवके (श्रेयांस-पण्डितके शब्दोंमें जो श्रीविजय-देवका नामान्तर है) गृहस्थशिष्य थे । उन सबने किसी शुभ दिन पञ्चवसदिकी नींव डाली ।

श्रेयान्सदेवके आचार्योंकी परम्परा—वर्द्धमान स्वामीके तीर्थमें गौतम गणधर हुए । उनके पश्चात् बहुतसे त्रिकालज्ञ मुनियोंके होनेके बाद क्रमशः कोण्डकुन्दाचार्य, 'श्रुतकवली' भद्रबाहु स्वामी, बहुत-से आचार्योंके व्यतीत होनेके बाद, समन्तभद्र स्वामी, सिंहनन्दाचार्य, अकलङ्क-देव, कनकसेन देव (जो वादिराज नामसे भी प्रसिद्ध थे), ओडेयदेव (श्रीविजयदेव जिनका ऊपर नाम दिया है), दयापाल, पुष्पसेन सिद्धान्तदेव, वादिराज-देव (जो 'षट्-तर्क-षण्मुख' तथा 'जगदेकमल्ल-वादि' नामसे भी प्रसिद्ध थे), कमलभद्र-देव, अजितसेन देव (प्रशंसासहित) हुए । और अजितसेन-देवके सहधर्मी शब्द-चतुर्मुख, तार्किक-चक्रवर्ती वादीभासिंह हुए । तत्पश्चात् कुमारसेनदेव मुनीन्द्र । इनके बाद श्रेयान्सदेव हुए ।

(उक्त मितिको) पञ्चवसदिकी नींव ढालकर, चट्टल-देवी और चारों आड़्योंकी उपस्थितिमें, कमलमद्भदेवके पैर धोकर, भुजबल-शान्तर-देवने (जैसा कि ऊपर कहा गया है) गाँव और भूमियाँ दीं। इसीतरह उसके छोटे भाई नखि-शान्तर देवने तथा इसके छोटे भाई विक्रम शान्तरदेवने (जैसा कि लेखमें बताया गया है) गाँव और भूमियाँ दानमें दीं और वसदिके इन दानोंको (जिसकी सूची लेख में दी हुई है) उन्होंने सभी करोंसे मुक्त कर दिया। सीमायें, शाप और आशीर्षचन।]

[EC, VIII, Nagar th., n° 36]

२१५

हुम्मच—संस्कृत तथा कन्नड़

[बिना काल-निर्देशका; पर लगभग १०७७ ई० का]

[हुम्मचमें, मानसाम्मके ऊपर, दक्षिणकी तरफ़]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥

नमो अर्हते ॥

स्वस्ति-श्री-रमणी-विनोद-भवनं यस्योद्ध(दूव)-वक्षः-स्थलम्

वाग्-देवी-वनिता-विळास-निळयो यस्याननाम्भोरुहम् ।

वीर-श्री-युवतेरभूत् कुञ्ज-गृहं यद्-बाहु-दण्ड-द्वयम्

यत्कीर्त्तिरशरदिन्दु-कान्ति-विमला पारेदिशं वर्त्तते ॥

साक्षादुग्र-कुळ-प्रभुर्निज-भुज-प्रोद्भासि-कौक्षेयक-

प्रव्वस्तीकृत-भूरि-गर्व-वळ-शद्वेद्वेषि-भूपाळकः ।

दीनानाथ-जना यदीय-सु-महा-दानात् परेष्ट-प्रदम्

स श्रीमान् भुवि नन्नि-शान्तर इति ख्यातो भृशं भ्राजते ॥

विभाति यस्याप्रतिमः प्रतापः मानोगतो (!) वैरि-महीपतीनाम् ।

सन्तापयत्येव तदन्तरङ्गम् श्रीमानसावोद्भूत-मण्डलेशः ॥
 कुमार-चूडामणिरेश भाति श्री-ब्रह्म-देवो गुणवाननिन्यः ।
 श्री-जैन-पादाम्बुज-युग्म-भृङ्गः यशोऽभिवेष्ट्याखिल-भूमि-भागः ॥
 श्रीमद्-राक्षस-गङ्ग-मण्डलपतिः श्री-गङ्ग-नारायणः
 दोर-दण्ड-द्वय-वीर्य्य-भीषित-रिपुः श्री-गङ्ग-पेर्मनडिः ।
 त्याद् यस्या जनको मतो निरुपमो विख्यात-कीर्त्ति-ध्वजः
 श्रीमच्चट्टल-देवि अत्र भुवने ख्याता वरीवृत्तते ॥
 दृष्टे यत्र महोत्सवैक-निलये पश्यजनानां मनः
 पुण्यं सञ्चिनुते-तरामतितरामहो हरलप्यलम् ।
 पूजाभिः पृथुभिः पुनः प्रतिदिनं वाभाति योऽयं सदा
 श्रीमपञ्च-जिनालयो निरुपमो भक्ता यया निर्मितः ॥
 संसारम्भोधिमध्यन् निरुपम-गुण-सद-रत्न-भेदाधिवासम्
 निर्वर्ण-द्वीपमाहुं प्रतियत-मनसां पण्डितानां मुनीनां ।
 ज्ञात्वा श्रीमजिनेन्द्रालय-विलसित-नावं व्यधाद् यक्षिणामन्-
 मानस्तम्भोद्धसत्-कूबरमपि च धनान्यर्थि-सार्थाय दत्वा ॥
 आहाराभय-मेषव्य-शास्त्र-दानैर्निरन्तरैः ।
 श्रीमच्चट्टल-देवीयं वाभाति भुवन-स्तुता ॥
 रोहिणी चेलिनी सीता देवता च प्रभावती ।
 श्रूयन्ते वार्त्तया सेयं दृश्यन्ते विमलैर्मणैः ॥
 श्रीमद्भविळ-संघेऽस्मिन् नन्दिसंघेऽस्त्यरुङ्गळः ।
 अत्रयो भाति योऽशेष-शास्त्र-वाराशि-पारगैः ॥
 यद्-वाग्-वज्राभिधातेन प्रवादि-मद-सूयतः ।
 सञ्चूर्णितास्तु भाति स्म हेमसेनो महामुनिः ॥

शब्दानुशासनस्योच्चैरूपसिद्धिर्महात्मना ।
 कृता येन स वाभाति दयापालो मुनीश्वरः ॥
 श्री-पुष्पसेन-सिद्धान्त-देव-वक्त्रेन्दु-सङ्गमात् ॥
 ज्ञातावभाति जैनीयं सर्व्व-शुक्ल सरस्वती ॥
 नम्रावनीश-मौलीद्ध-माला-मणि-गणार्चिदम् ।
 यस्य पादाम्बुजं भातं भातः श्रीविजयो गुरुः ॥
 सदसि यदकलङ्कः कीर्त्तने धर्मकीर्त्तिः
 वचसि सुरपुरोधा न्यायवादेऽक्षपादः ।
 इति समय-गुरूणामेकतस्संगतानाम्
 प्रतिनिधिरिव देवो राजते वादिराजः ॥
 सांख्यागमाम्बुधर-धूनन-चण्ड-वायुः
 बौद्धागमाम्बुनिधि-शोषण-वाडवाग्निः ।
 जैनागमाम्बुनिधि-वर्द्धन-चन्द्र-रोचिः
 जीवादसावजितसेन-मुनीन्द्र-मुख्यः ॥
 श्रेयांस-पण्डितर गत- ।
 मायादि-करायरमल-जिन-मत-तारः ।
 न्याय-परः स्मित-कमल- ।
 श्री-युत-द-न-कुन्द-रुन्द्र-कीर्त्ति-पताकर ॥
 नमो जिनाय ॥

[जिन-शासनकी प्रशंसा । नबि-शान्तरके यशकी प्रशंसा । राजा जोडुग,
 ब्रह्म(बम्म-)देव, और चट्टल-देवीकी प्रशंसा ।

हेमसेन-मुनि, शब्दानुशासनके लिये 'रूपसिद्धि' बनानेवाले दयापाल
 मुनीश्वर, पुष्पसेन सिद्धान्तदेव, श्रीविजय, इन सबका प्रशंसापूर्वक उल्लेख ।

चादिराजदेवकी प्रशंसा । अजितसेन मुनीन्द्रकी प्रशंसा । श्रेयांसपण्डित-
की प्रशंसा ।]

नोट:—इस शिलालेखमें समय (काल) का कोई निर्देश नहीं है और न
किसी कार्य या दानका इसमें उल्लेख है । यह लेख शुद्ध प्रशंसात्मक है ।

[EC, VIII, Nagar, 11., n° 39.]

२१६

हुम्मच—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक ९९९=१०७७ ई०]

(पश्चिम मुख)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

[तीसरी पंक्तिमें 'स्वस्ति'से लेकर १७ वीं पंक्तिमें "कूटिर्ष्व-सौभाग्यम्"
तक शि० ले० नं. २१४ की ११ से ३१ की पंक्तितक मिलता है ।]

एनिसिद वीर-देवनग्र-तनयम् ॥]

अरि-विरुद-भूभुजर्कळ ।

विरुदं बेरिन्दे किर्त्तु वीर-श्रीयोळ् ।

नेरेददटुप्रमातीतम् ।

धरेगेने भुजबळने शान्तरान्वय-तिलकम् ॥

विरुद-रिपु-चृपर शिरमम् ।

भरदिं सेण्डाडि वीर-लक्षि यनोलिसल् ।

नरपतिगळारो धुरदोळ् ।

निरुतं निन्नन्ते नन्नि-शान्तर-चृपति ॥

उत्तर-मधुरावीश्वरम् ।

उत्तम-गुणनुप्रवंश-तिलकं विबुध- ।

स्तुत्य-यशोभुधि विरुद-नृ ।

पोत्तम भुजबलन तम्मनेनिपं गोगि ॥

आतन तम्मं ॥

ओड्डिदरि-नरपरोड्डम् ।

काड्डिं, कडिदण्णनङ्ककार-वेसकैळ् ।

ओड्डुगनोळेसेये जगदोळ्म् ।

ओड्डुगनरसङ्ककार-वेसरं तळेदम् ॥

आ-कु-वळय-चन्द्रमननुजम् ॥

कुरि-दरि-दरिदम् पगेयेम् ।

अरिकेय काननमनदटरदटं मुरिदम् ।

नेरेददटिं वर्म्मुगनेम् ।

अरितद कणि विरुद-कोमर-चूडारत्नम् ॥

तैलन गो-गिगयोड्डुगन वोम्मन ताय् जिन-राज-धम्म-सत्त-

लीलेय बीर-देव-नृपनत्तिगे कन्नेगे बीर-लक्ष्मिगि-

प्पालयमाद मण्डलिक-रक्कस-गङ्गन पुत्रि काणि शी- ।

ळालिगेनिप्पडेनबळे नोन्तले चड्डल-देवि नोन्तुदम् ॥

वेरिनहीन्द्रनं नडुविनागसम कुडियिं दिवायमम् ।

तार-नगङ्गळं कवलिनोळ्ळेलेयिं देगेये मुगुळ्ळालिम् ।

तारकियं सिताच्चमने पुष्पदे पोल्वुदु पणिण (उत्तरमुग्ग) निन्दुवन् ।

नौरैरेदन्ते दुग्धमने चड्डल-देविय सद्-यशो-द्रुमम् ॥

इन्तेनिसिदिवरु सन्तलिगे-सासिरमं सुख-संकेथा-चिनोददिं राज्यं
गेय्युत्तिर्हु तम्म राज्याभिवृद्धि-निबन्धनमप्य श्री-जैन-धम्मानुरागदिं शक-

वर्ष ९९९ नेय पिङ्गळ-संवत्सरद ज्येष्ठ-शुद्ध विदिगे-बृहस्पति-
वारदन्दु पञ्च-कूट-जिन-मन्दिरमं प्रतिष्ठिसि आ-बसदिय खण्ड-स्फुटि-
त-नव-कर्म-पूजा-विधानकर्मलिप्प ऋषिसमुदायकाहार-दानार्थमुमागे
द्रमिळगणद नन्दि-संघदरुङ्गळान्वयद श्रीवादिराजापर-नामवेय-
श्रीमत्-कनकसेन-पण्डितदेवर शिष्यरोडेय-देवरेनिसिद श्रीविजय-
पण्डितदेवरन्तेवासिगळप्प श्रीमत्-कमळभद्र-पण्डित-देवर कालं कर्चि
धारापूर्व्वं तत्-समुदायं मुख्यमागे कोट्ट ग्रामङ्गळ् (यहाँ दानों और
उनकी सीमाओं की विस्तृत चर्चा जाती है) ।

[जिन शासनकी प्रशंसा । (जैसा कि लेख नं. २१४ में बीर-देव और
बीरल-देवीके पद और श्लोक हैं वैसे ही यहाँ हैं), बीर-देवके ज्येष्ठ पुत्र
भुजबळ शान्तर, उससे छोटे पुत्र गोगि, जिसका दूसरा नाम नञ्जि शान्तर
है, उसके छोटे भाई ओडुग, तथा उसके भी छोटे भाई (चौथे पुत्र)
बम्मुगकी प्रशंसा । तैल, गोगि, ओडुग, तथा बोम्मकी माँ चट्टल-देवी
बहुत भक्त थी । उसके कीर्तिरूपी वृक्षकी कल्पनोक्ति ।

इन लोगोंने, जब कि ये सान्तळिगे-हजारका शान्ति और बुद्धिमत्तासे
शासन कर रहे थे (उक्त) गाँवोंका दान दिया । उन्होंने जैनधर्मके प्रेमवश
पञ्च-कूट-जिनमन्दिर स्थापित किया । तथा उस बसदिकी मरम्मतके लिये,
नये कामोंके लिये, पूजा और ऋषिगणके आहारके लिये,—द्रमिळ-गण,
नन्दि-संघ और अरुङ्गळान्वयके कनकसेन-पण्डित देवके, जिनका दूसरा नाम
वादिराज था, शिष्य श्रीविजयदेवके, जिन्हें ओडेय-देव भी कहते थे,
शिष्य कमलभद्र-पण्डित-देवके पाद-प्रक्षालन-पूर्व्वक यह सब दान किया
गया था ।)

[EC, VIII, Nagar tl., n° 40 (1st part).]

२१७

बलगाम्बे—संस्कृत तथा कन्नड

[विक्रमादित्य चालुक्यका २ रा वर्ष=१०७७ ई०]

[बलनाम्बेमें, बडगियर-होण्डके पास एक पाषाणपर]

खस्ति समस्त-सुरासुर-मस्तक-मकुटाश्म-जाळ-जळ-धौत-पदम् ।
प्रस्तुत-जिनेन्द्र-शासनमस्तु चिरं भद्रमखिल-भव्य-जनानाम् ॥
श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

खस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर
परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुळ-तिळकं चालुक्याभरणं श्रीमत्-त्रिभुवन-
मल्ल-देवः ॥

वृ ॥ अलगं चोळावणीशङ्गेणसनणियरं लाळ-भूपङ्गे बाहा- ।

बळदिन्दं तोरि मीरुत्तडसिद्धुभय-चक्रेश-सामन्त-भूसूत- ।

कुळं तन्नैरिदुप्रेमदिनुरदरे बेङ्गोण्डु चालुक्य-राज्यो- ।

ज्यळ-लक्ष्मी-नाथनाळदं भुवन-जन-नुतं विक्रमादित्य-देवम् ॥

धारा-नाथ-महा-भय-ज्वरकरं चोळोप्र-कालान्तकम् ।

सौराष्ट्रांग-कलिंग-वङ्ग-मगधान्ध्रावन्ति-पाञ्चाळ-.... ।

....राजावलि-मौलि-लाळित-पदं पूर्वापराम्भोधि-वेई

ळारामान्तर-शैळ-केळि-विभवं चालुक्य-दिक्-कुञ्जरम् ॥

नरसिंहाकारदिं दानव-पति-युरमं सीळदनण्मण्णु रुद्रं- ।

बेरसा-कैलासमं तृगिदनळवळवार्त्तिर्यि चर्ममं ने- ।

टैरदिन्द्रङ्गित्तनार्पण्णखिल-धरे गत-क्षत्रमण्णन्ते धात्री- ।

शरानर्पण्णोन्दु-सूळ् कोन्दन-चलमे चलं विक्रमादित्य-निज ॥

पुदुवेकन्यर्गमानोर्बने तळैयलिदं साल्वेनेन्दा-महा-कूर- ।

म्मद बेन्निन्दा-भुजङ्गाधिपन पेडेगळिन्दा-दिशा-कुञ्जर-स्कन्-

धदिना-भूसूदरी-मूळदिनखिल-धरा-भारमं तन्दु-विक्रा-

न्तद बरिप तन्न तोळोळ् पदुळ्म्भिरसिदं विक्रमादित्य-देवम् ॥

अन्तु धरेयं निष्कण्टकं माडि सुख-संकथा-विनोददिन्देतगिरिय नेलेवी-
डिनोळ् राज्यं गय्युत्तमिरे ॥ तत्पाद-पद्मोपजीवि ॥ स्वस्ति समधिगत-
पञ्च-महा-शब्द महा-सामन्ताधिपति महा-प्रचण्डदण्डनायकं दुर्जन-भय-
दायकं बन्धु-जन-बन्धुर-कुमुद-सुधाकरं विप्र-दिवाकरं सरस्वती-समय-समु-
द्धरणं गुण-गणाभरणं चतुर-चतुराननं विक्रम-पञ्चाननं प्रताप-सहायं पति-
हितवैनतेयं पिसुणर गण्डनहित-कुळ-कमळ-वन-वेदण्डं विनयावलोकं
कीर्त्ति-पताकं साहसोत्तुङ्ग श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल-देवचरण-सरसीरुह-भृङ्ग-
नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहितं श्रीमद्दण्डनायकं बर्म-देवम् ॥

वृत्त ॥ धरेगेळं तन्न बहा-बळद नेरवु तन्नण्णु तन्नप्र-तेजस्- ।
स्फुरितं तन्नापु तन्नोन्नडिय निलवु तन्नूर्जित-ख्यातियोळ्प-
च्चरियागुत्तिर्पिनं रञ्जिसि सकळ-गुणानर्थ-रत्नके रत्ना- ।
करनादं दण्डनाथाप्रणि सकळ-जगन्मण्डनं बर्म-देवम् ॥
जनकेळं ताने कण्णुं गतिमुमेनिसि तन्न रिपु-क्षत्र-नक्ष-
त्र-निकायं निलदेळं मसुळे कळिमळद्वान्तमर्काडेविश्वा- ।
वनियं मिक्केळ्ळोयिन्दं वेळपेसकमनान्तिर्दपं विक्रमादि- ।
त्यन तेजश्चक्रमिर्पन्तेवोलनवधि-सत्त्वोदयं बर्म-देवम् ॥
हरियिं चाळितमादुदङ्कदचळेन्द्रं दैत्यनिं सार्द्धुदुर- ।
व्वि रसा-गर्व्वमना-लयानिळन पोथिल पारिताशा-गजोत्- ।
करमेन्दन्दिवरल्लि धीर-गुणमेल्लित्तेन्दियं नक्कु धि- ।
करिपं निश्चळमाद धैर्य्य-गुणदोळिप बर्म-दण्डाधिपम् ॥
कुडुवेडेगादुदेम्मडगलादुदे वित्तमरातियं पडल्- ।
वडिपेडेगादुदेम्बरिदे पोत्तिरलादुदे कन्दु सत्यम् ।

नुडिवेडेगादुदेम् पुसियलादुदे नाल्लिगे यिन्दुं कीर्त्ति दाम् ।

गुडिवडे बम्मदेवननितुं क्षणदुन्नतियं नेगाच्चिंदम् ॥

अन्तु पोगत्तेगं नेगत्तेगं नेलयाद श्रीमन्महा-सेनाधिपति महा-प्रधानं
दण्डनायकं बम्म-देवरसर् ब्वनवसे-पन्नित्छासिरसुं सान्तळिगे-सासिरसुं
पदिनेण्टप्रहारगळ्ळं दुष्ट-निग्रह-विशिष्ट-प्रतिपूळनम् गेय्दनु-भविसुत्तं
राजधानि-बळ्ळिगावेयोळिरे ॥

वृत्त ॥ जिननाथ-स्वामिं देव्यं निज-गुरु गुणभद्र-व्रतीन्द्रं जगत्-पा- ।

वने ताय् जक्कब्बे सोमं जनकनवरजं मेचि भागब्बे पुण्याङ्कम् ।

गने मावं लोक-पूज्यं गुण-निधि कलि-देवं बुधाधारनेन्दन् ।

अनवद्यं सिङ्गनेन् केवळमे हितकरोत्तुङ्ग-धम्म-प्रसङ्गम् ॥

विनेयद सीमे धम्मद तवर-ग्मने सत्यद जन्म-भूमि मान्- ।

तनदेरुवट्टु पेम्पिनदगुन्ति विवेकद वीडु-दाणवार- ।

प्पिनकणियेन्दु वण्णिपुदु भू-वळ्यं प्रतिकण्ठ-सिंगनम् ।

जिन-पति-पाद-पङ्करुह-भृङ्गननुद्व-गुण-प्रसङ्गनम् ॥

बरेपद वल्मे बाजनेय विन्नणमोप्पुव लेक्कदोजे सं- ।

कर-सुतनोळ् सरस्वतियोळ्म्बुरुहासननोळ् विचारिसल् ।

दोरे सारे पाटियेन्दु निखिळोर्व्वरे वण्णिसुतिर्पुदेन्दोडेम् ।

पिरियनो सिङ्गनुज्जळ-यशो-विभवं प्रतिपन्न-मन्दरम् ॥

शुचि सुर-सिन्धुजं सुर-सारिद्धवनिन्दनिल-प्रियात्मजम् ।

शुचि गगनापगा-त्तनयानि पवमान-तनूजनि सुकम् ।

शुचि नेगळ्ळा-नदीसुतनिना-कपि-राजनिना-सुकर्षियम् ।

शुचियेने सन्दने-दोरेतो शौच-गुणं प्रतिकण्ठ-सिंगन ॥

फळ-भरिताम्र-भूरुहके पक्षिगणं भ्रमरालि पुष्प-सं- ।

कुळ-नव-सौरभकैरुग्वन्ते बुधाळिं नियोगमेम्ब दी- ।
 वळिगेय पर्वदोळ् बरे यथोचितदिं तणिपिं बळिके सन्- ।
 चळतरमा-नियोगमेनुतिर्पुदु गोसने सिङ्ग-राजनम् ॥
 पर-हितमं कडङ्गि नेरे माडले कलतनशेष-सद्-बुधोत्- ।
 करमनोरलदु मन्त्रिसले कलतनेडार्पिंरिदेम्ब शिष्टरम् ।
 पोरेयले कलतनुत्तम-गुणाधिकरोळ् दोरे यप्पनेन्दु म- ।
 चारिसले कलतनिन्तुटिदु कलत-गुणं प्रतिकण्ठ-सिंगन ॥

कन्द ॥ जिनधर्म्माम्बर-दिनपं ।

जिन-धर्म्मसुधाम्बुरासिवर्द्धन-चन्द्रम् ।

जिन-धर्म्म-प्राकारम् ।

जिन-पति-चरणाम्बुजात-भृङ्गं सिङ्ग ॥

इन्तेनिसिद गुणङ्गळ् तनगे सहजमागे नेगळद श्रीमत्-प्रतिकण्ठ-
 सिङ्गय्यं धर्म्म-कथा-कथन-प्रसङ्गमं पुट्टिसि श्रीमत्-पेर्म्माडिय बसदि-
 गोन्दु-वाडमं श्री-बल्लवरसरल्लि पडेदु कुडिमेन्दु तन्नाळ्दङ्गे विन्नपं गेय्यल्
 श्रीमद्-दण्डनायकं बर्म्मदेव तत्-सम्मन्ध-मेळ्ळमं निज-स्वामिगे विन्नपं
 गेय्ये ॥ श्रीमत्-त्रिभुवनमल्लदेवर् श्रीमच्चालुक्य-विक्रमं-वर्ष २ नेय
 पिङ्गळ-संवत्सरद पुण्य-सुद् ७ आदित्यवारदन्दिनुत्तरायण-संक्रा-
 न्तिय पर्व-निमित्तं राजधानि-बळ्ळिगावेयोळ् तम्म कुमार-गालदन्दु
 माडिसिद श्रीमच्चालुक्य-गङ्ग-पेर्म्मानडि-जिनालयद देवगर्गर्चन-पूजनाभि-
 पेककं भोगकं ऋषियाराहार-दानकं मेले बसदिय खण्ड-स्फुटित-नव-
 कर्म्मद बेसक्कागि ।

वृत्त ॥ जसमेम्बुज्वळ-दीप्ति पज्जळिसे भव्याम्भोजिनी-राजि रा- ।

जिसे दुष्कर्म्म-तमो-बळं बेदरे लोक-स्तुत्य-जैनागम- ।

प्रसर-व्योम-विभागदोळ् सोगयिकुं रत्न-त्रय-श्री-गुणा- ।

वसथ-श्री-गुणभद्र-देव-मुनिपाम्भोजात-मित्रोदयम् ॥

कन्द ॥ एनो-दूरं परम-त- । पो-निधि तन्मुनि-गणेश-सहधर्मि लसद्- ।

ज्ञान-परं नेगळ्द महा- । सेन-व्रति तद्-व्रतीश-शिष्यर-ज्जेगळ्दद् ॥

वृत्त ॥ ओदविद् शब्द-शास्त्रदेडेयोळ् भुवन्स्तुत-पूज्यपादरेम्- ।

बुदु नेरे तर्क-शास्त्रद विवेकदोळ्ळिन्तकळ्ळु-देवरेम्- ।

बुदु कविता-गुणोत्कर-महत्त्वदोळेण्दे समन्तभद्ररेम्- ।

बुदु सले रामसेन-विबुधोत्तमरं निखिळोर्ब्बरा-जनम् ॥

अन्तु समस्तशास्त्र-पारावार-पारग परमतपश्चरणनिरतरप्प श्रीमूल-
संघद सेनगणद पोगरि-गच्छद श्रीमत-रामसेन-पण्डितर्गे धारा-
पूर्वकं सर्व-नमस्यं माडि कोट् बनवसे-पन्निच्छासिरद कम्पणं
जिङ्गळिगे ७० र वळिय वाडं मनेवने १ । (हमेशाके अन्तिम
वाक्यावयव) । श्रीमद्-गुणभद्र-देवर गुडं चावुण्डमय्यं वरेदं मङ्गळ
महाश्री

[जिनशासनकी प्रशंसा । त्रिभुवनमल्ल-देवका प्रबर्धमान राज्य ।
विक्रमादित्य-देवकी प्रशंसा । जिस समय वे एतगिरिके निवासस्थानमें रहते
हुए राज्य कर रहे थे उस समय तत्पादपक्षोपजीवी (बहुत उपाधियोंसे
युक्त) दण्डनायक बर्म्मदेव थे (उसकी प्रशंसामें श्लोक) । जिससमय
दण्डनायक बर्म्मदेवरस बनवसे १२०००, साम्तलिगे १००० और १८
अग्रहारोंकी रक्षा करते हुए राजधानी बल्लिगाम्बेमें थे:—

सिंगके गुरुका नाम गुणभद्र-व्रतीन्द्र, माँ जङ्गवे, पिता सोम, छोटा
माई मेचि, पत्नीका नाम भागब्बे, ससुरका नाम कलि-देव था । (उसकी
प्रशंसामें श्लोक, जो उसे 'प्रतिकण्ठ-सिंग' कहते हैं)

प्रतिकण्ठ-सिंगरूपने अपने शासक बर्म्मदेवको प्रार्थनापत्र देकर त्रिभुव-
नमल्लदेवसे, चालुक्य-विक्रम वर्ष २ में चालुक्य-गंग-पेम्मानडि जिनमल्लको

बनवसे १२००० के जिहुल्लिगे ७० का मनेवने गौब दिलवाया । यह दान गुणभद्रके शिष्य रामसेनको किया गया था । वे मूल-संव, सेन-गण, और पोगरिगच्छके थे ।]

[EC, VII, Shikarpur tl., n° 124]

२१८

हट्टण—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०००=१०७८ ई०]

[हट्टण (कब्बनहळिल परगना) में, बस्ति के चन्द्रशालेमें एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमंगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रयं । श्री-पृथ्वी-चलभं । महाराजाधिराजम् । परमेश्वरं परम-भट्टारकम् । सत्याश्रय-कुळ-तिलकम् । चालुक्याभरणम् । श्रीमतु भूलोकमल्ल-सोमेश्वर.....देवरु । विजय-राज्यमुत्तरो-त्तराभिवृद्धिप्रवर्धमानमा-चन्द्रार्क-तारं-वरं सलिसुतमिरे ॥ श्रीमतु त्रिभुवनमल्ल एरेयङ्ग-होयसळ-देवर्गम् । येचल-देविममुदितो-दितमागलु बन्द वंशावतारमेन्तेन्दडे ॥ स्वस्ति श्रीमनु-महा-मण्डलेश्वरं द्वारावतीपुरवराधीश्वरम् । यादव-कुलाम्बर-द्युमणि । सम्यक्त्व-चूडामणि । मलपरोलु गण्ड । कदन-प्रचण्डम् । असहाय-सूर गिरिदुर्ग-मल्ल निरशङ्क-प्रताप भुजबळ-चक्रवर्ति श्री-वीर-बल्लाळ-देवरु । पृथ्वीराज्यं गेय्युत्तमिरे । तत्पादपद्मोपजीवि श्रीमन्महा-सामन्तं गण्डरादित्यङ्गम् हुगिगयवे-नायकित्तिगं सु-पुत्रं कुळ-दीपकरेनिसि पुष्टिदरु सामन्त-सुब्बयनु सामन्त-सातय्यनु सामन्त-बूवय्यनु श्रीमनु-महा-सामन्त माचय्यन प्रतापवेन्तेन्दडे । स्वस्ति सम-धिगत-पञ्चमहाशब्द-महा-सामन्त वीर-लक्ष्मी-कान्त । तुरेय रेवन्त

पर-बळ-कृतान्त । बिरद-गण्डर वदिसुव सामन्तर गण्ड ।
गण्ड । समर-प्रचण्ड । नुडिदन्ते गण्ड ।पराङ्गना-
 पुत्रं । दायिगमुरारि विनेयोपकारि ।वल्लभं दुष्टाश्व-मल्लं भीतर
 कोलं हडिय माक्कोलुवं दळुव बेङ्कोलुवं । इडगूर-देवी-लन्वर-प्रसाद ।
 मृगमदामोद । यत्तिल-वन-विकासचन्द्र सदानन्दभोग-नागेन्द्र होयसळ-
 देव-पादाराधकम् । पर-बळ-साधकम् । नीति-चाणुक्यं एक-वाक्य वैरि-
 मनो-भङ्ग । अप्यन सिङ्ग-दायिग-दुष्टर गण्ड । तप्पे तप्पुव । धीरदिन्दो-
 पुव । सामन्तजगदळ । मलेय.....दुळिव । मलेगे.....आने । येत्तिद
 मोनेगे मुन्तु केड काळगके पिन्तु छडिद.....ळम् । चतुस्समयसमुद्ध-
 रणनप्प श्रीमन् महा-सामन्त-माचाय्यनन्वयवेत्तेन्दडे ।

बेळगेरेय माचेय-नायक- ।

ननुपम-गुण-रत्ने माकल-देविय दान- ।

व्रतमेसेये चैत्य-मोहमु- ।

मनर्त्तियोळोप्पे साळ्कुमा-पट्टणदोळ् ॥

[स]रसतिगे रतिगे सीतेगे ।

सरि दोरेयेनिसिद मारेय-नायकन ।

सतियं धरेयं वणिगसुवुदु ।

निरन्तरं नेगळद बम्मियळवेय पेम्पम् ॥

सरणेने कायळु वळम् ।

नेरेदर्त्तियोळीय-बळुनाश्रित-जनकम् ।

पर-बळ वैरि-भूपर ।

कोल बळं बेळुगेरेय बळनिम्मडि-बळ ॥

रुगुमिणि बेळगिदरुन्वति ।

मिगिलिसिद सीतेयेम्ब सतियरोळ्ळिगळ् ।

समनेनिप सतियेनिसिद ।

सति यल्लरे बल्लयनर्द्धाङ्गि केतवे देवियकं धरेयोळ् ॥

श्रीमत्तु सावन्त-बल्लि-देवनर्द्धाङ्गि केतवे-नायकितियरुं देवियक-
नायकितियरुमवर सुपुत्र सुद्य-देव पेरुमाळु-देव सावन्त-मारय्य
माचि-देवन सुख-सङ्कता(था)-विनोदिं राज्यं गेय्युत्तिरे ॥

सादिसिद मोक्ष-लक्ष्मिय- ।

नादरदिन्दभयरन्न-दान-विनोदम् ।

मेदिनियोळोप्पे माडुव ।

सासल-बम्मय्य भव्य-तिलकं धरेयोळ्

भव्य-कुल-तिलकनोप्पुद ।

अग्रज माणिक्य चाकि-सेट्टियरनुजन् ।

एरकाट्टि-सेट्टियेन्ती- ।

त्रै-पुरुषर् नेगळ्द दान-चिन्तामणिगळ् ॥

तक्के-व्याकरणदोळम् । वग्दाणगे वल्ल सकल-.....क्तिगळिम् ।

मिक्कदतिजाणं धर- । मक्कल्लिय नेगळ्दिर्द माचि-सेट्टिये धन्यम् ॥

आ-माचि-सेट्टियनुवं । माचिसे श्री-जैन-धर्म-सुर-कुजदन्नङ्गा

स्सममेनिसल्लकार परि । यीव-गुणं काळि-सेट्टियोरें दोरेगम् ॥

कलि-काल-कल्प-वृक्षमन् । अलसदे नां बेडु काळि-सेट्टिय सुतनं

वल्लुं पोन्नं वल्लम । सले यीयल्लु बल्ल मान्यना-बम्मय्यम् ॥

आश्रित-जन-चिन्तामणि । विश्रुत-कीर्त्तीशनमळ-बोधाधीसं (शं)

श्री-श्रेयांस-जिनेशं । वैश्रावण-सेट्टिगीगे सुख-सम्पदमम् ॥

नुडिदेरु-नुडिवयनलं । कडु.....इल्ल आश्रित-जनकन्- ।

तेडेयुडुगदीव-दान- । व्रतियं कर्पूर-सेट्टियं वेडु बुदा ॥

कीर्ति-श्री-रमणन-बोलु ।

मूर्त्तियोळभिनव-मनोजन.....नम् ।

कूर्त्ताव मसण-सेट्टिगे ।

मार्त्तण्डन मग नळ-.....नृप लवे ॥

.....मनुजर्गम् ।

मरे-बोकरनेण्दि काव वन्धु-जनकम् ।

नेरे पोल्त कल्प-तरुवम् ।

नेरे ब्रण्णिपुदेष्टे काचि-सेट्टियम्.....॥

गणधर-भूपनन्वय-शिखामणि गोत्र-पवित्रन-द्विषम्

गुण-गण-नाथ गुण्णिन.....पेम्बिन मेरु वोन्द ।

अगणित-त्राव सत्यद तवर्मने मानव-वन्धनेन्दोडिन् ।

एणे.....हड्डणदोळोप्पुव माणिकनन्दि-देवरोळ ॥

स्वस्ति स(श)क-वरिस-सायिरद कालयुक्त-संवत्सरं प्रवर्त्तिसे
नखरजिनालयके विट् भूमि-(यहाँ दानकी विगत जाती है) आ-पट्टण-
दल्ल नडव देव-दाय हत्तु हेरिङ्गे हाग देवारगे सोडरेण्णेगे गाण १
(हमेशाके शापात्मक वाक्य) श्री-मूळ-संवदेसिय-गणपोस्तक-गच्छ-
कोण्डकुन्दान्वयद श्रीमत्तु नागचन्द्र-चान्द्रायण-देशर-शिष्य रुणि-
कच्छगोण्डि-देवरु मदवळिगे बोप्पवे मगळु काचवे मल्लवे मादवे
माचवे बालचन्द्र-देवरु । सेट्टिय हल्लिय मल्लि-सेट्टि चिक्कसेट्टि तम्म.....
सेट्टिगे विट् भूमि जक्कसमुददल्लि सलगे ५

* रोदद हलोजन मग बीरोज ई-शासनव होयिद ॥

* यह पंक्ति पत्थरके खिरेपर है ।

[जिनशासनकी प्रशंसा ।

जिस समय, (उन्हीं चालुक्य पदों सहित) भूलोकमल्ल सोमेश्वर-देव-का विजयी राज्य प्रवर्द्धमान था:—

त्रिभुवनमल्ल एरेयङ्ग-होयसल-देव और एचल-देवीके कुलमें उत्पन्न,— स्वस्ति । जब (अपने पदों सहित) वीर-बल्लाल-देव पृथ्वीका शासन कर रहे थे:—

तत्पादपश्रोपजीवी, महा-सामन्त गण्डरादित्य और हुगिगयन्वे नायकित्तिके सामन्त सुब्बय, सातय्य, और बूवय्य उत्पन्न हुए थे ।

महा-सामन्त माचय्यकी प्रशंसा । उसकी कुछ उपाधियाँ । माचय्यकी उत्पत्तिका वर्णन । जिस समय सामन्त बल्लि-देव (माचय्य) अपनी दोनों स्त्रियों और चार लड़कों सहित शान्ति और सुखसे राज्य कर रहा था:— सासल बम्मय्य और उसके दो लड़कों माणिक्य और जाकि-सेट्टिका उल्लेख । माचि-सेट्टि और उसके लड़के कालि-सेट्टि, फिर उसके लड़के बम्मय्यका वर्णन । माणिकनन्दि-देवका उल्लेख । (उक्त मिति को) नखर जिनालय-के लिये (उक्त) भूमियाँ, दस गट्टोंका दाम, एक कोरूह दानमें दिये गये थे ।

श्री-मूलसंघ, देशिय-गण, पोस्तक-गच्छ, तथा कोण्डकुन्दान्वयके नाग-चन्द्र-चान्द्रायणदेवके शिष्य रुणिकच्छगोण्डिदेव थे; उनकी पत्नी बोप्पवे, बबे काचवे, मल्लवे, मादवे, माचवे और बालचन्द्रदेव थे । कुछ सेट्टियोंने और भी कुछ भूमियाँ दीं । रोद हलोजके पुत्र बीरोजने यह शासन लिखा ।]

[EC, XII, Tiptur th., n° 101]

१ ऊपर जो १०७८ ई० काल दिया हुआ है, वह विनयादित्यके कालका है । उसके लड़के बल्लालदेवका (११०१-११०४ ई०) नहीं, और न भूलोकमल्ल (११२६-११३८ ई०) का ।

शि० २१

२१९

तट्टेकेरे—संस्कृत तथा कन्नड़—भग्न

[शक १००१=१०७९ ई०]

[तट्टेकेरे (शिमोगा परगना)में, रामेश्वर मन्दिरके सामनेके पाषाणपर]

खस्ति सक-वर्ष १००१ नेय क्रोधन-अवत्सरद ज्येष्ठ-बहुल-
चट्टि-वड्डवार शासन निन्दुदु

श्रीमत्-परम-गंभीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥

नमो वीतरागाय खस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजा-
धिराज परमेश्वर परम-भट्टारकं सत्याश्रय.....तिळकं चालुक्याभरणं श्रीमत्-
त्रिभुवनमल्ल-देवर कल्याणद-नेलवीडिनोल् सुखदि राज्यं गेय्युत्तमि....

जीयात् समस्त-ककुभान्तर-वर्त्ति-कीर्त्तिर

इक्ष्वाकु-वंश-कुल-वारिधि-वर्द्धनेन्दुः ।

कैळाश-शैल-जिन-धर्म-सु-रक्षणार्थम्

भागीरथी-वि.....तो द्वितीयः ॥

खस्ति समस्त-भुवनाधीश्वरेक्ष्वाकु-वंश-कुल-गगन-गभस्तिमालिनी परा-
क्रमाक्रान्त-कन्याकुब्जाधीश्वर-शिरो.....लि-मुखो पार्थिव-
पार्थः । समर-क्रेलि-धनंजयो धनञ्जयः । तस्य वल्लभा गान्धारि-देवी
तत्सुतो हरिश्चन्द्रः । रोहि.....दडिग-माधवापरनामधेयः । आ-
गङ्गान्वयदरसुगळेलेवेळोपाडिवदचन्द्रनन्तुदितोदितवागि पल.....ज्यं
गेय्युत्तिरे तदन्वयाम्बर-द्युमणियुं गङ्ग-चूडामणियुमेनिसिद भुज-बल गंग-
पेम्माडि.....

गुणि बेळवर्त्ति-जनके दान-मणि दोर-गव्वोद्धताध्मात-निर-

घृण-त्रैरिप्रकरके बल्-कणि कळा-विन्यास-वारासि सत्-

प.....वेष्टित-यशं विक्रान्त-तुङ्गं वृषा- ।

प्रणियादं कलि-गंग-देवन सुतं श्री-वर्म-भूपाळकम् ॥

कन्द ॥.....र्वि बाहा- ।

परिघदिनरि-नृपरनलेदु सेले-योळ् वोय्दुर

र्वरे बणिणसलेसेदं गं- । गर-मीमं लोकदोळो भुज-बळ-....ग ॥

....ळियेनिसिद पेम्माडि-वर्म-देवङ्गं पाण्ड्य-कुञ्जोद्भवेयेनिसिद

गङ्ग-महा-देवियगं रत्नत्रयं पुट्टवन्ते.....

वृ ॥ श्री-मारसिंग-नवनी-तळ-रक्ष-पाळम् ।

कामोपमं भगीरथान्वय-रत्न-दीपम् ।

भीम-प्रतापनहिता..... ।

सामान्यनल्लुदितोदितनेकवाक्यम् ॥

आतनप्पुमारुपुं लोक-विख्यातमाद तदनन्तरदोळ् । स्वस्ति सत्य
.....वर्म-धर्म-महाराजाधिराज परमेश्वरं कुवळाल-पुर-व्रेश्वरम् ।

नन्दगिरि-नाथं राज-मान्धातम् । पद्मावती-लब्ध-वर-प्र.....चकि-

ळामोदन् । असती-सहोदरं वीर-वृकोदरम् । सम्यक्त्व-रत्नाकरं जिनपाद-

शेखरम् । मद-गजेन्द्र-लाञ्छनम् चतुर-वि.....ग-गङ्गेयं शौचाञ्जनेयं ।

गङ्ग-कुल-कमळ-मार्त्तण्डम् दुडूर-गण्डम् । मन्त्रिय-गङ्गम् जयदुत्तरंगं ।

श्रीमन्महा-मण्डलेश्वरम् त्रिभुवन-मल्ल-गङ्ग-पेम्माडि-देवरगङ्गवाडि-

तोम्भचरु-सासिरमं बाष्केळिसि तदाम्यन्तरद मण्डलिसासिरमं

श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल-देवर् इये-गेय्ये निधिनिधानमोळगागि त्रि-भागा-

भ्यन्तर-सिद्धियिन्दे सुखदिं राज्यं गेय्युत्तिरे ।

कन्द ॥ श्रीगे नेलियागि वचन- । श्रीगागरमागि निज-
भुजार्जितविजय- ।

श्रीगरुहनागिकीर्त्ति- । श्रीगधिपतियागि सुखदिनिरे गङ्ग-नृपं ॥

वृ ॥ नुडिदुदे नन्नि माडिदुद्धे शासनं इत्तुदे रामरेसु माइ- ।

प्पिडिदुदे वज्र-लेपमुरदिदुदे मृत्यु परोपकारदोळ् ।

नडेदुदे बडे षड् गुणमे मेय्येने धम्मदोळोन्दि निन्नवोल् ।

नडेव नृपेन्द्रनावनखिळावनियोळ् कलि-गङ्ग-भूपति ॥

स्थिरने मेरु-गिरीन्द्रदोळ् सेणसुवं गंभीरने वार्द्धियोळ् ।

पुरुडिप्पं कलिये सुरेन्द्र-सुतनं मेच्चं महा-दानिये ।

सुर-भूजकोरेगड्वं चदुरने पाञ्चाळनिं मिकनेन्- ।

दिरदीगळ् धरे बणिकुं रण-जय-प्रोत्तुङ्गनं गङ्गनम् ॥

क ॥ अमळ-चरित्रं पुरुषो- । त्तमनेनिसिद गङ्ग-भूपनातन तम्मम् ।

विमळ-यशं गोविन्दर- । नमोव-वाक्यं कुमार-चूडा-रत्नम् ॥

अन्तिर्व्वरुं सुखदिं राज्यं गेय्युत्तिरे ।

क ॥ धम्मक्काम्मं दयेगे त- । वम्मने शिष्टेष्ट-कल्प-भूजं गोत्रा-

शम्मम् कुलोत्तमं पोले- । यम्मनेनल् नल्-गुणके मच्चरमुप्ते ॥

आ-गुणोत्तमनेनिसिद पोलेयम्मङ्गं रमणी-रत्तमेनिसिद केळेयब्बेगं

सु-पुत्रः कुळ-दीपक एनिसि नोक्कय्यं पुट्टि समर्थनागि मण्डलिय केच्च-

गावुण्डन मक्कळु काळेयब्बेयुम्मल्लियब्बेयुमं मदुवेयागि काळब्बे-गावि-

तिगे गुज्जणं पुट्टि तन्देगे पदिम्मिडियागि पेम्मार्डि-गावुण्डनेच्च पेसरं पडे-

दम् । मल्लियब्बे जिनदासनेच्च मगनं पडेदळन्तिर्व्वरुम्मक्कळ् वेरसु नोक्कय्यं

सुखदिनिर्पुदुं गङ्ग-पेम्मार्डि-देवर तट्टेकेरेगे विजयं गेय्दु समस्ताधिकारं म-

कुडे देवेन्द्रङ्गे बृहस्पतियन्तु बळीन्द्रङ्गे भार्गवनेन्तन्ते समस्तराज्य-भर-निरू-

पितमहामात्य-पदवी-विराजमान-मानोज्ञत-प्रभु-मन्त्रोत्साह-शक्ति-त्रय-सम्पन्नं

महा-महिमोत्पन्नम् । सुजन-जनाधारं बान्धव-प्राकारम् । पुरुष-रत्नाकरं

पर-बळ-भीकरम् । पति-कार्य-भार-क्रमन-सहाय-विक्रमम् । उपार्जना-
चार्यम् अचलित-धैर्यम्...क्षार-समुद्रं लञ्चकार-मुख-मुद्रं । पतिगे
कळापम् जय-लक्ष्मी-निक्षेपम् । कोदण्ड-पार्थ सौजन्य-तीर्थम् । जिन-
पादाराधकम् । कलि-युग-साधकम् । गङ्गन हनुमन्तम् । जय-लक्ष्मी-
कान्तम् । श्रीमन्महाप्रधानम् । पिरिय-पेर्गडे नोक्कय्यम् ।

वृ ॥ पार्थिवरं निराकरिप दान-गुणोक्तियिनर्थिगर्थमम् ।

प्रार्थिसदीव-कारणदे पेर्गडे नोक्कणी-परोपकान

रार्थमिदं शरीरमेनिपोन्दु पुराण-वरोक्तियिन्दम-

प्रार्थित-दानदिन्दे नेगळ्वुन्नति सन्दुदिळा-तळाप्रदोळ् ॥

मार्गदोळोळिपनोळ् गुणदोळप्पिनोळ्पिनोळादुदोन्दु पेम्-

पार्गमसाध्यमिन्तिरिव-काव-गुणङ्गळे साजमेन्दु केळ्-

दग्गेदेगोण्डु जेङ्गरिसे राज-गुणकळवट्ट नोक्कणम् ।

पेर्गडेयेम्बुदे धुरके मार्गडेयं पतिगेक-साधनम् ॥

क ॥ पेर्गडेननमं बळ् । ख्खळ्गमनणमरियरुळिदमात्यर् नोक्क ।

पेर्गडे-गंगन मनेयोळ् । मार्गडे संगरद मोनेयोळेने मेच्चदरार् ॥

किरिदरोळळवडद मनं । नेरे पिरिदक्कासे-मेय् बुद्धियिनातम् ।

तेरे-विडिदु जोन्नदिन्दन । पेरेयन्ददे नोक्कनुत्तरोत्तरमादं ॥

अगळिसिद केरेगे माडिसि । द गळ्देगेत्तिसिद देवता-गृहकरवण्-

ठगेगन्न-दानदेडेगी-जगदोळ् पवणिल्लदेम् कृतार्थनो नोक्कम् ॥

सरनिधि बळसिदुदेम्बन् । तिरिलित्ता-तट्टेकेरेय पेर्गेरे सुत्तल् ।

पलिय नडुवमरसैळद । दोरेयेनिसिद तेरदे बसदि सोगयिसि

तोर्कुम् ॥

पिरिय-मां गुज्जणनन्- । तरायवागिब्बदनातनेन्दुगे सर्गम् ।
 वरल्लिन्दु नोक्क-पेर्गडे । हरिगेयलेत्तिसिदनेरडु जिन-मन्दिरम् ॥
 तनगेपर-हितमे हितमेन् । दनुमानिसि नोक्कनोल्दु माडिसे
 विश्वा- वनियोळगे नेल्लवत्तिय-

जिन-भवनं ऋभु-विमानमं पोल्तिकुम् ॥ आ-नेल्लवत्तिय तट्टेके-
 रेयेरडुं बसदियुमं जिनदासङ्गे परोक्ष-विनयमागे माडिसिद पेर्गडे-
 नोक्कय्यन परोपकारार्थकं वीरकं वितरणकं श्री-गंग-पेर्माडि-देव
 म्मेच्चिरु-गळे-गुडि-चामर-मेघाडम्बरादि-राज्य-चिह्नङ्गल-नित्तदके तेल्लन्ति-
 येन्दु मोदलमूल-धन तट्टेकेरे कीळूरु अरेयूरु हेरिगे कडवूरु
 सीमोगे तरिकेरि हेन-बुरद-गावुण्ड-वृत्तियुमनिर्पत्तु-कुदुरेग-वन्नूरा-
 व्यालनित्तूर्गीळ सिद्धायवनित्तु चन्द्रार्क-तारं-वरं सर्व-नमस्यमागे
 पनसवाडियं बिट्टनितु महा-महिमेयं ताळिदद पेर्गडे-नोक्कयं मूल-
 संघद क्राणूर-गणद मेषपाषाण-गच्छद श्री-प्रभाचन्द्र-सिद्धान्ति-
 गर गुडुनागि नालकु बसदियं माडिसि तट्टेकेरेय बसदियं पूजिसुवरा-
 गण-गच्छदस्थान-पतिगळ्गे तम्म बळियल् तट्टेकेरेय केळगे गळ्दे गळेय
 मत्तरोन्दु ओळ-गेरेयल्ल बेळ्दले मत्तरोन्दु अल्लि परेकार्गगे गळ्दे गुणिगण
 मत्तरु मूरु बेळ्दलेगळेय मत्तरोन्दु । कुम्बारर्गगे गळ्दे गुणिगन मत्तरोन्दु
 बेळ्दले गुणिगन मत्तरोन्दु तट्टेकेरेय अल्लडिय तेरेयुं सुङ्गमं बसदिगे
 गंग-पेर्माडि-देवबिड्डी यी-धम्ममं रक्षिसिदातं सासिर-कपिलेयं दानं
 गेय्दं किडिसिदं गङ्गेयोळ् सासिर-कपिलेयं तिन्दम् । सन्धि-विग्रहि दाम-
 राजं सासन-गच्चमं पेळ्दु बरेदं पोय्दं सान्तोज्जुं पय्जुं मङ्गळ श्री ।

[(उक्त मितिको) यह शासन लिखा गया था । जिनशासनकी प्रशंसा ।
 जिस समय त्रिभुवनमल्ल-देव कल्याणमें रहते हुए शान्तिसे राज्य कर रहे थे:
 एक धनञ्जय नामका राजा हुआ, जिसने अपने पराक्रमसे कान्यकुब्जको

अधीनकर उसके राजाका सिर बाणोंसे छेद दिया। उसकी पत्नी गान्धारदेवी और पुत्र हरिश्चन्द्र था। तदनन्तर दक्षिण-माघव इत्यादि जिस समय गंगवंशके राजा राज्य कर रहे थे, उसके वंशका सूर्य, गङ्ग-चूडामणि भुजबल-गंग-पेम्माडि.....हुआ।

राजाके रूपमें प्रसिद्ध (अन्य प्रशंसाओं सहित) कलिंग-देवका पुत्र बर्म्मभूपालक था। भुजबल-गंग, गङ्गर-भीमकी प्रशंसा।

पेम्माडि-बर्म्मदेव और गंग-महादेवीसे मारसिंग नामका पुत्र उत्पन्न हुआ। (तीन पुत्र उत्पन्न हुए थे, लेकिन औरोंका नाम नहीं गिनाया है।)

तदनन्तर जब गङ्ग-पेम्माडि-देव शान्तिसे राज्य कर रहे थे: गङ्ग और कलि-गङ्ग राजाओंकी प्रशंसा। गंग-भूपालका छोटा भाई गोविन्दर था। जब ये दोनों शान्तिसे राज्य कर रहे थे—पोलेयम्म हुआ। उसकी पत्नी केल्लेयम्बे थी, उनका पुत्र नोक्यय था, जिसने मण्डलिके केञ्ज-गावुण्डकी पुत्री कालेयम्बे और मल्लियम्बेसे विवाह किया। पहली स्त्रीसे गुञ्ज नामका लड़का हुआ, जो 'पेम्माडि-गावुण्ड' रूपसे विख्यात हुआ। दूसरी स्त्रीसे जिनदास हुआ। जब नोक्यय इन दोनों पुत्रोंके साथ सुखसे होता था, तब एक दिन गङ्ग-पेम्माडि-देवने तट्टेकेरे जाकर तमाम राज्य-शासनका भार उसे सौंप दिया। उसने तट्टेकेरेमें एक जिनमन्दिर और एक विशाल तालाब खुदवाया। उसने और भी दो मन्दिर हरिगे और नेल्लवत्तिमें बनवाये। नेल्लवत्ति और तट्टेकेरेकी बसदियोंके लिये गङ्ग-पेम्माडिदेवने उसे दो भेरी, एक मण्डप, चामर, तथा बड़े-नगाड़े राज्यकी तरफसे दिये, तथा बदलेकी भेंटमें ८ गावोंकी गावुण्ड-वृत्ति, २० घोड़े, ५०० दास तथा पनसवाड़ी दी। वह प्रभाचन्द्र-सिद्धान्तकी शिष्य था तथा ४ मन्दिर उसने और बनवाये।]

[EC, VII, Shimoga tl. n° 10]

२२०

सोमवार—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १००१=१०७९ ई०]

(देखो, जैन शिलालेखसंग्रह, प्रथम भाग)

[EC, V, Arkalgud tl., n° 99, t. and tr.]

२२१

इसूर—संस्कृत तथा कन्नड़-भग्न

[काल-निर्देश लुप्त, पर संभवतः लगभग १०८० ई० ?]

[इसूर (शिकारपुर परगना) में, कोटे रामेश्वर मन्दिरकी दीवालके पाषाणपर]

.....धार्मिक-पुण्डरीक-षण्ड-मोदन-कराय गुणोत्तराय ।

संसार-सागर-निमहस्तावळम्बनवते जिन-शासनाय ॥

आदि-ब्रह्मन्...जिनं तावेनुत सासिर्व्वरु ब्रह्म-जिन-निळ्यकर्त्तरु
ब्रह्म-जिना...सरं मुददिम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महा...राज परमेश्वर
परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुळ-तिळ.....त्रिभुवनमल्ल-देवर वि.....
प्रवर्द्धमानमा-चन्द्रार्क-तारं.....अनवरत-परमकल्या.....लक्ष्मी-सम
.....अनवरत-वित्त.....मुख-दर्पण.....भ्युदय-सूचन.....मृदु-
मधुर.....त्रिभुवनमल्ल.....संकथा वि.....
गेय्युत्तं बनवासि.....लुत्तमिरल्ल.....नियम-स्वाध्याय.....
.....कुळ-तिळक.....सक शिष्ट.....
बळ परा.....लोनत.....मतद.....महाप्र
.....म-भट्टा.....शास्त्र-पास.....न्दान्वयद.....
परम.....अपास्त.....जैन-शा...देवर.....निज-
कीर्त्ति...नर मास.....दिगन्तर.....बिणिय-ब...
.....समू...पुर.....हत्तु गद्याणकयेन्दु...
.....बडगण.....बिणिय-ब...सेट्टि तन्न बसदिगे बिडिसिद
गळ्दे गुणि.....बडगण-जवळिय तन्न बसदिगे बिडिसिद...गुणिगन
मत्त ओन्दु रायि...गळ्दे गुणिगन मत्त...ओन्दु मत्त बिणिय...

...गुणिगन मत्तलोन्दु इन्ती-नाल्कु मत्तल्ल गळ्दे देवर...अङ्ग-भोगकं
पूजारिग्...आहारन्दानकं जीण्णोद्धार...कम्म...बेसकं यिन्तीनाल्कु...
गळ्देय...सासिर्व्वरा-चन्द्रार्क-स्थायिवरं... (हमेशाके अन्तिम वाक्या-
वयव और श्लोक)

जाणनदेम् धरित्रि.....ईय्..... ।
क्षीण.....ओप्पि तोर्प गीर- ।
व्वाण-पु.....उळ्ळं नेगळ्दप्रहारदोळ् ।
बीणेय.....उत्सवोदयम् ॥
...निर्मिसिदोन्द-कृत्रिम-जिनेन्द्रागारमं... ।
...सङ्गनित-पुण्यर्..... ।
...त्तम-सद्धम्म न...सन्देस..... ।
...सुखोदयं..... ॥

...व्यानमागल्के...राजान्वित.....द्रागारमं माडि.....
माडल्के सासिर्व्वरु तम्म...त्रं बिणेय-बम्मि-सेट्टि माडिसिद.....
दोण्टं बेळुवेन्दु कारुण्यं गेय्दु.....इप्फत्तनाल्कु २४.....जन-
सालेयं.....बडगल्ल सासिरव्वर बेसदि समस्त.....यी-जिनालयङ्गळ
धमङ्गळनारय्दु पुरो-वृद्धिगे.....मंगळ महा श्री

[जिनशासनकी प्रशंसा । जब (चालुक्य पदों सहित), त्रिभुवनमल्ल-
देवका विजयराज्य चारों ओर प्रवर्द्धमान था और त्रिभुवनमल्ल.....
बनवासेपर शासन कर रहा था, बिणेय बम्मि-सेट्टिने एक जिनालय
बनवाकर उसे दान दिया और.....अग्रहारके हजारों ब्राह्मणोंके लिये
एक सत्र खोल दिया । (शिला-लेखका अधिकारिता घिसा हुआ है) ।]

२२२

हरकेरे—कन्नड

[विना काल-निर्देशका, पर लगभग १०६० ई०]

[हरकेरे (क्षिमोगा परगना) में, रामेश्वर मन्दिरके रंग-मण्डपमें

उत्तर-पश्चिम स्तम्भपर]

स्वस्ति श्रीमन्महा-मण्डलेश्वर भुज-वळ-गंग पेर्माडि-बम्भदेव मण्डलिय-
 तीर्थद पट्टद-वसदिगे बिट्ट दत्ति (आगेकी दो पंक्तियोंमें दानकी चर्चा है)
 मत्तमातन-पट्टदरसि गङ्ग-महादेवी विट्ट वृत्ति सूळ्येवयल्लु । मत्तमातन
 मग मारसिंग-देव विट्ट वृत्ति आर्द्रवळ्ळि । मत्तमातन विट्ट तळ-वृत्ति
 वसदियाप्रेय कोणरेयि मूडल्लु गदेगळेय मत्तलोन्दु बेदलेगळेय मत्तले-
 रडु । मत्तमातन तम्म सत्य-गंग विट्ट वृत्ति सिरियूरु । मत्तमा-गदेयि
 तेङ्गल्लु विट्ट तळ-वृत्ति गदेगळेय मत्तलोन्दु बेदलेगळेय मत्तलेरडु ।
 मत्तमातन तम्म रक्स-गंग हुलियकेरेय गदेयुमदर सुत्तण बेदलेयम
 बिट्ट । मत्तं हरकेरेय सीमे-पर्यन्त विट्ट गदेगळेय मत्तलोन्दु बेदले-
 गळेय मत्तलेरडु । मत्तमातन तम्म भुजवळ-गंग हेगणलेय विट्ट । हर-
 केरिय वृत्तिय केरेयोळगे विट्ट गदेगळेय मत्तलोन्दु । मत्तमाकेरेयि
 हडुवण कोळद केळगे विट्ट साल-केयिगळेय मत्तलोन्दु मत्तमा-कोळदि
 बडभल्लु विट्ट बेदलेगळेय मत्तलोन्दु । मत्तमातन मग मारसिंग-देव
 नन्निय-गङ्ग-पेर्माडि वसदिय मुन्दे विट्ट गदेगळेय मत्तलोन्दु ।
 मत्तं वसदिय बडगण हेगरेगे परिद काल-केळगे विट्ट बेदलेगळेय
 मत्तलेरडुमदके सीमे मूडण कोळ हडुवळ्ळु मोरसर-कोळ । मत्तं वसदिय-
 हळ्ळिय छुंकमं विट्ट । मत्तं तन्नाळ्वनाडू-ऊर्गोळोळु पद्मावति-देविगे
 काणिकेयं कोट्ट शर ५ मित पणमना-चन्द्रार्क-तारं-वरं ॥ मत्तं वीर गङ्गन

पट्टके हिरियकेरेय केळगे बिहू गदेगळेय मत्तलोन्दु (भागेकी ३ पंक्ति-
योमें दानकी चर्चा है)

[महामण्डलेश्वर भुजबल-गंग पेम्माडि-वर्मदेवने मण्डलि-तीर्थकी
पट्ट बसदिके लिये (उक्त) भूमिका दान किया और उसकी रानी गंग-
महादेवी, उसका पुत्र मारसिंग-देव, उसका छोटा भाई सत्य (नक्षिय)
गंग, उसका छोटा भाई रक्तस-गङ्ग, उसका छोटा भाई भुजबल-गंग, उसका
पुत्र मारसिंग-देव नक्षिय-गङ्ग-पेम्माडि, इन सबने (उक्त) भूमि-दान
किये ।

और अपनेद्वारा शासित नाइके गाँवोंमें पञ्चावती देवीको ५ पणका
उपहार दिया । यह उपहार तबतकके लिये जारी रहेगा जबतक आकाशमें
सूर्य, चन्द्रमा और तारे चमकते हैं ।]

[EC, VII, Shimoga tl. n° 6]

२२३

चिकहन्सोगे—कच्छद

[विना काल-निर्देशका, पर सम्भवतः लगभग १०८० ई०]

[जिन-बस्तिमें, नवरङ्ग-मण्डपके दरवाजेके ऊपर]

श्री-कोण्डकुन्दान्वय देशिय-गण पुस्तक-गच्छद श्री-दिवाक-
रनन्दि-सिद्धान्त-देवर ज्येष्ठ-गुरुगळ्प (भट्टार) दामनन्दि-भट्टार
सम्बन्दि ई-पनसोगेय चङ्गाळव-तीर्थदेह्ला बसदि-गळुमब्बेय बसदियुं
तोरे-नाड बेळिवनेय बसदियुं तत्समुदाय-मुख्यम्

[कोण्डकुन्दान्वय, देशि-गण तथा पुस्तक-गच्छके, दिवाकरनन्दि-सिद्धान्त-
देवके ज्येष्ठ गुरु—दामनन्दि भट्टारक-के अधिकारमें इस पनसोगेके चङ्गाळव-
तीर्थकी सारी बसदियाँ (मंदिर) हैं । अब्बेय बसदि तथा तोरेनाइकी
बसदि भी उनके प्रधान शिष्य-गणके अधिकार-क्षेत्रमें हैं ।

आगेका शिलालेख ।

[इनसोगेमें, आदीश्वर-बस्तिके दाहिनी ओरके दरवाजेके ऊपर)

नोटः—यह लेख ऊपरके ही लेख-जैसा है । उसमें कुछ फेरफार नहीं है ।

[EC, IV, Yedatore tl. n° 23 and 27]

२२४

मदलापुर—कच्छ-भग्न

[काल लुप्त, —पर संभवतः लगभग १०८० ई०]

[मदलापुर (मल्लिपट्टण परगना) में, गोणि वृक्षके नीचे एक पाषाणपर]

(सामने) स्वस्ति श्रीमनु.....वर्य-नल्लरस.....अरकेरेय बसदि
 माडितु इदके.....ल्वदु-गदे.....मण्णु अय्-गण्डुग पिरिय.....दोळ्य-
 गण्डुग-मण्णु विसवूर-मण्णु अय्-गण्डुग कोटेय मण्णु मृ-गण्डुग इनितु
 बसदिगे सल्ल-भूमि अदा-पदके अदटरादित्य अधिरत-पाण्ड्यय बेळु
अरसर-कालदोळ श्रीम.....मन्ने-ग.....सिवय्य.....
 गुड्य.....मण्डळ कलाचन्द्र-सिद्धान्त-देव-भट्टार शिष्य.....
 अमलचन्द्र-भट्टारकर्गे.....बसदिय माडि.....सल्लिसदु.....
 (हमेशाका अन्तिम श्लोक) ।

सेनबोव दे.....

[.....नल्लरसने अरकेरेकी बसदि बनाई । (उक्त) भूमिका दान
 उसके लिये किया । जो कोई इसे नष्ट करेगा, वह अदटरादित्यके क्रोधका
 पात्र होगा ।

.....अरसके समयमें,मण्डळ कलाचन्द्र-सिद्धान्तदेव-भट्टारके
 शिष्य अमलचन्द्र-भट्टारकने इस बसदिको बनवाया । हमेशाका अन्तिम
 श्लोक । सेनबोव दे.....]

[EC, V, Arkalgud tl. n° 102]

२२५

खजुराहो—संस्कृत

[सं० ११४२=१०८५ ई०]

[इस प्रतिमा-लेखके लेखका पता नहीं है, क्योंकि यह लेख एक खण्डित
 प्रतिमापरसे ए. कर्निघमने लिया है, जो कि प्रतिष्ठाकाल और प्रतिमाके
 नामके सिवा और कुछ नहीं बताता । इस प्रतिमाकी प्रतिष्ठा या स्थापना

श्रेष्ठी श्री वीरतसाह और उसकी पत्नी सेठानी पद्मावतीने की थी। इस लेखके ऊपरसे ए. कनिंघमने फलितार्थ यह निकाला है कि प्राचीन बौद्ध मन्दिर ग्यारहवीं शताब्दिके जैनोंद्वारा अपने काममें लाया गया था। संभव है बौद्धमतकी हीनताके समय खजुराहामें जैनोंकी संख्या अधिक होनेसे उन्होंने उस प्राचीन बौद्ध मन्दिरको अपना बना लिया हो; या हो सकता है कि कनिंघमका यह अनुमान ही गलत हो कि गन्धरई-भग्नावशेष जैनोंका न होकर बौद्धोंका था। अस्तु, जो कुछ हो। इन खण्डित दि० जैन मूर्तियोंसे उस समय खजुराहोमें जैनधर्मकी प्रधानता द्योतित होती है।]

[A. Cunningham, Reports, II, p. 431, a.]

२२६

हुम्मच—संस्कृत तथा कन्नड

[शक १००९=१०८७ ई०]

(उत्तरमुख)

स्वस्ति-श्री-लसदुग्र-वंश-तिलकः श्री-वीर-देवात्मजः
 दृष्यद्-वैरि-निकाय-दर्प-दलन-प्रादुर्भवद्-विक्रमः ।
 सम्पूर्णेन्दु-करावदात-सु-यशो-व्यालिप्त-दिग्-भित्तिकः
 श्रीमान् विक्रमशान्तरो विजयते लक्ष्मी-वधू-वल्लभः ॥
 ओदेदु तटत्तटेम्ब पद-ताटनेयिन्दे दिशा-गजादिगल् ।
 मदमुडुगिळ्दुवस्त्रि पुगुविर्पेडे गाणने नागराजनुम् ।
 कदळद गम्पदिन्दमेळे कम्पिसे कूडे कलङ्के सागरम् ।
 बिदिर्दलगिन्दे तारकि कळल् तरलोङ्गुगनार्दडोडुगुम् ॥
 अदिरदे बर्प चप्परिप कप्परि पार्दलगोत्ति शास्त्रमम् ।
 बिदिर्दु मरल् मरल्चेनुते कुत्तुव कुत्तिदोडान्तु कट्टिदान-
 पददोळे सुत्ति मुत्तिदवोलेरने तोरुव गेण बिनणक् ।
 ओदवुव बिनण नेगळलोङ्गुग नीनरसङ्क-गाळनै ॥

परिदुदराम्निं मरेदु तिन्द पेणङ्गळिनादजीर्णदिम् ।

मरुळ बळाळि वैद्य-मरुळं बेसगोण्डडे दन्ति मदेनल् ।

करियने नुङ्गि सूङ्गकोळे वैद्य-मरुळ नगे वीर-लक्ष्मि नो-

डरि-हर निन्निनायितदेने विक्रम-शान्तरनादनोङ्गुगम् ॥

अन्तेनिसिद विक्रम-शान्तर-देवर स्स(श्च)क-वर्ष १००९ नेय
प्रभव-संवत्सरद शुद्ध-पाडिवदन्दु पञ्च-वसदिय पूजा-विधान-जीर्णो-
द्धरणकमल्लिर्ण ऋषि-समुदायकाहार-दानार्थमुमागि ॥

सरसति निनगिनितु कला-

परिणति नेगर्दजितसेन-पण्डितरिन्दम् ।

दोरेवेत्तु देवियादी-

पिरियतनं निन्नदस्तिदवर महत्त्वम् ॥

एनिसिद परवादीभसिंहापर-नामधेय-श्रीमत्-अजितसेन-पण्डित-
देवर कालं कर्च्चि धारा-पूर्वकमा-सम्बन्धद समुदायं मुख्यमागे कोट्ट
ग्रामङ्गळ् (यहाँ दानकी विस्तृत चर्चा तथा वे ही अन्तिम वाक्यावयव
और श्लोक आते हैं) द्रमिळ-गणो लसतितरां निरुपम-धी-गुण-महितैः ॥

श्रीमत्-सेनबोवं शोभनय्यं दिगम्बर-दासि बरेदम् ॥

[स्वस्ति । वीर-देवके पुत्र विक्रम-शान्तरकी प्रशंसा । उसका मूल नाम
ओङ्गुग था । उसकी प्रशंसाके श्लोक । ओङ्गुग 'विक्रम-शान्तर' हो गया ।

विक्रम-शान्तर-देवने (उक्त मितिको) पञ्चवसदिमें पूजाके लिये, मर-
म्मत तथा ऋषियोंके आहारके लिये, वादीभसिंह इस द्वितीय नामसे प्रसिद्ध
अजितसेन-पण्डित-देवके पैरोंके प्रक्षालनपूर्वक (उक्त) गौबोंका दान,
संपूर्ण करोंसे मुक्ति दिलाकर, किया । वे ही अन्तिम श्लोक ।

द्रमिळ-गणकी अत्यन्त शोभा है । सेनबोव शोभनय्य दिगम्बर-
दासिने इसे लिखा है ।]

२२७

कोणूर (जिला बेलगाँव)—कन्नड

[विक्रमादित्य चालुक्यका १२ वां वर्ष=१०८७ ई०]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं
जिनशासनं ॥

श्रीनारिप्रिये(य) कण्डु तन्न नयनद्वन्द्वाळकत्रातमं जैनान्निद्व(द्वि)नखा-
ल्लियोळमधुकरत्रातं सरोजाळियं तानैतिल्लेगे तन्दुदेन्दु बगेदळ्मुग्धत्व-
दिन्दा जिनं भूनाथेशधरेश मोक्षुनिधिगंगी गायुमं श्रीयुमं ॥

खस्ति श्री त्रैभुवनाश्रयं पृथुधराश्रीवल्लभं शूकरन्यस्तेद्धध्वजलाञ्छनं
नुतमहाराजाधिराजं यशोविस्तारं परमेश्वरांकपरमं भट्टारकं शात्रवोन्म-
स्तन्यस्तपदाब्जनूर्जितयशं चालुक्यकण्ठीरवं ॥

सत्याश्रय-कुळतिळकं सन्य युविष्ठिरननेकविद्यानिपुणं प्रत्यक्षविक्र-
मादित्याल्यंतयशोविळासि त्रिभुवनमल्लं ॥

तद्राज्यमुत्तरोत्तरवद्विप्रभुचन्द्रसूर्यरुळ्ळन्नेवरं भद्रं सल्लुत्तमिरे रिपुवि-
द्रावणतत्प्रियात्मजं जयकर्ण ॥

जयकर्णवीनिपाळभासुरलसल्लाटाटिकं श्रीवधूनयनाळंकृतरूपनूर्जि-
तयशःश्रीकामिनीवल्लभं जयकान्ताभुजदण्डनाहवगदादण्डं गुणोन्मण्डितं
नयदिं कूडिधराधिपत्यदोळिरल् चामण्डदंडाधिपं ॥

खस्ति समधिगतपंचमहास्तुल्यविराजमानशब्द महाश्रीविस्तारं
पृथुविमळगुणस्तोमं मण्डळेस्वरं सेननृपं ॥

वदनं निर्भळवाग्वधूसदनवात्मीयोरुवक्षं लसत्सदळंकाररमाविळास-
विळसल्लक्षं खदोईण्डबुन्मदवीरारिशिरःप्रकन्दुकहतिक्रीडोदण्डं निजा-
भ्युदयं सर्वजनानुरागदुदयं श्रीसेनभूपाळन ॥

इभपतियंतिरे दक्षिणशुभदोषत्करविळासि भासुरतेजं सुभटमदकरट-
विघटनविभवं चामण्डरायनिरे निज सभेयोळ् ॥

शुभमति योगधरनवोलभयप्रदनव्यणव्यनार्जितसुयशोविभवं निजसमे-
योळिरल्पभुमन्नोत्साहशक्तिगुणसंपन्नं ॥ दुष्टोप्रविनिप्रहर्दि शिष्टप्रतिपाळ-
नदि निळेयनाळुतुं शिष्टेष्टप्रदम्नत्युत्कृष्टदे राज्यीयुत्तमिरे सेननृपं ॥

श्रीरमणीभासि बळत्कारगणाम्भोधिकोण्डनूरोळ् निधिगं भूरमणी-
मकुटाळंकारदि नेसेदोषि तोर्प जिनमन्दिरमं ॥ एसेदिरे माडिसि
वृत्तियन सदळमेनलोसेदु बिडिसुतं निधिगं पेळिसिदनदेन्तेन्दडे
निजलसदाचार्यान्वयोद्भवप्रक्रमं ॥

श्रीलीलोभनयाक्षि निर्मळदयादेहं गुणोन्मल्लिकामालाकुन्तळभासि
भासुरतरश्रीजैनधर्मोद्भवं त्रैलोक्योदरवर्त्तिकीर्त्तिविळसत्स्याद्वादानामांकितं
मूलोकके निरन्तरं सोगयिकुं श्रीमूलसंघान्वयं ॥

जिनसमयमेव सरसिज वनदोळगलहोषि तोर्प हेमाम्बुजदन्तनुप-
ममेने करमेसेबुदवनियोळ् सद्गुणगणं बळत्कारगणं ॥

वारिधिवेष्टिताखिलधरातळशोभितकीर्त्तितद्बळत्कारगणाम्बुजाकरवना-
न्तरदल्लि मराळलीलेयि चारुचरित्रमार्गद जिनेशमुनीश्वरदुद्धपापहर्म्मा-
रमदेभकुंभविलुठोत्कटशूरनेकरोषिदर ॥

उदयगिरीन्द्रदोळेसेवथुदितोदयवागि बळेप चन्द्रन तेरदन्तुदियिसिदं
कुवळयकभ्युदयकरं तद्गणाद्रियोळ्गणचन्द्रं । पक्षोपवासि देवनवक्षय-
तन्मुनिपदाब्जमधुकरशीळं रक्षितगुणगणनिळयमुमुक्षुजनानंदियप्प
नयनन्दिबुधं ॥

आ नयनन्दिय शिष्यं नानाविद्याविळासनूर्जिततेजं श्रीनारीनाथ-
नवोळ् भूनुतना श्रीधराय्यतिपतितिळकं । तन्मुनिपदाब्जमधुकरनुम-

दमिथ्याकथाविमथनं मुनिपं सन्मार्गि चन्द्रकीर्तिं वियन्मार्गद चन्द्रनन्ते
कुवळयपूज्यं ॥

अतिचतुरकविचकोरप्रततिं दरस्मेरनयनमीटिदपुट्टु दंबित कर्ण-
चंचुपुट्टिं श्रुतिकीर्तिमुनीन्द्रचन्द्रवाक्चन्द्रिकेय ॥

श्रीधरदेवं सुयशःश्रीधरनधिगतसमस्तजिनपतितत्व श्रीधरनेसेदं
सद्वाक्श्रीधरना चन्द्रकीर्तिदेवन तनयं ॥

आ मुनिमुख्यन शिष्यं श्रीमच्चारित्रचक्रि सुजनविळासं भूमिपकिरीट-
ताडितकोमळनखरश्मि नेमिचन्द्रमुनीन्द्र ॥

श्रीधरवनजद सिरियं साधिपेनेम्बन्तिरेसेव मधुपन तेरनं श्रीधरपद-
सरसिजदोळ साधिप वोलेसेदु वासुपूज्यं पोस्तं ॥

त्रैविद्यास्पदवासुपूज्यमुनिपं स्याद्वादविद्यावचःप्रावीण्यप्रविभासि-
नोडनुडियल्-भव्याळिगायुतुद्भवं नोवायुतु प्रतिवादिगळिगे पिरिदुं भ्रान्तायु
मिथ्यामदोद्भीवर्गेन्तु निजैकवाक्यदिननेकान्तत्वमं तोरिदं ॥

श्रीवाणीवदनांबुजातरसमं तनक्किरिं पीरुतुं लावण्यांगितपःप्रकृष्टवधुवं
व्यालिंगनंगेयुतुं जीवानन्ददयावधूवदनमं कूर्त्तितियिं नोडुतुं त्रैविद्यास्प-
दवासुपूज्यमुनिपं तानिप्पनी धात्रियोळ् ॥

बृंहितपरमतमदकरिसिंहं त्रैविद्यवासुपूज्यानुजनुद्वाहस् संहरनेसेदं
संहृतकामं यशस्विमलयाळबुधं ॥

अतिचतुरकविकदम्बकनुतपद्मप्रभमुनीश राद्धान्तेशं श्रुतकीर्त्तिप्रियने-
सेदं यतिप्रत्रैविद्यवासुपूज्यतनूजं ॥

श्रीरमणीभासि बळात्कारगणाम्भोजमधुपरिरितिरे सततं चारुतरं
हिल्लेयरवतारं तद्गणसरोजगुणद वोलेसेगुं ॥

तत्कुल राजान्वयदोळ् सत्कविराज-प्रियावलोकनलीलोद्यत्कनका-
म्बुजदन्ते बृहत् किरणं सोरिगांकविभु धरेगेसेदं ॥

तत्सुत रमळिनसंकळजनोत्सवकर रुचिवचनरचनाळापर्मोत्सर्ग्यप्रभुसु-
भटमरुत्सुतरा बल्लकल्लगामण्डबुधर् ॥ श्रीवधुगे भवतियन्ता भूविदितमे-
नत्केमानकागियनन्ता श्रीविभुकलिदेवं बलदेवानुजनेम्ब कीर्त्तिगास्पद-
नादं ॥ अळिकुळकुन्तळे कुवळयदळलोचने चक्रवाककुचे कनकलतो-
ज्ज्वळमध्ये कनकिगामण्डल सत्तत्प्रभुमनोजसति रतियन्नळ् ॥

• वरचूतद्रुमवेषनोज्ज्वळलतापुष्पांकुरोत्पत्तियन्तिरे तदपंतिगळिगे पुट्टि-
दनुरुश्रीजैनधर्मोत्सवं वरभव्याळिमनोनुरागविळसब्बाशीर्वचोविस्तरं पर-
मानंदयशोधिकं निधियमं सत्पात्रदानोद्यमं ॥

श्रीधरदेवपदाब्जश्रीधरनादोळिपिनि हृदब्जदोळीतं श्रीधरनादं नि-
धिगं साधितगुरुचरणनप्पवं पड्येदुदें ॥ तत्पुत्रर् श्रीरमणीकनत्कनक-
कुण्डळ रावनिताविळाससस्मेरकटाक्षवीक्षणपरर्पुरुषोत्तम मरुद्धकीर्त्तिगळ्
श्रीरम वासुपूज्यमुनिपादपयोरुहभृंगरोप्पुवर्चरुगुणाद्यरागि कलिदेवल-
सद्वल देवरीर्वरुं ॥

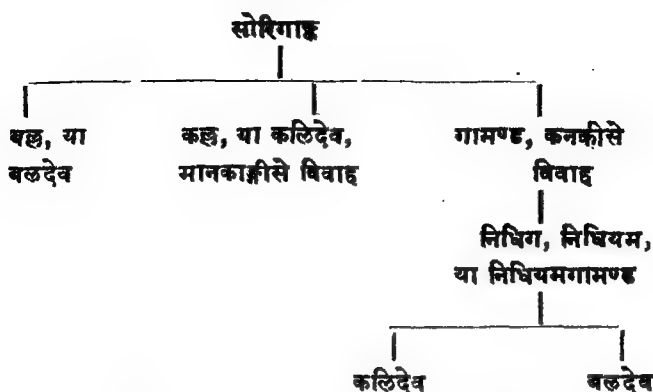
स्वस्ति श्रीमञ्चालुक्कयविक्रमकालद् १२ नेय प्रभवसंवत्सरद्
पौषकृष्णचतुर्दशीवज्ज्वारदुत्तरायणसक्रान्तियन्दु श्रीमन्महाप्रभु निधि-
यमगामण्डं तन्न मान्यदोळ्यो हिंडादिय होलदोळ् सर्वबाधापरिहारवागि
कूण्डिय कोललिर्मत्तर्केय्युमं पनेरडु मनेयु मनोन्दु गाणमुमोन्दु तोष्टमुमं
तळवृत्तियागि माडि कोट्टना देवसं श्रीमन्महाप्रधा.....ण.....
गेयि.....तज्जिनालयवन्दनार्थं वन्दु श्रीमन्महामण्डलेश्वर.....
कब्बत्तुपं देवरंगभोगरंगभोगकं खण्डस्फटितजीर्णोद्धारकं तन्न सीवट-
दोळगण त.....वणनागि माडि.....श्रीधर-पंडितदेवर श्रीपा-

दप्रक्षालनं माडि.....पाळिसुत्तं तत्काळद ४६ नेय पुवसंव-
त्सरद पौषशुक्लत्रयोदशी.....दु.....श्रीमद्विक्रमचक्रिय प्रिया-
त्मजं जयकर्ण.....बसदिय भोगकं रि [बिजना] हार] कं....
धिगो.....प्य करंजगोहूरद.....यसाम्य.....रडु गद्यान.....
+ + +.....[श्री] मदवासुपूज्य [मुनि] देवर पा (दप्रक्षा-
ळन)म(मं) मा(डि).....धर्मरक्षणा (फ)लं.....[गंगप्र]-
यागाकु-[रुक्षेत्र].....दान्त महा (?) (१) कित्त फळंगळं
पडगुम् [॥] तद्धर्म तत्तीर्थगाघातकं श्रीमूळसंघदुग्धाब्धोगुणोजनि-
बाळकारगणं बसदिय स्तंभस्थापनेयन्दु निधियमगामण्डं सर्वबाधापरि-
हारवागि कोट्ट.....केय्य मने १ कूण्डिय कोल कम्म०
१५० [॥]

[इस शिलालेखके प्रथम अंशका ऐतिहासिक भाग चालुक्य राजा
त्रिभुवनमल्ल या विक्रमादित्य द्वितीयके वर्णनसे शुरू होता है, और दूसरा
नाम उसके पुत्र जयकर्णका दिया है। फिर लेखमें जयकर्णके अधीनस्थ
दो शासकोंका उल्लेख आता है,—

वण्डाधिप (सेनापति) चामण्ड, जो कुण्डी देशका शासक था, और
मण्डलेश्वर सेन, जिसका शासन-क्षेत्र नहीं दिया हुआ है।

यह सेन संभवतः रट्टोंकी सूचीमेंका द्वितीय नाम है। तत्पश्चात् बला-
त्कारगणके व्यक्तियोंकी गणना आती है। ये कोरके उच्च-गुरु थे। बादमें
'हिल्लेयर' खान्दानका परिचय, जिसके घरके लोग सेनके राज्यकालमें गाँवके
चौकीदार थे। हिल्लेयरको तो बलात्कारगणका ही बतलाया गया है, पर
सोरिगाङ्गके विषयमें कुछ नहीं बतलाया गया। इस खान्दानके लोगोंके ये
नाम दिये गये हैं:—



प्रथम दान निधियमगामण्डने अपने बनाये हुए कोण्डनूरुके मन्दिरको शक वर्ष १००९ (१०८७-८ ई०) में, जो कि प्रभव संवत्सर था, किया था। उसी समय एक दान कल्ल नामको धारण करनेवाले दूसरे राजाने, जो इसी मन्दिरके दर्शन करनेके लिये आया था, दिया था। दूसरा दान शक सं. १०४३ (११२१-२ ई०) प्लवसंवत्सरमें, सम्राट् विक्रमके प्रिय पुत्र जयकर्णने अपने पिताके राज्यमें किया था। तीसरा दान निधियमगामण्डका ही है। इस दानमें उसने कुण्डी-वृत्तमें एक मकान और १५० 'कम्म' भूमि दी थी।]

[JB, X, p. 179-181; p. 287-292, t.; p. 293-298, tr;
ins. n° 8, (1st part).]

२२८

दुबकुण्ड—संस्कृत

सं० ११४५=१०८८ ई०

[दुबकुण्ड ग्राममें स्थित जिनमन्दिरका शासनपत्र ।]

पं. १ ओं ॥ [ओं] न [मो] वीतरागाय ॥ आ -- द्र णि ट -
५५ टना- [चत्पा] दपीठं लुठन्मं [दा] रत्नगमं [द] गुंज [द]
लि [म] जिष्ठयूत सांराविणम् । [त] -

- २ [त्पा] ' ५ ५वद्व[च]: ५रमु --- ५[तां]सं ५[ति] - ५द्वे[ग]-
मिवाकरोत्स ऋषभस्वामी श्रियेस्तात्सता[म्]॥वि (वि) आ-
३ [णो] गुण[संहति] हततमस्तापो निजज्योतिषा [यु] का-
त्मापि जगति संगतजय [श्च]के सरागाणि यः । उन्माद्यन्म-
४ कर[ध्व]जोर्जितगजग्रासोल्लसकेसरी संसारोग्रदच्छिदेस्तु
स मम श्री सां(शां)तिनाथो जिनः ॥ जा[र्ध्य]सखदखंडित-
५ क्षयमपि क्षीणाखिलोपक्ष[यं]साक्षादीक्षितमक्षिभिर्दधपि प्रौढं
कलंकं तथा । चिह्नत्वाद्यदुपांतमाप्य सततं [जात]-
६ [स्तथा?]नंदकृच्चंद्रः सर्वजनस्य पातु विपदश्चंद्रप्रभोर्हंस
नः ॥ सो(शो)कानोकहसंकुलं रतितृणश्रेणि प्रणश्य [द्रुम]-
७ - - [त्मा]ध्वगधूममुद्रनमहामिथ्यात्ववातध्वनि । यो
रागादिमृगोपघातकृतधीर्ध्यानाग्निना भस्मसाद्भावं कर्म-
८ वनं निनाय जयतात्सोयं जिनः सन्मतिः ॥ प्रसाधितार्थ-
गुर्भव्यपंकजाकर[भा]स्करः । अंतस्तमोपहो वोस्तु गो-
९ तमो मुनिसत्तमः ॥ श्रीमज्जिनाधिपतिसद्वदनारविंदमुद्रच्छ-
दच्छतरवो(वो)धसमृद्धगंधम् । अध्यास्य या जगति पं-
कजवासिनी-
१० ति ख्या[ति]जगाम जयतु सु[श्रु]त देवता सा ॥ आसीत्क-
च्छपघातवंशतिलकखैलोक्यनिर्यद्यशःपांडुश्रीयुवराजसूनुर-
११ समद्यद्भीमसेनानुगः । श्रीमा[न]र्जुनभूपतिः पतिरपाम-
प्याप यत्तुल्यतां नो गांभीर्यगुणेन निर्जितजग[द्ध]न्वी धनु-
१२ र्विषया ॥ श्रीविद्याधरदेवकार्यनिरतः श्रीराज्यपालं
हठात्कंठास्थिच्छिदनेकवाणनिवहैर्हत्वा महत्साहवे ।

- १३ [डिंडीरा]वलिचंद्रमंडल[मि]लन्मुक्ताकलापोज्ज(ज्ज)लैबैलोक्यं
सकलं यशोभिरचलैर्योजस्रमापूरयत् ॥ यस्य
- १४ प्रस्थानकालोत्थितजलधिरवाकारवादित्रशब्दा(ब्दा)वेगान्नि-
र्गच्छदद्रिप्रतिमगजघटाकोटिघंटारवाश्च । संस-
- १५ पन्तः समंतादहमहमिकया पूर्यंतो विरेमुर्नो रोदोरंभ्रभागं
गिरिविवरगुरुद्यत्प्रतिध्वानमिश्राः ॥ दिक्च-
- १६ क्राक्रमयो [ग्य] मार्गणगणाधाराननेकान् गुणानच्छिन्ना-
ननिशं दधद्विधुकलासंस्पर्द्धमानद्युतीन् । [सू] नु-
- १७ [च्छि]न्नधनुर्गुणं विजयिनोप्याजौ विजित्यो [जि] तं
जातोस्मादभिमन्युरन्यनृपतीनामन्यमानस्तृणम् ॥ यस्या-
त्य [द्रुत]-
- १८ वाहवाहनमहाशस्त्रप्रयोगादिषु प्रावीण्यं प्रविकल्पितं पृथु-
मतिश्रीभोजपृथ्वीभुजा । च्छत्रालोकनमात्रजात-
- १९ भयतो दृप्तारिभंगप्रदस्यास्य स्याद्गुणवर्णने त्रिभुव[ने]
को लब्ध(ब्ध)वर्णः प्रभुः ॥ तुरगखरखुराग्रोत्खात-
[धात्री]-
- २० समुत्थं स्थगयदहिमरस्ते(स्ते)मंडलं यत्प्रयाणे । प्रचुरतर-
रजन्याशेषतेजस्वितेजोहतिमचिरत
- २१ एवा[शं]सतीवानिवारम् ॥ शरदमृतमयूखप्रेखदंशु-
प्रकाशप्रसरदमितकीर्तिव्याप्तदिक्चक्रवालः । अजनि
विजय-
- २२ पालः श्रीमतोस्मान्महीशः शमितसकलधात्रीमंडलक्लेशलेस
(शः) ॥ भयं यच्छत्रूणां त्रिदशतरुणीवीक्षितरणे

- २३ क्रमेणाशेषाणां व्यतरदसदप्यात्मनि सदा । सतोप्यंशना-
दादव-[नि]वलयस्याधिकमतो बु(बु)धानामाश्चर्यं व्यत-
नुत
- २४ नरेन्द्रो हृदि च यः ॥ तस्माद्विक्र[म]कारिविक्रमभर-
प्रारंभनिर्भेदितप्रोत्तुंगाखिलवैरिवारणघटोद्यन्मां[स]कुंभ-
- २५ स्थलः । श्रीमान्विक्रमसिंहमूपतिरभूदन्वर्थनामा समं
सर्वसा(शा)प्रसरद्विभासुरयशःस्फारस्फुरत्केसरः ॥
- २६ वा(बा) लस्यापि विलोक्य यस्य परिघाकारं भुजं दक्षिणं
क्षीणाशेषपराश्रयस्थितिधिया वीरश्रिया संश्रितम् । सर्वगेष्व-
- २७ वगूहनाग्रहमहंकारादहंपूर्विका राज्यश्रीरक्ता ता]धिगस्य
विमुखी सर्वान्यपुंवर्गतः ॥ अल्यंतोद्भुतविद्वित्तिमि-
- २८ रभरमिदि च्छादितानी[ति]ताराचक्रे विश्वक् प्रकाशं सकल-
जगदमंदावकाशं दधाने । निःपर्यायं दिगास्यप्रसरदुरु-
- २९ क[राक्रां]तधात्रीधरेन्द्रे यस्मिन् राजांसु(शु)मालिन्यहह सति
वृथैवैषकोन्योशुमाली ॥ यद्विजयेवरतुरंगसुराग्रसं-
- ३० गक्षुण्णावनीवलयजन्यरजोभिसर्पत् । विद्वेषिणां पुरवरेष्टु
तिरोहितान्यवस्तृकरं प्रलयकालमिवादिदे-
- ३१ श ॥ तस्य क्षितीश्वरवरस्य पुरं समस्ति विस्तीर्णशोभम-
मितोपि चडोभसंज्ञम् । प्राप्तेप्सितक्रयसमग्रदिगागतांगि-
- ३२ व्यावर्ण्यमानविपणिव्यवहारसारम् ॥ ० ॥ आसीज्जायस-
पूर्विनिर्गतवणिग्वंशांव(ब)राभीशुमान् जास्रकः प्रक-
[टाक्षता]-

- ३३ धनिकरः श्रेष्ठी^१ प्रभाधिष्ठितः । सम्यग्दष्टिरमीष्टजैन[च]
रणद्वंद्वार्चने यो ददौ पात्रौघाय[चतु]र्विधं[त्रि]विबु(बु)-
- ३४ धो दानं युतः श्रद्धया । श्रीमज्जिने[श्वर]पदांबु(बु)रुह-
द्विरेफो विस्फारकीर्ति[ध]वलीकृतदिग्विभागः । पुत्रोस्य
वैभवपदं
- ३५ जयदेवनामा सीमायमानचरितोजनि सज्जनानाम् ॥ रूपेण
सी(शी)लेन कुलेन सर्वस्त्रीणां गुणैरप्यपरैः
- ३६ शिरस्सु । पदं दधानास्य व(ब)भूव भार्या यशोमतीति
प्रथिता पृथिव्याम् ॥ तस्यामजीजनदसावृषिदाहडाख्यौ
पुत्रौ प-
- ३७ वित्रवसुराजितचारुमूर्त्ति । प्राच्यामिवार्कस(श)शिनौ समयः
समस्तसंपत्प्रसाधकजनव्यवहार हे[तू] ॥ प्रोन्माद्यत्सकला-
- ३८ रिकुंजरशिरोनिर्द्धारणोद्यद्यशोमुक्ताभूषितभूरभूरपि भियान्नो-
न्मार्गगामी च यः । सोदाद्विक्रमसिंहभूष-
- ३९ तिरतिप्रीतो यकाभ्यां युगश्रेष्ठः श्रेष्ठिपदं पुरेत्र परम^२प्राकार-
सौधापणे ॥ ० ॥ आसीद्विशुद्धतरवो(बो)धचरित्रद-
- ४० छिनिःशेषशू(सू)रिनतमस्तकधारि[ता]ज्ञः । श्रीलाटवागट-
गणोनतरोहणाद्रिमाणिक्यभूतचरितो गुरुदेवसे-
- ४१ नः ॥ सिद्धांतो द्विविधोप्यवाधितधिया येन प्रमाणध्व[नि]
ग्रंथेषु प्रभवः श्रियामवगतो हस्तस्थमुक्तोपमः ।
- ४२ जातः श्रीकुलभूषणोखिलवियद्वासोगणप्रामणीः सम्यग्द-
र्शनशुद्धवो(बो)धचरणालंकारधारी ततः ॥ रत्नत्रया[भ]रण-

^१ शायद 'श्रेष्ठिप्रभा' में परिवर्तित । ^२ 'परमप्राकार' पढ़ो ।

- ४३ धारणजातशोभस्तस्मादजायत स दुर्लभसेनसूरिः । सर्वं
श्रुतं समधिगम्य सहैव सम्यगात्मस्वरूपनिरतो भवदिद्व-
- ४४ [वी]र्यः ॥ आस्थानाधिपतौ बु(बु)धा[दवि]गुणे श्रीभोज-
देवे नृपे सम्येष्वंव(ब)रसेनपंडितशिरोरत्नादिषूद्यन्मदान् ।
योने-
- ४५ कान् शतशो व्यजेष्ट पटुतामीष्टोद्यमो वादिनः शास्त्रांभोनि-
धिपारगोभवदतः श्रीशान्तिषेणो गुरुः ॥ गुरुचर-
- ४६ णसरोजाराधनावाप्तपुण्यप्रभवदमलबु(बु)द्धिः शुद्धरत्न-
त्रयोस्मात् । अजनि विजयकीर्तिः सूक्तरत्नाव-
- ४७ कीर्णार्णं ज[लधि]भुवमिवैतां यः प्रस(श)स्ति व्यधत्त ॥
तस्मादवाप्य परमागमसारभूतं धर्मोपदेशमधिकाधिगत-
- ४८ प्रबो(बो)धाः । लक्ष्म्याश्च वं (बं)धुसुहृदां च समागमस्य
मत्वायुषश्च वपुषश्च विनश्चरत्वं ॥ प्रारब्धा (ब्धा) धर्मकां-
तारविदाहः
- ४९ साधु दाहडः । सद्विवेकश्च[कू]केकः सर्पटः सुकृते पटुः ॥
तथा देवधरः शुद्धः धर्मकर्मधुरंधरः । चं[द्रा]लिखि-
- ५० तनाकश्च महीचंद्रः शुभार्जनात् ॥ गुणिनः क्षणनाशि-
श्रीकलादानविचक्षणाः । अन्येपि श्रावकाः केचिद-
- ५१ कृते[धन]पात्रकाः ॥ किं च लक्ष्मणसंज्ञोभूद हरदेवस्य
मातुलः । गोष्ठिको जिनभक्तश्च सर्वशास्त्र-
- ५२ विचक्षणः ॥ शृंगारोल्लिखितांव(ब)रं वरसुधासांद्रद्रवापां-
दुरं सार्थं श्रीजिनमन्दिरं त्रिजगदानंदप्रदं सुं-

- ५३ दम् । संभूयेदमकारयन्गुरुशिरःसंचारिकेत्वंव(ब)रप्तातेनो-
च्छलतेव वायुविहतेर्धामादिश[त्पश्य-]
- ५४ ताम् ॥ ० ॥ अयैतस्य जिनेश्वरमंदिरस्य निष्पादनपूजन-
संस्काराय कालान्तरस्फुटितत्रुटितप्रतीका-
- ५५ रायं च महाराजाधिराजश्रीविक्रमसिंहः स्वपुण्यरासे(शे)
रप्रतिहृतप्रसरं परमोपचयं चेतसि [नि] धायं
- ५६ गोणीं प्रति विंशोपकं गोधूमगोणीचतुष्टयवापयोग्यक्षेत्रं
च महा[चक्र]ग्रामभूमौ रजकद्रहपू-
- ५७ र्वदिग्भागवाटिकां वापीसमन्वितां । प्रदीपमुनिजनशरीरा-
भ्यंजनार्थं करघटिकाद्वयं च दत्तवान् । तच्चाचं-
- ५८ द्वाकं महाराजाधिराजश्रीविक्रमसिंहोपरोधेन । “व (ब) ड-
भिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः । यस्य य-
- ५९ स्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फल”मिति स्मृतिवचना-
निजमपि श्रेयः प्रयोजनं मन्यमानैः सकलैरपि
- ६० भाविभिर्भूमिपालैः प्रतिपालनीयमिति ॥ ० ॥ लिलेखो-
दयराजो यां प्रस(श)स्ति शुद्धीरिमाम् । उत्कीर्णवा-
- ६१ न् शिलाकूटस्तील्हणस्तां सदक्षराम् ॥ संवत् ११४५
भाद्रपदसुदि ३ सोमदिने ॥ मङ्गलं महाश्रीः ॥

[यह शिलालेख सन् १८६६ में कप्तान डब्ल्यू. नार. मैलविल्लीको दुबकु-
ण्डके एक मन्दिरके अग्रावशेषमें मिला था । इस लेखमें कुल ६१ पंक्तियाँ
हैं । ५४-६१ की पंक्तियोंको छोड़कर शेष लेख श्लोकोंमें हैं । इसको प्रशस्ति
(पंक्तियाँ ४७ और ६०) कहा है । इसको विजयकीर्ति (पं. ४६) ने
बनाया, उदयराजने (पं. ६०) लिखा और उत्कीर्ण करनेवाला

शिखी तिलहण (पं. ६१) था । इस सारे लेखमें 'ब' 'व' अक्षरसे लिखा गया है ।

इस लेखका उद्देश्य एक जैनमन्दिरकी—जिसके कि पास यह शिलालेख मिला है—स्थापनाका उल्लेख करना है । इसकी स्थापना कुछ निजी भादमियोंने की थी और इस मन्दिरको कुछ दान महाराजाधिराज विक्रमसिंह (पं. ५४-५८) ने दिया था । इस शिलालेखके लिखनेके समय, विक्रम सं. ११४५ में, वे दुबकुण्डके आसपासके प्रदेशपर शासन करते थे । इस लेखके स्पष्टतः दो विभाग हो जाते हैं: पहले विभागमें (पंक्तियाँ १०-३२) युवराज विक्रमसिंह और उनके पूर्वजोंका वर्णन है; दूसरे में (पंक्तियाँ ३२-५१) मन्दिरके संस्थापकों (या प्रतिष्ठापकों) तथा उनसे सम्बद्ध कुछ मुनियोंका वर्णन है । प्रारम्भके छह श्लोकों (पं. १-१०) में कवि ऋषभस्वामी, शान्तिनाथ, चन्द्रप्रभ और महावीर इन तीर्थङ्करोंकी, तथा गणधर गौतम, ध्रुतदेवताकी जो पंकजवासिनीके नामसे जगत्में प्रसिद्ध हैं, स्तुति करते हैं ।

युवराज विक्रमसिंहके वर्णन (पं. १०-३२) में ऐतिहासिक तथ्य इस प्रकार है:—

कच्छपघात (कछवाहा) वंशमें—

१ पांडु श्रीयुवराज (?) हुए । उनके बाद उनके लड़के—

२ अर्जुन हुए, जिन्होंने विद्याधरदेवके कार्यसे, युद्धमें राज्यपालको मारा । उनके पुत्र—

३ अभिमन्यु हुए, जिनके पराक्रमकी प्रशंसा राजा भोजने की थी ।
उनके पुत्र—

४ विजयपाल हुए; और फिर उनके पुत्र—

५ विक्रमसिंह हुए, जिनके कालकी तिथि यह शिलालेख संवत् ११४५ भाद्रपद सुदि ३ सोमवार बतलाता है ।

दूसरे विभागके लेखका सार यह है कि विक्रमसिंहके नगरका नाम चंदोभा था । यह चंदोभा वर्तमान दुबकुण्ड ही होना चाहिये और उस समय यह एक बड़ा भारी व्यापारका केन्द्र रहा होगा । ३२-३९ की पंक्तियोंके श्लोकोंमें उस समयके दो प्रसिद्ध जैन व्यापारियोंका नाम—ऋषि और दाहड

दिया हुआ है। विक्रमसिंहने उनको 'श्रेष्ठि' की पदवी दी थी और इन्हींमें से एक—साधु दाहड़—मन्दिरके संस्थापकोंमेंसे हैं। ऋषि और दाहड़ दोनों ही जयदेव और उसकी पत्नी यशोमतीके पुत्र, तथा श्रेष्ठी जासूकके नाती थे। जासूक जायसवाल वंशके थे जो 'जायस' (एक शहर) से निकला था।

३९-४५ की पंक्तियोंमें कुछ जैन मुनियोंका वर्णन है। उनमेंसे मन्तिम विजयकीर्ति थे। उन्होंने न केवल इस शिलालेखका लेख ही तैयार किया था, बल्कि अपने धार्मिक उपदेशसे लोगोंको इस मन्दिरके निर्माणके लिये भी, जिसका कि यह शिलालेख है, प्रेरणा की थी। उल्लेखित मुनियोंमेंसे सर्वप्रथम गुरु देवसेन हैं। ये लाट-वागट गणके तिलक थे। उनके शिष्य कुलभूषण, उनके शिष्य दुर्लभसेन सूरि हुए। उनके बाद गुरु शान्तिषेण हुए, जिन्होंने राजा भोजदेवकी सभामें पंडित शिरोरत्न अंबरसेन आदिके समक्ष सैकड़ों वादियोंको हराया था। उनके शिष्य विजयकीर्ति थे।

मन्दिरके संस्थापकोंमेंसे पंक्तियाँ ४८-५१ उनका नामोल्लेख इस प्रकार करती हैं:—साधु दाहड़, कूकेक, सूर्यट, देवधर, महीचन्द्र, और लक्ष्मण। इनके अलावा दूसरोंने भी जिनका नाम यहाँ नहीं दिया गया है, इस मन्दिरकी स्थापनामें मदद दी थी।

गद्यभागमें (५४ वीं पंक्तिसे शुरू होनेवाला) कथन है कि महाराजा-धिराज विक्रमसिंहने मन्दिर तथा इसकी मरम्मतके लिये तथा पूजाके प्रबन्धके लिये प्रत्येक गोणी (अनाजकी?) पर एक 'विंशोपक' कर लगा दिया था तथा महाचक्र गाँवमें कुछ जमीन भी दी थी तथा रजकद्दहमें कुँआसहित बगीचा भी दिया था। दिए जलानेके लिये तथा मुनिजनोंके शरीरमें लगानेके लिये उन्होंने कितने ही परिमाणमें (ठीक ठीक परिमाण जाना नहीं जा सका; शिलालेखके शब्द हैं 'करघटिकाद्वय') तेल भी दिया।

अन्तमें आगामी राजाओंको भी उपर्युक्त दानको चालू रखनेकी प्रार्थना करनेके बाद, ६०-६१ पंक्तियोंमें इस प्रशस्तिके लिखनेवाले और इसको खोदनेवाले दोनोंका नाम दिया है। लिखी जानेकी तिथिका उल्लेख करके यह शिलालेख समाप्त हो जाता है।]

२२९

श्रवणबेलगोला—संस्कृत

[विना कालनिर्देशका]

[देखो, जैन शिलालेखसंग्रह, प्रथम भाग]

२३०

कणवे—संस्कृत तथा कन्नड़—भग्न

[वर्ष शुक्र. १०९० ई० ? (६० राहस) ।]

[कणवेमें, कल्लु-बस्तिमें एक समाधि-पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

साहस.....महिमं जित-शत्रु वि.....होयसळा.....

निळेयं सम्यक्त्व-चूडामणियने नेगळदं भण्डारि-चन्दिमय्यन प्रियेयुं जिन-
पादाम्बुजमं स्मरियसुत दिवकेय्-दिदरेन्दोडे कृतात्थरिन्नाइ विस्वावनि-
योळु ॥

खस्ति समस्त-प्रशस्ति-सहितं जिन-गन्धोदक-पवित्रीकृतोत्तमाङ्गनु
भव्य-रत्नाकरन सरस्वती-देवी-कर्ण-कुण्डलाभरणनप्प श्रीमन्महा-प्रधान
होयसळ-देवन भण्डारि चन्दिमय्यन हेण्डति बोप्पव्वेयु शुक्र-संव-
त्सरद पौष्य-मासदल्लु सन्यासनं गेय्दु समाधि-सहित सोमवारदेरडनेय-
जावदल्लु स्वर्ग-प्रापितरादरु

[जिनशासनकी प्रशंसा । प्रधान मंत्री होयसळ-देवके खजात्री चन्दिम-
य्यकी पत्नी बोप्पव्वेने (उक्त मितिको), संन्यसन करते हुए, समाधिपूर्वक
'स्वर्ग' प्राप्त किया ।]

[EC, VIII, Tirthahalli tl., n° 198.]

२३१

बाळहोन्नूर—संस्कृत

[विना कालनिर्देशका;—पर संभवतः लगभग १०९० ई० का]

[बाळहोन्नूरमें, दूसरी चट्टानपर]

श्रीमद्वादीभसिंहस्याजितसेन-महा-मुनेः ।

अग्रशिष्येण मारेण कृता सेयं निशीधिका ॥

अगणितगुणगणनिलयो जैनागम-त्रार्धि-वर्द्धन-शशाङ्कः ।

...त्यूर्जित-मण्डलि.....र-गणे नत-गणावीशः ॥

[वादीभसिंह अजितसेन-महामुनिका यह स्मारक उनके प्रधान शिष्य मारेके द्वारा बनवाया गया था । ये गणावीश अगणित गुणोंके निलय (स्थान) थे, जैनागमरूपी समुद्रके पानीको बढ़ानेके लिये चन्द्रमा थे ।]

[EC. VI, Koppa tl., n° 3.]

२३२

कणवे—संस्कृत तथा कन्नड

[वर्ष आङ्किरस, १०९३ ई० ? (ल० राहस) ।]

[कणवेमें, एक दूसरे समाधि-पाषाणपर]

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

श्री-मूलसंघ-कोण्डकुन्दान्वय-देशीयगण-पुस्तकगच्छ लोकि-
यन्त्रे बसदिय प्र.....तळताळ बसदि

बळ.....रं बळ्ळुचुव लतान्त-सङ्गि.....दि सञ्- ।

चळिसि पळश्चि तू.....रन नडिसि मेय्वगेयाद-दूसरिं ।

कळयदे निन्द कब्बुनद कग्गिद बिडिनमरक्केवेत्त क- ।

तळमेनिसित्तु पुत्तडर्द मेय्य मलं मलधारि-देवर ॥

स्वस्ति श्रीमदाङ्गिरस-संवत्सर-पौष्य-मास-बहुल-सप्तमियादि-
त्यवारदन्दु अवर शिष्यरु शुभचन्द्र-देवर समाधिविधियि स्वर्गस्थ-
रादरु ।

[जिनशासनकी प्रशंसा । श्री-मूलसंघ, कोण्डकुन्दान्वय, देशिय-गण
और पुस्तक-गच्छ,—लोकियब्बे बसदिकी तलताल बसदिके मलधारि-देव
थे, कठोर तपस्यासे जिनका सारा शरीर भूल-भूसरित हो रहा था,
लोहेके समान बहुत समयतक जिसपर जङ्ग-सी चढ़ी हुई थी, और वल्मीक
(चींटियोंकी खोदी हुई मिट्टीका ढेर) के समान हो गया था । (उक्त
मितिको), उनके शिष्य शुभचन्द्र-देवने समाधिके बलसे स्वर्ग प्राप्त
किया ।]

[EC, VIII, Tirthahalli tl., n° 199.]

२३३

हल्ले-बेल्लोला—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०१५=१०९३ ई०]

(जैन शिलालेखसंग्रह, प्र० भाग)

२३४

सोमवार—कन्नड़-भम

[शक १०१७=१०९५ ई०]

[सोमवार (मल्लिपट्टण परगने)में, बसव मन्दिरकी एक सोटपर]

स्वस्ति....भद्रमस्तु जिनशासनाय स्वस्ति शक-वर्ष १०१७ नेय
युवसंवत्सरद भाद्रपद-मासद सुद्ध-सप्तमी-गुरुवारदन्दु भकर-लग्नं गुरुद-
यदल् श्रीमत्-सुराष्ट-गणद कल्लेलेय रामचन्द्र-देवर शिष्यन्तियरप्प
अरसब्बे-गन्तियर् (यहाँ स्वप्न हो जाता है) ।

[(उक्त मिति को) सुराष्ट-गणके कल्लेलेके रामचन्द्र-देवकी शिष्या अर-
सब्बे-गन्ति....]

[EC, V, Arkalgud tl., n° 96.]

२३५

दुबकुण्ड—स्तम्भपर—संस्कृत

[संवत् ११५२=१०९५ ई०]

संवत् ११५२—वैशाखसुदिपञ्चम्यां ॥

श्रीकाष्ठासंघमहाचार्यवर्यश्रीदेव-

सेनपादुकायुगलम् ।

[स्पष्ट है]

[A. Cunningham, Reports, XX, p. 102.]

२३६

सोमवार—कञ्जड़

[बिना कालनिर्देशका,—लेकिन संभवतः लगभग १०९५ ई०]

[सोमवार (मल्लिपट्टण परगना)में, बसवण्ण मन्दिरके मुख-मण्डपके सामनेके पाषाणपर]

पतिय सन्ततिय पति पेळद-मार्गदिम् ।

पति-हितनागि निस्तारिसि तत्पति माडिप जैनगेहमुन्- ।

नति-वेरसिर्....यनन्तदर्कहर- ।

प्पति-शशियुल्लिनं निरिसि जक्कनिदेम् सुकृतार्थनादनो ॥

दुद्दमल्ल-देवन बाणसि जक्कय्यं माडिसिदम् ॥

[अपने स्वामीके कुटुम्बमेंसे, उसी पद्धतिसे जिसे उसके स्वामीने बतलाया था, स्वामीके प्रति रहे हुए प्रेमसे उसने उसी मन्दिरको खड़ा किया जिसे उसका स्वामी बना रहा था । उसे आज्ञा थी कि यह मन्दिर तब तक खड़ा रहेगा जब तक आकाशमें सूर्य और चन्द्र चमकते हैं । जक्क कितना भाग्यशाली था ? दुद्दमल्ल-देवके रसोद्भवे जक्कय्यने इसे बनवाया ।]

[EC, V, Arkalgud tl., n° 97.]

२३७

सौदत्ति - संस्कृत तथा कन्नड

[विक्रमादित्य चालुक्यका २१ वाँ वर्ष=१०९६ ई०]

स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय (यं) श्रीपृथ्वीवल्लभ (भं) महाराजाधि-
राज(जं) परमेश्वर (रं) परममहार्कं । सत्याश्रयकुळतिलक (कं)
चालुक्याभरणं श्री[म]त्रिभुवनमल्लदेवविजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-
प्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारंवरं सलुत्तमिरे ॥ तत्पादपद्मोपजीवि ॥ स्वस्ति
समधिगतपंचमहाशब्दमहामण्डलेश्वरं । लत्तल्लूर्पुर्वराधीश्वरं त्रिवळीर्त्य-
निर्घोषणं । रङ्गकुळभूषणं । सिन्धुरलज्जनं । विवेकविरिञ्चनं । सुवर्ण-
गरुडध्वजं सहजमकरद्व(ध्व)जं नामादिसमस्तप्रस(श)स्ति सहितं श्रीम-
न्महामण्डलेश्वरः कार्तवीर्यचतुपः ।

रङ्गवंशोद्भवः ख्यातो नन्नभूपत्य नन्दनः । श्रीमदाहवमल्लस्य
पादपद्मोपसेवकः ॥ सहस्रबाहुरिव ख्यातः कार्तवीर्यः प्रताप-
वान् । कुहुण्डदेशया(स्या)घाटं सादि(धि)तं तेन भूभुजा ॥
राजन्वत्यः प्रजा जाता दावरिनाम भूभुजा । तस्यानुजः
प्रतापी स्यात् कन्नकैरो महीपतिः ॥ तस्याग्रनन्दनो भाति वाद्या
विद्याविदो भुवि । एरगाख्यमहीपः स्यादनुजोस्याज्जभूपतिः ॥ वाद्या
विद्याधरस्याग्रसूनुः श्रीसेनभूपतिस्तस्याग्रमहिषी जाता मैळलादेवि-
रूर्जिता ॥ श्रीकाळसेनभूपत्य तस्यासीदग्रनन्दनः [I] कन्नकैरचतुपः
ख्यातो नृत्यगीतादिकोविदः ॥ तस्य गुरवः ॥ त्रैविद्यो राजते भूमौ
सर्वशास्त्रविशारदः । कनकप्र(म)सिद्धान्तदेवो गणधरोपमः ॥
कनकप्रभदेवेभ्यः संक्रान्तो (न्तौ) सत्तियौ तदा । निवर्त्तनं द्वादश
(श) दत्तं नमश्च (स्यं) नन्नभूभुजा ॥ तस्यानुजः ॥ गम्भीरेण समुद्रोसि
धि० २३

गौरवेणासि मन्दरः । श्रीकार्तवीर्य लोका(नां) कल्पवृक्षोसि दानतः ॥
तस्याग्रनन्दनः ॥ वृत्त ॥ श्रीरागतामळ्यशो वनिता सुयाता तत्र स्थिता
जयवधू तव मण्डलाग्र (ग्रे) ॥ धारापथे सुभटमण्डलिकाग्रगण्य श्रीसेन-
भूपकथमस्खलनेन चित्रं ॥

श्लोक ॥ सुगन्धवर्च्याहिके ग्रामे धर्मज्ञजनतावृते । श्रीकाळसेनभूपेन
कारितं जिनमन्दिरं ॥ निवर्त्तनं द्वादशं(श) तस्मै । जिनगेहाय भक्तिः ।
बृहदण्डेन संदत्तं । नमश्यं(स्यं) सेनभूमुजा ॥ वचनं ॥ वीरविक्रम
'काळ'नामधेयसंवत्सरैकविंशतिप्रमितेष्वतीतेषु । वर्त्तमानधातुसंवत्सरे
पुष्यबहुलत्रयोदश्यामादिवारोत्तरायणसंक्रान्तो (न्तो) । श्रीवीरपेर्माडि-
देवेन कारेयबागुनामधेयस्वसीवटे द्वादशनिवर्त्तनं सर्वनमश्यं (स्यं)
दत्तं ॥ तस्मिन्नेव सीवटे श्रीकन्नकैरेण खगुरवे द्वादशनिवर्त्तनं नमश्यं
(स्यं) दत्तं ॥ तस्य सीमा । पूर्वस्यां दिसि (शि) हलसथ्यसीवटाद(दा)
रम्य पुलिगेरेवल्लिग्रामस्य सीमा । दक्षिणदिग्भागे सुगन्धवर्त्तिग्रा-
मस्य सीमा । पश्चिमदिग्भिळये कुकुम्बाल्लु ग्रामस्य सीमा । उत्तरस्यां दिशि
मळहारी नदी सीमा । सामान्योयं धर्मसेतुर्नृपाणां काळे काळे
पाळनीयो भवद्भिः । सर्वानेतान्भाविनः पार्थिवेन्द्रान् भूयो भूयो याचते
रामभद्रः ॥ बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिर्यस्य यस्य यदा
भूमिस्तस्य तस्य तदा फळं ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धरां ।
षष्टिर्वर्षसहस्राणि विष्टायां जायते कृमिः ॥ वृत्त ॥ इदनानन्ददे (दि)
नोदि पाळिसिदवंगकुं शुभं मंगळं । मुदमुत्साहमशेषसौख्यमेसेवायुं
श्रीयुमन्तल्लुदिन्तिदे तोनकेग.....न्द पूण्डु किडिसल्केन्दिर्प कष्टं निगोद
(दि) दोडकेन्द (न्दु) गळुळिनं विषमदुःखावासमं पोर्दुगु ॥....
....न्त ॥ गंगासागरयमुनासंगमदोळ वारणासि गयेयेम्बी तीर्थगळोजो

[तु] कुळद्विजपुंगवगोकुळमनलि दरिन्तिदनळिदर ॥ वीरपेर्माडिदेवस्य जिनालयं ॥

[इस लेखमें चालुक्य राजा पेर्माडिदेवके द्वारा शकवर्ष १०१९ में जो धातु 'संवत्सर' था, १२ 'निवर्तन' भूमिके दानका उल्लेख है। तत्पश्चात् कन्न-केरके दानका उल्लेख है। यह दान उक्त दानसे पहलेका होना चाहिये। यह कन्नकेर, प्रथम या द्वितीय है, यह इस लेखपरसे कुछ पता नहीं चलता। अन्तमें यह लेख अपने साधारण तरीकेसे भूमिदान करनेके तथा पूर्ववर्ती राजाओंके दानोंकी रक्षा करनेके फायदोंके बतानेवाल श्लोकोंसे समाप्त होता है।]

[JB, X, p. 170-171 a; p. 194-198; t, p. 199, tr.,
ins. n° 2, (II part.).]

२३८

हुम्मच—कन्नड़-भग्न

[काल लुप्त, पर संभवतः १०९८ ई० ? (लुई राहस)]

[पंचवत्सीके प्राङ्गणमें, दक्षिणकी ओरके एक पाषाणपर]

खस्ति श्री-मूल-संघद.....पुस्तकगच्छदोळे प्रसिद्धि-वडेद श्री
.....भट्टारक-शिष्यरम्प लक्ष्मीसेन-भट्टारक-देवरु चिरकाल तप
गेयु.....॥ विदित-बहुधान्य.....कार्तिकशुक्ल तृतीयार्कज-
वार-सूर्योदय.....लक्ष्मीसेन-मुनिपरमरारूपदमं ॥.....
देवसेन-भट्टारकचारित्र-गुणोल्लसित-श्री-पार्श्वसेन-भट्टा-
रक...एने जसं बडे...॥

विदित-बहुधान्य-नामा ।

न्ददोलोप्पुव-चैत्र-बहुल-नवमी-कुजवा-।

† मूल लेखके अनुसार शक काल १०९८ बीतनेके बाद जो कि चालुक्य विक्रमादित्य द्वितीयके राज्य प्रारम्भ होनेका २१ वाँ वर्ष था ।

रदोळोळि समाधियि.....।

विदरनुपम-पार्श्वसेन-मुनिपर दिवमम् ॥

[स्वस्ति । श्री-मूलसंघ और पुस्तक-गच्छमें प्रसिद्ध.....भट्टारकके शिष्य कश्मीसेन-भट्टारक-देवने बहुत समयतक तप किया । (उक्त मितिको), सूर्योदयके समय कश्मीसेन मुनिने अमरपद प्राप्त किया ।

पार्श्वसेन-भट्टारककी प्रशंसा, जिन्होंने उसी वर्षमें, समाधि-विधिके द्वारा स्वर्ग प्राप्त किया ।]

[EC, VIII, Nagar tl., n° 42.]

२३९

चिक-हनसोगे—कसड़-भग

[शक १०२१=१०९९ ई०]

[जिन-वस्तिमें, अन्दरके दरवाजेके दक्षिणकी ओरके एक पाषाणपर]

भदं भूयाजिनेन्द्राणां शासनायाधनाशिने ।

कुतीर्थध्वान्तसङ्घातप्रभिन्नधनभानवे ॥

वननिधि-परिवृत-सीमा-वनियोळ सले नेगब्द कोण्डकुन्दान्वयदोळ ।

पनसोगे-निवासि-महा-मुनि-वरश्री-कर-[वि]मुक्तरागम-युक्तर ॥

यमि-नाथाग्रणि पूर्णचन्द्र-मुनिपर्त्त.....दामणंदि-मुनीन्द्रर
तदपत्यरन्तवर शिष्य-श्रीधराचार्यर आयमि-शिष्यर म्मलधारि-देव-
रवर्गादर चन्द्रकीर्त्तिव्रति-प्रमुखर्त्तत्तनुजातराततयशर स्सिद्धान्त-
चक्रेश्वर ॥

स्वस्ति यम-नियम-स्वाध्याय-ध्यान-मौन.....परायणरूप श्री-मूल-
सङ्घद देशि-गणद पुस्तक-गच्छद श्री-दिवाकरनन्दि-सिद्धान्ति-देवर
.....न्तिब्बेसववे-गन्तियर सक-वरिष सायिरद इ १०२१ नेय

प्रमादि-संवत्सरद फाल्गुण-सुद्ध-पञ्चमी-आदिवारदन्तु.....य पाळि
मूलपरिग्रहं चरियल्ल ३० गद्याण.....चन.....

[जिनशासनकी प्रशंसा । कोण्डकुन्दान्वयमें पनसोगे-निवासी मुनियोंमें प्रधान पूर्णचन्द्र मुनि थे । उनके शिष्य दामनन्दि-मुनीन्द्र थे; उनके शिष्य श्रीधराचार्य्य थे; उनके शिष्य मलधारी-देव थे; उनके पुत्र चन्द्रकीर्ति-व्रती थे ।

मूलसंघ, देशिगण तथा पुस्तकगच्छकी, दिवाकरनन्दि सिद्धान्त-देवकी शिष्या, बेसववे-गन्तिने.....के करनेके लिये ३० गद्याण दिये ।]

[EC, IV, Yedatore tl., n° 24.]

२४०

चिक-हनसोगे—कमल

[बिना काल-निर्देशका, पर सम्भवतः लगभग ११०० ई०]

[चिक-हनसोगेमें, शान्तीश्वर वस्तिके दरवाजेके ऊपर]

श्रीमूलसङ्घद देसिग-गणद होत्तगे-गच्छद समुदाय मुख्यते राम-
स्वामि विहीपरमेश्वर-दत्तिगे ॥

उपवास-प्रोन्नत-विधि- । युपवासानेक-वार-चान्द्रायणदिन्-

न्दप-मद-जयकीर्ति-मुनि- । प्रवरं श्री-पुस्तकान्वयाम्बुजसूर्य्य ।

दशरथसुतनुं लक्ष्मणाग्रजनुं सीता-वल्लभनुं इक्ष्वाकु-कुलजनुमप्प
रामन प्रतिष्ठे देसिग-गणद बसदि इल्लि ६४

रामम्माडे गङ्गर्पडि सलिसे बन्द-तीर्थद-बसदियं यादवरप्प चङ्गा-
व्वरोळ्गे श्री-राजेन्द्र-चोल-नन्नि-चङ्गाव्व-देवर पुनर्नवं माडिदरी-
पनसोगेयल्ल देसिग-गणद होत्तगे-गच्छद बसदि ४ के तले-कावेरिय
बसदिगळ्ळु तत्समुदायमुख्यं

[रामस्वामीके छोटे हुए (!) परमेश्वर-प्रवच (!) दानका प्रधान मूलसङ्घके
देवी गणके होत्तगे गच्छका समुदाय है । पुस्तकान्वयरूपी कमलके लिये

अथकीर्त्ति-मुनि सूर्यके समान थे । थे अनेक उपवास और 'चान्द्रायण' व्रत करनेमें विख्यात थे ।

यहाँ दशरथके पुत्र, लक्ष्मणके बड़े भाई, सीताके पति, इक्ष्वाकुकुलोत्पन्न रामके द्वारा प्रतिष्ठित देसिग-गणकी ६४ बसदियाँ हैं ।

बन्द-तीर्थकी बसदिको जिसे पहले रामने बनवाया था और जिसको गङ्गोंने दान किया था, चङ्गाळवंशी यादवीय^१ राजेन्द्रचोळ-नञ्जि-चङ्गाळव-देवने फिरसे बनवाया ।

इस पनसोगेमें देसिग-गणके होतगे गच्छकी ४ बसदियाँ, और तल-काधेरीकी बसदियोंका वही समुदाय मालिक है ।]

[EC, IV, Yedatore tl., n° 26]

२४१

चिक्क-हनसोगे—कन्नड़

[बिना काल-निर्देशका, पर सम्भवतः लगभग ११०० ई० ?]

[चिक्क-हनसोगेमें, नेमीश्वर बल्लिके दरवाजेके ऊपर]

श्रीमद्-देसिग-गण पुस्तक-गच्छद श्रीधर-देवर शिष्यरेळाचार्य-
रवर शिष्यर्हामनन्दि भट्टारकरवर साधर्मिगळ् चन्द्रकीर्त्ति-भट्टारक-
रवर शिष्यर्हिवाकरणन्दि-सिद्धान्तदेवरवर शिष्यर्चान्द्रायणी-देवापर-
नामवेयरप्प श्रीमञ्जयकीर्त्ति-देवरादियागा-समुदाय-मुख्यमी-बसदिगळे-
छर्वर्कमासमुदायद वशमल्लदवरना-समुदायमिर्हु निर्दोडिसि पोर्मडिसि
कळेबुदु । रामस्वामि विट्ट परमेश्वर-दत्तिगे तोल्लडियिन्द वडगण
तुम्बिन नीर वरिद नेलन विक्रमादित्यं विट्टं १८ गेण कोलिन्दं
१५०० कम्म मोदलेरियल्ल बेजिरिगट्टद केळ्मो आ-कोलि(न्दं) २५०
कम्म मण्णं तोण्टके चङ्गाळवं मदुरनहल्लियुमनल्लि ५०० कम्म
मण्णं.....

[देसिंग-गण और पुस्तक-गच्छके श्रीचरदेव थे, जिनके शिष्य एलाचार्य थे, उनके शिष्य दामनन्दिभट्टास्क थे, उनके साथी चन्द्रकीर्त्ति-भट्टास्क थे, उनके शिष्य दिवाकरनन्दि सिद्धान्तदेव थे, उनके शिष्य जयकीर्त्ति-देव थे जिनका दूसरा नाम चान्द्रायणी-देव भी था; इन सबका समुदाय इन बसदियोंका मालिक है। जो इस समुदायके अचीन नहीं हैं उन्हें वह समुदाय भगा देगा, बाहर भेज देगा।

चङ्गाळवने, १८ बिलस्तके दण्डके नापसे, विक्रमादित्यकी छोड़ी हुई और तोल्लुकी उत्तरीय नहर या मोरीसे सींची गई तथा परमेश्वरकी दी हुई और रामस्वामीकी छोड़ी हुई १५०० 'कम्म' (एक नापविशेष) जमीन दानमें दी; उसी नापसे बेजिरिगड्डीकी २५० 'कम्म' जमीन बगीचेके लिये, और ५०० 'कम्म' मदुरनहल्लिमें दिये।]

[EC, IV, Yedatore tl., n° 28]

२४२

अङ्गुलि—कञ्जड़—ध्वस्त।

[बिना काल-निर्देशका, पर संभवतः लगभग ११०० (?) ई० का]

[अङ्गुलि (गोणीबीडु परगना) में, बसदिके पासके पाषाणपर]

भद्रमस्तु जिनशासनस्य श्री.....ण गङ्गादासि-सेट्टि सोमदि.....
.....धिय मुडिहिद प.....क्षके मग चटयं निलिसिद सासन

[जिन-शासनका कल्याण हो। गङ्गादास-सेट्टिके मर जानेपर, उसके पुत्र चटयने यह स्मारक उसके लिये खड़ा किया।]

[EC, VI, Mūdgere tl., n° 10]

२४३

सण्ड—संस्कृत तथा कञ्जड़—भग्न

[बिना काल-निर्देशका, पर संभवतः लगभग ११०० ई० का]

[सण्डमें, तालाबके प्रवेश-द्वारपरके एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

खस्ति समस्त-भुवनाश्रयं श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर
परम-भट्टारक सत्याश्रय-कुळतिळक चालुक्याभरण श्रीमत् त्रिभुवनमल्ल
देवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानम्राचन्द्रार्कितारम्बरं सल्ल-
त्तमिरे ॥ तत्पादपद्मोपजीवि ॥ खस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-
सामन्ताधिपति महा-प्रचण्ड-दण्डनायक विबुधवर-दायक सुजन-प्रसन्न
नुडिदु मत्तेन्न गोत्र-पवित्र पराङ्गना-पुत्र.....सोत्तुङ्गनय्यन-सिङ्ग
नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहितं श्री.....वेर्गडे मने-वेर्गडे-दण्डना-
यकननन्तपाळय्यं गजगण्ड-अरुनूरुमं वनवासे.....मुम
सप्तार्द्ध-लक्ष्म(क्ष)यच्छ-पन्नाय-मुमं पडेदु सुख-संकथा-विनोददि...
तत्पादपद्मोपजीवि ॥

श्री-वनिता-कुच-सम्भृत-

पीवर-वक्ष-स्थळं लसद्गुण-मणी....।

.....।

.....सकळ-विभु (बु) ध-जनता.....॥

आ-समस्त-गुण-गणाभरणनु विबुध-जन-पर.....विळसित-
जगद्-वळय्य.....वनुं रण-रङ्ग-मैरवनं सकळ-सु-कवि-जन-क.....
वीर-लक्ष्मी-विळासनमनन्तपाळ-प्रसादनुदिताधिकार-लक्ष्मी-विळासनं....
.....[गो]विन्दरसं वनवासे-पञ्चिर्छासिरमुमं मेलपट्टेय वड्ड-
राबुळमु.....नोददिं प्रतिपाळिसुत्तमिरे ॥

श्रियं निज-भुज-बळदिम् ।

दायाद-बळ.....।

.....न-

जेयं रिपु-नृप-पयोज-सोमं सोमम् ॥

आनेग.....गळ महा.....बेयोगेवबोलानत-रिपु-वोगेद.....
महीपति-प्रतिम-प्रताप-निळयं निज-सन्ततिगोसुगे पुट्टे रिपु.....
पुट्टिदं सोवरस ॥.....जमदनणिमनार्पेने कट्टायदे चलदोळोदविदुन्नति-
नभमं.....रेम् पुट्टिदर ॥

शरणेमगेन्नदेवुदेमगे-बेसनावुदु बुद्धियेन्नदुम् ।
बरिसि नितान्तमेरिसिद बिल्लबोलुद्धत-वृत्तिय्-ने पेण्-
डिर् केलदोळ् केळल्दु बीरुव बिडे बीरुवधिक-वैरि-भू-
परनातनत्तर मरुळ तण्डम नोडने सोम-भूमिपम् ॥
किं कल्पद्रुम-वल्लरी किमु रतिः शृङ्गार-भङ्गी-गुरोः
किं वा चान्द्रमसी कला विगलिता लावण्य-पुण्या दिवः ।
सम्यग्दर्शन-रेवती किमु परा सोमाम्बिका राजते
राज्ञी सा बनवासि-सोम-नृपतेर्जाता मनोवल्लभा ॥

श्लोक ॥ क्षीर-सिन्धोर्यथा लक्ष्मीर्हिमांशोरिव दीधितिः ।

तथा तयोस्सुते जाते जिन-शासन-देवते ॥

पूर्वं वीराम्बिका जाता ततोऽजन्मुदयाम्बिका ।

इति भेदं तयोर्मन्ये सद्-गुणैस्समता द्वयोः ॥

किं देवेन्द्र-विमान एष किमुत श्री-नागराजाश्रयः

किं हेमाचल-शैल इत्यनुदिनं शङ्का दधानं जने ।

निश्शेषावनिपाल-मौलि-विलसन्-माणिक्य-मालाञ्चितम् ।

भाल्यत्युन्नतिमज्जिनेन्द्र-भवनं ताम्यां विनिर्मापितम् ॥

तोडरे तोडङ्कु मच्चरिसे गण्टल सिल्किद-गाळ वुक्के मार- ।

नुडिदडे जिहमं पिडिदु किळ्य तोडिपिन पाशवेन्देडेन्त ।
 एडरुव (व) रेन्तु-मच्चरिपरेन्तु करं कडि केन्दु दप्पम [म] ।
 नुडिदपरण्ण बाणु मुळिदम्बद जूजिनोळन्य-भूसुजर ॥
 बिडदेडरे सेणसि चुन ।

नुडिवरी-मन्नेयर बेन वारं मिडियिम् । *

पेडेतेले-वरम्माळपोत्तुव ।

कडु-गलि शसि-विशद-कीर्ति जूज-कुमार ॥

जवनेरे बच्चितेम्बिनेगमान्तरि-भूपरनट्टि कोन्दु कू- ।

गुव तवे तिन्दु तेगुव तडगडिदि....व बेन-वारनेत्- ।

तुव पिडिदच्चि मुक्कुव पसुगरिडि बडगिन्दियादुवा- ।

हव-भुज-शौर्यमं...लि-बीरदनेन्दोड् इनागैर पोगळ् न्नेगळ्द

कुमार-गजकेसरियं ॥

अरमनेयोळे..... ।

.....न्दु विगिदु संगरमादन्दे ।

शिलेय मुङ्गाल्गेणेयनि- ।

परसर प्पोल्लतपरे कु..... ॥

.....डे मोगमं तिरिपुवरिन्.....दडे नगुवरन्यरम्बद जूज

मुनि.....यं रिपु-जनकमर्थि-जनकम् ॥ अनुपममे-

निसिद गुण.....वारितमेनिप दान-गुणदोळ् मत्त-

वण दोरेय.....तळदोळ् ॥ आतनळिय ॥ खण्डदोळि

.....नेदु मूळेगळम्पूरि.....

.....

[जिन-शासनकी प्रशंसा । जिस समय, (चालुक्य उपाधियों सहित), त्रिभुवनमल्ल-देवका राज्य चारों ओर प्रवर्द्धमान था और तत्पादपञ्चोपजीवी मने-वेर्गोडे दण्डनायक अनन्तपालउद्य, गजगण्ड ६००, बनवासे १२०००, और ससार्द-लक्ष (देश) अष्ट-पञ्चायको प्राप्त करके उनके ऊपर शासन कर रहा था; तत्पादपञ्चोपजीवी, जिस समय (अनेक उपाधियों सहित) गोविन्दरस बनवासे १२००० तथा मेल्पट्टे 'वड्ड-रावुळ'की शान्तिसे रक्षा कर रहा था;—उसका पुत्र (प्रशंसासहित) सोम या सोवरस था, जिसकी पत्नी सोमाम्बिका थी । उनकी वीराम्बिका और उदयाम्बिका, ये दो पुत्री थीं । इन दोनोंने एक जिनमन्दिर बनवाया । अम्ब जूज-कुमारके, जिसे कुमार गजकेसरी भी कहते थे, पराक्रमकी प्रशंसा । उसका दामाद, ... (लेख बहुत घिसा हुआ है) ।]

[EC, VII, Shikarpur tl., n° 311]

२४४

गुप्ती—कन्नड

[बिना कालनिर्देशका]

(देखो, जै० शि० सं०, प्र० भाग)

२४५

उदयगिरि (कटकके पास)—संस्कृत

[लगभग ईसाकी ११ वीं शताब्दि]

उद्योतकेसरीके समयका शिलालेख

नोट:—इस शिलालेखके लेखका कुछ पता नहीं है । इसका उल्लेख मात्र टी. ब्लॉक (T. Bloch) के Archaeological Survey of India, Annual Report 1902-1903, पृ० ४० के उल्लेख परसे हुआ है ।

[उद्योतकेसरीके समयका यह शिलालेख, जो कि ई० ११ वीं शताब्दिका है, शुभचन्द्रके कुल और गणका उल्लेख करता है । शुभचन्द्रके शिष्यका

नाम कुलचन्द्र था। ये (कुलचन्द्र) यहाँकी किसी गुफामें रहते थे और अपने गुरुकी तरह, अवश्य जैन रहे होंगे]

[T. Bloch, A S I, Annual Report 1902-1903, p. 40]

२४३

नेसर्गी (जिला बेलगाँव) :—कन्नड़

[बिना काल-निर्देशका, पर ई० ११ वीं या १२ वीं शताब्दिका (फ्लीट)]

बेलगाँव जिलेके सम्पगाँव तालुकामें नेसर्गीके एक छोटेसे तथा अर्द्ध-ध्वस्त जैनमन्दिरकी एक खड्गासनस्थ बुद्ध-प्रतिमाके चरणपाषाणपर निम्न-लिखित अभिलेख पुरानी कन्नड़के ई० ११ वीं या १२ वीं शताब्दिके मन्त्रोंमें है:—

श्रीमूलसंघद बलात्कारगणद श्रीपार्श्वनाथदेवर श्रीकुमुदचन्द्रभट्टारकदेवर गुह बाडिगसात्ति-सेट्टियर मुख्यवागि नख (ग ?) रत्नलु माडिसिद नख (ग ?) रजिनालय ॥

[श्रीमूलसंघ बलात्कारगणके, श्रीपार्श्वनाथदेवके श्री कुमुदचन्द्र-भट्टारक-देवके शिष्य या अनुयायी बाडिगसात्ति-सेट्टि जिनमें मुख्य था ऐसे नगरके (व्यापारी लोगों) द्वारा 'नगरका जिनालय' बनवाया गया ।]

[IA, X, p. 189, n° 16, t. & tr.]

२४७

ऐहोले—कन्नड़—भग

[विक्रमादित्य बालुक्कका २६ वीं वर्ष, शक १०२३=११०१ ई०

(फ्लीट)]

[ऐहोले गाँवके दक्षिण-पश्चिम दरवाजेके बाहर ही हनुमन्तकी आधुनिक कालकी बेदी है। इसके सामने 'ध्वजस्तम्भ' नामका एक पाषाण है। इस ध्वजस्तम्भके पादुकातलमें एक धीरगल् या स्मारक पत्थर बनाया गया है जिसपर पुरानी कर्णाटकभाषामें एक शिलालेख है। इस लेखकी नकल मायः Elliot MS. Collection पृ० ४१० पर दी हुई है।

पाथरका ऊपरी हिस्सा दृष्टिसे ओझल हो गया है । लेकिन लेखकी तीन पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं । इनमें सोमवार दिन तथा विषु संवत्सरके, जो कि चालुक्य विक्रम-कालका २६ वाँ वर्ष बर्थात्, शक १०२३ (=११०१ ई०) होता है, श्रावणमासके शुक्लपक्षकी एकादशीका काल निर्दिष्ट है । पाषाणके दूसरे हिस्सेमें भगवान् जिनेन्द्रकी मूर्ति है जो कि पद्मासन है और जिसके दोनों तरफ दक्षिणियाँ चैवर ढोर रही हैं । पाषाणका शेष हिस्सा दृष्टिमें नहीं आता है; लेकिन उसमें भट्ट्याबोले (ऐहोले) के पाँचसौ महा-जनोद्धार विवे गये दानका उल्लेख है ।]

[ई० ए०, ९, पृ० ९६, नं० ६९]

२४८

दानसाले—संस्कृत तथा कन्नड

[शक १०२५=ई० ११०३]

[दानसालेमें, दक्षिणकी ओर, बल्लिके पासके एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रयं श्री-पृथ्वी-वल्लभं महाजाराधिराजं परमेश्वर-परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुल-तिलकं चालुक्याभरणं श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल-देवर विजय-राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कितारं सलुत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि ॥ समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरनुत्तर-मधुराधीश्वर पट्टि-पोम्बुर्चपुर-वरेश्वरम्महोग्र-वंशललामं पद्मावती-लब्ध-वर-प्रसादासादित-विपुल-तुला-पुरुष-महादान-हिरण्यगर्भ-त्रयाधिक-दान वानर-ध्वज भृगराज-लाञ्छन-विराजितान्वयोत्पन्न बहु-कला-सम्पन्न शान्तर-कुल-कुमुदिनी-शशाङ्क-मयूखाङ्कुर रिपु-मण्डलिक-पतंग-दीपाङ्कुरं तोण्ड-मण्डलिक-कुलाचल-वज्रदण्डं विरुद-भेरुण्डं कन्दुकाचार्य्य मन्दर-धैर्य्य कीर्ति-नारायणं शौर्य्य-पारायणं जिन-पादाराधकं परबल-

साधकं शान्तरादित्यं सकल-जन-स्तुत्यं नीति-शास्त्रज्ञं विरुद-सर्वज्ञं
नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहितं श्रीमन्महा-मण्डलेश्वरं त्रिभुवनमल्ल-सा-
न्तर-देव ॥

॥ वृत्त ॥

कनकाद्रीन्द्रकमम्भोनिधिगमवनिगं पेम्पिनोळ् गुण्पिनोळ् तिण्-।
पिनोळेनुं ताने पोपासटि सरि समनेन्दन्ददावं सम-स्कन्-।
धनदावं पोलवनावं पडिये निसुववं राज-सर्वज्ञनोळ् तै-।
लनोळ्तिथि-स्तोम-चिन्तामणियोळ्खिळ-भू-भागदोळ् नोर्पडेनुम् ॥

व ॥ अन्तेनिसिद कलि-काल-कल्पावनिजङ्गा-महानुभावङ्गे जन्म-
निळयमेनिसिद अखिळ-क्षत्रिय-कुलोत्तममुमद्वितीय मुमेनिसिदुर्गान्वया-
वतारमेन्तेन्दडे पार्श्वनाथ-सन्तानदोळनेकसमर-सम्मर्दित-रिपु-व्यूह-
राहनेम्बनुत्तर-मधुरा-पुरी-भुजङ्गनुं प्रतिपाळित-चतुस्समुद्र-मुद्रित-
रुद्रवरी-रंगनु-मेनिसि राज्यं गेय्दनातनिन्दनन्तरमर्थि-जन-कल्पभूरुहा-
कार-सहकारं राज्यभर-धुरन्धरनादनातन तनय ॥

क ॥ जगदोळगण नृपरेल्लम् ।

मृगदन्तिरलात्म-विक्रम-प्राभवदिम् ।

मृग-रिपुविनंतिरेसेदम् ।

नेगळ्दुग्रान्वय-नगेन्ददोळ् जिनदत्तम् ॥

व ॥ आ-नृपेन्द्रचूडामणि दुर्वार-भारत-समर-समय-समुदीर्ण-सौख्या-
तिरथ-समरथ-महारथार्द्धरथ-समूह-सम्मर्दन-लब्ध-विजयलक्ष्मीविवाहोत्सवनुं
त्रिविक्रम-कारुण्य-लब्ध-लसदेकशङ्खनुं धनञ्जय-दत्त-शाखामृग-ध्वजनुम-
तर्क्य-विक्रमोपात्त-कण्ठीरव-ध्वजनुमागि दिग्-विजय-यात्रा-निमित्तं दक्षिण-
दिशाभिमुखनागि विजयं गेय्दु समस्त-दैत्य-वंशध्वंसनं भाडि पद्मावती-

पदाराधना-लब्ध-सप्ताङ्ग-राज्य-राजधानी-योम्बुर्चदोलु शान्तर-पट्टमं
ताळिद शान्तळिगेशायिरमुमनेक-च्छत्र-च्छाय-यिन्दाळ्दु शान्तरमेम्बे-
रडनेय पेसरं पडेदनन्दि बळिकमुग्रान्वयं शान्तरान्वयाभिधानमं
पडेदुदातनिं बळिकमनेक-राज-सन्तानकमतिक्रान्तमागे तदन्वयदोलु ॥

वृ ॥ विरुदर मृत्यु बीरद तवर्मने चागद जन्म-भूमि शा- ।

न्तर-कुळ-वार्धि-वर्द्धन-शरत्-समयेन्दु समस्त-सत्-कळा-परिणत-
नङ्गना-जन-मनोभवनेन्दोसेदर्थियि बुधो-

त्करमभिवर्णिणसल्के नेगळदं धरेयोळ विभु शान्तर-ओङ्ग ॥

क ॥ नव-जळददळि मिश्रुम-मुवुदुवदं शान्तरोङ्गं बाळ् गित्तन्- ।
तेवोलादुदेन्दु पोगळवं । भुवनाधिपनात्म-समेयोळा-भूपतिय ॥

आतननुज ॥

क ॥ अदटिनिदिरान्त-भूपर- । नदटलदेरदर्थि-निकरमं तणिपि जगद्- ।
विदित-यशं नेगळदं भू- । प-दिळीपं वैरि-वीर-काळं तैल ॥

तत्पुत्र ॥

क ॥ आयद कट्टळे मदवद्- ।

दायाद-नृपाळ-दर्प-विच्छेदनन- ।

त्यायत-दोर्-दर्पं जय- ।

जायापति दळित-वैरि-वीरं वीर ॥

अवन मनोरमे गङ्गा- ।

न्ववाय-पीयूष-वार्द्धि-सम्भवे लाव- ।

ण्यवति मनोभव-राज्यो- ।

झव-विळसज्जन्म-भूमि बीरल-देवी ॥

अवरिर्वर्गम् ॥

भुजबल-शान्तरनत्यु-

दूध-जय-श्री-ललित-वन-मुजा-दण्डं भू- ।

भुज-बन्धनवर्गे ताना- ।

त्मजनादं रिपु-बळाटवी-दवदहन ॥

आतनि किरिय ॥

वृ ॥ शरणायात-शरण्यनर्थि-जन-कल्पक्षमाजनन्यावनी- ।

श्वर-सैन्यार्णव-बाडवानलनशेषाशावधि-न्यस्त-भा- ।

सुर-कल्हार-सुरापगा-निभ-यशश्श्रीवल्लभं नभि-शान्-

तर-देवं जगदेक-दानि नेगळदं विश्वम्भरा-भागदोळ् ॥

तदनुजन्मनोद्भुगनात ॥

क ॥ विक्रम-चक्रिय पुण्यदे ।

चक्रं पुरुष-स्वरूपदिं पुष्टितेनल् ।

विक्रमदिन्देसेदातं ।

विक्रम-शान्तरनेनिप्प पेसरं पडेद ॥

व ॥ आतन मनोरमे पाण्ड्य-कुल-वियत्-तळ-चन्द्र-लेखेयु शफर-
पताक-जय-पताकेयुमेनिसिद चन्दल-देविग ॥

क ॥ उदयाचलदोळहिमकरन् ।

उदधियोळमृतकरनुदधिपन्तिरलवर्गन्द ।

उदयिसिदं सकळ-कळा- ।

सदनं महिमा-निळिम्प-शैलं तैल ॥

अन्तु जगज्जनद पुण्यादिं कल्पवृक्षमे क्षत्रिय-स्वरूपदिं पुष्टितेनि ॥
पुष्टि सान्तळिगे-सायिरमुमनेक-च्छत्र-च्छायेयि सुखं राज्यं गेयुत्तिरेसि

क ॥ अरुमुळि-देवन गाव- ।

ब्बरसिय सुते वीर-भूपनत्तिगे वीर- ।

ब्बरसियरप्रजे तैलय- ।

धरणीश्वरनजि नेगळ्द-चट्टल-देवि ॥

भुजबळन गोगियोङ्ग- ।

न जय-श्री-कान्तनेनिप वर्म्मन तायि वि- ।

श्व-जगद्-वन्द्ये तानव- ।

निजेगमरुन्धतिगमधिके चट्टल-देवि ॥

काञ्ची-नाथ-मनः-प्रिये ।

चञ्चजिन-समय-कामघेनु दिगन्त- ।

प्राञ्चित-कीर्ति-पताके वि- ।

रञ्चि-रमा-सदृशे नेगळ्द-चट्टल-देवि ॥

व ॥ आ-जिन-समय-निदान-दीप-वर्त्ति भुजबळ-शान्तर नभि-
शान्तर विक्रम-शा [न] तरं वर्म्मदेवं मोदलागि निज-नन्दन-
समेतं सुखं राज्यं गेय्युत्तिहु राजधानि-पोम्बुर्चदोलु पञ्च-वसदियं
माडिसि या-वसदिय खण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धारकमल्लिर्ष ऋषि-समुदा-
यकाहार-दानार्थमागि भुजबळ-शान्तर नभि-शान्तर विक्रमशान्तरनुं
मूवरुमिहु विट्ट ग्रामङ्गलु रावनाडोळ्माण अग्रहारमानंदूरुं (दूसरे स्थानों
के भी नाम दिये हैं) विट्टरा-पञ्च-वसदिय प्रतिबद्ध मागियानन्दूरुल
चट्टल-देवियुं श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल-शान्तर-देवनं वीरब्बरसियर्गे परोक्ष-
विनयमागि यी-वसदियं श्रीमद्-द्रविल-सङ्घदरुङ्गलान्वयद वादि-वरट्टनेनि-
सिद श्रीमद् अजितसेन-पण्डित-देवर नामोच्चारणदिं केसर्-कल्लिकि-
सिद-वराचार्यावलियेन्तेन्दे श्री-वर्द्धमानस्वामिगळ तीर्थं प्रवर्त्तिसे
शि० २४

गौतमद् गणधररागे तत्-सनातनदोळनेकरतिक्रान्तरागे कलियुग-गण-
धरद् हयापाळ-देवरादरवरिं बळिक षट्-तर्क-षण्मुखापर-नामधेय
जगदेकमह्य-वादिराज-देवरवरिं ओडेय-देवरवरिं श्रेयान्स-पण्डित-
रवरिं बळिक ॥

क ॥ दूरीकृत-दुरधं निर- ।

हारित-मदनं स्व-तर्क-विद्या-बळ-सम्- ।

हारित-पर-समयं वाक्- ।

श्री-रमणी-रमणनजितसेन-मुनीन्द्र ॥

प्रद्युम्न-मद-विदारणन्- ।

उद्यद्गुण रत्न-वार्द्धिनेगळदं पेरिदेन् ।

अद्यतन-गणधरं निर- ।

वधं श्रीमत्-कुमारसेन-व्रतिप ॥

तार्किक-चक्रवर्तियुं वादीभ-पञ्चाननमेनिसिद् श्रीमदजितसेन-
पण्डितवर गुड्ड ॥

क ॥ नृप-विद्याम्बुधि-पारगन् ।

अपरिमित-स्याग-गुणनराति-मुखेन्दु- ।

ग्लपन-रुहा-राहु रिपु- ।

द्विप-सिंहं शान्तरान्वयाम्बर-चन्द्र ॥

चागददगुन्ति याचकर- ।

आगिसिदुदु पलवरसरं बीरददोन्द ।

ओगडिसदेळो वनचरद् ।

आगिसिदुदु पलवरहितरं तैलुगन ॥

अवननुजं निज-निखि- ।

श-विदारित-वैर-नृप-मदेम-शिरः-पी- ।

ठ-विमुक्त-मौक्तिक-द्युति- ।

धवलित-भू-भुवनननुपमं गोविन्द ॥

अवनिं किरियं बोधुगन् ।

अवनहित-क्षत्र-पुत्र-वित्रसनं भू- ।

भुवन-ग्रस्तुल्यं रिपु- ।

युवती-वैधव्य-शीळ-शिक्षा-दक्ष ॥

व ॥ यिन्तीयरसुगल्लुमिर्दु सक-वर्ष १०२५ यदेनेय सुभानु-
संवत्सरद चैत्रद पुण्णमे बुधवार-सोम-ग्रहणद तात्कालदोल्लु
प्रतिष्ठेयं माडि आ-वसदिय खण्ड-स्फुटित-नव-कर्मकाहार-दानकं
देवरष्टविधाच्चने कारणमागि आ-वूरोळाद सेसे विर्दु बीयं देविदेरें
अडिगर्धु काणिके कयगाणिके हालावु हव्वद बीय्य कुमारगघा-
णम्मोदलागि धारा-पूर्वकं सर्व्व-वाधा-परिहारं माडि बिहर

(वे ही अन्तिम वाक्यावयव)

इदना-चन्द्रार्क-वर- ।

मुदितोदितमागि कादवं परम-सुखा- ।

स्पदनकुं पापदिनलि- ।

द दुरात्मं नरक-गतिगे गळगळनिळिगु ॥

(वे ही अन्तिम श्लोक) ।

[जिनशासनकी प्रशंसा । जब (उन्हीं चालुवय उपाधियों सहित)
त्रिभुवनमल्ल-देवका विजयी राज्य चारों ओर प्रवर्द्धमान था तब तत्पाद-
पद्मोपजीवी महामण्डलेश्वर त्रिभुवनमल्ल-शान्तर देव था । इसका साधारण
नाम तैल था, इससे किसीकी तुलना नहीं हो सकती थी ।

जो उग्रान्वय कलिकालके कल्याणका जन्मस्थान था और जिसमें उच्चवंशी क्षत्रिय कुटुम्बोंने जन्म लिया था, उसका अवतार (उत्पत्ति)। पार्श्वनाथके वंशमें एक राहु था, जो उत्तर मधुरा शहरके भुजङ्ग (वीर) के रूपमें प्रसिद्ध था। उसके बाद सहकार हुआ और उसका पुत्र जिनदत्त हुआ। उसने राजकीय नगर पोम्बुर्चमें शान्तर-मुकुट पहना और इस शान्तलिगे-हजारपर एकच्छत्र राज्य करने लगा तथा दूसरा नाम 'शङ्कर' धारण किया। इसके बाद उग्रान्वय नाम 'शान्तरान्वय'में परिणत हो गया।

उसके बाद कई राजा क्रमशः व्यतीत हो गये। इस परम्पराके अन्तमें,— शान्तर ओडुग हुआ। उसका भाई तैल हुआ। उसका पुत्र वीर हुआ। उसकी पत्नी वीरल-देवी थी। उन दोनोंके भुजबल-शान्तर पुत्र हुआ। उसका छोटा भाई श्रीवल्लभ नम्रिशान्तर-देव था। उसका छोटा भाई ओडुग, जिसने बादमें विक्रमशान्तर नाम धारण किया। उसकी पत्नी चन्द्रलदेवी थी। उनसे तैलका जन्म हुआ।

जब वह शान्तलिगे हजारमें राज्य कर रहा था:—अरुमुक्ति-देवकी (पत्नी), गावबरसिकी पुत्री, राजा वीरके बड़े भाईकी पत्नी, वीरवरसिकी ज्येष्ठ बहिन, राजा तैलपकी नानी, चट्टल-देवी प्रसिद्ध थी। यह भुजबल, गोगिग, ओडुग और बर्मकी माता थी।

जिन-समुदायके उस दीपकने राजधानी पोम्बुर्चमें पञ्च-बसदि बनवायी और उसके लिये भुजबल-शान्तर, नम्रिशान्तर, तथा विक्रम-शान्तर, इन तीनोंने (उक्त) गाँव प्रदान किये। और आनन्दूरमें, पञ्च-बसदिके सामने, चट्टल-देवी और त्रिभुवनमल्लशान्तर-देवने, वीरवरसिकी स्वर्गयात्राकी स्मृतिमें, एक बसदिकी नींवका पत्थर जमाया। यह काम उन्होंने अजितसेन-पण्डित-देवका नाम लेकर किया। ये 'वादि-घरट्ट'के नामसे प्रसिद्ध थे और द्रविलसंघ तथा अरुल्लान्वयके थे।

उनके आचार्योंकी परम्परा इस प्रकार थी:—वर्द्धमान-स्वामीके तीर्थमें गौतम-गणधर हुए। इस परम्परामें बहुत-से आचार्यों होनेके बाद, एक कलियुग-गणधर दयापाल-देव हुए। उनके बाद, जिनका अपर नाम 'षट्-तर्क-

बण्मुख' था ऐसे जगदेवमल्ल वाहिराज-देव हुए। उनके बाद ओडेय-देव, उनके बाद श्रेयांस-पण्डित, और उनके बाद परचक्रविजेता अजितसेन-मुनीन्द्र हुए। अद्वितीय कुमारसेन प्रतिप निर्विवाद रूपसे आधुनिक गणधर रूपमें प्रसिद्ध थे।

तात्त्विक-चक्रवर्ती अजितसेन-पण्डित-देवके एक गृहस्थशिष्य राजा तैलुग थे। उनकी प्रशंसा। उनका लघु भ्राता गोविन्द था। उनसे छोटा भाई बोप्पुग था।

इन राजाओंने (तैलुग, गोविन्द, बोप्पुगने) मिलकर, (उक्त मिति को) चन्द्रग्रहणके समय, बसदिकी स्थापना की, और उसकी मरम्मत, ऋषिवर्गके आहार, तथा देवकी अष्टविध पूजाके लिये (उक्त) दान दिये। वे ही अन्तिम श्लोक।]

[EC, VIII, Tirthahalli tl, n° 192]

२४९

दावनगेरे—(मैसूर) कन्नड़

[वि० चा० का ३३ वीं वर्ष=११०८ ई०]

निम्नलिखित श्लोक मूल लेखकी २१ वीं पंक्ति है:—

कोगळि-नाडोल्लगद कदम्ब-दिसायरदागरङ्गळोल्ल

देगुलकं जिना(य)लयकवारवेगं केरे बावि सन्नकम् ।

रागदे तन्न पन्नयद सुङ्गदोल्लं दशवन्नवित्तिनि-

न्तागरमुल्लिन्नं नेगळ्द (ळद) बम्मरसं गुण-रत्नदागरम् ॥

अनुवाद:—“कदम्बोंके सर्वश्रेष्ठ, सर्वोपरि स्थानोंमें अग्रगण्य कोगळि-देशमें, प्रसिद्ध बम्मरसने,—एक जैनमन्दिर, एक जिनकी वेदी, एक बगीचे, एक तालाव, एक कुआँ (वापी) तथा एक दानशाला (सन्नक) के लिए,—“पन्नय”की,—तबतकके लिये जबतक कि वह कर जारी रहे,—अपनी तमाम खुशीपर “दशवन्न” खुशीसे दिये।”

[IA, XXX, p. 107, t. & tr.].

१ ‘दशवन्न’से मतलब आधुनिक ‘दसवन्द’ या ‘दशवन्द’से है, जिसका अर्थ सि० राइसने यह किया है कि “जो व्यक्ति किसी तालाबकी मरम्मत या उसका

२५०

होन्नूर—कन्नड़

[लगभग शक १०३०=११०८ ई० (फ्लीट) ।]

[कोल्हापुरके पास कागलसे दक्षिण-पश्चिमकी ओर दो मील दूरपर होन्नूरमें जैनमन्दिरके भीतर एक प्रतिमाके अभिषेक-स्थल (पाण्डुक शिला) के सामने यह प्राचीन कन्नड़का लेख है । प्रतिमा खड्गासनस्थ सिरपर सर्पके सप्तफणाधारी छत्रसे मण्डित पार्श्वनाथस्वामीकी है । इसके दोनों कोनोंमें एक-एक झुकता हुआ या बैठा हुआ आकार (मूर्ति) है । लेख १६ इञ्च ऊँची तथा २ फुट ७ इञ्च चौड़ी जगहको घेरे हुए है । यह कोल्हापुरके शिलाहारोंमेंसे बल्लाल और गण्डरादित्यके समयका है, अर्थात् लगभग शक १०३० (११०८-९ ई०) के समीपवर्ती है ।]

लेख

स्वस्ति श्रीमूलसंघद पो(पु)न्नागवृक्षमूलगणद रात्रिमतिकन्ति-
यर गुडं बम्मगावुण्डं माडिसिद बसदिगे श्रीमन्महामण्डलेश्वरं बल्लाल-
देवतुं गण्डरादित्यदेवन्म(नुम्) आहारदानके बिट्ट कम्मविन्नूरकं
अरुगयि मने.....

[स्वस्ति । श्रीमन्महामण्डलेश्वर बल्लालदेव और गण्डरादित्यदेवने श्रीमूल संघके (भेद) पुन्नागवृक्षमूलगणके रात्रिमतिकन्तिके गुड (शिष्य या अनुयायी) बम्मगावुण्डके द्वारा निर्मापित बसदिके लिये, (तपस्वियोंको) आहारदान के लाभार्थ २०० 'कम्म' एवं छः हाथ या ३ गजका एक भवन दानमें दिया ।]

[IA, XII, p. 102, n° 6, t. & tr.]

निर्माण करता था उसको कुछ भूमि भेंटमें दी जाती थी; इसके सिवाय उस तालाबसे फायदा उठानेवालोंसे तालाबके निर्माण करनेवालेको उत्पन्न (फसल) का १० वाँ हिस्सा या और कोई छोटा हिस्सा मिलता था । इसीका नाम 'दशवन्न' था ।

२५१

हेब्बण्डे—संस्कृत तथा कन्नड-भूमि

[वर्ष ३५ चालुक्य-विक्रम=१११० ई०]

[हेब्बण्डेमें, तालाबके दक्षिण नष्ट हुए बाँधके पासके पाषाणपर]

श्रीमत्-परम.....॥

.....चालुक्याभरणं श्रीमत्-त्रिभुवनमल्लदेवर विजयराज्यमुत्तरो-
त्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानम्माचन्द्रार्क-तारं सलुत्तमिरे ॥ आतन मगं एरेयङ्ग
(४ पंक्तियाँ नष्ट हो गई हैं) विष्णुवर्द्धन-म.....एनिसि
केतवेर्गडे (६ पंक्तियाँ नष्ट हो गई हैं) श्री-शुभचन्द्र-देव.....
.....तुण्डरुं वादि-कोळाहळ.....स्व-समय-रक्षण-पक्षपाति
.....एनिसिद कनक.....त्रैविद्यसिद्धान्तदेवर शिष्यरम्प
मुनिचन्द्र-सिद्धान्त-देवर गुड्डि केतव्वे.....धिद्वि-देवनुं
भुजबळ-गंग-पेर्माडियुं बम्म-गावुण्डनु नाळ-प्रभु चालुक्य-
विक्रम-कालद ३५ नेय विकृत-संवत्सरद फालगुन-मासद शुद्ध-
पञ्चमी बृहवारदन्दु...मुख्य-स्थानवागि...चन्द्रशेखर-वेर्गडे कट्टि-
सिद केरेय केळो गळ्दे कम्म मूवोत्तु आ-केरेय तेङ्गण-कोडियल्लु बेहले
मत्तरोन्दु मने आरु गाण वोन्दु (हमेशाका अन्तिम श्लोक) श्रीमत्
कनकनन्दि-त्रैविद्य-देवर गुड्डं सेनबोव-बोग-देवन बरह ॥ श्री

[जिनशासनकी प्रशंसा । जब (अपनी उपाधियों सहित) चालुक्य
त्रिभुवनमल्लका विजयराज्य चारों ओर प्रवर्द्धमान था । (इस स्थानपर
होयसलोंके विवरण हैं, जो कि बहुत घिस गये हैं ।) शुभचन्द्र-देव (से
परम्परागत आये हुए) कनकनन्दि-त्रैविद्य-देवके शिष्य, मुनिचन्द्र-सिद्धान्त-
देवके गृहस्थ शिष्य केतव्वेकी प्रशंसा ।

विद्विदेव, भुजबळ-गंग-पेर्माडि, बम्म-गावुण्ड (? तथा) नाळ-प्रभुने,
चालुक्य-विक्रम-कालके ३५ वें वर्षमें, जो कि विकृत वर्ष था, ६ मकान और

१ तेलकी चट्टीके साथ, (उफ) भूमिका दान किया । हमेशाके अन्तिम श्लोक । यह लेख कनकनन्दि-त्रैविद्य-देवके गृहस्थ-शिष्य, सेनबोव बोग-देवके द्वारा रचा गया ।]

[EC, VII, Shimoga tl., n° 89]

२५२

महोबा*—संस्कृत

[संवत् ११६९, फाल्गुन सुदि ८ (१११२ ई०)]

यह लेख संभवतः जयवर्मदेवके कालका होना चाहिये, जो, जैसा कि इतिहास कहता है, सिर्फ ४ साल बाद, सं० ११७३ में शासन कर रहा था ।

[A. Cunningham, Reports, XXI, p. 73, a]

२५३

आलहळिल्ल—संस्कृत तथा कन्नड़-भग्न

[वर्ष ३७ चालुक्य विक्रम=१११२ ई०]

[आलहळिल्ल (होळल्ल परगना) में, तलवारके खेतमें पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ॥

जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रयं श्री-पृथ्वी-वल्लभं महाराजाधिराज परमेश्वरं
परम-भट्टारकं सत्त्वाश्रय-कुल-तिलकं चालुक्याभरणं श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल-
देवर विजय-राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमा-चन्द्रार्क-तारम्बरं सलुत्त-
मिरे कल्याणपुरद-नेलेवीडिनोळ् सुख-संकथा-विनोददि राज्यं गेय्युत्तिरे
तत्पादपद्मोपजीवि ।

* महोबाके ये (नं० २५२, ३२५, ३३७, ३४१, ३६०, ३६१, ३६५)
अतिसंक्षिप्त शिलालेख ए. °कनिंघमको भग्न जैन मूर्तियोंके चरण-पाषाणपर मिले
थे । इनमेंके कुछ शिलालेख बहुत कामके हैं, क्योंकि उनमें जिस समय मूर्तिका
निर्माण या प्रतिष्ठा हुई थी उसका काल तथा उस समय शासन करनेवाले
राजाका नाम, ये दोनों चीजें भी हुई हैं । कुछमें शासक-राजा का नाम नहीं
मिलता, पर कालका उल्लेख मिलता है, कुछमें वह भी नहीं मिलता ।

खस्ति समस्त-वस्तु-गुण-भूषणनन्धि-परीत-भूतळ- ।
 प्रस्तुत-कीर्ति भावभव-मूर्ति जया-वनिता-प्रपूर्ण-वृ- ।
 त्त-स्तन-हार***वाञ्छित-कल्प-कुजानुसारन- ।
 म्यस्त-कळागम-ज्ञेने गङ्गरसं सरसं धरिप्रियोळ् ॥
 विनयाधारमुदारमुजति कुलङ्क****श्रयमेम्बु ।
 इनितुं शोभिसे शोभे-वेत्तनेनुतुं धात्री-तळं कर्तुं-की- ।
 र्त्तने-नोयुं जयदुत्तरंगननशेष-श्री****वर्द्ध-प्रसं- ।
 गन्*****वितरण-व्यासङ्गनं गङ्गनम् ॥

अन्तेनिसि नेगई नीतिवाक्य-कोङ्गुणिवर्म धर्म-महाराजाधिराज
 परमेश्वरं कुवळाळपुरवराधीश्वरं नन्दगिरि-नार्थ सकळ-गुण-सनार्थ मद-
 गजेन्द्र-लाञ्छनं परिपूर्णाकृत-विबुध-जन-मनोवाञ्छनं पद्मावती-लब्ध-
 वरप्रसादम् मृगमदामोदम् गङ्गकुळ-कुवळय-शरच्चन्द्रं मण्डळिक****द्रं
 दप्पोद्धताराति-मण्डळिक-वनज-वन-वेदण्ड दुर्द्धर-गण्ड नामादि-समस्त-
 प्रशस्ति-सहितं श्रीमन्महामण्डलेश्वरं त्रिभुवनमल्ल भुजबळ-गंग-पेम्माडि-
 देवर पट्टमहादेवी ॥

पुट्टिद***अनुजं । पट्टिग-देवळे गङ्गवाडिगे तळेदळ् ।
 पट्टमनेसेदिरे गङ्गन । पट्ट-महादेवियन्तु नोन्तरुमोळरे ॥
 परिवार-सुरभिगन्तर- । पुर-मुख्य-मण्डनेगे गङ्ग-मादेविगे नायकि ।
 यरनद्****ओडं सति । दोरे*****नृप*****पडेये ॥
 अन्तवर्गे ॥

गङ्ग-कुळ-तिळकरेनिसिद । गङ्ग-नृपं मारसिंग-नृप गोविन्द-नृपं ।
 तुङ्ग-यशनेनिसिदं कलिय् । अङ्ग-नृपं नेगदरेळेगे कुमारप्रणिगळ् ॥
 कोळालपुर-वरेश-नृ-पाळ-मुतर्मद-गजेन्द्र-लाञ्छनरारि-भू-
 पाळ-कुळ-वनज-वन-शुण्डालर्नेगदर स्समस्त-सु-भटाप्रणिगळ् ॥

अन्तेनिसि नेगईग ङ्ग-पेम्माडि-देवरं गङ्ग-महादेवियरं कुमार-वर्गमुं
मण्डळि-सासिरदोळ्ळणोडेहळ्ळिय वीडिनोळ् सुख-संकथा-विनोददि राज्यं
गेयुत्त मिरला-महा-मण्डलेस्सरनद्धाङ्ग-लद्धिम ॥

श्री-वधु जय-वधु कीर्त्ति- । श्री-वधु वाग्धुवेनिप्प वधु गङ्ग-नृपङ्ग ।
ई-वधुवेनिसिद बाचल-देवियोळेगेयेन् बेनुळ्ळिद नृप-वनितेयरम् ॥
ई-चतुरम्बुधि-वेष्टित-भू-चक्रद सतियरेन्नलादडवेनो ।

बाचल-देविगे समन्.....-च-मणि-प्रतति दोरेये चिन्तामणियोळ् ॥
काम-मदेभ-गामिनिगे.....नमे पूज्यमेनिप्प पेम्पिनिन्द् ।

ईव.....मं तणुपि कल्प-कुजक्केणे.....।

दू.....र-दान-गुण-भूषणे दान-विनोदे दान-चिन्-।
तामणि दान-कल्प-लतेयेम्बिदु बाचल-देविगोप्पदे ॥

एरगदराति-भूभुजरनाजियोळ्झिसि.....निजाङ्गिगळ् ।

एरगिसुतिर्प दर्पद पोड.....गण्डनप्प त-।

नेरेयन.....तनगे गङ्ग-महीभुजनं विलासदिन्द् ।

एरगिसि...भाग्य-भरदुन्नति बाचल-देविगोप्पुगुम् ॥

अन्तुमल्लदे ॥

अरि-विरुद-पात्र-जगदळ् । धरेगेळ्ळं नीने राय जगदळे नानी-।

धरेगेळ्ळमेन्दु पिरिदान-। दरदिन्द्.....सि पात्र-जगदळे-वेसरम् ॥

कुडे राय जगदळे-पेसर- । वडेद.....डेय कडेय बडवुगळ्ळीयल् ।

पडेदळ् रायरोळ्पं कुडे बाचल-देवि पात्र-जगदळे-वेसरम् ॥

मत्तम् ॥

.....मेवुदे-नडे-तन्न महत्त्व-वृत्तियं ।

वेडदे नोडिरे नेगळ्द बाचल-देविय कीर्त्ति.....।

आडि दिगङ्गना-नटियरोळ् तणिविछदे मत्तविन्नु.....।

.....बीर...पात्र.....मेले पात्रमुम् ॥

मत्तं स्वस्त्यनवरत-परम-कल्याणाभ्युदय-सहस्र-फळ-भोग-भागिनि
ललित-करण-गृहीत-भाव-प्रयोगिनि भुजबळ-गंग-भूपाळ-विशाळ-वक्ष-स्थळ-
निवासिनि । नृत्य-विद्या-प्रभाव-प्रभूत-निर्मळ-यशो-विभासिनि...स्थान-
पात्र-मुख-मण्डने । प्रतिपक्ष-गायिका-गान-मान-परिखण्डने । अनवरत-
दान-जनित-विबुध-जन-हर्षे । देवा.....न.....स.....तर्पे.....। चतुर-
विद्या-विनोदे । कस्तूरिकामोदे । अरि-विरुद-पात्र-जगदळे । जिन-गन्धो-
दक-पवित्रीकृतविनीळ-नीळ-कुन्तळे । निखिळ-कुळ-पाळिका-गीयमान-वि-
शद-यशो-गीति.....स्थान.....जिन-शासन-साम्राज्य-यशस्-पताके । परोप-
कार-कमळाकरचक्रवाके । सौभाग्य-सची-देवि श्रीमद्-बाचल-देवियर्
वणिक्केरेय त्रिभोगाभ्यन्तर-सिद्धिधिन्द सुरवदिनिरप्प ।

जन-नुते बाचल-देविय....।

जननिगे सरि दोरे समानमेनल्के केळ-।

वनियोळ् पडवळति....।

जननिय.....जननियरेणेये ॥

पडेदोडमे दान-धर्म-। कोडळु विशेष-व्रतक्विवेने नेगळ्द जसं ।

वडेदडव्....मतिगे ।.....वसुधान्तळदोळ् ॥

आ-महानुभावयोडपुट्टिदम् ॥

जिन-पदाम्बुज-भृङ्गं । जिन-समय-सरोजिनी-मार्ता.... ।

.....प्रभ-। वेने नेगर्द बाहुबलि धरा-मण्डलदोळ् ।

एळ्यं मूरडियं कोट् । अळिपदनब्जो..... ।

.....दिन्द्र । इळिसिदपं नम्म बाहु-बलिया-बलियम् ॥

अन्तेनिसि नेगर्द श्रीमद्-बाचल-देवि....हुबलियण्णनु धम्म-कार्या-
लोचनमनाळोचिसि ॥

ई-भवनदोळेन्दुं परि- । शोभितं..... ।

.....एन्देन्दाहा- । राभय-भैषज्य-शास्त्र-दानमनेसेयल् ॥

माडुव बगेयि मण्डलि- । नाडोळगण बन्नि.....अनुनयदिन्दम् ।

माडिसिदल् जिन-गृहमं । नाडाडिगळुम्भमेन्दु धरे पोगळ्विनेगं ॥

सङ्गळोळगिदुत्तम- । सङ्गं.....मूल-संगमा-संग-.... ।

तुङ्गं देसिग-गणमा- । सङ्गदोळा.....गुडि बाचल-देवि ॥

देसदोळुत्तममेनिसुव । देसिग-गणद.....माडिसिदळिदम् ।

देसिग-गणक्के मण्डलि- । सासिरकं तिलकमेनिप चैत्यालयमम् ॥

अळिगे देसिग-गणदव- । गळ्ळदे मत्ताव-गणदलार्गन्देडकूळ् ।

अळ्ळदे तेजं बोन्दिप- । गळ्ळदेन्तुं बुधाब्ज-वन-कळ-हंसा ॥

सुर-मनुज-भुजग-भुवना- । न्तरदोळ् मुन्दादविन्दुदिप्पुवाविन्तिम् ।

दोरेये जिन-भवनमळेम्- । बर मातु दिटं बुधाब्ज-वन-कळ-हंसा ॥

जळधि-परीत-भू-वळ्यदोळ् नेगर्दोप्पुव गङ्गवाडि-ना- ।

डोळगे नेगर्त्ते-वेत्तेसेव मण्डलि-नाळ्के मुखक्के मूगेनिप्प् ।

अळवियनान्त बन्निकेरेयोळ् नेरेदोप्पुव पार्श्वनाथनीग् ।

अळि-कुळ-नीळ-कुन्तळेगे बाचल-देविगमीष्ट-सिद्धियम् ॥

अन्तेनिसि नेगर्द श्री-पार्श्वनाथ-देवर्गे चालुक्य-विक्रम-वर्षद ३७

नेय नन्दन-संवत्सरद पौष्य-शुद्ध ५ बृहवारदुत्तरायण-सङ्क्रान्ति-

यन्दु मण्डलिसासिरद बळिय बाडं बूडङ्गेरेयल् बन्निकेरेयल् तळ-

वृत्ति गर्दे मत्तर्मूरु तोण्ट मत्तरोन्दु गाणवेरडु पुरद कोलियो.....आ-येरडूर

तळ-भण्डद सुङ्गवोळगागि यिन्तिनितुमं भुजबळ-गङ्ग-पेर्माडि-देवरं

गङ्ग-महादेवियरं वर्गडे-बाचल-देवियरं कुमार-गङ्ग-रसतुं मार-
सिंग-देवतुं गोग्गै-देवतुं कलियङ्ग-देवतुं समस्त-प्रधानर नाड-प्रमु-
गळ सन्निधानदळु सर्व्व-बाधा-परिहार सर्व्व-नमस्यमाणि देवर श्री-पाद-
पद्ममूळदोळ् धारा-पूर्व्वकं माडि विट्ठरु ॥

धरे पुसिवोगदे बेळगी- । धरेयं भुज-वळदिनाळद भुजवळ-गङ्गम् ।
परेदिके जैन-धर्मम् । धरेयोळ् चन्द्रार्क-तारमुळ् जेवरम् ॥
सकलोर्व्वी-स्तुतमप्प धर्ममनिदं कादं चिरैश्वर्य-भुम्- ।
भुकनकुं विपरीतदिं नडेदयंगा-गङ्गेया-वारणा-
सि-कुरुक्षेत्रदोळेये गो-द्विज-मुनि-लीयर्कळं कोन्द पा-
तकनकुं विडदिकुमा-पुरुषनेनुं रौरव-स्थानमम् ॥

(हमेशाके अंतिम श्लोकके बाद)

शासनमिदाबुदेल्लिय । शासनमारित्तरेके सल्लिसुवे नानी- ।
शासनमनेम्ब पातक-नाना-सकळं रौरवके गळगळनिळिगुम् ॥
देवर श्री-पाददोळु धारा-पूर्व्वकदिं पुर-वर्गद सुङ्कवं देवर्गे विट्ठर
बनिकेरेयलु कळुकुटिग काळोज देव-दासिगळिगे विट्ठ बेदले गळेयलु
मत्तरोन्दु ॥

श्री-देशी-गण-वार्धि-वर्द्धन- करश्चन्द्रोऽकलंकाङ्कितम् ।
स्थेयान् श्री-मलधारि-देव-यमिनः पुत्रः पवित्रो भुवि ॥
सद्-धर्मैक-शिखामणिर जिनप...चिन्तामणिस् ।
स-श्रीमान् शुभचन्द्र-देव-मुनिपत्तिस्त्वनन्तरत्नाकरः ॥

श्री-लोकिगुण्डिय प्रभु एरकर्णं श्री-पार्श्व-देवरंग-भोगके बडि-
यिन्द-क्षयमाणि कोट्ट लोक्किय गद्याणं १ ॥ मत्तं विट्ठ गर्दे मत्तरोन्दु बेईले
मत्तरु मूरु ॥

[जिनशासनकी प्रशंसा । त्रिभुवनमल्ल-देवके विजय-राज्यमें तत्पादप-ओपजीवी गङ्गरस था; इसको 'जयदुत्तरंग' नाम भी दे रक्खा था । नीतिवाक्य कोङ्कुणिवर्म भर्म्ममहाराजाधिराज परमेश्वर महामण्डलेश्वर त्रिभुवनमल्ल भुजबल्ल-गंग-पेर्माडिदेवकी पट्टरानीने अपने छोटे भाई पट्टिग-देवके लिये गङ्गवाडिका मुकुट धारण किया । तमाम रानियों और राजाओंसे बहू जयादा प्रतिष्ठित थी ।

उन दोनोंके चार पुत्र उत्पन्न हुए—गङ्ग, मारसिंग, गोमिग, और कलियङ्ग । ये सब महान योद्धा थे ।

जिस समय गङ्ग-पेर्माडि-देव, गंग महादेवी, और उनके लड़के मण्डलिहजारमें अपने निवास-स्थान एडेहल्लिमें थे, उस महामण्डलेश्वरकी एक अन्य बर्द्धाङ्गिनी बाचल-देवी (उसकी प्रशंसा) थी । उसने अपने पतिको 'पात्र-जग-दळे'की उपाधि दी थी ।

जिस समय (अनेक उपाधियोंवाली) बाचल-देवी बन्निकेरेमें, अपनी तीसरी पीढीकी खुशीसे विश्रब्ध होती हुई, सुखपूर्वक रहती थी, उसने अपने बड़े भाई बाहुबलीसे परामर्श करके बन्निकेरेमें एक सुन्दर जिनालय बनवाया ।

बाचल-देवी मूलसंघ, देशीगणकी गृहस्थ-शिष्या थी । उस देशीगणके लिये उसने चैत्यालय बनवाया । समुद्र-परिवेष्टित लोकमें गङ्गवाडि-नाइ प्रसिद्ध है और उसमें मण्डलि-नाइ प्रसिद्ध है । उसमें चेहरेपर जैसे नाक है उसी तरह बन्निकेरे था । पार्श्वनाथ भगवानके लिये चालुक्य विक्रमके ३७ वें वर्षमें भुजबल्ल-गङ्ग-पेर्माडिदेव, गंग-महादेवी, पेर्माडि-बाचल-देवी, और कुमार गङ्गरस, मारसिंग देव, गोमिग-देव, कलियङ्ग-देव, और तमाम मन्त्रियोंने, नाइ-प्रभुओंकी उपस्थितिमें सब करें एवं चुङ्गियोंसे मुक्त, मण्डलिहजारके बूदङ्गेरे, बन्निकेरेकी कुछ ज़मीन, एक बगीचा, दो कोलहू, और उन दोनों शहरोंकी कुछ चुङ्गीकी आमदनीका दान किया । आशीर्वचन और शाप । पाषाण-शिल्पी काळोज (शासनके उत्कीर्ण करनेवाले) का नर्त्तकियोंके लिये दान । शुभचन्द्र-देव-मुनिपकी प्रशंसा । लोक्किगुण्डि प्रभु एरेकणने भगवानके भोगके लिये १३ लोक्कि गद्याण, तथा कुछ भूमि दान की ।]

२५४, २५५, २५६, २५७, २५८, २५९, २६०, २६१

श्रवणबलोला—संस्कृत तथा कन्नड

(देखो जैनशिलालेखसंग्रह, प्रथम भाग ।)

२६२

मत्तावार—कन्नड-भग्न

[शक १०३८=१११६ ई०]

[मत्तावार पार्श्वनाथ वस्तिके प्राङ्गणमें एक पाषाणपर]

खस्ति श्री सक-वरुष १०३८ नेय दुर्मुकि-संवत्सरद चैत्र-
मासद कृष्ण.....यादिवार.....चेदल्लियु मायन....मग
मावण्णन शिष्यरुं सन्यसन गेय्दु मुडिहिद निसिदि ।

[(उक्त मितिको), मायनका पुत्र और मावण्णका शिष्य सन्यसन
(संन्यास=समाधि) धारण करके मर गया । उसका यह स्मारक है ।]

[EC, VI, Chikmagalur tl., n° 51]

२६३

तिप्पूर—संस्कृत तथा कन्नड

[शक सं० १०३९=१११७ ई०]

[तिप्पूर (कुलगेरी-प्रदेश) में, गाँवके उत्तर-पूर्व, पहाड़ीपर]

भद्रमस्तु जिनशासनाय सम्पद्यतां प्रतिविधानहेतवे ।

अन्यवादिमदहस्तिमस्तकस्फोटनाय घटने पटीयसे ॥

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

खस्ति होय्सल-वंशाय यदु-मूलाय यद्ववः ।

क्षत्र-मौक्तिक-सन्तानः पृथ्वी-नायक-मण्डनम् ॥

खस्ति श्रीजन्मगेहं निभृत-निरुपमौर्वानलोद्दाम-त्तेजं ।

विस्तारोपात्त-भू-मण्डलममल-यशश्चन्द्र-सम्भूति-धामं ॥

वस्तु-त्रातोद्भव-स्थानकमतिशय-सत्त्वावलम्बं गभीरं ।
प्रस्तुत्यं नित्यमम्मोनिधिनिभमेसेगुं होय्सलोर्वीश-यंशम् ॥

अदरोल् कौस्तुभदोन्दनर्ध-गुणमं देवेभदुदाम-स-
त्त्वदगुर्व्वं हिम-रश्मियुज्वल-कला-सम्पत्तिपं पारिजा-
तदुदारत्वद पेम्पनोर्व्वने नितान्तं ताळिद तानल्ले पु-
ट्टिदन् उद्वेजितवीर-त्रैरि विनयादिख्यावनी-पालकम् ॥

विनयादित्यनृपं सज्जनर्गं दुर्जनर्गमात्मविनयं तेजं ।

जनियिसे नयमं भयमं । विनूत नाळदो विशालभूमण्डलमं ॥

आ-विनयादित्य-वधु । भावोद्भव-मन्त्र-देवता-सन्निभे सद-

भाव-गुण-भवनमखिलकलाविलसिते क्येलेयव्वरसि येम्बळु पेसरि
आ-दम्पतिगे तनूभवन् । आदं शचिगं सुराधिपतिगं मुनेन्व ।

आदं जयन्तन् अन्ते विन पाद-विदूरान्तरङ्गन् एर्येयङ्ग-नृपं ॥

एर्येयन् अखिलोर्व्विगं एनिसिर्द । एर्येयङ्ग-नृपाल-तिलकन् अङ्गने चर्लिंग-
एर्येवडु शील-गुणदिं । नेरेद् एचल-देविय् अन्तु नोन्तरुमोळरे ॥

एने नेगळ्द अवरिर्व्वर्गं । तनूभवर् नेगळ्दर अल्ले बल्लाळं विष्णु-
चपाळकन् उदयादि- । ल्यनेम्ब पेसरिन्दमखिळ-वसुधातळदोळ् ॥

अवरोल् मध्यमनागियुं धरणिपं पूर्वापराम्भोधिप्य ए-
धुविनं कुडे निमिर्व्वुचोन्दु निज-वाहा-विक्रम-क्रीडेयु-
द्भवदिन्दुत्तमनादनुत्तमगुणव्रातैक-धामं धरा-

धव-चूडामणि यादवाब्ज-दिनपं श्री-विष्णु-भूपालकम् ॥

॥ कं ॥ एलेगेसेव कोयतूर तत्त- तळवनपुरमन्ते रायरायपुरम्बळ-

पळ बळेद विष्णु-तेजो- ज्वळनदे बेन्दवु बळिष्ठ-रिपुदुर्गङ्गळ् ॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्चमहाशब्दं महामण्डलेश्वरं द्वारावती-पुरवरा-

वीश्वर यादवकुलाम्बरधूमणि सम्यक्त्व-चूडामणि मलपरोळ्-गण्डाघनेक-
नामावली-समलङ्कृतर् अप्प श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल तलकाडु-गोण्ड भुज-
बळ वीरगङ्गविष्णुवर्द्धन-होयसल-देवर-विजयराज्यप्रवर्द्धमानमाच-
न्द्रार्कतारं सल्लुत्तिरे तत्पादपद्मोपजीवी ॥

जनताधारनुदारनन्यवनितादूरं वचस्तुन्दरी-

घन-वृत्त-स्तन-हारनुप्र-रण-वीरम्मारनेनेन्दपै ।

जनकं तानेने माकणब्बे विबुध-प्रख्यात-धम्म-प्रयु-

क्ते निकामात्त-चरित्रे तायेनलिदेनेचं महा-धन्यनो ॥

उत्तमगुणततिवनिता- वृत्तियनोळकोण्डुदेन्दु जगमेळं कै-

य्येत्तुविनममळ-गुण-सं- पत्तिगे जगदोळगे पोचिकब्बेये

नोन्तळ ॥

अन्ते निसिदेवि-राजन पोचिकब्बेय पुत्रं श्रीमन्महाप्रधानं दण्डनायकं
द्रोहघरह गङ्गराजं चोळन-सामन्तर इडियमं मोदलागि तळकाड-
बीडिनोळ पडियिप्पन्तिर्हु चोळं कोट्ट नाडं कुडदे कादि कोळ्ळिमेने
विजिगीषु- वृत्तियिन्देत्ति बलमेरहुं सार्चिदल्लि ॥

इत्तण भूमि-भागदोळ् अदन्यरदेके भवत्प्रताप-सं-

पत्तिय वर्णना-विधिगे गङ्ग-चमूप-जिगीषु-वृत्तियिन्द् ।

एत्तिद निन्न कथ्य निशितासिय तेमोने बेन्न-बारनेत्-

लुत्तिरे पोगि कञ्चि-गुरि-यप्पिनमोडिद दामनेय्दने ॥

आन् ओन्देमेय्योळ् एय्दि नरसिंग-वर्म्म-मोदलाद चोळन-साम-
न्तर एल्लरं बेड्कोण्डु नाड् आदुद् एल्लमनेक-व्छत्रम्माडि कुडे कृतज्ञं
विष्णु नृपति मेच्चिदेम् बेडिकोळ्ळिमेने ॥

अबनिपनेतगित्तपनेनून दवरिवर-ओलळिद वस्तुवं बेडदे भू-
भुवनम्बण्णिसे तिप्पूर । वृत्तियं बेडिदं जिनाच्चन-लुब्धम् ॥

अन्तु बेडि कुडे पडेदु गाजल्लरु-कुडुगेरैय् ओळ्ळाद तिप्पूर

वृत्तियं शकवर्ष १०३९ नेय हेमण(ल?)म्बि-संवत्सरद
उत्तरायणसंक्रमणदन्दु तम्म गुरुगळु श्रीमूलसङ्गद काष्पूरगणद
तिन्निणिक गच्छद श्रीमन्मेघचन्द्र-सिद्धान्त-देवर कालं कर्च्चि
धारापूर्वकं माडि बिट्ट दत्ति ॥

प्रियदिन्दितिदनेय्दे काव पुरुषर्गायुं महाश्रीयुं अक्-
के इदं कायदे काव्य पापिगे कुरु-क्षेत्रोर्व्वियोळ् बाणरा-
सियोळ् एक्कोटि-मुनीन्द्ररं कविलेयं वेदादय्यरं कोन्ददोन्द-
अयसं सागुमिदेन्दु सारिदिपुव् ई-शैलाक्षरं सन्ततं ॥

[EC, III, Malavalli tl., n° 31]

[जिनशासनकी प्रशंसाके बाद पोटल राजाओंके वंशकी प्रशंसा ।
इसी वंशमें बिनयादित्य उत्पन्न हुआ उसकी प्रशंसा । उससे और उसकी
पत्नीसे एरैयङ्ग उत्पन्न हुआ । उसकी पत्नी एचलदेवी । उनसे बल्लाल,
विष्णु, और उदयादित्य उत्पन्न हुए । उनमेंसे बीचके विष्णुने पूर्व समुद्रसे
पश्चिमतक सारी पृथ्वीपर कब्जा किया । उसके पराक्रमकी ज्वालाओंसे
मजबूत छोटे शाही किले कोयतूर, तलवनपुर (जो कि रायरायपुरका ही
दूसरा नाम है) नष्ट हो गये ।

उस समय वीरगङ्ग विष्णुवर्द्धन होयसलदेव अपनी चरमोच्चतिपर पहुँच कर
राज्य कर रहे थे । एचि-राजाके पिता मार, माता माकणब्बे और पत्नी
पोचिकब्बेकी प्रशंसा । उनके पुत्र महाप्रधान एवं दण्डनायक गङ्गराज हुए ।

चोलके अधीनस्थ शासक इडियम और दूसरे लोगोंने जब चोल राजाके दिये
हुए प्रदेशको देनेसे इन्कार कर दिया तब गङ्ग-चमूष (गङ्गराज) ने उनसे
वह प्रदेश लड़ाई लड़कर ले लिया । अकेले ही गङ्गराजने नरसिंग-वर्म्म और

चोलके अधीनस्थ अन्य तमाम विपक्षी शासकोंको भगा दिया और नाड देशको एक छत्रके नीचे लाकर विष्णुवर्धनको सौंप दिया, जिसपर उसने गङ्गराजसे अपनी इच्छाके माफिक कोई वर माँगनेको कहा । उत्तरमें गङ्गराजने तिप्पूर माँगा ।

इस प्रकार इच्छानुसार माँगे हुए और दिये हुए तिप्पूरका, जो कि गाजलूर और गौडुमेरीके बीचमें है, मूलसंघ, काणूर गण और तिम्रिणिक-गण्डके मेघचन्द्र-सिद्धान्त-देवको दान कर दिया ।]

२६४

चामराजनगर—संस्कृत तथा कन्नड

[शक १०३९=१११७ ई०]

[चामराजनगरमें, पार्श्वनाथस्वामीकी बस्तीके एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्दमहामण्डलेश्वरं द्वारावतीपुरवराधीश्वरं यादवकुलाम्बरद्युमणि सम्यक्त्वचूडामणि मलेपरोळ्णण्डाद्यनेकनामावलीसमलंकृतरूप श्रीमद्भुजबल वीरगङ्ग विष्णुवर्द्धन विट्ठिग-होयस-ल-देवरु गङ्गवाडि-तोम्भत्तरु-सासिर कोङ्गोळगागि एकच्छत्रछयेयि तलेकाडलुं कोळाल-पुरदलु सुख-सङ्कथा-विनोददि राज्यं गेयुत्तमिरे ।

श्रीमत्स्वामिसमन्तभद्रमुनिपो देवाकलङ्कस्तुतः

श्रीपूज्याङ्गिरुदात्तवृत्तनिलयो श्री-वादिराजाम्बुधौ ।

आचार्यो द्रविडान्वयो जिनमुनिः श्रीमल्लिषेण-व्रती

श्रीपालः परिपालिताखिलमुनिस्सोऽनन्तवीर्यक्रमः ॥

जिननिष्ठ-दैवमजितं । मुनिपति गुरु पोयसलेशनाब्दनेनल् सद्

विनुतं माडिसिदं श्री- । जिनगृहमं पुणस-राज-दण्डाधीशं ॥

मित्र-कुलाब्धि-वर्द्धन-सुधांशु विरोधि-बलान्तकं महा-
 मात्य-कुलोद्भवं सकलशासनवाचकचक्रवर्त्ति लो-
 कत्रयवर्त्तिकीर्त्ति **पुणिसम्म**-चमूपनवङ्गे शुद्ध-चा-
 रित्रे पवित्रे पोचले मनः-प्रिय-वल्लभे तत्तनूभवद् ॥
 चावणनाश्रितामर-महीरुहनुद्धतमन्त्रिपुङ्गवविद्-
 रावणनातर्नि किरिय कोरपनन्वितसत्कळा-कळा ।
 पावृत-बोधनातननुजं सुजनाग्रणि नागदेवना-
 ज्ञावनतान्य-मन्त्रि-निचयं कवितागुण-पङ्कजासनम् ॥
पुणिस-चमूपनेम्बेसेव शासन-वाचक-चक्रवर्त्तिगेन्-
 तेणिसलोडं पोगत्तं तनगागिरे पुट्टिद **चामराज** ना-
 कण कुमरय्यनेम्ब रतुन-त्रय-मूर्त्तिय पुत्रनोपिदं ।
पुणिसम-दण्डनाथनुदितोदित-चाम-चमूप सम्भवम् ॥
 अवरोळ्मो पिरिय चावन । युवतियरप्परसिकब्बेगं चौण्डलेगं ।
 भुवन-प्रसिद्धरात्मोद्- । भव [रादर प्] **पुणिसम**य्यनुं बिट्ठिगनुं
 कोळनेन्तम्भोजमुण्मल् नलिदु महिमे-वेत्तिपुवन्तागळु श्री- ।
 निळयं विख्यातवृत्तं **पुणिसेगन**वर्नि बिट्ठिगं पुट्टे मित्रर्ग-
 गळिगेळं सग्गू.....उद्धविसितखिळ-भव्य-व्रजं नाडैयुं निश्-
 चळ-चेतोजातरादद्धरेयोळेसेदुदन्ता-महामात्य-गोत्रम् ॥
 चावङ्गं सत्प्रियदि । भावकियेनिपरसिकब्बेगं सुतनोगेदं ।
 केवळमे नेगर्द पोय्सल- । भू-वनितेश्वरन सन्धिविग्रहि **पुणिसं** ॥
 तोदवनदिर्पि **कोङ्गरनडङ्गिसि** **पोलुवरं** पोरळिच मा- ।
 णदे **मलेयाळरम्मडिपि** **काळ-चृपालन** तोळ बिङ्कमम् ।
 बेदरिसि पोक्कु नील-सिल्लेयं जयलक्ष्मिगे कीर्त्ति[....] मा-

डिद विभु बिट्टि-देवन महा-सचिवं पुणिसं बळाधिकम् ॥
 अदटि पोस्सळ-मूपनोम्मं बेस.....नीळाद्रियं कोण्डु तन्- ।
 ओदविन्दं मल्ल्याळरं कदनदोळ् बेङ्कोण्डु तत्साहसा- ।
 भ्युदयं कैकोळे कैरळाधिपतियागिर्देम् बयल्-नाडनं ।
 पदपिं काणिसि कोण्डनिन्तु पुणिस-श्री-दण्डनाथाधिप ॥
 केट्ट नियोगि बिट्टु मोदल्लिछदे बन्द कृषीवलं मोदल् ।
 गेड्ड किरातनोलगिसलारदे सेवकनागे गेड्डदम् ।
 कोट्टु निरन्तरं जगमनिन्तभिरक्षिप्तुतिर्प पम्पोडम्-
 बट्टिरे दण्डनाथ-पुणिसं नेगळ्दं भुवनान्तराळ्दोळ् ॥

दरमिर.....लीयदे ग- । गर परियिं गङ्गवाडि-तोम्भत्तरु-सा-
 सिरद बसदिगळनाळङ्करिसिदपं पुणिस-राज-दण्डाधीशम् ॥

खस्ति श्रीमतु सक-वरुष १०३९ नेय दुर्म्मुस्ती-संवत्सरद
 जेष्ठबहुळ १ व मूलार्कवारदन्दु तुलारासिय बृहस्पति-लम्नदल्ल एण्णे-
 नाड अरकोत्तारदल्ल श्री-सन्धि-विग्रहि दण्डनायकपुणिसम्य माडिसिद
 त्रिकूटद-बसदियोळ्गागि बसदिगळ्णे बिट्टु गदे आ-ऊर हड्डुवल्ल अण्ण-
 मारेय-नोरेय केळ्णे.....खण्डुग हड्डेके गुळि १००० आ-ऊर तेङ्कण
 हेम्गेरेय कीळेरियल्ल गदे खण्डुग ऐदके गुळि ५०० बेड्ळे.....
 हरदरि खण्डुग एरडके ९ गुळि ४००० आ-ऊर हळ्ळि सहित जक्कि-
 कोळग धम्म-गोळ दान-गोळग कळ्डु.....गुळि ओन्दु होरें गाण-
 दलोम्मान एण्णे तोण्डद गुळि १०० आ-ऊर बडगण कोडेयनहळ्ळि
 सहित.....पुणिस-जिनालयके धारा-पूर्वक माडि बिट्टु दत्ति (रीतिके
 अनुसार अन्तिम श्लोक)

वसदिगे बिट्ठी-धम्मम- । न् ओसेदु करं सलिसदिईडं.....।

.....।.....ब्राह्मणन कोन्द गति समनिसुगुं ॥

[जिनशासनकी प्रशंसा या स्तुति । इस समय अनेक पदोंसे अलङ्कृत वीरगङ्ग विष्णुवर्द्धन बिट्ठिग-होय्सलदेव कोङ्ग तककी गङ्गवाडि ९६००० की जमीनके ऊपर तलकाड और कोठाल-पुरमें सुखसङ्कथा-विनोदसे राज्य कर रहे थे ।

समन्तभद्र, देवाकलङ्क, पूज्यपाद, वादिराज, द्रविडान्वयके मल्लिवेण, श्रीपाल, और अनन्तवीर्य (इनका वर्णन किया गया है) । पुणिस-राज-दण्डा-धीशके देव जिन थे, गुरु अजित मुनिपति थे, और पोय्सल राजा उनका शासक था । उन्होंने एक जिनमन्दिर बनवाया । पुणिसम्मकी पत्नी पोचले थी । उनके पुत्र चावण, कोरप, और नागदेव थे । उनको क्रमसे चामराज, नाकण, और कुमरय्य भी कहते थे । वे रत्नत्रयमूर्तिके समान थे । उनके ज्येष्ठ पुत्र चावण तथा उनकी पत्नियों अरसिकब्बे और चौण्डलेसे पुणिसमय्य और बिट्ठिग उत्पन्न हुए । चावण और अरसिकब्बेका पुत्र पोय्सल राजाका सान्निध-विग्रहिक मन्त्री पुणिस हुआ । बिट्ठिदेवका महा-सचिव पुणिस था । बिट्ठिदेवने तोड़ लोगोंको डरा रक्खा, कोङ्ग लोगोंको भूगर्भमें भगा दिया, पोलुव लोगोंको कल कर डाला, मळेपाल लोगोंको मार डाला, काल नृपतिको भयभीत कर दिया और नील-पर्वतपर जाकर उसकी चोटीको जयलक्ष्मीके स्थायत्त कर दिया । पुणिस-दण्डनाथाधिपने एक-वार पोय्सल राजाकी आज्ञा मिलनेपर नीलाद्रिपर कब्जा कर लिया और मळेयाल लोगोंका पीछाकर उनकी सेनाको कैदी बना लिया और इस तरह वह केरलाधिपति बन गया और इसके बाद फिर खुले मैदानमें आ गया । जो व्यापारी बिगड़ गये थे, जिन किसानोंके पास बोनके लिए बीज नहीं था, जिन हारे गये किरात-सरदारोंके पास कुछ भी अधिकार नहीं रह गया था और जो उसके नाँकर हो गये थे, तथा सबको जिसका जो-जो नष्ट हो गया था वह सब उसने दिया और उनके पालन-पोषणमें मदद की । बिना किसी भय-सञ्चारक, गङ्गोंकी ही तरह, उसने गङ्गवाडि ९६००० की बसदियोंको शोभासे सजित किया ।

एण्णे-नाइके अरकोट्टारमें अपने हास बनवाई गई त्रिकूट बसविकी बसवियोंके लिये उसने मू-दान किया ।]

[EC, IV, Chamaraajnagar tl., n° 83.]

२६५

मुगुलूर—कन्नड

[वर्ष हेमलम्बी [१११७ ई० ? (८० राइस)]

(इस लेखकी पहली १४ पंक्तियाँ इसी नामके तालुकेके ३८० वें लेखकी पंक्तियोंसे मिलती हैं)

..... पुष्पसेन-सिद्धान्त-देवरु अवर शिष्यरु वासुपूज्य-देवरु हेमलम्बि-संवत्सरद वैशाख-बहुल त्रयोदशी-बुधवारदन्दु सल्लेखन-स-माधि-मरणदि मुडिपि स्वर्गके सन्दरु मंगलमहा श्री श्री श्री

[द्रमिल संघान्तर्गत नन्दिसंघके अरुल्लान्बयकी प्रशंसा । पुष्पसेन-सिद्धान्त-देवके शिष्य वासुपूज्य-देवने (उक्त मितिको), सल्लेखना धारण करके, देहत्याग किया और स्वर्गको पहुँचे ।]

[EC, V, Hasan tl., n° 131.]

२६६

हलेबीड—संस्कृत कन्नड-भम

[काल लुस, लगभग १११७ ई०]

[इसका लेख नहीं है, मात्र 'Mysore ins. Translated' में नं० ११७ के शिलाशासनमें लुई राइसके द्वारा अनुवाद दिया हुआ है]

[लेखमें सर्वप्रथम जिनेश्वर पार्श्वनाथको लक्ष्य करके मङ्गलाचरण है । पश्चात् राजा विष्णुवर्द्धन और उसके मन्त्री गङ्गराजकी प्रशंसा है ।]

[Mysore ins. translated, n° 117, tr.]

१ अनुवाद लम्बा होनेसे मूल लेख भी लम्बा मालूम पड़ता है ।

२६७

निदिगि—संस्कृत तथा कन्नड-भग्न

[वर्ष ४२ वि. चा०=१११० ई०]

[निदिगि (बिदरे परगना)में, दोहुमने नविळण्य-गौडके खेतमें

एक पाषाणपर] *

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

खस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर
परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुळ-तिलकं चालुक्याभरणं श्रीमत्-त्रिभुवन-
मल्लदेवर विजय-राज्यमु.....त्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कितारं-वरं
सलुत्तमिरे । तत्पादपद्मोपजीवि ।

उत्तममप.....तोम् ।

भत्तरु-सासिरं विषयमाप्तननिन्द-जिनेन्द्रनाजि-रन् ।

गात्त-जयं जयं जिनमतं मतमागिरे सन्ततं निजो- ।

दात्ततेयिन्दमा-दडिग-माधव-भूभुजराळदरुर्वियम् ॥

उत्तर-दिक्-तटावधिगे तागे म.....मूड तोण्डे-ना- ।

डत्तपराशेगम्बुनिधि चैवोळेयिप्प.....कोङ्गु म- ।

त्तित्तोळगुळ वैरिगळनिक्कि परावृत-गङ्गवाडि-तोम् ।

बत्तरु-सासिरं-दले माडिदरिन्तुटु गङ्गरुज्जुगम् ॥

.....गंगनि भय- । मिल्हद हरिवर्म्म विष्णु-नृपनि निजदि ।

बळे तडङ्गाल्-माधव- । नल्लि बळि चुर्चुवाय्द-गङ्ग-नृपाळं ॥

श्रीपुरुषं शिवमारं । भूपाळ कृतान्त भूपना-सयिगोडुम् ।

द्वीपाधिपरोळरि-नृप- । कोपानल-शिखेयेनिप्प विजयादित्यम् ॥

मयेरिद मारसिङ्गना- । कुरुळ-राजिगं पेसर्वेता- ।
 मरुळं तनृप-तिलकन । पिरियमगं सत्यवाक्यनचळितसौर्व्यम् ॥
 गव्वद-गं.....वसुधेयो- । लोव्वने कलि चागि शौचि गुत्तियगङ्गम
 दोव्विक्रमाभिरामन- । गुव्विन कलि राचमल-भू-नृप-तिलकम् ॥
 तेङ्गं मु.....हसिय कौ- । वुङ्गं पिडिडडसि कीव्वना-मद-करियं
 पिङ्गद नलिसुव साहस- । तुंगं केवळमे नेगळ्द रक्कस-गङ्गम् ॥
 इन्तेनिसि नेगळ्द गङ्ग-वंशोद्भवरोळा-दडिगन मगं चुर्चुवाट्टद-गङ्ग
 नातन सुतं दुर्विनीतनातन तनेयं श्रीविक्रमनातन पुत्रं भूविक्रमं ।
 तत्सुनु श्रीपुरुष-महाराजम् । तत्-तनेयं सिवमार-देवम् । तत्-तन्-
 भवनेरेय.....तत्पुत्रं ब्रूतुगवेर्माडि । तदात्मजं मरुळ-देवं । तदनुज
 गुत्तिय-गङ्गनातन मम्मं मारसिङ्ग-देवनातन.....गं क.....ग-
 देवनातनमगं बम्म-देवनिन्तु गंग-वंशोद्भव रु राज्यं गेय्ये ।
 दक्षिण-देश-निवासी गङ्ग-मही-मण्डलिक-कुल-संधरणः ।
 श्री-मूलसंध-नाथो नाम्ना श्री-सिंहनन्दि-मुनिः ॥
 श्री-मूलसंध-वियदमृ- । तामळ-रुचि-रुचिर-कोण्डकुन्दान्वय-ल- ।
 क्ष्मी-महितं जिन-धर्म-ल- । लामं क्राणूगगणं जनानन्द-करम् ॥

आ-गणदन्वयदोळु ।

मणिरिव वनराशौ मालिकेवामरादौ
 तिलकमिव ललाटे चन्द्रिकेवामृतांशौ ।
 इव सरसि सरोजे मत्त-मृङ्गी-निकायः
 समजनि जिनधर्मो निर्मलो बालचन्द्रः ॥

अवर शिष्यरु ।

विमल-श्री-जैनधर्माम्बर-हिमकरनुषत्-तपो-राज्य-लक्ष्मी- ।

रमणं भूमण्डलाधीशानुभय-सिद्धान्त-रत्नाकरं जं ।

गम-तीर्थं भव्य-वक्त्राम्बुज-खरकिरणं श्री-प्रभाचन्द्र-सिद्धा- ।

न्त-मुनीन्द्रं क्षीर-नीराकर विशद-यशो-वेष्टिताशा-विभागम् ॥

अवर शिष्यरु ।

गुणियेने जिनमत-रक्षा- । मणियेने कवि-कमक-वादि-वाग्मि-प्रवरां- ।

मणियेने पण्डित-चूडा- । मणियेने गुणनन्दि-देवरेसेदद्धरेयोळ् ॥

तत्-सधर्मरु ।

अळवे पेळ् नुडियल्के ••• विरुदं माण् माणेले सांख्य वा- ।

ग्वळमं नच्चदे नीनडङ्गेडरदिर् चार्वाकनैय्यायिका ।

मलेयल् बेडिरु मट्टमेके चलदिन्दी-बन्दपं केम्भनण्- ।

डलेयल् श्री-गुणचन्द्र-देवनमळं वादीभ-कण्ठीरवम् ॥

तत्सधर्मरु ।

गङ्गा-वारि-सु-शैवळं सुर-करी दानार्द्र-गण्ड-स्थळः ।

शम्भुः कण्ठ-विलग्न-घोर-गरळश्चन्द्रः कळङ्काङ्कितः ।

कैलासो वन-वल्लरी-परिवृतस्साम्यं कथं वच्म्यहम् ।

कीर्त्या सह माधनन्दि-यमिनश्चन्द्रातपोवच्छ्रिया ॥

आ-चारित्र-चक्रेश्वर-मुनि-राज-राजन शिष्यरु ॥ स्वस्ति समधिगत-
पञ्च-महा-शब्द-महा-कल्याणाष्ट-महा-प्रातिहार्य-चतुस्त्रिंशदतिशय-विराज-
मान-भगवदहत्परमेश्वर-परम-भट्टारक-मुख-कमल-विनिर्गीत-सदसदादि-व-
स्तु-स्वरूप-निरूपण-प्रवण-सिद्धान्तामृत-वार्द्धि-वाद्धौत-विशुद्धेन्द्र-बुद्धि-समृ-
द्धं सकल-भुवन-प्रसिद्धं शम-दम-यम-नियम-नियमितान्तःकरणं
वाक्सुन्दरी-स्तन-मण्डन-रत्नाभरणरुमप्य श्रीमत्प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देव-
रेन्तेन्दडे ।

आशीदाशान्तराळ-प्रथित-पृथु-यशो-व्योम-गंगा-तरंगः ।

चञ्चचारित्र-धात्री-भवदति-ललितोदार-गम्भीर-मूर्तिः ।

वाक्-कान्तोत्तुंग-पीन-स्तन-कळश-लसन्नूत-चूत-प्रवालः ॥

सिद्धान्त-क्षीर-नीराकर-हिमकिरणश्री-प्रभाचन्द्रदेवः ॥

अभिनव-गणधर-रूपं । त्रिभुवन-जन-विनुत-चरण-सरसिरुह-भृङ्ग ।

शुभ-मति-त्रैविद्यारूपद-। नुभय-कवीन्द्रोत्तमं प्रभाचन्द्र-बुधम् ॥

अवर सधर्मरु ।

शशि-विशद-कीर्ति निर्मद-नसदृश-गुण-रत्न-वार्धि क्राणूर्गणसद्-

विसरुह-वनार्कनेम्बुदु । वसुमतियोळनन्तवीर्यसिद्धान्तिगरम् ॥

तत्सधर्मरु ।

मन-वचन-काय-गुप्तिय-। ननुनयदि तळेदु पञ्च-समितिय वशदिन्-

दनुवशनाद तपोनिधि । मुनिचन्द्र-व्रतिपनखिळ-राद्धान्तेशम् ॥

इन्तेनिसि नेगर्त्तेंय तळेद श्रीमत्-प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवर गुडं भुज-

बळ-गंग-पेर्माडि-बर्म-देव ।

बळवद्-वैरिगळं पडल्पडिसि गेल्लुग्राजियोळ् माण्डने ।

चळदिन्दं परिधिड्डु वैरि-पुरमं तत्-कोटेयं तद्-मही-

तळमं कोण्डु धरित्रि बणिणुविनं श्री बर्म-देवं मही-

तळमं तोळ्-वळदिं निमिर्चिदनिदेम् पेर्माडि शौर्यात्मनो ॥

भरदिन्दान्तदटङ्गं । शरणेन्द नृपङ्गवेरदु बन्द नरङ्गम् ।

सुरगिरि वज्रागारं सुर-भूजं बर्म-देवनदटरदेवम् ॥

इन्तेनिसिद बर्म-देवन पट्ट-महादेवियेन्तेन्दडे ।

जिनेन्द्र-पादाम्बुज-मत्त-भृङ्गी गुणावली-भूषण-भूषिताङ्गी ।

नितम्बिनीनां कळशायमाना विराजते गङ्गमहाधिदेवी ॥

निजवेनिपी-नेगर्तेय महागतिगुत्सवमं निमिर्चुवान्
 त्मजरेनिसिर्ह तम्भुतोडहुडिदरोप्पुव भार.....।
 स-जयदे सत्य-गङ्गनृपनुं कलि-रक्स-गङ्ग-देवनुं ।
 भुजबळ-गङ्ग-भूभुजनुमार्जिसिदर्जसमं निरन्तरम् ॥
 स्थिरने मेरु-गिरीश्वरनोळ् सेणसुवं शम्मीरने वार्धियोळ् ।
 पुरुडिणं कलिये सुरेन्द्र-सुतनं मेच्चं महा-चागिये ।
 सुर-भूजक्रोरे-गड्डुवं चदुरने पाञ्चाळनं गेलदनन्-।
 दिरदी-धारणि वणिणकुं रण-जय-प्रोत्तुंगनं गङ्गनम् ॥
 नुडिदुदे ननि माडिदुदे शासनमित्तुदे राम-रेसु माइ-।
 पिडिदुदे वज्र-लेपमुरदिर्हुदे मृत्यु परोपकारदोळ् ।
 नडेदुदे बडे सद्गुणमे मेय्येने निजवोलिन्तु नीतियोळ् ।
 नडेव नृपेन्द्रनावनिळ्योळ् कलि-गंग-भूपती ॥

आतन तम्मम् ।

गज-रिपु-विष्टरादि-विभवोदय पार्श्व-जिनेन्द्र-पाद-पं- ।
 कज-मद-भृङ्ग-गङ्ग-कुळ-मण्डन-दण्डित-वैरि-वर्ग भा- ।
 वजनिभ-मूर्ति दिग्बलय-वर्तित-कीर्ति समस्त-धात्रियोळ् ।
 भुजबळ-गङ्ग-भूप निनगार दोरे मण्डलिकैक-भैरव ॥

आतन-पट्ट-महादेवि ॥

पट्ट.....रननुजं । पट्ट.....भूपङ्गे गङ्गवाडिगे तळेदळ् ।
 पट्टमनेन्दडे गङ्गन । पट्ट-महादेवियन्तु..... ॥
 गङ्ग-महादेवियर्ग भुजबळ-गङ्ग-देवनप्र-तनूजनेन्तेन्दडे ।
 कलियनदिर्ह.....एन्दु निमृदेत्तिद बाहुवे..... ।
लुळद.....मरे.....सले..... ।

.....नासे- गेयन्.....अळवि.....नन्निय-गङ्गनिन्तु मण्डलिक ।
प्रद.....वेसरं देसेयन्तु वरं निमिर्चिद ॥
दाज्ञा-लते पर्वि-देण्-देसेयोळं विद्युजय-स्तम्भविन्तु ।
 इवेनल् दिगजवर्त्ति.....कडल् केडिदुत्तंग-हस्- ॥
 तवनान्तन्य-बळक्के दोर्प-नेवदि कोदण्डदत्तङ्गे नी- ।
 लुव नीन. ये गङ्गनात्मकर.....संप्राम-रङ्गाप्रदोळ् ॥
 जस.....अखिळाशा-देवतापाङ्ग-रश्- ।
 मि-सहस्रं चमरं करीन्द्र-रिपु.....विक्रमं.....आ- ।
 गे सु-साम्राज्य.....तामिवृद्धि विभवं मेच्चित्तिरल्..... ।
इरे सत्य-गङ्गनेसेदं विश्वावनी-भागदोळ् ॥

खस्ति सत्यवाक्य-कोङ्कुणिवर्म धर्म-महाराजाधिराज परमेश्वरं
 कुवळाळपुरवराधीश्वरं नन्दगिरि-नाथ.....मद-गजेन्द्र-लाञ्छनम्
 चतुर-विरिञ्चनं पद्मावती-देवी-लब्ध-वर-प्रसादं विचकिळामोदं नन्निय.....
 त्तरंगं गंग-कुळ-कुवळय.....वेन्द्रं दर्पोद्धतांराति-वनज-वन-वेदण्डं कुसुम-
 कोदण्डं गण्डरगण्डं दुद्रुगण्डं नामादि-समस्त.....श्रीमन्नन्निय-गङ्गं
 नेलेवीडिनल्लं सुख-संकथा-विनोददि राउयं गेयुत्तिरे श्रीमतु कळंबूरु-न-
 गराधिपति पट्टणस्थ.....माडिसिद वसदियेन्तेन्दडे ।

इदु भू-देवते होत्त होङ्गळशमो श्रेयस्सुधा-भार-पू- ।

रदिना.....त्रय-मण्डना- ।

स्पदमो तानेन्दु.....लोकं मनो- ।

मुददि बणिणसे बर्मि-सेट्टि जिन-चैत्यावासमं माडिदम् ॥

भुवन.....महत्त्वदि.....चातुर्वर्ण-संवक्क-मीष्टम-
 नित्तेत्तिसि जैन-गेहमननुसाह-सन्दोह.....

.....।

....दनुजनिष्ठ-शिष्ट-जन-कळप-कुजं सदनोपशोभिता-।

भ्युदय-विभूतिगास्पदनुदात्त-कळाधिपनीतनेम्ब.....।

.....उदितोदितं नेगळदनी-वसुधा-तळदोळ् निरन्तरम् ॥

बर्मि-सेट्टिय वनिते ।

तनगनुवशेयेनिसि जग-। जन-संस्तुत-शील-गुण-गणाळ.....।

.....राजिसुतिर्दळ् ॥

अवरिर्वर्गमगण्य-पुण्य-जनित-श्रीरायुरारोग्य-चै-।

भव-सम्पत्-महिमौघ.....।

.....माडुतिर्-।

प्प विळासं बेरसोळपुवेत्तनवनी-चक्रं मनं-गोळ्विनम् ॥

अन्तर्वर् म्माडिसिद बसदिय पूजा-विधान.....

षियर्गाहार-दानकं श्रीमच्चालुक्य-विक्रम-कालद ४२ नाल्वत्तेरद-

नेय मनुमथ-संवत्सरदुत्तरायण-संक्र.....पुण्यतिथियन्दु

श्रीमन्-नभिय-गङ्ग-पेर्माडि-देवनिन्दं कुडलु पडेदु बर्मिसेट्टियर

म्मेवपाषाण-गच्छाभ्वर-शरच्चन्द्र...शुभकीर्ति-देव-भट्टारकर कालं

कर्त्ति धारापूर्वकं सर्व्व-नमस्यं सर्व्व-बाधापरिहारवागि बसदिगे कोट्ट वृत्ति

(आगेकी ५ पक्तियोंमें दान और सीमाकी चर्चा है तथा अन्तिम वाक्य-
पद्धति)

बहुभिर्व्वसुधा दत्ता राजभिस्सगरादिभिः ।

यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥

(हमेशाके अन्तिम श्लोक)

[इस लेखमें नं० २७७ शि० ले० के अनुसार ही गङ्ग राजाओंकी वंशा-
वली तथा क्राणूर-गच्छके सिंहलन्दी आदि आचार्योंकी परम्परा दी हुई है ।
अन्तमें जिस बातके लिये यह लेख लिखवाया गया है वह यह है—

गङ्गा महादेवी और भुजबल गङ्गा-देवका (प्रसंसासहित) ज्येष्ठ पुत्र नक्षिय गङ्गा था, (जिसका छोटा भाई) सत्य गंग था ।

जिस समय सत्यवाक्य कोकुणिवर्म्म धर्ममहाराजाधिराज परमेश्वर नक्षिय गङ्गा सुख-मान्तिसे राज्य कर रहे थे कलम्बूरु-नगराधिपति बर्मि-सेट्टिने एक जिनमन्दिर खड़ा किया (इसकी प्रशंसा) । अपनी बनवाई हुई बसदिकी पूजा तथा ऋषियोंके आहारदानके लिये (उक्त मितिको) नक्षिय-गंग-पेर्म्माहि-देवने (उक्त) भूमि दी और बर्मि-सेट्टिने उसे लेकर मेघ-पाषाण-गच्छके शुभकीर्ति-देव-भट्टारकको पाद-प्रक्षालनपूर्वक अर्पित कर दिया]

[EC, VII Shimoga tl. n° 57.]

२६८

अवणवेलोल—संस्कृत तथा कन्नड

[शक १०३९=१११७ ई०]

[जै. शि. सं., प्र० भा०]

२६९

कम्बदहलिङ्ग—संस्कृत और कन्नड

[शक १०४६, वर्ष विलम्बि (१०४० शक=१११८ ई० [ल. राइस])

[कम्बदहलिङ्ग (बिण्डिगनवले प्रदेश)के, कम्बदराय स्तम्भपर]

(दक्षिणमुख) भद्रमस्तु जिन-शासनस्य ॥

श्री-सूरस्थ-गणे जातश्चारु-चारित्र-भूधरः ।

भूपालानत-पादाब्जो राद्धान्तार्णव-पारगः ॥

आदावनन्तवीर्यस्तच्छिष्यो बालचन्द्र-मुनि-मुख्यस्

तत्सूनुर्जितमदनस्सिद्धान्ताम्भोनिधिर्प्रभाचन्द्रः ॥

शिष्यं कलनेले(?)देवस्तस्याभूत्तन्मनीषिणस्तूनु-

र्विध्वस्तमदनदर्पो गुणमणिरष्टोपवासिमुनिमुख्यः ॥

तन्मौखो(?)विबुधाधीशो हेमनन्दिमुनीश्वरः ।

राद्धान्त-पारगो जातस्मरस्य-गण-भास्करः ॥

तदन्तेवासिनामाद्यो माद्यतामिन्द्रिय-द्विषाम् ।

यतिर्विनयनन्दीति विनेताभूतपोनिधिः ॥

नाडोळगिदेसेद गोसने । बाडङ्गकौरेगिदन्देमुनिवनितेयरोळ
कुडिदनेम्बी-नुडियद- । नेडिपुदेले विनयनन्दि-देवरचरितं ॥

ओन्दने केळि बुध-जन- । मेन्दिङ्ग साक्षि नीमे वसुधा-तळदोळ
सन्दिळ्द वधू-निवहं । तन्देय वधुवेन्दपोम् प्रियम्बद-दानि ॥

व्रत-समिति-गुप्ति-गुप्तो । जितमोह-परीषहो बुध-स्तुत्यो ।

हतमदमायाद्वेषो यतिपति तत्सूनुरेकवीरोऽभूत् ॥

(पूर्वमुख) दानद पेम्पु दीन-जनकोटिगे कल्प-कुजाळि नोडे सन्-

मानद पेम्पु भव्य-जन-सङ्कुळमन्तणिपित्तु दान-सन्-

मान-तपोपवास-गुण-सन्ततियं सले ताळिददर्जगन्-

मानिगळेकवीर-मुनि-नाथरे जङ्गम-तीर्थवल्लरे ॥

तस्यानुजस्सकळ-शाख-महाण्णत्रोऽभूद्

भव्याब्ज-पण्ड-दिनकृन्मुनि-पुण्डरीको ।

विध्वस्त-मन्मथ-मदोऽमळ-गीत-कीर्त्तिश्-

श्री-पल्ल-पण्डित-यतिर्जितपापशत्रुः ॥

पल्लकीर्त्तिर्यथा रूढः पुरा व्याकरणे कृती ।

तथामिमान-दानेषु प्रसिद्धिर् पल्ल-पण्डितः ॥

पल्ल-पण्डित-नागेन ददता दानमद्भुतम् ।

भूषितं कलि-कालेऽस्मिन् गङ्ग-मण्डल-काननं ॥

सूरस्य-गण-गीर्वाण-मार्गमालम्बतेऽधुना ।

दान-प्रभा-प्रकाशोऽयं पल्लु-पण्डित-चन्द्रमाः ॥

दान-वारि-परिपूरित-सिन्धुर्नष्टमोहतिमिरो गुण-बन्धुः ।

भव्यलोककुमुदाकरचन्द्रः पल्लुपण्डितमुनिर्हततन्द्रः ॥

नानादेशसमागतेन गुणिना लोकेन संसेवितो

जीर्णोनाभिनवेन नूतन-तनु-श्री-लक्षणैर्लक्षितः ।

शुभभङ्गुरिगुणालयो मतिमतां अग्रेसरो राजते

देशेऽस्मिन्नाभिमानदानिकमुनिस्सर्वार्थ-चिन्तामणिः ॥

विद्वज्जनानन्दनकारणेन दानेन भक्त्या मुनि-पुङ्गवेषु ।

दिगन्तविश्रान्तयशोनिधानं विराजते पण्डित-पुण्डरीकः ॥

(उत्तरमुख) नानाभिमानिजन-दान-विधान-धीतो

धीमानशेषजनता-मनसोऽभिरामः ।

जातोऽभिमानि-पद-पूर्वक-दानि-नाम्ना

ख्यातः खलीकृत-महा-कळि-काळ-दोषः ॥

साभिमाने जनेऽभीष्टमभिमानमखण्डयन्

जातोऽभिमानदानीह यथार्थः पल्लुपण्डितः ॥

अतिसयमागे दानदोळे बेर्वरिदोळपुनयोक्तियेम्ब सन्-

मतियोळे पुट्टि शास्त्रदोळे दाङ्गुडिवोगि विशेषमप्य सन्-

नुत-गुणदोळियिन्दे मडलागि दिगन्तमनेन्दे पल्लु-पण्-

डितर विलास-कीर्त्ति-लते पर्विन्दुदुर्विगे चोषमप्यिनम् ॥ .

सुर-करिय काम-धेनुव । सरदभ्रद कान्तिथं पुदुङ्गोळिसुत्तं ।

शरदमळचन्द्रबिम्बद । दोरेगे मिगिल् पात्यकीर्त्तिं देवरकीर्त्तिं ॥

दानमपरिमितमोळपभि- । मानं सत्कविते शास्त्रनिपुणते कीर्त्ति-

स्थानमेने सन्दरीगळ् । दानिगळभिमानदानिगळ् वसुमतीयोळ् ॥
 वननिधि-वेष्टित-धात्रियो-न छनवरत-नेरेद दीन-जनरिक्केल्लम् ।
 धन-कनकं माळपरस्सन्-मनदिन्दं पाल्यकीर्ति-पण्डित-देवर् ॥
 ए-योगळ्बुदण्ण विमुध-ज-नावळिर्ण बेडिदत्ति-जनकभिच्चन् ।
 देवतरु कुडुव तेर्दन्-तीवर्स्सले पळ्ळ-पण्डितर् वसुमतीयोळ् ॥
 (पश्चिममुख) पुडवियोळ्गळ्भेगळ्द दानिगळिभिवरन्नारो पेळ् ।
 नुडियदिरारुमं मरुळे कल्प-महीजद कोडिनन्ते कोड् ।
 उडुगदे नग्न-भग्न-नट-गायक-दीन-जनके सन्तोसं-
 बडे कुडुतिर्ण पेम्पिनळवच्चरिपास्तभिमानदानियोळ् ॥

स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वरं त्रिभुवनमल्ल तलेकाडु-गोण्ड भुजवळ
 वीर-गङ्ग होयसळ-देवरु सुखसंकथाविनोददिं राज्यं गेयुत्तमिरे तत्पाद
 पद्मोपिजीवि महासमन्ताधिपति श्रीन्महाप्रधानि द्रोह-वरट्ट पिरिय-दण्ड-
 नायक गङ्ग-राज तलेकाडं कोलुवळ्ळि मुक्कोळ बेडि-कोण्डु गेल्दडे
 मेच्चिदेम् बेडिकोळ्केने श्री-बिण्डिगनविलेयतीत्यरके तळ-वित्तियम्बेडे
 श्रीविष्णुवर्धन-होयसळ-देवरु कारुण्यं गेयु कोडे कोण्डु शक-वरिस
 * १०४६ विलम्बि सम्बत्-सरद श्रीमूलसंघद देसिग-गणद पुस्तक-
 गच्छद कोण्डकुन्दान्वयद शुभचन्द्र-सिद्धान्त-देवर कालं कर्चि
 धारापूर्वकम्माडि बिट्ट दत्ति पिरिय-केरैय तबिन बडगण हळदिं तेक्कक्
 कौञ्जिन तोष्ट ओळगागि बिट्ट गदे सल्लिगे मूवत्तु हळियमुन्दण लक्क-
 समु.....म्म गट्टमुं अन्दूर-कि [रि] यकेरैयुं पक्षोपवासि.....
 बसदिय हडवण-देसे-वर । ई-धर्ममनळिदव गङ्गेय तडिय हदिनेण्डु-
 सासिर कळिले कोन्द दोसदल्ल होद ॥

[जिनशासनकी समृद्धि-कायना । अनन्तवीर्य सूरसगर्भमें उत्पन्न हुए । उनके क्षिप्र बालचन्द्र मुनि उनके पुत्र प्रभाचन्द्र, उनके क्षिप्र कर्मेच्छेदेव, उनके पुत्र अष्टोपवासी मुनि उनके क्षिप्र हेमनन्दि मुनि । इसके क्षिप्रोंमें एक विनयनन्दि नामक बंति ये जिनके विषयमें भाद्र-देशमें यह प्रवाद फैला कि वे सहरोंमें आधिकारोंके पास जाते हैं; लेकिन यह प्रवाद सही नहीं था । विद्वानो, इस बातको सुनो कि इस विषयमें स्वयं तुम्हीं लोग साक्षी हो कि वे अपने पिताकी पत्नी (अर्थात् अपनी माँ) से जैसा वर्त्तन करते थे वैसा ही वर्त्ताव श्री-समुदायसे करते थे । उन अनन्तवीर्यका पुत्र एकवीर था जो अपने गुणोंसे 'जङ्गम तीर्थ' कहलाता था । उसका छोटा भाई पल्लु-पण्डित था । जैसे पूर्वकाकमें पाण्ड्यकीर्ति व्याकरणमें प्रसिद्ध था वैसे ही दान देनेमें यह प्रसिद्ध था । आगे उसके दानोंकी प्रशंसा की गई है, उसको नाम भी 'भक्तिमान्दावी' और 'पाण्ड्यकीर्तिदेव' दिये गये हैं ।

जिस समय वीर-गङ्ग-होयसल-देव शान्ति और बुद्धिमत्तासे अपना राज्य चला रहे थे; तत्पादपञ्चोपजीवी गङ्गराज महाप्रधानको, तल्लेकानुर कब्जा करनेसे पहिले, उन्होंने कोई एक वर माँगनेको कहा । उत्तरमें गङ्गराजने विण्डिगन जिलेके छिबे भूमि-दान माँगा और विष्णुवर्द्धन-होयसल-देवने उसको वह दिया । गङ्गराजने भी उक्त भूमि पाकर शुभचन्द्र-सिद्धान्तदेवके पादप्रक्षालन कर उन्हें सौंप दी । शुभचन्द्र-सिद्धान्तदेव मूलसंघ, देसिग-यय, पुस्तक-गच्छ तथा कोन्द-कुन्दान्वयके थे । शाप ।

[EC, IV, Nagamangala tl., n° 19]

२७०, २७१

अवणबेल्लोला—संस्कृत तथा कन्नड़

[क्रमशः शक १०४१=१११९ ई० और

शक १०४२=११२० ई०]

(जे० क्षि० सं० प्र० भा०)

२७२

बङ्कापुर—कन्नड़

[बि० भा० का ४५ वीं वर्ष (=शक १०४२=११२० ई० [पत्नीट] ।

[चारों हाथकी ओरके शिलालेखमें करीब १७-१७ अक्षरोंवाली ३७ पंक्तियाँ हैं। इसमें एक दानका उल्लेख है जो मादिगबुण्ड और दूसरे गाँव-प्रमुखोंके द्वारा शुभकृत संवत्सरमें, चालुक्य विक्रमके ४५ वें वर्षमें, किरिय बङ्गापुरके जिनमन्दिरको किया गया था।]

[IA, IV, 205, n° 7, a.]

२७३

मत्तावार—कन्नड़

[विना कालनिर्देशका पर संभवतः लगभग ११२० ई०]

[मत्तावारमें, पार्श्वनाथ-बस्तिके प्राङ्गणमें एक पाषाणपर]

मरुळहळि-जकवे हट्टिदेडे मे...गन्ति मत्तवूरद बसदि तपसु
माडि सिद्धियादळु अब्बेय माजकन मग मारे[य] कळ निळिसिद
[मरुळहळिके जकवेके द्वारा प्रेषित मे...गन्तिने मत्तवूरकी बस-
दिमें तपश्चरण करके सिद्धि प्राप्त की। अब्बेय माजकके पुत्र मारेपने यह
पाषाण स्थापित किया।]

[EC, VI, Chikmagalur tl. n° 52]

२७४

सुकदरे—संस्कृत तथा कन्नड़ भषा

[काल लुप्त, पर लगभग ११२० ई०]

[सुकदरे (होणकरी परगना), लक्ष्म मन्दिरके सामने पड़े हुए
पाषाणपर]

.....

..... ।

.....कल्पवृक्ष-सदृशं कीर्त्यङ्गनावल्लभम्

श्री.....पुण्याकरम् ॥

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

नमोऽस्तु ॥ स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वरं ॥ द्वारा-
वतीपुरवराधीश्वरं यादवकुलाम्बरद्युमणि सम्यक्त्वचूडामणि मलयरोलु गण्ड
श्रीमन्निभुवनमल्ल तलकाडु गोण्ड भुजबल.....वर्द्धन पोय्सळ-देवरु
सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेयुत्तमिरे.....व ।

जिननिष्ठदेव्यमजितं । मुनिपति गुरु पोय्सळेश.....

एचले तायेनेल्केनेसे- । दनो तां जकि-सेट्टि यात्रेय-गोत्रपवित्र ।

.....नेगळद जकि-सेट्टिय गुरु-कुलमदेन्तेन्दडे ।

श्रीमद्भाविसंघ.....वळि-लीलेयिम् ।

श्रीमत्स्वामि-समन्तभद्रवरिं भट्टाकलङ्काख्य.... ।

.....हेमसेनवरिं श्रीवादिराजाङ्गरन्त्

आमाहात्म्यविशिष्टरिन्दजितसेन..... ॥

....परम-मुनिय शिष्यर् । प्पापहरर्मस्त्रिवेण-मलधारि.... ।

.....र् । भूपालस्तुत्यरेसेदरवनीतळदोळ ।

धनदोळ धनदं वि.... ।

साहसदिं चारुदत्तं चागदोळे जीमूतं जकि-सेट्टि..... ।

.....दानि विद्वज्- । जनविनुतं धर्मजलधिर्वर्द्धितचन्द्रम् ।

मनु-नीति-मार्ग..... ।जकि-सेट्टि गोत्र-पवित्रम् ॥

अन्तःप जकि-सेट्टि तम्भर सुकु.....माडिसियदके विट्ट
दत्ति आवूर यीसान्यद केरेयं कहिसि.....केरेयुं बसदियि बडगळुं
बेदले बेदे खण्डुग एरडु मत्त.....वायाव्यद किरुकेरे सहितवागिष्टुं
आ-ऊर देव-गोळग धर्म हारे-तिप्पे-सुङ्ग गाणदलरवानेण्णे इन्तिवुम
शक-वर्ष.....संवत्सरर् ज्येष्ठ शु० १२ वडुवार स्वातिनक्षत्रदन्दु

वसदि.....करणकवाहारदानकं दयापाल-देवर्गे धारापूर्वकं.....
(सदाका अन्तिम श्लोक) मङ्गलमहा श्री श्री नमोऽर्हता..... ।

.....तन्नापिनि ।

मनमं तन्न वसके तन्दु बळियं सत्-क्षान्तियं.....न् ।

अनेक-पुष्प-वरिष-प्रभावदिं मावदिं..... ।

..... ॥

....सुर-दुन्दुभिगळेसेये सूर-गणिकेय.....पोगळ्विनेगं ॥

जकि-सेट्टिय तम्मं.....

[जिनशासनकी प्रशंसा । जिस समय (अपनी इमेक्षाकी उपाधियों सहित), विष्णुवर्द्धन पोत्सकदेव शान्ति और बुद्धिमत्तासे अपने राज्यका शासन कर रहे थे:—

भात्रेय-गोत्रको पवित्र करनेवाले जकि-सेट्टिके 'जिन' इन्द्रदेव थे, अजित-मुनिपति गुरु थे, पोत्सक राजा थे और एचक माता थी ।

उस प्रसिद्ध जकि-सेट्टिकी गुर्वावकी निम्न भीति है:—द्राक्षिक (४) जें.....स्वामी समस्तभद्र हुए,—उनके बाद महाकलङ्क;...हेमसेन; उनके बाद वादिराज;.....अजितसेन; परममुनिके क्षिप्य, पापहर मल्लिपेण मल्लवारी ।

जकि-सेट्टिकी और भी प्रशंसा । इस जकि-सेट्टिने अपने गाँव सुकदरेमें एक 'वसदि' और उसके दक्षिण-पूर्वमें एक तालाब बनवाया । 'वसदि' और सरोवरके खर्चके लिये (लेखमें वर्णित) भूमिका दान दिया । साथमें दक्षिण-पश्चिममें स्थित एक छोटासा तालाब, देवका 'कोळण' बोझोंका खर्च और खादके गद्दे, और तेकके कोरूहुजोंसे आधा मन तेक, ये सब चीजें उसवर्षों और आहारदानके लिये दीं । ये सब चीजें दयापाल-देव-को लौप दीं ।

जकि-सेट्टि और उसके छोटे भाईकी प्रशंसा । }

परिचय

[इस लेखमें रायणय्य नायक, मारय्य नायक, तथा कोण्डनूरके दूसरे नायकोंके द्वारा किये गये दानका उल्लेख है। ये दान महातीर्थ तटेश्वरदेवके मन्दिरकी तरफसे किये गये थे। उस समय कुण्डी ३००० में महासामन्त राजा कार्तवीर्य राज्य कर रहे थे। इनकी उपाधियोंमें रट्ट-वंश बतलाया गया है। पूर्ववर्ती रट्ट शिलालेखोंकी अपेक्षा इनकी उपाधियाँ कलहोकी शिलालेखकी उपाधियोंसे ज्यादा मिलती हैं। इस लेखकी ४३ वीं पंक्तिमें उनका नाम 'कस्तमदेव' दिया हुआ है, और ये संभवतः कार्तवीर्य तृतीय हैं, जैसा कि आगेकी वंशावलीसे प्रकट होगा। कालकी पंक्ति चिस गई है।]

[JB, X. p. 181-182, p. p. 287-292, t.; p. 293-298, tr.; ins. n° 8, II part.]

२७७

कल्लूरगुडु—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०४३=११२१ ई०]

[कल्लूरगुडु (शिमोगा परगना) में, सिद्धेश्वर मन्दिरकी पूर्वदिशामें पड़े हुए पाषाणपर]

१ इस शिलालेखका लेख वही है जो शिलालेख नं. २२७ का अन्तिम भाग है। केवल अंश-मेद है। २२७ नं. का अंश पहिला है और इस लेखका अंश दूसरा है। पर यह अंश-मेद सूक्ष्मरीतिसे अवलोकन करने पर भी, सिवाय तिथि (काल)-मेदके, ठीक-ठीक नहीं मालूम पड़ता। अतः लेख (जो २२७ वें शिलालेखका द्वितीयांश है) यहाँ नहीं दिया जा रहा है। पाठक अपनी बुद्धिसे ही उसे निश्चित करें, क्योंकि हमको उक्त (२२७) लेखमें 'रायणय्य नायक' तथा 'मारय्य नायक' ये दो नाम (जिनके दानका उल्लेख इस लेखमें है) कतई नहीं मिले हैं। 'कोण्डनूर' का नाम अवश्य पाया जाता है, पर उसके अन्य 'नायकों'का कुछ भी पता नहीं। अतः हमें सन्देह है कि २२७ वें नं० के शिलालेखसे भिन्न कोई दूसरा लेख इस २७६ वें नं० का होना चाहिये। संभव है वह गल्लीसे लिखे जानेसे रह गया हो, या मूल 'JBX' पत्रिकामें ही छूट गया हो। सम्पादक

श्रीमत्परमगामीरस्याद्वादामोषलञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-मुवनाश्रयं श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर
परम-भट्टारक सत्याश्रय-कुळ-तिळक चालुक्याभरणं श्रीमत्-त्रैलोक्यमल्ल-
देवर विजयराज्यमुत्तरोतराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारं-वरं सलुत्त-
मिरे । गङ्गान्वयावतारमेन्तेन्दोडे ।

सले वृषभ-तीर्थ-कालं । सुललितमेने सकळ-भव्य-वित्तानन्दम् ।

कलि-काल-निर्जितं श्री- । ललना-लावण्य-वर्द्धनं क्रमदिन्दम् ॥

सोगयिसुव-कालदोळ् की- । तिगे मूल-स्तंभमेनिपयोध्या-पुरदोळ् ।

जगदधिनाथं पुष्टिद- । नगण्यनिश्वाकु-वंश-चूडारत्नम् ॥

धरेगे हरिश्चन्द्र-नृपे- । श्वरनोर्व्वने कान्तनागि दोर्व्वलदिन्दम् ।

बिरुदरनदिर्पि विद्या- । परिणतिर्यि नेरेदु सुखदिनिरे पलकालम् ॥

वृ० ॥ आतन पुत्रनिन्दु-हर-हास-निभोज्वल-कीर्ति सद्गुणो- ।

पेतनुदात्त-वैरि-कुल-भेदनकारि कला-प्रवीणनुद्- ।

धूत-मलं सुरेन्द्र-सदृशं भरतं कवि-राज-पूजितम् ।

ख्यातनतर्क्यपुण्यनिलयं सु-जनाग्रणि विश्रुतान्वयम् ॥

ऋजु-शील-युक्तेयेनिसिद । विजय-महादेवी तनगे सतियेने विबुध-

व्रज-पूज्यं भरतं भा- । वज-सदृशं ताने सकळ-धात्री-तळदोळ् ॥

आ-विजय-महादेविगे गर्भ-दोहलं नेगळे ।

तरल-तरंग-भंगुर-समन्वितेयं ज्ञष-चक्रवाक-भा- ।

सुर-कळहंस-पूरितेयनुद्ध-लताङ्कित-गात्रेयं मनो- ।

हर-चव-शैत्य-मान्ध-शुभ-गन्ध-समीर-निवासेयं तळो- ।

दरि नेरे गङ्गेयं नलिदु मीवभिवञ्छेयनेन्दे ताळिददळ् ॥

कळहंस-न्याने पल्लं । केळदियरोड बोगि पूर्ण-गङ्गा-नदियम् ।
 विळसितमं पोक्क निरा कुळदिन्दोलाडि पाडि गाडियनान्तळ् ॥
 अन्तु मनदलम्पु पोगे गङ्गा-नदियोळ् ओलाडि निज-गृहके वन्दु
 नवमासं नेरेदु पुत्रनं पडेदातळे ।

गङ्गा-नदियोळु मिन्दु ल- । ताङ्गि मगं बडेदळप्प कारणदिन्दम् ।
 माङ्गल्य-नामवोन्दुदि- । लाङ्गनेगधिपतिगे गङ्गादत्ताख्यानम् ॥
 आ-गङ्गादत्तळे भरतनेम्ब मगं पुष्टिदनातळे गङ्गादत्तनेम्ब पुष्टि ।
 गुण निधिगे गङ्गादत्त- । गणुगिन पुत्रं विवेक-निधि पुष्टि दया- ।
 प्रणियागि हरिश्चन्द्रं । प्रणुत-नृपेन्द्रं धरित्रियोळ् शोभिसिदम् ॥
 मत्तमा-नृपोत्तमळे भरतनेम्ब सुतं पुष्टिदनातळे गङ्गादत्तनेम्ब मगनागि-
 मिन्तु गङ्गावयं सलुत्तमिरे ।

हरि-वंश-केतु नेमी- । शर-तीर्थ वसिस्तुत्तमिरे गङ्गा-कुळ- ।
 बर-भानु पुष्टिदं भा- । सुर-तेजं विष्णुगुप्तनेम्ब नृपाळम् ॥
 आ-धराधिनाथं साम्राज्य-पदवियं कैकोण्डहिच्छत्र-पुरदोळु सुख-
 मिर्हु नेमितीर्थकर परम-देव- निर्वाण-कालदोळ् ऐन्द्रध्वजवेम्ब पूजेयं माडे
 देवेन्द्रनोसेदु ।

अनुपमदैरावतमं । मनोनुरागदोळे विष्णुगुप्तकृतम् ।
 जिन-पूजेयिन्दे मुक्तिय- । ननर्घ्यमं पडेगुमेन्दोडुळिदुदु पिरिदे ॥
 आ-विष्णुगुप्त-महाराजङ्गं वृध्नीमति-महादेविगं भगदत्तं भीदत्त-
 नुमेम्ब तनयरागे भगदत्तळे कलिङ्ग-देशमं कुडलातनु कलिङ्ग-देशम-
 नाळु कलिङ्ग-गङ्गनागि सुखदिन्दिरे ।

इत्तलुदात्त-यशो-निधि । मत्त-द्विपमं समस्त-राज्यमुमं श्री- ।
 दत्त-नृपकित्तं भू- । पोत्तमने विवि-विष्णुगुप्त-नरेन्द्रम् ॥

अन्तु श्रीदत्तनिन्दितलानेयुष्टिगे सलुत्तमिरे ।

प्रियबन्धु-वर्मनुदयसि । नयदिन्दं सकल-धात्रिर्ष पाळिसिदं
भय-लोभ-दुर्लभं ल- । क्षी-युवति-मुखाब्ज-वण्ड-मण्डित-हासम् ॥

व ॥ अन्ता-प्रियबन्धु सुख-राज्यं गेयुत्तमिरे तत्समयदोळु पार्श्व-
भट्टारकर्णे केवल-ज्ञानोत्पत्तियाने सौधर्मेन्द्रं बन्दु केवलि-पूजेयं
माडे प्रियबन्धु तानुं भक्तियि बन्दु पूजेयं माडलातन भक्तिगिन्द्रं मेच्चि
दिव्यवप्पय्दु-तोडगेगळं कोडु निम्बन्वयदोळु मिथ्यादृष्टिगळागलोडं
अदृश्यङ्गळकुमेन्दु पेळ्दु विजयपुरकहिच्छत्रमेम्ब पेसरनिडु दिविजेन्द्रं
पोपुदुमित्तल गङ्गान्वयं सम्पूर्ण-चन्द्रनन्ते पेच्चि वर्त्तिसुत्तमिरे तदन्व-
यदोळु कम्प-महीपतिगे पद्मनाभनेम्ब मगं पुष्टि ।

तनगे तनूभवरिल्लदे । मनदोळु चिन्तिसुतमिर्दु पद्मप्रभनार- ।

पिन-कणि शासन-देवते- । यने पूजिसि दिव्य-मन्त्रदिं साधिसिदं ॥

अन्तु साधिसि साधित-विद्यनागि पुत्ररिवरं पडेदु राम-लक्ष्मणरेम्ब
पेसर-निडु ।

परमस्नेहदोळिर्व्वरं नडपे लीला-मात्रदिं चन्द्रनन्तु ।

इरे सम्पूर्ण-कळांगरागि बेळेयल् विद्या-बलोद्योगमुद्- ।

व्वरेयोल् चोद्यमेनल् सलुत्तमिरे कीर्त्ति-श्री दिशा-भागदोळ् ।

परेदाशा-गजमं पळञ्जलेये लक्ष्मी-भारदिन्दोप्पिदर ॥

अन्तु सुखदिन्दिर्पुदुमत्तलुअयिनी-पुराधिपति-महीपाल-तोडवुगळं

बेडियट्टि दोडे पद्मनाभं कृतान्तनन्ते रौद्र-वेशमं कैकोण्डु ।

एमगडनट्टत्तगदु । तमगे तुडल् योग्यमल्ल सन्तमिरल् वेल् ।

समरके वन्दनप्पडे । विमिषदोळान्तिरिदु वीर-रसमं मेरेवेम् ॥

अन्तु नुडिदडे मन्नि-वर्गदोळलोचिसि तन्न तंज्जेयं कमेयुं नाल्बत्ते-
ण्णरासरप्प विप्र-सन्तानमुं बेरसु कळपिदोडवर्दक्षिणाभिमुखरागि बरुतुं
राम-लक्ष्मणगें दडिग-माधवरेन्दु पेसरनिडु निच्च-पयणदिम् ।

बन्दवर्गळुचित-पदमन-गुन्दलेयि कण्डरमल-लक्ष्मी-चित्ता-

नन्दनमं पैरूरं । मन्दार-नमेरु-पुष्प-गन्धाद्रियुमम् ॥

व ॥ अन्तु गङ्ग-हेरूरं कण्डल्लिय तटाक-तीरदोलु बीडं बिट्टु चैत्या-
लयमं कण्डु निर्भर-भक्तियि त्रि-प्रदक्षिणं गेय्दु स्तुतिपिसि समस्त-विद्या-
पारावार-पारगरम् । जिन-समय-सुधाम्भोधि-संपूर्ण-चन्द्ररम् । उत्तम-
क्षमादि-दश-कुशल-धर्म-रतरम् । चारित्र-भद्र-धनरम् । विनेय-जनान-
न्दरम् । चतुस्समुद्र-मुद्रित-यशः-प्रकाशरम् । सकळ-सावध-दूररम् ।
क्राणूर्गणाम्बर-सहस्रकिरणरम् । द्वादश-विधतपोनुष्ठान-निष्ठितरम् ।
गङ्ग-राज्य-समुद्धरणरम् । श्री-सिंहनन्दाचार्यरं कण्डु गुरु-भक्ति-
पूर्वकं वन्दिसि तम्म बन्दभिप्रायमेल्लमं तिळिय-पेळे कैकोण्डवर्गे
समस्त-विद्याभिमुखर्माडि केलवानुं देवसदि पञ्चावती-देवियं भक्ति-पूर्व-
कमाह्वानं गेय्दु वरं बडेदु खळगमुं समस्त-राज्यमनवर्गे माडि ।

मुनि-पति नोडल् विद्वज्ज-जन-पूज्यं माधवं शिला-स्तम्भमनार-
ईनुगेय्दु पोय्यलदु पुण्-मेने मुरिदुदु वीर-पुरुषरेनं माडर ॥
आ-साहसर्म कण्डु ।

मुनि-पति कर्णिकारदेसळोळ् नेरे पट्टमनेय्दे कट्टि सज्ज-

जन-जन-वन्द्यं परिसि सेसेयनिकि समस्त-धात्रियम् ।

मनमोसेदित्तु कुञ्जमनगुर्विन केतनमागि माडि बर-

र्पणितु परिग्रहं गज-नुरङ्गसुमं निजमागे माडिदर ॥

अन्तु समस्त-राज्यमं माडि बुद्धियनवर्गिन्तेन्दु पेळ्दरं ।
 नुडिदुदनारोळं नुडिदु तप्पिदोडं जिन-शासनकोडम् ।
 बडदडमन्य-नारिगेरेदडिदडं मधु-मांस-सेवे गेय् ।
 दडमकुलीनरप्पवर कोळ्कोडेयादोडमर्थिगर्थमम् ।
 कुडदोडमाहवाङ्गणदोळोडिदडं किडुगुं कुल-क्रमम् ॥
 एन्दु पेळ्दु ।

उत्तममप्प नन्दगिरि कोटे पोळल् कुवळालमागे तोम् ।
 बत्तरु-सासिरं विषयमाप्तननिन्द-जिनेन्द्रनाजिरं ।
 गात्त-राज्यं जयं जिनमतं मतमागिरे सन्ततं निजो ।
 दात्ततेयिन्दमा-दडिग-माधव-भूसुजराळ्दरुर्वियम् ॥
 मत्तमा-नाडिङ्गे सीमे ।

उत्तर-दिक्-तटावधिगे तागे मदर्कले मूड तोण्ड-ना-
 डत्तपरासेगम्बुनिधि चेरमेनिण्डे तेङ्ग कोङ्गु मत्-
 तित्तोळ्गुळ्ळ वैरिगळनिक्कि परावृत-गङ्गवाडि-तोम् ।
 बत्तरु-सासिरं दलेने माडिदरिन्तुदु गङ्गरुजुगम् ॥

अन्तु धरित्रिगधिपतियागि दडिग-माधवरिर्व्वरं कोङ्गण-विषय-सा-
 धन-निमित्तं बरुत्तं मण्डलियं कण्डरदर प्रभाव मेन्तेने ।
 नुत-महेन्द्र-पुरं धरा-तळदोळोप्पुत्तिर्द्विविख्यातियिम् ।
 कृत-कालं मदना-पुरं नेगळे मिक्का-त्रेतेयोळ् सज्जन-
 स्तुत मण्डाल-पुरं तृतीय-पेसरिं द्वापारदोळ् सन्ततोन् ।
 नतियिं मण्डलियेम्बरिन्तु कलि-कालं सन्दुदिन्ती-पुरम् ॥

अन्ता-नाल्कु-युगकं नाल्कु-पेसरिन्दोप्पुव मण्डलिय बहि-भर्मागदोळु
 सौगन्धमं कूडे पसरिसुव सहस्र-पत्रवप्पलर्द तावरेगळिं नाना-जलच्चरि-

युलिपदिन्दोप्पुव हेम्मेरेय कण्डु बीडं बिदु तद्-गिरिय रम्यं कण्डुमिळि
 चैत्त्यालयं माडिमेटु क्राणूर्गण-सिलकर सिंहनन्दाचार्य्यर प्पेळे महा-
 प्रसादमेन्दु चैत्त्यालयं माडिसि केलवानु दिवसदिं क्केळालके पोगि
 सुखदिं राज्यं गेय्युत्तमिरे गङ्गान्वय पेळि वार्त्तिमुत्तिरे दडिगंगे माधव-
 नेम्ब सुतनागि राज्यं गेय्यलातन मगं हरि-वर्म्मनातन पुत्रं विष्णु-
 गोपनेम्बनागि मिथ्यात्वके सल्लुदुवन्ता-तोडवदश्यङ्गळगि पोगे आतन
 मगं पृथ्वी-गंगं सम्पट्टष्टियातन मगं बिरुदरं तडङ्गालु वोध्दडि-गिडि-
 सुव तडङ्गाल-माधवनातनमगम्

अविनीत-गङ्गनेम्बं । भुवनकधिनाथनागि पुट्टि बुधर्गुत्त-
 सवमं पुट्टिसिदं माध-व-रायन मर्मनब्धियन्ते गमीरम् ॥

अन्तु शत-जीवियेम्बादेशं केळ्दु ।

भरदिन्दं चुर्चु-वाय्दं पोगळे बुध-जनं बन्द कावेरियोळ् मी-
 करमागल् वीर-लक्ष्मी-नयन-कुमुदिनी-चन्द्रमं निन्दु नोडल् ।
 परिवारं तन्न कीर्त्ति-प्रभे बळसे दिशा-भागमं चोद्यमागल् ।
 परम-श्री-जैन-पादं नेलसे हृदयदोळ् मेरु-शैलोपमानम् ॥

अन्तु चुर्चु-वाय्दु बर्बुद्धिदनातनन्वयदोळु दुर्विनीत-गङ्गनातङ्गे सु-
 ष्कर-नेम्बनादनातङ्गे श्रीविक्रमनातन मगं भूविक्रमनातन मगन्दिर
 अवकाम-श्रीएरगरवरोळु एरेयन मगनेरेयङ्गनातनिन्दुदयिसिदं श्रीव-
 ल्लभनातङ्गे श्री-पुरुषनादनातङ्गे शिवभारनेम्बनातङ्गे मारसिंहनुदयं
 गेय्दम् ।

अवयवदिन्दे साधिसिद माळवकेलुवनेय्दे गङ्ग-मा-

ळवनेलकरं बरेदु कल् निरिसुत्ते कळल्लि चित्रकू-

टवतुरे कभमुज्जेय-नृपानुजमं जयकेसियं महान

हवदोळे मारसिंह-नृपनिधि निमिर्षिदनात्म-शौर्य्यम् ॥

तनय श्री-भारसिंहगनुपमित-अगर्तुंगनाद जगत्-पान-
वन-लक्ष्मी-बल्लभङ्गिनुदियिसि नेगळ्द राचमल्लवनीशम् ।
मनु-मार्ग गङ्ग-बूडामणि जय-वनितापीश-भूवल्लभेशम् ।
जिनधर्म्माम्बोधि-चन्द्रं गुण-गण-निळयं राज-विषाधरेन्द्रम् ॥

अन्तातन मर्म्मन्दिर् मरुळर्यं बूतुग-पेर्म्मार्डि तदपत्यनेरेयं
तत्सुत-वीरवेडङ्गनेम्बळे ।

उदयं गेयं विद्या-। सुदतीशं भार-रूपनुचित-विळासम् ।

विदित-सकलार्थ-शास्त्रं । मृदु-वाक्यं राचमल्लनहितर-मल्लम् ॥

अन्ता-राचमल्लनिन्देरेयङ्गनातन मगं बूतुगनातन मगं मरुळ-देव-
नातनात्मजं गुत्तिय-गङ्गनातनिन्दं मरेयेरिद भारसिङ्गनातन सुतं
गोविन्दरनातन पुत्रं सैगोडु-विजयादित्यनातनिन्दं राचमल्लनातनि
भारसिङ्गनातन सुतं कुरुळ-राजिङ्गनातनिन्दं गर्व्वद-गङ्गं गोविन्दरन
तम्भन भगनप्प मम्म-गोविन्दरम् ।

तेङ्गनुडिदडर्दु किळतं । कौङ्गं मिडुकदिरलेडद-कप्पोळ् मद-मा-।

तङ्गमने पिडिदु निलिसिद । गङ्गं सामान्य-नृपने रक्स-गङ्ग ॥

तदनुजं कलियङ्गनातनिन्दुत्तरोत्तरं गङ्गान्वये सलुत्तमिरे क्राणूर-
गणदाचार्य्यावितारवेन्तेन्दोडे ।

दक्षिण-देश-निवासी गङ्ग-मही-मण्डलिक-कुळ-समुद्धरणः ।

श्री-मूळ-संघ-नाथो नाम्ना श्री-सिंहनन्दि-मुनिः ॥

अवर तदनन्तरं अर्द्धलयाचार्यं वेकुद-दामनन्दि-भट्टारकर्
बाळचन्द्र-भट्टारकर् मेघचन्द्र-त्रैविद्य-देवरं । गुणचन्द्र-पण्डित-दे-
वरवरिन्द ।

एळेगे गुण-रुचियिनोळपग-। गळिसिरे गुण-रुचि-विकाश-वाग्-रश्मि-
यिनुच-।

चळिसे वदनेन्दु पेम्पम् । तळेदं गुणनन्दि-देव-शब्द-ब्रह्म ॥

अवरिं बळिकमकलंक-सिंहासनमनलंकरिसि नेगई तार्किक-चक्रे-
श्वरहं । वादीम-सिंहहं । पर-वादि-कुल-कमल-वन-मद-मातंगरुम् ।
बौद्ध-वादि-तिमिर-पतङ्गरुम् । सांख्य-वादि-कुळादि-वज्रधरुम् । नैयायि-
काचार्य-भूजात-कुठारुम् । मीमांसक-मत-वनावन-प्रचण्ड-पवनरुम् ।
सिद्धान्त-वार्धि-वर्द्धन-सुधाकरुम् । सकल-साहित्य-प्रवीणरुम् । मनोम-
वभय-रहितहं । जिन-समयाम्बर-दिवाकरुम् । अप्प श्री-मूल-संघद
कोण्डकुन्दान्वयद क्राणूर-गण मेषपाषाण-गच्छद श्रीमत्प्रभाचन्द्र-सि-
द्धान्तदेवरवर शिष्यरु ।

अनवद्याचारु म्मा-। घनन्दि-सिद्धान्त-देवरधिकृत-जिन-शा-।

सन-संरक्षकरेसेदर । जिनमतसद्धर्म-सम्पदं नेगळ्-विनेगम् ॥

अवर शिष्यरु ।

चतुरास्यं चतुरोक्तिर्यिं प्रमुतेयिन्दीशं गुण-व्यापक-।

स्थितिर्यिं विष्णु सु-बुद्धि-विस्तरणेर्यिं बौद्धं दली-जैन-पद-।

धतियिन्दिर्हुमिदेम् विचित्रतरमो चातुर्यमादी-समुन्-।

नत-सिद्धान्त-विभूषणङ्गेनिसिदं श्रीमत्प्रभाचन्द्रमम् ॥

अवर सधर्मरु ।

नुत-सिद्धान्तमनन्तवीर्य-मुनिगं शुद्धाक्षराकारदिम् ।

सततं श्री-मुनिचन्द्र-दिव्य-मुनिगं संवर्तिसुत्तिकुम-।

प्रतिमं तानेने पेम्पु-वेत्तरु दितोदान्तर् अगद-बन्धरु-।

जितरुद्योतित-विश्वरप्रतिहत-प्रज्ञरु म्मही-भागदोळ् ॥

अवर शिष्यरु ।

वादि-वन-दहन-हुतवह । वादि-मनोभव-विशाल-हर-निटिलाक्षं
वादि-मद-रदनि-विदुवं । मेदिप मृगराज जयतु श्रुतकीर्ति-बुधम् ॥
कवि-गमकि-वादि-वाम्बिगळ् अवन्दिरं गेल्लु कनकनन्दि त्रैवि-
द्य-विलासं त्रि-भुवन-मल्ल-वादिराजं दलेनिसिदं नृप-समेयोळ् ॥

अवर सधम्मरु ।

चारित्र-चक्रि संयम-धारि क्राणूरुगणाग्रगण्यं सदयम् ।
श्री-रमणं सिद्धान्त-वि-शारदनति-विशद-कीर्ति माधवचन्द्रम् ॥

अवर शिष्यरु ।

वर-शास्त्राम्बुधि-वर्द्धन-हरिणाङ्कं विरुद-वादि-मद-विस्फालम् ।
निरुतं तानेनलेसेदं । धरेयोळ् त्रैविद्य-बालचन्द्र-यतीन्द्रम् ॥

श्री-प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवर शिष्यरु ।

वसुमतिगोष्पु-वेत्त धवलातपवारणवागि कीर्त्ति नर-
त्तिसुवुदु पेम्पु-वेत्त महिमोन्नति मेरुगे मण्डपन् दलान-
गेसेवुदु सद्-गुण-प्रतति मौक्तिक-मालेय लीलैयं सम-
र्थिसुवुदु सज्जनके सहजातमेनल् बुधचन्द्र देवर ॥
करवं वारुणिगेन्दु नीडि पिरिटुं निस्तेजमेधिर्द तन्-
निरवं नोडदे सत्पद-प्रमुतेयं ताब्दिदर्पं दोषाकरम् ।
दोरेये पेळेनुतं कळङ्क-रहितं सद्-वृत्तदिन्दं तिरस्-
करिपं चन्द्रननोष्पु-वेत्त बुधचन्द्रं सन्ततोत्साहदिम् ॥
नुडिगळ् सत्य-सुवर्ण-भूषण-गणं चित्तं सु-रत्नङ्गलम् ।
मडगिट्टिर्प करण्डकं तनु तपस्त्री-भामिनी-भासियेन्-
शि० २७

दडे दुष्कीर्त्तियनान्त मत्तिन शठर् दुब्बोधरस्पृश्यरेम् ।
 पडिये सद्-बुध-सेव्यनप्प बुधचन्द्र-रूयात-योगीन्द्रनोळ् ॥
 सुर-धेनु व्रति-रूपमं तळेदुदो गीर्वाण-भूजातवी-
 धरेयोळ् तापस-रूपदिं नेलसितो पेळेम्बिनम् बर्पुदम् ।
 करेदर्थि-प्रकरके कोट्टु विपुळ-श्री-वैर्त्तियं ताळ्दिदम् ।
 निरुतं श्री-बुधचन्द्र-देव-मुनिपं वात्सल्य-रत्नाकरम् ॥

इन्तेनिसि नेगळ्दाचार्य-परमेष्ठिगळन्वय-तिलकरं जिनसम्भ-निर्माप-
 णरुमप्प बुधचन्द्र-पण्डित-देवरु प्रवर्त्तिसुत्तिरे । प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-
 देवर गुड् ।

जय-जया-वल्लभनन्-। वय-वार्धि सीतरोचि भुवन-स्तुत्यम् ।

प्रिय-मूर्त्ति जिन-पदाब्ज-। द्वय-भृङ्गं बर्मदेव भुज-बळ-गङ्गम् ॥

अन्तेनिसि नेगर्द बर्मदेव भुज-बळ-गङ्ग-पेर्माडि-देवं मण्डलिय बेट्टद
 मेले मुनं दडिग-माधवर म्माडिसिद बसदियं तम्म गंगान्वयदवर् प्पडि
 सलिसुत्तुं बरलु तदनन्तरं मर-वेसनागि माडिसि मण्डलि-सासिरवेड-
 दोरे-एप्पत्तर बसदिगळ्जिप्पुव मुन्नादुवकुं पट्टद-बसदिय प्रतिबद्ध-
 वागि समादेयर म्मुख्यवागि बिट्ट दत्ति तट्टंकरे सर्व्व-बाधापरिहार
 मत्तं बसदियिं तेङ्कण केरेय केळ्गे तळ-वृत्ति गदे गळेय मत्तल्ल मूरु
 बेहले गळेय मत्तल्लारुमिन्तु पट्टद-तीर्थद बसदिगे सलुत्तमिरे आतन
 तनूभवर् ।

जय-लक्ष्मी-पति मारसिंगननुजं सत्य-प्रियं सन्द नन्-।

निय-गङ्ग-क्षितिपाळकं तदनुजं तेजस्वि विक्रान्त-च-।

क्र-युतं रक्स-गंगनातननुजं वीराग्रगण्यं तद-।

न्वय-लक्ष्मी-गृह-दीपकं भुजबळ-श्री-गङ्ग-भूपाळकम् ॥

आ-मारसिंग-देवं आद्रवळियेम्बूरुमं बसदियाग्रेय-कोणरेयिम्मूडलु
गदे गळेय मत्तलोन्दु बेदले मत्तलेरुडुमं बिट्टम् । माघनन्दिसिद्धान्त-
देवर गुडुं मारसिंग-देवं मत्तवातन तम्म प्रभाचन्द्रसिद्धान्त-देवर
गुडुं नन्निय-गङ्ग-देवम् सिरियुरगे येम्बूरुममागदेयिं तेङ्कण कोळद
केळगे गळेय मत्तलोन्दु बेदले मत्तलेरुडुमं बिट्टम् । बर्म-देव सक मारसिंग
नन्निय-गङ्ग ९७६ विज [य] ९८७ [विष्णाव] सु ९९२ सौम्य ।
अनन्तवीर्य-सिद्धान्त-देवर गुडुं रक्स-गंगं नन्निय-गङ्ग बिट्ट गदेयिं
तेङ्कलु हरकेरिय सीमे-वरं विट्ट गदे गळेय मत्तलोन्दु बेदले गळेय मत्त-
लेरुडुं इन्ती-वृत्ति मण्डलिय होलद भूमियिन्ती-हनेरुडु मत्तलु बेदलेय सीमे
मूडण देसे तळवृत्तिय गदे । तेङ्क हरकेरिय सीमेय नट्ट कळगलु हडु-
वलु पिरिवळु बडग मोरसर-कोळ मत्तं कटकद गोवं रक्स-गङ्ग हूलि-
यकेरेय गदेयुमदर सुत्तण बेदलेयुमं बिट्टनदर सीमे मूडलु चिक्कवण-
जिगनकेरे तेङ्कलु तट्टकेरेय गुडुय बडगद.....नीर्वरि हडुवलु नट्ट कळि
वरलु गुडुय मूडण नीर्वरि बडगलु बडगण दिम्बिन नीर्वरि चिक्क-
बज्जिगनकेरेय बडगण कोडि ॥

मुनिचन्द्र-सिद्धान्त-देवर गुडुम् ।

भुज-बळदिं शत्रु-मही- । भुज-कुजमं कित्तु मुत्ति कोण्डेगळं कोण्- ।

डजित-बळनेनिसि नेगर्द । भुजबळ-गङ्ग-क्षितीशनवनिप-तिलकं ॥

इन्तेनिसि नेगर्द भुजबळ-गंग-पेर्माडि-देवं सक-वर्ष १०२७ नेय

सर्व्वजितु-फाल्गुण-मासद १ शुक्रवारदन्दु मण्डलिय पट्टद-तीर्त्यद
बसदिय निलय-निवेद्य-पूजेगं ऋषियर्गाहार-दानकं बिट्ट दत्ति हेगण-
गिले येम्बूरं सर्व्व-बाधा-परिहारं माडि बिट्टन् (आगेकी ३ पंक्तियोंमें)

सीमाकी चर्चा है) प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवर गुड्ड नभियगंग-
पेम्माडि-देव ।

आ-भुजबल्लगङ्गा..... ।वन-भ्राजित मग-बुद्धिद..... ।
.....दिक्-तटं रा- । ज्याभिषवाधिपतियेनिप नभिय-गङ्गम् ॥
देसेगल्लनेन्दे पर्व्विद नेलक्किदे तां ब्बेल्लगट्टेनिप्प बल्- ।
पेसेबुदु तोळोळ्ळेण्-देसेय गण्डर मीसेय मेले-मेले वर- ।
तिसुबुदु गण्ड-गर्व्वद जसं बडवाप्पिय बायनेन्दे बत्- ।
तिसुबुदु तेजमेनधिकनादनो नभिय-गङ्ग-भूभुजम् ॥
पद-नखदोळ् दशाननते नम्र-नृपालि-मुखाङ्कदिं जया- ।
स्पद-भुजदल्लि षप्पुखते दुर्ज्जय-शक्ति-धरत्वदिं चतुर- ।
व्वदनते वक्कदोळ् चतुर-वाणियिनोप्पिरलेन्तु नोर्पड- ।
भ्युदयमनेन्दिदत्तु पलवुं मुखदिं तवे कीर्त्तिं गङ्गनोळ् ॥
दिगिभमनोत्ति कीलिडिपनगगद केसरिवोले वाय्दडम् ।
सुगिये तळ-ग्रहारदोळे मगिपनुड्डुटदिन्दे मीण्डुवम् ।
नगमनिवं कवुड्डुडिव तेड्डुडिवन्नने सम्बुशैलमम् ।
नेगपिद पन्ति-दोळवननेळिपनेम्बुदु मारसिङ्गन ॥

स्वस्ति सत्यवाक्य-कोङ्कुणि-वर्म्म धर्म्म-महाराजाधिराजम् परमे-
श्वरम् । कोळालपुर-वरेश्वरम् । नन्दगिरि-नाथं मद-गजेन्द्र-लाञ्छनम्
चतुर-विरिञ्चनं पद्मावती-देवी-लब्ध-वर-प्रसादम् विचक्रिळामोदं
नभियगङ्गं । जयदुरत्तङ्गम् । गङ्ग-कुल-कुवळय-शरच्चन्द्रम् । मण्डलिक-देवे-
न्द्रम् । दर्पोद्धताराति-वनज-वन-वेदण्डम् । कुसुमकोदण्डम् । गण्डर-
गण्डम् । दुट्टरगण्डम् । नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहितम् । श्रीमन्न-

निय-गङ्गा-पेर्माडि-देवम् तम्मज्जं बम्म-देवं माडिसिद मण्डलिय
पट्टद-तीर्थद बसदियं कल्लु-वेसनागि माडिसिद पट्टद-बसदिगे सक-
वर्ष १०४३ नेय शुभकृत-संवत्सरद भाद्रपद-मासद शुद्ध ५
बृहस्पति-चारदन्दु कुरुळिय-बसदियादियागि पञ्चविंशति-चैत्यालयमं
धम्मप्रभावनेयिन्द माडिसिद प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवर शिष्यर मुख्य-
वागि विट्ट वृत्ति बसदिय मुन्दे गद्देगळेय मत्तरोन्दु बेद्लेगळेय मत्तरेरुडु
बसदियहळिय सुङ्गमुमं बिट्टरु मत्तं नभिय-गङ्गा-देवानु पट्ट-महा-देवि
कञ्चल-देवियरुं पम्मावती-देविगे हरसि हेर्माडि-देवनं हड्डेदु काणि-
केयं तन्नाव्व नाडुर्गळोलु शर-मित-पणवं कोट्टरा-चन्द्रार्क-तारं-वरं ।
बुधचन्द्र-पण्डित-देवर गुडुम् ।

मुनिसिं दिग्दन्ति-दन्तङ्गलनवयवदिन्दोत्ति वेगं छळ्ळेम्- ।

बिनेगं कित्तेत्तने तारगेगलनदटिन्दालिकल्लन्ददिं सू- ।

सने वार्द्धि-त्रातमं सुरेने तवुविनेगं पीरने कोपदिं पोय- ।

यने वेट्टं पिट्टु-पिट्टागिरे समरदोळी-वीर-पेर्माडि-देवम् ॥

(इमेशाका अन्तिम श्लोक)

[इस समय त्रैलोक्यमल्ल-देवका विजयराज्य प्रवर्द्धमान है । गङ्गान्वय
(वंश) का अवतार इस प्रकार हुआ:—

वृषभ-तीर्थ-कालमें जब कि अयोध्यामें इक्ष्वाकु-वंशमें राजा हरिश्चन्द्रको
राज्य करते हुए बहुत समय हो गया था, उसका पुत्र भरत हुआ । उसकी
पत्नी विजय-महादेवी थी । जब उसको गर्भ-दोहद हुआ तो उसे जोरसे नृत्य
करनेवाली लहरोंसे ओतप्रोत, मत्स्य, चक्रवाक पक्षी तथा चमकीले हंसोंसे
पूरित गङ्गामें नहानेकी इच्छा हुई । अपनी इस इच्छाको पूरा करनेके बाद,
नौ महीने पूरे होनेपर उसे एक लड़का हुआ । उस लड़केका नाम, चूँकि
गङ्गामें नहानेके बाद वह उत्पन्न हुआ था अतः गङ्गदत्त रक्खा गया ।
गङ्गदत्तका पुत्र भरत हुआ और उसका पुत्र गङ्गदत्त हुआ । इस गङ्गदत्तकी

लड़कीका लड़का हरिभन्द्र हुआ, उसका लड़का भरत हुआ और उसका फिर गङ्गदत्त ।

गंग वंशकी परम्परा इस प्रकार जारी थी,—जब कि नेमीश्वरका तीर्थ चल रहा था,—उस समय, राजा विष्णुगुप्तका जन्म हुआ । यह राजा अहिच्छत्र-पुरमें शान्तिसे निवास कर रहा था, उसी समय नेमि तीर्थकरका निर्वाण हुआ और उसने ऐन्द्रध्वज पूजा की, जिससे प्रसन्न होकर देवेन्द्रने उसे ऐरावत हाथी दिया ।

विष्णुगुप्त-महाराज और पृथ्वीमति-महादेवीसे भगदत्त और श्रीदत्त नामके दो पुत्र हुए । पिताने भगदत्तको राज्य करनेके लिये कलिंग-देश दे दिया और वह उसपर ‘कलिंग गंग’ नामसे राज्य करने लगा । दूसरी तरफ, उसने वह मत्त हाथी तथा शेष संपूर्ण राज्य राजा श्रीदत्तको दे दिया । इस प्रकार जब श्रीदत्तके समयसे हाथीको मुकुटमें धारण किया गया था,—प्रियबन्धुवर्म्मने उत्पन्न होकर अपनी नीतिसे सारी पृथ्वीकी रक्षा की ।

जिस समय वह प्रियबन्धु शान्तिसे राज्य कर रहा था, उस समय पार्श्व-भट्टारक (तीर्थकर)को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ, जिसकी पूजाके लिये सौधर्म्मनेन्द्रने आकर केवली-पूजा की । इसी अवसरपर स्वयं प्रियबन्धुने भी आकर केवलज्ञानकी पूजा की । उसकी श्रद्धासे प्रसन्न होकर इन्द्रने पाँच आभरण (अलङ्कार) उसे दिये और कहा,—“अगर तुम्हारे वंशमें आगे कोई मिथ्यामतका माननेवाला उत्पन्न होगा, तो ये (आभरण) लुप्त हो जायेंगे ।” ऐसा कहकर, और अहिच्छत्रका ‘विजयपुर’ नाम रखकर इन्द्र चला गया ।

दूसरी ओर, पूर्ण चन्द्रमाके समान, गंग-वंश बढ़ता ही चला गया और इस वंशमें राजा कम्पके पद्मनाभ नामका एक पुत्र उत्पन्न हुआ । पद्मनाभके, शासन-देवताकी कृपासे, दो पुत्र उत्पन्न हुए, जिनका नाम उसने राम और लक्ष्मण रखा ।

जब ये दोनों कुमार शान्तिसे रह रहे थे, उज्जयिनी-शासक महीपालने उनको जा घेरा और उनसे इन आभूषणोंको माँगा । पद्मनाभने देवसे इन्कार कर दिया ।

इसके बाद अपने मन्त्रियोंकी सम्मतिसे, उसने अपने पुत्रोंको, अपनी कुमारी छोटी बहिन तथा ४० खुने हुए माइनोंके साथ बाहर भेज दिया, और चूँकि वे दक्षिणको जा रहे थे, उनका नाम बदलकर क्रमसे दक्षिण और माधव रख दिया ।

चलते-चलते वे एक अत्यन्त मनोरम स्थानपर आये, जहाँ उन्हें विशाल पेहर (शायद कोई तालाब-विशेष) और एक पहाड़ी मिली जो पुष्पाच्छादित मन्दार, नमेरु तथा चन्दनके वृक्षोंसे आवृत थी । उस गङ्ग-हेरुरको देखकर वहीं उन्होंने एक तालाबके किनारे अपने तम्बू तान दिये, वहाँ एक चैत्यालय भी उन्हें दिखाई दिया, जिसकी तीन प्रदक्षिणा करनेके बाद, स्तुति करते समय, क्राणूर-गण-आकाशके सूर्य, गङ्ग राज्यके प्रवर्धक श्री-सिंहनन्दाचार्य दिखाई दिये । गुरुमें अज्ञा होनेके कारण उन्होंने उनकी विनय की और अपने आनेका उद्देश्य कहा । इसपर वे उनको हाथ पकड़कर ले गये और उन्हें विद्याकी कलामें प्रवीण किया, और कुछ दिनोंके बाद अपने अज्ञा-बलसे पद्मावती देवीको प्रकट कर वर प्राप्त किया, और उन्हें एक तलवार तथा संपूर्ण राज्य दिया ।

जिस समय मुनिपति ऊपरकी ओर देख रहे थे, माधवने अपनी तमाम शक्तिसे एक पाषाण-स्तम्भपर प्रहार किया, और वह स्तम्भ कड़कड़ करते हुए नीचे गिर पड़ा । मुनिपतिने इस शक्तिको देखकर उनको कर्णिकारके परागोंसे तैयार किया गया एक मुकुट पहिनाया, उनके ऊपर अनाजकी वृष्टि की और बहुत खुशीसे तमाम पृथ्वीका राज्य देते हुए, झण्डेके लिये अपनी पीछीको चिह्न बनाया, तथा बहुतसे सेवक, हाथी और घोड़े दिये ।

तमाम राज्यका अधिकार देते हुए उन्होंने उन्हें इस उपदेशसे सावधान किया:—अपनी प्रतिज्ञात बातको यदि वे नहीं करेंगे; अगर वे जिनशासनको स्वीकार नहीं करेंगे; अगर वे दूसरोंकी स्त्रियोंको ग्रहण करेंगे; अगर वे मांस और मधुका सेवन करेंगे; अगर वे नीचोंसे सम्बन्ध जोड़ेंगे; अगर वे आवश्यकतावालोंको अपना धन नहीं देंगे; अगर युद्धभूमिसे भाग जायेंगे:—तो उनका वंश नष्ट हो जायगा ।

१ शिलालेख इस बातमें एक राय हैं कि यह प्रहार तलवारसे किया गया था ।

ऐसा कहनेके बाद,—उच्च नन्दगिरि उनका किला हो गया, कुवलाल उनका नगर बन गया, ९६००० उनका देश हो गया, निर्दोष जिन उनके देव हो गये, विजय उनकी युद्धभूमिकी साथिन हो गई, जिनमत उनका धर्म हो गया ।

आगे गङ्गवाडि ९६००० की चतुर्विक्-सीमा दी है ।

राज्य प्राप्त करनेके बाद, दडिग और माधव दोनों, जब कोंकण देशको अधीन करनेके लिये आ रहे थे, उन्होंने मफ्फलि देखी, जिसके बाहरी प्रदेशमें एक विशाल तालाबको सफेद जल-कमलिनी और हजारपत्तेवाले विकसित कमल तथा बहुत-सी मछलियोंके शब्दोंसे आकर्षक जानकर वहीं उन्होंने अपने तम्बू गाड़ दिये । पहाड़ीकी सुन्दरता देखकर सिंह-न्याचार्यने उन्हें वहाँ एक चैत्यालय निर्माण करनेकी प्रेरणा की, जिसे उन्होंने मान्य किया ।

और कुछ दिनोंके बाद वे कोलाल चले गये और शान्तिसे राज्य करने लगे । जैसे जैसे गङ्ग-वंश बढ़ता गया, दडिगके माधव नामका एक पुत्र हुआ, जिसने राज्य किया । उसका पुत्र हरिवर्मा, उसका पुत्र विष्णुगोप, जिसके मिथ्यामतके माननेके कारण, वे आभूषण बिलीन हो गये थे । उसका पुत्र पृथ्वी गङ्ग हुआ, जिसने सत्यमत अङ्गीकार किया । उसका पुत्र तडङ्गल माधव था ।

इसका पुत्र अविनीत गङ्ग था । यह अपनी शत-जीवी बातको सुनकर, परीक्षाके लिये, अत्यन्त भयानक वादवाली कावेरीमें कूद गया और फिर तैर कर निकल आया । यह पक्का जिनभक्त था ।

उसके बाद दुर्विनीत गङ्ग हुआ, जिसका पुत्र मुष्कर था । मुष्करके बाद क्रमसे एकके बाद एक श्रीविक्रम और भूविक्रम हुए । भूविक्रमके नव-काम और पूरग पुत्र हुए । इनमेंसे पूरगके पूरेयङ्ग पुत्र हुआ; उससे श्रीबल्लभ, उससे श्रीपुरुष, उससे शिवमार और इससे मारसिंह ।

मालव समुद्रको स्वाधीनकर और एक पाषाणपर 'गङ्ग-मालव' खुदवाकर मारसिंहने कञ्चमुजेके राजाके छोटे भाई जयकेसीको युद्धमें मारा ।

मारसिंहका पुत्र जगतुंग हुआ; उसके राचमल्ल हुआ जो जिनधर्म-समुद्रके लिये चन्द्रमा था ।

उसके नाती मरुळय्य और वूतुगपेम्माळि हुए; वूतुगकी सन्तान प्रेरयप, उसका पुत्र वीरवेडंग, और उसके राचमल्ल उत्पन्न हुआ।

राचमल्लसे प्रेरयङ्ग उत्पन्न हुआ; जिसका वूतुग, जिसका मरुळ-देव, जिसका गुत्तिय-गंग, जिससे मारसिंग, उसका पुत्र गोविन्दर, उसका सैगोड्ड विजयादित्य; उससे राचमल्ल उत्पन्न हुआ; उससे मारसिंग, उससे कुरुळ-राजिग, उससे गर्व्वदगङ्ग; गोविन्दरके छोटे भाईका पुत्र मम्म-गोविन्दर था। (उसकी प्रशंसा) उसका छोटा भाई कलियङ्ग था। उसके बाद जिस समय गंगवंश चल रहा था:—

काणूरगणके आचार्योंकी वंशावली निम्न भाँति थी:—

दक्षिण-देशवासी, गङ्ग राजाओंके कुलके समुद्धारक, श्रीमूलसंघके नाथ सिंहनन्दि नामके मुनि थे। तदनन्तर अर्हद्वय्याचार्य, वेष्टद दामनन्दि भट्टारक, बालचन्द्र भट्टारक, मेघचन्द्र त्रैविद्यदेव, गुणचन्द्र पण्डितदेव। इनके बाद शब्द-ब्रह्म गुणनन्दिदेव हुए। इनके बाद महान तार्किक एवं वादी प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेव हुए। वे मूलसंघ, कोण्डकुन्दान्वय, कानूर-गण तथा मेघपाषाण-गच्छके थे। उनके शिष्य माघनन्दिसिद्धान्तदेव हुए। उनके शिष्य प्रभाचन्द्र हुए।

इनके सधर्मा अनन्तवीर्य मुनि थे; मुनिचन्द्र मुनि भी। उनके शिष्य श्रुतकीर्ति। उनके बाद कनकनन्दि त्रैविद्य हुए, जिन्हें राजाओंके दरबारमें 'त्रिभुवन-मल्ल वादिराज' कहा जाता था। इनके सधर्मा माधवचन्द्र थे। उनके शिष्य त्रैविद्य बालचन्द्र यतीन्द्र थे।

प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेवके शिष्य बुधचन्द्रदेव थे (उनकी प्रशंसा)। जिस समय आचार्य-परमेष्ठि-अन्वयके तिलकस्वरूप बुधचन्द्र-पण्डितदेव विराजमान थे:—

प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवके गृहस्थ-शिष्य भुजबल-गंग बर्म्मदेव थे।

इन प्रसिद्ध बर्म्मदेव, भुजबल-गंग पेम्माळि-देवने 'बसदि' बनवाई। यह वही बसदि है जिसे पूर्वमें दक्षिण और माधवने मण्डलिकी पहाड़ीपर बनवाई थी, और जिसके लिये उसके गंगवंशके राजाओंने पूजाका प्रबन्ध जारी रखा था, और जिसे बादमें उन्होंने ककदीकी बनवा दी थी,—यह

आजतककी बनी हुई तथा भविष्यमें जो मण्डलि-इजारकी पट्टदोरे-सत्तरमें बनेंगी इन सभी बसदियोंमें मुख्य थी। इसका नाम पट्टद-बसदि (शाही बसदि) रक्खा था, और इसे (उक्त) भूमिदान दिया।

बर्म्मदेवके ४ लड़के थे—मारसिंग; उसका छोटा भाई नखिय-गंग; उसका छोटा भाई रक्खस-गंग; उसका छोटा भाई भुजबल-गंग।

उक्त मारसिंग-देवने भार्गवलिमें (उक्त) कुछ भूमिका दान दिया। इसके अतिरिक्त, माघनन्दि सिद्धान्तदेवका^१ गृहस्थ शिष्य मारसिंह-देव (शक ९८७ विश्वावसु) और उसका छोटा भाई, प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देव-का शिष्य, नखियगङ्गदेव था। इन दोनोंने सिरियूरमें (उक्त) कुछ भूमिका दान दिया। (शक ९९२ सौम्य)

बर्म्मदेवका दानका समय—शक ९७६ विजय।

अनन्तवीर्य-सिद्धान्त-देवके गृहस्थ-शिष्य रक्खस-गङ्गने (उक्त सीमा-सहित) भूमिका दान दिया। मुनिचन्द्र-सिद्धान्त-देवके गृहस्थ शिष्य भुजबल-गङ्गने शक १०२७ में, सर्वजितु वर्षमें, (उक्त) भूमिका दान किया। नखिय-गङ्ग-पेर्माडि देवका 'नखिय-गङ्ग' नामका लड़का हुआ। (इसकी प्रशंसा), इसने शक वर्ष १०४३ शुभकृत् वर्षमें मण्डलिकी पट्टद-तीर्थ बसदिके लिये, २५ चैत्यालय और बनवानेके साथ-साथ, कुछ जमीनका दान दिया। इसकी पट्टमहादेवी कञ्जल-देवी थी।]

२७८

श्रवणबेलगोला—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०४३=११२१ ई०]

(जै० शि० सं०, प्र० भा०)

२७९

श्रवणबेलगोला—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०४४=११२२ ई०]

(जै० शि० सं०, प्र० भा०)

२८०

तेर्दाळ—कच्छ

[शक १०४५=११२३ ई०]

[तेर्दाळ दक्षिण महाराष्ट्रके सांगली जिलेका एक बड़ा गाँव है। इस स्थानकी जैन 'बस्ति' में एक पाषाण पीठ (stone tablet) है जिसपर ३ विभिन्न भागोंमें विभक्त एक अभिलेख है। यह लेख उसका प्रथम भाग है, यह इस समूचे लेखकी ५६ वीं पंक्तिपर जाकर समाप्त होता है।]

[IA, XIV, P. 14-26 (Lines 1-56)]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

श्रीमन्नमुरासुरोरगलसन्मानिक्यमौळिप्रभा-

स्तोमालंकृतपादपद्मयुगलं कैवल्यकान्तामनः-

प्रेमं सन्मति-नेमिनाथ-जिननाथं तेरिदाळातिशय-

श्रीमत् (६) भव्यजनके माळ्कनुदिनं दीर्घायुमं श्रीयुमम् ॥

क्षितिभृत्त्राणप्रभावोत्करकरिमकरोद्यत्प्रयुक्ताब्धिवेला-

वृत्तजम्बूद्वीपमध्योद्भवकनकनगकीक्षिसत् दक्षिणाशा-

क्षिति कण्ठोष्पिपुदेत्तं भरतविषयमा देशदोळ् कुन्तलोद्यत्-

क्षिति तोकुं चेल्विनिं तद्वरणियोळेसेगुं कूण्डिनामोदूषदेशम् ॥

तद्विषयमध्योदेशदोळ् ॥

निरुपमगन्धशाळिवनदिं बनदिं कोळदिं तटाकदिं गिरिवन-तोय-
दुर्ग-कुळ दिन्दगळिं बुध-माधवार्क-शंकर-जिन-सम्रदिं विपणि-मार्गादिनो-
पुव तेरिदाळ पन्नेरडर चेल्वनेय ॥

१ यहाँपर यह लेख सुस्पष्ट और सरलतासे पढ़नेके लिये पंक्तिवार न देकर नियमानुसार पठनीय साधारण शैलीसे दिया जाता है ।

पोगळ्कजनुं नेरयं धरित्रियोळ् ॥ तज्जनपदविलासवनितावदन-
कमळक्के विशाळनयनकमळमेने सोगयिसि ॥ उपमातीतमेनल्कगळ्द-
गळ कोटाचक्रदिं कूडे-कूप- पयोजाकर-कीर-भृङ्ग-वन-नाना-देव-भूदेव-वै-
यपवित्रास्पद- कोटिथिं सुजनरिं श्री-तेरिदाळाभिधानपुरं तीवि करं स्थिरं
प्रतिदिनं तोळ्कुं जगच्चक्रदोळ् ॥ दुर्व्वारातीभ-पञ्चानन-निभ-सुभटानीकदिं
विश्वविद्यागर्व्वोन्मत्त प्रसिद्धागमकुशळबुधव्रातदिन्दाश्रितर्गिन्द्रोर्व्वीजातो-
पमानोन्नतचतुरजनश्रेणियिं तीवि तत्पनिर्व्वर्गावुण्डरिं कण्णोसेबुदसदळं
भाविसल् तेरिदाळम् ॥ (श्लोक) भूविनुतचतुस्समयमनावग मेसेवारु
दर्शनङ्गळुं कौगावगद पन्निर्व्वर्गावुण्डुगळिहुं रक्षिपद्-त्तत्-पुरमं ॥ धन-
दन नेयनेन्दु कोरचाडुव काडुव तम्म काञ्चन-निचयङ्गळिं मणिगणंगळ
राशिगळिं नवीन-मण्डन-बहुवस्त्रदिं पयगळिं बहुधान्यदिनोपि तोर्प-
नञ्चिन परदक्कळिं भरितवागि करं सोगयिक्कु तत्पुरम् ॥ अन्तु सन्तमुं
बसन्तमुमेने तीवि सन्ततं सकळधरित्रिगळंकारमागे सोगयिसुव तेरि-
दाळ पनेरडर मन्नेय वल्लमर्गे वल्लभराद कुन्तळ-महीतळ-चक्रवर्त्तिगळन्व-
यावतारमेन्तेन्दे ॥ वृ ॥

वनज-क्षमाधर-पद्म-सद्मजनजं प्रोद्भूत-हारीत-नं-
दन-माण्डव्यनिनाद पञ्चशिखनिं बन्दा चळुक्यान्वया-
वनिपम्मुं पलरागे मत्तहितरं गेल्लुर्व्वियं ताब्द तै-
लनदोन्दन्वय मेरुवान्त निळयं श्रीरायकोळाहळम् ॥

वृ ॥ मत्तमा वंशदोळ् जयसिंहवल्लभनेम्ब सिंहपराक्रमनादम् ॥

आतन तनयं दुष्टमहीतळ पतिगळननेकरं गेल्लदखिळोर्व्वी-
तळमं तळेदं विख्यातं त्रैलोक्यमल्लनाहवमल्लम् ॥

व ॥ अन्तु समस्तधात्रीवल्लभेगे वल्लभनादाहवमल्लदेवन
प्रियतनूजन् ॥ घन-दोर-विवक्रान्तदिं गूर्जरनृपबळमं
गेल्दु मारान्त चोळावनिपङ्गामीळकाळानळमनोसेदु
सड्ग्रामदोळ तोरि भीतावनि पर्णातङ्कमं पुट्टिसदनुनय-
दिं विश्वभूचक्रमं सज्जनवागलु रायकोळाहळनेने
तळेदं राय पेम्माडिरायम् ॥

व ॥ अन्तु कुन्तळमहीतळकान्ताकान्तनेनिसिद वीर-पेम्माडि-
रायन कट्टिदलगेनिसिद तेरिदाळद वीर-गोङ्क-क्षितीश्वर-
नन्वयदोळेनेबरानुं सले निज-जननिगं जनकर्गे पूर्वपुण्य-
वेम्ब कळपावनिजके फलबुदयिसुवंते पुट्टि ॥ कलिंगं
बेत्तिद वीरवान्तहितरं गेल्दुर्कु विट्टिष्टमण्डलमं चक्रिगे
साधिसित्तळवदेक च्छत्रवागलुके निर्मळकीर्त्यङ्गनेगार्तु
कूर्त्तु कुडुत्तु श्रीतेरिदाळावनीतळनाथं नेगळदं नृपाळतिळकं
लोकं महीलोकदोळ ॥

वृ ॥ आतन नन्दनं च(ब)ळदोळा रघुनन्दननेक-वाक्य-विख्या-
तियोळर्कनन्दनननिन्दितशौर्यदोळिन्द्रनन्दनं नीतियोळब्ज-
नन्दननेनिष्प महत्त्वमनप्पुकेय्दनुर्वीतळदोळ बुधर्पोंगळ-
लित्तेरगुर्विवरम् निरन्तरम् ॥

व ॥ तन्नृपोत्तमप्रियपुत्रन् ॥

वृ ॥ बल्लिदरागि पोगदिदिरान्तरिमन्नेयरन्नेयर्कळं बल्लहनो-
ल्दु नोडे रणरङ्गदोळोडिसि तेरिदाळदोळ वल्लभनागि निन्द
जयवल्लभनं सितकीर्तिकामिनीवल्लभनेन्दु बणिंसदनावनो
मन्नेय मल्लिदेवननु ॥ क ॥

आ वीर-मल्लिदेव-महीवल्लभनर्धनारि गुणमणिगणदि भू-वधुगेणेयेने
बाचलदेवि महीन्द्रजेगे सीतेगोरे दोरेयल्ले ॥ त्रि (वृ) ॥

अवरिवर्गनुरागदि सिरिगवा कञ्जोदरंगं मनोभवनद्विप्रियपुत्रिगं
शशिधरंगं षण्मुखं बन्दु पुट्टुववोल् पुट्टि विरोधि-मन्नेयवरइं तेरिदाळ-
क्षितीश-विळासं परिरञ्जिपं भुवनदोळ् निशंकुयि गोङ्कर्मन् ॥

त्रि (वृ) ॥ कन्तु-विळास-लक्ष्मियेनिपग्गद बाचलदेवि माते
विक्रान्त-विभासि-मल्ल-महीपं जनकं मुनि माघणन्दि सैद्धान्तिकचक्रवर्त्ति
गुरु नेमिजिनं मनदिष्ट-देव्वोरंतेने तेरिदाळद नृपाग्रणि गोङ्कनिदं कृता-
र्यनो ॥ अडसुव कुत्तवोत्तरिप मृत्यु कडंगुव मारि कोय्धिनि तोडव
विरोधि पाय्व पुलि पोय्व सिडिल् पिडिवुग्र पन्नगं सुडुव दवाग्निबाघे
कडेगंचुवुदेन्ददे तेरिदाळ्दी कडुगलि गोङ्क-भूपतिय भव्यते केवळवे
निरीक्षिसल् ॥ पसिद सिताहि सोङ्किदोडे संकिसि मन्नद तंनदासेयिन्द-
सुवरेयागि विट्टिरदे पञ्च-पदङ्गळनोदि तद्विषप्रसरमनेय्दे पिङ्गिसि जिन-
व्रतदोळु दृढनाद तन्न पेम्पेसेदिरे तेरिदाळदरसं नेगळदं कलि गोङ्क-
भूभुजन् ॥ येत्तिसि तेरिदाळदोळगोप्पे जिनेश्वरसन्नमं समन्तेत्तिसिदं
जयध्वजमनुर्विगे दिग्-मुख-दन्ति-दन्तदोळ् तेत्तिसिदं निजाङ्क-महिमा-
क्षरमाळिकेयं गडुन्दडेनुत्तमभव्यनो जिनमताग्रणि सद्गुणि गोङ्क-
भूभुजन् ॥ सततं कीर्त्तिसदिर्प्यपरारब्भुवनदोळ् भव्यजगत्सेव्यनं

जित-काळ्येय-कळङ्क-पङ्क-पटह-ध्वान्ताङ्कनं गोङ्कनम्
प्रतिपक्ष-क्षितिनाथ-हृत्-सरसिजोधातङ्कनं गोङ्कनम्
क्षितियोळ् रञ्जिप तेरिदाळदेसवी निशंकनं गोङ्कनम् ॥

१ 'म' अक्षर छन्दपूर्तिके लिये है, वैसे इसकी कोई जरूरत नहीं है ।
२ यह दूसरा 'प' गलत है ।

अन्तेनिसिद गोळ्महीकान्त श्री-माघणन्दि-सिद्धान्तिकरं
 भ्रान्तेन्तो कोळ्गिरदिं [दं] तरिसि समस्त-भव्यरभिवर्णिपिनम् ॥
 तदाचार्यप्रभाववेन्तेन्दे ॥ धरे दुग्धाब्धियिनब्धि चन्द्रनिनिनं
 तेजोग्नियिन्देन्त [म] न्तिरली पोस्तक-गच्छ-देसिग-गणं
 श्री-कोण्डकुन्दान्वयम्

निरुतं श्री-कुळचन्द्रदेव-यतिपोषच्छिष्यरिं सद्गुणा-
 कर-राद्धान्तिक-माघणन्दि-मुनियिं कणगोपुगुं धात्रियोळ् ॥

क ॥ अगणित-गुण-जळधिगळेने नगधैर्यर्माघणन्दि-सैद्धान्तिकराव-
 गमेसेवर्स्सन्-मतिरिं जगदोळ् सामन्त-निम्बदेवन गुरुगळ् ॥

वृ ॥ सन्ततवन्य-चिन्तेगळनोक्कु जिनास्यविनिर्गतागमात्थान्तरचिन्ते-
 योळ् नेरेदु निळदे सिद्धर सद्गुणंगळं चिन्तिसुतिर्प कोळ्गिरदग्गद सन्मुनि
 माघणन्दि-सैद्धान्तिक-चक्रवर्ति जित-मन्मथ-चक्रियेनिपनुर्वियोळ् ॥

वृ ॥ अन्तरिसिर्द जैन-समयक्रोगेदं जिननीगळोर्व्वेनेम्बन्ते जिनव्रतङ्ग-
 लनशेषजनक्कुपदेशमित्तु सामन्तनेनिप्प निम्बनेरगळ् नेगळ्दोप्पुव माघ-
 णन्दि सैद्धान्तिक-चक्रवर्ति जिन-धर्म-सुधाब्धि-सुधांशुवागने ॥ अवर-
 प्रशिष्यरु ॥

क ॥ वादि-विषोरग-ताक्ष्य-क्वार्वादि-महा-गहन-दावदहनर्व्व (र्व्व)
 लवद्-वादीभसिंहरेसेदर्मेदिनीयोळ् कनकणंदिपण्डित-देवर ॥ तत्पर-
 वादीभ-पञ्चाननर स-धर्म्मर ॥ श्रुतकीर्ति-त्रैविद्य-त्र (व्र) तिपर्षट्-तर्क-
 कर्कशर

पर-वादि-प्रतिभा-प्रदीप-प्रवन जिंतदोषर अगळ्दरखिलभुवनान्तर-
 दोळ् ॥ तत्परवादि-शिखरि-शिखर-निर्भेदनोच्चण्डपवि-दण्डर सधर्म्मर ॥

वृ ॥ जित-कुसुमायुधास्त्ररननिन्दितजैनमतप्रसिद्धसाधितहितशास्त्रं
विदळितोन्मद-मान-विमोह-लोभ-भूभृत-कुलिशास्त्रं पदपिनि पोगळ्ळुं
धरे चंद्रकीर्त्ति-पण्डितरनतर्क्य-तार्किक-चतुर्मुखं परवादिशूळरन् ॥
तत्परवादिमस्तकशूळर सधम्मर् ॥

वृ ॥ धृति भूभृतपतियं गमीरवमृताम्भोरपुशियं साले सन्मति वाच-
स्पतियं पळंचलेविनम्मेव्वेत्त सन्मार्ग-सन्ततियिन्दं नेगळ्ळि देशिग-गणा-
धीश-प्रभाचन्द्रपण्डितदेवोज्जळकीर्त्तिमूर्त्ति वडेदादं वत्तिकुं धात्रियोळ् ॥
तन्मुनीश्वरर सधम्मर् ॥

परवादिप्रकर-प्रताप-महिभृत्-प्राप्रोप्र-वज्रगुणा-
भरणर् श्रीवसुधैकबान्धवजिनेन्द्राधीश्वरोत्तुङ्गमं-
दिरदाचार्य्य नगेन्द्र-रुद्र-निभ-धैर्य्यवर्द्धमान-व्रती-
श्वररिन्ती धरेयोळ् नेगळ्ळे-वडेदं त्रैविद्य-विद्याधरर् ॥

यिन्तु नेगळ्ळेगं पोगळ्ळेगमधीश्वरराद वर्धमान-त्रैविद्यदेवरज-
गुरुगळ्ळप्प श्री-माधणन्दि-सैद्धान्तिक-देवरदिव्यश्रीपादपद्मगळ्ळम् ॥

खस्ति समस्तभुवनाश्रयं श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वरं
परमभट्टारकं सत्याश्रयकुळतिळकं चालुक्याभरणं श्रीमद-विक्रम-चक्रवर्त्ति-
त्रिभुवनमल्लदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कता-
रम्बरम् कल्याणपुरद नेलेवीडिनोळ् सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्त-
मिरे तत्पादपद्मोवजीवि ॥ खस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द-महामण्डले-
श्वरं लत्तनूरपुरवराधीश्वरं त्रिवलि-परेघोषणं रङ्गकुलभूषणं सुवर्ण-गरुड-
ध्वजं सिन्धूर-लाज्जनं विवेक-विरिञ्चनं गण्डमण्डलिक-गण्डस्थळ-प्रहारि
देसकारर-देव मूरु-रायरा-स्थान कलि-विरुदर-गण्ड नुडिदन्ते-गण्ड साह-
सोत्तुंग सेननसिंह नामादिसमस्तप्रशस्तिसहितं श्रीमन्महामण्डलेश्वरं

कार्तवीर्य-देवरसं सुख-संकथा-विनोददि राज्यं गेयुत्तमिरल् तदात्रे-
यिम् ॥ स्वस्ति समस्तप्रशस्तिसहितं श्रीमम्मण्डलिकं परबळसाधकं जीमू-
तवाहनान्वयप्रसूतं शौर्य-छुजातं समर-जयोत्सु(तु)ङ्गं रणरत्नसिङ्गं
मयूर-पिच्छ-चञ्चद्-ध्वजं रूप-मकरध्वजं पद्मावतीदेवीलब्धवरप्रसादं
जिनधर्म-केलि-विनोदं भावनं-ककार मण्डलिक-केदार नामादिसमस्तप्रश-
स्तिसहितं श्रीमत् गोङ्ग-देवरसं निज-राजधानियप्प तेरिदाळद मध्य-
प्रदेशदोळ गोङ्ग-जिनालयमं निर्मिसि श्री-नेमि-जिननाथ-प्रतिष्ठेयं राष्ट्रकूटा-
न्वय-शिरः-शिखामणि कार्तवीर्य-महामण्डलेश्वरं मुख्यवागि सद्भक्तियि
शुभदिनमुद्घर्तदोळ माडि तजिनमुनि-प्रधानरप्प देसिग-गण-पोस्तक-
गच्छद श्रीकोण्डकुन्दाचार्यान्यद-कोल्लापुरद श्री-रूपनारायणन बसदि-
याचार्यरुं मण्डलाचार्यरु मेनिप्प श्रीमाघणन्दि-सैद्धान्तिक-देवरं बरिसि
शक-वर्ष १०४५ नेय शुभकृत-संवत्सरद वैशाखद पुण्णमि बृहस्पति-
वारदळ गोङ्ग-जिनालयके पन्निर्व्वर्गावुण्डुगळुमं समस्तपरीवार-
प्रजेगळुमं आ स्थळद सेट्टि-गुत्त-मुख्य-समस्त-नकरङ्गळुमं
बरिसि नेमि-तीर्थेश्वरन बसदिय ऋषियराहारदानकं देवरष्ट्रविधाच्चनेगं
खण्डस्फुटितजीर्णोद्धारकं पेसङ्गोण्डु तन्मुनीश्वर दिव्य-श्री-पाद-पद्म-
गळं दिव्य-तीर्थ-जळङ्गळि तोळेदु शातकुम्भ-कुम्भ-संभृत-जळङ्गळि धारा-
पूर्व्वकं माडि तेरिदाळद पश्चिम-भागदोळ हारुनगेरिय बट्टेयि बडगळ
यिप्पत्तनाल्गेण-कोलळ कोट्ट मत्तरेप्पत्तेरडु देवियण-बावियि तेङ्गळा
कोलळ कोट्ट तोण्ट मत्तरोन्दु अन्तु मत्तर ७२ तोण्ट मत्तर १ अल्लिय
पन्निर्व्वर्गावुण्डुगळुमरुवत्तोळुं हन्नि-धान्यक रासिगेळगे वं बिट्टर
अल्लिय सेट्टिगुत्त-मुख्य-नगरङ्गळ तावु मार-कोण्ड भण्ड माणिक-
पट्ट-सूत्रवादडं होगे वीस लाभायद अडके होगे हन्नोन्दु तावु तेगेद
बि० २८

येकेय हेरिगं अग(!)द (!)न्तरु बत्तिगरु तेगेद हेरिगं नूरेलेविमि-
 जितुवं विट्टर तेळिगरु मान्य-सान्यवेन्नदे देवर संजे-सोडरिगं धूपारितेगं
 माणके सोळगे होरगणि बन्द एण्णेय कोडके सोळगे यिन्तव विट्टर
 गण-कुम्भाररु देवर अष्टविधार्धने आहारदान नडवन्तागि दानशालेगे
 आवगेगळन विट्टर हलसिगे-हनिच्छासिरट्ट ह्वेव्वडेयल् नडेव गात्रिगरु
 देवरिगे अष्टविधार्धने नडवन्तागि हेरिगे नुरु वोळ्ळेलेयं विट्टर ॥

[IA, XIV, p. 14-26 (lines 1-56), t & tr.]

२८१-८२-८३

अवणबेल्लोला—संस्कृत तथा कन्नड

[शक १०४५=११२३ ई०]

(जै० शि० सं० प्र० भा०)

२८४

होसहोळलु—संस्कृत और कन्नड

[बिना कालनिर्देशका, पर संभवतः लगभग ११२५ ई० का]

[होसहोळलु (कृष्णराजपेट परगना)में, पार्श्वनाथ बस्तिके दक्षिणकी ओरके पाषाणपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

भद्रमस्तु जिनशासनाय । खस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द-महामण्ड-
 लेश्वर-द्वारावतीपुरवरावीश्वर-यादवकुलाम्बरद्युमणिसम्यक्त्वचूडामणि मले-
 परोळु गण्डाधनेकनामालङ्कृत.....त्रिभुवनमल्ल तळ्ळाडुगोण्ड
 मुजबळ वीरगङ्ग होयसळ-देव पृथिवि-यराज्य उत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रकर्ष-
 मानमाचन्द्रार्कतारम्बरं सल्लुत्तमिरे गङ्गवाडि-तोम्भसरु-सासिरमनेक-
 च्छत्रच्छायदि पृथ्वी-राज्यं गेयुत्तिरलु तत्पादपद्मोपजीवि । खस्ति समस्त-

मुवनविष्पात पञ्चस(श)तवीरशासनलब्धानेकगुणगणालङ्कृत सप्त-
सौ(शौ)चाचा [र] चारुचारित्र वीर-बलजघर्म्म-प्रतिपालन विभु(शु)व-
गुह-ध्वज-विराजिताम्बरं साहसोत्तुङ्ग चलदङ्कराम साहसमीमं दीनानाथ-
धुधजन-कल्पवृक्षनुमण्य चवुण्डादि-द्वितीय-नामधेय-दोरसमुद्रपट्टम-स्वामि
पोटपळ-सेट्टियराद नो [ळ] बि-सेट्टि श्री-शुभचन्द्र-सिद्धान्त-
देवर गुडन् आप्रभुविन मनो-नयन-वल्लभे जिन-गन्धोदक-पवित्री-
कृतोत्तमाङ्गेयुं आहाराभय-भैषज्य-शास्त्र-दान-विनोदेयरुमण्य देमिकन्बे-
सेट्टियु मेदिनीदेवर ।

वृत्त ॥ मरु निरतमरेंगे वदन-तेजमनोत्ति.....।

स्तरमनु.....।

.....।

.....नोळबि-सेट्टिय ॥

कन्द ॥.....देमाग्बिकेय । उत्तमनेने सकळ-जनम् ।

.....न ॥

आप्त-चवुण्डादि-नामधेय.....देमिकन्बेयुं त्रिकूटजिनालयं
माडिसि श्रीमूलसङ्घद देसिग-गणद पोस्तक-गच्छद श्रीकोण्डकुन्दान्वयद
श्री-कुक्कुटासन-मलधारिदेवर शिष्यरूप तम्न गुरुगलु श्री-शुभचन्द्र-
सिद्धान्तदेवर्गे कोट्ट बसदिगे अर्हन्हक्लियुं बसदिय बडगलुं तेङ्गलुं
नट्ट कल्लु मेरेयागि मूड केरें-वरं परिदे केरियुं मरे नडुवण-दान-सालेय
मनेयुं एरडु-गाणमुं एरडु तोष्टमुं...बेडु-नायक[न] मग गण्ड-
नारायण-सेट्टि कत्तरि घट्टद भूमियोळगे कणिय-समीपद कडवद कोळ्द
केरे एरडुं आ-केरेंय-मूडण-कोडिधिं परिद पळ्ळिं तेङ्गलु-पडुवलाद
गई बेडलेयुं बिट्टन्तिनितुम् ...शुभचन्द्र-सिद्धान्त-देवर्गे धारा-

पूर्वका माडि सर्व्वनमस्यवाणि नोळबि-सेट्टियरु कोट्ट.....श्री-मूलसंघद पुस्तक-गच्छदवर्गेल्लरु साम्यमिल्ल इन्त् ई-धम्म्व (हमेशाकी तरह अनन्तम ब्रह्मावली और श्लोक)

[जिनशासनकी प्रशंसा । जिस समय वीरगङ्ग-होयसल-देव इस पृथ्वीपर राज्य कर रहे थे उस समय उनके पादपद्मोपजीवी, शुभचन्द्र-सिद्धान्त-देवके गृहस्थ शिष्य नोळबि-सेट्टि नामक पोयसल-सेट्टि थे । देमिकब्बे सेट्टिने त्रिकूट-जिनालय बनवाकर इसके खर्चेके लिये दानमें अर्हन्हल्लि गौब दिया; इसीके साथ एक उत्तम तालाब, जिसके बीचमें दानशाला भी ऐसी एक गली या सड़क, दो तेलकी चकियाँ और दो बगीचे भी दिये । यह जिनालय उन्होंने मूलसंघ, देसिंग-गण, पोस्तकगच्छ और कोण्ड-कुन्दान्वय कुक्कुटासन मलधारिदेवके शिष्य और अपने गुरु शुभचन्द्रसिद्धान्त देवको समर्पित कर दिया । बेट्ट नायकके पुत्र गण्ड-नारायण-सेट्टिने निर्दिष्ट दूसरी जमीन दी । यह सब दान नोळबि-सेट्टिने शुभचन्द्र-सिद्धान्तदेव के स्वीकृत कर दिया । और मूलसंघके पोस्तक-गच्छका जो कुछ था, उस सभीको चुंगी और करसे मुक्त कर दिया ।]

[EC, IV, Krishnarajapet tl., n° 3]

२८५

श्रवणबेलगोला—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०४५=११२३ ई०]

(जै० शि० सं०, प्र० भा०)

२८६

हिरे-आवलि—कन्नड़

[विक्रमचालुक्यका ४९ वाँ वर्ष ?=११२४ ई०]

[हिरे-आवलिमें, रामलिङ्ग मन्दिरके सामने पड़े हुए पत्थरपर]

स्वस्ति श्रीमतु विक्रम-वर्षद ४ [] नेय साधा [रण]-सं-
वत्सरद माघ-शुद्ध ५ वृ०-वारदन्दु श्रीमन्मूल-संघद सेन-गणद

पोगरि-गच्छद चन्द्रप्रभ-सिद्धान्त-देव-शिष्यरूप माधवसेन-महा-
रक-देवरु

मनदिं जिनन पदङ्गळोळ ।

अनुनयदिं निरिसि पञ्च-पदमं नेनेयुत्तं ।

अनुपम-समाधि-विधियिम् ।

मुनि माघ.....पडेदम् ॥

[स्वस्ति । (उक्त मितिको), मूल-संघ, सेन-गण और पोगरिगच्छके
चन्द्रप्रभ-सिद्धान्त-देवके शिष्य माधवसेन-महारक-देव जिन-चरणोंका मनन
करके, पञ्च-परमेष्ठिका स्मरण करके, समाधि-मरण धारण करके स्वर्गको
गये ।]

[EC, VIII, Sorab tl., n° 127]

२८७

चह्ल(ल्य)—कन्नड़

[शक १०४७=११२५ ई०]

(जै० शि० सं०, प्र० भा०)

२८८

सावनूर—कन्नड़

[वर्ष ११२८ ई० (ल. राइस) ।]

[सावनूरमें, मारि-कट्टेके दक्षिणमें पड़े हुए एक पाषाणपर]

भद्रं भूयाज्जिनेन्द्राणां शासनायाधनाशिने ।

कु-स्तीर्थ-ध्वान्त-संघात-प्रभिन्न-धन-भानवे ॥

श्रीमत-परम-गम्भीर-स्याद्वादाभोधलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-सुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ-महाराजाधिराज-परमेश्वर-
परमभट्टारक सत्याश्रय-कुळ-तिळक चालुक्याभरण श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल-
पेम्माडि-देवर विजय-राज्यमुत्तरोत्तराभिबुद्धि-प्रवर्द्धमानमा-चन्द्रार्क-ता-
रम्बरं सलुत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि ॥

वृत्त ॥ वनधि-व्याप्तावनी-चक्रदोळति-सुभटं विक्रमायत्त-चित्तम् ।
मुनिसिं माराम्पनावं त्रिपुर-विजयिगं शूद्रकङ्गं सुपण्णी- ।
तनयङ्गं फल्गुणङ्गं दशरथ-तनुजङ्गं सहस्रार्जुनङ्गम् ।
दनुजप्रध्वंसिगं कौरव-नृप-रिपुगं पाण्ड्य-भूपालकङ्गम् ॥
भरदिन्दङ्ग-कलिङ्ग-वङ्ग-मगधं नेपाळ-पाञ्चाळ-गुर- ।
ज्जर-गौळ-द्रविळान्ध्र-माळव-तुरुष्का.....सौराष्ट्र-वर- ।
व्वर-काश्मीर.....मरोत्- ।
करमं वेङ्गोलुवं भयङ्क.....णं पाण्ड्य-भूपालकम् ॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरं काञ्ची-पुर-वरा-
वीश्वरं यदुवंशाम्बर-शुमणि सु-भट-चूडामणि निज-कुळ-कमळ-मार्त्तण्डं
परिच्छेदि-गण्डं राजिग-चोळ-मनो-भङ्गं श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल-देव-पादाब्ज-
शृङ्गं नामादि-प्रशस्ति-सहितं.....भुवन.....दक्षिण-भुजा-दण्डने-
निसि ॥

वृत्त ॥ सततं धर्मिये धर्मजं.....ळा- ।
चित्तने हुं कमळोद्भवं पर-हित-व्यापार.....भू-तळ- ।
स्तुत-विद्याधर.....सत्य-सङ्- ।
गतने भास्कर-सूनु विक्र.....नं श्री-सूर्य-दण्डाधिपम् ॥
प्रमु-मन्त्रोत्साह-शक्ति-त्रय-गुण-भरितं मान-सन्मान-दान- ।
.....नाराधकं नित्य-लक्ष्मी- ।

प्रसु-शौचाचार-सारं.....बळ-विळसत्-पाण्ड्य..... ।

.....सूर्य-दण्डाधिनाथम् ॥

.....अनवरत-विनुत-सुर-नर.....घटित-पद-कमल-युगल श्रीमदीश्वर-
पादाराधक विरोधि-निकुरुम्ब.....गण्ड पाण्ड्य-मण्डलिकसभा-
 मण्डन प्रचण्ड-दण्डनाथ.....विराजमान सतत-सं.....नाभिमान.....
मञ्जोत्साह-शक्ति-त्रय-गुण-गण.....त नियोगयौगन्धर निखिल-धर्म-
 धारण.....पाळ-मस्तक-खण्डन-प्रचण्ड-दोर-दण्ड पाण्ड्य-मण्डलिक-
 दक्षिण.....गर्ग्वपर्वतरूढनि ऊढ-प्रौढ-नितम्बिनी-निकुरुम्ब-
 दिव्य.....श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल परिच्छेदि-गण्ड पाण्ड्य-मण्डलिक.....
 शरणागतवज्र-पञ्जर । मृदु-मधुर.....दार-हित.....सतत.....
 दण्डनाथ-कुळ-कमलिनी-विकासन-सहस्रकिरण । वन्दि-जन-भरण.....
तन्नि सूर्य-दण्डाधिनाथम् ॥

के ॥ आळापदिन्दे पाण्ड्य-नृ- ।

पाळङ्गेरगद विरोधि-नृप..... ।

.....सि पद-नतरं प्रति- ।

पाळिसिद सु-भट.....दण्डाधीशम् ॥

.....जिन-स्तवन.....सम्पू.....पवित्रोत्तमाङ्ग.....दरदि मुक्त
यिनुरुतर-वज्र.....करतळ-रुचियिन्दोपुत...नर्त्यदि भास्वर-कान्ता-
 रत्नमे..... ॥

कं ॥ मण्डलिय.....दडे.....केषेयेळु.....डगलेनरे

..... ॥

व ॥ दोरे मरु देवी.....ताम् ।

सारि नुत-लक्ष्मि तत्-सदृशमा-प्रियकारिणि देवियेन्दोडी-

धरेय.....काळियकनोळ् ।

वर-गुण-वार्द्धियोळ् मुनि-जन-प्रिय दान-विनोद-चित्तेयोळ् ॥

पडेदर्थं कळ्ळरिं दायिगरिमळिपरिं भूपरिं किञ्चिनिन्दम् ।

किडुगं तानन्तदेम् शाश्वतमेनि.....शाश्वतं मर्षेनेन्दा- ।

गडे पूर्णिङ्ग पूर्ण-चन्द्रानने जिनपूति-सद्-गोहमं सेम्बनूरोळ् ।

कडु-रस्यं तानेनल् माडिसिदळधिक-सद्-भक्तिरिं काळियकम् ॥

स्वस्ति समस्तबन्तुविस्तार-गोचर.....जगान-जिनेश्वर-चरण-सर-
सिरुहमधुकरोपमान-कुटिल-कुन्तळ-कळापे मृदु-मिधुर-सतत-सत्य-वचना-
लापे । शृङ्गार विरचित.....जन्मभूत.....मान-सूर्य्य-दण्डाधिनाय-
विशाल-वक्षस्-स्थळस्थित-लक्ष्मी.....ने सम्मान-दाने तार-हार-हर-
हासा.....शशि-विशद-कीर्त्तिविराजित-प्रवर्द्धमान-गुणवति पद्मावती-देवी-
लब्ध-वर-प्रसादे जिन-पूजा-विनोदे धवळ-विशाळ-कुसुद-नेत्रे गोत्र-पवित्रे
निश्शंकादि-गुण-मणि-गण-विराजिते सम्यक्त्व-रत्नाकरे पञ्चाणुव्रत-गुणाकरे
सकळ-विनेय-जन-चिन्तामणि वनिता-निकर-चूडामणि नामादि-प्रशस्ति-
सहितेयप्प श्री-सूर्य्य-दण्डनायकन पिरिय-दण्डनायकित्ति काळियकम् ॥

वृ ॥ जिन-धर्मं प्राणि.....र्मं तनगदु कुल-धर्मं जिन-स्वामि देव्वम् ।

जनकं मिक्काय्तवर्मं जननि तनगे जक्कव्वे भव्यक्कळेन्दुम् ।

तनगास्रं तन्न त.....गुणि कलि-देवं लसत्-शौर्य्य-धैर्य्यं ।

तनगीशं सूर्य्य-दण्डाधिपनेने तळेदळ् कीर्त्तियं काळियकम् ॥

सूर्य्य-चमूपन तम्मम् ।

धैर्य्य-महा-मेरु वैरि-जन-लय.....वत्त- ।

चौर्य्यं स्वामि-प्रिय-कर- ।

कार्य्यं दण्डाधिनाथनादित्याख्यम् ॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-सामन्ताधिपति महाप्रचण्ड-
दण्डनायक चालुक्य-विक्रमादित्य-देव-समानार्थ्य-वस्तुनायक प्रभु-
मन्त्रोत्साह-शक्ति-गुण-मणि-गणालङ्कृत-शरीर । भय-लोभ.....त्रिशुवन-
मह्य-पेम्माडि-देवदक्षिण-भुजा-दण्ड रिपु-काळ-दण्ड । प्रसिद्ध-सेनवर-
दण्डनाथ-प्रिय-पुत्र चारु-चरित्र । सतत-धार्मिक-धर्मनन्दन । स्वामि-
प्रिय-मरुन्नन्दन । हर-चरण-कमल****सळ-सततानत-मधुकर । सकळ-
गुणाकर । समप्र-वैरि-कुळ-कुधर-कुळिश-दण्ड । समर-प्रचण्ड । दुर्द्धर-
दुर्विनीत-दण्डनाथ-वंश-वन-कुठार । सङ्ग्राम-धीर****आयदा-चार्य्य
मन्दर-धैर्य्य आन्ध्री-नीरन्ध्र-कुच-कळश-दर्पण वन्दि-सन्तर्पण कुन्तली-
कुन्तळ-सुवर्ण-कुसुमाभरण अनिन्दिताचरण पुरुषार्थ-स्वार्थीकृत-जीमूत-
वाहन मान-विळसद्भन सतत-दान-सन्तर्पित-दीनानाथ-यूथ नामादि-
प्रशस्ति-सहितं श्रीमदादित्य-दण्डाधिनाथम् ॥

प्रभु-मन्त्रोत्साह-शक्ति-त्रय-गुण-गणदोळ् सन्तैश्वर्य्यदोळ् सू-
क्त-भवोद्यद्-भक्तियोळ् सद-विनय-नय-सदाचारदोळ् चित्तभूसन्-
निभ-भद्राकारदोळ् तद्-वितरण-गुणदोळ् धार्मिक-स्वान्तदोळ् सत्-
प्रभवर्षेळ्छन्नरारेम्बिनमेसेदपनादित्य-दण्डाधिनाथम् ॥

श्रीमद्-द्रविळ-संघेऽस्मिन् नन्दि-संघेऽस्त्यरुळ्ळः ।

अन्वयो भाति योऽशेष-शास्त्र-वारासि-पारगैः ॥

अवदु-त्तटमटति झटिति स्फुट-पटु-वाचाट-धूर्जटेरपि जिह्वा ।

वादिनि समन्तभद्रे स्थितवति तव सदसि भूप कास्थान्येषाम् ॥

इत्तेनिसिद समन्तभद्रस्वामिगळ सन्तानदोळ् ॥

एकत्र गुणिनस्सर्व्वे वादिराज त्वमेकतः ।

तस्यैव गौरवं तस्य तुळायामुन्नतिः कथम् ॥

अवर शिष्यरु ॥

इन्दोश्च कान्तमति-विस्तृतमम्बराच्च
भूमेश्च भूरि जळधेश्च गभीरमास्ते ।
मेरोश्च तुङ्गमजितेश यशस्तवोर्व्याम्
मत्तेभ-विम्बमिव मानव-तारकेऽद्य ॥

इन्तेनिसिदजितसेन-भट्टारकरप्र-शिष्यरु ॥

घन-बद्ध-क्रोध-धात्रीधर-कुळ-कुळिशं मान-माद्यद्-गजास्फा-
लन-भद्रेभारि माया-गहन-दहन-दावानलं संस्फुरल्लो- ।
भ-नितान्त-ध्वान्त-विध्वंसन-खर-किरणं श्राव्य-काव्य-प्रियं भ-
व्य-निकायाम्भोधि-संवर्द्धन-हिमकरणं मल्लिषेण-व्रतीन्द्रम् ॥

एने नेगळ्द मल्लिषेण-मलधारि-देवर शिष्यरु ॥

आळापं बेड नैय्यायिक निज-मतमं नच्चदिस् स्तांख्य माण् वा- ।
चाळत्वं सल्ल मीमांसक तोडरदेले बौद्ध पो पोगु वादि- ।
व्याळेभोत्तुंग-कुम्भ-स्थळ विदळन-कण्ठीरवं बन्दपं श्री- ।

पाळ-त्रैविद्य-देवं जिन-समय-सुधाम्भोधि-सम्पूर्णचन्द्रम् ॥

खस्ति श्रीमच्छालुक्य-विक्रम-कालद् ५३ य कीलक-संवत्सर-
दुत्तरायण-संक्रमणदन्दु श्रीमत्-सेम्बनूर स्तानाचार्य्य शान्तिश्रयन-
पण्डितर कय्यल्लु श्रीमत्-पिरिय-दण्डनायकिति काल्किव्हेगल्लु धारा-
पूर्वकं माडिसि कोण्डु पार्श्व-देवर कूटकं देवर बि....पूजारिय बियकं
हलकट्ट केळगे विट्ट गदे कम्म ४५० आ-केरेय हड्डवण-कोडियोळगे
बेळ्दले मत्त १ इन्ती-धम्ममना रोर्व्वरल्लिय स्थानाचार्य्यरुं देवगुत्तरुं....
निर्व्वरुं बेस-वक्कळुं तप्पदे प्रतिपालिसुवरु मत्तं स्थानि...केरेय केळगण

गर्हेयुं अदर बळसि वेदलेयुम्.....में प्रतिपा (शेष पदे जानेके योग्य नहीं है) ।

[EC, XI, Davangere tl., n° 90]

[जिनशासनकी प्रशंसा । स्वस्ति । जब, (उन्हीं चालुक्य उपाधियों सहित), त्रिभुवनमल्ल-पेम्माडि-देवका विजयी राज्य प्रवर्द्धमान था तब तत्पादपशोपजीवी राजा पाण्ड्य था । पृथ्वीपर उसका सामना करनेवाला कोई भी न था । उसने शिव (त्रिपुर), शूद्रक, गरुड, अर्जुन (काश्यप), राम, सहस्रार्जुन, कृष्ण, भीम, इन सबको जीता था ।

उसका दण्डाधिप सूर्य यादव-वंशका सूर्य और राजगि-बोळके प्रयत्नोंका विफल करनेवाला था । उसकी पत्नी कालियके थी । जो धन चोरों, सगे-सम्बन्धियों, लोभियों, राजाओं, या अग्निसे नष्ट किया जा सकता है, उसकी प्राप्तिमें क्या स्थिरता है, इसलिपु उसने उसकी स्थिरताके लिये सम्बनूरमें जिनपतिका एक उत्तम मन्दिर बनवाया । उसकी प्रशंसा । कालियकेके पिता आश्वत्थामा, माँ अकम्बे,.....कलि-देव ये ।

सूर्य-चमूकका छोटा भाई आदित्य-दण्डाधिनाथ था । उसकी प्रशंसा । त्रिविण-संघके नन्दि-संघमें अरुणलान्यय चमकता है । उसमें समन्तभद्र, वादिराज, उनके शिष्य अजितेश (अजितसेन-भट्टारक) उनके ज्येष्ठ शिष्य मल्लिषेण-मल्लधारी, उनके शिष्य श्रीपाल-त्रैविद्य-देव हुए । प्रत्येकका एक-एक श्लोकमें गुणवर्णन ।

(उक्त मितिको), सम्बनूरके मन्दिर-पुरोहित शान्तीशयन-पण्डितके हाथोंमें, ज्येष्ठ दण्डनायकित कालियकम्बेने जलधारापूर्वक पार्श्वदेव और उनकी पूजा तथा पुजारीकी आजीविकाके लिये (उक्त) भूमिदान किया । कल्याणकामना और शाप]

२८९-९०

श्रवणबेदगोला—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०५०=११२९ ई० (फील्डर्न)]

(जै० शि० सं०, प्र० भा०)

२९१

ऊद्रि—कवड

[विक्रम वर्ष कीलक ११२९ ई० (छ. राहस) ।]

[ऊद्रिमें चौथे पाषाणपर]

स्वस्ति श्रीमद्-विक्रम वर्षद कीलक संवत्सरद माग (घ)-शुद्ध
१३ श्रीमन्महामण्डलेश्वरं एकलरस-देवरुद्रेयोळ् सुख-संकथा-विनो-
ददिं राज्यं गेयुत्तिरे ॥

परम-जिनेश्वरं तनगधीश्वरनुद्धलसच्चरित्र.....।

गुरु हरिण[न्दि]देव-मुनिपोत्तमनगद दण्डनायकम् ।

वर-गुणि-बोप्पणं जनकनुजत-शीलद नागियक्क मा-।

तरेयेनलेम् कृतात्थनो धरित्रिगे सिंगण-दण्डनायकम् ॥

गुणद कणि जैन-चूडा-।

मणि वैरि-बलक्के समर-मुखदोळ् सुभटा-।

प्रणि जिन-पदङ्गळं सिङ्ग-।

गण-दण्डाधिपति नेनेदु सद्-गति-वेत्तम् ॥

[स्वस्ति । (उक्त मितिको), जिस समय महा-मण्डलेश्वर एकलरस-देव, शान्ति और बुद्धिमत्तासे राज्य करते हुए उद्धरेमें विराजमान थे उस समय सिंगण दण्डनायक था । वह बड़ा भाग्यशाली था, क्योंकि उसके परम-जिनेश्वर अधीश्वर (इष्ट देव) थे, हरिनन्दि-देव-मुनि उसके गुरु, महान् दण्डनायक बोप्पण उसके पिता, और नागियक्क उसकी माता थी । यह दण्डनायक अपने समयका जैन-चूडामणि था, समरमें सामना करनेवाले सुभटोंमें अग्रणी था,—जिनपदोंका ध्यान करते हुए उसको सद्गति मिली थी ।]

२९२

हनुशीकट्टि (जिला नेलगॉव)—कच्छ

[शक १०५२=११३० ई० (झीट)]

- [१] खस्ति श्रीमद्-भूलोकमल्लदेवर वर्ष ६ नेय सावा
(धा)रण संव-
- [२] त्सरद फाल्गुन शु ५ आदिवारदन्दु श्रीमन्महामं-
- [३] डलेश्वरं मारसिंहदेवरसरु अप्रहारं कोडन-पूर्व-
- [४] दवल्लिय माणिक्यदेवर बसदिय सम्बन्धियेकसा-
- [५] लेय-पार्श्वनाथदेवर विविधपूजाविधानके बिह
- [६] गदेय सीमेय गुडे [॥] मङ्गलश्री [॥]

[मंगल हो । रविवार, साधारण 'संवत्सर' जो कि श्रीमान् भूलोकमल्ल-
देवका छठा साल था, फाल्गुन शुक्ला पञ्चमीको,—महामण्डलेश्वर मार-
सिंहदेवरसने कोडनपूर्वदवल्लि (गॉव) के माणिक्यदेव (देवता) की
बसदि (मन्दिर) के एकसालेय-पार्श्वनाथदेव (भगवन्त) की अनेकविध
रीतियोंकी पूर्तिके लिखे धान्य (चावल) के बहुतसे क्षेत्र दिये ।]

[इ० ए०, १०, पृ० १३१-१३२, नं० ९८]

२९३

हन्तूरु—संस्कृत तथा कच्छ

[शक १०५२=११३० ई०]

[हन्तूरु (गोणी वीडु परगना) में, ध्वस्त जैन-बस्तिके पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

१ भूलोकमल्लका दूसरा नाम सोमेश्वर तृतीय भी है । वह राजा पश्चिमी
चालुक्य वंशका है ।

जयति सकलविद्यादेवतारत्नपीठम्

हृदयमनुपलेपं यस्य दीर्घं स देवः ।

जयति तदनु शास्त्रं तस्य यत् सब्व-मिथ्या- ।

समय-तिमिर-वाति ज्योतिरेकं नराणाम् ॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरं द्वारावतीपुर-
वराधीश्वरं यदु-कुल-कलश-कलित-नृप-धर्म-हर्म्यमूल-स्तम्भन् । अप्र-
तिहत-प्रताप-विदित-विजयारम्भ । शशकपुर-निवास-वासन्तिका-देवी-
लब्ध-वर-प्रसाद । श्रीमन्मुकुन्द-पादारविन्द-वन्दन-विनोदनित्यादि-नामा-
वलीसमन्वितरूप श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल तलकाडु-गोण्ड भुजबल वीर-गङ्गा-
विष्णुवर्द्धन-होयसल-देवरु मूडल नंगलियघट तेङ्गल कोङ्ग चेरमनमले
हडुवल बारकनूर घट बडगल साविमलेयिनोळगाद भूमियं भुज-बळाव-
ष्टम्भदिं परिपाळिसुत्तुं दोरसमुद्रद नेलेवीडिनोळु सुख-संकथा-विनोददिं
राज्यं गेय्युत्तमिरे ।

वृत्तं ॥ प्रकटाटोपद चक्रगोडुदोडेयं सोमेश्वरं बल्के त- ।

न कराळासिय कूर्पनेम्मेरदनो गौडान्धकार-प्रचरण- ।

डकरं मालव-मेव-जाळ-पवनं चोळोप्रकाळानळम् ।

त्रि-कळिङ्ग-त्रिपुर-त्रिणेत्रनदटं श्री-विष्णु-भूपालकम् ॥

इन्तेनिसि नेगर्द श्री-विष्णुवर्द्धन-अप्र-तनूज निज-वंशाम्बर-धमणि ।
वन्दि-जन-चिन्तामणि । सत्य-शौचाचार-सम्पन्न । बुध-जन-मनःप्रस-
न्नन् । आळिम्मुनिरिव सौर्यमं मेरेव । श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल कुमार-
बल्लाल-देवननवरत-मनोरथावासिथि राज्यं गेय्युत्तमिरे ।

क ॥ कळके बयलुगेक्क तुळक्क । एळेयोळ् माराम्परिल्लदा-दिगधि-परम् ।

शेळदु नेलक्किळ कौ- । वळिपुदु रिपु-नृप-कुमार-भैरवन मन ॥

आवङ्गमाव-धनमुम- । नीव महा-दानि युद्ध-विजयमना-मा- ।

देवङ्गमीयददटर । देवं बह्माल-देवनप्रतिम-बल ॥

अन्तेनिसि नेगर्द श्रीमत्कुमार-बह्माल-देवनप्रानुजे हरियब्बरसिये-
न्तप्पळेन्दडे सरस्वतियेन्ते सत्-कळान्विते । सीतेयन्ते विनीते । सुसीमा-
देवियन्ते सुशीले रुग्मिणियन्ते गुणाग्रणि । अनल्प-कल्प-शाखानीकद-
न्तनून-दान-जनित-जन-मनःपुळकेयुं । भगवदहत्-परमेश्वर-चरण-नख-म-
यूख-लेखा-विळसित-ललाट-पळकेयुम् । चातुर्वर्ण्य-वर्णितागण्य-पुण्य-
जन-शिखा-मणियुम् । सम्यक्त्व-चूडामणियुमेनिसि ।

वृत्त ॥ धरेयोळनन्त-दिव्य-यति-सन्ततिगन्नमनाद-भीतियिम् ।

वरे पलरञ्जलेम्बभय-वाक्यमनातुररागि बेर्ण्यवर्गम् ।

इरदे शरीर-रक्षणमनोदल्ल शास्त्रमनीव पेम्पिनिम् ।

हरियवे ताळ्दिदळ् पर-हितोक्त-चतुर्विध-दान-शक्तियम् ॥

पर-बळ-दानव-संहा- । रारुण जळ-लिप्त-स्वर्गानुन्नततेजम् ।

वर-विबुध-विभव-विभवं । हरि- कान्ता- कान्तनेसदपं विभुसिंग ॥

हरि-कान्तेयुमी-कान्तेय । दोरेगे वरल् कोरळेम्ब निम्मदद गुणोत्-

करमनोळकोण्डु हरियबे । पर-हितदिं धरेयोळैदे जसमं तळेदळ् ॥

अन्तेनिसि नेगर्द श्रीमतु-हरियल-देवियर गुरुगळेन्तप्परेन्दडे
श्रीमूलसंघद कोण्डकुन्दान्वयद देसिग-गणद पुस्तक-गच्छद श्री माध-
गन्दि-सिद्धान्त-देवर शिष्यरु ।

वृ ॥ मोहान्धकार-रिपु-शाक्य-नवोत्पळारिश् ।

चार्वाक-चन्द्र-किरण-प्रतिनाश-हेतुस् ।

सद्-भव्य-वारिज-महोत्सव-तेज-राजिर ।

उजृम्भितो जगति गण्डविमुक्त-भानुः ॥

अन्तु जगद्विख्यातरप्प श्रीमत्-गण्डविमुक्त-सिद्धान्त-देवर गुड्डि हरियब्बरसियरु कोडङ्गि-नाड मलेवडिय हन्तियूरलनेक-रत्न-खचित-रुचिर-मणि-कळश-कळित-कूट-कोटि-घटितमप्प उत्तुंगचैत्थालयमं माडिसि खण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धरणक्क नित्य-पूजेगं ऋषियरज्जियर्क्कळाहार-दानक्कं सित-परिहारक्कं श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल-होयसळ-देवर कय्यळु सव्वे-बाधा-परिहारवागि गुत्तिय चिण्णन दीवर बम्मनन्तिव्वरय्दु हणविन मण्णुमं बिडिसिकोण्डु शक-वर्षद १०५२ नेय सौम्य-संवत्सर दुत्तरायणसंक्रान्तियन्दु तम्म गुरुगळप्प गण्डविमुक्त-सिद्धान्त-देवर कालं कच्चिं धारा-पूर्वक्कं माडि कोट्टरु ॥ (हमेशाके अन्तिम श्लोक)

श्रीमन्-मल्लिनाथं विरुद-लेखक-मदन-म्महेश्वरं वरेदम् । नागरादि-नागरिक-द्रविळ-समुद्धरणनप्प माणिमोजन मगं विरुदरूवारि-वेश्या-भुजङ्ग बलकोजं कण्डरिसिदं मङ्गलम् ॥

[जिनशासनकी प्रशंसा । (अपने पदों सहित) विष्णुवर्द्धन-होयसळ-देव अपने निवासस्थान दोरसमुद्रमें विराजमान थे । राजा विष्णुने चक्रगोष्ठके स्वामी सोमेश्वरको अपनी तलवारकी धारसे डराया । वह गौड, मालव, चोळ, त्रिपुट, त्रि-कलिंग सबके लिये भयावह था । जब विष्णुवर्द्धनका ज्येष्ठ पुत्र श्रीमत् त्रिभुवनमल्ल कुमार बल्लालदेव राज्य कर रहा था:- (उसकी शूरवीरता और औदार्यकी प्रशंसा करते हुए उसकी स्तुति) । कुमार-बल्लाल-देवकी बहिनोंमें सबसे बड़ी हरियब्बरसि थी । उसका वर्णन:- (जैन रूपमें उसकी भक्तिका प्रदर्शन, उसकी प्रशंसा) । उसका पति सिंग था; (उसकी प्रशंसा) ।

उस हरियब्बर-देवीके गुरु श्री-मूलसंघ, कुन्दकुन्दान्वय, देसिग-गण तथा पुस्तक-गच्छके माघनन्दि-सिद्धान्तदेवके शिष्य गण्डविमुक्त-सिद्धान्तदेव थे; (उनकी प्रशंसा)

जगद्विख्यात गण्डविमुक्त-सिद्धान्त-देवकी गृहस्थ-शिष्या हरियब्बरसिने, कोडङ्गि-नाडके मलेवडिके हन्तियूरमें, गोपुरों या शिखरोंसे—जिनमें रत्नोंसे

अद्वित चोटियाँ थीं—समन्वित एक विशाल चैत्यालय, तथा मन्दिरकी मरम्मत करने, पूजाका प्रबन्ध करने, नवि और बृद्ध स्त्रियोंको आहारदाग देने, तथा शीतसे रक्षा करनेके लिये—त्रिभुवनमल्ल होटल-देवके हाथोंसे तमाम बुद्धियों व करोंसे मुक्त भूमि गुप्तिके विज और बम्म मल्लुएसे ५ हणके किरायेसे लेकर (उक्त मितिको), अपने गुरु गण्डविमुक्त-सिद्धान्त-देवके पैरोंका प्रक्षालन करके उन्हें दी । (हमेसाके अन्तिम श्लोक)

मल्लिनाथने इसे लिखा और माणिसोजके पुत्र बल्लकोजने उत्कीर्ण किया ।]

[EC, VI, Mudgere tl., n° 22]

२९४

कम्बदहल्लिका—कन्नड़-भग्न

[बिना काल-निर्देशका, पर सम्भवतः लगभग ११३० ई०]

[कम्बदहल्लिके, जैन बस्तिके सामनेके पाषाणपर]

स्वस्ति यम-नियम-स्वाध्याय-ध्यान-धारण-मौनानुष्ठान-जप-समाधि-
शील-गुण-सम्पन्नरूप श्री-मूलसंघद कोण्डकुन्दान्वयद देशिय-
गणद पुस्तक-गच्छद श्री-प्रभाचन्द्रसैद्धान्तिकर शिष्यितियरूप....
.....कय रुकमन्वे जकवे कन्तियग्गे तव.....निसिधिय माडिसि
.....स्वर्गस्थर.....

[(सर्वसाधुगुणसम्पन्न) प्रभाचन्द्र-सैद्धान्तिककी शिष्याएँ रुकमन्वे और जकम्बे-कान्तियरकी स्मृतिमेंस्मारक बनवाया ।]

[EC, IV, Nagamangala tl., n° 21]

२९५

तगदुरा—कन्नड़

[बिना कालनिर्देशका]

(जे० सि० सं०, प्र० भा०)

२२६

श्रवणवेस्गोला—कच्छ

[बिना कालनिर्देशका]

(जै० शि० सं०, प्र० भा०)

२९७

आबरुवाडी—कच्छ-भक्ष

[शक सं० १०५३ (?) = ११३१ ई०]

[आबरुवाडी (कोण्य तालुका) में, सीमाकी दीवालके पास]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

खस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वरं द्वारावतीपुर-वरा-
 धीश्वरं दसकाष्ठनिवास वासन्तिका-देवि-लब्ध-वर-प्रसाद दशदिश.....
 तिलक कि.....कुन्दपादा.....तमन्द म.....करन्द नन्द.....रपा-
 ल्मायि.....क्यं अरि-भीमज रिपु.....ञ्जर.....लु गण्डं विश्व-विद्या-
 विचार.....दला.....मदि समस्त.....गवाडि
 नोणम्बवाडि गोण्ड.....वीरगङ्गा.....वित्र.....यिसळ विष्णुवर्द्धन
दुष्टनिग्रहशिष्ट-प्र.....सु.....दोळे.....के जवर.....
विष्णु.....तारम्बरदोळु.....रण.....लु मल्लिनाथ ॥ आतन
 समस्तभुवनख्याति.....गोत्र.....ळर सूत्र.....
 मारसमन्वित.....निरु.....गोत्र.....चूडा..... ॥ तत्पा.....
परम-ज.....धर्म.....भीमं ॥रङ्ग.....माचिकेय
 धर्म.....य बं.....पाद.....
न्द-जन.....नरुळ.....गरगं ॥यना.....जात
गेने पुण्य.....ळिगळु श्री तरव.....प्राप्तं सि.....साधराणि तत्

स...म...श्री मूलसंघ देशियभणद पुस्तक-गच्छद सि...द्वान्त-
चक्रवर्ति दर्भर्ण...तार-देवर सधर्भरप श्री...द्र-सिद्धान्त-देवर सि-
ध्यरु ॥ राम...जदि-पुर-गत धूत-कषायर अतुल-रत्नत्रय-स...
तदोळु श्रीमन्नयकीर्ति-भानुकीर्ति-मुनीन्द्र ॥ सतिय...कषोक्ष-बा
...हतिर्य अदनोन्दु हृदयदळिप् सिगळ...लेम्बुदे नयकीर्ति-व्रतिना-
थनोळु अतनु...दावानळनोळु ॥ विनुत...रुडकादान्वित विमल-
वियत्-तिग्म-रुग्-मण्डलं ब्रज...मेनिव अनिव आतळरु...नकरं
प्रस्फुरदर्प...डप्पन कोट्यज् ज...प्रहरणन् उपमानित-पुण्य...चा
...णिक...ति पतिने विश्वविद्यानिदानम् ॥ अरित-त्रातमुमतिशान्ततेयुं
...र-कारनुव त्रात-किरणनुमूर्जि...दोळेसेवन्तिरेसगुं श्रुत-सरसिज-
भानु-भा...कीर्ति-व्रतियोळु ॥ आ-मुनि-मुख्यस्य यम...ड तन स
गरुगळे...रेया...हियाद...ळ गुण-शीळ-व्रत-निधि मल्लिनाथनोळु
मनुज...सि पोगर्ते नेगर्ते...पेगर्गडे मल्लिनाथ...सदियं माडिसि
शक-वर्ष १...३ नेय साधारण-संवत्सरद फाल्गुण बहुळ ३
सोमवारदन्दु...कीर्तिभट्टार कालं कर्चि...पूजेगं खण्ड-स्फुटित-जी-
र्णोद्धारकं देवर केरैय केळगण...यळु हजेरडु सल्लिगे गदेयुं बसदि
...मह...रणज...ल्लवडुमुं बिडिसिद नाम-
हरन प...क्षदोळु तदनुजम् ॥ बसं...वाग्-वि...
...णु-भूपर्ने वसु-ममनिरुतमा-
केयन् अहरयनं...लिया...श सिम...दिन पेम्पु
...सि श्री-पुल्लिन बसदि...गनिद त्रहि...गन् उद्व...
...सत्-सर...तरसु...समस्त-गुण...
...श्री चलुन विमळ...सबाद्धि-

व.....चक्रवर्तिगळ एनिसि.....
हा.....सर्व्व.....हेगड.....पूजेयगळ
तिरें यदा रा.....
सादी.....देन्दु.....द माचण

[जब कि (अपनी विशाल पदविभोंके साथ) विष्णुवर्द्धन इस जगत्-पर राज्य कर रहे थे:—मूलसंघ, देशियगण और पुस्तकगणके.....द-सिद्धान्तदेवके शिष्य मुनि नयकीर्त्ति और मानुकीर्त्तिके भक्त वेगगडे मछि-नाथने जैन-बसदिका निर्माण किया और इसे बनसे पुष्ट किया ।]

[EC, III, Mandya tl., n° 50.]

२९८

श्रवणबेलगोला—संस्कृत तथा कन्नड

[शक १०५३=११३१ ई०]

(जै० शि० सं०, प्र० भा०)

२९९

पुरले—संस्कृत तथा कन्नड

[शक १०५४, वर्षं नन्दन=११३२ (ठीक १११२) ई०]

[पुरले (बिदरे परगना)में, गाँवके दक्षिण-पश्चिम वीर-सोमेश्वर मन्दिरके सामने पड़े हुए एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रयं श्री-पृथ्वी-वल्लभं महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुल-तिलकं चालुक्याभरणे श्री-त्रिभुवन-मल्लदेवर विजय-राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारम्बरं सल्ल-त्तमिरे ।

एनगेन्दा-विक्रमांकं गड निगळमनिक्किट्टनो बोगे कीना- ।
 शानवोळेस्तन्दु कार्थि किल्लदे तलेयना-वीरनेम् माणबने-गोय्- ।
 वेनेनुत्तं मीतिर्य-पट्टदने कनसु-गण्डुम्मळं-गोण्डु चोबम् ।
 ननसेन्देबडिरुत्...तन्नेय तलेयनति-आन्तनन्दिदम्हु नोळकुम् ॥

तत्पादपद्मोपजीवि ॥ श्रीमदेरेयङ्ग-होय्सळनळिय हेम्माडियरसन
 कीर्त्ति-विशारदमेन्तेन्दडे ।

इवनिन्दं कण्डेनेळुं-कडल कडेयनेळुं-कुमृत्-कूटमं दिग्- ।
 धव-दन्ति-त्रातमं लोकद पवणनेनुत्तुं यशो-लक्ष्मि... ।
तं तन्नोन्दरिविनळवु तन्नार्पु तन्नेळो तन्न... ।
 ...विळासं तन्न पेम्पट्टळगमेनिसिदं हेर्म मान्धात-भूपम् ॥
 स्वस्ति श्री-जन्म-गोहं निभृत-निरुपमौर्वानळोद्दाम-तेजम् ।
 विस्तारोपात्त-भू-मण्डलममळ-यशश्चन्द्र-सम्भूति-धामम् ।
 वस्तु-त्रातोद्भव-स्थानकमतिशय-सत्त्वावलम्बं गभीरम् ।
 प्रस्तुत्यं नित्यमम्भोनिधि-निभमेसेगुं होय्सळोर्वीश-वंशम् ॥
 अदरोळ् कौस्तुभदोन्दनर्ध-गुणमं देवेभदुद्दाम-स- ।
 त्वदगुर्वं हिमरश्मियुज्ज्वळ-कळा-सम्पत्तियं पारिजा- ।
 तद्गुदारत्वद पेम्पनोर्वने नितान्तं ताब्दि तानल्ले पुद्- ।
 टिदनुद्देजित-वीर-वैरि विनयादित्यावनीपालकम् ॥
 मदवद्भूप-बळान्वकार-हरणं तेजोधिकं सन्तता- ।
 म्युदयं संहृत-विद्विषत्-कुवळय-(यं) श्रीकं सुहृच्चक्र-सं- ।
 मद-सम्पादन-हेतु सत्पथगतं पद्मोद्भवोद्भावकम् ।
 विदितार्थानुग-नामनल्ले विनयादित्यावनीपालकम् ॥
 विनयादित्य-नृपं सज्जनर्गं दुर्जनार्गमात्म-विनयं तेजम् ।

जनियिसे नयमं भयमं । विनूतनाळदोम् विशाल-भूमण्डलमम् ।
 आ-विनयादित्यन वधु । भावोद्भव-मन्त्र-देवता-सन्निभे सद्- ।
 भाव-गुण-भवनमखिल-क- । ला-विळसिते केळयबरसियेम्बळ् पेसरिं ।
 आ-दम्पतिगे तनूभव- । नादोम् सचिगं सुराधिपतिगं मुनेन्त् ।
 आदं जयन्तनन्ते वि- । षाद-विदूराक्षरंगनेरेयङ्ग-नृपम् ॥

वृ ॥ आतं चालुक्य-भूपालकन बलद-भुज-दण्डमुदण्ड-भूप- ।
 ब्रात-प्रोत्तुंग-भूभृद्-विदळन-कुळिशं वन्दि-सशौघ-मेघम् ।
 श्वेताम्भोजात-देव-द्विरदन-शरदभ्रेन्दु-कुन्दावदात- ।
 धोत-प्रोद्यच्छश्री-धवलित-भुवनं धीरनेकाङ्ग-वीरम् ॥
 मालव-सेनेयं तुळिदु धारेयनोवदे सुदु त्विद तच्- ।
 चोळननीळदु तत्-कटकं कडुपिन्नेरे सूर-गोण्ड दोश- ।
 शाळि कलिङ्गनं मुरिदु भङ्गिसिदात्म-भुज-प्रतापमम् ।
 केळे दिशाधिपं नेगळदनी-तेरदिन् [द] एरेयङ्ग भूभुजम् ॥
 एरेयनखिलोर्व्विगेनिसिर्दे- । रेयङ्ग-नृपाळकनङ्गने चेल्किग्- ।
 एरेवद्दु शील-गुणदि । नेरेढेचल-देवियन्तु नोन्तरुमोळरे ॥
 एने नेगळदवरिर्व्वर्गं तनूभवर्नेगळदरल्ले बळ्ळाळं वि- ।

ष्णु-नृपाळकनुदयादि- । त्यनेम्ब पेसरिन्दमखिल-वसुधा-तळदोळ् ॥

वृ ॥ अवरोल् मध्यमनागिणुं धरणिंयं पूर्वापराम्भोधियेय्- ।
 दुविनं कूडे निमिर्चुवोन्दु-निज-बाहा-विक्रम-क्रीडेयुद्- ।
 मवदिन्दुत्तमनादनुत्तम-गुण-ब्रातैक-धामं धरा- ।
 धव-चूडामणि यादवाब्ज-दिनपं श्री-विष्णु-भूपाळकम् ॥
 एळेगेसेव कोयतू तत्- । अळवनपुरमन्ते रायरायपुरं बळ- ।
 पळ बलद विष्णु-तेजो- । ज्वळनदे बेन्दुबु बलिष्ट-रिपु-दुर्गङ्गम् ॥

कमलाक्षं पुरुषोत्तमं....काङ्गुलादनं द्विष्टदै- ।
 स्व-मद-ध्वंसननन्त-भोग-युतबुद्धी-भार-धौरेयनुत्- ।
 तम-सत्त्वान्वितनुद्ध-यादव-कुळाळंकारनेन्दिन्तु वि- ।
 ण्णु-महीशं सले ताने विष्णुवेनियं लक्ष्मी-वधू-वल्लभम् ॥
 क ॥ लक्ष्मी-देवि-खगाधिप- । लक्ष्माङ्गसेदिई विष्णुग् यन्तन्ते बलम् ।
 लक्ष्मा-देवि लसन्मृग- । लक्ष्मानने विष्णुगप्र-सतियेने नेगर्दळ् ॥
 अवर्गे मनोजनन्ते सुदती-जन-चित्तमनिष्कोळळे साल्व- ।
 अवयव-शोमेयिन्दतनुवेम्बभिधानमनानदङ्गना- ।
 निवहमन्.....वीरनेच्च युद्धदोळ् ।
 तविसुवनादनात्मभवनप्रतिमं नरसिंह-भूभुजम् ॥
 रिपु-सर्पद-दर्प-दावानळ-बहळ-शिखा-जाळ-काळाम्बुवाहम् ।
 रिपु-भूपोद्दीप-दीप-प्रकर-पट्ट [तर]-स्फार-ज(झ)ञ्जा-समीरम् ।
 रिपु-नागानीक-ताक्ष्यं रिपु-नृप-नळिनी-षण्ड-वेतण्ड-रूपम् ।
 रिपु-भूभृद्-भूरि-वज्रं रिपु-नृप-मद-मातंग-सिंहं नृसिंहम् ॥
 खस्ति श्री-यदु-वंश-मण्डन-मणिः क्षोणीश-चूडामणिस् ।
 तेजःपुञ्ज-विनिर्जिताम्बर-मणिस्सद्वन्ध-चूडामणिः ।
 यस्योद्यत्-सु-यशस्सुपर्व्व-सरिता लोकत्रयं शोभते ।
 जीयात् पाद-युगानमन्-नृप-कुळश्री-नारसिंहो नृपः ॥
 श्री-मूलसंघ-विख्याते मेषपाषाण-गच्छके ।
 क्राणूरु-गण-जिनावासो निर्मितं हेम्मभूयुतः ॥

खस्ति समधिगत-पञ्च-महाशब्द महा-मण्डलेश्वरं द्वारावतीपुरवरा-
 धीश्वरं.....दावानळ पाण्ड्य-कुळ-कमळ-वन-वेदण्ड गण्ड-मेरुण्ड
 मण्डलिक-बेण्टेकार परमण्डल-सूरेकार संग्राम-भीम कलि-काल-काम

सकल-वन्दि-वृन्द सन्तर्पण-समर्थ-वितरण-विनोद वासन्तिका-देवि-
लब्ध-वर-प्रसाद मृगमदामोद यादव-कुलाम्बर-शुमणि मण्डलिक-मकुट-
चूडामणि कदन-प्रचण्ड मलेपरोळ् गण्ड नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहितं
श्रीमत् त्रिभुवन-मल्ल तळेकाडु कोकु नङ्गलि-गङ्गवाडि-नोळम्बवाडि-
वनवसे-हानुङ्गळ-हुलिगेरे-बेलुवलं-गोण्डः भुज-बळ वीर-गङ्ग प्रताप-
होयसळ-नारसिंहदेवरु सकळ-मही-मण्डळमं दुष्ट-निग्रह-शिष्ट-प्रतिपाळ-
नदि सुख-संकथा-विनोददि दोरसमुद्रद नेळेवीडिनोळु राज्यं गेय्युत्त-
मिरे । तत्पादपञ्चोपजीवि ।

तद्राज्ये बुध-कोटि-सम्पदवन-प्राज्ये प्रधानाप्रणीद् ॥

उन्मीळत्-सुकृताम्बुराशि....सम्पत्ति-चन्द्रोदयः; ॥

श्रीमत्-तिप्पण-भूपतिस्समुदगादुद्धान-धारा-जलैर् ।

द्वात्री सम्प्रतिपद्यते प्रतिदिनं...मा...सत्याश्रया ॥

तस्य श्लाघ्य-गुणोदयस्य धरणी-वन्द्योनुजातस्त्वयम् ।

श्रीमन्नाग-चमूपति.....यत्त यः ।

यत्तेजः-प्रकरैरजायत परं पद्मानुराग-प्रदैर् ।

दृष्यद्-वैरि-तमो-घटा-विघटनैर्हैवोऽप्र....ग्रामणीः ॥

श्रीमन्नामल-देवि भाति भवतीत्येवं बुधैर्व्या स्तुता ।

तद्वंशे गुण-संगमे नर-मणि.....णिः ।

सा जाता भुवनाभिराम-विभवैर्ह्यवण्य-पुण्योदयैर् ।

देवि (सम्प्रति) यन्मुखपङ्कजे विजयते वाणी जगत्पावनी ॥

गङ्गाधात्रियोळवनी- । मंगळमेनिसिर्द...आ-स्त्री-रत्नम् ।

तुङ्ग-जन.....आगिरे कोडळ् ॥

वचन ॥ (य्) इक्षुवाक- (क्वाकु) वंशावतारमदेन्तेन्दडे ।

सले वृषभ-तीर्थ-कालं सु-ललितमेने सकळ-भव्य-चित्तानन्द ।

कलिकालनिर्जितं श्री- । ललना-लावण्य-वर्द्धन-क्रमदिन्दम् ॥
 सोगेयिषुव-काळदोळ् की- । तिगे मूल-स्तम्भयेनिषयोष्या-पुर-दोळ् ।
 जगदधिनाथं पुष्टिद- । नगण्यनिष्वाङ्क-वंश-चूडारत्नम् ॥
 धरेगे हरिश्चन्द्र-नृपे- । श्वर नोर्व्वने कान्तनागि दोर्व्वळदिन्दम् ।
 विरुदरनदिर्षि विद्या- । परिणतियि नेरेदु सुखदिनिरे पल-कालम् ॥
 वृ ॥ आतन पुत्रनिन्दु-दर-हासनिभोज्ज्वळ-कीर्त्ति सद्-गुणो- ।
 पेतनुदात्त-वैरि-कुळ-मेदन-कारि कला-अवीणनुद्- ।
 धूत-मालं सुरेन्द्र-सदृशं भरतं कवि-राज-पूजितम् ।
 ख्यातनतर्क्य-पुण्य-निलयं सु-जनाप्रणि विश्रुतान्वयम् ॥
 ऋजु-शील-युक्तेयनिसिद । विजय-महादेवि तनगे सतियेने विषुव-
 व्रज-पूज्यं भरतं भा- । वज-सदृशं नेगळे सकळ-धात्री-तळदोळ् ॥
 वचन ॥ आ-विजय-महादेविगे गर्भ-दोहळं नेगळे ।
 वृ ॥ तरळ-तरंग-भङ्गुर-समन्वितेयं ऋ(झ)प-चक्रवाक-भा- ।
 सुर-कळ-हंस-पूरितेयनुद्ध-लताङ्कित-गात्रेयं मनो- ।
 हर-नव-शैल्य-मान्द्य-शुभ-गन्ध-समीर-निभास्येयं तळो- ।
 दरि नेरे गङ्गेयं नलिदु मीवभिताञ्छेयनेष्टे ताळ्दिदळ् ॥
 कळ-हंस-याने पलरं । केळदियरोड वागि पूर्ण-गङ्गा-नदियम् ।
 विळसितमं पोक्कु निरा- । कुळदिन्दोळाडि पाडि गाडियनान्तळ् ॥
 अन्तु मनदळम्पु पोम्पुत्रि-वोगे गङ्गा-नदियोळोळाडि निज-गृहके
 वन्दु नव-मासं नेरेदु पुत्रनं पडेदातळे ।
 गङ्गा-नदियोळु मिन्दु ल- । ताङ्गि मगं बडेदळ्प कारणदिन्दम् ।
 माङ्गल्य-नाममादुदि- । लङ्गनेगधिपतिगे गङ्गादत्ताख्यानम् ॥
 व ॥ आ-गङ्गादत्ताङ्गे मरतेनम्ब मगं पुष्टिदनातळे गङ्गादत्तनेम्बं
 मगं पुष्टिदम् ।

कं ॥ गुण-निधिगे गङ्गदत्तं- । गणुगिन पुत्रं विवेक-निधि पुष्टि दया- ।

प्रणियागि हरिश्चन्द्र- । प्रणुत-नृपेन्द्रं धरित्रियोक् शोभिसिदम् ॥

मत्तमा-नृपोत्तमाङ्ग भरत्तनेम्ब सुतं पुष्टिदनातङ्गे गङ्गदत्तनेम्ब
मगनागिन्तु गङ्गान्वयं सल्लत्तमिरे ।

कं ॥ हरि-वंश-केतु नेमी- । श्वर-तीर्थं वर्त्तिसुत्तमिरे गङ्ग-कुल्यं- ।

वर-भानु पुष्टिदं भान-सुर-तेजं विष्णुगुप्तनेम्ब नरेन्द्रम् ॥

व ॥ आ-धराधिनाथं साम्राज्य-पदवियं कय्कोण्डु अहिच्छत्र-पुर-
दोळु सुखमिर्दु ।

व ॥ नेमि-तीर्थकर परम-देवर निर्वाण-कालदोलैन्द्र-ध्वजमेम्ब
पूजेयं माडे देवेन्द्रनोसेदु ।

कं ॥ अनुपमदैरावतमं । मानोनुरागदोळे विष्णुगुप्ताङ्गित्तम् ।

जिन-पूजेयिन्दे मुक्तिय- । ननर्घ्यमं पडेगुमेन्दोडुळिदुदु पिरिडे ॥

व ॥ आ-विष्णुगुप्त-महाराजङ्गं पृथ्वीमति-महादेविगं भगदत्तं
श्रीदत्तनेम्ब तनयरागे ।

व ॥ भगदत्ताङ्गे कलिङ्ग-देशमं कुडलातनुं कलिङ्ग-देशमनाळ्डु
कलिङ्ग-गङ्गनागि सुखदिनिरे ।

(य्) इत्तलुदात्त-यशो-निधि । मत्त-द्विपमं समस्त-राज्यमुमं ।

श्रीदत्त-नृपाङ्गित्तं भू- । पोत्तमनेनिसिर्दं विष्णुगुप्त-नरेन्द्रम् ॥

अन्तु श्रीदत्तनिन्दिच्चलानेयुण्डिगे सल्लत्तमिरे ।

प्रियबन्धु-वर्मनुदयिसि । नयदिन्दं सकळ-धात्रियं पालिसिदम् ।

भय-लोभ-दुर्लभं ल- । क्ष्मी-युवति-मुखाब्ज-घण्ड-मण्डित-हासम् ॥

अन्ता-प्रियबन्धु सुखदिं राज्यं गेय्युत्तमिरे तत्त-सम्यदोळु पार्श्व-महार
कर्गे केवळज्ञानोत्पत्तियागे सौधम्मैन्द्रं बन्दु केवळि-पूजेयं माडे प्रिय-

बन्धुवं तानुं भक्तिविं बन्दु पूजेयं माङ्गलातन भक्तिमिन्द्रं मेघि दिव्यम-
प्यब्धुं तुङ्गो-गळं कोट्टु निम्नन्वयदोळु मिथ्यादृष्टिगळागळोडं अदृश्यङ्गळ-
कुमेन्दु पेळ्ळु विजयपुरकद्विच्छत्रमेन्दु पेसरनिट्टु दिविजेन्द्रं पोपुदितळ
गङ्गान्वयं संपूर्ण-चन्द्रनन्ते पेळ्ळि वर्त्तिसुत्तमिरे तदन्वयदोळु कम्प-मही-
पतिगे पद्मनाभनेम्ब मगं पुट्टि ।

कं ॥ तनगे तनूभविरिल्लदे । मनदोळ् चिन्तिसुतमिर्हु पद्मप्रभना- ।
र्षिन कणि सासन-देवते- । यने पूजिसि दिव्य-मन्त्रदिं साधिसिदं
व ॥ अन्तु साधिसि (दि) शाधित-विद्यनागि पुत्ररिर्व्वरं पडेदु
राम-लक्ष्मणेन्दु पेसरनिट्टु ।

वृ ॥ परम-स्नेहदोळिर्व्वरं नडपि लीला-मन्त्रदिं चन्द्रनन्- ।
तिरे संपूर्ण-कळाङ्गरागि बेळेयल् विद्या-बलोद्योगमुद्र-
र्व्वरेयोळ् चोद्यमेनल् सलुत्तमिरे कीर्त्ति-श्री दिशा-भागदोळ् ।
पेरेदाशा-गजमं पळञ्चलेये लक्ष्मी-भारदिन्दोष्पिदर ॥

व ॥ अन्तु सुखदिमिर्पुट्टु मत्तलुजेनिय-पुराधिपति-महीपाळना-
तुङ्गो-गळं बेडियट्टिपडे पद्मनाभं कृतान्तनन्ते रौद्र-वेशमं कैकोण्डु ।

क ॥ येमगदनदलिकागदु । तनगे तुडल् योग्यमल्लु सन्तमिरल् वेळ् ।
समर्क्के वन्दनप्पडे । निमिषदोळान्तिरिदु वीर-रसमं मेरेवेम् ॥

व ॥ अन्तु नुडिदट्टि मन्नि-वर्ग डोळाळोचिसि तन तङ्गेयाळ्वेयुं
नाल्वतेणबरासरप्प विप्र-सन्तानमं बेरसि कळिपिदडवईक्षिणाभिमुखरागि
वरुत्तं राम-लक्ष्मणगे दडिग-माधवरेन्दु पेसरनिट्टु निञ्च-वयणदिं
वरुत्तमिरे ।

क ॥ बन्दवर्गळुचित-पदमन- । गुण्डेलेयिं कण्डरमळ-लक्ष्मी-चित्ता- ।
नन्दनमं पेळ्ळरं । मन्दार-नमेरु-गुष्प-गन्धादियुमम् ॥

व ॥ अन्तु गङ्गा-हेरूरं कण्डल्लिय तटाक-सीरदोलु बीडं विट्टू चैल्या-
 ल्यमं कण्डु निर्भर-भक्तिरिं त्रि-प्रदक्षिणं गेय्दु स्तुतिरिसिं समस्त-
 विद्या-पारावार-पारगरं जिन-समय-सुधाम्मोधि-संपूर्ण-चन्द्ररुमुत्तम-
 क्षमादि-दश-कुशळ-धम्म-निरतरं चारित्र-चक्र-धरं विनेय-जनानन्दरं
 चतुस्समुद्र-मुद्रित-यशः-प्रकाशरं सकळ-सावध-दूरं क्राणूर-गणाभ्वर-
 सहस्र-किरणरं द्वादश-विधतपोनुष्ठा[न]-निष्ठितरं गङ्गा-राज्य-समुद्धरणरं श्री-
 सिंहनन्दाचार्यरं कण्डु गुरु-भक्ति-पूर्वकम् बन्दिस्सि तम्म बन्दभिप्राय-
 मेल्लमं तिळिय पेळे कय्कोण्डवर्गे समस्त-विद्याभिमुखम्माडि केलवानु
 दिवसदिं पद्मावती-देवियं विधि-पूर्वकमाहानं गेय्दु वरं बडेदु खळ्गमुमं
 समस्त-राज्यमनवर्गे माडे ।

क ॥ मुनि-पति नोडलु विट्ट- । जन-पूज्यं माधवं शिलास्तम्भमना-
 ईनुगेय्दु पोय्यलदु पु- । प्मेने मुरिदुदु वीर-पुरुषरेनं माडर ॥

व ॥ आ-साहसमं कण्डु ।

वृ ॥ मुनि-पति कर्णिकारदेसळोळ् नेरे पट्टमनेय्दे कट्टि स- ।

जन-जन-वन्द्यरं परसि सेसेपनिक्कि समस्त-धात्रियम् ।

मनमोसेदित्तु कुञ्चमनगुर्व्विन केतनमागि माडि वे- ।

र्पणितु परिग्रहं गज-तुरङ्गमुमं निजमागे माडिदर ॥

व ॥ अन्तु समस्त-राज्यमं माडि बुद्धियनिवर्गिन्तेन्दु बेससिदरु ।

वृ ॥ नुडिदुदनारोळं नुडिदु तप्पिददं जिन-शासनकोडम्- ।

बडदडमन्य-नारिगेरेदट्टिदडम्भधु-मांस-सेवे गे- ।

य्दडमकुञ्जीनर्पवर कोळ्कोडेयादडमर्त्थिगर्त्थमम् ।

कुडदडमाहवङ्गणदोळोडिददं किडुगुं कुल-क्रमम् ॥

३ ॥ उत्तममप्य नन्दगिरि कोटे पोळल् कुवळालमाळ्के तोम्- ।

भत्तरु-सासिरं विषयमाप्तननिन्ध-जिनेन्द्रनाजिरं- ।

गात्त-जयं जयं जिन-मतं मतमागिरे सन्ततं निजो- ।

दात्ततेयिन्दमा-दडिग-माधव-भूभुजराब्दरुर्वियम् ॥

उत्तर-दिक्-तटावधिगे तागे मोद [क्क] ले मूड तोण्डे-ना- ।

उत्तपराशेगम्बुनिधि चेरोडेयिर्ष तेङ्क कोङ्क म- ।

त्तितोळगुळ्ळ वैरिगळनिक्कि परावृत-गङ्गवाडि-तोम्- ।

भत्तरु-सासिरं दळेले माडिदनिन्तुदु गङ्गनुजुगम् ॥

अन्तु शत-जीवियेम्बुदा-शब्दमं केळ्दु ।

भरदिन्दं चुर्चुवाय्दं होगळे बुध-जनं वन्दु कावेरियोळ् मी- ।

करमागल् वीर-लक्ष्मी-नयन-कुमुदिनी-चन्द्रमं निन्दु नोडल् ।

परिवारं तन्न कीर्ति-ग्रमे वळ्से दिशा-आगमं चोद्यमागल् ।

परम-श्री-जैन-पादं नेलसे हृदयदोळ् मेरु-शैलोपमानम् ॥

क ॥ कर...अरिद गङ्गनि भय- । मिलद हरिवर्म विष्णु-
भूपनि निजदि ।

बळे तडङ्गळ्-माधव- । नळिं बळि चुर्चुवाय्द-गङ्ग-नृपाळम् ।

श्रीपुरुषं शिवमारं ।...ळं कृतान्त-भूपना-सयिगोदुम् ।

द्वीपाधिपरोळरि-नृप- । कोपानळ-शिखेयेनिप्प विजयादित्यम् ॥

....रे येरिद मारसिंगना- । कुरुळ-राजिगं पेसद्-व्वेत्ता- ॥

मरुळं तन्नृप-तिळकन । पिरिय मगं सत्य-वाक्यनचळित-शौर्यं

गर्वद-गङ्ग वसुधेयो- । लोर्व्वने कलि चागि शौचि गुत्तिय-गंग ।

दोर्व्विक्रमाभिरामन- । गुर्व्विन कलि राचमल्ल-भूधृ..... ॥

तेङ्क मुरिवं हसिय क- । अङ्ग पिडिदडसि कीळ्वना-मद-करियम् ।

पिङ्गदे निलिसुव साहस- । तुङ्ग केवलमे नेगळद रकस-गङ्गम् ॥
 अवयवदिन्दे साधिसिद माळवमेळुपनेन्दे गङ्ग-मा- ।
 लवमेनलकरं बरेदु कल् निरिसुत्ते कळल्लिच चित्रकूट- ।
 मनुरे कसमज्जेय-नृपानुजनं जयकेसियं महा- ।
 हवदोळे मारसिंग-नृपनिक्कि निष्पिर्षिदनात्म-शौर्यमम् ॥
 तनयं श्री-मारसिंहङ्गनुपम-जगदुत्तुंगनादं जगत्-पा- ।
 वन-लक्ष्मी-वल्लभङ्गित्तुदयिसि नेगळदं राचमल्लावनीशम् ।
 मनु-मार्गे गङ्ग-चूडामणि जय-वनितावीश-भूवल्लभेशम् ।
 जिन-धर्म्माम्भोधि-चन्द्रं गुण-गण-निळयं राज-विद्या-धरेन्द्रम् ॥

इन्तेनिसि नेगळद गङ्ग-वंशोद्भवरा-दडिगन मगं चुर्बुवाद्द-गङ्गनातन
 सुतं दुर्बिनीतनातन तनयं श्री-...नु श्रीपुरुषमहाराजं तत्-तनयं देव
 तत्-तनूभवनेरेयङ्ग-हेम्माडि तत्पुत्रं ब्रूतुग-हेम्माडि तदात्मजरु-...
 देव तदनुज गुत्तिय-गंगनातन मोम्म मारसिंग-देवनातन मगं
 कलियङ्गदेवनातन मगं बर्म्म-देवनिना-गङ्ग-वंशोद्भवरु राज्यं गेय्ये ।

दक्षिणदेशनिवासी । गङ्ग-मही-मण्डलिक-कुळ-संघरणः ।

श्री-मूल-संघ-नायो । नाम्ना श्री-सिंहनन्दि-मुनिः ॥

श्री-मूल-संघ-वियदमृ- । तामळ-रुचि-रुचिर-...जय-ल- ।

क्ष्मी-महितं जिन-धर्म्म-ल- । लामं काणूर-गण-जना-...करम् ॥

आ-गणद अन्वयदोळ ।

मणिरिव वनराशौ माळिकेवामराद्रौ

तिळकमित्र ललाटे चन्द्रिकेवामृतांशौ ।

इव सरसि सरोजे मत्त-शृङ्गी निकामम्

समजनि जिनधर्म्मा निर्म्मळो बालचन्द्रः ॥

अवर शिष्यरु ।

विमल-श्री-जैन-धर्माग्वर-हिमकरनुद्यत्-त...लक्ष्मी- ।
 रमणं भूमण्डलाधीश-नुतनुभय-सिद्धान्त-रत्नाकरं जं- ।
 गम-तीर्थं भव्य-वक्त्राम्बुज-खर-किरणं श्री-प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-
 त-मुनीन्द्रं क्षीर-नीराकर-विशद-यशो-वेष्टिताशा-विभागं ॥
 मनमं नियमिसलरिय- । र्त्तनुवं...तोर्षं मुनियुं मुनिये ।
 मनमं तनुवं नियमिस- । लनुदिनमी-नेमि-देवनोर्व्वने बल्लं ॥

अवर शिष्यरु ।

गुणियेने जिनमतरक्षा- । मणियेने कवि-गमक-वादि-वाग्मि-प्रवरा-
 मणियेने पण्डित-चूडा- । मणियेने गुणनन्दि-देवसेदर द्वरेयोळ् ॥
 तत्सधर्मरु ।

अळवे पेळ् नुडियल्ले निन्न विरुदं माण् माणेले सांख्य वा- ।
 ग्-बळमं नचदे नीनडङ्गेडरदिर्च्चाव्वीके नैय्यायिका ।
 मलेयळ् बेडिरु मन्तमेके चलदिन्दी-भण्डपं केम्भनण्- ।
 डलेयळ् श्री-गुणचन्द्र-देवनमळं वादीभ-कण्ठीरवम् ॥

तत्सधर्मरु ।

गङ्गा-वारि सु-शैवलं सुर-करी दानार्द्र-गण्ड-स्थलः ।
 शम्भुःकण्ठ-विलग्न-घोर-गरलः चन्द्रः कळङ्काङ्कितः ।
 कैलाशो वन-वल्लरी-परिवृतस्साम्यं कथं वष्यहम्
 कीर्त्या तैस्सह माघनन्दि-यमिनश्चन्द्रातपोबच्छ्रिया (म्) ।

आ-चारित्र-चक्रेश्वर-मुनि-राज-राजन शिष्यरु स्वस्ति समधिगत-पञ्च-
 महा-शब्द महा-कल्याणाष्ट-महा-प्रातिहार्यं चतुर्विंशदतिशय-विराजमान-
 भगवदर्हत्-परमेश्वर-परम-भट्टारक-मुख-कमल-विनिर्गीत-सदसदादि-वस्तु-

मुनिय.....अनवद्याचा(च)रणे जैन-शा- ।
सन-रक्षामणि शान्तने सकल-राग-द्वेष-दोष-प्रभञ्ज- ।
जननुर्वी-नुतने गुण-प्रणयितं तानेम्बिनं वीर मे- ।
दिनियो...धवचन्द्र-देवनेसेदं चारित्र-चक्रेश्वरम् ॥

तत्-सधर्मरु ।

वर-शास्त्राम्बुधि-वर्द्धन- । हरिणाङ्ग-विरुद-वादि-मद-विस्फाळम् ।
निरुतं तानेनल्लेसेदं । धरेयोळ् त्रैविद्य-बालचन्द्र-मुनीन्द्रम् ॥

अवर सधर्मरु ।

वृ ॥.....आळदुं धर्ममनुपेक्षिसि तक्केडेगीयदागळुम् ।
पीन-नितम्बमं घन-कुच-द्वयमं मरेगोण्डु म-थो- ।
द्यानमनोल्दु पोक्कु नेरे नील-पटाश्रितरण्य योगिगळ् ।
दान-विनोदनोळ् दोरेगे-वप्परे माधवचन्द्र-देवनो...॥
.....सत्य-गङ्गं कुडे कुरुळियोळादन-दान-प्रभा-वि- ।
स्तरदिं श्री-बालचन्द्र-व्रति-पति पडेदं दानदिं जीयनल्लुर-
व्वरेयं सम्पूर्णमागळ् तणिसिदमिदु बल्-चोद्यमक्षीण-रिद्धि- ।
स्फुरितं कय्गणिम पोण्मुत्तिरे.....ज्यनादम् ॥

अवर सधर्मरु ।

चतुराश्य-ओटि-कूटदो- । व्यतिशयमेनिसिर्द कोपण-तीर्थदोळीगळ् ।
नुतियिप वड्डाचार्य- । व्रतिपतिये नेमि-देवरिन्दमे पूज्य ॥
स्थावर-जंगममनितुं । पावनमाद..... ।
...जीयेनिसि बाळ्वडिगळ । जीयं श्री-नेमि-देवरुदयिसे शुभदं ॥

अवर सधर्मरु ।

अधनर्गाश्रितर्गिष्ठ-सन्ततिगे चातुर्वर्ण्य-संघके तान् ।
शि० ३०

अधिकोत्साहदिन्...व्यकेयम्बेर्ष्यमं वाञ्छेयम् ।

बुध-चिन्तामणि.....कूर्त्तितु मा- ।

धवचन्द्रं पडेदं समस्त-भुवन-प्रस्तुत्यं स्तुत्यम् ॥

अवर सधर्मरु ।

साधिसि गुरुपदेशदो- । लाधिक्यतेयायु सकळ-षट्-कर्मगळु ।

वेदान्तर् म...दरिब- । गर्गधूम-धरद्वनोडने तोडव्वम... ॥

शाकिनि-डाकि.....-किनि-चोरारि-मारि-देव्येयरनितुं ।

लोकमरियल्के... । सकळमनरिये बिरुदं देवेन्द्रनुमम् ॥

इन्तेनिसि नेगळ्तेयं तळेद श्रीमत-प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवर गुड

भुजबळ-गङ्ग-हेर्माडि-बर्म्म-देव ।

बलवद्वैरिगळं पडल्-वडिसि गेलदुप्राजियोळ् माण्दने ।

चलदिन्दं परियिट्टु वैरि-पुरमं तत्-कोटेयं तद्-मही- ।

तळमं कोण्डु धरित्रि बणिणसुविनं श्री-बर्म्म-देवं मही- ।

तळमं तोळ्-वळदिं निमिर्च्चिदनिदम् हेर्माडि सौव्यात्मनो ॥

आतन पट्ट-महादेवियेन्तेन्दडे ।

जिनेन्द्र-पादाम्बुज-मत्त-भृङ्गी.....भूषण-भूषिताङ्गी ।

नितम्बिनीनां तिळकायमाना विराजते गङ्ग-महाधिदेवी ॥

वृ ॥ निजवेनिपी-नेगर्त्तेय महासतिगुत्सव [म] म् निमिर्च्चुवा- ।

त्मजरेनिसिर्द तम्मुतोड्डुद्विदरोप्पुव मारसिगानुम् ।

स-जयदे सत्य-गङ्ग-चपनुं कलि-रक्त-गङ्ग-देवनुम् ।

भुजबळ-गङ्ग-भुजनुमार्जिसि पेर्जसमं निरन्तरम् ॥

गजरिपु-विष्टराजि-विभवोदय-पार्श्व-जिनेन्द्र-पाद-पड्- ।

कज-मट-मङ्ग गङ्ग-कळ-मण्डन दण्डित-वैरि-वर्ग भा- ।

वज-निभ-मूर्ति दिग्-वळ्य-वर्तित-कीर्ति समस्त-धात्रियोळ् ।

भुजबल-गङ्ग-भूप निनगाहोरे मण्डलिकैक-भीरव ॥

आतन पद्म-महादेवि ।

[.....]आळु-वरननुज । दिङ्भूपङ्गे गङ्गवाडिगे तळेदळ् ।

पद्मनेन्दडे गङ्गन । पद्ममहादेवि यन्तु नोन्तरुमोळरे ॥

वृ ॥ मारिडाशान्तमं बळ्ळदळ्ळेडुदधि-त्रातमं तूगे सन्दा- ।

मेरु-क्षोणीन्द्रमं त्राशिनोळेणिसि तरङ्गोण्डु नक्षत्रमं पेळ् ।

आरानुं बळ्ळरे बळ्ळडे पोगळो...विश्वम्भरा-भार-वीर- ।

श्री-रामालीढ-वज्र-द्रदिम-वन-भुज-स्तम्भनं गङ्ग निभम् ॥

अन्नेयवागिदूटिसुव.....मोले.....प्रकास येळ्वो ।

रत्नवे हेण्डिरोळ् मनेगोर्व्वरुदारेयरण्ण हुडरे ।

हुनियवुळ्ळेम् जगदोळोर्व्वळे भागिये ताने त्सेः हुह- ।

नन्नियोळिन्तु गर्ब्बितेयरार्गळ चन्दल-देवियन्ददिम् ॥

श्रीमद्-भुजबल-गङ्ग-देवङ्ग गङ्ग-महादेविगं पुष्टिद सत्य-
गङ्गन प्रतापमेत्तेने ।

जसमुधद्धवलातपत्रमखिळाशा-देवतापाङ्गर- ।

हिम-सह.....गजेन्द्र-रिपु-पीठं विक्रमं तानदा- ।

गे सु-साम्राज्य-लताभिबृद्धि-विभवं मय्वेत्तिरळ् बळ्ळिदर ।

व्वेसकेयुत्तिरे सत्यगङ्गनेदं विश्वावनी-भागदोळ् ॥

आतन-अरसि ।

पति सत्य-गङ्ग-देवं । गति.....दार-लक्ष्मि तानेनिसि..... ।

.....तळेदळेम्.....।.....आरो राणि कञ्चल-देवि ॥

भावभवङ्गे रूपु मद-सामज-वैरिगे विक्रम-कर्म म्मेज- ।

द्रावनिजके दान-गुणमब्धिगे गुणपमराचळके सं ।

भावित-धैर्यमगलिपुदेन्दडे गङ्ग-कुमृत-कुमार..... ।

.....पाळकंगे दोरेयप्परे मिक कुमृत-कुमारकर ॥

.....यिन्दं क्षीराब्धियु- । मसवसदिं पेर्चुवन्ते गङ्गान्वयसुं ।

पसरिसे पेर्चुगे निज्जिन्दसदळमौदार्य-शौर्य गङ्ग-कुमारा ॥

श्रीमन्महामण्डलेश्वरनेरेयङ्ग-होय्यण-देवनळियं गण्डर दावणि
हुसिवर शूल मावन गन्ध-त्रारणं हेम्मार्डि-देवनेडेदोरे.....सायिरमुमं
हरिगेय नेलेवीडिनोळु सुखदिनाळुत्तिर्हु कुन्तलापुरदोळु चैत्थालयमं
माडि देवर पूजा-विधानकं चातुर्वर्ण-संघ-समुदाय-चतुस्-समयदाहार-
दानकं खण्डस्फुटित-जीर्णोद्धारकं समुदाय-मुख्य-स्थानं माडि येडदोरे-
मण्डलिनाडप्रभु-गावुण्डुगळंकरेयलट्टि धर्म आरय्के येन्दु शक-वर्ष
९८९ नेय प्लवंग-संवत्सरद पुण्य-सु १३ दक्षि-गुरुवार-वुत्तरा-
यण-संक्रमणदन्दु तम्म गुरुगळु श्री-प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवर कालं
कर्चि धारा-पूर्वक(कं)माडि विट्ट दत्तिया-भ्राम-दुभय...सर्व-नमस्य-
वळि हुट्टुवायदाय-सुङ्ग-निधि-निक्षेप सर्व-बाधा-परिहार ॥

मत्ता-राज-सर्वन्य सत्य-गङ्ग-देव नेडेहळिय नेलेवीडिनोळु सुखदि
राज्यं गेयुत्तिर्दिल्लि कुरुळिय-तीर्थदळ गङ्ग-जिनालयमं माडि सक-
वर्ष १०५४^१ नेय नन्दन-संवत्सरद चैत्र-सुपुण्णमियादिवार-
सोम-ग्रहणदन्दु तन्न गुरुगळु श्री माधवचन्द्र-देवर कालं कर्चि
धारा-पूर्वकं माडि विट्ट दत्ति...वण्ण.....

खस्ति श्रीमन्-महामण्डलेश्वर गङ्ग-हेम्मार्डि-देवर सन्निधियळि
सर्वाधिकारि बागिय-हेगडे लोकिमय्यन मग हेगडे-चन्दिमय्यं

कुरुक्षिय तम्म गौडिकेयं कलियर-मल्लि-शेट्टि मारं कोण्डु अरसर
सन्निधियल्ल बाळचन्द्र-देवर्गे धारा-पूर्वकं माडि निट्टरु ॥

मत्त सिरियम-सेट्टियुमातन मक्कळु.....आतन गौडिकेय नन्नि-
यरस-देव हळ्ळुवुरदल्ल बाळचन्द्र-देवर्गे धारा-पूर्वकं माडि कोट्टरु ॥
अन्तुभय-प्रामद.....साम्प सुक्क सहित सर्व्व-बाधा-परिहार.....
(भागेकी ५ पंक्तियोंमें सीमाओंकी चर्चा तथा हमेशाके अन्तिम श्लोक हैं)

[जिनशासनकी प्रशंसा । जिस समय त्रिभुवन-मल्ल-देवका राज्य प्रवर्धमान था;—

आगेके श्लोकका प्रकरणसे कोई सम्बन्ध नहीं है, सिवाय इसके कि विक्रमांकने, जो कि त्रिभुवन-मल्ल है, बहुत भय उत्पन्न किया ।

तत्पादपश्रोपजीवी एरेयङ्ग-होय्सलका दामाद हेम्माडि-भरस था । उसकी प्रशंसा ।

होय्सल राजाओंके वंशकी प्रशंसा । विनयादित्यसे लेकर नरसिंह तकके राजाओंकी परम्परा ।

मूलसंघके सेव-पाषाण-गच्छके क्राणूर-गणका एक जैनमन्दिर राजा हेम्मने बनवाया ।

जिस समय प्रताप-होय्सल-नारसिंह-देव दोरसमुद्रमें राज्य कर रहा था:—उसका प्रधान मंत्री (प्रशंसासहित) तिप्पण भूपति और उसका छोटा भाई नाग-चमूपति था, जिसकी पत्नी चामल-देवी थी । उसने..... का दान किया ।

पश्चात् इक्ष्वाकुवंशका अवतार दिया है । इस भागकी १७० पंक्तियोंमें पूर्वके शिलालेख नं० २७७ और २६७ के भाग ज्यों-के-ह्यों मिलते हैं । नं० २७७ “सले वृषभतीर्थ-कालं” से लेकर “परावृत्त-गङ्गावाहितोऽभसर-सासिरं” तक १०१ पंक्तियाँ; और “अन्तु शत-जीवियेम्बुदा-शब्दमं केरुदु” से लेकर “मेरु-सैलोपमानम्” तक ५ पंक्तियाँ । नं० २६७ “कर...भरिद गङ्गनि भय-” से लेकर “रक्तस-गङ्गम्” तक ११ पंक्तियाँ । नं० २७७ “अवयवदिन्दे” से लेकर राज-विद्याधरेन्द्रम्” तक ८ पंक्तियाँ । नं० २६७ “हन्तेनिसि नेगल्दु” से लेकर “अनन्तवीर्यसिद्धान्तकरम्” तक ४५ पंक्तियाँ ।

भुतकीर्तिकी प्रशंसा । पद्माव क्रमसे सधर्मा कनकचन्द्रि, मुनिचन्द्र वती-
की प्रशंसा । मुनिचन्द्रके शिष्य कनकचन्द्र-मुनीन्द्र; उनके सधर्मा माधव-
चन्द्र-देव; उनके सधर्मा त्रैविष्य बालचन्द्र-मुनीन्द्र और उनके सधर्मा माधव-
चन्द्र-देव । सत्य-गंगने कुरुक्षेत्रमें बालचन्द्र व्रतिपतिको दान दिया । उनके
सधर्मा वड्डाचार्य-व्रतिपति थे । उनके सधर्मा माधवचन्द्र थे ।

इसके बाद भुजबल-गङ्गा हेम्मांडि-वर्म-देवकी प्रशंसा । उनकी पट्टमहिषी
गंगमहादेवी तथा इन दोनोंके चार लड़के मारसिंग, सत्य-गंग, कलि-रत्नस-
गंग और भुजबल-गंगका उल्लेख ।

भुजबल-गंगदेव और गंग-महादेवीसे सत्य-गङ्गाकी उत्पत्ति । उसकी
प्रशंसा । उसकी रानी कञ्जल-देवी । (उनके पुत्र गंग-कुमारकी प्रशंसा) ।

जिस समय एरेयङ्ग-होय्सल-देवका दामाद हेम्मांडि-देव हरिगेके निवास-
स्थानमें था और एडेडोरे-(मण्डलि) हजारका शासन कर रहा था,
कुन्तलापुरमें उसने एक चैत्यालय बनवाया और, उसके लिये तमाम करों
इत्यादिसे मुक्त, एक गाँवका दान दिया ।

इसके अतिरिक्त, जब सत्य-गङ्गा-देव, अपने एडेहल्लिके निवासस्थानमें सुख
और शान्तिसे राज्य कर रहा था, उसने कुरुक्षेत्री-तीर्थमें गङ्गा-जिनालय बन-
वाया, और शक-वर्ष १०५४ में अपने गुरु माधवचन्द्र-देवके पैरोंका प्रक्षालनपूर्वक,.....का दान किया ।

और गंग-हेम्मांडि-देवकी उपस्थितिमें सर्वाधिकारी, बागिके हेग्गडे,
हेग्गडे चन्दिमवयने कुरुक्षेत्रीकी अपनी 'गौडिके' भूमि कलियर-मल्लि-सेट्टिको
बेची और उसने वह भूमि बालचन्द्र-देवको दान कर दी । और सिरियम-
सेट्टि तथा उसके पुत्रोंने हल्लवुरकी अपनी 'गौडिके' भूमि, नच्चियरसदेवके
सामने, बालचन्द्र-देवको भेंट कर दी । (वहाँ सीमाएँ और हमेशाके श्लोक
जाते हैं ।]

[EC, VII, Shimoga tl., n° 64.]

१ ये अङ्क १०३४ होने चाहिये, क्योंकि शक वर्ष १०५४=विरोधिचक्र-
नन्दन=१०३४ ।

३००

चन्द्रहस्तिका—कचद

[विक्रम वर्ष ५८=११३३ ई०]

[चन्द्रहस्तिकामें, अस्तेश्वर मन्दिरके सामनेके वीरकलके ऊपर]

स्वस्ति श्रीमतु विक्रम-संवत्सरद ५८ परिधावि-संवत्सरदास्व-
यिज-च ५.....श्रीमतु मूलसंघद देसिग-गणद श्री-माघणन्दि-
भट्टारक-देवर गुहं गङ्गवल्लिय दास-गावुण्डन मगं बोप्पयं समाधि-
विधियि मुडिपि स्वर्गस्थनादनु ॥

[स्वस्ति । (उक्त मितिको), मूलसंघ और देसिग-गणके माघनन्दि-
भट्टारक-देवके एक गृहस्थ-शिष्य, -गङ्गवल्लिय दास-गावुण्डके पुत्र बोप्पय,
समाधि-विधिले मरण कर, स्वर्गको गये ।]

[EC, VIII, Sorab tl., n° 97.]

३०१

हलेबीड—संस्कृत और कचद

[वर्ष प्रमादिन, ११३३ ई० (६० राइस)]

[हलेबीडसे लगी हुई बस्तिहस्तिकामें, पार्श्वनाथ बस्तिके बाहरकी
दीवालमें एक पाषाणपर]

श्रीमत्परममंगमीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

जयतु जगति नित्यं जैनसंग्रोदयार्कः

प्रभवतु जिनयोगीव्रातपद्माकरश्रीः ।

समुदयतु च सम्यग्दर्शन-ज्ञान-वृत्त-

प्रकटित-गुण-भास्वद्-भव्य-चक्रानुरागः ॥

जगन्नित्यवल्लभः श्रियमपम्यवागदुर्लभः ।

सितातपनिवारणत्रितयचामरोद्भासनः ।
 ददातु यदधान्तकः पदविनम्रजम्भान्तकः
 स नस्सकल-धीश्वरो विजय-पार्श्वतीर्थेश्वरः ॥

सिद्धं नमः ॥

श्रीमन्नतेन्द्रमणिमौलिमरीचिमाळा-
 मालार्चिताय भुवनत्रयधर्मनेत्रे ।
 कामान्तकाय जितजन्मजरान्तकाय
 भक्त्या नमो विजय-पार्श्व-जिनेश्वराय ॥
 होयसळोव्वाश-वंशाय खस्ति वैरि-महीभृताम् ॥
 खण्डने मण्डलाप्राय शतधाराप्रजन्मने ॥

तदन्वयावतारम् ॥

नेगळ्ढा-ब्रह्मनिनत्रि सोमनेसेवा-श्री-सोमजं भूतलं
 पोगळुत्तिर्प-पुरूरवोर्व्वीपति सन्दायु-र्महीवल्लभं ।
 सोगयिप्पा-नहुषं ययाति यदुवेम्बुर्व्वीश-सन्तानदोळ् ।
 नेगळ्ढं श्री-सळनानतान्य-निकरं सम्यक्त्व-रत्नाकरम् ॥
 आ-सळ-नृपतिय राज्यश्री-संवर्द्धनमनेय्दे माडुव बगोयिं ।
 वासव-वन्दित-जिन-पूजा-सहितं सकल-मंत्र-विद्या-कुशलम् ॥
 मुददिं जैन-व्रतीशं शशकपुरद पद्यावती-देवियं मं- ।
 त्रदिनादं साधिसल् विक्रियेयोळे पुलि मेल् पाये योगीश्वरं कुं-
 चद-काविन्दान्तदं पोयसळ एनलभयं पोखुदुं पोयसळाङ्कम् ।
 यदु-भूपर्गादुदन्दिन्देसेदुदु सेळैयिं लोळ-शार्दूळ-चिह्नम् ॥
 आ-सन्द-यक्षी-वरदोळ् वसन्तं । लेंसागे तात्कालिक-नामदिन्दं ।
 वासन्तिका-देवतेयेन्दु पूजा- । व्यासङ्ग वं माडिदना-नृपाळम् ॥

कय्-साहिरे पुलि युण्डिगे ।
 कय्-साहिरे वीर-लक्ष्मी रिपु-नृप-राज्यम् ।
 कय्-साहिरे पलरादर ।
प्पोय्सळ-नामदोळे यादवोर्व्वीपतिगळ् ॥
 सत्कुलदोळगिन्दु माही- ।
 भृत्-कुळदोळगचळ-नाथनेसेवन्तेसेद ।
 तत्कुलदोळ् विजितारि-कु- ।
 भृत्कुळनादित्य-मूर्ति विनयादित्यम् ॥
 तदपत्यं रिपु-नृप-भुज- ।
 मद-मर्दननखिल-विबुध-जनता-सौख्य- ।
 प्रदनुदितोदित-महिमा- ।
 स्पदनेनिपेरेयङ्ग-भूपनङ्गज-रूपम् ॥
 एरेयङ्गन क्रूरसि तले- ।
 गेरगदे मुन्नरिदु बन्दु पदकैरगदवर ।
 प्परिये तले मुरिये निःशैल्व् ।
 ओरदुगे बिसु-नेत्तरेरगदिर्परे धुरदोळ् ॥
 ई-वसुधे पोगळलेचल- ।
 देविगवेरेयङ्ग-नृपतिगं त्रै-पुरुषर ।
 तावेनलादर्बल्ला- ।
 लावनिपति विष्णु-नृपतियुदयादित्य ॥
 अन्तवरोळ् विष्णु-मही- ।
 कान्तं निमिर्देसेये कूर्पुमाण्युं जसमा- ।

दन्तोळगि बेळगे पेर्मैय- ।

नान्तं नळ-नहुष-भरत-चरित-प्रतिमम् ॥

स्थिरमागि विष्णुवर्द्धन- ।

धरणीपाळंगे पट्टमागलोडं सा- ।

गरदन्तनहित-धरणी- ।

श्वरोडनेय्दित्तु विशदकीर्तिप्रसरम् ॥

पोडरदे साध्यमाय्तु मल्लेयल्लमुना-तुल्ल-देशवेळमुं ।

नडेये कुमार-नाडु-तळकाडुगळेम्बिवु कय्यो सार्हुव- ।

त्तडिपिडे मुच्चि कच्चि बेसकेय्दुदु विष्णु-नृपं कृपाणमं ।

जडियदे मुने कोङ्ग-नृपरित्तरिभङ्गळनेम् प्रतापियो ॥

चोळ-नृपाळ-पाण्ड्य-नृप-कैरळ-भूप-भुजावलेप-वि- ।

स्फाळननन्ध्र-गन्ध-गज-केसरी लाट-वराट-धारिणी- ।

पाळ-घनानिळं कदन-सूर-कदम्ब-वनाग्नि विष्णु-भू- ।

पाळनवार्य्य-शौर्य्य-निधियातन शौर्य्यमनारो कीर्तिपद् ॥

श्रीमन्महामण्डलेश्वरं । द्वारावतीपुरवराधीश्वरं । यादवकुलाम्बरद्युमणि
मण्डलिक-चूडामणि शशकपुर-वसन्तिका-देवी-लब्धवर-प्रसादम् । दर-
दळन्-मल्लिकामोदम् । परिहसित-शरदुदित-तुहिनकर-कर-निकर-हर-
हसन-सु-रुचिर-विशद-गशश्चन्द्रिका-श्री-विलासम् । निरतिशय-निखिल-
विद्या-विलासम् । विनमदहित-महिप-चूडालीढ-नूतन-रत्न-रस्मि-जाल-
जटिलित-चरण-नख-किरणम् । चतुस्समय-समुद्गरणम् । कर-कराळ-
करवाल-प्रभा-प्रचलित-दिशा-मण्डलम् । वीर-लक्ष्मी-रत्नकुण्डलम् । हिर-
ण्यगर्भ-तुळापुरुषाश्च-रथ-विश्वचक्र-कल्पवृक्ष-प्रमुख-मख-शतमखम् । राज-
विद्या-विलासिनीसखं । स्थिरीकृत-यादव-समुद्र-विष्णुसमुद्रोत्तुंग-रङ्गद-

बहलतर-तरङ्गौघाञ्छादित-दिशा-कुञ्जरम् । शरणागतवज्र-पञ्जरम् । आम-
लक-फल-तुलित-मुक्ता-लता-लक्ष्मी-लक्षित-वक्षम् । विबुध-जन-कल्प-
वृक्षम् । विजयगज-घटोत्तरल-कदलिका-कदम्ब-चुम्बिताम्बुदम् । प्रति-
दिन-प्रवर्द्धमान-सम्पदम् । रिपु-नृप-लय-समय-क्षुभित-वार्द्धि-वीचि-चयोच्च-
लित-जात्यश्व-हेषा-रवप्रूरित-दिशा-कुञ्जरम् । शस्तोदात्त-पुण्य-पुञ्जम् । इन्दु-
मन्दाकिनी-निश्वलोदात्त-गुण-यूथम् । गण्डगिरि-नाथम् । चण्ड-पाण्ड्यवे-
दण्ड-कूट-पाकलम् । जगद्देव-बल-कलकलम् । चक्रकूटाधीश्वर-सोमेश्वर-
मदमर्दनम् । तुल्य-नृपासुर-जनार्दनम् । कलपाळ-तारक-मयूर-वाहनम् ।
नरसिंह-ब्रह्मसम्प्राप्तम् । इरुङ्गोल-बल-जलधि-कुम्भ-सम्भवम् ।
हत-महाराज-वैभवम् । दलित्तादियम-राज्य-प्रभावम् । कदम्बवन-दावम् ।
चेङ्गिरि-बल-काळानलम् । जयकेशी-मेघानिलनेन्दिवु मोदलागे समस्त-
प्रशस्ति-सहितम् । तलकाडु-कोङ्कु-नङ्गलि-गङ्गवाडि-नोळम्बवाडि-
मासवाडि-हुलिगेरे-हलसिगे-वनवसे-हानुङ्गल्लु-नाडु-गोण्ड
त्रिभुवनमल्ल भुजबल वीर-गङ्ग-होयसळदेवम् ॥

निरुपमिताङ्गियं रुचिर-कुन्तलेयं नुत-मध्येयं मनो- ।

हरतर-काश्चियं धृतसरस्वतियं विलसद्दिनीतेयम् ।

स्फुरदुरु-कीर्त्तिमन्मधुरेयं स्थिरवागिरे तन्न तोळोळोल्द ।

इरिसिदनुर्वराङ्गनेयनप्रतिमं विभु-विष्णु-भूमुजम् ॥

तदीय-पाद-पद्मोपजीवि । निरन्तर-भोगानुभावि । जिनराज-राजत्-
पूजा-पुरन्दरम् । स्वैर्य-मन्दिरम् । कौण्डिन्यगोत्र-पवित्रम् । एचि-
राजप्रिय-पुत्रम् । पोचाम्बिकोदारोदन्वत-पारिजातम् । शुद्धोभयान्वय-
सञ्जातम् । कर्णार्ढधरामरोत्तंसं । दानश्रेयांसम् । कुन्देन्दु-मन्दाकिनी-
विशद-यशःप्रकाशं । मङ्ग-विद्या-विकाशम् । जिन-मुख-चन्द्र-वाक्-

चन्द्रिका-चकोरम् । चारित्र-लक्ष्मी-कर्णपूरम् । धृतसत्य-वाक्यम् ।
 मन्त्रि-माणिक्यम् । जिन-शासन-रक्षामणि । सम्यक्त्व-चूडामणि ।
 विष्णुवर्द्धन-नृप-राज्य-वार्द्धि-संवर्द्धन-सुधाकरम् । विशुद्ध-रत्नत्रयाकरम् ।
 चतुर्विधानूनदानविनोदम् । पद्मावती-देवी-लब्ध-वर-प्रसादम् । भय-
 लोभदुर्लभम् । जयाङ्गना-वल्लभम् । क्लृप्त-भट-ललाट-पट्टम् । द्रोह-
 घरद्वम् । विबुध-जन-फल-प्रदायकम् । हिरिय-दण्डनायकं । अप्रतिम-
 तेजम् । गङ्गा-राजम् ।

मत्तिन मातवन्तिरलि जीर्ण-जिनालय-कोटियं क्रमं- ।
 बेत्तिरे मुनिनन्ते पल-मार्गदोळं नेरे माडिसुत्तवत्य्- ।
 उत्तम-पात्र-दानदोदवं मेरुत्तिरे गङ्गावाडि-तोम्- ।
 वत्तरु-सासिरं कोपणवादुदु गङ्गाण-दण्डनाथनिम् ॥
 नुडि तोदळादोडोन्दु पोणर्दञ्जिदोडन्तेरडन्य-नारियोळ् ।
 नुडिगेडेयागे मूरु मरे-वोक्करनोण्णिसे नाल्कु बेडिदम् ।
 पडेयदोडय्दु कूडिदेडेगोगदोडारधिपङ्गे तपि व- ।
 ईडे गडिवेळुवेळु-नरकङ्गळिवेन्दपनल्ले गङ्गाणम् ॥
 आ-गङ्गा-चमूपतिगं ।

नागल-देवीगमधीत-शास्त्रं पुत्रम् ।

चागद बीरद निधियुम् ।

भोग-पुरन्दरनुमप्य बोप्प-चमूपम् ॥

परमार्थं विद्वदर्थं तविसदनधनं व्यर्थवेन्दर्त्थिसार्थम् ।

निरवधं ज्ञातविधं दळित रिपु-मनोधं तिरस्कारिताधं ।

धरे तन्न कीर्त्तिपन्नं विबुध-ततिगे पोन्नं विपश्चित्सन्नं

करेदीवं बोप्प-देवं समर-मुण्ड दशग्रीवनुद्यत्प्रभावम् ॥

समरायाताहित-क्षोणिभृदतुळबळोधानदोळ् पावकानु- ।
 क्रमदिन्दं श्रीडिमुत्तु रिपु-नृपति-शिरः-कन्दुक-क्रीडितं तत्-
 समयोद्भूतारुणाम्भो-भरित-समर-धात्री-सरो-मध्यदोळ् वि- ।
 क्रम-लक्ष्मी-लोलनोलाडुवनेरेद-बुधर्गप्य दण्डेश-बोप्पम् ॥
 लोभिगळं पोलिपुदे य- ।
 शो-भाजननप्य बोप्प-दण्डेशनोळिन् ।
 ई-भू-मुवनदोळाहा- ।
 राभय-भैषज्य-शास्त्र-दानोन्नतियिम् ॥

तदीय-गुरु-कुलम् ॥

गौतम-गणधररिन्दा-यात-परम्परेय कोण्डकुन्दान्वय-विख्यात-
 मलधारि-देवर । प्यूत-तपोनिधिगळा-मुनीश्वर-शिष्यर् ॥ श्री-राद्धान्त-
 सुधाम्बुधि-पारग-शुभचन्द्र-देव-मुनिपर्व्विमळा-चार-निधि-गङ्ग-राजन ।
 धीरोदात्ततेयनाब्द बोप्पन गुरुगळ् ॥ जिन-धर्म-वनधि-परिवर्द्धन-
 चन्द्रं गङ्ग-मण्डलाचार्य्यर्-स्पावन-चरितरेन्दु पोगळ्बु [दु] जनं
 प्रभाचन्द्र-देव-सैद्धान्तिकरम् ॥

इवम्बोप्प-देवन देवतार्चन-गुरुगळ् ॥

जळजभवङ्गविन्तु बरेयल् कडेयल् करुविट्टु गेय्यल- ।
 तळगवेनिप्पुदं तोळप बेळ्ळिय-बेड्ढेने पोल्बुदं जगत्- ।
 तिलकमनी-जिनालयमनेत्तिसिदं विमु-बोप्प-देवन- ।
 गळिकेय राजधानिगळोळोप्पुव दोरसमुद्र-मध्यदोळ् ॥

गङ्ग-राजङ्गे परोक्षविनयवागि देवर्गे ।

सासिर दैवत्तैदेन-ला-शकनद्वं प्रमादि-माधव-बहुळ- ।
 श्री-सोमज-पञ्चमियो-ळैसेने बोप्पं प्रतिष्ठेयं माडिसिदम् ॥

प्रतिष्ठाचार्यर् श्री-नयकीर्ति-सिद्धान्त-चक्रवर्तिगल् ॥
 भ्रान्तिनोळेनो मुळेगळद चारण-शोभित-कोण्डकुन्देयोळ् ।
 शान्त-रस-प्रवाहवेसेदिर्पिनविई मुनीन्द्र-कीर्तिया- ।
 शास्तवनेय्दितन्तवर सन्ततियोळ् नयकीर्ति-देव-सै- ।
 द्वान्तिक-चक्रवर्ति जिन-शासनमं बेलगळे पुष्टिदं ॥

श्री-मूलसंघद देशिय-गणद पुस्तक-गळद कोण्डकुन्दान्वयद हन-
 सोगेय बळिय द्रोहधरदु-जिनालय[म्]-प्रतिष्ठानन्तर
 देवर शेषेयनिन्द्र कोण्ड-पोगि विष्णुवर्द्धन-देवर्गे बङ्गापुरदोळ् कुडु-
 ववसरदोळ् ।

कवियेरिंगेन्दु बन्दा-मसणनसम-सैन्यङ्गळं विष्णु-भूपं ।
 तवे कोन्दा-प्राज्य-साम्राज्यमनतुळ-भुजं कोळ्ळुदुं पुष्टिदं भू-
 भुवनकुःसाहमागुत्तिरे बुध-निधि लक्ष्मी-महा-देविगागळ् ।
 रवि-तेजं पुण्य-पुञ्जं दशरथ-नहुषाचार-सारं कुमारम् ॥
 भूभृत्-पति-मद-करि-हरि-शोभास्पद नचळता-समुत्तुङ्गं श्री- ।
 प्राभवनुदिताखण्डळ-वैभवनेम् गोत्र-तिळकनादनो पुत्रम् ॥

अन्तु विजयोत्सवमुं कुमार-जन्मोत्सवमुमागे संतुष्ट-चित्तनागिई विष्णु-
 देवं पार्श्व-देवर प्रतिष्ठेय गन्धोदक-शेषगळं कोण्डु बन्दिर्हिन्द्रं कण्डु बर-
 वेळ्दिदिरेहु पोडेवदु गन्धोदकमुं शेषेयुं कोण्डेनगी-देवर प्रतिष्ठेय-फलदिं
 विजयोत्सवमुं कुमार-जन्मोत्सवमुमादुवेन्दु सन्तोष-परम्परेयनेय्दि देवर्गे
 श्री-विजय-पार्श्व-देवरेम्ब पेसरुं कुमारंगे श्री-विजय-नारसिंह-देवनेम्ब
 पेसरुमनिहु कुमारंगम्युदय निमित्तमुं सकळ-शान्त्यर्थमुमागे विजयपार्श्व-
 देवरचतुर्विंशति-तीर्थङ्कर त्रि-काल-पूजार्चनामिषेकक्ष्मी-बसदिय खण्ड-
 स्फुटित-जीर्णोद्धारणकं जितेन्द्रियरप्प तपोधनराहार-दानकं आसन्दि-

नाड जावगळुमं बसदियि बडगण बैनकन-मण्ठेयदि मूडलु राज-हस्त-
दल् नूरेणभत्तु-हस्त-प्रमाण-भूमियोळिईरडु केरियुमनळिन्दाभेयद गोण्टिनळि
नट्ट कळिन्दिर्व्वडगळागिईरडुं केरियुं तेळिगरिपत्तोळलवनळि पडुवल
माधवचन्द्र-देवर बसदिवरविद केरियुमनळि पडुवण हिरिय-दण्ड-
नायकर मनेयि पडुवल तेङ्क-देशेय राज-वीथिय मूडण बेलुदूर केरिय
हितिल् मेरेयागिई भूमियुमनळि बडगल् शिरियङ्गडिये गडि आसिरि-
यङ्गडिय मूडण-कडे यरडङ्गडियु । जावगळु-सीमे (जागेकी ५ पंक्तिगोमै
सीमाकी चर्चा है) इन्ती-स्थळविनितुमं श्री-विष्णुवर्द्धन-होयसळ-देवं
श्री-विजय-पार्श्व-देवर्गे धारा-पूर्व्वकं माडि कोट्टम् (वे ही अन्तिम छोक)

विदिताशेष-पदार्थ-नूत-विजय-श्री-पार्श्व-देवोळसत्- ।

पद-पूजा-निचयके दान-महितं केय् गदेयं पुण्य-बी- ।

जद पेच्चिङ्गे निवासमं सकळभव्याम्भोजिनीभास्करम् ।

मुददि तेळिग-दास-गौण्ड-विभु कोट्टं सन्ततं सत्विनम् ॥

इदनूर्जितमेने नीम्मा- ।

ळपुदेन्दु तेळिगर-दास-गावुण्डं पु- ।

प्य-देव-पूजाकर-शान्- ।

ति-देव-विभुगमळ-वारि-धारेयनित्तम् ॥

दासगौण्डनहळिय कुम्भार-गट्टद केळगण-मडुविन मोहमेडिवेयलु
मूवत्तु-कोळग-गदे आ-यरडु-को.....नडुवण एरेय-केय्युळ्ळनितुं मूडलु ताव-
रेयकेरे हडुवलु होल सीमे गडियागिद भूमियुळ्ळनितुमं तेळिगर-दास-
गावुण्डनुं राम-गावुण्डनुं उत्तरायण-संक्रमणदलु श्री-विजय-पार्श्व-दे-
वरष्ट-विधार्चनेगे सर्व्व-बाधा-परिहारवागि पूजकर शान्तप्यङ्गे धारा-पूर्व्वकं
कोट्टम् ॥

आरं पोत्वरे युद्ध-दैत्य-विजय-श्री-पार्श्व-मह्वारको-

दार-श्री-पद-पङ्कज-भ्रमरनं सौजन्य-वाक्-सारनम् ।

सारोदार-जिनेश्वरार्चन-नियोगोद्योग-विश्रान्त..... ।

....श्री-वधु-कान्तनं पृथुल-कीर्त्याशान्तनं शान्तनं ॥

श्री-विजय-पार्श्व-देवर्गे बिट्ट जावगल्लुं गङ्गऊरदलि खण्ड-स्फुटित-
जीर्णोद्धारके जावगल्लु । रङ्ग-भोगद विद्यावन्तरिगे गङ्गऊरु । श्रीमन्-
यकीर्त्ति-सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगळ शिष्यरु नेमिचन्द्र-पण्डित-देवर
श्री-मूलसंघद समुदायङ्गळु अवर शिष्य-सन्तानगळे ई-धर्मवना-चन्द्रार्कि-
तारंबरं सलेसुवरु ॥

[जिनशासनकी प्रशंसाके बाद पार्श्व-जिनेश्वरका माहात्म्य । होयसल
राजाओंके वंशकी परम्परा:—

ब्रह्म-भद्रि-सोम-पुरूरव-भायु-नहुष-ययाति-यदु, जिसके वंशमें सल उत्पन्न
हुआ । जिस समय, सलके राज्यकी समृद्धिके लिये, कोई जैन-व्रतीश मन्त्रों-
द्वारा शशकपुरकी पद्मावती देवीको वंशमें कर रहा था, एक चीतेने उछल
कर आक्रमण किया, चीता इससे उसकी सिद्धि भंग करना चाहता था ।
उसी समय योगीश्वरने अपने चामर (या पंखे) की मूठको पकड़कर कहा
'पोय् सल' (सल, मारो): इतना उनके कहते ही उसने निडर होकर उसे
मार दिया; उस समयसे यदु राजाओंका नाम 'पोय्सल' पड़ गया और
उनके झण्डेपर चीतेका चिह्न कहराने लगा । उस 'बन्धो' के प्रसादसे ऋतु
वसन्त हो गई और उसी ऋतुके नामसे राजाने उसका 'वासन्तिका' देवीके
नामसे पूजन किया ।

उसी वंशमें विनयादित्य उत्पन्न हुआ । उसका पुत्र परेयंग था । उससे
एचल-देवीके द्वारा, ब्रह्मा, विष्णु और शिवकी तरह, बल्लाल, विष्णु और
उदयादित्य उत्पन्न हुए । इन सबमें विष्णुका नाम सबसे ज्यादा प्रसिद्ध
हुआ । (उसकी दिग्विजयका वर्णन, उसकी प्रशंसा)

(उसके पदों और उपाधियोंका वर्णन) उसने तलकाड्ड, कोङ्ग, नङ्गलि, गङ्गवाडि, नोलम्बवाडि, मासवाडि, हुळिगेरे, हलसिगे, बनवसे और हानुङ्गलपर अधिकार कर लिषा था । इतना ही नहीं, मङ्ग, कुन्वळ, मध्यदेश, काञ्ची, विनीत और मधुरा (वर्तमानका मदुरा) ये सब उसीके अधीन थे ।

तत्पादपद्मोपजीवी पुराना दण्डनायक गङ्गराज था । (उसकी बहुत-सी उपाधियोंका उल्लेख) उसने अगणित ध्वस्त जैन मन्दिरोंका पुनर्निर्माण कराया । अपने अनवधि दानोंसे उसने गङ्गवाडि ९६००० को कोपणके समान चमकाया । गङ्गकी रायमें सात नरक ये थे:—झूठ बोलना, युद्धमें भय दिखाना, परदारारत रहना, शरणार्थियोंको शरण न देना, अधीनस्थोंको अपरितुष्ट रखना, जिनको पासमें रखना चाहिये उन्हें छोड़ देना, और स्वामीसे द्रोह करना ।

गङ्ग-चमूपति और नागळ-देवीसे बोप्प-चमूप उत्पन्न हुआ । (उसकी प्रशंसा) ।

उसका गुरु-कुल—गौतम गणधरकी परम्परामें विख्यात मलधारिदेव हुए, जो कुन्दकुन्दान्वयी थे । उनके दिव्य शुभचन्द्रदेव बोप्पके गुरु थे । गङ्गमण्डलाचार्य प्रभाचन्द्र-देव-सैद्धान्तिक उसके पूजनीय गुरु थे ।

यह जिनमन्दिर—जिसकी शोभा रजतमय कैलाशके समान थी—बोप्पदेवने दोरसमुद्रके बीचमें बनवाया । गङ्गराज (अपने पिता) की मृत्युके स्मारकमें (उक्त तिथिको) बोप्पने मूर्तिकी स्थापना की; प्रतिष्ठापक नयकीर्ति सिद्धान्त-चक्रवर्त्ती थे । (उनकी प्रशंसा) ।

श्री-मूलसंघ, देशिय-गण, पुस्तक-गण्ड, कोण्डकुण्डान्वय तथा हनसोरो-बलिके इस द्रोह-चरट्ट (पाप-नाशक) जिनालयकी स्थापनाके बाद, जिस समय पुरोहित (इन्द्रलोग) चढ़ाये हुए भोजन (शेष) को विष्णुवर्द्धनके पास बङ्गापुर ले गये,—उस समय राजा विष्णुने मसनको, जो अपार सेनाके साथ उसपर दूट पड़ा था, हराकर मार डाला, तथा उसका सारा साम्राज्य जप्त कर लिया, और उसी समय (रानी) लक्ष्मी-महादेवीके एक पुत्र उत्पन्न हुआ, जो गुणोंमें दशरथ और नहुषके समान था, (अन्य प्रशंसाएँ), तब
शि० ३१

राजाते उनका स्वागत कर प्रणाम किया तथा यह समझकर कि इन्हीं पार्श्वनाथ भगवानकी स्थापनासे उसकी युद्धमें विजय तथा पुत्रोत्पत्ति तथा सुख-समृद्धि हुई है, उसने देवताका नाम विजयपार्श्व तथा पुत्रका नाम विजय-नारासिंह-देव रक्खा ।

अपने पुत्रकी समृद्धि तथा विश्व-शान्तिको बढ़ानेके लिये उसने बासन्दि-नाड्के जावगळका इस मन्दिरके लिये दान किया । और भी (उक्त) बहुत-से दान दिये ।

तेली दास-गौण्डने भगवानके लिये पुरोहित शान्ति-देवको भूमि-दान किया । पार्श्व-जिनकी अष्टविध पूजाके लिये दास-गौण्ड और राम-गौण्डने 'उत्तरायण संक्रमण' के समय (उक्त) दान दिये । शान्तिकी प्रशंसा । नेमिचन्द्र-पण्डित-देव इस कामकी व्यवस्थापर रक्खे गये । ये नयकीर्ति-सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिके शिष्य थे ।]

[EC, V, Belur tl., n° 124.]

३०२

कोल्हापुर—संस्कृत

[११३५ ई० (फ्लीट) ।]

मूल लेख अक्टूबर १९०० ई० तक कहीं प्रकाशित नहीं हुआ था, ऐसा मि० जे. एफ. फ्लीटका कहना है । उन्होंने जो इस लेखका उल्लेख या संकेत किया है वह एक पाण्डुलिपि परसे किया है ।

[यह लेख ११३५ ई० का है और कोल्हापुरमें पाया गया है । इसमें बताया गया है कि कवडेगोळके सन्तेय-मुद्गोळेमें 'महासामन्त्र' निम्ब-देवरसके द्वारा निर्मापित एक जैनमन्दिरके मूलनायक पार्श्वनाथ भगवानको कुछ स्थानीय महसूलोंका दान किया गया । लेखमें ७ व्यक्ति तथा उनके स्थानोंके नाम दिये हैं जिन्होंने दान किया था । वह दान कोल्हापुरकी रूपनारायण 'बसदि' के 'आचार्य' श्रुतकीर्ति त्रैविद्यदेवके लिये किया गया था । इस लेखमें 'कुण्डिपट्टन' नामके नगरका उल्लेख है । इस नगरके नामसे देशका नाम भी वही पड़ गया था ।]

[IA, XXIX, p. 280, a]

अनुक्रमणिका ।

[विशेष नाम-सूची]

इस अनुक्रमणिकामें जैन मुनि, आर्यिका, कवि, संघ, गण, गच्छ, ग्रन्थ तथा राजा, रानी, गृहस्थों और सब प्रकारके स्थानोंके नाम समाविष्ट किये गये हैं । नामके पश्चात्के अंक लेख-नम्बर समझने चाहिये ।

अ [कक]	४४	अनन्तकीर्तिदेव	२०८
अकलङ्क	२०७, २१३, २१४, २१५, २१७, २७७	अनन्तपाळय्य	२४३
अकालवर्ष	९५, १२४, १२७	अनन्तवीर्य	२१३, २६४, २६७, २६९
अक्षपाद	२१५	अनन्तवीर्यसिद्धान्तकर	२७७, २९९
अंग	२	अनन्तवीर्यय्य	१५४
अङ्गदेव-भटार	१९३	अनवय-दर्शन	१४५
अङ्ग	२८८	अन्दरि (नगर)	१२१, १२२
अचलदेवि	२१३	अन्दरि-आलतूर	१४२
अचला	७३	अन्धकासुर	२१३
अजितसेन	२१५, २३१, २७४	अन्धासुर	२१३
अजितसेनदेव	२१४	अन्ध	३०१
अजितसेनपण्डित	१६८, २४८, २६६	अब्बलदेवि	२१३
अजितसेनपण्डितदेव	२२६	अब्बलब्बा	१४२
अजितसेन-भट्टारक	२८८	अब्बेय	२७३
अज्जनन्दि	१३४, १३५,	अंबरसेन	२२८
अङ्कलि	१४४	अभणन्दि (अभयनन्दि)	९५
अप्तिकाम्बिका	१८६	अभयणन्दि-पण्डित-देवर	१५०
अप्तिलिनाण्ड	१४४	अभिनन्दनाचार्य	२१३
अदटरादित्य	२२४	अभिमन्यु	२२८
अधियक्षात्रा	७	अभिमानदानी	२६९
		अमळचन्द्र	२२४
		अमोघवर्ष	१२७, १४२, १८२

अमोहिमि	५	अर्यनन्दि	४१
अम्बलिमणुं	९५	अर्यवेरि	२९
अम्भराज	१४३, १४४	अर्यघोरिकी (संभोग)	८०
अयस [ङ] मि [क]	६३	अर्यक्षेर	२२
अयहाटि [कुल]	८०	अर्यगरिक	२१
अयोध्यापुर	२७७	अर्य [दत्त]	३१
अय्यणचन्द्रसङ्ग	२१३	अर्यदेव	५५
अय्यभिरत्त	५२	[अ] र्यपाल	३१
अय्यवेरि (शाखा)	५६	अ [र्यमि] [हि] लो]	२२
अय्यर्ष	१४४	अर्यसीह	३१
अय्यपोटि	१४४	अर्यहाटकिय	१७
अरकमहक्की	१८९	अर्हणन्दि	१४४, १६०, २०५
अरकेरे	२२४	अर्हदभक्त	१५०
अरट्टि	१२०	अर्हद्वलि	२७७
अरसय्येगन्तिबद्	२३४	अर्हनहक्कि	२८४
अरसार्य	१३७	अलक्तक (नगर)	१०६
अरस्सर	२२४	अवन्ति	२१७
अरसिकब्बे	१९८, २६४	अवरवाडि	१२७
अरहं	६८	अविनीत ९५, १२१, १२२, १४२, २१३	
अरिष्टणेमि	२८	अविनीत-गाङ्ग	२७७
अरुक्क, १८८, १८९, १९०, १९२,		अश्वपति	९१
२०२, २१५, २१६, २४८, २८८		अष्टोपवासिगन्ति	२१०
अरुमुळिदेव	२१३, २४८	अष्टोपवासिमुनि	२६९
अरुमोळि	१७१	असा	८६
अर्ककीर्ति	१२४	अहरिर्षि	१०४
अर्जुनभूपति	२२८	अहिच्छत्र-पुर	२७७, २९९
अर्जुनवाद (ड)	१०६	अळवनपुर	२९९
अम्मोनिदेव	१६०	अळचपुर	१४२

आ		इन्दरेयप	२१३
आचार्य भद्र	९१	इन्द्र	१२७
आजीविक	१	इन्द्रकीर्ति	१३०
आदित्यदण्डाधिनाथ	२८८	इन्द्रराज	१२४, १४३, १४४, १६४
आनंदरु	२४८	इरटपाडि	१७४
आनध	२१७, २८८	इरिववेडेऊ	१६६
आन्धी	२८८	इस्कोल	३०१
आमीर	२०४	इरुलकोलु	१४४
आयवती	५	इलाहमहादेवि	१६७
आरुविलि	१४४	इला (ठ) राजर	१६७
आर्दबळिळ	२७७		
आर्यसेन	१८६	ई	
आर्यदेवर	२१३	ईद्रपा (ल)	१०
आषाढसेन	६७	ईल	१७४
आलतूर (नगर)	१२१, १२२	ईलमण्डल	१७४
आल्लगु	१२७	इ	
आहवमल	२८०	उगनिहिय	८३
आहवमल्लदेव	२०४, २१३	उग्र (अन्वय)	२४८
आळवर	२१३	उग्र-वंश	२१३, २४८
इ		उच्चेनागरी	१९, २०, २२, २३, ३१, ३५, ३६, ५०, ६४, ७१
इडिगूर (विषय)	१२४, २१८	उच्चमृत्ति	१०३
इडियम	२६३	उज्जयिनीपुर	२७७
इडियुरि	१४४	उजेनियपुर	२९९
इडैतुरैनाडु	१७४	उझलिका	८८
इंगिणिबम्म	१४२	उडैयार	१७४
इन्दगेरी	१२७	उतरदासक	४
इन्दिर	१७४, २१२	उत्तर-अधुरा	१९८, २०३, २४८
इन्दुगुड	१२७	उत्तिरलाड	१७४
इन्दरेयक	२७७		

उदयराज	२२८	एराग	२३७, २७७
उदयादित्य	२०७, २६३, २९९, ३०१	एरेगितूर	१२१
उदयाम्बिका	२४३	एरेनछूरा	१२१
उनलारु	१२७	एरेय	२६७
उमुलिदेवज्ञ	२१३	एरेयज्ञ	२१३, २१८, २७७, २९९
उम्मलियन्ने	२१९	एरेयर्प	२७७
उरनूरार्हत (आयतन)	९४	एरेयज्ञ	२६३
उर्वी-तिलक	२१३	एरेयप्प-रस	१३८
		एरेय्य	१०९
ऋषभ	९६	एळगामुण्ड	१०७
		एळचाय्य	२४१
		एळे (रे) गङ्गदेव	१४२
एकदेव	१४९	एळेव-बेडङ्ग	१६४
एकवीर	२६९		
एकसन्धि भट्टार	२१३	ऐ	
एकलरस-देव	२९१	ऐरावत	२९९
एचल-देवि	१९२, २१८, २६३, २९९, ३०१	ओ	
एचले	२७४	ओखा	८८
एचिराज	३०१	ओखारिका	८८
एजलदेवि	२१३	[ओ] घ	३१
एडदोरे	२९९	ओडेयदेव	२१४, २१६, २४८,
एडय्य	१८३	ओङ्ग	२१३, २२६
एडेमले	१९३	ओङ्गमरस	२१३
एडेहळिळ	२९९	ओङ्गविषैय	१७४
एदेदिण्डे (विषय)	१२३	ओङ्गिठगे	१२७
एरकर्ण	२५३	ओद (शाखा)	७६
एरकाट्टिसेट्टि	२१८	ओङ्गमरस	२१३
एरकोटि	१२७	ओहर्नदि	४७-८

क		कनकनन्दिपण्डितदेवर	२८०
ककसधस्त	५७	कनकप्रभदेव	२३७
ककुभ	९३	कनकप्रभसिद्धान्तदेव	२३७
ककराज	१२४	कनकसेन	१३७, १३९
कङ्कर्गण	१६०	कनकसेनदेव	२१४
कङ्कराज	१४२	कनकसेनपण्डितदेव	२१६
कक्षेयगङ्गा	२१३	कनकसेनभट्टारक	२१३
कच्छेयगङ्गा	१४२	करकगिरिय-तीर्थ	१३९
कक्षरसस्त्रैगोदृ-गङ्गा	१८२	कनकपुर	२१३
कक्षरिगुण्ड	१४४	कनियसिका (कुल)	७६
कक्षलदेवि	२१३, २७७, २९९	कनिष्क	१९, २५
कक्षि	२६३	कन्तियर-नाकय्य	२१०
कटकराज	१४३	कन्दवर्ममालक्षेत्र	१३७
कटकाभरण (जिनालय)	१४३	कन्दुकाचार्य	२१३, २४८
कणिष्क	२४	कल	१३०, २०५, २२७, २९९
कण्ठिका	१४३	कलकैर	२३७
कण्णेश्वर	१२४	कलङ्किगे	१८६
कण्ठवेना	२	कलपार्थ्य	२०४
कदम्ब (कुल)	९५, ९७, ९८, ९९, १००, १०१, १०४, १०५, १०८, ११४	कलमुञ्जे	२७७
	१२१	कलर-देव	१४०
कदम्ब-दिसायर	२४९	कलरसान्तर	२१३
कदम्मा (म्मा)	१०३	कन्याकुब्ज	२१३, २१९
कनक (कुल)	१४६	कमलदेव	१२८
कनकचन्द्र	२९९	कमलभद्र	२१३
कनकनन्दि	२७७	कम्प	२७७
कनकनन्दि-त्रैविद्य	२९९	कम्पनाण्डु	१४३
कनकनन्दि-त्रैविद्य-देव	२५१	कर	२१३
		करण्डिग	१०६
		करदूषण	२१३

करहड	१८६	कलिविष्टरसू	१४०
करहाट	२०४	कलिविष्णुवर्द्धन	१४३, १४४
कर्कर	१२७	कलुकरे-नाड	१७०
कर्कुहस्थ	५८	कलुचुम्बर	१४४
कर्णगट	२०४, २०१	कल्लेके (?) देव	२६९
कर्णमपटि	१०२	कल्लेके-देवइ	१७९
कर्णाट	१७२	कल्लपु तीर्था	१३८
कर्पटि	११४	कल्याण	२१९
कर्पूरसेट्टि	२१८	कल्याणपुर	२५३
कर्म्मगल्लए	१०७	कल्पकुरु	१४३
कर्म्मटेश्वर	१४९	कविपरमोष्ठिस्वामि	२१३
कल	७५	कशपीय	६
कलशुरि	१०८	कसुथ	२२
कलसराजा	१४६	कस्तूरि-भट्टार	१८३
कलाचन्द्र-सिद्धान्त-देव	२२४	कळपाळ	३०१
कलि-गंग-देव	२१९	कळंबूरुनगर	२६७
कलि-गङ्गा	२६७	कळम्बडि	१८६
कलिंगग भूपति	२१९	कळिङ्ग	२०४
कलिंग	२, ३	कयेळेयज्वरसि	२६३
कलिंग	१०६, १०८	कळलपुर	१३८
कलिंगाजिन	२	क्षेम	६९
कलिङ्ग	२१७, २८८, २९९	का	
कलिङ्ग-देश	२७७		
कलिदेव	२१७, २२७	काकुस्थराज	९९, १०२
कलियङ्ग	२७७	काकुत्सवर्मा	९६
कलियङ्ग-देव	२५३, २९९	काकुत्स्थवर्म्म	१००
कलियङ्ग-वृष	२५३	काकेयनूरु	१२७
कलियर मल्लि-शेट्टि	२९९	काकोपल	१०६
कलि-रक्तस-गङ्गा	२६७, २९९	काङ्गणि-वर्म्म	१२२

काचवे	२१८	काळोज	२५३
काशी	११४,२४८	कि	
काशीनाथ	२१४	किणयिग (ग्राम)	१०६
काशीपुर	१०८,२८८	कितौवोले	१२७
काशीधर	१०१	किबरी (क्षेत्र)	१०९
काडवमहादेवि	२१३	किरणपुर	१४३
काडुवेष्टि	२१३	किविरिय्य	१८४
काणूरगण	२६३,२९९	किशुम्बूर (ग्राम)	१२२
काण्वायन	९४,९५,१२१	की	
कातिकेय	११४	कीर्तिवर्म	१०७
कादम्ब (कुळ)	२०९	कीर्त (र्ति) नन्द्याचार्य	१२१
कादलबलि	१८२	कीर्तिवर्मा	१०८,११४
कारेय	१३०,१८२	कीर्तिदेव	२०९
कारेयबागु	१३७	कीर्तिनारायण	१६४
कार्तवीर्य	१३०,२३७,१७५,२७६	कीलनाड	१२७
कार्तवीर्यदेव	२८०	कु	
कार्तवीर्य	२३७	कुमुटासन-महधारिदेव	२८४
कालवज्र (ग्राम)	९८	कुमुम्बालु (ग्राम)	२३७
कालिदास	१०८,२१३	कुङ्कुम-महादेवि	२१०
काल्क-देवयसरन (अन्वय)	१४०	कुडल्लरद	१२०
कावेरि	१०८,२७७,२९९,	कुण्डकुन्द (अन्वय)	२०९
कास्मीर	२८८	कुण्डकुन्दाचार्यरू	२०९
काळ	२६४	कुलुन्गल (देश)	१२४
काळसेन	२३७	कुन्तलापुर	२९९
काळिदास	१९८	कुन्तळ	२०४,२०९,२८०
काळियक्क	२८८	कुन्तळी	२८८
काळिसेष्टि	२१८	कुन्दद	२१३
काळेमण्णे	२१९	कुन्दवैजिनालय	१७४
		कुन्दशक्ति	१०९

कुन्दाचि	१२१	कुरुलि	२९९
कुन्दूर (विषय)	१०३	कुरुलियतीर्थ	२९९
कुप्पटूर	२०९	कुलचंद्र	२४५, २८०
कुवेरगिरि	१९८	कुलचन्द्रदेवमुनि	२०७
कुब्जविष्णु	१४४	कुवलालपुर	८२, १३१, १३९, २१९,
कुब्जविष्णुवर्द्धन	१४३		२५३, २६७, २७७, २९९
कुमारमित	२६, ४२	कुहुण्डि (देश)	२३७
कुमारम्ब	२६४	कुहुण्डी (विषय)	१०६
कुमार-गङ्गा-रस	२५३	कू	
कुमारगजकेसरि	२४३	[कू] केकः	२२८
कुमारदत्त	१००	कूण्डि	२२७
कुमारनन्दि	६४, १२१	कूरगन्पाडि (ग्राम)	१६७
कुमारपुर (ग्राम)	९०	कूर्चक	९९, १०३
कुमार बलालदेव	२९३	कूविलाचार्य	१२४
कुमारभटि	४२	कू	
कुमारमित्रा	४२	कृष्ण	१०५, १४२
कुमारसेनदेव	२१४	कृष्णराज	१२३, १३०, १४३
कुमारसेनदेवर	२१३	कृष्णवर्म	९५, १०५, १२१, १२२
कुमारसेन-व्रतिप	२४८	कृष्णवर्म	१४२
कुमार-सेनाचार्य	१३७	कृष्णवल्लभ	१३७, १४४
कुमारीपवत	२	कै	
कुमुदचन्द्र भट्टारकदेव	२४६	कैशगावुण्ड	२१९
कुम्बयिज	१०६	केतलदेविय	१८६
कुम्बशिक	१४६	केतवेदेवि	२१८
कुम्बसे-पुर	१४६	केतवे	२५१
कुम्मुदवाड	१८२	केतुभद	२
कुह	२०४	केदल	१२७
कुल्लराजिग	२६७, २७७	केरल	१०६, १०८, ११४, १७४, २०४,
			२६४, ३०१.

केशवनन्द—	१८१	कोडगिनाड	२९३
केसरिवर्म	१६७	कोडग	१४०
केसरदेव	२०८	कोडनपूर्वदबलि (ग्राम)	२९२
केळयबरसि	२९९	कोण्डकुन्द (अन्वय) ९५, १२२, १२३,	
केळेयबरसि	२१३	१५०, १५८, १६६, १८०, २०४,	
केळेयन्वे	२१९	२२३, २३२, २३९, २६७, २६९,	
		२७५, २७७, २८०, २८४, २९४,	
		३०१	
को [कु] न्तिदेवी	११८	कोण्डकुन्दाचार्य	२१३, २१४
कोक्किलि	१४३, १४४	कोण्डनूर	२२७
कोगलि-नाडोळ	२४९	कोन्दकुन्द (अन्वय)	१२७
कोङ्कण	१०८, २७७	कोपण-तीर्थ	२९९
कोङ्ग	२६४	कोप्परकेशरिपन्मरान	१७४
कोङ्गणि	९५	कोमरचे (ग्राम)	१०६
कोङ्गणिवर्म	९४, १३१, १४९, १५४,	कोमर-वेडेङ्ग	१४२
कोङ्गाळव	१८८, १९०	कोमारसेन-भट्टारद	१३८
कोहु	२९९, ३०१	कोम्मराज	१८६
कोहुणि	१८२	कोयतूर	२६३, २९९,
कोहुणिवर्म	९०, १४२	कोरप	२६४
कोङ्गोळ	२६४	कोरिकुन्द (विषय)	९४
कोळि	५	कोरुकोलनु	१४४
कोटिभडुवगण	१४३	कोलनूर	१२७
कोटन	१७४	कोलनूरात	१२७
कोटसे	१२७	कोल्लगिरि	२८०
कोटिय (गण)	३५, ५५, ५६, ५९, ६८,	कोल्लविगण्ड	१४४
	७०, ७४, ९२,	कोल्लपुर	२८०
कोटिया (कुल)	१८, १९, २०, २२, २३,	कोविराज केसरिवर्मन्	१७१
	२५, २९, ३०, ३१, ४२,	कोशलैनाडु	१७४
	५४, ६०	कोशिकि	७१
कोडगाळ	१८४		

कोसल	१०८	गङ्गण	३०१
कोठालपुर	१५४,२०७,२५३,२७७	गङ्गदत्त	२७७,२९९
कोळिप्पाकैयु	१७४	गङ्गदासि-सेहि	२४२
कौण्डिन्य	३०१	गङ्ग मृष	२१९,२५३
कन्नूर (गण)	२०९,२१९,२६७,२७७,२९९	गङ्गपेर्म्माडि	१४९,२१९
		गङ्गपेर्म्माडि	२१५
ख		गङ्गमण्डल	१२२, १४२
खबर-कन्दर्प-सेनमार	१९३	गङ्ग-महादेवि	२१९,२२२,२५३, २६७,२९९
खर्ण	५६	गङ्ग-मादेवि	२५३
खस	२०४	गङ्गमालव	२१३,२७७
खारवेल	२	गङ्गरस	२५३
खडा	१९	गङ्ग-राज	२६३,२६६,२६९
खेटग्राम	९९,१००	गङ्गचळ्ळिय	३००
[खो] इमि [त्त]	३१	गङ्गवंश	२१३
ग		गङ्गवाडि (गंगवाडि)	१२७,१८२, २५३,२६४,२६७,२७७,२८४, २९९,३०१
गह [प्र] कि [व]	३७	गङ्गहेरूर	२७७,२९९
गंगकूट	१४३	गङ्ग-हेर्म्माडि-देव	२९९
गंग-नारायण	१४२	गङ्गायि	१६७
गंगपेर्म्माडि	१७२	गजसेलेय	९५
गंगमण्डलेश्वर	१७२	गण (उदार)	१२३
गंगर-मीम	२१९	गणधर	२४८
गंगराज (कुल)	९५	गणपति	१२७
गंगवाडि (गङ्गवाडि)	२१९	गणिशेखरमरुपोरचुरियर	१७१
गङ्ग	१२३,१८२,२०४	गण्ड-नारायण-सेहि	२८४
गङ्ग (कुल)	९९,१३८,२१३,२९९	गण्डरादिल्य	२१८
गङ्गकन्दर्प	१४९	गण्डरादिल्यदेव	२५०
गङ्ग-कुम्भ-कुमार	२९९		
गङ्ग-कुमार	२९९		
गङ्ग-गात्रेय	१४२		

गण्डविमुक्तसिद्धान्तदेव	२९३	गुणसेन	२०२, २१३,
गन्धिक	४१	गुणसेन-पण्डित	१७७, १९२.
गर्बद-गंग	२६७	गुणसेन-पण्डित-देव	१८८, १८९,
गलिङ्ग-गंग	२७७		१९०, १९१, २०१, २०२
[गं] गवाडि	२९७	गुप्ति	२९३
गव्द-गङ्ग	२७७	गुप्तिय-गङ्ग	२६७, २७७, २९९.
गाढक	२३	गुप्तिमिय	१४४
गांगी	१४१	गुर्जर	१०८, १२३, २८८,
गान्धारी देवी	२१३, २१९	गुल्हा	२३
गामण्ड	२२७	गोगि	२१४, २१६
गावम्बरसिं	२१३, २४८	गोगिग	२१३, २१४.
गिबसेन	३६	गोगि-नृष	२५३
गुञ्जण	२१९	गोगियोङ्ग	२४८
गुड्डम्	२७७	गोग्मै-देव	२५३
गुडिगेरे	२१०	गोङ्क	२८०
गुडिवयल्ल	१९७	गोङ्कन	२८०.
गुणकीर्ति	१३०	गोटिक	५४
गुणकीर्तिदेव	१८२	गोडल	१८९
गुणग-विजयादित्य	१४४	गोणसेन-पण्डित-भट्टारकर	१५४
गुणचन्द्र	९५	गोण्ड	१०६, ३०१,
गुणचन्द्र-देव	२६७, २९९	गोतिपुत्र	९
गुणचन्द्र पण्डित-देव	२७७	गोती	१०
गुणचन्द्रभट्टार	१५०	गोदास	४०
गुणणन्द	९५	गोपाली	६
गुणदुत्तरङ्ग	१४२	गोरघगिरि	२
गुणनन्द-देव	२६७, २७७, २९९	गोल्लनिगुण्ड	१४३.
गुणभद्रदेव	२१७	गोव	५५.
गुणवीरमामुनिबन्	१७१	गोवपय्यन्	११९

गोबर्धन	१३४	घोषको	८३
गोविन्द	१२७, १४४, २१३,	च	
	२१९, २४८	चक्रगोष्ट	२९३
गोविन्दचन्द	१७४	चंदणन्दि	९५
गोविन्दर्	२७७	चङ्गाळ्व	२४१
गोविन्दर	२१४	चङ्गाळ्वदीर्घ	२२३
गोविन्दरस	२४३	चटयं	२४२
गोविन्दराज	१२४, २०४	चट्टलदेवि	२१३, २१४, २१५, २१६,
गोविन्दराजदेव	१२२, १२३		२४८
गोशर्म्म	९१	चट्टले	२१३
गोष्ठ	२४	चडोभ	२२८
गोळपय्यन (वसदि)	२०४	चन्दणन्दियय्यन्	१५४
गौड	२९३	चन्दल-देवि	२४८, २९९
गौडिके	२९९	चन्दवुर-पन्द-रुवलि (ग्राम)	१०६
गौतम	२४८	चन्दिकुब्बे	१६०
गौळ	२८८	चन्दिमय्य	२३०, २९९
ग्रहा	३५	चन्दिमय्ये-गावुण्डि	१८३
[प्र] ह	४०	चन्द्रकीर्ति	२१२, २२७, २८०
ग्रहदत	६८	चन्द्रकीर्तिवति	२३९
ग्रहबल	५७, ५८	चन्द्रकीर्तिभट्टारक	२४१
ग्रहमित्रपालित	९२	चन्द्रक्षान्त	१०३
ग्रहशिरि	४०, ६१	चन्द्रगुप्त	१३८
ग्रहसेन	३६	चन्द्रनन्दी	९४, १२१
ग्रहहथ	३७	चन्द्रप्रभ-सिद्धान्त-देव	२८६
घ		चन्द्रार्थ	१३७
घकरव	५२	चन्द्रिकाम्बिका	१४९
घटिकाक्षेत्रम्	१०९	चाकिराज	१२४
घस्तुहस्ति	५४	चाकिसेट्टि	२१८
घोरः	१२७		

चायल-देवि	१९८	निक-वीर-शान्तर	२१३
चाणि	२१३	चिण्ण	२९३
चाणि-समुद्र	२१३	चित्रकूट	२७७, २९९
चाणिसान्तर	२१३	चीरे	७८
चाङ्कणार्थ्य	१८६	चुर्चुवाग्द-गङ्गा	२६७
चाङ्किमय्य	१८६	चुलुक्य	१०८
चाङ्गळ (बसदि)	१८४	चेटिय	४५
चाङ्गिराज	१८६	चेतराज	२
चाणुक्य	२१८	चेर	५१, १०६,
चाण्डराय	१८१	चोक	१७०, २१३, २९३,
चान्द्रायणदमयार	१५०	चोल	१०६, १०८, ११४, १७१, १७२,
चान्द्रायणीदेव	२४१		२०४, २९९, ३०१,
चामण्ड	२२७	चोळप	१४४
चामराज	२६४	चौण्डलेसे	२६४
चामलदेवि	२९९	ज	
चामुण्डपै	१७४		
चामेकाम्बा	१४४	जकवे	२९४
चालुक्य १०६, १०८, १०९, ११४,		जकव्वे	२१७
१२२, १२३, १२४, १२७, १४३, १४४,		जकय्य	२३६
१६०, १८६, १९८, २०४, २१०, २१७,		जकि	१९३
२१८, २२७, २३७, २६७, २९९		जकियव्वे	१४०, १८३, २१३
चालुक्यमीम	१४३	जकि-सेट्टि	२७४
चालुक्य-विक्रमादित्यदेव	२८८	जकिलियोळ	१४०
चावण	२६४	जगत्तुंग	२७७
चावुण्डमय्य	२१७	जगत्तुङ्गदेव	१२७
चित्रकूटप्राय	२०८	जगदुत्तरङ्ग	२१३
चिळर्दे	२१३	जगदेकमलदेव	२०४
चिकार्थ्य	१३७	जगदेकमलवादिपराजदेव	२४८
		अजाहुति	१८१

जम [क]	३५	आकलदेवि	२१३
जम(व)र्म्म	१६०	आकियन्वे-गान्ति	१८५
ज[-मित्र]	३१	जान्दवेय (कुल)	९४, ९५, १२१
जम्बहल्लि	१९८	जायस	२२८
जय	२७	जाया	३६
जयकर्ण	२२७	जालमंगल	१२४
जयकीर्ति	१००	जासूक	२२८
जयकीर्तिदेव	२४१	जिहुळिगे	१८१, २१७
जयकीर्तिमुनि	२४०	जितसेनपण्डित	२१३
जयकेशि	२१३, २७७, २९९	जितामित्रा	४१
जयज्ञोण्डचोलमण्डल (विषय)	१७४	जिनचन्द्र	१८२
जयणन्दि	९५	जिनदत्त	१९८, २१३, २४८
जयदास	२३	जिनदत्तराय	१४६
जयदुत्तरज्ञ	१४२	जिनदसि	५२
जयदेव	२२, ४४, १४९, २२८	जिनदास	२१९
जयदेवपण्डित	११४	जिनदासि	६२
जयनाग	४४	जिननन्दि	१०६, १४३
जयमट्ट	३५	जिननन्द्याचार्य	१०६
जयम[ट्टि]	३१	जिनवर्म्म	१८६
जयभूति	२६	जीवदेव	२
जयवर्म्म	२५२	जीवा	६१
जयवाल	३०	जूजकुमार	२४३
जयसिंह	१०६, १४३, १४४, २१३	जेष्टहस्ति	२२, २३
जयसिंहवल्लभ	१०८	ज्येष्ठलिङ्ग (भूमि)	१०९
जयसिङ्ग	१७४	ठ	
जयसेन	१२	ठानिया (कुल)	२९, ३०, ४०, ६८, ७९
जया	२४	ढ	
जसहितदेव	१२१	ढुक	८२

ण		तिनगर	१७४
गन्दि [आ] वर्त	५९	तिप्पण-भूपति	२९९
गेडेहळिळ	२५३	तिप्पूर	२६३
त		तिप्पेयूर	१३९
तक्कणलाड	१७४	तियक्कुडिय	२१३
तज्जापुरी	१४२	तिरुनन्द	१७४
तट्टे केरे	२१९	तिरुप्पानमलै	१६७
तडङ्गाल-माधव	२१३, २६७, २७७	तिरुमल	१७४
तण्डयुत्ति	१७४	तिवुळ (गण)	१९०
तपसीग्राम	१४९	तीर्त्यदरुङ्गळ (अन्वय)	२१३
तर्द्धबाडि	१८६	तील्हण	२२८
तलकाडु	२६३	तुङ्ग	२५३
तलवनपुर	९५, १२७, २६३	तुङ्गभद्रा	१२३
तलेकाड	२६९	तुरुळ्ळ	२०४, २८८
तले-कावेरि	२४०	तुळु	३०१
तलेयूर	१२७	तेरिदाळ	२८०
तळकाडु	३०१	[ते]-रुसनंदिक	८१
तळताळ (बसदि)	२३२	तेवणी	७
तळविति	९५	तैल	२१३, २१४, २१६, २४८
तळेकाडु	२९९	तैलपदेव	१६०, २१३, २४८
तातबिक्कि	१४४	तैलहदेव	२१२
तालवृप	१४३	तैलुग	२४८
तालप	१४४	तैल्पदेव	२१३
तालराज	१४३	तोण्ड	२१३
तालिखेड	१२७	तोण्ड-मण्डळिक	२४८
ताळ्कोल (अन्वय)	२०४	तोद	२६४
तित्रिणीके	२०९	तोरणाचार्य	१२२, १२३
तित्रिणिक (गच्छ)	२६३	तोलापुरुष	१३२, १४५
		तोळ्ळि	२४१

तिरतर	१७४	दति	४४
तेन्नवर	१७४	दतिलाचाध्य	९२
त्यागिसान्तर	२१३	दत्त	३२, ३७, ६२
त्रिकलिङ्ग	२९३	दत्ता	५६
त्रिकालमौनि	१६६	दघरे	१२७
त्रिपवते	१०५	दधिकर्ण	४९
त्रिपुर	२९३	दधीचि	२१३
त्रिभुवनतिलक	१०६	दन्तिदुर्ग	१२७
त्रिभुवनमल २१३, २१७, २१८, २१९,		दन्तिवर्मा	१४२
२२१, २२७, २३७, २४३, २५१, २५३,		दयापाल २१३, २१४, २४८, २७४	
२६३, २६७, २८०, २९९		दयापाल मुनीश्वर	२१५
त्रिभुवनमल्लपेर्माडिदेव	२८८	दविल (गण)	५२, १९२
त्रिभुवनमल्लसान्तरदेव	२४८	दवुतवूर	१४०
त्रिलोकचन्द्र	१५८	दशाण्ण	२०४
त्रैकालयोगीशः	१२७	दस	६३
त्रैलोक्यमल्लदेव १८१, १८६, १९७,		दसकाष्ठ	२९७
१९८, २०३, २०४, २७७		दं (? पं)-बीस (श)	१०९
त्रैलोक्यमल्लवीरसान्तरदेव १९७, १९८		दातिल	३०
त्रैविद्यदेव	२१३	दानववलि (ग्राम)	१०६
त्रैविद्य-बालचन्द्र	२७७	दानविनोद	२१३
त्र्यंबक	९०, ९४	दामकीर्ति	९७, १००, १०१
त्र्यम्बक	९५	दामकीर्तिभोजकः	९९
थ		दामणन्दि	२२३, २३९
थंभक	१७३	दामन	२६३
थ		दामनन्दिभट्टारक	२४१
दडिग २१३, २१९, २६७, २७७, २९९		दावरि	२३७
दण्डाधिनाथनादिल	२८८	दास	७८
दण्दा	८	दासगावुण्ड	३००
दत्ता	६१		

दासगौण्ड	३०१	देववर्म	१०५
दासोज	२०४	देवसिद्धान्त	२०४
दाहड	२२८	देवसिंह	१६०
दिगम्बरदासि	२२६	देवसेन	३६, १३६, २२८, २३५
दिनर	५२	देवाकलङ्क	२६४
दिना	३०, ५९, ८४	देवि	२२
दिवाकरनन्दि	१४३, १९७, २१२, २२३, २३९, २४१,	देविल	४०, ४९
दिवित	५४	देवेन्द्रभट्टारक	१४९, १५०
धीवलाम्बिका	१४२	देसिग (गण)	९५, १२७, १५०, १५८, १७५, १८०, २०४, २१८,
दुग्गशक्ति	१०९		२२३, २३२, २४०, २४१, २५३, २६९, २७५, २८०, २९४, २९७,
दुण्डु	१२१		३००
दुण्डुगामुण्डरा	१२१	देहिकिया (गण)	२४, ६९
दुइमल्लदेव	२३६	दोणगामुण्ड	१०७
दुर्गराज	१४३	दोरसमुद्र (पट्टण)	२८४, २९३, २९९, ३०१.
दुर्लभसेन	२२८	द्वारावतीपुर	२१८, २६३, २७४, २७५, २९३, २९७, ३०१.
दुर्विनीत	१२१, १२२, १४२, २१३, २६७, २९९,	द्रमिळ (गण)	२१६, २२६
दुर्विनीत गङ्गा	२७७	द्रविड (अन्वय)	२६४
दुर्विनीत-दण्डनाथ	२८८	द्राविडसंघ	२७४
देकरसं	१९८	द्रविण (अन्वय)	१७८
देमिकन्वे-सेट्टि	२८४	द्रविळ (गण)	१८८, १८९, २०२, २०४, २१५, २४८, २८८
देव (गण)	१९, ६७, १०५, १९३	द्रोहघरट्ट (जिनालय)	३०१
देवकीर्ति	१८२	घ	
देवज्ञेय	१२१	धनघोष	५
देवचन्द्र	१६०	धनञ्जय	२१३, २१९
देवदास	६९		
देवदास	३०		
देवधर	१७६, २२८		

धनहथि	६८	[न] निद	६७
धम्मवुरमु	१४३	नन्दिगच्छ	१४३
धर	५०	नन्दिगण	२१३, २१५
धर्म	१०५	नन्दिघोष	८१
धर्मनन्याचार्य	१०४	नन्दिणिग (ग्राम)	१०६
धर्मकीर्ति	२१५	नन्दिप्पोत्तरश	११५
धर्मपुरी	१४३	नन्दिवर्मा	११२
धर्मवृद्धि	४६	नन्दिस्व	१२१, १८८, १८९, १९०,
धर्म-सेहि	१८९		१९२, २०२, २१६, २८८.
धर्मसोमा	३३	नन्न	२०५, २३७
धवलजिनालय	११४	नन्नप्पयन्	१७४
धवल (विषय)	१३७	नन्नि-चङ्गाळ्व-देव	१९५, १९६
धामघोषा	१२	नन्नि-गङ्ग	१४२, २६७, २७७
धाम [था]	६८	नन्नि-गङ्ग-पेम्माडि	२२२, २६७, २७७
धारागङ्ग	११	नन्नि-यरस-देव	२९९
धारावर्ष	१२३, १२४, १२७	नन्नि-शान्तर	२१३, २१४, २१५,
धारे	२९९		२१६, २४८,
धांगराज	१४७	नयकीर्ति	२९७, ३०१
धुसि	२	नयनन्दि	२२७
धोर	१२३	नरवर	९८
ध्वजतटाक	२१०	नरसिंग	२१३, २६३
		नरसिंघदेव	१४२
		नरसिंह	२९९, ३०१
		नरिदो	२
		नरिन्दक	१०६
		नरैन्द्रसुगाराज	१४३, १४४
		नलमौर्यकदम्ब	१०८
		नल्लरस	२२४
		नवकाम	१२१, १२२, २७७
नगदत	३८		
नङ्गलि	३०१		
नङ्गलि	२९९		
नञ्जयन	२१३		
नण्डुवर कलिगं	१४०		
नन्द	४४		
नन्दगिरिनाथ	१५४, २५३, २६७, २७७		

नवनेदिकुल	१७४	[ना] दिअ [रि]	३५
नवहस्ति	३६	नामणैक्कोण	१७४
नहुष	१०८, ३०१	नारणव	११५
नळ	३०१	नारसिंह	२९९
नंदगिरिनाथ	१३८	नारायण	९०, ९४
नंदराज	२	नाळकोटे	१४२
नाकण	२६४	निगंठ	१
नागचन्द्र-चान्द्रायण	२१८	निडुतद	१८९
नागचन्द्र-देव	१४५	निडुम्बरे	२१३
नागचन्द्रमुनीन्द्र	१८२	निधियगामण्ड	२२७
नागचमूपति	२९९	निन्नम	२९९
नाग [ण] न्दि	११५	निम्मडिबल	२१८
नागदिन	३०	निम्मडिधोर	१५०
नागदिना	३०	निरवद्यधवल	१४३
नागदेव	१०६, १४२, २६४	निरवद्यय्य	१९३
नागदेव्य	१०६	निर्ग्रन्थ	९९
नागपुर (ग्राम)	१४९	निर्ग्रन्थमहाश्रमणसंघ	९८
नागभूतिक्रिया	२४	नीजिकब्ब	१६०
नागरखण्ड	१४०, २०७	नीजियब्बरति	१६०
नागलदेवि	३०१	नीतिमार्ग	१३९, १४२, २१३
नागवर्म	१४०, १४२, १८१	नीतिवाक्य-कोट्टणिवर्म	२५३
नाग-वर्म-पृथ्वीराम	१२७	नीर्गुन्द	१२१
नागसेण	४५	नील	१०६
नागार्जुन	१४०	नीलगुन्दगे	१२७
नागार्थ	१३७	तृप-काम	२१३
नागियक्क	२९१	नेपाल	२८८
नाडिक (कुल)	८२	नेमीचन्द्र	११
नाडु	३०१	नेमिचन्द्र	२२७, ३०१
नाणब्बेकन्ति	१५०	नेमिदेव	२९९
नादा	८	नेमीश्वरतीर्थ	२७७

नेमैस	१३	पदिर्कण्डुर्ग	१२१
नेरिळो	१२७	पद्म	२१९
नेळवति	२१९	पद्मणन्दिस्त्रिद्वान्तचक्रवर्ति	२०९
नोक्कय्य	२१९	पद्मनन्दी	२०९
नोक्कय-सेट्टि	१९७, २१२	पद्मनाभ	९०, ९४, ९५, १२१, १४९,
नोक्कियब्बे	१९८	#	२७७
नोडंबराष्ट्र	१४३	पद्मप्रभ	२२७
नोडुग	२४८	पद्मावती	१९८, २१३, २४८, २७७,
नोणम्बवाडि	२९७		२९९, ३०१
नोळवि-सेट्टि	२८४	पनसवाडि	२१९
नोळम्बवाडि	२९९, ३०१	पनसोग	२२३, २३९, २४०
प		पन्तिगणग	१०६
		पन्दङ्गचलि	१०६
पंचाणचंद	११	पप्पक	१७३
पंडराजा	२	परचक्रराम	१४३
पङ्गळनाट्टु	१७४	परमगूळ	१२१
पङ्गप्पळिळ	१७४	परमेश्वर	१९६, २४०, २४१
पङ्गलदेव	२१३	परलूर (गण)	१०७
पङ्गवसदि	२१३	परिधासिका (कुल)	६९
पट्टण-स्वामि	१९७-२१२	परियल-देवि	२०१
पट्टद (वसदि)	२२२	पर्म्मेनडि	१७२
पट्टवर्द्धिक (अन्वय)	१४४	पर्म्मेनडीय	१३१
पट्टिग-देव	२५३	पर्वत	१०५
पट्टिपोम्बुर्चपुर	२१३, २४८	पश्च	८३
पडियर-दोरपय्य	१५०	पलाशिका	९६, ९९, १००, १०१, १०२
पडिलगेरि	१२७		१०३, १०४
पण्डर	१०२	पल्लकीर्ति	२६९
पण्डित	१७९	पल्लपण्डित	२६९
पण्डित पारिजात	२१३	पल्लव	९९, १०८, १२१, १२३,
पतवर्म्म	१६०		

पल्लवेन्द्र	१२१, १२२	पुगिस	२६४
प-व [ह]-[क] (कुल)	६६	पुंनागवृक्षमूल (गण)	१२४
पलेया	१२१	पुचागवृक्षमूल (गण)	२५०
प [क्] लिखन्दता	१६७	पुफक	८६
पाञ्चाळ	२०४, २१७, २८८	पुम्बुबु	१४६
पाण्डीपुर	१०७	पुरिकर	१४२
पाण्डुरंग	१४३	पुरिगेरे	२१०
पाण्ड्य १०६, १०८, ११४, २४८, २८८,		पुरुरवा	३०१
२९९, ३०१		पुलकेशि	१०६, १०८
पाण्ड्य-भूपाळ	२८८	पुलिकर (नगर)	११४
पादरि-ऊळ्ळ	१२३	पुलिकल	१२१
पाम्बन्ने	१५०	पुलिगेरे (नगर)	१०९, १४९
[पार्न्व] नगरी	१२७	पुलिगेरेबळ्ळि (ग्राम)	२३७
पार्श्व	९१, २९९, ३०१	पुल्लुन्नूर	२१०
पार्श्वनाथदेव	२४६, २४८	पुन्यमित्र	१७
पार्श्वभट्टारक	२७७	पुन्यमित्री	३७
पार्श्वसेन-भट्टारक	२३८	पुष	४७
पाल	५, १९	पुषदिन	४७
पालघोष	५	पुष्पनन्दी	१२२, १२३
पाल्यकीर्ति	२६९	पुष्पसेन	२६५
पाषाण (अन्वय)	१९३	पुष्पसेन-व्रतीन्द्र	२०२
पाहिल (ल)	१४७	पुष्पसेनसिद्धान्तदेव	१७७, २१३, २१४
पाळियक्कन बसदि	१४५		२१५
पिङ्ग	१६०	पुस्तक (गच्छ)	१२७, १७५, १८०,
पिरिकेरें	९५		१९५, २२३, २३२, २३८, २४०,
पिरियदण्डनाथ	२८८		२४१, २६९, २७५, २८०, २८४,
पिरिसिनि	१२७		२९४, २९७.
पिळ्ळगक्षेत्र	१३७	पूज्यपाद	२०७, २१३, २१७
पु [ग] ळालैमंग [ल] कु	११५	पूर्णचन्द्र	२३९
पुगळ्विप्पवर-गण्डर	१६७		

पूषबुधि	५१	पेम्माडिराय	२८०
पृच्छकराज	१२७	पेम्मानडि	१३८, २०४
पृथिवि-कोङ्कणि [म] हाधिराज	१२२	पेर्वडियूर	१२३
पृथिवीनिर्गुन्दराज	१२१	पेल्लनगर	१२१
पृथुविकोञ्जाळ	२०६	पेल्लिको (ग्राम)	१०६
पृथुवीकोणुणि	१२१	पेळ (नगर)	१२२
पृथुवीनीर्गुन्दराज	१२१	पोगरि (गच्छ)	१८६, २१७, २८६
पृथ्वीगंग	२७७	पोगरिगेळ	९५
पृथ्वीमति-महादेवि	२७७, २९९	पोचन्नरसि	१८८, १८९
पृथ्वीराम	१३०, १६०	पोचले	२६४
पृथ्वी-वल्लभ	२०७	पोचाम्बिक	३०१
पृथ	६३	पोचिकळे	२६३
पेङ्क-कल्लुचुबुरु	१४४	पोञ्जिय [क] किय-[१] र	११५
पेण्णे-गडङ्ग	१३१	पोठघोष	५
पेतपुत्रिका (शाखा)	६९	पोठय	९
पेतवमिक	४७	पोन्नवाड	१८६
पेतिवामि [क]	३४	पोन्नळ्ळि	१२१
पेन्बोल्ल (ग्राम)	९०	पोम्बुर्च	१९७, १९८, २०३, २१२, २१३, २१४, २४८
पेरुमाळुदेव	२१८	पोय्सळ	२००, २७४, २८४, ३०१
पेरुबाणपाडिकरैवळिमल्लियूर	१७४	पोय्सळाचारि	२०१
पेरूर	२७७	पोळरे (नगर)	१२२
पेरुरेवानि-अडिगल	९४	पोळ्ळेरै	१२१
पेरेयङ्ग	३०१	पोलुवर	२६४
पेगर्गडे नोक्कय्य	२१९	पोलेयम्म	२१९
पेगर्गडे-हासम्	१७२	पोळ्ळो	१४६
पेगर्गदूर	१५४	प्रतिकण्ठ-सिंग	२१७
पेम्माडिगावुण्ड	२१९	प्रभाकर	२१०
पेमाडिदेव	२०४, २३७, २७७	प्रभाचन्द्र	१०७, १२२, १२३, २६७,
पेम्माडि-वर्म्म-देव	२१९		२६९

प्रभावन्द्रदेव	१६०, १८०, २९९	बप्पय्य	१२३
प्रभावन्द्रपण्डितदेव	२८०	बमदासिय	५०
प्रभावन्द्र-सिद्धान्तदेव	२१९, २६७, २७५, २७७, २९४, २९९, ३०१.	बम्म	२९३
प्रभूतवर्ष	१२३, १२४, १२७.	बम्मगावुण्ड	२५१
प्रवरक	६९	बम्मदेव	२१३
प्रियबन्धु-वर्म	२७७	बम्मध्य	२१८
फ		बम्मरस	२४९
		बम्मरहरियण	२०९
फगुयश	१५	बम्मियन्वे	२१८
फाउ	१४१	बम्मि-सेट्टि	२६७
ब		बर्वर	२८८
		बर्मदेव	२१३, २१४, २१७, २२२, २४८, २६७, २७७, २९९
बरवुलिक	१०६	बर्मन	२४८
बङ्गापुर	२०७, २७२, ३०१	बर्मभूपाळक	२१९
बङ्कियाळवर	२१३	बर्मिसेट्टि	२६७
बङ्केय	१२७	बल	६०
बङ्गगेरि	२१०	बलकोज	२९३
बडिम [शि]	८४	बलव्रत	३५, ३६
बणिकेरे	२५३	बलदिन	२९, ४२
बदणेगुप्प (ग्राम)	९५	बल [वर्म]	४४, १२४
बनवस	२०९, २१७, २९९, ३०१	बलवर्मदेव	२१३
बनवास	१८१, २४३	बलात्कार (गण)	२०८, २२७, २४६
बनवाति	१४०, १४२, २०४, २२१, २४३	बलि	२१३
बनवासे	२०९	बलोर-कट्ट	१७२
बन्दणिका	२०९	बल्ल	२२९, २९९
बन्दणिके	१४०, २०७	बल्लवरस	२१७
बन्द-तीर्थ	२४०	बल्लाळदेव	२५०, २६३, २९३, २९९
बन्धुषेण	१००	बल्लिदेव	२१८
बन्निकेरे	२५३		

बहसतिमित्र	६	बीर-देव	१९७, २१२, २१३,
बद्माजिनालय	२०९	बीरज्वरसि	२१३, २४८
बद्धदेव	२१५	बीरल-देवि	२१४, २४८
बद्धाण	२	बीरलमहादेवि	२१४
बद्धाधिराज	१९८	बीरलमादेवि	२१३
बळगार-गण	१८१	बीरवेङ्कट	२१३
बळिग्राम	२०४	बीर-शान्तर-देव	२१४
बळ्ळिगाव	१८१, १९८, २०४, २१७	बीरुग	२१४
बाकि	१८४	बीरोज	२१८
बाबलदेवि	२५३, २८०	बीळि	१८४
बाडिगसाप्तिसेट्टि	२४६	बुकि	१८४
बाण	२१३	बुधचन्द्र-देव	२७७
बाणकुल	१२१	बुद्धधिरि	२४
बाणरायर	१३६	बुद्धि	४०, ४१, ४६
बाभन	१	बुबु	५२
बालचन्द्रदेव	१३४, २१८, २६७, २६९,	बूटुग	१४२
	२७७, २९९	बूटुगवेम्माडि	२१३
बाहुबलि	१६०, २५३	बूतुग	१४२, १५०, २७७
बालवैधर	१४९	बूतुग-वेम्माडि	२७७
विज	१४२, १४४	बूतुग-वेम्माडि	२६७
बिज्जलदेवि	२१३	बूतुग-हेम्माडि	२९९
विट्टि-देव	२६४	बूतुंग	२१३
बिट्टिग-होयसल-देव	२६४	बूवय्य	२१८
बिट्टिदेव	२५१	बेट्ट-नायक	२८४
बिणियब-सेट्टि	२२१	बेण्डनूर	१२७
बिणेय-बम्मि-सेट्टि	२२१	बेहोरेगरेय	१५४
बिण्डिगनविले	२६९	बेरि	३०
बिमलचन्द्रपंडित	१६६	बेळेयम्म	१४०
बिलियूर	१३१	बेल्कनूर	१४९

वेल्लोळ	१३८	भद्रवश	७३
बेल्लेरू	१२७	भरत	२७७, २९९, ३०१
बेसववे-गन्ति	२३९	भबणन्दि	१३६
बेहेरू	१२७	भागवत	७
बेल्लियूर	१३१	भागव्ने	२१७
बेल्लुगेरे	२१८	भानुकीर्ति	१५८, २९७
बेल्लुबर्ल	२९९	भानुवर्मा	१०२
बेळगोळ	१५४	भानुशक्ति	१०४
बोडेयदेवर	२१३	भारवि	१०८, २१३
बोड्डुग	२१४	भाबदेव	१७३
बोहेगाडि	१४२	मीमसेन	१४४, २२८
बोधिनिदि	३७	भुजगेन्द्र (अन्वय)	१०९
बोप्पण	२९१	भुजबळगांग	२२२, २५१, २५३, २६७, २७७, २९९
बोप्पय	३००, ३०१	भुजबळ-शान्तर	२१२, २१३, २१४, २१६, २४८
बोप्पवे	२१८, २३०	भुवनैकमल	२०४, २०५, २०७
बोप्पुगल	२४८	भूकियर-कावण	२१०
बोम्म	२१४, २१६	भूलोकमलदेवर	२९२
बोम्मरसगौड	१४६	भूलोकमल सोमेश्वर	२१८
ब्रह्म	३६	भूविक्रम	१२१, १२२, १४२, २१३, २६७, २७७
ब्रह्मजिनालय	२०९	भूशु	१७४
ब्रह्मदासिका १९, २०, २२, २३, ३१, ३५		भोजकर	२
ब्रह्मसेन	१८६	भोजदेव	१२८
भगदत्त	२७७, २९९	भगव	२१७, २८८
भट्टकलङ्क	२७४	भंगली (ग्राम)	१०६
भट्टारि (क्षेत्रम्)	१०९	भंगि	१४३
भट्टिभव	९२	भंगि युवराज	१४३
भट्टि [से] न	२६		
भट्टिसोमो	९३		
भद्रनदि	७३		
भद्रबाहु	१३८, २०९, २१३, २१४		

मंगुहस्ति	५४	मयूरखण्डि	१२४
मङ्गलीशः	१०८	मयूरवर्मा	२०९
मङ्गी युवराज	१४४	मरदे (ग्राम)	१०४
मज्जन्तिथ	१२७	मरु-देवी	१४९, २८८
मझमा (शाखा)	६६	मरुवर्मा	१२१
मडिओडे	१२०	मरुळ	२१३, २६७, २७७
मणलेयार	१३९	मरुळहिलि-जकवे	२७३
मण्डलि	२१९, २७७	[मल]-...ण	७३
मण्डलिनाडु	२५३	मलधारि देव	२३२, २३९, २५३, ३०१
मण्डालपुर	२७७	मलियपूण्डि (ग्राम)	१४३
मण्णैकडक्क	१७४	मलेपरोल-गण्ड	२०१
मतिल	३०	मलेयाळ	२६४
मतवूरद	२७३	मलेवडि	२९३
मत्तिकेट्टे	१२७	मलकपद्	१४३
मत्तिकेरै	१७०	मल्ल	२१२
मदना-पुर	२७७	मल्लबे	२१८
मदुरनहळ्ळि	२४१	मल्लिकार्जुन	२०५
मदुरमण्डल	१७४	मल्लिदेव	२८०
मदुवन्ननाड्	१८४	मल्लिनाथ	१९७, २९३, २९७
मद्र	९३	मल्लिषेण-मलधारि	२६४, २७४, २८८
मधुकेश्वर	२०९	महक्षत्रप	५
मधुरा	१९७	महन[न्दि]	४४
मनु	१२४	महलो	२३
मनुजपति	२१३	महा[चक] ग्राम	२२८
मनेवेगर्गडे	२४३	महामेघवाहन	२
मन्त्र	१८३	महाराष्ट्रक	१०८
मम्म-गोविन्द	२७७	महाविजय	२
मम्मणदेव	२१३	महावीर	६७, ६९, ८८
मयूर	२१३	महासेन	९७, ९८, १०४, १४३, १८६,
			२१७

महिन्द्रचन्द्रक	१४८	मादेय सेनबोव	१४५
महिलन	२१	माधव ९५, १२१, १२२, १४२, १४८,	
महीचन्द्र	२२८	१४९, २१३, २१९, २६७, २७७, २९९	
महीदेव-भटार	१९३	माधवचंद्र त्रैविश-देव	१४५
महीपाल १४१, १७४, २७७, २९९		माधवचन्द्रदेव	३०१
महेन्द्रपुर	२७७	माधवसि	१०७
महेन्द्र-बोळ्ळ	१९३	माधववर्म	९०, ९४
महोप्र(कुल)	१३२	माधवसेन-देव	१९८
मळिहारि(नवी)	२३७	माधव-सेन-भटारक-देव	२८६, ४०४
माकणब्बे	२६३	मानव्यस (गोत्र) ९७, ९८, १००,	
माकलदेवि	२१८	१०३, १०४, १०५, १०६, ११४	
मागध	२	मान्धात-भूष	२९९
माघनन्दि २०४, २६७, २७७, २८०,		मान्यखेट	१२७
२९३, ३००		मान्यपुर १२१, १२२, १२३, १२४	
माघहस्ति	५५	मायन	२६२
माङ्गव्वरसि	२१३	मार	१७९, २३१
मांचय्य	२१८	मारय्य	२७६
माचवे	२१८	मारय्य-माचि-देव	२१८
माचिसेट्टि	२१८	मारसिंग २१९, २२२, २५३, २६७,	
माचेंय नायक	२१८	२७७, २९९	
माजक	२७३	मारसिंह १२२, १४९, १९६, २१३,	
माणिकनन्दिदेव	२१८	२७७, २९२	
माणिक पोय्सळाचारि	२०१	माराशर्व्व	१२३
माणिक्य २१८, २९२		मारिषेण	९४
माणिमोजन	२९३	मारे[थ]	२७३
मातृदिन	२९	मारेयनायक	२१८
मात्रिदिन	३३	मालव १०८, १२३, २०४, २०८, २८८,	
मादवे	२१८	२९३, २९९	
मादिगवुंड	२७२	मावण्ण	२६२

माविनूर	१२७	मूलसंघ	९०,९४,१२७,१७९,१८०,
माशुणिदेश	१७४		१८६,२०४,२०७,२०९,२१७,२१८,
मासवाधि	३०१		२१९,२२७,२३२,२३८,२४०,२४६,
मासिगि	२७		२५०,२५३,२६३,२६९,२७५,२७७,
माहरखित	४		२८४,२८६,२९४,२९७,२९९,३००,
माळलदेवि	२०९		३०१
मि[तशि]रि	२८	मूळगुन्द	१३०
मित्र	६४	मृदुकोतूर(विषय)	९०
मित्रस	६९	मृगेश	९९,१००,१०२,१०३
मित्रा	३१	मृदुगुण्डि	१२७
मुगैनाट्टु	१७४	मेघचन्द्र	१२७
मुत्तलगेरि	१२७	मेघचन्द्र त्रैविद्यदेव	२७५,२७७
मुदिरपड	१७४	मेघचन्द्र सिद्धान्तदेवर	२६३
मुदुङ्कनूर	१२२	मेघनन्दि भट्टारक	१८१
मुद्द	१४०	मैलामेला	१४१
मुनिचन्द्र	२६७,२७७,२९९	मैलपटे	२४३
मुनिचन्द्र-देव	२०४	मेघपाषाण(गळ्ड)	२१९,२६७,२७७,
मुनिचन्द्रसिद्धान्तदेव	२०८,२५१,		२९९
	२७७	मैलाप(अन्वय)	१३०,१८२
मुनिवल्ली	१२७	मैळला देवि	२३७
मुनिसिंह	१४१	मोगळि	८६
मुरिय	२	मोनि-सिद्धान्तद-ब(भ)टार	१३२
मुळूर	२०१	मोषिनि	२२
मुशक्ति	१७४	मौनिदेवर	२१३
मुक्कर	१२१,१२२,१४२,२१३,२७७	मौर्य	१०८
मुस	१२७	यडेबळळे	१८५
मुंजुन्यर	१४३	यदु	३०१
मुसिकनगर	२	ययाति	३०१
मुळगुन्द	१३७	यशोमती	२२८

यशोवर्म	१२४	रविचन्द्र	१५८, १६०, २०५
यादव(कुल)	१२३, १२७, २९९, ३०१	रविवर्म	१०२, १०४
यापनीय सङ्ग	९९, १००, १०५, १४३, १६०	राक्षस गङ्गा	२१५
यापनीयनदिसंघ	१२४	राचमल्ल	१५४, २१४, २६७, २७७, २९९
यिडियूर	१४४	राजगह	२
यिनिमिलि	१४३	राजमीम	१४३, १४४
युद्धमल्ल	१४३, १४४	राजमल्ल	१३३, १४२, १७९, २१३
युधदिन	५१	राजमहेन्द्र	१४४
युल्लिकोडमण्डु	१४४	राजमार्तण्ड	१४३
रक्षस	१५४	राजवर्मा	१४२
रक्षस गङ्गा	२१३, २१४, २१६, २२२, २६७, २९९	राजविद्याधर	२१३
रक्षस-वोय्सल	२०१	राजराजदेव	१७१
रक्तपुर	११४	राजशेखर	२१३
रजकद्रह	२२८	राज-श्रीवल्लभ	१२१
रज्यवसु	५२	राजसिंह(?)	१०६
रट्कुल(अन्वय)	१६०, २०५, २३७	राजादित्य	१४२
रठिक	२	राजादित्यदेव	२१३
रणकेशि	२१३	राजेन्द्र-कोत्तालय	१८९
रणपराक्रमाङ्क	१०९	राजेन्द्र-चोलदेव	१७४, १७५, १९०
रणराग	१०६, १०८	राजेन्द्र-चोल-नम्नि-चङ्गालय	२४०
रणविक्रम	१३३	राज्यपाल	२२८
रणशूर	१७४	रात्रिमतिकन्ति	२५०
रणावलोक	१२३	राम	१०६, १९६, २१३, २७७, २९९
रयगिनि	३५	रामगावुण्ड	३०१
रवि	१००, १०१, १०२	रामचन्द्रदेव	२३४
रविकीर्ति	१०८	रामदेवाचार्य	११४
रविकीर्ति-मुनीन्द्र	१७९	रामनगर(अहिच्छत्र)	५३
		राम(परमा)नंदि-सिद्धान्तदेवर	२०७
		रामभद्र	९५

रामसेन	२१७	लक्ष्मीदेवि	२१३
रामस्वामि	११८, १९६, २४०, २४१	लक्ष्मीसेन-मठारक-देव	२३८
रामेश्वर(क्षेत्र)	१०९	लत्तनूरपुर	२८०
रायराचमल्लवसति	१४९	लत्तलूर	२०५, २३७
रायरायपुर	२९९	लल्लयन	२१३
रायशान्तर	२१३	लवाड	१६
रावणय्य	२७६	लहस्तिनी	१४
राष्ट्रकूट	१२२, १२३, १३०, १४४	लहिवादो(डो) (ग्राम)	१०६
राह	२१३, २४८	लाट	१०८, २०४, २२८, ३०१
[रितु] नंदि	४१	लाळ	२०४
रिना	२३	लुअच्छगिर	१२८
रुक्मव्वे	२९४	लेणशोभिका	८
रुणिकच्छगोण्डिदेव	२१८	लोकजित	१९४
रुद्र	१०६	लोकतिलक	१२१
रुद्रदास	४३	लोक-त्रिनेत्रापर	१२२
रुद्रसोम	९३	लोकमहादेवी	१४३, १४४
रुडी	१४१	लोकिगुण्डि	२५३
रूपसिद्धि	२१४, २१५	लोकिमय्य	२९९
रुविक(ग्राम)	१०६	लोकियव्वे	१४६, २१३, २३२
रेवण	२०४	लोवभिकि	१४४
रेवती	१०८	वडूर(शाखा)	४२, ५९, ६८
रोद	२१८	वंग	२०४
रोहि	२१९	वंगपाल	७
रोहिणी देवी	२१३	वङ्ग	२१७, २८८
ल[ल ?]एय	१४२	वङ्गवाडि	१७९
लक्ष्म	२०४	वङ्गालदेश	१७४
लक्ष्मण	२०४, २१३, २२८, २७७, २९९	वङ्गी	४
लक्ष्मरस	२०४	वच्छलिया	२७
लक्ष्मा-देवि	२९९	वज्रणगरि	१७, ४४

बज्रमगरी (शाखा)	८०	वादिराज	२१३, २१४, २१५, २१६,
बज्ररत्न	८४		२६४, २७४, २८८
बज्रपण्य्याचार्य	२१३	वाकीमसिंह	२१४, २२६, २७७
बज्रदाम	१५३	वाथा	२३७
बज्रपाणि-पण्डित-देव	१७९, १८५	वाधर	३१
बङ्गरावुळ	२४३	वाधिशिव	८४
बङ्गाचार्य-प्रतिपति	२९९	वानसवंश	१८६
बतक	५६	वानसाम्राय	१८६
बत्सराज	१२३, १२७, १६०	वारणा	१७, ३४, ३७, ४१, ५८, ७६, ८०
बनवासी	१०८, १७४, १८१, २०९		८२
बयरसिंह	१४१	वारिषेणाचार्यसङ्घ	१०३
वरण	४४, ४७, ५२	वाल्मीकि	२१३
वर[ण]हस्ति	२२	वासव	२१३
वरदत्ताचार्य	२१३	वासन्तिका	२९७, २९९
वराळ	२०४	वासवचन्द्र	१४७
वरुण	६९	वासा	८
वर्गडे-बाबल-देवि	२५३	वासुदेव	६२, ६५, ६९, १०७
वर्धमान	५८, ९, ३०, ३४, ३७, ४२, ५२	वासुदेवा	२०
	७५, १०७, १७३, २०४, २४८	वासुपूज्य	२२७, २६५
वर्म	२३	विक्रिरमवीर	१७४
वलहारि	१४४	विक्रम	१२२, १४२, ११३, २६७, २७७
वल्लभ	१२२, १२३, १२४, १२७, १४४,	विक्रमचक्रि	२२७
	१४९, २१३, २४८, २७७	विक्रमशान्तरदेव	२१३, २१४, २२६,
वसुल	२६, ६३		२४८
वसुलवाटकं	१०३	विक्रमसिंह	२२८
वदसतिमित	२, ६	विक्रमादित्य	११४, १३२, १४३, १४४,
वागठ	२२८		१९६, २०४, २१७, २२७, २४१
वाणसकुल	१८६	विजयकीर्ति	९४, १२४, २२८
वातापिपुरी	१०८	विजयपार्श्वदेव	३०१

विजयपाल	२२८	विष्णुवर्द्धन	१४३, १४४, २६३, २६४,
विजयपुर	२७७, २९९		२६६, २६९, २७५, २९३, २९७, ३०१
विजय-महादेवी	२७७, २९९	विकन्द	१२२
विजयवैजयन्ति	९७, ९८, ९९	विकन्दा	१२१
विजयशक्ति	१०९	वीर	२४८
विजयाशीति	५२	वीरगुप्त	२६३, २६४, २६९
विजयश्रीपार्श्वदेव	३०१	वीरगङ्गन	२२२
विजयसिद्ध	१७३	वीरगङ्ग-होयसळ-देव	२८४
विजयादित्य	११४, १४२, १४३, १४४, २१०, २१३, २६७, २९९	वीर-देव	९०, २१३, २१६, २२६
विद्याधरदेव	२२८	वीरनन्दि	१२७
विद्याधरी(शाखा)	९२	वीरनारायण	१२७
विनयनन्दी	१०७, २६९	वीरबल्लालदेव	२१८
विनयादित्य	११४, १८५, २००, २६३, २७५, २९९, ३०१	वीरभूपाळ	१९८
विन्ध्य	१२३	वीर-महादेवि	२१३
विमलचन्दाचार्य	१२१	वीरमादेवि	२१३
विमलादित्य	१२४	वीरमार्माण्डदेव	२१३
विमलचंद्र	१६६	वीर-राजेन्द्र	१९५
विमलचन्द्रभट्टारक	२१३	वीरलदेवि	२१३
विरिह्वन	२७७	वीरवेडङ्ग	१४२, २७७
विश्वकर्माचार्य	१२१, १२२	वीरशोळ	१६७
विष्णुगुप्त	२७७, २९९	वीर-सान्तर-देव	१९७, २१२, २१३
विष्णुगोप	९०, ९४, ९५, १२१, १३२, १४२, २१३, २७७	वीर(से)न	१३७
विष्णुनृप	२६७	वीरसेनसिद्धान्त-देव	१५४
विष्णु[भ]व	५२	वीराम्बिका	२४३
विष्णुभूप	२९९	वृद्धहस्ति	५६
[वि]ष्णु[,][र]म	१२८	वृधहस्ति	५९
		वृषभ	११८
		वृषभतीर्थ	२७७
		वृषिदाहड	२२८

बृहत्परत्वर	९७	शान्तर	१९७, २१२, २१३, २४८
वेङ्गीश्वर	१२३	शान्तर-देव	२०३
वेङ्गिलैवीर	१७४	शान्तरादित्यदेव	२१३
वेणि	२६	शान्तरान्वय	२४८
वेन्दनूर	१२७	शान्तरोङ्ग	२४८
वेन्नैल्करनि (ग्राम)	९४	शान्तलि (देश)	२०३, २१२
वेरा	५४	शान्तिदेव	२००, २१३
वेरि	४०	शान्तिनाथ	१७६, २०४
वेरेयन्न	३०१	शान्तियन्त्रे	१६६
वेंगि	१४३	शान्तिवरवर्मा	९९
वेंगिनाथ	१४४	शान्तिवर्म	९७, १६०
वैगवूर	१७४	शान्तिवर्मा	१००, १०२
वैजय	१०७	शान्तिशायन	२८८
वैरमेघ	१२४	शामा	२३
वैरा (शाखा)	५५	शामाख्या	९२
वैहिदरी	७	शाल्मली (ग्राम)	१२२, १२३
वोङ्ग	२१५	शांतिषेण	२२८
वोङ्ग	३१४	शिमित्रा	९
व्याघ्र	९३	शिरिक (संभोग)	४२, ८५
व्यास	२१३	शिरिका	३०
शक	१०८	शिरिग्रह	५२
शकरकोट	१७४	शिरिग्रिह	२२
शंखतीर्थवसति	११४	शिरित	४४
शङ्खजिनेन्द्र	१०९	शिलाग्राम	१२४
शरिक	८८	शिवकोट्याचार्य	२१३
शशकपुर	२९३, ३०१	शिवघो [षक]	७२
शंकर	९१	शिवणन्दि	१३१
शर्कराकर्ष	१४४	शिवद [त]	८५
शान्त	१६०	शिवदिवा	८८

शिवदेव	३६	श्रीधरदेव	२२७, २३९, ३४१
शिवमार	१२१, १२२, १३३, १४२, १८२, २१३, २७७, २९९	श्रीनन्द	२१०
शिवयश	१५	श्रीपाल	१०७, २१३, २६४
शिवरथ	१०३	श्रीपाल-त्रैविद्य-देव	२८८
शिवापर	२६७	श्रीपुर	१०६, १२१
श्रीलभद्र	९५	श्रीपुरुष	११९, १२०, १२१, १२२, १३३, १४२, १५४, २१३, २६७, २९९
शुभकीर्ति	१८२	श्रीपोलिकेशवल्लभ	११४
शुभकीर्तिदेवमहार	२६७	श्रीभोज	२२८
शुभचन्द्रदेव	१८०, २३२, २४५, २५१, २५३, ३०१	श्रीमदेळे (रे) गंगदेव	१४२
शुभचन्द्रसिद्धान्तदेव	१६०, २६९, २८४	श्रीमान्दिरदेव	१४३
शुभगुणवल्लभ	१२७	श्रीमृगेश्वरवर्मा	९७
शैगोत्ता	१४२	श्रीविजय	११४, १२२, १२३, २१३, २१४, २१५, २१६, ३०१
शोडास	५	श्रीविजयवसति	१४९
शोनकायन	७	श्रीविजयशिवमृगेश-वर्मा	९८
शोभनय्य	२२६	श्रीविष्णुवर्मा	१०१
शौच-कर्म-देव	१२३	श्रीवुरदा	१२१
श्रियादेवि	२१३	श्रुतकीर्ति	९६, २७७
श्रीकल्याचार्य (अन्वय)	१२४	श्रुतकीर्ति-त्रैविद्य	२८५
श्रीकीर्ति	१०१	श्रुतकीर्तिबुध	२९९
श्रीकुन्द	११८	श्रुतकीर्तिभोज	१००
श्रीकुमारगुप्त	९२	श्रुतकीर्ति	३२७
श्रीकेशि	२१३	श्रेयांसपण्डित	२१३, २१४, २१५, २४८
श्रीगृह	२९, ३१, ५४, ५५	श्वेतपटमहाश्रमणसङ्घ	९८
श्रीजिनदेव सूनि	१७३	सक	५६
श्रीदत्त	२७७, २९९	सकलचन्द्र	१४४, १९७, २१२
श्रीदेव	१२८	सधसिंह	३०
श्रीदेवेन्द्रमुनीश्वर	१२७		

सङ्गमिक	२६	सङ्गत्य	२१६
सङ्गम	९१	सङ्गिता	८२
सङ्गमहला	१४३	सङ्गतर	१३९, १४५, २१३, २४८
सत्यार्थ	२२२, २६५, ३९९	सङ्गलिंगे	२१३
सत्यन्तीतिवाक्य	१४२	सङ्गलिंगेशायिर	२४०
सत्यवाक्य	२१३, २६५	सङ्गलिंगे-सायिर	१९७
सत्यवाक्य-कोशमिवर्म	१४२, २७५	सङ्गलिंगे-सायिरम	१९८
सत्यवाक्य-जिनालय	१३१	सङ्गलिंगे-सायिरम	२१३
सत्याश्रय	१०६, १०८, १०९, ११४, १४३, १४४, १८६, २१७, २१८, २२७, २३७, २४८	सङ्गलिंगे-सायिरम	२१९
सयिसहा	१७	सङ्गलिंगे-सायिरम	२१९
सयि	३५	सङ्गलिंगे-सायिरम	२१९
सन्ति	२९	सङ्गलिंगे-सायिरम	२१९
सन्दिग	१४०	सङ्गलिंगे-सायिरम	२१९
सन्धि	३६	सङ्गलिंगे-सायिरम	२१९
स [न्धि] क	२४	सङ्गलिंगे-सायिरम	२१९
समण	१, २	सङ्गलिंगे-सायिरम	२१९
समन्तभद्र	२०७, २१३, २१४, २१७, २६४, २७४, २८८	सङ्गलिंगे-सायिरम	२१९
सयिगोट	२६७	सङ्गलिंगे-सायिरम	२१९
सर्ग्य-दण्डाधिप	२८८	सङ्गलिंगे-सायिरम	२१९
सर्वव्यभिच	१३१, २०४	सङ्गलिंगे-सायिरम	२१९
सङ्कार	२१३, २४८	सङ्गलिंगे-सायिरम	२१९
सङ्क	३०३	सङ्गलिंगे-सायिरम	२१९
सङ्कित	१४३	सङ्गलिंगे-सायिरम	२१९
सङ्गय	१२७	सङ्गलिंगे-सायिरम	२१९
सङ्गवधि	६०	सङ्गलिंगे-सायिरम	२१९
सङ्गवा	१४३	सङ्गलिंगे-सायिरम	२१९
सङ्गतकषि	२	सङ्गलिंगे-सायिरम	२१९

सिवदास	४३	सून्दी	१४२
सिवमार-देव	२६७	सुरस्थ-गण	१८५, २६९
सिवार	१०६	सूर्पट	२२८
सिहक	७१	सूर्य-चमूप	२८८
सिहदता	४४	सूर्य-दण्डनायक	२८८
सिहनादिक	७१	से (से) ककेतन	१२७
सिहमित्र	१७	सेदोजन	१३१
सिंग	१२०, २९३	सेन ४७, ४८, ६२, १८६, २०५, २१७,	
सिंगण-दण्डनायक	२९१	२३७, २३७, २८६	
सिंगण-दण्डाधिपति	२९१	सेनबोव	२१०, २२६
सिंहनन्दि	२६७, २७७, २९९	सेनबोव-बोग-देव	२५१
सिंहनन्द्याचार्य	२१३, २१४, २७७,	सेनवर-दण्डनाथ	२८८
	२९९	सेन्द्र	१०९
सिंहपथ	२	सेन्द्रक	१०४, १०६
सिंहरथ	२१३	सेम्बनूर	२८८
सिंहल	१०६	सैगोट	१८२, २१३
सिंहसेनापति	१०३	सैगोट-पेमानि	१८२
सीवट	१६०, २७७	सैगोट-विजयादित्य	२७७
सीवटे	१३०	सोम	२१७, २४३, ३०१
सीह	३२, ५५	सोमाश्विका	२४३
मुकोशल	२०४	सोमिल	९३
मुगन्धवर्ति	१३०, १६०, २३७	सोमेश्वर	२०४, २९३, ३०१
सु [चि ल]	२९	सोरिगांव	२२७
सुन्दर	१७४	सोबरस	२४३
सुब्बय	२१८	सोसबूर	१७९, १८५, १९४
सुमतिभट्टारक	२१३	सोसेबूर	२००
सुय्यदेव	२१८	सौराष्ट्र	२१७, २८८
सुराष्ट्र (गण)	२०४, २३४	स्कन्दगुप्त	९३
सुल्हाटवी	१४२	स्थानिय (कुल)	४२, ५४, ५५, ५६, ८३
सुल्ल	१२७		

स्थिर	२२	हस्तहस्ति	५५
हगनूर	१२७	हळल्लुर	२९९
हगिर्नदि	४५	हानुज्जु	२९९, ३०१
[ह] ग्यु [देव]	३१	हारिती	९७, ९८, १००, १०३, १०४,
हटिकिय	४४		१०६, ११४
हट्टण	२१८	हास्वनहळ्ळि	१८९
हनूमान	१०६	हिरण्यगर्भ	२१३
हन्तियूर	२८३	हिरियकेरे	२२२
हल्लवण	२१०	हिरियदण्ड-नायक	३०१
हरकेरे	२२२	[हु] क्ष	३८
हरदेव	२२८	हुगियवे	२१८
हरि (वंश)	२९९	हुलिगेरे	२९९, ३०१
हरिगे	२१९	हुलियकेरे	२२२
हरिण (न्दि) देव-मुनि	२९१	हुलियमरसुं	१२७
हरितमालकडि	४५	हुविष्क	३९, ४३, ४५, ५०, ५६
हरिति	५	हुगणगिले	२७७
हरियन्वरसि	२९३	हेमनन्दि	२६९
हरियलदेवि	२९३	हेमसेन	२७४
हरिवर्म	९०, ९४, ९५, १०३, १०४,	हेमसेनमुनि	२१३, २१५
	१२१, १२२, १४२, १४९, २१३, २६७,		
	२७७, २९९	हेम्माळि	२७७, २९९
हरिश्चन्द्र	२१३, २१९, २७७, २९९	हैहय	१२२
हर्म्म	२९९	होतगे (गच्छ)	२४०
हर्ष	१२७	होनेश्वर (क्षेत्रम्)	१०९
हलसिगे	३०१	होय्सळ	२३०, २३३, २९९, ३०१
हलोजन	२१८	होसंजल्लु	१२७
हलुम्बवे	१६६		

वीर सेवा मन्दिर
पुस्तकालय

काल नं०

लेखक

शीर्षक

खण्ड

विजयप्रति
जैनशिलालेख संग्रह
क्रि.पू. ४०९३

दिनांक

लेने वाले के हस्ताक्षर

वापसी का
दिनांक